## ॥ श्रीवर्षमान जिनाय नेमः॥

॥ अथ् श्री कर्मविपाक ना प्रथ कर्मग्रंथ प्रारंनः॥

टी। नी श्रीदेवेंड्सूरि श्राद्यां मंगल करेंग्रे:-जपजातिग्रंद.
दिनेश्वद्यानवरप्रतापे, रनंतकालप्रचित्तं समंतात्॥
योऽशोषयत्कर्मविपाकपंकं, देवो मुदे वोऽस्तु स वर्द्यमानः॥ १॥
श्रिष-श्रनंत कालनो संचय रेलो जे मैविपाकरूप पंक एटले ादव
तेनुं जयध्यान रूप तापवडे शोषण करवाने जे सूर्यना जेवाग्रे, एवा श्रीवर्द्धान
देव ने हर्ष रनारा थाश्रोः॥ श्रायांवृतंमः

इानादिगुणगुरूणां, धर्मगुरूणां प्रणम्य पदकमटां ॥ कर्मविपाकविद्यत्तिं, स्मृतिबीजविद्यवये विद्धें, ॥ १ ॥

अर्थः - ज्ञान, दरीन अने चारित्ररूप जे सर्वोत्क गुण तेर्रए करीने महत्ताने पामेला अथवा तेर्रानी प्राप्ति करावनारा एवा जे धर्मगुरू, ते ना पदकमलने प्रणा रीने स्मरणरूप अं रनी वृद्धि करवाने अर्थे आ कमीविपाक नामना प्रथम

में अपनी वृत्ति हुं रुं हुं ।। १॥

हवे मैंग्रंथ ते ग्रुं कहीए ? तोके जीवे मिथ्यालादिक हेतुए रीने जे आत् । साथे पुजल बांधीए तेने में कहीए, यथा क्रियते इतिकमें इति व्युत्पत्त्या ते कमें मूलोत्तर प्रकृति जेदेकरी, तथा प्रकृति, स्थिति, रस अने प्रदेशादि बंध जेदे करी, तथा बंधोदयोदीरणासत्तादि जेदेकरीने ग्रंथनुं रचनुं प्रतिपादनने; जे हनेविषे ते म्मेग्रंथ कहीए, त्यां प्रथम कमें विपाकनामा कमेग्रंथ कहेने ए बंधीवात प्रसंगधी कहीने

ह्वे बालावबोध कर्ता मंगलाचरण कहेते.

श्रेयोमार्गस्य वक्तारं ॥ वेतारंकर्मवत्रिणां ॥ चेतारं विश्वतत्वानां ॥ वंदे वीरं जगत्त्रमुं ॥ १ ॥ गुणचंडं गुरुं नत्वा ॥ मतिचंडेण धीमता ॥ क्रियते कर्मग्रंथस्य ॥ व्याख्या वालाऽववोधिनी ॥ १॥ हवे ग्रंथकर्ता श्रीदेवेंड्सुरि पहेली गायाए करी ग्रनिएदेवतानी मुत्यादिक नुं प्रतिपादन करेले, मूल गाया ।।

सिरिवीरजिणं वंदिय ॥ कम्मिविवागं समाम है वृत्तं ॥ कीरइ जिएण हेडोहिं ॥ जेणंतो नवए कम्मं ॥ १॥

अर्थ-सकल त्रिचुवन जनना मनने चमत्कार उपजावे. तथा परमाईन्य महा महीमाने विस्तारे एवी जे अग्रमहा प्रातिहार्य लक्क्ण सिरि के० श्री एटले गोना. यथा ॥ अशोकवृद्धः सुरपुष्पवृष्टि, दिव्योध्वनिश्वामरमासनंच : नामंमलं इंइनि रातपत्रं सद्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ ए अष्ट महाप्रातिहार्ये कहिए. अश्वरा चोत्रीश छतिशय तक्ष शोना तेऐकरी विराजमान एवा जे वीर्गनणं के॰ श्री वर्धमान जिन एटले राग देष तथा मोह प्रमुख वैनी उनो पराजय कखायी जिन कहेवायहे. अने ते वैरीडिक्रप वीर एटखे सुनट तेडीने जीतवाथी वीरजिन ए नाम सार्थकज हे. एवा श्रीवर्धमान स्वामीने मने करी, प्रणिधान एटले विगुद्ध मनसहित जे वचन योग ते वहे स्तुति तथा कायाएकरी प्रणाम रूप चंदिय के० वंदना करी ने अहीं वंदना शब्दे स्तवना अने प्रणाम ए वेहु अर्थ कहीए हैए वंदिसुत्यनिया दनयोरित वचनात् एऐकरी संगला चरणने अर्थे अनिष्ट देवनी सुति करीने ज्ञानाव रणादि कमीना अनुनवने कस्मविवागं के कमीविपाक किह्ये. तेने समासर्ड के॰ संक्रेपेकरी अर्थात् वर्तमान इपमकालना लोकोनी वुदि तथा आयु वल प्रमु ख अति अल्प होवायी घणा विस्तारवंत यंथोमां प्रवृत्त थवामां विघ्न पडवाना नयथी तेवी कृति तेर्र्जनी जपर रुपकाररूप कदाच नयाय. माटे आ दुंकामां वुद्धं के॰ कहीश एथी प्रयोजन सूचब्युं; उपायोपेय एटले कारण कार्य लक्क्ण, साध्य साधन लक्ष्ण, तथा गुरुपर्वक्रमलक्ष्ण संबंध, अर्थात् सिद्ध थाय्ठे; सम्यक्हछी जीव अधिकारी है; अने अनिधेय जे कमीविपाक ते एमां विपय है; हवे आगला बे पदे करी कमें शब्दनो अर्थ करें छे. जे कराय ते कमें कहीए. तेना पुजल अंजन चूर्णथी नरेला दाबलानी पर्व सर्व लोकाकाशमां निरंतर व्यापी रहेला है; तेने हीर अने नीरनी पेरे तथा अग्नि अने लोइनी पर्वे कमैवर्गणा इव्य अने आतमा नो तादात्म्य संबंध जे कारणमाटे थई रहेलो छे; ते कारणमाटे ते कम कहेवाय हे. ए कमें कोण करे, तोके जिएए के जिन्हों की कीरइ के करायहे. ते जीव कोने कहीए? पांच इंड्यि, त्रण योग ते त्रण बल, श्वासोश्वास तथा

दश प्राणसुधी जे यथायोग्य धारण करी शके तेने जीव कहीए, ते जीव आवा लक्ष णवालो छे-मिण्यात्वादिके करी मजीनस्वरूप थको सातादिः वेदनीयादि कर्मोनो कर्तां ने, तथा तेर्रांना फल जे साता असाता तेनो नोक्ता, तथा एवा एवा कर्मविपा कनो उद्य तेने अनुसारे करी नरकादिक गतिनेविषे संसत्ती, अने सध्यक्द्री न ज्ञान तथा चारित्र लक्क्णजे रत्न त्रय तेना अन्यासनी बाहुव्यताना वज्ञेकरी अरोष कर्म मलपटलनो परिनिर्वाता, ए चारेलक्ष्णे बिराजमान ते जीव, सख, प्राणी तथा आतमा इत्यादि पर्यायवडे ओलखायहें; वक्तंच.॥ यःकर्ताकर्मनेदानां नोका कमेफलस्यचः संसत्ती द्रिनिवीता सद्यातमा नान्यलङ्खः॥ कया कारणनी योग्यता पामीने जीव कर्मने करे हे ? तो के मिय्याल, अविरति, कषाय तथा योग ए चार जक्रणवाला सामान्यरूप हेग्रहें केंग्रहें सुप्करी जीव कर्मने करेंग्रे. यतः "प मिणी यत्तण निन्हव जवधायप उस्स अंतराएण हे अज्ञासा यणयाए आवरण इ गंजि जयइ" इत्यादि विशेष कारणनी योग्यता पासीने ते विशेषकरी आ यंथनेवि पेज आगल कहेवारो. आटड़ां कहां तेनो तात्पर्याध आहें जेए के ज कार एमाटे हेतुए करी जीववडे करायने ता कं ते कारणमाट तेने कमंनस्ए के में हेवायने एटले जीव हेतु पामिने जेने करे तेने कर्म कहीए; क्रियते तत् कर्म इत्यचीत् एवुंजे पुजलमय मूर्तिककमे ते केवा प्रमाणे करी सिड्बे, ते कहेवे.

संसारने विषे समस्त जीव वर्नें छे, तेने आत्मलपणुं समान छे. पण तेमां हे कोइक देवताले, कोइक नारकीले, कोइक तिर्थचले, कोइक मनुष्यले एम नर नारक तिर्धेच अने मनुष्य रूप विचित्रताले. एम वली मनुष्यत्वपणुं पण सर्व मनुष्यने विपे समानते. तथापि तेमांहे कोइक राजाते,कोइक रंकते,कोइक पंमितते, कोइक मूर्ख वे. कोइक महर्दिकवे, कोइक दरिइवि, कोइक खरूपवानवे, कोइक कुरूपवानवे इ त्यादि जे विचित्रपणुं हे, ते विचित्रपणुं निर्देतुक नथी पण हेतु सहीतजहे. जो नि हें तुक ानीए तो नित्यं सत्व किंवा असत्वनो प्रसंग याय. नित्यंसत्व मसत्वंवा॥ हेतोरन्यानपेक् णादितिवचनात्॥ ते माटे ए विचित्रता सहेतुक मानवी ते हेतुने अमे कमे कहीए हैए, एत इक्तंश्री दिनकतटी कायां॥ इयानृ इंकक्योमेनी पिजडयोः सदूप नीरूपयोः श्रीमहुरीतयोर्बलावलवतो नीरोगरोगार्चयोः ॥ तौनाग्याऽसुनगत्वसंगम जुषो स्तु हो पिनृत्वेंतरं यत्तत्कर्म निवंधनं तदिपनोजीवं विनायुक्तिमत् एनो अर्थकहे हे.

ए वात श्री दिनकृत टीकानेविषे जीवस्थापना अधिकारे आवीरीते कहेली हेके म हार्देवंत अने रंक, बुदिमान अने मूर्ख, सुरूप अने कुरूप, सजतियान अने दूर्गति वा , बलवान ने निर्बल, निरोग अने रोगार्च, तेमज सोनाग्य तथा इनीग्य, एवा दंद जगतमां दीवामां आवे हे, तेमां अंतर जे हे ते कमी नुं निबंध हे; तथापि ते जीवविना संनवे नही. ए विषे बीजे वेकाणे पण कह्यं हे. के " छात्मत्वेना वि शिष्टस्य, वैचित्र्यं तस्य यदशात्, नरादि रूपं तिचत्र, मदृष्टं कर्मसंक्षितं " वली पा राणि पण कमिसिदि 'प्रतिपादन करें छे, ते आ प्रकारे के "यथायथा पूर्वकृतस्य कमेणः फलंनिधानस्यमिवावतिष्ठति ॥तथा तथा तत्प्रतिपादनोद्यता, प्रदीपहरतेव मितः प्रवर्त्तते ॥ १ ॥ यद्यत्पुराकृतंकमेः नस्मरंतीह् मानवाः तदिदंपांडवश्रेष्ठ द विमत्यिनिधीयते॥ १॥ मुदितान्यिपिमित्राणि, सुकुद्भिवशत्रवः; नही मेतत्करिष्यंति यन्नपूर्वकृतंत्वया "॥ ३ ॥ बौद पण आम कहें है के, "इतएकनवतीक हपे शक्तया मे पुरुषो हतः; तेन कमे विपाकेन पादेविद्योऽस्मिनिक्यः" एवी रीते कमेनाश्रस्त वनो य पि सर्व ंगीकार करे हो, तथापि तेर्र अमूर्तिमंत माने हो, पण तेम नथी कमें पुजल स्वरूपी हो; तेमार्ट सूर्तिवंत हो अमूर्त नथी, तेम हतां जो कमेंने ह किशादिवत् अमू कि मानगुं, तो जेम अमूर्न आकाशयी कांइ आत्माने अनुय ह उपघात नथी, तेम कमेना योगे पण आत्माने अनुमह तथा उपघातनो संन व यशे नहीं यतः " े उञ्चमुत्तंचिय, कम्मंमंनंतिवासणारूवं; तंतुनजवइतत्तो, ववधायाणुग्गहानावा. नागासंववधायं, ऋणुग्गहं वाविकुणइसत्ताणं " हवे ते कमी ः हि करी नादिने यतः "अणाइयं तं पवाहेण" इति वचनात् जो प्रवाहनी । पेक् ाथी पण कर्मने सादि मानिये, तो जीवोने पूर्वे कर्मरहित पणानो संनव थहो. ः ने पाढलथी कर्मक । थी जीवने कर्मनो संयोग उत्पन्न थाय हे एम मानहुं जोई हो। एम अंगीकार क । श्री क जीवोने पण कमेनो संयोग संनव थहो, केमके ते तो कर्म रहित हे. तेथी क जीवोने अमुक्तता थहो. एम मानवुं तो इष्ट नथी. मा टे जीवने कमेनी साथे अनादि कालनो संयोग ने एम मानवुं योग्यने, मात्र कमे नादि हे एम नथी.

आशंका—जीवनी साथे कर्मनो अनादि संयोग उतां तेनो वियोग केम संजवे? उत्तर— नादि संयोग उतां पण वियोग दीवामां आवेछे. जेम कांचन अने उपल एटले पथरानो नादि संयोग छे, तोपण तथाविध सामग्रीना स विश्वी एटले धमनादिकनी सहायतावडे कीटीनो वियोग दीवामां आवेछे, तेमज जीवने पण सम्यक् झान सम्यक्दर्शन तथा चारित्रना ध्यानरूप अग्निएकरी अनादि कर्म मलनीताये वियोगनी सिद्धि थायछे, ए विषे जाष्य धांजोनिधिर्नगवान पण आम

हेर्न के, "जहइह कंचणोवल संजोगोणाइ संतइ ग वि; वुश्चि इसोवायं, हजोगोजीव म एां ॥ १ ॥ इति प्रथ गायार्थ ॥ हवे बीजी गायाए मेना केटला चेद्रने ? ते हेर्ने

पयइ टिइ रस पएसा, तं च हा मो अगस्स दि ता ॥
मूल पगइ घ तर, पगई अडवन्न सयनेयं ॥ १॥

थ-तंच जहां के व ते मेना चार प्रकार थाय हे; ते छा प्र ाएो- पयइ हिइ रस पएसाके प्रकृति, स्थिति, रस तथा प्रदेश जे प्रासाद प्र खना आ धारनू स्तंज होयहे, ते मेना ए चार स्तंजहे. तेथी प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध था प्रदेशबंध ह्या हे. तेमां स्थिति, तथा रसजे खनुनाग, तथा प्रदेश ए त्रण बंधोनो जे समुदाय तेने प्रकृतिबंध हिये; अध्यवसाय विशेषें करी यहण रेला जे भेना दलिक, तेर्रेनी स्थित एटले जे कालनो नियम, तेने स्थितिबं ध हिये; मेना पुजलोना नाऽग्रुन अथवा घाती अघाती जे रस तेने अ नागबंध अथवा रसबंध हिये; अने स्थित तथा रसनी अपेक् विना कम्पुज लोना दिल ोनुं जे यहण करनुं, तेने प्रदेशबंध किह्ये नक्तंच " विइ बंध दलस्स विई, पएसबंधो पएस गह्णं जं; ताणरसो छाणुनागो, तस्समुदार्ड पगइवंधो " बीजे वेकाणे पण हां वे:- "प्रकृतिः समुदायः स्यात्, स्थितिः कालावधारणं; अनुनागो रसः प्रोक्तः प्रदेशो दलसंचयः "ए उक्त चार प्रकारते मोखगस्स दिई ता के॰ मोदकना दृष्टांतेकरी समजी खेवा, ते आ प्रमाणे-जेम वातरोगने हरण करनारा इव्यथी बनावेलो जे मोदक होयहे, तेनी वातरोगनो नाशकरवानी प्रक ति खयवा खनाव होयहे; पित्ररोगा पहारक इव्यथी वनेला मोदकवडे पित्तनो उ पश्म थायहे; अने कफ रोगनाशक इव्यथी उत्पन्न थएला मोदकथी कफनोध्वंश थाय है: एवोजे खनाव तेने प्रकृति कहिये; ते मोदक कोइ एक दिवस कोई वे दिवसं, एम यावत् कोइ एक माससुधी वगडी न जतां जेमनो तेमज रही शके हे: पढी विनाशपामें है, ए तेनो स्थितिकाल कहिये; ते मोदकने विषे स्निग्ध तथा मधु रादिक रस एक गुणो, दिगुणो तथा त्रिगुणो इत्यादिक जे होचने तेने रनवंध कहि ये: अने ते मोदकमांना कोईमां एक प्रमृति एटले एक पत्नी. कोईमा वे पत्नी तथा कोइ मां त्रण पती एम यावत् कणिकनु प्रमाण होय तेने प्रदेशवंथ कतिये: एवीज रीते कभेने विषे पण कोइ कर्मनी प्रकृति ज्ञानने आठावान करनारी हांय, कोइ

कर्मनो स्वनाव दर्शनने आवरण करवानो होय, कोइ कर्मनी प्रकृति आनंदने दे नारी होय ने कोइ कर्मनो स्वनाव सम्यक् दर्शनादिकनो विघात करवानो होय है, तेने मेप्रकृति कहिये. तेज मे कोइ त्रीश कोटाकोटी सागरोपमसुधी, अने कोइ सित्तेर गेटाकोटी सागरोपम सुधी इत्यादि टकी शके हे, तेने कम्मेनी स्थिति कहिये; ते कमेनेविषे कोईमां एक वाणीयुं, कोईमां बेवाणीयुं, अने कोइकमां त्रण वाणीयुं रस होयं हे, ते अनुनागबंध कहियें, अने तेज कमेने विषे कोईमां प्रदेश अव्यव होय, कोईमां बहु, कोईमां बहुतर तथा कोईमां बहुतमरूप इत्यादि प्रदेशोनो संचय होयहे, ते प्रदेशबंध कहेवायहे. सूलपगइ अन्न के० ए कमेनी मूल प्रकृति सामान्यरूप आव हे, अने उत्तर पगई अडवन्नसय नेयं के० उत्तर प्रकृति विशेषरूप एकशोने ज्ञवन हो. एज एकसोने अठावन कमे प्रकृति कहेवायहे, हवे मूल प्रकृति आवनां नाम तथा ते एकेकना जेटला उत्तर नेदहे ते कहेहे.

इह नाण दंसणावर, णवेश्य मोहा नाम गोत्र्याणी॥ विग्घं च पण नव इत्र, ठवीस च तिसय इ पण विहं॥ २॥

थी—इहके ए प्रवचनने विषे कमें एटला प्रकारनुंछे. इहां कमेपद गायामांहे नथी, माटे उपचारथी लहीए. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय,वेदनीय,मोहनीय, आ यु, न , गोत्र तथा विग्धंचके ए खांतराय, ए आठ मूल प्रकृति छे. तेमां प्रथम ज्ञानावरणीय कमेनुं विवेचन विशित छे—जेणेकरी वस्तु जाएयामां आवे अथवा जेणेकरी वस्तुनी इयत्ता एटले परिमाण थाय, तेने ज्ञान कहिए; अथवा क्रिमें ज्ञान कहिए; अथवा सामान्य विशेषात्मक वस्तुनेविषेविशेष ग्रहणात्मक जे बोध तेने ज्ञान कहिये; अने जेणे करीने देखाय तेने दर्शन कहिये; अथवा हृष्टीने दर्शन कहिये; अथवा सामान्यविशेषात्मकवस्तुनेविषे सामान्य ग्रहणात्मक जे बोध तेने दर्शन कहिये; तथा जेणे करी विशिष्ट, आबादिए तेने आवरण कहीए; अथवा आवरे, आबादे तेने आवरण कहिये. आवरणमुं रूप आवुं छे:— मि प्यात्वादिकना मलापेकरी जीवने व्यापारे आकर्षण करेली कर्मवर्गणा मांहेलो विशिष्ट पुजल समूह तेने आवरण कहीए, तेमांहे जे ज्ञानमुं आठादन करेले, ते ज्ञानवरणीय कमें कहेवायले. अने दर्शनमुं आठादन करेले, ते वर्शनावरणीय ने वेदनीय कमें कहिये, ययि सर्व कर्मीनो अजनव करायजले, तथी सर्व कर्मी वेदनीय कमें कहिये, ययि सर्व कर्मीनो अजनव करायजले, तथी सर्व कर्मी वेदनीय कमें कहिये, ययि सर्व कर्मीनो अजनव करायजले, तथी सर्व कर्मी वेदनीय कमें किर्मी व्यापार कर्मीनो अजनव करायजले, तथी सर्व कर्मी वेदनीय कमें किर्मी वेदनीय कर्मी करियो, ययि सर्व कर्मीनो अजनव करायजले, तथी सर्व कर्मी वे

दनीय होवा जोये तथापि पंकजादि शब्दनीपते वेद्य शब्द रूढिविषय है; माटे साता था असा । कर्मज वेद्य होवाथी एनेज वेदनीय हियेः पण शेषं कर्मने न हीये: या जाणनारा प्राणीप्रत्ये मोह उपजावे सदसिववे थी जे वि ल करी नाखें तेने मोह कहिये; अने एज मोहनीय कर्म हेवायहे. तथा जेथीं ग त्यंतरनेविषे जबुं थायने तेने आधु कहेने; अथवा पोते रेला कमना वशे प्राप्त थएली जे नरकादिक डुर्गति तेमांथी निकलवानी इज्ञा करनारो प्राणी प्रतिबंध ताने पामे. अर्थात् जे त्यांथी निकलवा न दिये ते आयु हेवायहे. अथवा नवां तरने विषे जीवोने जे निश्चये चदय आवे तेने आयु किह्ये. यद्यपि सर्वे मे च दय आवेडे, तथापि आयुष्यनी कांइए विशेषता होयडे. केमके, बीजां बां धेलां सर्व कम कोई तेज जवमां छद्यें आवेते, कोइकवली प्रदेंशे छद्ये री चंक कीधां ते जन ांतरनेविषे विपाकोदयेकरी उदय आवता नथी, अने आयु कर्मनेविषे एम नथी जे नवनुं आयु बांध्युं होय तेज नवमां नोगवायहे एटखे नुष्य नव वेदता थ । जो देवतानुं आयुष्य बांध्युं होय तो ते कांइ मनुष्य नवमां वेदाय नहीं, किंतु अवस्य जन ांतरेज वेदाय. आयुष्यना उदयनी विवक्ता विशि धकी कहीं हो. पण प्रदेश चकी नची कही . ते विशिष्टपणुं तो ते आयुष्यना सज्जाव व र्चन थकी होयने अथवा जेनो उदय थयाथी तन्नवयोग्य यावत् रोष कमे उपनोग पणे आवी त्राप्त थाय तेने आयु हिये. तथा जे जीवप्रत्ये गति जाति प्रमुख पर्यायना अनुनवने करे तेने ना कमे किह्ये. तथा जे एोकरी आत्माने उंचनीच शब्देकरी बोलवायने ते गोत्रकमें कहिये. तथा जेऐकरी दानादिक लब्धिनो नाश थायहे, अथवा जे उक्त लब्धिनो विशेषेकरी नाश करेहे तेने अंतराय कर्म कहीये.

तेमां ज्ञानावरणीय, पण के॰ पांच प्रकारनुं हो, दर्शनावरणीय नव के॰ नव प्रकारनुं हो, वेदनीय इके॰ वे प्रकारनुं हो, मोहनीय खडवीस के॰ छानवीश प्रकारनुं हो; खायु चन के॰ चार प्रकारनुं हो, नामकमे तिसय के॰ एकशोने त्रण प्रकारनुं हो; गोत्र इके॰ वे प्रकारनुं हो; खने खंतराय कमे पणविहं के॰ पांच प्रकारनुं हो, एवी रीते मूल खान प्रकृतिनी नत्तर एकशोने खनावन प्रकृति थायहे.

आशंका-एवाअनुक्रमधी ज्ञानावरणादि कर्मोनो उपन्यास कखानुं कांइ प्रयो जन हे के स्वानाविक एवो अनुक्रम आवी गयोहे?

उत्तर-अनुक्रम करवानुं प्रयोजन ने ते आ प्रमाणे:- अहीं ज्ञान तथा दहीं न ए जीवनुं खतत्व नूत नेः केम के, ए विना जीवत्व कहेवाय नहीं. जीव चेत ना लक्ष्णवंत है. ते चेतना लक्ष्ण ज्ञान तथा दर्शनना अनावे के संनवे, तथा ज्ञान अने दर्शनमांहे पण ज्ञान प्रधान है. जे ज्ञानेकरी सकलशा थि विचारनी संतित प्रवर्ति तेमाटे अथवा सर्व लिध्ध साकारोपयोगे उपयुक्त जीवने उपजे है. पण निराकारोपयोगे एट दे दर्शनोपयोगे उपयुक्त जीवने न उपजे. यतः सवाउ ल दी सागारोव जोव उत्तरस्त नो अणागारोव जोव उत्तरस्त के विनर्भक्त जीव थाय है, ते समयें जीव ज्ञा न प्रधान है. अथवा जे समयें सकल कमे विनिर्भक्त जीव थाय है, ते समयें जीव ज्ञा नोपयोगोपयुक्त होय है, अने दर्शनोपयोग तो दितीय समयमां थाय है, तेमाटे ज्ञा न प्रधान है, तेनुं जे आहादन करनारुं ते ज्ञानावरणीय कमे है, तेने सर्व कमेमां प्रथम गण्युं है; अने ज्ञानोपयोगयी पतित जीवने दर्शनोपयोगनेविषे अवस्थान है, तेमाटे ते ज्ञानानंतर दितियस्थाने दर्शनावरण कमें गण्युं है.

ए ज्ञानावरण तथा दर्शनावरण कर्म पोताना विपाकने उदय करता थका यथा योग्य अवश्येकरी वेदनीय कर्म विपाकना उदय ' निमित्तनूत थायहे, ते दे खाडेहे—ज्ञानावरणीय कर्मप्रत्ये उपचयोत्कर्षथी, प्राप्त विपाकथी अनुनवतो थको सुद्धा तथा सुद्धातर वस्तुनो विचार करवामां पोताने असमर्थ जाणतो थको जी व खेदने पामेहे. तेमज वही सकत लोको ज्ञानावरण कर्मना क्योपशमने लीधे पाटव एटले चतुर थईने पोतानी बुद्धिश्वी सुद्धा तथा सुद्धातर वस्तुविचार करवाने समर्थ दोवाथी सुखने वेदेहे. एवीरीते वेदनीय कर्मनुं निमित्त कारण ज्ञानावर णीय कर्म हे तेप्र योज अतिनिबंद दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी प्राणी जात्यंथा दि थयो थको, वचनने अगोचर एवा इःखसंदोह एटले इःखना स दायने नुनवेहे. तेमज दर्शनावरणीय कर्मना क्यायेश्याचिध व सुत्तमूह एटले नि रंबने सम्यक् प्रकारे अवलोकन कस्ताथी प्राणी अमंद आनंदसं दोह प्रते अनुनवेहे; तेमाटे वेदनीय कर्मनुं निमित्त कारण दर्शनावरणीय कर्म पण हे. ज्ञान दर्शनावरण कर्मनुं वेदनीय कर्म वेद्यहे तेमाटे वेदनीय कर्म प्राणं हे स्वावरणीय कर्म पण हरीनावरणीय कर्म पण हरीनावरणीय कर्म ने वेदनीय कर्म वेद्यहे तेमाटे वेदनीय कर्म प्राणं हरीनावरणीय कर्म प्राणं हरीनावरणीय कर्म पण हरीनावरणीय कर्म ने वेदनीय कर्म वेदहीय कर्म

वेदनीय कर्मने विषे पण इष्ट अने नीष्ट विषयना संबंधयी सुख तथा इःख नो जे अनुनव थाय हे ते वेदनीय सुं लक्षण है; ने विषयने विषे इष्ट ने निष्टता पणु ते राग अने ६ष जनित हे अने ते राग देष तो मोह हे हे. तेमा टे वेदनीय कर्म थी अनंतर मोहनीय कर्म चोथुं कह्यं है:

मोह्मूढ प्राणी बहु आरंनरूप परियहणी कमोदानमां आश थईने नरकादि चुं आयुष्य वांधेवे, माटे मोह्नीय कम्मीनंतर पंचमस्थाने आए कमे गए्युंबे. नरकादि आर्थुप्यनो उदय आव्याघी अवश्यपणे नरक गत्यादिक नाम कर्मनो उदय घायने माटे आयुष्पानंतर, नामकर्म नुतुं गुपुं ने

उंच गोत्रोत्पन्न जीवने प्रायेंकरी दान तथा जाजांतरायादि कमेनो क्य होय हे, केमके, राजादिक जे उंच कुलवान कहेवायहे, तेउनेविपे दान तथा लाजादि क दीवामां आवेहे, जो अंतराय कमेनो क्य न थयो होय तो दान तथा लाजा दिकनो संनव थाय नहीं. माटे घणुं करी दान तथा लाजांतरायादि कमें। उत्तम कु जनेविपे क्यनेज पामेला होयहें. तेमज नीच गोत्रोपन्न प्राणीनेविपे प्रायेंकरी दान तथा लाजांतराय कमेनो उदयज होयहें. केम के, नीच गोत्रोपन्न मनुष्य दिश् हो वाथी त्यां दानादिक दीवामां आवतुं नथीं. एरीते गोत्र कमेनो उदय थया पही अंतराय कमेनो उदय होवाथी गोत्रकमानंतर आवसुं अंतराय कमे गएयुंहे. एवी रीते कमीं नुक्रम वर्णन सप्रयोजन हे.॥ ३॥

" हवे यथोदेशं निर्देशः" एन्यायेंकरी एटले प्रथम जेवो मनमां संकेत थायते, तेवुं प्रसिद्ध पणे कथन अथवा स्पष्टीकरण थायते; एवो न्यायते. तेन्यायेकरी प्र थम पांच प्रकारनुं ज्ञानावरणीय कमे कहेते.

> नइ सुय उही मण के,वलाणि नाणाणि तच मइनाणं॥ वंजण वग्गह चठहा, मण नयण विणिदिय चठका ॥ ४॥

अर्थ-मूलसूत्रमां जेनां नाममात्र कह्यां ठे, तेर्चनीताथे प्रत्येके ज्ञान शब्द जो डीने आवीरीते गणना करवी-मइ के० मतिज्ञान, सुय के० अत्ज्ञान, र्चही के० अवधिज्ञान, मणके० मनःपर्यवज्ञान, तथा केवलाणिके० केवलानी एटले केवल ज्ञान ए पांच नाणाणि के० ज्ञानठे ते जाणवां. 'पर्कदेशे परसमुदायोपचारात्, एटले पटनो एक देश होय तोपण आखा पदनो उपचार करी लेवो एवा न्यायठे। ए प्रमाणे मूलमां मन शब्द ठे तथी मनपर्यवज्ञान जाणी लेवुं.

त त के तत्र जाएं तेने मितकहिये जेथी मनन थाय अथवा जे मनन करें तेने मित कहिये; अथवा इंड्यि तथा मनो हारे करी नियत वन्तने जेएकि जि ए। ए। अथवा मनाय तेने मित कहिये। योग्य देशनेविषे अवस्थिन वन्तु विषयक इंड्यि मनोनिमिन जे आत्माने अवगमविशेष एटले कोईक वेकाएं कोई वन्तु

पडी होय, तेने विषय करनारां मन तथा इंडियो होयहे, तेमां निमित्त कारण इतन हो, ते इतन यथार्थ आत्माने थयुं होय तेने मित्झान किह्ये. एनेज आगममां अनिनिबोधिक झान कह्यं हो. तेविषे नगवान् देविह्माश्रमण ए मणे आम कह्यं हो.—''नाणं पंचिवहं पन्नतं, तंजहा आनिणि बोह्यि नाणं. मुय नाणं, डिहनाणं, मणप्यवनाणं, केवलनाणं." अत्र आनिनिबोधिक झाननो अर्थ आम करेलोहे—अनिजपत्तर्ग हो, तेनो अर्थ अनिमुख एटले सन्मुख एवो थायहे; नि शब्दनो नियत एटले निश्चित अर्थ यायहे; एवी अनिमुख नियतके वन्तु योग्य देशावस्थान अपेक्षी इंडिय मनोनिमित्त स्वस्वविषयनी अपेक्षाए जे बोध थायहे तेने अनिनिबोधक झान किह्ये.

श्रवणं श्रुतम् एटले जे संजलाय तेने श्रुत कित्ये. श्रुनिलापेष्ठावित जे शर्य तेने श्रुत्य करवानी जे जपलिब्ध विशेष हेतु होय तेने श्रुत कित्ये. कंबुशी वादिमान, प्रशुबुधोदराद्याकार, जलधारणादिक अर्थ कियाने समर्थ, एवी जे वस्तु ते घट शब्देकरी बोलायके. श्रदीं वस्तु वाच्य के ने शब्द वाचक के, माटे जक वस्तु वाच्यके, श्रुने घट शब्द वाचकके एवा वाच्य वाचक संवंधेकरी त्रिकाल साधारण समान परिणाम शब्दार्थ पर्याय श्रालोचनानुसारी इंड्य मनोनिमिन्न जे श्रातमानुं श्रुवगम विशेष तेने श्रुतकान कित्ये.

इंडियादिकनी अपेक्षाविना आत्मानेविषे जे साक्षात् अवधान एटले अर्थ य दण याय हे, तेने अवधि किह्ये. अने साक्षात् अर्थनुं यहण होवायी एने प्रत्यक् झान पण कहेहे. यडकं नंद्यऽध्ययने—" नोइंडियपचरकं तिविहं पन्नतं, तं जहा, डिह्नाणप रकं, मनपक्कवनाण पचरकं, केवलनाणपचरकमिति." अय वा अव शब्दनो अर्थ अधः एवो समजवो. एटले जेपोकरी अधो एटले नीचो वि स्तृत जे वस्तु तेने जाणीयें तेने अवधि किह्ये. अथवा अवधि शब्दनो अर्थ म र्यादा वाचक थायहे; एटले रूपी इव्यने विषेज जाणवानी प्रवृत्तिहे जेनी, एवी मर्यादा, उपलक्ति जे झान तेने अवधिझान किहये.

मनपर्यव ज्ञाननो अर्थ आ प्रमाणे-पिर शब्दनो अर्थ सर्वतो नाव वाचक है. अव शब्दनो अर्थ जाणवा वाचकहे. केमके अवन वेदन इत्यादिक शब्दो पर्याय वा चक है. अर्ही परिअव तेनो पर्यव थायहे. तेथी मन ं जे सर्व थकी जाण हुं तेने मन पर्यव किह्ये, अथवा मनःपर्यव ज्ञान किह्ये, अथवा मनःपर्याय ज्ञान पण एनेज किह्ये त्यां एवो शब्दार्थ किरए जे संज्ञी जीवे काययोगे करी यहण करेली जे नःप्रायोग्य वर्गणाइव्य जेने चिंतनीय वस्तुनेविषे चिंतनीय पणे व्यापास्रो एवो जे नोयोग, तेने मनपणे परिणमावीने जे पर्यायोनुं आलंबन कखुं छे, तेने न किह् यें. तेना पर्याय एट से समस्त प्रकारे जाण बुं तेने मनपर्यव कहीए अथवा जे मन चिंतनानुगत परिणाम तेनुं जे ज्ञान तेने नःपर्याय किह्ये. अथवा आत्माए क री वस्तु चिंतननेविषे व्यापास्रा जे न तेने पर्याय के जाणे. तेने मनःपर्याय हिये. तत्संबंधी जे ज्ञान तेने मनः पर्याय ज्ञान किह्ये.

केवल एटले एक, यीत् जे मित आदिक ज्ञाननी अपेक् विनानं होय तेने केवल ज्ञान कित्ये. " नर्छमिन्नार्ज मिन्निएनाए। " इति वचन प्रामाएयात्.

श्राशंका— त्यादिक क्ञान पोतपोताना श्रावरणना क्योपशम नावे पण प्र गट षायहे; तो निःशेप सस्व श्रावरणनो क्य षवाने लीधे सर्व प्रकारे सारीरोते मत्यादिक क्ञान प्रगट षवानो संनवहे. चारित्र परिणामनी पेरे जेम चारित्रावरणीय कर्मना क्योपशमे सामायकादिक चारित्र प्रगट षायहे. श्रने चारित्रावरणीयनो निः शेपपणे क्य षयाथी विशेपताथी यथाख्यात चारित्र प्रगट थायहे. परंतु केवल क्ञान उत्प थयाथी कांइ चारित्र जतुं रहेतुं नथी. तेमज केवल क्ञान उत्पन्न थ याथी ति तथा श्रुतादिकनो पण श्रनाव संनवे नही. उलटुं विशेषताथी संपूर्ण प्रगट षायहे. कह्यं हे के, "श्रावरण देसविगमे, जाई वि ंति मइसुयाईणि; श्रावरण सब विगमे, कह्ताइ न दुंति जीवस्स."

उत्तर-श्रहीं जेम घनाघन पटलांतिरत एटले मेघने श्राहे रहेलो जे सहस्र नानु एटले सूर्य तेनुं श्रपरांतरालवार्ते जे कटकुटचादि श्रावरण तेना विवरांतर गत जे प्रकाश ते घटपटादिक वस्तुने प्रकाश है. एटले एक तो पूर्ण जलयी नरेलो मेघ श्राहे श्रावेलो तेथी पूर्ण प्रकाश पड़ी शके नहीं, तेमां वली कुटचादिक त्राटी नी नींतने श्राहे जे पदार्थो होय तेचेनी कपर जेम यथार्थ प्रकाश पड़ी शकतां नथी. ते वस्तु केटलाएक श्रंशे देखाय श्रने केटलाएक श्रंशे न देखाय श्रयया थोड़ी देखायही, तेम केवल झानावरणीय कमेथी श्राहत जे केवल झान, नेमां श्रपरांतरालवर्ती मितझानावरणीय श्राहित तेचेना ह्योपश्रमक्षण जे विवर एटले स्वा हिझो, तेचेमांथी गएलो प्रकाश जीवाजीवादिक वन्तुने प्रकाशहेत. में स्थी रीते प्रकाश करतो थको मितझानादि लक्कण तेहहुं तेदहुं स्थांपश्रमाहे रूप श्र निधानप्रत्ये पामेहे. ते कारणमाटे जम सकल घनपटन तथा प्रहरूरणित्य श्राह रणनो नाश थया पठी तथाविध सूर्यनो प्रकाश नेया श्रम्पट नशी श्राह रणनो नाश थया पठी तथाविध सूर्यनो प्रकाश नेया श्रम्पट नशी श्राह रणनो नाश थया पठी तथाविध सूर्यनो प्रकाश नेया श्रम्पट नशी श्राह रणने स्व

सर्वीतमपणे स्पष्टरूप अन्यरूपपणे नासे हे. तेम अहीं पण सकत केवल ज्ञानाव रण तथा मतिकानावरणादि आवरणोनो विलय थयाथी, तथाविध मतिकानादि संक्षिक केवल काननो प्रकाश नथी होतो, किंतु सर्वात्मपणे यथावस्थित वस्तुनो परिवेदक स्पष्ट अत्यरूपन नासे हो. वक्तंच श्रीपू ज्येः "कडविवरागय किरणा, मेहं तरियस्स जह दिणेसस्तः ते कडमेहावगमे, न हुंति जह तह इमाईपि." अन्य ब्याचार्योए पण कद्यंते.- "मलविद्मणेर्व्यक्ति, र्यथा नेक प्रकारतः ॥ कमेविदात्मक इप्ति, स्तयानेकप्रकारतः ॥ १ ॥ यथाजात्यस्य रत्नस्य, निःशेषमलहानितः॥ स्फुटै करूपा निव्यक्ति, विंक्ति स्त ६दात्मनः" ॥२॥ अन्य आचार्य एनुं आवी रीते समाधा न करें वे कहें है-सयोगि केवलीने विषे पण, मित श्रुतादिक ज्ञान हे, पण ते केवल फलग्रन्यहे, तेमाटे तेनी विवक्ता करता नथी. जेम सूर्यनो उदय थया पही पण नक्त्रादिक होयहे, तोपण ते निःप्रयोजक होवाधी विवक्ता करवायोग्य नथी. तेम अहींपण जाणी जेंबुं. उक्तंच "अन्नआनिणिबोहिय, नाणाईणिविजिणस्त विखंति; अफलाणियसूरुदये, जहेव नरकत्तमाईणि." अथवा केवल शब्द ग्रुद्ध वा चकर्ने एटले आवरणमलकलंकपंक रहित तेने केवल ज्ञान कहीए. अथवा केव ल शब्द संपूर्ण श्रर्थ वाचक हे. केमके, प्रथमथीज तदावरणकर्मनो निःशेपपणे नारा थयोबें तेषोकरी संपूर्ण उपनुंखे तेमाटे केवल ज्ञान कहेते. अथवा केवल शब्द असाधारण वाचकने अन्य कोइने सहश नथी. जे सामान्य न होय तेने श्रसाधारण किह्ये, सामान्य पदार्थ ते साहरय होयहे, तेनो ज्यां श्रनाव होय तेने असामान्य अथवा असाधारण कहिये. केवल ज्ञान जेवो बीजो कोई पदार्थ नथी, तेथी अनन्य सहराहे, माटे तेने केवलज्ञान किह्ये. अथवा अनंतार्थ वाचक केवल शब्दने केमके, अनंतक्षेय पदार्थीने जाएो माटे तेने केवलज्ञान किह्ये. अथवा निव्यीघाताथी वाचक केवल शब्द्वे, केमके लोका लोकनेविपे क्यां पण एनो व्याघात यतो नथी तेथी केवलकान कहीए. एवी रीते ए पांच ज्ञाननो शब्दार्थ जाणवो. अथवा केवलंच तत् ज्ञानंच केवलज्ञानं. यथाव स्थित नूतनवद्गावि नाव खनाव नासि ज्ञानमिति नावनाः एटखे केवल एवं जे ज्ञान ते केवलङ्गान एटले नूत नविष्य तथा वर्तमानकालनो यथावस्थित नाव जेथी प्रगट याय तेने केवल ज्ञान कित्ये.

आरांका-पांच ज्ञानोनो एवा अनुक्रमे करी उपन्यास करवा ं ग्रुं कारण हतुं? उत्तर-ए पांच ज्ञानमां मित अने श्रुत ए बन्ने ज्ञान एकत्र नण्यां के केम के एउना परस्पर खामी, काल, कारण, विषय तथा परोक्ष ए पांच धर्म सरखाते. जे के जे मतिक्ञाननो स्वामी है; तेज श्रुत क्ञाननो स्वामी है; अने जे श्रुतक्ञाननो स्वा मी तेज "मतिकाननो स्वामी. जन्न महनाणं तन्न सुयनाणं, जन्नसुयनाणं तन्नमइ नाणं इत्यादि, वचन प्रमाएयात् । हे स्वामी साधर्म्य हे. जेटलो तिज्ञाननो स्थि ति । जिं ने तेटलोज श्रुतकाननो स्थित । ज हे. ते प्रवाहनी पेक्सए जो छेई ये तो खतीत खनागत तथा वर्च ानरूप सर्व काल हे, खने खप्रतिपाती एक जी वनी अपेक्षाए लैये तो साधिक ढासर सागरोप प्राण काल है। उक्तंच "दोवा रे विजयाइसु, गयस्स ति ुए छद्दव ताई; छइरेगं नर नवियं, नाणा जीवाण सवदा." एवीरीते काल साधम्ये हे. तथा इंडियरूप निम्ति कारणवान मतिका न हे, तेम श्रुत ज्ञान पण इंड्यि निमित्त हे. एवीरीते कारण साधर्म्य पणुं हे. न था जे मतिकानना आदेशयी सर्व इव्य विषय है, तेमज श्रुत कानना आदेशयी पण वे इव्य विषय होवाथी विषय साधर्म्य है. अने जेम मितिक्वान परोक्त है, तेमज श्रुतंज्ञान पण परोक्त होवाथी परोक्त साधर्म्य हे. ते कारण माटे खाम्यादि साधर्म होवाथी ति तथा श्रुत नियमधी ए त्र थन करवा योग्य हे तथा प्र थ ए बे ज्ञान होय तोज पृथात् अवधि ।दि बीजां ज्ञानो उत्प थाय हे, ाटे अवधि ज्ञानादि श्री पहेला गएया है. उंच "जं सामि काल ।रण, विसय परोक्तत्त्योहिं तुझाई; तम्नावे सेसाणिय, तेणाईए मइ सुयाई. "

शं ा ति ने श्रुत ए बे ज्ञानो ं तिज्ञान प्रथ गर्खुं ने श्रुतज्ञान पढ़ी गर्खुं ते रण ग्रुं?

उत्तर-श्रुतज्ञान तिपूर्व हो प्रय सर्व वयहादिरूप जो मतिज्ञान उ दय पामे तो पढ़ी श्रुतज्ञान होयहे; टे मतिज्ञान प्रथम कहांहे एविषे श्री जि नज्ञज्ञाणि क् श्रिमण ।म कहेहे- " मइ पुर्व सुय नं, न मई सुयपुद्विया वि सेसोऽयं; पुर्व पालण पूरण, जावा जं मई तस्स." तथा नंदि अध्ययननी चू णि । पण कहांहे-" तेसुविजमइ पुर्व सुयंति किञ्चापुर्व मइनाणं कयं तिप्प हर्नसुयंति.

शं ।—स्वामिलादिकेकरी ज्यारे ए बे झानो छं अनेदपणं हे, त्यारे बन्ने छं एकपणं हरे हो. केमके जो कोइ बीजो हेतु होए तो बे कहीए माटे जेद छं कोई रण नथी: अने जेदताना हेतु तो कहेला है. तेथी जेद संनवे नहीं

उत्तर-ए आशंका युक्त है, केमके खाम्यादि नेदना हेतुनो अनाव है, यद्यपि खाम्यादिक हे समानहे तथी अनेदना है,तथापि लक्ष्णनो नेद होवाथी बन्ने छुदां मानवां जोये हे. ते छा प्रमाणे- मन्यते योग्योर्थोऽनयेतिमतिः एटले जेथी योग्य अर्थ जणाय तेने मित कहिये. अने अवणं श्रुतं एटखे जेथी संनलाए तेने श्रुत क हिये. एवीरीते लक्ष्णे करी चेद हे. तथा हेतुफल नावेकरी चेदहे. केमके, मति हान ते श्रुतज्ञाननुं कारण हे, अने श्रुतज्ञान मितज्ञाननुं कार्यहे. जेना उत्कर्पाप कर्षेंकरी जेनो उत्कर्पापकर्प थाय ते तेनुं कारण होयहे. जेम मृहिपंमना उत्कर्पाप कर्पेकरी घटनो उत्कर्षापकर्प यायने, माटे मृत्पिम घटनुं कारणने, तेम अत्रिपण घणा ग्रंथो सांनव्यायी जे ग्रंथना विषय स्मरण अथवा ईहापोहादिक अधिकतर प्रवृत्ति थायहे, ते यंथ स्फुटतर प्रतिनासे हे. परंतु बीजा यंथो तेवीरीते स्प्रपणे नासता नथी, माटे मतिङ्कान ते शुतङ्काननुं कारण हे, अथवा चेदेकरीने मति तथा श्रुतनो चेद हे. मतिकान खुवावीश प्रकारतंहे, छने श्रुतकान चौद प्रकारतंहे, अथवा इंडियविनागे करी चेद हे. श्रुतकान श्रवऐंडिय प्रनवहे. छने शेपेंडीय प्रनवमतिक्ञानने. ते पूर्वीतरगत गायाए करी कह्यंने, यतः " सोइंदिनेवल बी, होइ सुयं सेसयंतु म्इनाणं; सुनूणं दबसुयं, अस्तरलंनाय सेसेसु. " अथवा मति क्रान वल्क समानहे; तथा कार्णहे, अने श्रुतक्रान ग्रुंब समान है तथी कार्यहे. अ थवा मतिकान अनक्रिके; अने साक्रिपणर्के. केमके, अवग्रह कान ते अनक्र हो यहे. ते अनिर्देश्य सामान्यमात्र प्रतिनासात्मकपणे करी निर्विकल्प रूपहे. अने इहादि ज्ञान ते साक्राबे, ते परामशीदिरूपपणे अवस्यवर्णरूपने, अने श्रुतज्ञान तो केवल साक्रजने. केमके अक्रविना शब्दार्थ पर्याया लोचन पणुं उपजे नहीं। माटे मिति अने श्रुतकानमां चेद है. अथवा मितकान मूकसमान है, केमके, ते पोता नेज प्रत्यय उपजावें इं अने श्रुतज्ञान ते अमूक समानवे; केमके ते पोताने तेम परने पण प्रत्यय उत्पन्न करेते. एटले ते परने दिशुं जायते माटे ए बन्ने ज्ञानमां नेदवे, यदाह नाष्यसुधांनोनिधिः "लखण नेयाहेक, फलनाव उनेय इंदिय वि नागाः; वग्गरकरमूयेयर, नेयाने च मइस्रयाणं. "

अवधिकान त्रीजं गएं हो तेनो हेतु आ हे-काल, विपर्यय, स्वामि तथा ला न ए चार धमें नुं ते होनी साथे सरखाएएं हो. तेमाटे मित श्रुत कानांतरे अव धिकान कहां हो ते कहे हो. तेमां एक अप्रतिपाती एक जीवने मित तथा श्रुतनी पे हे साधिक हासन सागरोपम कालसुधी अवधिकान रही शके हे तेथी काल साध मी हो. तथा मिष्यालनो हह य थयाथी जेम मित अने श्रुत विपर्यय नावने पा मेहे, तेम अवधिकान पण विपर्यय नावने पामेहे. तेथी मित अकान, श्रुत अ इान तथा विजंगता पामें एवी रीते विपर्यय साधर्म्य । उक्तंच " आद्यत्रयम इानमिप्नवित मिण्यात्वसंयुक्तमिति" जे मित तथा श्रुत इाननो स्वामि तेज अवधिक्षाननो स्वामि होवाधी स्वामी साधर्म्य है. तथा देवतादिक जे विजंग इान वान होयहे, तेउने ज्यारे सम्यक्तनी प्राप्ति थायहे; त्यारे युगपत् मित श्रुत तथा अवधि ए त्रणेनो लाज थायहे, माटे लाज साधर्म्य है.

मनःपर्यव ज्ञान चोष्ठं गण्युंछे, तेनो हेतु आ छे—ढद्मस्य, विषय नाव तथा प्रत्यक् ए चार धर्मोनुं तेनि साथे सरखापणुं छे जेम अवधिज्ञान ढद्मस्यने घायछे, तेम मनःपर्यव ज्ञान पण ढद्मस्यने घायछे; माटे ढद्मस्य साधर्म्यछे. जे अवधिज्ञान रूपीड्व्य विपयकछे,तेम मनःपर्यव ज्ञान पण रूपीड्व्यविपयक छे, तेयी विषय साधर्म्य छे. जेम अवधिज्ञान क्योपश्चिक नावेछे. तेम मनःपर्यव पण क्यापेश्चिक नावेछे; माटे नावसाधर्म्यछे, तथा जेम अवधिज्ञान प्रत्यक्त्छे, तेम मनःपर्यव ज्ञान पण प्रत्यक्त् छे,माटे प्रत्यक्त् साधर्म्यछे. उक्तंच "कालविव य सामि, त्रान साहंम जवहीतनो; माणसमिनो छ्यम, इविसय नावाइ साहंमा॥१॥

तथामन्पर्यवज्ञानांतरे केवलज्ञान कहां हो ते केवलज्ञान सर्वोत्तम हो, माटे अथवा अप्रमत्तयतिरूप स्वामिसाधर्म्य हो. माटे अथवा सर्वने अवसाने लान होयहे. केम के मित्ज्ञानादि चार ज्ञानो जे हे ते वस्तुनो देशथी परिज्ञेद (केटलाएक अंशे परिमाण) करनार हो, अने केवल ज्ञान जे हो, ते स कल वस्तु स्तोमपरिज्ञेदक (एक समयने विषे विषय समूदनुं परिमाण करनारो) हो. सर्वनुं मस्तकरूप होवाथी सर्वोत्तम हो तेथी हेवटे कहां हो. जेम मनपर्यव ज्ञान अप्रमत्त्वतिने उत्पन्न थायहे, तेम केवलज्ञान पण अप्रमत्त्वतिने उत्प थायहे, तेम केवलज्ञान पण अप्रमत्त्वतिने उत्प थायहे स्वीना चारेज्ञान उत्पन्न थयां होय तेने नियमेकरी सर्व ज्ञानना अवसान (अंत) मां केवल ज्ञाननी प्राप्ति थायहे. माटे सर्वना अंतमां केवल ज्ञान कहां हो. उक्तंच "अंते केवल मुत्तम, जङ्गामित्तावसाण लानाउद्दिर

एविरिति नाममात्रे नाणाणिकेण पांच ज्ञान कह्यां. हवे एउनुं सिवस्तर वर्णन करतां प्रथम मित । तने प्रगट करें हे—कहेता पांच ज्ञानोमां प्रथम मित्ज्ञान अ वावीश प्रकारे हो। एनो हवे पहीनी गायानी साथे संबंध हे। तहमइनाणंकेण तत्र मित्ज्ञान प्रथम वे नेदे थाय हे—एक श्रुतिनिश्रत, बीजो अश्रुतिनिश्रत. तेमां प्रायेकरी श्रुत अन्यासिवना सहज ह्योपशमवशे करी जे उत्पन्न थाय तेने अश्रु तिश्रत कहियें। ते चार प्रकारनुं हे—उत्पात्तिकी बुद्धि, वैनयकी बुद्धि, पारिणामि

मानवां जोये हे. ते छा प्रमाणे- मन्यते योग्योर्थोऽनयेतिमतिः एटले जेथी योग्य अर्थ जणाय तेने मित किह्ये. अने श्रवणं श्रुतं एटले जेथी संनलाए तेने श्रुत क हिये. एवीरीते लक्ष्णे करी चेद हे. तथा हेतुफल चावेकरी चेदहे. केमके, मित क्षान ते श्रुतकाननुं कारण हे, अने श्रुतकान मितकाननुं कार्यहे. जेना उत्कर्पाप कर्षेकरी जेनो उत्कर्पापकर्ष याय ते तेनुं कारण होयहे. जेम मृहिपंमना उत्कर्पाप कर्षेकरी घटनो उत्कर्षापकर्ष थायने, माटे मृत्पिम घटनुं कारणने, तेम अत्रेपण घणा यंघो सांनव्याची जे यंथना विषय स्मरण अथवा ईहापोहादिक अधिकतर प्रवृत्ति थायहे, ते यंथ स्फुटतर प्रतिनासे हे. परंतु बीना यंथो तेवीरीते स्पष्टपणे नासता नथी, माटे मतिज्ञान ते शुतज्ञाननुं कारण हे, अथवा नेदेकरीने मति तथा श्रुतनो चेद हे. मतिकान अवावीश प्रकारतंहे, अने श्रुतकान चौद प्रकारतंहे, अयवा इंडियविनागे करी नेद हे. श्रुतकान श्रवऐंडिय प्रनवहे. अने शेपेंडीय प्रनवमतिक्ञानवे, ते पूर्वीतरगत गाष्याए करी कह्यंबे, यतः " सोइंदिचंवल दी, होइ सुयं सेसयंतु मइनाणं; सुनूणं दबसुयं, अस्करलंनाय सेसेसु. " अधवा मति क्वान वल्क समानते; तथी कारणते, अने श्रुतकान ग्रंब समान ते तेथी कार्यते. अ यवा मतिकान अनक्रके; अने साक्रपणके. केमके, अवग्रह कान ते अनक्र हो यहे ते अनिर्देश्य सामान्यमात्र प्रतिनासात्मकपणे करी निर्धिकहप रूपहे. अने इहादि ज्ञान ते साक्रके, ते परामगीदिरूपपणे अवश्यवर्णरूपने, अने श्रुतज्ञान तो केवल साहरजाते. केमके अहरविना शब्दार्थ पर्याया लोचन पर्णु उपजे नहीं। माटे मित अने श्रुतज्ञानमां चेद हे. अथवा मितज्ञान मूकसमान हे, केमके, ते पोता नेज प्रत्यय उपजावें है; अने श्रुतकान ते अमूक समानहे; केमके ते पोताने तेम परने पण प्रत्यय उत्पन्न करेते. एटले ते परने दीधुं जायते माटे ए बन्ने झानमां नेदले, यदाह नाष्यसुधांनोनिधिः "लखण नेयाहेक, फलनाव उनेय इंदिय वि नागाः वग्गस्करमूयेयर, नेयाने च मइसुयाणं. "

श्रविध्वान त्रीं गएं वे तेनो हेतु श्रा वे—काल, विपर्यय, स्वामि तथा ला न ए चार धर्मों नुं तेर्नि। साथे सरखापएं वे. तेमाटे मित श्रुत झानांतरे व धिक्वान कसंवे ते कहेवे. तेमां एक अप्रतिपाती एक जीवने मित तथा श्रुतनी पे वे साधिक वासव सागरोपम कालसुधी विध्वान रही शकेवे तेथी काल साध म्य वे. तथा मिष्यालनो उदय थयाथी जेम मित श्रने श्रुत विपर्यय नावने पा मेवे, तेम श्रविध्वान पण विपर्यय नावने पामेवे. तेथी मित श्रक्वान, श्रुत श्र इान तथा विजंगता पामें हैं एवी रीते विपर्यय साधम्ये हैं उक्तंच " आद्यत्रय । इानमिपनवित मिण्यात्वसंयुक्तमिति" जे मित तथा श्रुत इाननो खामि तेज अवधिक्षाननो खामि होवायी खामी साधम्ये हें. तथा देवतादि जे विजंग झान वान होयहें, तेउने ज्यारे सम्यक्तनी प्राप्ति थायहें; खारे युगपत् मित श्रुत तथा अवधि ए त्रणेनो लाज थायहें, माटे लाज साधम्य हैं.

मनःपर्यव ज्ञान चोछुं गण्युंछे, तेनो हेतु आ छे-छद्मस्य, विषय नाव तथा प्रत्यक्त ए चार धर्मों तुं तेडेनी साथे सरखापणुं छे जेम अवधिज्ञान छ स्थने धायछे, तेम मनःपर्यव ज्ञान पण छद्मस्थने धायछे; माटे छद्मस्य साधम्येछे जे अवधिज्ञान रूपी इव्य विषयकछे, तेम मनःपर्यव ज्ञान पण रूपी इव्य विषयक छे, तेथी विषय साधम्ये छे. जेम अवधिज्ञान क्योपश्चि नावेछे तेम मनःपर्यव पण क्रायोपश्चिक नावेछे; माटे नावसाधम्येछे, तथा जेम अवधिज्ञान प्रत्यक्त्छे, तेम मनःपर्यव क्रान पण प्रत्यक्त् छे,माटे प्रत्यक्त साधम्येछे. उक्तंच "कालविव य सामि, तलान साइंम वहीतन्तो; माणसमिन्तो छ्उम, खविसय नावाइ साइंमा॥१॥

तथामन्पर्यवज्ञानांतरे केवलज्ञान ह्यं ते केवलज्ञान सर्वोत्तम हे, माटे कह्यं छे ख्रयवा ख्रप्रमत्त्रयित्र स्वामिसाधर्म्य हे. माटे ख्रयवा सर्वने ख्रयसाने लान होयहे. केम के मितज्ञानादि चार ज्ञानो जे हे ते वस्तुनो देशयी परिचेद (केटलाएक ख्रंशे परिमाण) करनार हे, ख्रने केवल ज्ञान जे हे, ते स ल वस्तु स्तोमपरिचेदक (एक समयने विपे विषय समूद्धं परिमाण करनारो) हे. सर्वनुं मस्तकरूप होवाधी सर्वोत्तम हे तेथी हेवटे कह्यं हे. जेम मनपर्यव ज्ञान ख्रप्रमत्त्रयितने उत्पन्न थायहे, तेम केवलज्ञान पण ख्रप्रमत्त्रयितने उत्पन्न थवाधी स्वामि साधर्म्य हे.तथा जेने बीजा चारेज्ञान उत्प थयां होय तेने नियमेकरी सर्व ज्ञानना ख्रवसान (ख्रंत) मां केवल ज्ञाननी प्राप्ति थायहे. माटे सर्वना ख्रंतमां केवल ज्ञान कह्यं हो. उक्तंच " ख्रंते केवल मुत्तम, ज्ञ्सामित्तावसाण लानाउइति

एविशिते नाममात्रे नाणाणिके० पांच ज्ञान कह्यां. हवे एउनुं सविस्तर वर्णन करतां प्रथम मितज्ञानने प्रगट करेंग्रे—कहें जा पांच ज्ञानोमां प्रथम मितज्ञान अ वावीश प्रकारेग्रे. एनो हवे पांची गांचानी साथे संबंधने ता सम्भागंके० तत्र मितज्ञान प्रथम वे नेदे थायने—एक अतिनिश्रत, बीजो अश्रुतनिश्रित. तेमां प्रायेकरी श्रुत अन्यासिवना सहज क्योपशमवशे करी जे उत्पन्न थाय तेने अश्रुतिश्रत कहियें. ते चार प्रकारनं ने—उत्पात्तिकी बुद्धि, वैनयकी बुद्धि, पारिणामि

कीबुद्धि तथा कमे जा बुद्धि. एविषे श्री देवा दिवाचक आम कहे छे:—"सेकितं महनाणं, इविहं महनाणंपन्नतं; तं जहा, सुयनिस्तयं च असुयनिस्तयंच सेकितं असुय निस्तयं असुयनिस्तयं च चित्रयं, कित्रयं परिणामिया; वुद्धी च च विह्या प्रचमानोवल प्रइ." तथा विशेषाव इयकमां पण कह्यं छे— " पुवंसुय परिकिन्मय, महस्त जं संपयं सुयाईयं; तं निस्तिय मियरं पुण, अणिस्त अं मह च च कंतं" ते मांजे सहे जे पोतानी मे ले च प जे ते च त्पित्र विद्या विश्व स्वाकरतां आवे ते वैनियकी बुद्धि, कम्मे करतां च प जे ते कार्मिमकी बुद्धि, अने परिणाम ते दीर्घकाल जुं पूर्वीपर अर्थ जुं अवलोकन ते पारिणामि की बुद्धि. एनं विशेष सहप नंदीसूत्र तथा आव्य स्व इव्ह वित्र सुख्य यक्षी जाण जुं.

पूर्वश्चत परिकर्मित मतिना उत्पाद कालनेविषे शास्त्रार्थ पर्यायलोचन करतां जे उत्पन्न थाय तेने श्रुतनिश्रित मतिक्वान किह्ये. तेना चार प्रकार वे-स्ववयह, ईहा, अपाय, तथा धारणा यडकं "सेकितं सुयनिस्सियं मइनाणं चछिहं पन्नतं तं जहा, जग्गहो, ईहा, खवाय, धारणा " तेमां अवयह वे प्रकारतुं वे-व्यंजना वयह तथा अर्थावयह ए विषे पण कहां है- सेकितं जगाहे, जगाहे इविहे पन्नते तं जहा, वंजणुग्गहे, अत्थुग्गहेय" तेमां जेम प्रदीपवडे घटने प्रगट करिए, तेम जेऐकरी अर्थने प्रगट कराय तेने व्यंजन कहियें. कह्युं हे ''वंजिक्कइजेए हो, यहु बढ़ी वेण वंजणंतंच" व्यंजन ते जपकरऐंडियो जाणवी ते इंडियो पणं कदंब पुष्प, अतिसु क,चंड्,हुरप्ररूप नानाकृति संस्थित जे श्रोत्र घाण,चहु रसना तथा स्परीन लक्ष्ण जाएवी. अथवा शब्द गंध, रस, तथा स्परीपणे परिणामने पाम्यो जे पुजल नो संवात तेने पण व्यंजन किह्ये. माटे व्यंजन उपकरण इंडियो तेणेकरी व्यं जन एटले जे शब्दादिकपणे परिणामने पामेला इव्य तेनुं जे यहण परिन्नेदन तेने व्यंजनावयह कहिये. केम के, एक व्यंजन शब्दनो लोप थयोवे. 'किमपीदं' एटले आ शुं हे, एवो अव्यक्त (अप्रगट) ज्ञानरूप जे अर्थावग्रह यायहे, तेनी पूर्वे अत्यंत अव्यक्ततर (अतिगंतु जे ज्ञान ) होय वे तेने व्यंजनावयह कहिये. ते चार प्रकारतुं वे—ते सूज पाठमांज कह्यं वे के, 'वंजणवग्गह च वहा' एट जे व्यं जनाव्ययह चतुर्थी हे ते आ प्रमाणे-'मण नयण विणिदिय च उक्का, मन तथा नयन एवं विना वाकीनी चार इंडियोने आश्रयी चार नेदे हे एविपे श्री नंदीसूत्र मां कहां वे-" सेकितं वंजणुग्गहे, वंजणुग्गहे, चहु उबिहे पन्नते तं जहा, सो इंदिय वंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, रसणिंदियं वंजणुग्गहे फासिंदियं वंजणुग्गहे.

ारांका-मन अने नयन ए बेनी वर्जना शा माटे करी?

उत्तर-मन अने नयन ए वे प्राप्यकारी नथी, किंतु अप्राप्यकारी हे. कारण जेनो विषय यकी अनुयह तथा उपचात न याय, माटे तेने अप्राप्यकारी क हिये. प्राप्यकारी कहिए तो अनल (अभि) जल (पाणी) तथा सूली (सूलायुध) इ त्यादिकनुं चिंतवन अवलोकन (देखवुं ) दहन (बलवुं) क्वेदन (नीजवुं ) तथा पाटन (नोकीने फाडवुं) प्रमुख थारो, ते कारणधी तेने अप्राप्यकारी किंद्ये. तथा चहुईिय जे ने ते विषय देशप्रते जाईने देखती नथी, तेस प्राप्त अर्थनुं अवनं बन पण करती नथी, एवो नियम हो, तो पण सूर्तिमंत चंइ तथा सूर्यना किर णोनी प्राप्ति चएथी कदाचित् तेने अनुयह उपघात यायते, माटे अत्र कोईक ए चकुने अनुमाने करी प्राप्यकारी पण कहेते, ते आवीरीते अनुमान करेते-लो चनं पद्मीरुत्य, प्राप्यकारित्वं साध्यते, व्यवहितार्थानुपत्नच्धेः इति हेतुः रसनावत् इति दृष्टांतः। एनो जावार्ष – लोचन प्राप्यकारी हे, व्यविहतार्थना ख्रयाहक हो वा माटे, रसनेंड्यिनी परेहे, ए छातुमान समीचिन नथी, केमके, व्यवहितार्थीं हु प लब्धिरूप जे देंतु है, ते अनेकांतिकहे, एकांतिक नधी केमके, काच, अचपट ज तथा स्फटिक प्रमुखनी अंतरित वस्तुने पण नयन यहण करी शके है, कोई हेरों के, नेत्रनेविषे तैजस किरणों हे, ते काचादिकने जेदीने अंतरित वस्तुनुं महण करती वखते प्रकाश करेबे, माटे नेत्र प्राप्यकारी होवाधी व्यवहिताधीनु प्लब्धरूप हेतु साचोठे. तेजोइव्य कोई ठेकाणे पण स्वजित थतुं नथी. एवीरी ते अनैकांतिक दोषनो छदार करनाराने आम उत्तर देथे-महाज्वालादिकने विषे पण स्वलना दीवामां आवेबे, तो वली नेत्रोना किरणोनी स्वलना याय तेमां ग्रुं कहेवुं ? अहीं घणी चर्चार्वे पण यं विस्तारना नयची लखी नयी. व्यं जनावयहनो जवन्य काल एक आविलकानो असंख्यातमो नाग होयवे. उत्कृष्ट षी पहुत्तश्वासोश्वास जेटलो होयहे, बे स्वासोह्वासची मांमीने नवपर्यत् प्हुत्त सं ावे. उक्तंच " वंजणवग्गहकालों , आविलय असंखनाग तुझा छ; शोवों उक्तो सो पुण, ञ्राणापाणपदुतंति "॥ ४॥

एवीरीते चार प्रकारनी व्यंजनावयह कह्यो; हवे अर्थावयहादिक कहेते.

अबुग्गह ईहावा,य धारणाकरण माणसेहिं वहा॥ इय अ वीस नेयं, चनदसहा वीसहा वसुयं॥ ५॥ व्याख्या-शब्द स्पादिक श्रयवा ते माहेला श्रन्यतर नेदेकरी श्रिनिशित सा मान्यस्प श्रयनुं जे ग्रहण तेने श्रमुग्गहके श्रयविग्रह कहिये श्रयित श्रा कं र्पण हे, एवं जे श्रव्यक्तकान ते श्रयविग्रह जाणवं. ते पांच इंडियोने हतुं मन एउए करी ह प्रकारनुंहे-श्रोत्रेंडियार्थावग्रह, चक्कुरिंडियार्थावग्रह, ब्राणेंडियार्थावग्रह, रसनेंडियार्थावग्रह, स्परीनेंडियार्थावग्रह तथा मानसायीवग्रह.

हवे—ते अर्थावगृहीत वस्तुनेविषे जे धर्मनी गवेषणा करवी, एटले आ स्थाणु है किंवा पुरुष है? तेमां पण हमणा संध्याकाल है अने माहा अरण्य है, तेमां सूर्य अस्त थया पही आ संध्या समये पुरुप होवानो संनव थाय नहीं। इत्यादि क व्यतिरेक धर्मनुं निराकरण करवुं अने एने पह्नीचे नजे है, तथा वक्र कोट रादि सहित है, इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगीकार करवो; एवं जे ज्ञान विशेष ते ने ईहा कहिये. ए पण पांच ईडियो तथा मने करी ह प्रकारनी है.

तथा-ईहित वसुनेविषे, आ निश्चये करी स्थाणुज हे, एवो जे बोध एटले एक को टीनो जे निश्चय तेने अपाय कहिये. ए पण पांच इंडियो तथा मने करी ह प्रकारेहे.

तथा निश्चित वस्तुनेविषे अविच्युति पणे, अथवा स्मृति पणे अथवा वासनापणे जे धारण करवुं तेने धारणा कित्ये. ते पण पांचई इयो अने मनेकरी व प्रकारेबे.

कहेला अर्थावयहादिनुं कालप्रमाण आवीरीतेने—गगह एकं समयं, ईहावा यामुहुत्त मंदतुः, कालमसंखं संखं, वधारणा होई नायवा. एवी रीते चारने उए ग्रुत्थायी चोवीश थाय, अने चारपूर्वे व्यंजनावयह कह्या, ए सर्व मली अहावीश चेद श्रुतनिश्रित मति ज्ञानना जाणवा. ते वली प्रत्येके विवरीने लखीयें चैं.

कोइक पुरुषे अव्यक्त शब्द सांनद्यों ते नाषाना पुजल ते पुरुषना कर्णमांहे पेशी ने श्रोतेंडियने फरक्या तेवारे अत्यंत अव्यक्तपणे जे शब्दज्ञान ते श्रोतेंडियनो व्यं जनावमह, तेपढी कोइके मुजने साद कीथो एहवुं जे अव्यक्तज्ञान ते श्रोतेंडियनो अर्थावमह, पढी ए अमुका अमुकानो साद्छे एहवी विचारणाते ईहा कहीये, ए तो खर जेवो खरहे माटे अमुकनोज साद्छे एहवी निश्चय करे ते अपाय, तेवार पढी तेहने घणाकाल सुधी धारी राखे ते धारणा.

कोइक पुरुषे अव्यक्त रूप दीवुं ते रूपना पुजल चकुईडियने फरइया नथी अप्राप्य कारी माटे एहनो व्यंजनायह नहोय. देखवाने पहेले समयेज व्यक्त ज्ञानरूप च कुरिंडियनो अर्थावयह थाय. तेवारपढी ए स्थाणुढेके पुरुषढे? जो स्थाणु होय तो स्थिरहोय अने पुरुष होय तो हाले चाले एहवी विचारणा ते ईहा, पढी ए तो स्थिरढे व्याख्या-शन्दरूपादिक अथवा ते माहेला अन्यतर नेदेकरी अनिर्धारित सा मान्यरूप अर्थनुं जे यहण तेने अनुग्गहके अर्थावयह कहिये अर्थात् आ कं ईपण हे, एवं जे अव्यक्तज्ञान ते अर्थावयह जाणवं. ते पांच ईड्योने हतुं मन एउए करी ह प्रकारनुंहे-श्रोत्रेंड्यार्थावयह, चक्कुरिंड्यार्थावयह, प्राणेंड्यार्थावय ह, रसनेंड्यार्थावयह, स्परीनेंड्यार्थावयह तथा मानसार्थावयह.

हवे—ते अर्थावगृहीत वसुनेविषे जे धर्मनी गवेषणा करवी, एटले आ स्थाणु है किंवा पुरुष है? तेमां पण हमणा संध्याकाल है अने माहा अरण्य है, तेमां सूर्य अस्त थया पही आ संध्या समये पुरुष होवानो संनव थाय नहीं. इत्यादि क व्यतिरेक धर्मनुं निराकरण करवुं अने एने पङ्गीर्ड नजे है, तथा वक्र कोट रादि सहित है, इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगीकार करवो; एवं जे ज्ञान विशेष ते ने ईहा कहिये. ए पण पांच ईडियो तथा मने करी ह प्रकारनी है.

तथा-ईहित वसुनेविषे, आ निश्चये करी स्थाणुज हे, एवो जे बोध एटले एक को टीनो जे निश्चय तेने अपाय कहिये. ए पण पांच ईडियो तथा मने करी ह प्रकारेहे.

तथा निश्चित वस्तुनेविपे अविच्युति पणे, अथवा स्मृति पणे अथवा वासनापणे जे धारण करवुं तेने धारणा किह्ये. ते पण पांच इंडियो अने मनेकरी व प्रकारें छे.

कहेला अर्थावयहादिनुं कालप्रमाण आवीरीतेने-नग्गह एकं समयं, ईहावा यामुहुत्त मंडतु; कालमसंखं संखं, वधारणा होइ नायद्वा. एवी रीते चारने तए गुण्याची चोवीश थाय, अने चारपूर्वे व्यंजनावयह कह्या, ए सर्व मली अहावीश चेद श्रुतनिश्रित मति ज्ञानना जाणवा. ते वली प्रत्येके विवरीने लखीये छैये.

कोइक पुरुषे अव्यक्त शब्द सांनद्यों ते जाषाना पुजल ते पुरुषना कर्णमांहे पेशी ने श्रोतेंडियने फरक्या तेवारे अत्यंत अव्यक्तपणे जे शब्दज्ञान ते श्रोतेंडियनो व्यं जनावयह, तेपढी कोइके मुजने साद कीधो एह्र जे अव्यक्तज्ञान ते श्रोतेंडियनो अर्थावयह, पढी ए अमुका अमुकानो साद्वे एह्वी विचारणाते ईहा कहीये, ए तो खर जेवो खरवे माटे अमुकनोज साद्वे एह्वो निश्चय करे ते अपाय, तेवार पढी तेहने घणाकाल सुधी धारी राखे ते धारणा.

कोइक पुरुषे अव्यक्त रूप दीं ते रूपना पुजल चकुईडियने फरइया नथी अप्राप्प कारी माटे एहनो व्यंजनायह नहोय. देखवाने पहेंछे समयेज अव्यक्त ज्ञानरूप च कुरिंडियनो अर्थावयह याय. तेवारपढी ए स्थाणुढेके पुरुषढे? जो स्थाणु होय तो स्थिरहोय अने पुरुष होय तो हांछे चांछे एहवी विचारणा ते ईहा, पढी ए तो स्थिरढे दि तूरी जेनो नाद जिल्लानिस सांनत्यामां आवे हे. तेना जाणवामां एवं आवेके, एटली नेरी ाटला संख इत्यादि वाजेहे. तेने बहु अवग्रह कहिये; कोइने अव्यक्त पणे मात्र वाजित्र वाजेहे एटलुंज सांनत्यामां आवे हे, तेने अबहु अवग्रह कहिए.

तथा ते शब्दमां पण कोइकने मधुर मंइलादि बहु पर्यायोपेत जे शंखादिक ध्विन एथक् एथक् घणा प्रकारे सांच्यामां आवे तेने बहुविध अवयह कहिये; कोईने एक वे पर्यायोपेत ते ध्विन सांच्यामां आवे तेने अबहुविध अवयह कहिये.

कोईकने तुरत ते नाद जाणवामां आवे हे तेने क्षिप्रख्यवयह किह्ये; कोइक ने विचारी विचारीने घणीवार पाहलधी जाणवामां आवेहे; ते अक्षिप्र खवयह.

कोई जेम ध्वजारूप लिंगे करी देवकुल उलखायहे. तेम लिंग सहित जाएो तेने निश्चितावयह कहिए. कोइ उक्त प्रकारे लिंगरहित जाएो तेने अनिश्चितावयह कहिए.

कोईने संशय रहित संनलाय है, तेने असंदिग्धावयह किह्ये; कोईने संशय सहित संनलायहै, तेने संदिग्धावयह किह्ये.

कोईके एक वेला सांचली यहण करी लीधेलुं ते सदा सर्वदा स्मरण रहे पण वीसरे नहीं तेने ध्रुव अवयह किह्यें; अने कोईकने एकवार यहण करेलुं सर्वदा रहे नहीं, तेने अध्रुवायवह किह्ये.

एवी रीते एक अवग्रहना बार चेद हे. तेर्न पूर्वीक्त अध्विश चेदोधी ग्रणतां त्रणशेने हिन्न सिक्झाना थाय. एविषे नाष्य पीयूषपयोधिए पण कहांहे. " जंबहु बहुविहिखणा,निह्सियनिह्नियधुवेयरविनत्ता;पुणरुगगहाद्रनेतो,तं हनीति सयनेयं ॥ १ ॥ नाणा सह समूहं, बहुविहंगुण निन्नजाईयं; बहुविह मणेगचे यं, इक्किंक निद्महुराई. ॥ १ ॥ खिण्णमचिरेण तंचिय, सह्वर्गतं अणिह्स्य म िंगं; निह्नियमसंत्रयंजं, धुवमचंतं नयकयाइ ॥ ३ ॥ तथा एमां अश्रुत निश्चित ना चार चेद नाखीए, तो त्रणसोने चालीश चेद मित्झानना थाय हे. अहीं अर्थावग्रह एक समय प्रमाणहे. ईहा अने अपाय अंतर्भुहूर्त्त प्रमाणहे. धारणा संख्यात असंख्यात काल सुधी हे. अथवा इत्य, क्षेत्र, काल तथा नाव लक्षण चार चेद करी मित्झान चार प्रकारतंहे. मतीझानी आदेश थकी सर्व इत्य जा थो, पण देखे नहीं. क्षेत्र थकी आदेश सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे पण देखे नहीं काल थकी आदेश सर्वकाल जाणे पण देखे नहीं. नाव थकी आदेश सर्व नाव जा णे पण देखे नहीं. ए विपे निर्देशिताऽझान संनार प्रसर श्री देविध्वाचक वर कहे हे के "तं समासर्र चर्रविहं पन्नतं, तं जहा, दवर्र, खेत्तरं, कालर्ज, नावर्ज, दवर्र

आशंका-जेणे करी अनिलाप्यनाव प्रतिपादन करवाने प्रधान श्रुत कहेवाय हे, तेमाटे अनिलाप्य नाव पण होवा जोइए!

उत्तर-अनिलाण्यनाव पण लोकमां अनंताले यदादुः श्रीप्रच्याः—" पंनव णि ा नावा, अणंत नागों अणनिलणाणं, पंनवणि ।णं पुण, अणंत नागों सुयनिबदो ॥१॥ जं च उदसपुवधरा, लिणणग्या परुण्यरंदुंतिः, तेण उअणंत नागों, पन्नवणिङ्काण जंवुनं ॥ १॥ अस्तर लंनेण समा, णिह्या दुंति मक्विसेसेणं, तेविद्रुमई विसेसा, सुयनाणप्रंतरे जाण. इति अक्त्रश्रुतं ॥ ३॥

बीजं अनक्र श्रुत ते क्ष्वेडित शिरकंपन इस्तचालन प्रमुख, समइयाएकरी गम नागमनादिक मनना निप्रायनुं जे परिज्ञान तेने जाणवुं एटले कोई एएस को ईने पूछे के नाई, तमारे बाहेर जवुंछे के? तेनो खथी जवाब न देतां माथुं हला वीने अथवा हाथवती शान करीने पोतानी ना मरजी जणाववी तेथी पूछनारने तेना मनना अनिप्रायनुं परिज्ञान एटले जाणपणुं थाय तेने नक्षरश्रुत कहिए

त्रीजं संझिश्रुत, ते संझा त्रण प्रकारनी ने निर्धिका लिकी, हेतुवादोपदेशिकी तथा दृष्टिवादोपदेशिकी। यदाह जाष्यसुधां जो निधिः "इह्दीह्का लिगी का, लिगित्ति संना जया सुदी हंपि; संनर इनूय मिस्सं, चिते इय कि ह्णुकाय वं ॥१ ॥ जे पुण संचिते उं, इन्नाणि के विसय वह्नुस, वहंति निय जे तिय कि हणुकाय वं ॥१ ॥ पाएण संपयं चिय, का लं मिनयावि दी हका लंता; ते हे उवायसा ।, नि इन्न हंति स्सा ।। ॥ शासम्महि ही संनी, संते नाणे खर्च वसमियं मि; स्तनी मिस्न जं, मिदि हिवार्च वएसे णं ॥ ॥॥ तेमां एके मकर खं, के मथसे इत्यादिक तीत नागत घणा काल जे चितव खं ते दीर्घ का लिकी संझा, अने जे तात्का लिक इ निष्ट वस्तु जाणी ने प्रशृति नि हित्त ते हे तुवादोपदेशकी। अने का योपशम झाने करी सम्यक् हष्टी पणुं होय, ते ह्र ष्टिवादोपदेशकी ए त्रण संझा छे, तेमां विक लें इय असंझी ने हे तुवादोपदेशकी संझा छे, अने संझी पंचें इनि दीर्घ का लिकी संझा छे ते माटे सर्वत्र गममां हे दीर्घ का लि संझा एकरी। संझिपणुं कि हिये। अने ते संझीविषयक जे श्रुत तेने संझिश्रुत कि हिये। अर्थात् समनस्क प्राणीने जे मन अने इं इयोए करी उत्प थए खं झान तेने संझिश्रुत कि हिये।

चोधं असंज्ञिश्रुत ते मनविना मात्र इंडियोए करी उत्पन्न थएलुं जे संज्ञी श्रुत. पांचमं सम्यक् श्रुत, ते सम्यक् दृष्टिये करी, अर्देत्प्रणीत थवा मिथ्यादृष्टि प्रणीत वाक्यादिकनुं यथाविस्थित नावना अवगम थकी, एटले पक्षपात विनानी

वादकानं मिध्यादृष्टेमीतश्चते यदाह्माष्यसुधांनोनिधिः " सदसद्विसेसणार्त, न वहेरजहि बिरे वलंगार्तः, नाणफलानावार्त्त मिबद्दिहिस्स् छन्नाणं इति.

हवे आदिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यविस्ततश्रुत तथा अपर्यविस्ततश्रुत ए चार नेदनुं साथे वर्णन करें हो. तथा साईयं, सपद्भविस्यं, अणाईयं. अपद्भविस्यं इवेयं इवालसंगं वृज्ञित्तिनयच्या एसाईयं, सपद्भविस्यं, अवुज्ञित्तिनयच्याए अणाईयं अपद्भविस्यं तं, समासच चचिह्नं पंन्नतं तं जहा, दव्वचं, खेत्तचं, कालचं, नावचं. । दव्वचणं सं मसुयं, एगं पुरिसं पडुञ्चसाईयं, सपद्भविस्यं, बह्वे, पुरिसे, पडुञ्च अणाईयं, अप द विसयं स्कित्तचणं पंचनरहाई पंचएरवयाई पडुञ्चसाईयं सपद्भविस्यं पंचमहा विदेहाई पडुञ्च अणाईअं अपवविद्या कालचणं चस्तिपणां अवसिष्यणं चपडु साईयं सपद्भविस्यं नो चस्तिपणां नो अवस्यपणां पडुञ्च अणाईयं अपद्भविस्यं नो चत्तिपणां नेति कालो महा विदेहे कुरेयस्तत्रोत्साण्यित्यं वर्साण्यणि लक्ष्ण कालानावत् । नावचणं ने तिया, निणपन्नता, नावाञ्जाघविद्धंति पह्नविद्धंति पस्विद्धंति दंतिद्धंति निदंतिद्धंति ते तयापडुञ्चसाईयं सप विसयं खा चवसिम्यं पुणनावं पडुञ्चअणाईयं अपद्भविस्यं अहवा नवसिद्ध्यस्त सुयं साईयं सप विसयं खा चवसिम्यं पुणनावं पडुञ्चअणाईयं अपद्भविस्यं अहवा नवसिद्ध्यस्त सुयं साईयं सप विसयं केवलज्ञानोत्पत्ती तदनावात् नहंमिच बाचमिष्यं नाणे इति वच नात् अनवसिद्ध्यस्त सुयं अणाईयं अपद्भविस्यं सुयं सुयनाणं सुयअनाणं च.

एनो नावार्ष आवीरीते छे-श्रुतकान साहिसपर्यवसित छे तेमज अनाहि अ पर्यवसित पण्छे ए चारेना इव्य, क्षेत्र, काल तथा नाव ए चार प्रकार थई श के छे-तेमां इव्यथी एक पुरुष आश्री लैथे तो साहि सपर्यवसित छे. अने घणा पुरुषो आश्री लैये तो अनाहि अपर्यवसित छे. ते आवीरीते-एक जीवइव्यने ज्यारे सस्यक्त्वनी प्राप्ति यायछे त्यारेज श्रुतकान पामवाथी ते आहि कहेवाय; ने ज्यारे सस्यक्त्व मटी जाय अथवा केवल काननी प्राप्ति याय त्यारे तेनो अंत ययो कहेवायछे तेथी इव्येकरी साहिसपर्यवसित छे; अने घणा जीवरूप इव्य विषे विचार करिए तो अमूक जीवने सर्व करतां पहेलां श्रुत काननी उत्पत्ति यइ अने अमुक जीवना श्रुतनो अंत थयो एम कहेवाय नहीं केमके, ए नाहि अनंत कालपणे प्रवाहरूप छे. तेथी इव्यथी अनाहि अपर्यवसित पण्छे.

हैत्रेकरी नरत तथा ऐरवतनेविषे ज्यारे तीर्थिकरनो तीर्थ वर्त्ते , त्यारे दादशां गीरूप अत होयने; अने ते तीर्थनो विश्वेद खयाखी ते श्रुतनुं पणविश्वेद होयने नेथी सादि नपर्यवसित किंद्रे छने महाविद्द क्षेत्रमां तीथेना वित्रेद नहीं. होवा थी श्रुतनो वित्रेद पण नथी होतो, नेथी त्यां छनादि छपर्यवसिन किंद्र्ये.

कालकरी उत्तरिणी तथा खबनरिणीनेविषे चाये नथा पांचमे खारे शुनकान हो य, खने ठठ खारे वितेद थायठ तथी सादि नपयंविनतठ; खने महाविदेद केत्र नेविषे एवं कालचक्र नदीं दोवाने लीथे, त्यां शुतकानपण खनादि खपयंविनतठे.

छने नावयी नव्य निश्चित्रा जीवने ज्यारे सम्पद्धत्वनी प्राप्ति यायने, त्यारे छा दि छने कवल ज्ञाननी प्राप्ति यायने त्यारे छंत होवायी नादि नपर्यवित्तने; छने छन्त्य निश्चित्रा जीव छाथ्यी ह्योपश्मिक नावे थुनकान छनादि छपर्यवित्तने.

अग्यारमुं गमिक शुत ते ज्यां सूत्रना स्रग्वा खालावा एटले पात दीतामां छा व न्यां जाणतुं ने प्रायं करी हिप्टवाद सूत्रने विषे वे.

बारमुं अगमिक शुन, ते जनविषे अणस्यवा अक्रोना आजावा द्यांय ते जाणांचुं ते प्रायं काजिक शुननेविषे हे.

तेरमें श्रेगप्रविष्ठ, ने हाद्यांगी रूप जाण मुं, तथादि—"श्रहाग्म पय मह्मा, श्राया र प्राण प्रमुण प्रमुण मेससु; स्यगंड गण समवा,य नगवर्ध नाय धम्मकदा॥ १ । श्रेगं च्यान गद्मा, श्रेनगढ श्रणुनगववाइ दमा, पन्दावागग्णंवा विवाग सुयमिगदमं श्रंगं॥ १॥ पिकम्म सुनपुवा,णुर्चन पुवनयमृतिया एवं, पण दिष्ठिवायसेया ॥ चचदम पुवाई पुव गयं॥ ॥ चणाण प्रयकांडी, श्रुगणाणी श्रंमि ठन्नवइ जन्का; विश्यपवाए श्रुहि, प्रवा ६ सम्बेगिय मही॥ ४॥ एगपकणी कोडी, प्रयाणनाण प्रवायपुर्वमि। नच्च प्रवायपुर्वे, एगा प्रकांडि ज्ञापवा ॥ १॥ ठ्यीनंप्यकांडी, प्रवेगणानाण प्रवायपुर्वेमि। नच्च प्रवायपुर्वे, एगा प्रकांडि श्रुनश्च ज्ञापवा । व्यवस्था । १ स्वयमहान ज्ञ्यापव, कोडी विज्ञापवायंमि॥ ३॥ कल्लाणनामिश्र ज्ञे, पृवं निषयाणको दिव्हीमा । उपस्र जन्क कोडी, प्रयाण पाणा च पृवं मि॥ ०। किन्याविद्यान ग्रंहे न वययकांडी उर्विनमयविद्य । निग्लोक विद्य नार्वे न्य स्वयस्थान न्यप्रकाका । ।

र्चारमुं खंगवाह्यक्षुन, ने छावव्यक नया इब वैकानिकादिक जाणवुं. छयांन खग्यार छंगयी जे वाह्य चरांग प्रमुख नेने छंगदाह्यक्षुत कहिये. ॥ ६ ॥

एवीरीने श्रुनज्ञानना चीद सेद कहा।; हवे बीजा जे बीग सेद यायनेने कहेने.

पचय छान्त्र पय संघाया पडिवित्त नहय छाणुठेगो ॥ पाहुड पाहुड पाहुड, वरुपुदाय समनाया ॥ ७ ॥ श्रथ-श्रागायामां दश चेद कहााने, तेनि साथे बीजा दश नेहा ससमासा के मास सिंदत एट समास शब्द श जोडी होवा. ते श्रावीरीते-पर्यायश्रत पर्यायसमासश्रुत, श्रक्रश्रुत, श्रक्रसमासश्रुत, पदश्रुत, पदसमासश्रुत, संघात श्रुत, संघातसमासश्रुत, प्रतिपत्तिश्रुत, प्रतिपत्तिश्रुत, प्रतिपत्तिश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत, श्रन्योगश्रुत, श्रन्तप्राचृतश्रुत, प्राचृतप्राचृतसमा सश्रुत, प्राचृतप्राचृतश्रुत, प्राचृतसमा सश्रुत, वस्तुसमासश्रुत, प्रविश्रुत, तथा प्रवेसमासश्रुत, इतिगायाऽक्रराथे.

अत्र पर्याय ते ज्ञाननो अंश किह्ये, यावत् शब्दे विनाग तथा पिलिनेद तेने पर्याय किह्ये. तेमां ज्ञानना एक अंशने पर्याय श्रुत किह्ये अने ज्ञानना अनेक छंशने पर्यायसमासश्रुत किह्ये. प्रथम पर्यायश्रुत, ते लिब्धअपर्याप्त निगोदनो जे सूक्षाजीव, तेनेविषे सर्व जघन्य ( उन्नामां उन्ने ) रहेलुं जे श्रुतमात्र, तेथकी अन्यत्र जीवनेविषे जे एक श्रुत ज्ञाननो पिलिनेद्रूप अंश अथवा विनाग जे व दिने पामेने ते पर्यायश्रुत जाणवुं.

बीजं पर्यायसमासश्रुत, ते जे श्रुत झानना बे त्रण प्रमुख विनाग पिलेंगेर नाना जीवोनेविषे दृद्धिने पामेला दीतामां आवेग्ने, एवी जे जीवनेविषे श्रुतझान ना अनेक अंशोनी दृद्धि होयग्ने, तेना स दायने पर्यायसमासश्रुत कहिये.

त्रीजं श्रहरश्रुत,ते श्रकारादिक लब्ध्यह्ररोमांनाजे एक श्रह्ररां जाएवं तेने कहिये। चोषुं श्रह्ररसमासश्रुत,ते तेवा बे त्रण श्रह्ररोनुंजे जाएवं तेने कहिये।

पांचमुं पदश्रुत, ते ज्यां अर्थनी परिसमाप्ति होय तेने पद कहें हो, तथा विन स्टिपंतंपदं एवी उक्ति उतां पण अत्रे ए लक्ष्ण यहण करवुं नहीं. किंतु जेणेकरी श्रीआचारांगादि यंथोनुं मान अढार इजार पदनुं कहेवाय हे. ते लक्ष्ण अत्रे यहण करवुं. केमके तेनो दादशांगश्रुत परिमाणने विषे अंगीकार हे. अने वली अहीं श्रुतना नेदोनुं प्रस्तुतपणुं हे, तेथी ते पद क्षेतुं पण ते पदनी तथा विध आम्नायनो अनाव हे. माटे तेनुं प्रमाण केवली जाणे एवं जे एक पदनुं झान तेने पदश्रुत कहिये.

वहुं पद समासश्रुत, ते एवा एकथी वधारे एट हो घणा पदो नुंजे ज्ञान तेने कहिए. सात मुं संघातश्रुत ते 'गई इंदियकाए ' इत्यादिक गाथाए करी प्रतिपादित जे दारसमुदाय, तेनो गत्यादिक जे एक देश, तेनो पण एक देश जे नरकगत्यादिक तेनेविपे जीवादिकनी जे मार्गणा अथवा गवेषणा किए ये वैये तेने संघातश्रुत कहिये. आव मुं संघातसमाश्रुत,ते वे प्रमुख गत्यादिक अवयव मार्गणा नुं ज्ञान तेनेकहिये.

नवसुं प्रतिपत्तिश्रुत, ते गतिश्रादि दारोनी श्रन्यतर ए परिपूर्ण गत्यादि दा रेकरी जे जीवादिकनी मार्गणा करवी तेने प्रतिपत्ति श्रुत जाणवुं.

दशसुं प्रतिपत्तिसमाश्चत, ते पूर्ववत् दार दयादिकनी मार्गणा करवी तेनेजाण वुं अग्यारमुं अनुयोग दार श्रुत, ते संतपय परूव एया, दवपमाणं, इत्यादिक अनुयो ग किह्ये, ते दारमाना अन्यतर एक अनुयोगनुं ज्ञान ते अनुयोग दार श्रुत जाणनुं. बारमुं अनुयोग दार स ास श्रुत,ते बेप्रमुख अनुयोग दारोनुंजे जाएपणुंतेनेजाए दुं.

तेर्मुं प्रानृत प्रानृत श्रुत ते, प्रानृतांत्रवर्ती छिध ।र विशेष जाएवो

चौदमुं प्रानृत प्रानृत समास श्रुत, ते प्रानृतांतरवर्त्ती एकथी वधारे अधि । रोना समुदायनुं ज्ञान तेने जाणवुं.

पंदरमुं प्रानृत श्रुत, ते वस्तु श्रंतर्वर्ती श्रिध र विशेष तेने जाणवुं. सोलमुं प्रानृत समासश्रुत, ते वस्तु श्रंतर्वर्ती एकषी वधारे वे त्रण श्रिध रो नो जे समुदाय तेने जाए बुं

सत्तरमुं वस्तु श्रुत, ते पूर्व दिलो अधि र विशेष तेने जाणकुं

ढारमं वस्तु स ्सिश्चत, ते पूर्व अंतर्वर्ती अधिकारनो समुदाय तेना ज्ञानने जाणवं. चंगणीशमुं पूर्व श्रुत, ते चत्पात पूर्वादि ए पूर्वनुं जे झान तेने जाणनुं.

वीशमुं पूर्व स । सं श्रुत, ते तेमाना एकथी वधारे वे ए पूर्वनुं जे ज्ञान तथा सं

पूर्ण चर्वर पूर्व ं जे ज्ञान तेने जाणवुं,

एवी रीते संक्षेपची श्रुतकानना वीश नेद ह्या है। एनो विस्तार जोवो होय तेऐो वृहत्कमे प्रकृतिमां जोई खेवुं. ए वीश जे श्रुत ज्ञाननाचेद ते जेवीरीते उत्तरोत्तर तीव तीव्रतरादि ऋयोपशमधी प्राप्त थायने तेवाज अ कमे कह्या ने

अयवा श्रुतकान बीजा चार प्रकारे हे, ते । प्रमाणे--इव्य, के । । । तथा नाव ते । श्रुतकानी इव्यथी उपयोगवंत थको सर्व इव्यने जाए। देखे है: केत्र यकी उपयोगवंत यको सर्व के लोकालोक ने जाएो देखें है, ।ल यकी उपयो गी श्रुतज्ञानी सर्व कालने जाएँ। देखें हे, तेमज नावयकी उपयोगी श्रुतज्ञानी सर्व नावने जाएो देखे ते माटे संपूर्ण श्रुतकानी ते केवली सरखो हिये. एवी रीते श्रु त ज्ञाननुं सविस्तर व्याख्यानं रग्नुं ॥ ७ ॥

सांप्रत (हवे) अवधिकाननी व्याख्या करिये हैये ते वे प्र रातुं हे. ए जव प्रत्ययिक, बीजं गुणप्र यिक. तेमां नवप्रत्ययिक ते देव तथा नारकी उने होय हे अने गुणप्रत्यि ते नुष्य तथा तिर्थचने होयने ए गुणप्रत्यिक न प्र रनुं ने.

ते अर्द गाथा वडे कहें बे, अने गाथाना उत्तराईवडे मनपर्यव तथा केवल झान कहें है.

अणुगामि वहुमाण्य, पडिवाईयर विहा हा नही॥ रि नुमइ विनलमई मण, नाणं केवल मिगविहाणं॥ ए॥

अर्थ-अणुगामिके ज्ञनुगामि, 'वहमाणयके वर्धमान, 'पडिवाईके प्रितिपाति, 'इयरके व्हतर ते अनानुगामी, दीयमान तथा अप्रतिपाति; ए 'विद्वाके व्यविधा) एटले प्रकार, 'वद्दाके व (पड्धा) व प्रकारे, 'वद्दीके व अविधः; ज्ञान जाण वं, अने रिवमइके व्यविधानित विवलम इके विप्रतमित, एवं प्रकारे मणनाणंके व पर्यवज्ञान जाणवं, तथा केवलंके व केवलज्ञान 'इगके व एक, 'विद्वाणंके व प्रकारे वे.॥ ए॥

अनुगामि, वर्धमान, प्रतिपाति, श्रमानुगामि, हीयमान, तथा श्रप्रति पाति ए उ प्रकार गुणप्रत्यय अवधिक्ञाननाते. उक्तंच नंदाध्ययने— "तं समा सर्च इविहं पन्नतं तं जहा, आणुगामियं, श्रणाणुगामियं, वहृमाणयं, हीयमाण यं, पिडवाई, श्रपिडवाई, तेमां प्रथम जे तेकाणे अवधिक्ञान उत्पन्न थयुं होय, ते तेकाणुं सूकीने बीजे देशांतर प्रमुखनेविषे ज्यां जाय त्यां जोचननी पते जे साथे श्रावे, तेने श्रानुगामिक श्रविध कहिये; श्रयात् ज्यांपुरुष विचरे त्यां साथे श्रावेते.

बीजं जे वेकाणे रह्यां अविध उत्पन्न थयुं होय ते स्थानके आवे तेवारेज हो य पण अन्यत्र जाय तेवारे न होय. गृंखलाब प्रदीपनी पतें ते क्त्र प्रत्यि क योपशमने लीधे माटे साथे न आवे तेने अनानुगामि कहिये; यदाह नगवान् श्री देविंगणि क्त्माश्रमणः—''सेकिंतं अणाणुगामियं, उहिनाणं, उहिनाणंतंजहा नाम एगेइ पुरिसे एगं महं जोइछाणं काउं तस्सेव जोइछाणस्स परिपेरंतेस परिहिंममाणे परिहिंममाणे परिहोलमाणे तमेव जो इछाणं पासइ अनजगए न पासइ एवमेव णाणुगामियं उहिनाणं जहेव समुपचइ तहेव संखिद्याणिवा असंखिद्याणिवा जो यणाइ पासइन अन्न अ." नाष्यकारोप्याह—अणुगामि अणुगज्ञइ, गहंतं लोयणं जहा पुरिसं; इयरोउनाणु गज्ञइ, वियप्पईवहगहंतं." इति. ॥

त्रीजं जे वधे तेने वर्धमान किह्ये. एटले शलगेली ख्रियमां जेम जेम सरप ए नाखता खावीए तेम तेम वधती वधती ज्वाला खती खावे. तेनी पर्वे यथायो ग प्रशस्त खित प्रशस्ततर ख्रथ्यवसायने लीधे, पूर्वीवस्थायी जे उत्तरोत्तर समय समय वधतुं जाय तेने वर्धमान ख्रविधिङ्गान किह्ये. ख्रथीत् प्रथम उपजती व खते श्रंग्रजना असंख्यातमा नाग जेटजुं हेत्र जाएो देखे, पढ़ी वधतां धतां यावत् अजोकाकाशनेविषे जोक जेवडा असंख्याता खंगुक देखे.

चोष्ठं, पूर्वे ग्रुनपरिणामने वसे घणुं उपजे अने पढ़ी तथाविध सा श्रीनो अ नाव थयाथी पडता परिणामे करी हानीने पामेळे तेने हीयमान अवधिका हिये. उक्तंच नंदिचूणीं—" हीयमाणं पुवावज्ञाउं अहो होहस्समाणंति."

पांच मुं, जे संख्याता असंख्याता योजन उत्क पेणे यावत् समग्र लोक देखी ने पण पडे एटले जे आव्युं जाय तेने प्रतिपाति किह्ये. यदाह—"सेकिंतं पिडवा इ अपिडवाइ जं तं जहन्नेणं अंग्रलस्त असंखिचनागंवा संखिचनागंवा वालगंवा वाल पुहत्तंवा एवं लिखंवा जूयंवा जवंवा जवपुहत्तंवा अंग्रलंवा अंग्रलपुहत्तंवा एवंएएणं अहि लावेणं विह्निंवा हिंचा किंवा किंवा किंवा (किंक्टिक्स ६ यमुच्यते) धणुंवा गाउपंवा जोयणंवा जोयणस्वयंवा जोयणसहस्संवा संखिचाणिवा असंखिचाणि वा जोयणसहस्साई उक्कोसेणं लोगं पातिनाणं पिरविड्यासेनं पिडवाइ."

बढुं, जे वत्प थया पढ़ी क्षीणताने न पामे, ते लोकसमय देखीने जो ना एक प्रदेशने देखे तेने अप्रतिपाति किह्ये। ए अवधिआव्युं जाय नहीं।

र्थाशं ।—हीयमान ने प्रतिपाति ए बन्नेनां जक्क्णो तो सरखां छे ते तां दां ताववानुं ग्रुं ।रण छे ?

चत्तर~जे पूर्वीवस्थायी इलवे इलवे घटतुं जाय एटले ह्रीणताने पामे ते ही ान हेवायछे; ने जे विध्यात प्रदीपनी पठे एक ।लने विषेज निर्ूल थाय छे ते प्रतिपाति कहेवायछे ए विशेष छे.

ए विध्वान जे हे, ते अनंत इच्य या नावनो विषय हे, तेथी तारतम्य वि वक्षायें री तेना नंत नेद हे. ने असंख्येय केत्र तथा जिना विषय होवा थी तेना तारतम्यतानी विवक्षाए करी असंख्य नेद हे. अथवा अवधिक्षानना आ ार प्रार हे—इच्य, के , काल तथा नाव तथा चाह. "तं समासर्ग चर्णविहं प नं, तं जहा, दवर्ग खेन्च कालर्ग नावर्ग दवर्गणं उहि ।णी जहनेणं अणंताइं रूवि दवाई जाण्ड पासई जोसेणं सबह्वि दवाई जाण्ड पासई खिन्तर्गणं उहि ।णी जहें णं अंग्रलस्स असंखेबनागं जोसेणं असंखिवाई अलोए लोय प ।ण मिनाई खंमाई जाण्ड पासइ कालर्गणं उहि ।णी जहें णं आविज्याए असं खिब नागं उक्कोसेणं असंखिवार्ग उस्तिपणि अवसिपणी अतीयंच अणागयंच । जं जाण्ड पासइ नावर्गणं उहिन्नाणी जहनेणं वि अणंते नावे जाण्ड पासइज माटे एकत्र जाणवुं. इति ॥

क्षोसेणंवि अणंते नावे जाणइ पासइ सवनावाणं अणंत नागं" इत्युक्त मवधिक्षानं.
एनो नावार्थ आ हे—ए अवधिक्षानी इव्यची जघन्यपणे अनंतारूपी इव्यने
जाणे देखे अने उत्रुष्ट पणे सर्वरूपी इव्यने जाणे देखे ते इव्यावधि खेत्र यकी जघन्य
पणे अंग्रुजनो असंख्यातमो नाग जाणे देखे अने उत्रुष्ट पणे अजोकाकाशनेविपे जो
म प्रमाण असंख्याता खंमने जाणे देखे ते क्षत्रावधि; काजयकी, जघन्यची आविल्
कानो असंख्यातमो नाग जाणे देखे ने उत्रुष्ट पणे असंख्यात उत्सार्ण्यणी वस
पिणा जो अतीत अनागतकालने जाणे देखे ते जिल्ह पणे अनंता नाव यकी जघ
न्यपणे नंत नावने जाणे देखे ने उत्रुष्ट पण अनंता नावने जाणे देखे ते
नावावधि कान जाणवुं. एवी रीते विध्वान कह्यं. विनंगक्कान ते मिथ्यालीने
होय, ते माटे जीन हे, अवद्धं सवद्धं जाणे पण ते अविध क्वाननीज जातीहे. ते

हवे मनः पर्ययज्ञान कहें छे. एना बे प्रकार छे-एक क्जुमित, बीज़ं विपुल ति. तेमां एए। घडो चिंतव्यो छे एटजुं सामान्यपणे मननो अध्यवसाय यहे तेने क्जुमित कहिए. यदाह- रिज्ञसाम मं तंम्म, न गाहिए। रिज्ञमई मणोनाएं; पायं विसेस विमुहं घडमिनं चितियं मुण्ड, तथा एए। घटचिंतव्यो छे ते इव्यथी सुवर्ण नो छे, क्षेत्र यकी पाडली पुरनो निष्प, काल यकी शीतकालनो, अने नाव थ की पीतवर्ण सुकुमाल इत्यादि विशेष याहिए। मित ते विपुलमित कहिये. एटजे सामान्य याहिए। मितते क्जुमित कहिये; अने विशेष याहिए। मितते विपुलमित;

अथवा मनःपर्यायङ्गान चार प्रकारनुं हो—इव्य, क्रेत्र, काल तथा नाव; ए चारे नेदे करी. उक्तंच— "तं समासर्र चर्चिहं पन्ननं तंजहा, दवर्र खेनर्र कालर्र नाव र्ष । दवर्रणं रिरुमईणं ते अणंत पएसिए खंधे जाण्ड पासइ । तेचेव विरातमई अप्रहियतराए विमल तराए जाण्ड पासड़.

एनोनाव-इव्यथकी क्जुमती अनंतप्रदेशी अनंता स्कंध जाएोदेखे अने विषु जमित तेहिज स्कंध कांइक अधिकरा विद्युद्धपणे जाएोदेखे केंत्रधी क्जुमती नीचे रत्नप्रना पृथ्वीनुं कुल्लक प्रतर्जा अने उंचुं ज्योतषीना उपरे तज जागे तिरछुं ही हीए, बे समुइ, पन्नर कर्म, नूमि त्रीश, अकर्मनूमी अने उपन्न अंतर हीपनेविषे संज्ञी पंचेंडिअपर्याप्ताना मनोगत नाव जाएो देखे अने विपुलमित तेहिज केंत्र अही अंग्र के अधिक देखे, अने विद्युद्धे काल थकी जघन्यपणे क्जुमित पत्योपमनो संख्यातमो नाग अने उत्कृप्पणे अतीत अनागत जाएो देखे अने विपुलमित ते

ह्ज अधिकरो अने विद्युद्धतर जाएो देखे. नावधकी क्जुमित अनंतानाव जा एो देखे, सर्व नावनो अनंतमो नाग जाएो देखे, अने विपुलमित तेह्जि अधिके रो अने विद्युद्धपणे जाएो देखे. यदाहुश्रवुद्शप्रकरणशतप्रासादसूत्रधार ल्पश्री हिरन्द्सूरि पादानंदिवृत्तो—"इहाऽधोलोकिक प्रामान्, तिर्यग् लोकवार्नेनः नोगतां स्ल्यतोनावान् वेत्ति त हिर्नेनामिप कर्ध्वयावज्योतिश्रकस्योपरितलं । तिरियं जाव अंतो मणुस्य खित्ते अद्वाइचेसु दीवेसु दोसुयसमुद्देसु पन्नरससु कम्मनूमीसु तीसाए अकम नूमीसु वणन्नाए अंतरदीवेसु सन्नीणं पंचेदियाणं पचनगाणं नोगए ना वे जाणइ पासइ। तंचेव विद्युत्तमई अद्वाइचेहिं अंगुलेहिं अप्नह्वितरयं विसुद्धत रयं खेनं जाणइ पासइ।

हवे केवल ज्ञाननुं खरूप कहेंग्रे-केवलज्ञान उत्पन्न थतांज सम ाले सर्व पदार्थीना इच्य, क्षेत्र, काल तथा नाव समकाले जाए्या ां तथा दीवा ां आवी जायग्रे; माटे केवलज्ञान मिगविद्धाणंके० एकज प्रकारनुं कह्युंग्रे. ॥ ए ॥ एवी रीते पांचेज्ञानोनुं वर्णन री; हवे पांचे ज्ञानोनां आवरण हेंग्रे.

> एसिं जं ख्यावरणं, पडुच्चचक्कुस्स तं तयावरणं ॥ दं सण च पण निद्दा, वित्ति समं दंसणावरणं ॥ ए ॥

व्याख्या—एसिं के० ए ति प्र ख पांच झानो नुंज जे खावरणं के० । ढाद करे तेने झानावरणीय में किह्ये जेम चर्कुस्स के० नेत्रोनी । ढे पडु के० पाटो बांधवाथी हिष्टना विषय पदार्थने जोवामां हरकत पडेढे; ते मित झानादि ना विषय पदार्थने जाणवाने जे हरकत करे तंके० ते तयाके० ते खावरणं के० खावरण हेवाय छे० ते खाविरीते—जेम च अति निमेज हतां पण जो घन (साधारण घट) घनतर ( ांईक वधारेघट) तथा घनतम (खतिघट) एवं पडुं खाडुं खावे तो मंद ( खोडुं ) दतर ( वधारेथोडुं ) मंदतम ( खतिघट्ट ) एवं पडुं खाडुं खावे तो मंद ( खोडुं ) ंदतर ( वधारेथोडुं ) मंदतम ( खतिघाडुं ) दीवामां खावे० ते म खा जीव झानावरणीय कमें करी घन घनतर तथा घनतमपणे खावरायो हतां शर इ स्तुना निमेज चंइमानां स्वच्च किरणो नुं पण मंद मंदतर तथा मंदतम झान थाय हे; माटे पटनी हपमाए झानावरणी कमें कहेवायहे० ते खावरण ने सामान्यपणे ए क रूप हे० पण पूर्वे मितज्ञानना जे खने चेद ह्या तेथी मित खावरणी कमेना पण तेटला जेद जाणवा० खने जेटला श्रुतङ्गानना चेद कह्याहे०, तेटलाज चे द श्रुतङ्गानावरणीय कमेना थायहे० तथा पूर्वे जे खविष्डानना चेदनो समूह क

ह्यो तेर्जने आवरण करवाना खनाववालुं जे कमे ते अवधिक्षानवरणीय कहेवा यहे. तथा वे नेदोए करी पूर्वे मनःपर्यव क्षान कहां तेने आवरण करवाना खनाववालुं जे कमे ते मनपर्यवः क्षानावरणीय कहेवायहे. तथा पूर्व प्ररूपित खरणवालुं जे केवल क्षान तेने आवरण करवानो जेनो खनाव होय. तेने केवलक्षा नावरणीय कहेतुं. चक्तंच छहत्कमीविपाके— "सरचग्य सित्तिनम्मल, तरस्स जीवस्स हायणं जिमहः, नाणावरणं कम्मं, पहोवमं होइएवंतु. ॥ १ ॥ जह निम्मला वि चस्कू, पहेण केणावि हाइयासंतिः, मंदं मंदतरागं, पिछइसा निम्मला जइवि.॥१॥ । तह मइ सुय नाणावर, ण अवहि मण केवलाण आवरणं; जीवं निम्मल रूवं, आ वरइ इमेहिं नेएहिं. ॥३॥ पांच क्षाना नेदे करी पांच चत्तर प्रकृतिरूप जे ज्ञानाव रणीय कमे, तेणे करी निष्पन्न ते सामान्य ज्ञानावरण मूल प्रकृति कहेवायहे. जे म पांच आंगलीहिए करी एक सृष्टी निष्पन्न थायहे; मूल, हाल, पत्र तथा शाखाआ दि ससुदायथी जेम एक हक निष्पन्न थायहे; अने घृत, गोल तथा किएकाए रिजेम लाडु निष्पन्न थायहे, तेम सूल पांच प्रकृतिए करी सामान्य ज्ञानावरणीय मैं प्रकृति निष्पन्न थायहे; तेमज एकएक ज्ञानावरणनी उत्तर प्रकृतिहिए करी ते ते ज्ञानावरण विशेष निष्पन्न थाय हे. एवीरीते पांच प्रकारनुं ज्ञानावरणीय कमे कहें.

हवे नवप्रकारनुं दर्शनावरणीय कमें कहेंग्ने.— गाधामां दर्शनावरणी पदने वेकाणे काव्य रचनानेलीधे मात्र दंसण शब्द ग्रे. तेथी आखुं पद जाणी खेंबुं, जेमके, नीम शब्दना चन्नारथी नीमसेन जाणी केवायग्रे; तेम ए पण जाणी खें वुं. ते वास्ते शास्त्रोमां कह्यं ग्रे के पदना एक देशयी आखा पदनो उपचार था यग्रे. एरीते दंसणच्छ ए शब्दे करी दर्शनावरणी चतुष्क जाणी खेंबुं. दृष्टिनें दर्शन कहेग्रे. अथवा जेणे करी वस्तुनुं सामान्यरूप देखाय अथवा परिमाण थाय तेने दर्शन कहिये. तेने आग्रादन करवाना स्वनाववालां जे कमें ते दर्शनावरणी य कमें कहेवायग्रे. तेनें जो चतुष्क ते दर्शनावरणचतुष्क कहिये. तथा 'पण निद्दा' एटले पांच निद्दांने. तेनेविषे चैतन्य कुत्सित एटले अविस्पष्टपणाने पा मेग्रे तेने निद्दा कहेग्रे. तेना पांच प्रकार आ ग्रे—निद्दा, निद्दा निद्दा, प्रचला, प्रचला, तथा स्थानाई (श्रीण्डी) एतदूप पांच निद्दाने निद्दा पंचक है वे. एवीरीते चार दर्शनावरणी अने पांच निद्दा ए नव प्रकारचुं दर्शनावरणीय मेग्रे. व ग्रे पतिहार पण कहेग्रे, ते कहेग्रे—'वित्तिसमं' वेत्री एटले पोलीआ समा न ग्रे. एने प्रतिहार पण कहेग्रे. जेम कोईमाणसने राजानी पासे कामे जवुं होग्रे

## ॥ श्री पर ग्रहच्यो न :॥ ॥ घ॥

॥ श्री यशःसो कृत बालावबोधसहित श्री देवें इसू ॥ ॥ रिविरचित कर्मग्रंथ त्रारंजः॥



## ॥ त्र॥

॥ प्रथम कर्म्मविपाकनामा कर्म 'यः प्रारप्यते ॥ ॥ ।दौ । । ।विवादिक्षेत्रं मंगलाचरणम् ॥

॥ षुब् वृत्तम्॥

ऐंदवीय जां शौँशि, सहसौंदर्ग्यशाजिनीं ॥ दि ह जा वि जां, स्मरामोंतस्तमोपहाम् ॥ १ ॥

॥ आयोव्तम् ॥

मेविपा विष्क ,स्वसंविदे विश्ववंद्य निवं ॥ वीरं मेविपाके, टबार्थिलिखनश्रमं कुर्वे ॥ १ ॥ ते सं संतु संतः, संततमतयोऽपरात्मिहतिनरताः ॥ विमली रुते वलय, दितश्रीर्यद्यशस्तो ः ॥ १ ॥ केचित्परात संवि,दि लावि लाः लो खलायंते ॥ तेन्यो न ।पि नीतिः, संतः संतोषना श्रेत् ॥ ४ ॥ ॥ श्री त्पर रुत्यो न ः ॥ श्री रस्वत्ये न ः ॥

ह्वे प्रथ गा थें ं ती, नी देवतानी हादि ं तिपादन रेंगे. ॥ सूल गा ॥

सिरि वीरजिएं वंदिय, में विवागं सास वुं॥ वीरइ जिएएं हे हिं, जेएं तो नस्ए ममं॥१॥

अर्थ-(सिरि कें) हाप्रातिहार्यरूप बाह्यलक्ष्मी तथा केवलकानादि क अंतरंग लक्ष्मी, तेणे री सहित अथवा चोत्रीश अतिशयरूप लक्ष्मीयें करीने बाह्य शोनायमान हे अने अन्यंतर, केवल तीर्थंकर प्रतिक्वानरूपिणी लक्कीयें करी शोनायमानहे, एवा (वीरिजणं के०) श्रीमहावीर जिन. वीर एटले कमेश हुनें विदारे तथा तपें करीने बिराजेहे ते नणी श्रीवीर कहेतां चरम तीर्थंकर, ते प्रत्यें (वंदिय के०) वांदीने मन, वचन, ायायें न थइने एटले ग्रंथारंनें समुचि तेष्टदेवतास्तुतिरूपमंगलाचरण कह्युं.

(कम्म के०) कर्मनो (विवागं के०) अनुनव तेनुं जणावनारं जें शास्त्र तें कर्मविपाक कित्यें, तेने (समासर्र के०) संदेपें करी एटले थोडे शब्दें अर्थ घणों जणाय, ते पेरें ( ं के०) कदीश एटले संदेपरुचि जे जीव, ते महोटां शास्त्र नणवाने आलसु, थोडा अद्वरें घणुं ज्ञान वांने तेने निमिनें कदीश. एटले अदीं अधिकारी तथा प्रयोजन,आत कर्म स्वरूप ते विषय, अने संबंध ए चारे देखाडगां

हीं जे कमेनो विचार, ते अनिधेय अने अनिधायक, ए-वचनरूप ग्रंथ तिहां वाच्य वाचक ए संबंध जाणवो. संक्षेपरिच एना अधिकारी जाणवा संक्षेपें व्युत्पित ए साक्षाद्रयोजन अने परंपराप्रयोजन मोक्स. ए चारवानां ग्रंथ नणावा सांनलवानी प्रवृत्तिनां हेतु देखाड्यां. एम निःप्रयोजनादि शंका टालीने, हवे कम ए शब्द व्युत्पित्तिक्षण कहेते.

व्यवहारनयें (जेणं के०) जे कारण माटे (जिएण के०) जीवें पांच मिथ्या ल, बार अविरति, प शिंग कषाय, अने पंदर योग, ए सत्तावन बंधना (हेडिंहें के०) हेतुयें करी तथा "पिंमणीयत्तणनिन्ह्व " इत्यादिक विशेष हेतुयें करी (कीरइ के०) करीयें, नीपजावीयें, (तो के०) ते कारण माटे ए नाम (क मं के०) कमें (नाम ए के०) कहेवाय. एट खे अंजन कूंपलीनी पेरें अंनंतानंत कमें पुजलें न । जीवलोक मांहे ए जीवनी कषायादि चीक णतायें, जेम तेल चोप हे खे शरीरें रजोमल लागे, तेम नंतानंतक में वर्गणाथी असंख्याता आत्मप्रदेश वीटाय, तेणे करी ज्ञानादिक आत्मग्रंण अवराय तथी जीव, मिलन रूप हेवा य. जेम दूधमांहे पाणी मले तथा लोहमां अग्नि मले, तेम सर्वीत्मप्रदेशें कमेंद लांचुं मलं हुं होय. ते कमें बंध नाम, सत्ताव बंध हे यें री करियें, बांधीयें. जीवें, तेनणी एनं कमें एनं नाम कहियें. ए नावार्थने. ए कमें, पुजल रूपीने, ते नणी मृत्तिमान जाणनं तथा प्रवाहरू पें आनादि जाणनं, केम के जो कमेनो संबंध जीवने प्रथम थयो, एम मानियें तो कमेरहित जीवने पण कमेसंबंध मानवों जो इपें एम मानतां थकां इष्करतपश्चरणादिकें करी सकलक मैंक्य करी सिद्ध थ

या: तेने पण कालांतरं वली कर्मसंवंध यातो केम निपेधाय? तेवारें ते कर्मक्य निमित्त इष्करित्रया करीयें ते पण व्यर्ध याय. ते माटे ए दृषण टालवान अर्थे प्रवाहरूपें जीवनी साथें कर्मसंवंध अनाहि मानीयें.

तथा सुवर्णादिक धातुने पापणनो अनादिपणे मलसंवंध, तीत्र श्रित्तं वां ने सुवर्ण नित्त थाय. तेम जीवने पण अनादिकर्ममलसंवंध, शक्कथ्यानरूप तीत्र अप्ति संयोगें टले, अने सहजस्कप शुक्षात्मरूप प्रगट थाय. ते परमात्माने पढी वं धहेतुना अनावं कर्मसंवंध न थाय, अनंतकाल सुधी ते शुक्षात्मरूप रहे, निःकर्म ने कर्म न लागे ॥ इति प्रथमगाधार्थः ॥ १ ॥

हवे ते कर्म, केटला प्रकारें हे, ते कहेहे.

पयइ ठिइ रस पर्सा, तं चठहा मोखगस्स दि इता॥ मूलपगइ ८ उत्तर, पगई खडवन्न सयनेखं॥ १॥

अर्थ-(पय६ के०) प्रकृतिबंध एटले स्वनावबंध (वि६ के०) स्थितिबंध ते कालमान (रस के०) रसबंध (पएसा के०) प्रवेशवंध. ते कर्मवृत्तनुं मान (तं चन्हा के०) ते कर्म, चतुर्धा एटले चार नेहंं (मोख्यगस्तिहृद्देता के०) मोदक एटले लाडवाने हृप्टांतें नाववो (मूलपग६६ के०) ए कर्मनीमूलप्रकृति ज्ञानवर्णाहि खान होय. (उत्तरपग६ के०) एना विशेषचेद ते उत्तरप्रकृति, ते मित्ज्ञानाव पांदिक ए सर्व छाने कर्मनी मिलीन (खडवन्नसर्यचेषं के०) एक्शोने खनाव न नेदं होय॥ इसक्तरार्थः॥ १॥

ते कर्म, जेनो ब्युत्पतिलक्ष अर्थ. प्रथम गाथामध्ये कह्यो ते, (च०६। केण) चार नेदें जाएवो. ते चार नेद कहें व्यां जे स्थित, रस. प्रदेश छने वंथनो समु हाय ते प्रथम प्रकृतिवंथ जाएवो छने ते प्रकृति.वांथी घकी एटला काल सुधी रहे. एम कालनुं मान,ते वीजो स्थितवंथ जाएवो. तथा जे कपायिक अध्यवसाय विशेष प्रद्या जे कमैदल, तेनो देशघातीयो रस अने सर्व घातीयो रस, अयातियो रस. तथा अग्रुज प्रकृतिनो रस, लींवडानी पेरें कडवो अने ग्रुजप्रकृतिनो रस दूथनी पेरें मीठो. ते त्रीजो रसवंथ जाएवो. तथा स्थितरस ते निरपेक् जे कमैदलनुं यहवुं योगनिमि तिक, ते चोथो प्रदेशवंथ जाएवो. ए चार प्रकारें कमैवंथ जाएवो. तेमज प्रथम वृद्य, वीजी वदीरएा, त्रीजो संक्रम. चोथो निक्च, पांचमो निकाचना उद्य चार प्रकारें जा

ण्वां. ए कमिल्रूप पण विवक्तायें री चार प्र ारें होय छहीं वालने समजाववा निमिनें लाडवानो हष्टांत दे ाडवो जेम ोइए लाडवो हि दुनो बनावेलो होय ए टले ग्रुंत, पींपर ने री, एने त्रिकटु कहीयें. कटुप्रमुख चीज, वाग्रने टाले एवा इव्यवकी नीपनो जे लाडु, ते ां वा हरवानो खनाव होय. ते ज शीतल इव्यं नीपन्यो लाडु, तेमां पिनहरण रवानो खनाव होय, एने प्रथम प्रकृतिबंध कहियें. तथा कोइएक मोद एक दीवस सुधी, कोइ पक् सुधी विण्ये नहीं; एवं कालमा न, ते बीजो स्थितिबंध कहियें. वली तेहीज लाडवानो रस, कोइनो मीलो, कोइनो अत्यंत मधुर, कोइनो कडवो, कोइनो कषायेलो. इत्यादिक रस होय ते त्रीजो रसबंध कहियें. तथा कोइ लाडवो शेर प्रमाण, कोइ अदिशेर प्रमाण, कोइ पान्रेर प्रमाणें स दलमान, ते चोथो प्रदेशबंध कहियें. एम दृष्टांत देखाडी दार्ष्टांतिक कमेने विषे जोडियें.

जे कर्मदलनो ज्ञान विरवानो खनाव, ते प्रथम ज्ञानावरणीयकर्म. दर्शन आवरवानो खनाव, ते बीजं दर्शनावरणीय कर्म. नाज्ञन वेदवानो खनाव, ते त्रीजं वेदनीयकर्म. दितादित विकल रवानो खनाव, ते चोथं मोहनीय में. इड नीजेवो खनाव, ते पांच आ कर्म. इत्यादि बद्धा मोविषे जाणी लेवं. ए मूल प्रकृति आठ, ने उत्तरप्रकृति एकशोने आछावन होय, ए प्रकृतिबंध जाणवो. तथा कोइएक प्रकृतिबंध पकी वीश कोडाकोडी सागरोपम सुधी रहे, कोइए त्रीश को डाकोडी सागर सुधि रहे, ए स्थितबंध जाणवो. तथा कोइएक कर्मनो रस डवो तथा घाति अकोइएकनो घाति तथा मीठो, एक वाणी अवेदा हो अद्यादिक रसवंध जाणवो. तथा कोइएक कर्म मंद, मन वचन कायायोगयोगें करी अद्यादिक होय, पातलां होय अने कोइएक उत्कटयोगें करी बहुप्रदेशिक स्थूल होय. ए प्रदेशबंध ॥१॥

ए चार चेद मध्यें पण प्रथम प्रकृतिबंध क हो, तेमाटे ते प्रकृतिना मूल चेद आव हे, तेनां नाम अ क्रमें त्रीजी गाथायें कहेहे.

इह नाण दंसणावर,ण वेख्य मोहान नाम गोख्याणी ॥ विग्धं च पण नव ७ ख, ६वीस च तिसय ७ पण विहं ॥३॥

अर्थ-(इह के॰) अहीं (नाण के॰) ज्ञान ते एपयीयें री वह नो नि एंय, (दंसणावरण के॰) बीज़ं दर्शनसामान्यावबोध आवरणहे. (वेश्र के॰) त्रीज़ं वेदनीयकर्म. (मोहाज के॰) चोशुं मोहनीयकर्म ने पांच ाः कर्म (नाम के॰) हकुं नामकर्म (गोआणी के॰) सात्र गोत्रकर्म (विग्वंच के •) ार्व राय मे. ां प्रथम ज्ञानावरणीय मे । तिज्ञा वरणादि (प ण के 0) पांच नेद हे । ति दरीनावरणीय मेना र, दरीनावरण र पांच निहा लीने (नव के 0) नव नेदर्छ जीजा वेदनीय भैना शाताने आ ता ली ( के 0) बे नेद्रे.चोथा विह्नीय कमना दुरीन विह्नीय ए, नेचारि विह्नी प विश् लीने ( हवीस के ) अहावीश नेद थाय. ए चारे मेना चुन ालीश नेद थया. पांचमा आयुःकर्मना देवायुःप्र ख (च इ के ०) चार नेद थाय. एवं अ तालीश, हा नामकर्मेना गत्यादिक प ोत्तर तथा पिंमप्रकृति अहावीश जीने (तिसय के 0) ए शोने ए नेद थाय सातमा गोत्रकर्मना उंच नीच नेदें री (के 0) बे जेद याय. आत । अंतरा कर्मना (पणविद्धं के ०) पांच जेद. ए सर्व लीने । व मूल प्रकृतिना चेदना एकशोने अहावन् उत्तरप्रकृतिचेद थाय॥ इत्यक्तरार्थः ॥३॥ जाण वं ते क्वान अथवा जाणीयें सा ान्य विशेषात वस्तु हि ना , जाति, ण, त्रि यादिक विशेषयोजनासहित वस्तुस्वरूप जाणीयें, ते माटे एने झान कहियें. जे पुरुष, नामें चै , जाति । ण, गुणें ालो, परि । णें दीर्घ, संख्यायें ए , ए जण जण विशेषें वस निर्धारीयें, ते झान हियें. तथा देखं थवा देखीयें जेणे री, ते दरीन । ान्य विशेषात वस्तुने विषे सा ान्यांज्ञें ना , जाति, ए, त्रियादि विज्ञोषयोजनारिहत ोइए वस्तुं धर्मी वे एवो व्य बोध, ते बीजो दरीनिनरा रिचपयोग जाएवो ए ब ल आवरण शब्द जोडीयें, एटले झानने विरे, ते प्रथ झानावरणीय मे ने जे दर्शनने विरे, ते बीजं दर्शनावरणीय मे. जेणे री नतुं, नूंमुं, सुख, ः ख वेदियें. तेमाटे ते ना वेदनीय में हिं हियें. जे हें वे, जेए वि रीधे जने हित्र किंवा हित यशे ? इत्यादिक सम्यक् विचारणारहित आत्माने पण जेणे री करे, एट ले हितना है जे प स्काणादिक ते :खदायक जाणीने ते नो ।ग ो जाय अने अहितना हेतु जे विषयादि ते हित्बुिं यहा। जाय, ते हिनीय में चोशुं जाए बुं. तथा जे । नवसी बीजा नवने विषे उदय आवे, तेने । युः में हीयें य पि बीजा पण कमें नवांतरें चदय आवें अने ते नवमां पण उदय विने ने ए । युःकर्म तो ते नवमां उदय न आवे,परंतु वर्य पर्णे बीजे नवेंज उदय आवे,ए नियम जणाव्यो.ए पांचमुं आयुःकर्मः तथा गतिजात्यादिक उद्यिक पर्यायें करी जीवने नमावे, ग्रुद्खरूपने पण नारकी तियेच एकेंड्य इत्यादिक हीन नामें करी सहित जणावे, तेनणी ए नामकर्म ढ हुं जा

णवुं. तथा वच एटले णाश्रयपणे अने तेथ ही विपरीत ते नीच जाणवुं. एवे शब्दें करी बोलावीयें, ते नाम गोत्र में सातमुं जाणवुं तथा जेणे री विशेष दान, लान, नोग, वपनोग, वीर्यादिक जे आत्मानी लब्धिने तेने हणीयें ते नणी ए वि कमे त कहीयें

हवे ए छाते भेनी संगति हीयें हैयें.

र छहीं ज्ञान, दर्शन, ते जीवनुं सिरूपने जे नणी छपयोगलक्षण छाता हो ते ने छाश्रयें कमेविचार तेमां पण सकल शास्त्रविचार ज्ञानथी प्रवर्त्ते,लब्धि पण सघ ली ज्ञानोपयोगें छपजे, मोक्ष्गमन पण केवलज्ञानोपयोगयुक्तने होय, ते माटे ज्ञाननी प्रधानता कही, ते कारणे ते शावरण पण पहेलुं कहां.

१ ते पढी ज्ञानोपयोगथकी दर्शनोपयोगें रहे, ते माटे तेनुं आवरण िन्नं ह्यं.

र ए बेडु आवरणनो तीव्रविपाक वेदतां अजाणपणादिकें री अशाता या य अने एनाज तीव्रक्त्योपशमें सूक्त थे जाणतां, देखतां, शाता वेदे, ते नणी ए पढी वेदनीयकर्म त्रीजुं कह्युं.

ध तथा ए ए आवरणक्योपशमें ईिड्यना अनुकूल तथा प्रतिकूल विषय पामी रागदेषें जीव मुंजाय, ते नणी मोह्नीय कमे चोथुं कह्युं.

५ तथा मोहें सुंज्या जीव, आरंनादिकें करी नरकादिकनुं आयुष्य बांधे, ते न णी पांचमुं आयुःकमे कहां.

द तथा ते आयुष्य अवद्य गतिजात्यादिक नामें करीने निधत्त ते स्थापीजें निधत्त करीयें, ते नणी पढी नामकमें ढकुं कह्यं.

उतथा ते पठी नरकादिक गतिने उद्यें नीचपणुं अने देवादिक गतिने उद यें उंच पणुं जीव वेदे, ते नणी ते पठी सातमुं गोत्रकमें कह्युं.

ण तथा उच्चगोत्रने उद्यें राजा तथा शेव प्रमुखने दान,जान, नोगादिक ज व्धि होय अने नीचगोत्रने उद्यें पामरादिकने दानादिक जव्धि हणाय. ते नणी गोत्रकर्म, पढ़ी ते आवमुं अंतरायकमें कहां. एम आव कमने अ में कहेवाना हेतु कह्या ॥ ३॥

हवे ए आव कमेनी अनुक्रमें उत्तर प्रकृति कहीयें वैयें.

मइ सुच्य वही मण के,वलाणि नाणाणि तह मइनाण ॥ वंजणवग्गह चन्हा, मण नयण विणिदिय चनका ॥ ४॥ अर्थ-(मइ के०) पहेलुं मित्रान (सुअ के०) बीखं श्रुतज्ञान (निही के०) त्री खं अविध्यान (मण के०) चो खं नःपर्यविद्यान (केवलाणि के०) पांच केवलज्ञान ए पांच (नाणाणि के०) ज्ञान (त्र के०) त्यां प्रथम (इनाणं के०) तिज्ञानना अद्यावीश नेद हे,ते हेहे (वंजणवग्गह के०) व्यंजनाव ह (चन्न के०) चार नेदें (मणनयणिविणिदियचन के०) मन अने नयन एट ले लोचन, एवे विना शेष इंडियना चनुष्कें करी चार नेद जाणवा. इत्यक्तरार्थः ॥४॥ त्यां प्रथ ज्ञानावरणीय मेना न्तर नेद पांच हे, ते हहे ते आवरवा यो ग्यं ज्ञानग्रणनेदें करी तेना आवरणना नेद सुखें स जाय, ते हि प्रथ ज्ञान पांच कहेहे अदीं दंदसमासांतने प्रांतें ज्ञाव ज्ञान वो खं तथी एक तिज्ञान, बी खं श्रुतज्ञान, त्री खं अविध्ञान, चो खं नःपर्यविज्ञा ह ने पांच सुं केवलज्ञान.

१ त्यां जे पांच इंड्यि ने बिहो नोइंड्यि जे मन, तेना व्यापारें री जे वस्तु हुं विशेष जाणहुं, ते मतिज्ञान.

श्रेतथा एवा आ ारें जे वस्तु होय ते घट नामें, जल आएो एवं पूर्वापर पर्या लोचन स्वरूपव्यंजनपर्यायविशिष्टमितपूर्व ज्ञान, ते श्रुतज्ञान. ए बे ज्ञान ते (आक् केण) ाता ते थकी ए पर जे पांच ईडि्य, ते निम्नि हों होय, ते निणी पर शिंध परोक्ष हीयें, ने लोकव्यवहारें प्रत्यक्ष हीयें.

३ ता इच्य, हे , लि अने जाव, ए चार मर्यादायें जे इंडियनिरपेक्ट रूपीइव्य विषय प्रत्यक्ट, ते अवधिज्ञान त्यां इच्याथी जयन्य तो अनंत प्रदेशीआनो ए खंध एवा नंता खंध जाएो, अने उत्क तो पर एष्ट्रा जाएो, ते इच्यावधि. तेमज हे थी जयन्य तो बादर निगोदना जीवनुं शरीर जे अनंता नील, फूल, जीवनी ए एया हे एवा सूक्ट पनक शरीर प्रमाण लगें जाएो अने उत्क थी तो सर्वलो प्र एो असंख्याता खंम अलो ध्यें स्थापियें, तेटलुं जाएो ए हेन्त्रावधि ने लिथी जयन्य तो विलिकानो संख्यात हो नाग पूर्वीपर जाएो, अने उत्क थी तो संख्यात कालच मध्यें थयो अने यशे, ते जाएो, ए लावधि तथा जावथी जयन्य सर्व पर्यायनो अनंतमो नाग जाएो, उत्कृष्ट्यी तो ए इच्यना असंख्याता पर्याय एम अनंत इच्यना असंख्याता पर्याय जाएतां सर्व इच्यना थइ अनंत पर्याय जाएो, ए नावावधि. एम चार मर्यादायें परिमित्रमानोपेत अवधिज्ञान जाएावुं.

ध म ष्यलोकने विषे स । या पंचें डि्यना नोग नाव जाए बुं, ते नःप र्यवज्ञान. ए बे वि ल प्रत्यक्त एटले देशप्रत्यक्त हे

प तथा केवलसंपूर्ण सर्व इव्यपयीयने विषे अनंत ज्ञान ते केवलज्ञान. ए सकल प्र क् केवलज्ञान जाणबुं एम ए पांच ज्ञान कह्यां, ते ध्ये प्रथ धुं जे मतिज्ञान, तेना उत्तरनेद छावीशके, ते विवरण रीने कहेके.

त्यां घटादि थे, व्यंजीयें प्र शियें जेणे करी. जे दीवे री पदार्थ काशीयें ते. व्यंजन हेतां स्पर्शनादिक इव्यं हिय तथा जिहां स्पर्शादि व्यक्त थाय ते घटपटादिक पण व्यंजन हीयें तेणे व्यंजन हेतां इव्ये हिय ते इव्ये हियं री व्यंजन एट छे घटादिक व्यक्ति ं श्रवमह एट छे समस्त पणे महचुं, जबुं, ते व्यंज नावमह कहीयें ते स्पर्श, रस, एए ने श्रोत्र ए चार, इंडियथी होय; परं मन श्रवे जोचन ए बे श्रणमध्यां वस्तुने यथायोग्यतायें प्र हों, तेथी एनो व्यंजनावमह न पामीयें, जे जणी जो एने वस्तु पामीने प्रकारों एम जियें तो श्रिम, तीवण श्रह्मादिक, केम प्रकारों ? जे जणी तेनी साथें जतां दाह, वेद, इंडियनो थाय. तथा काचकूंपा मांहे छुं तैला दिक महतां केम तेल थी संबंध थाय? जो जोचन जइ त्यां मजे, एम मानीयें तो कूपें विड् था छुं जो इयें ? अने जो विड् था तो पाणी, तेज, के रहे ? इत्यादिक घणां दूषण जागे, ते नणी मन तथा नयनना व्यंजननो व्यंजनावमह, परमपुरुषें न मान्यो. ए बे श्रप्राप्यकारी कह्यां श्रने रोष चार इंडिय प्राप्यकारी वे. तेना चार व्यंजनावमहें री चार नेद जाणवा. एनी जचन्यिस्थिति । विलिना सं ।त नाग प्र एवे ने चत्क श्रासो ह्यास एवक जेटलो मिश्रग्रणवाणानो । ज, तेटलो काल एनो प जा वो ॥ ४॥

ए रीतें चार प्रकारनो व्यंजनावयह ो. हवे श्रीवयहादिक हेते.

अनुग्गह ईहावा,य धारणा करण माणसेहिं हा॥ इअ अध्वीस नेअं, च दसहा वी हा चसुअं॥ ॥॥

अर्थ-( तूगाह कें 0) एक श्रीवयह (ईहा के 0) बीजी ईहा टक्ने थे विचारणा (अवाय के 0) त्रीजो अपाय (धार ा के 0) चोश्री धार ा ( ण के 0) चहु, कान, जीन, नासिका अने लचा. ए पांच ईडियो ने (माणसेहिं के 0) मनदी उपजे (उहा के 0) ए उ चे दें करी उ प्रकारने हुं श्रीवयहादि चारें ग्रुण i चोवीश नेद थाय. तेनी साथें पूर्वी व्यंजनाव हा ार नेंद में जनतां (इश्र के॰) ए ( हवीसनेश्रं के॰) ावीश नेदिन , तिङ्गान होय. श्रने (चटदसहा के॰) चटद नेदिन श्रु, (वीसहाच श्रं के॰) वा वीश नेदें श्रुतङ्गान होय॥ इत्यक्तरार्थः॥ ५॥

१ थे हेतां स्पर्शनादि ना व्यंजनाव ह थया पा था लो नादिकें प्रथम जे कोइ ए धर्मी हे एवं ना , वर्ण, 'ध, पि एणादिकें योजनाहीन अव्या कान, ते नैश्रिय अर्थावयह ए समय ाल प्राणहे. था जे ोइएकें ब्दना अर्थाव ह पही ईहापूर्व ए शब्द सांनव्यो, एवो पाय यो, ते पही ए केनो ब्द ? एवी ईहा उपजावी, ते नणी ते पाय । , व्यावहारि थिव ह कहीयें. ए वली वली जे अपायविशेष ईहा उपजावे, ते व्यावहारि वियह अह अंतर हूर्नप्रा होयः

शते वर्यहित थेनी वर्ण, गंध, रस, स्प दि धर्मविषयिणी विचारणा ते ईहा जे, ए इच्य ना घट, िंवा पट, वर्णे रातो, किंवा नीलो, गंधें सुगंध, किंवा गेंध, परि ाणे लघु, किंवा होटो, त्रियायें चालतो, किंवा बेठो. एम जाति, गुण, किया विचारबुं, ते ईहा,ते अंतर हूर्नप्र ाण जाणवी.

र ते पढ़ी ईहित थें ए अं रधमैसहितपणे निर्धार जे, ए थे जं ना घट, वर्णे रातो, परिमाणे ोरीयाथी होटो, बेटो ए रीतें जो ते धर्में निर्धारे, तो ते सम्यक् झान अने अहते धर्में निर्धारे, तो मिण्याझान ते पा य अंतर हूर्तप्रमाण जाणवो

ध तेवार पढ़ी ते निर्णीत अथी, वासनासंस्कारपूर्वक चित्तमां हे धरे, तेषो करी । जांतरें ते सरखी वस्तु देखी अथवा विचारतां सांनरे ते धारणा जाणवी। एनो काल संख्यातो पण होय. जे माटे सागरोपमादि ने आंतरें पूर्वे कंच्य सां नरे छे. जातिस रण ज्ञानने पण आचारांग हित्तमध्यें धारणानो नेद कह्यो छे.

ते (रण के॰) स्पेर्शेडियादि पांच िडि ने (ानस के॰) उर्हुं नोईडिय जे न, शि जपना उ धीवयह, ते पठी एज ईडियनी अपेक्सयें ईहा, ते पठी ते उना पाय, ते पठी ते उनी धारणा. ए चोवीश चेद अया. ने नयन तथा न विना शेष चार ईडियोना चार व्यंजनावयह जे पूर्वेली गाथामां ह्या, ते मेलवतां श्रुतिनःसृत तिज्ञानना अष्ठावीश चेद ह्या. तथा कार्यस यें ते ार्यने पार पमाडवानी अकल, रोहानी पेरें जपजे, ते

पहेली औत्पातिकी मित जाएवी तथा जे ग्रुरुनो विनय रतां तिनी वृद्धि था य, ते बोजी वैनियकी मित जाएवी जे कार्य करतां करतां अन्यास विशेषें विशेषमित उत्प थाय, ते त्रीजी कार्मिकी मित जाएवी तथा जे वयना परिप कल्यी वृद्धने अकल उपजे, ते चोथी पारिणा की मित जाएवी ए चार श्रु तिनः सृत मितना जेद्दे, ते पूर्वों अद्यावीश साथें मेलवतां ब शिश जेद पण मित्जानना थाय.

थवा व हादिक छावीश मितिङ्गानना नेद, पूर्वे ह्या, ते एके ना ब , अबहु, बहुविध, अब विधादि बार बार नेद हे, ते हेहे.

खां नेक जीवो, घणा वाजित्रना शब्द सांनक्षेत्रे ते मध्यें क्र्योपशमनी विचित्रतायें करी कोइएक जीव, घणा शब्द यहे, ते पहेलुं ब विश्वे के शेइए जीव, योडा शब्द यहे, ते बीजुं के शेइए जीव, एक शब्दना तार, मंइ, तार के हेतां गाढो छने मंइ कहेतां मंद इलको इत्यादि घणा विशेष जाएो, ते छिं बिध कोइएक घोडा विशेष जाएो, ते चोधुं अबदुविध. शेइए तुरत यहे, ते पांचमुं क्षिप्र. कोइएक इलके शांसते यहे, ते उठुं अक्ट्रिप्र. शेइए धूमादिक लिंगें करी अग्यादिक जाएो, ते सातमुं सिलंग कोइएक लिंग विना जाएो, ते मुं अलिंग. कोइएक संदेद सिहत जाएो ते नव संदिग्ध कोइए संदेद रित जाएो, ते दशमुं असंदिग्ध. शेइएक ए वेला कह्यं, ते बीजी वेला ए हे तां जाएो, ते अगीआर धुव शेइएक वारंवार जाएाव्याधी जाएो ते बार अधुव ते अधीवयहादिक, अडावी चेदने बार ग्रुणा रतां त्रणशेने उत्रीश चेद पाय. तेमां औत्पातिकी प्र वार प्रकारनी बुदि चेलतां एशोने चालीश चेद मितज्ञानना थाय एम ने प्रकारें मितज्ञानना चेद हिथें.

हवे श्रुतज्ञानना नेंद्र कहें है. ं प्रथम मितज्ञानय है श्रुत हि कें वी रीतें जाणीयें ? ते कहीयें हैयें. मित ते श्रुत कारण है ने नावश्रुत ते ति कार्य है. तथा मित ते निरक्ष ने श्रुत ते साक् रिवचारणा वर्ण रूप है; तथा ति ज्ञान तो मूं गुंहे को इने पोता स्वरूप कही न शके ने श्रुत हि क्रिक्त हों परने दि हों जाय है. तेथी कोल ए रीतें श्रुतज्ञान, मितज्ञानयकी नि है. तेथी मित पठी श्रुत होय. ते नणी खामी, विषय, प्रमाण, परोक्ता अने साध में नणी मित, पठी श्रुत कहां है ते श्रुत, चौद ने हें थवा वीश ने दें होय ॥ ए॥

श्रुतनिःसृ	तिज्ञानना	अघावीश	नेद	•	यंत्र.
(2, 11, 10)		-, -, ,,,,			1-11

स्पर्शनें ड़िय.	ा्ं एोंड्यि	रसनें ड्यि	श्रवर्णें ड्यि.	च ुरिं इियः	न नोइं डि्य.	হ ত
व्यंजनाव	व्यंजनाव	व्यंजनाव	व्यंजनाव	0	0	8
यहः <u>१</u> स्रयीव	यह∙ १ श्रयीव	यह. १ अर्थाव	यहः १ अर्थाव	अर्थाव	अर्थाव	Ę
यहः १ - ईहाः ३	यहः १ ईहाः ३	यह. १ ईहा. ३	यह. १ ईहा. ३	्रयहः १ ईहाः १	यह. १ <b>ईहा.</b> १	<b>E</b>
अपायः ध	पायः ध			ञ्चपायः इ	पाय. ३	<b>Ę</b>
धारणा. ५	धारणा. ५	धारणाः ५	धारणाः ५	धारणा, ध	धारणा. ४	६

हवे य चौद नेद, श्रुतज्ञानना देखाडेडे.

छकर स ।। सम्मं, साईछं खलु सप वसिछं च ॥ गमिछं छंगपविठं, सत्तविए ए सपडिवस्का ॥ ६॥

अर्थ—( कर के०) अह्रस्थुत, (स । के०) संहिश्वत (सम्मं के०) सम्यक्श्वत (साईश्चं के०) सादिश्वत (खलु के०) निश्चं (सप वित्यंच के०) सपर्यवसितश्वत अथवा सात श्वत (गिमअं के०) गिमकश्वत ते पाव, ढंद, आलावा, सरखा होय. (अंगपविष्ठं के०) अंगप्रविष्टश्वत, ते आचारांगादिक (ए के०) ए (सत्तविष् के०) साते श्वतना नेद ते (सपिडवक्ता के०) सप्रतिपक्त करीयें एटले ए सातेने पोताना प्रतिपक्त सिहत करियें. जेम अक्रश्वत, त्यां बीखं अनक्तर श्वत, संिहश्वत त्यां बीखं असंिहश्वत एवो रीतें प्रतिपक्ती सात नेद मेलवतां चौद नेद, श्वतक्तानना थाय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ६ ॥

हवे चौद नेद ं विवरण लखीयें हैयें.

त्यां अक्र त्रण नेदें हे. एक संकाक्र, वीजा व्यंजनाक्र, त्रीजा जब्याक्र.

त्यां जे पत्रादिकें ल । ते ं । हर, खें री छ । र रीयें जे । र कारा दि, ते ंजना र. ए . की नावश्रुत होय, ते । टे ते श्रुतना कारण पणाने लीधे एने इव्यश्रुत हीयें. तथा शब्द सांन के तथा रूपादि यहे थके " को ए अर्थ " एवं जे निधेयपणे अर्थज्ञान हुं हे , ईियावर णक्ष्योपशमलिध घन्य ज्ञान, ते श्रुत एट के निधेय पदार्थने अनंतमे नागें अनिधेय पदार्थने ते जाण वुं, ते लब्ध्यक्रर ए नावाक्रर.ए ंना अक्ररश्रुत जाण वुं.

श अने एं प्रतिपद्धी बीं नक्तर श्रुत ते हीयें जे श्वासें, डमकारें, अने बी कें, खांसीयें करी प्ररूपादिक ं ज्ञान, ते अनक्त्रशब्दश्रुत. ए बीजो नेद जाएवो.

र त्री ं संज्ञाश्रुत. ते संज्ञा ण हे. एक हेतूपदेशिकी, बीजी दैर्घकालिकी, त्रीजी दृष्टिवादीपदेशिकी, ए त्रण मांहे अहीं देर्घ ालि ही संज्ञायें करी जे सही या पंचेंडिय मनोज्ञानवंत विवृते श्रुत ते संज्ञिश्रुत, ए विजो जेद जाणवी

ध चोथुं ते प्रतिपक्ष जे दैर्घकालिकी संज्ञा रिहत जे जीवने न विना ईिड् यथी थं, ते संज्ञिश्चत, ए चोथो चेद । वो

ए पांच ं सम्यक्ष्ष्टिजीव ं श्रुतः ते स क् श्रुत हण रे, तो पण सम्यक् श्रुत थाय. कारण के ते होटाने हिंदुं एो तेथी ए पां ं सम्यक् श्रुतः व बहुं मिण्यादृष्टि जीवने जे परि मे, ते मिण्याश्रुत. जे नणी मिण्या दृष्टि जी व, खोटाने खरुं ने खराने खोटुं जाणे, तेथी ते मिण्यात्वश्रुत बहुं जाणं.

श्र सात ं दिसहित ते सादिश्वत. ते दि इव्य, हे , ल ने नावनी अपेक्तायें चार प्रकारें हे तेम सप्यवसान हेतां छांत तेण सहित ते सप्यविस त श्रुत, ते पण तेमज चार नेदें हे त्यां इव्यथी ए जीवनी पेक्वायें श्रुतझान, ते सादि अने सप्यवसित हे केम के नव्यजीव सम्यक्त पामे, तेवारें श्रुत पामे. ते सादिश्रुत ने वली सम्यक्त वमे तिहां, थवा केवल ान पामे तेवारें नावश्रुत टली जाय, एटले श्रुतनो ंत थाय, तेथी पर्यविद्यत. एटले सा वि अने सपर्यवित्तत, ए वे नेद इव्यथी क ा ने वीजीवनी पेक्वायें श्रुत, अनादि तथा अपर्यवित्ततहे. जेनणी एम कह्यं न जाय जे ा संसारमां विथी प हेलुं अमुकने श्रुतझान प्राप्त थयुं अथ कथी श्रुत ाननो ंत थहो, एम अनादि अनंत कालनणी प्रवाहरूपें श्रुतप नाहि नंतहे. एटले ना दि अने अपर्यवित्तत ए वे नेद, इव्यथी क । ए रीतें चारे प्रकार श्रुतना इव्यथी

ह हेवाणा. हवे केत्रयी हेठे. त्यां नर ऐरवतें जेवारें प्रथ ियं वर्ते, ते वारें हादशांगरूप श्रुत होय, ते दीवसथी सादि कहेवाय. तेवार पी जे वारें ती धिविष्ठेद थाय, तेवारें श्रुतिविष्ठेद होय, ते ाटे सां हेवाय. तथा महाविदेह मांहे तीर्थिविष्ठेद न थाय तेथी श्रु नो पण विष्ठेद न थाय तेथी नादि नंत. या जिनी अपेक्सपें उत्सिर्ध्यणी श्रुवर्सा णी जे त्रीजा श्राराने प्रांतें,चोथे श्रुने पां मे होय. ने हा श्रारा ं विष्ठेद थाय, तेथी सादि, सांत कहियें. तथा उत्स र्षिणी श्रुवसिण्णी जें हाविदेहें श्रुनादि ने श्रुनंत जाणवुं. ने नावथी नव्यनी पेक्सपें सम्यक्त पामे तेवारें सादि, अने केवल ज्ञान पामे तेवारें सां . था नव्यनी पेक्सपें श्रु नादि श्रुनंत हो. ए रीतें सादिश्रुत, श्रुनादि श्रु श्रु सपर्यवस्ति श्रु ने पर्यवसि श्रुत. ए चार चेद पूर्वो चेद साथें मेलवतां हा जी दश चेद श्रुतज्ञानना थया.

११ ा गी रिंगिम एटर्जे रापान, ाजावा, तेणे री ध्युं जे श्रुत दृष्टिवादप्र , ते गम् श्रुत.

१२ ारं एं तिपक्ती गिर श्रु ते हि हां पाठ सर । न होय । जि श्रुत ।। पेरें, ते । रंगिर श्रु जाएं।

१३ तेर अंगप्रविश्व ते चारांगादि दाद ांगी कान, ते तेर हे चेद १४ चोद ते अंगधी बाहेर उपांग, दशवै हि , उत्तराध्ययनादि तथा प्र रणादि कान, ते अंग । श्रुत. ए चोद हे जाणवो

ए रीतें क्रेशुत, संज्ञी श्रुत, सम्यक् श्रुत, ादि श्रुत, सपर्यविह त श्रुत, गिम श्रुत, अंगप्रवि श्रुत, ए सात श्रुतन प्रातिपाक्ति विरोधी सात नेदः जे अनक् र श्रुत, संज्ञि श्रुत, मिथ्या श्रुत, नादि श्रुत, अपर्यवित्त श्रुत, गिमक श्रु त, गबाह्य श्रुतः ए सात नेद् मेलवतां चौद नेद श्रुतना ा.

था इव्य, हो, ाल, ने नाव ए चार प्रकारें श्रुतना नेद हें छो इ व्यथी पूर्ण श्रुतकानी, आदेशें जिनवचनथी सर्वेइव्य जाणे. हेन्नथी सर्वहेन्न आ देशें जाणे ालथी आदेशें सर्वकाल जाणे नावथी श्रुतकानी, आदेशें सर्वेइव्य ना निधेय पर्याय जाणे एम चार प्रकारें श्रुतकान हे अने आवरणक्त्योपशम विचित्रतायें ने नेद थाय. जे नणी चौद पूर्वधरमांहे ए एकथी अनंतग्रण वृद्धि हानीयें री, चढता पडता हहाण विडया होय ॥ ६॥ हवे वीश नेद, श्रुतना कहेते.

पक्षय अकर पय सं,घाय पिडवित तह्य अणुठेगो ॥ पाहुडपा ुड पाहुड, वच्चू पुवाय ससमासा ॥ ७॥

अर्थ-(प य के०) पर्याय श्रुत, ( क्तर के०) अद्भर श्रुत, (पय के०) पर श्रुत, (संघाय के०) संघातश्रुत, (पिडवित के०) प्रतिपत्तिश्रुत, (तह्य के०) तेमज वली (अणुर्रुगो के०) अनुयोगश्रुत, (पाहुडपाहुड के०) प्रानृ तप्रानृतश्रुत, (पाहुड के०) प्रानृतश्रुत, (पाहुड के०) प्रानृतश्रुत, (पाहुड के०) प्रानृतश्रुत, (पहुड के०) प्रानृतश्रुत, (पहुड के०) प्रानृतश्रुत, (पहुड के०) प्रानृतश्रुत, ए दशने वली आगल (ससमासा के०) समास सहित करी यें एटले पर्यायसमासश्रुत, अक्रसमासश्रुत, पहसमासश्रुत, संघातस सश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत, अयोगसमासश्रुत, प्रानृतप्रानृतसमासश्रुत, प्रानृत समासश्रुत, वर समासश्रुत, प्रवेसमासश्रुत, ए रीतें ए दश सायें प्रवेक्त दश मेलवतां श्रुतकानना वीश नेद थाय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ७ ॥

त्यां सूच्य निगोदिनं लिब्ध पर्याप्तो जीव, तेहने नव प्रय समर्थे जेटलो ज घन्य क्रश्रुत तेथी बीजे समयें जेटलो ज्ञाननो एक विनाग परिष्ठेद खंश वधे, ते प्रथम पर्यायश्रुत जाणवुं, तेवा बे चार पर्याय. ते बीजुं पर्यायसमासश्रुत जाणवुं.

अकारादि लब्ध्यक्तर अनेक व्यंजन पर्याय सहित जाणवो, ते त्री अक्र्र श्रुतः एवा बे चार लब्ध्यक्तरनुं झान, ते अक्र्रसमासश्रुत चोथुं जाणवुं

तिहां अकारादिक ककारादिक जे ते निम्न निम्न अक्र संयोगें नि नि अ थैना वाचक थाय, ते व्यंजनपर्यायः जिहां अर्थ पूर्ण थाय तेटला अक्रसमूह नुं नाम पद कहीयें. तेनुं ज्ञान ते पदश्रुत पांचमुं जाणवुं. एवा घणा पदं ज्ञान, ते पदसमासश्रुत ढां जाणवुं.

तथा गलादिक अन्यतर मार्गणा दारमध्यें एक म ष्यादिक गतिना जीवने दनुं ज्ञान, ते संघातश्चत सातमुं जाणवुं. अने मनुष्य, तिर्थच, देवतादिक. एम बे त्रण गलादिकना जीवनेदनुं ज्ञान, ते संघातसमासश्चत आवमुं जाणवुं.

गत्यादिक मार्गणा दारमध्यें एक गत्यादिक दारमांहे सर्व संसारी जीवना ने द अवतारवानुं ज्ञान, ते प्रतिपत्तिश्रुत नव जाण नुं एवो बे चार मार्गणा दारें जीवनेद विवरे, ते प्रतिपत्तिसमासश्रुत दशमुं जाण नुं.

तेमज गत्यादिक मार्गणा दार अवलंबीने जीवादिक पदार्थनुं सत्पद्रप्ररूपणा

दि अर्थ देवाता दार ते मध्ये एक अनुयोग दारें निरूपण रन्नं. जे देव पद, एक नेद नणी वता र्थनुं वाचकने जे अवित वस्तुनुं वाच ते एक पद न दोय जे खर, शृंग, देव ए बे पद नथी, ते नणी ए अवित वस्तु न दोथ. ए ता पदनी प्ररूपणा करवी तथा देवता असंख्याता अने ष्य संख्याता इच्य ए खे ए (अणु के०) सूत्रनुं अर्थ साथं जोडनुं, ते गीआरमुं अनुयोगश्च जाणनुं ए घणी नातियें नुयोग हेवो, ते बार अनुयोगसमासश्चत जाणनुं

प्रानृतप्रानृत एवे नामे, दृष्टिवाद ध्ये अधि रि विशेषते. जे अंग हि अ ध्ययनना चहेशा होयते, ते पूर्वमांहे षायपादुड, मेपादुड, ते ध्ये अधि रि विशेषें पूर्ण पूर्ण थये पादुड पादुड पूर्ण थाय, तेवा ए ं ज्ञान, ते तेरमुं प्रानृतप्रानृतश्चत जाणवुं. अने एवां बे चार ानृ प्रानृत ं ज्ञान, ते चौद ं प्रानृतप्रानृतसमासश्चत जाणवुं.

तथा घणे पाढुडे पा डे ए पाढुड होया जे घणे उद्देशे ए ध्यय हो यहे, एवं एक पाडुड ं ज्ञान, ते पंदर ं प्रानृतश्चत जाणवं. तेहवा वे चार ानृ ं ज्ञान, ते ् शोल ं प्रानृतस सिश्चत जाणवं.

ते घरो पाहुडे ए वस्तु, एवे नामें अधि ार घाय है. जे ध्ययनना स दायें सुयरकंध घाय है, एवो एक पूर्वाधि ार ते सत्तर वस्तुश्च जाए हुं. ने एवी बे चार वस ं ज्ञान, ते खढार वस्तुस ासश्चत जाए हुं.

तथा घणी वस्तुयें एक पूर्व होय, एवा ए जित्पादादि पूर्व ं जे ज्ञान, ते ज्ञं गणीश ं पूर्वश्चत जाणवुं ते ज ए जत्पादपूर्व, बी ं अयायणीय, त्री ं वीर्यप्र वाद, चोशुं अहि प्रवाद, पांचमुं ज्ञानप्रवाद, वर्षु सखप्रवाद, सात ं आत प्रवाद, विम्नं कमेप्रवाद, नव ं प्रत्याख्यानप्रवाद, द मुं विद्याप्रवाद, गीयार ं ख्याण, बार ं प्राणवाद, तेरमुं वि याविशाज, चौदमुं लोकिं सार ए चौद पूर्व ं ज्ञान, ते वीश ं पूर्वसमासश्चत जाणवुं एम श्रुतना वीश नेद याय ॥ ७ ॥ हवे अज्ञान अविरत्यादि ामिसाधम्येनणी श्रुतज्ञान, पत्नी विध्ञान ह्यं तेना व नेद हेते.

अणुगामि वम्नुमाणय, पिडवाईयर विहा हा उही।। रि मइ वि लमई मण, नाणं केवल मिगविहाणं।। ।। अथै-(अणुगामि के॰) लोचननी पेरें साथें चाले, ते अनुगामि अविध ज्ञान. (वम्माणय कें ) तथा निरंतर वधे,ते वर्द । न विध्ञान. (पिट्टवाइ कें ) । वी ने पांचुं जाय, ते प्रतिपाति विध्ञान हीयें ए प्रणय ही (इयरविहा कें ) इतर विधा एटले प्रतिपद्धीपणे जेंद. जे के अनुगारि, हीय । न अने अप्रित पाति, ए प्रण मेलवतां (बहार्चही कें ) व जेंदें अवधिकान होय. हवे गाथाना उत्तरार्द्धवंडे मनःपर्यव तथा केवल ज्ञान हें वे (रिग्णमइ कें ) क् सामान्यपणे जाणे, ते क् मित. अने (विग्ल ईकें ) वि हों हिं । एते, ते विपुल ति. ए रीतें ( एनाणं कें ) मनःपर्यव ज्ञान वे नेदें वे ने (केवलिगविहाणं कें ) केवलज्ञान ते ए ज विधान एटले नेदें जाएं एवदा ली पांचे ज्ञानना एकावन जेद । ॥ इत्रार्थः ॥ ए॥ र त्यां जे जीवने, जे स्थानकें विध्ञान उप लांधी जेटलुं के , चारे दि । वे तरफ देखे, तेटलुं के ज्यां ज्यां जे जे कें कें ज्ञां जाय, खांधी आगल । गल तेटलुं तेटलुं ज देखें, ए लोचननी पेरें । गामि विध्ञाननो प्रथ जेद जाएवों.

श अने जे हाटना दीप नी पेरें अथवा शृंखलाब दिवाना प्र श्रिमी पेरें ज्यां अविधिक्तान उपनुं त्यांथी चारे दिशायें तेटलुंज देखे, परंतु ते हें ति न्या पढ़ी गाल न देखे. ते न गामि अविध क्षाननो बीजो जेद जाणवो.

र तथा जे जीवने जेटलुं अवधिकान चप ं हे, ते थकी दिवसदिवस प्रत्यें अ ध्यवसाय विद्युद्धें करी इच्य, क्षेत्र, काल ने नावापेक्सायें विधकान वध ं । य, विषय पण वधतो जाय विद्युद्ध थाय. ते त्रीजं वदमान विधकान जाणबुं.

ध अने जे संक्षेत्रों करी मिलन याय, निरंतर इलवे इलवे घट जाय, ते हीयमान चोष्टुं अवधिकान जाएवुं.

प तथा जे अवधिकान आव्युं, नवक्यें देवता तथा नारकीने जाय. अने एक्यें जेम चेलाने काजो उद्धरतां नाविव कियें अवधि त उप ंतेटलामां ई इनी साथें इंडाणी रीशावी हती, ते इंडें इंडाणी नावतां देखी ते चेलाने हास्य आव्युं, ते संक्षेत्रों करी अवधिकान गयुं. ए पांचमुं प्रतिपाति विध त एण छं. ए दीपक उलवायानी पेठें एक कालने विषेज निर्मूल श्राय.

६ तथा जे परमावधिकान, केवल क्वानधी पहेलुं श्रंतर हूर्ने ति विद्युद्ध श्रावे, ते पढ़ी श्रंतर मुहूर्नने श्रांतरे केवलकान उपजे, तेमांहे ते वधि ।६ जाय. जेम तारादिकनां तेज, सूर्यना प्रकाशमांहे समाइ जाय ने प्र । ए ला सूर्यनो कहेवाय, तेम श्रहीं पण ढा ,हिथक क्वान नातां कहेवाय, एकलो केवलालोक हेवाय. पण केयविषय जाणवानो विरह हो तेथी ते वर्षु अवधिक्वान अप्रतिपाति जाणवुं.

ए रीतें अनुगामि, वर्द ान, प्रतिपातिः ए ए नेद । इ र एटर्जे परांग बीजा विरोधिनेंद ननुगामि, द्वीय ान, अने प्रतिपाति. ए ए नेद ए कठा मेजवतां नेद थायः

१ अवधिकानी इव्यथी जघन्यपणे अनंत रूपी इव्यने जाणे था देखे अने रः एथी सर्वरूपीइव्यने जाणे, देखे. एम इव्यविषयनेदें नंता नेंद थाय.

श तथा केत्रथी अंगुलनो असंख्यात हो नाग, विषइ थि। निने देशाधि क प्रदेशाधिक के विषइआ वधतां वधतां सं हो। हो विषइ ह त्क केत्राविध लगें संख्यात नेद होयः

३ तथा जिथी जघ परो विजिना असं नागपरि । , ।। ।ग त जि उत्क परो तो संख्यात कालचक्र स यत्र । ए।विधियी मिने यत्र एए तीत नागत रूपिइव्य विषयि जारो, देखे, ए संख्य नेद थायः

ध तथा नावध है जवन्यपणे अनंत नावने जाणे, देखे ने उर धीपण अ नंतनावने जाणे, देखे, ते नावावधिकान जाणवुं. विनंग ान ते मिध्यात्वीने होय, ते ाटे जिन हे वज्जं सवजुं जाणे, पण ते विध का नीज जाति हो ते माटे ए त्र जाणवुं. एम विधकान, जेंदसिह ह्यं.

हवे जे विधिक्षान वि ल प्रत्यक्त, ते नःपर्यविक्षान पण वि लप्रत्यक्त् छे. जेम अविध ह स्थने होय, तेम नःपर्यव पण र ने होय, एवी सरखा इपणे री, हवे विध्वान पठी नःपर्यविक्षान हेर्छे.

ते नःपर्यवैज्ञान, बे नेदें हो प्रथम (क् के॰) । पणे स्थूलपणे ए पुरुषें घट लावुं, सूं? एम चिंतव्युं, एवुं जे पार । न जाणवुं, ते नःपर्यवज्ञाननो क तिनामे प्रथ नेद जाणवो.

तथा (विप्रल के ०) वि शिर्णपणे घणा पर्याय सहित । एवं, ते आवी री तें के एणें चिंतवेलो घट आ क नगर । अयेलो, वर्णें रातो, परिमाणे एक, मण पाणीनो समावेश थाय एवो, इवें त्रांबानो, आ कनो घडेलो. इत्यादिक घणा विज्ञे षें सिहत पारका मनमां चिंतवेलो घट, तेने जाणे, ते विपुलमितनामें मनःपर्य विज्ञाननो बीजो चेद जाणवो. ए बे चेदें मनःपर्यविज्ञान कह्यं.

हवे ए एके ना वली ।र चार नेदिवशेष हेवे.

र प्रथ इ ीक्स मित, नोवर्गणाइव्य नंतानंतप्रदेशीया । एो. ते

थी विपुलमित ब प्रदेशी । ति सूः नोड्व्य जाएो.

शबी के बीक तिवालों ष्य, के मांहे तीईं ही दीप लगें तथा उंचें ज्योतिषीना उपरना तला लगें ने नी 'उंमिविजय हे त्यां लगें. एट लेर प्रना पृथ्वी ना कुल्लक प्रतर लगें एम ढारशें योजन हर जो संज्ञी पंचें दियजीव तेना मनने जाएो. ने तेथकी ही 'ले धि विपुलमित विषय, विद्युद्धपणे जाएों हे.

३ ालच ीक् मितवालो पत्योप नो सं ातमो नाग तीत अनागत चिंत व्युंतचा रितवज्ञो, तेने । एो ने वि ल ति तेचकी iş धिकेरं जाएो

ध नावधी क् ति, हिंतवेला इव्यना सं ाता पर्याय जाणे अने विपुल

मित तेथी घि । एो. ए नःपर्यवज्ञान छुं

ह्वे जेम मनःपर्यवज्ञान, विविरित बते होय, ते केवलज्ञान पण सर्वविरित बते होय. ए संगतें मनःपर्यव ान ह्या पढ़ी केवलज्ञान हेर्छे तिहां इच्यथी हिप तथा छहए। सर्व इच्य एो, छने हेन्नथी लो लो हेन्न छनंतों जाएो. कालथी सर्वीदा विषय जाएो, नावथी सर्व एपर्याय विषइ ए हृप छद निरुपाधि प्रतिपाति स लज्ञानावरणक्ष्यें प्रगट थयो जे दार गुण, सर्विविशेषें प्रकाशहूप, ते केवलज्ञान कहीयें, तेहने सर्वपदार्थप्र हों री वि रणहूप उपाधिने छनावें ज्ञेयवस्तुने विशेषें री इगविहाणं केतां ए सर विषी ए ज्ञाननो बीजो नेद होइ नथी.

ए रीतें मितना छात्तवीश, श्रु । चौद थवा वी , विधना , नःपर्ये ना वे तथा केवल । ननो ए , वे ली पांचे ज्ञानना ए । वन नेद

सनावन नेद का॥ ए॥

हवे ए पांचे ज्ञाननां रण हेवे.

एसिं जं छा रणं, पडु ुस्स तं य रणं।।। दंसण च पण निहा, वित्ति मं दंसणावरणं ॥ ए॥

अर्थ-(एसिंजं के०) ए मितप्रमुख पांच ान ं जे (आवरणं के०) रोध आहादन करनारुं तेने ज्ञानावरणीय कमें किंद्यें. जेम (पडु च स्त के०) ां नो पाटो. आंख प्रकाशनुं आवरणः तेम मितज्ञानादिकना जाणवाना विषय प दार्थने जे हर रे, (तं के०) ते ( यावरणं के०) ते ान ं ावरण ा णबुं. (दंसणच्छ के०) दर्शन चारनां आवरण चार (पणनिद्दा के०) पांच चेंदें निड्रा (वित्तिसमं के०) पोजीआ रखुं (दंसणावरणं के०) दर्शनावरणी में ाणं॥ इस्रक्षरार्थः॥ ए॥

इान पांच प्र ारेंग्ने तेथी तेना आवरणना प पां नेद्ग्ने. ते ां जे पाटो ांधे थके आंख ं तेज अवराय, ते जे में री तिज्ञान अवराय, ते । तिज्ञानावरणीय म्में कहीयें. एवीज रीतें जे मेंमें री श्रु इा वराय, ते श्रु तिज्ञानावरणीय म्में हीयें. तेमज जे विध्ञानने ।वरे, ते विध्ञाना वरणीय म्में हीयें. तथा नःपर्यवज्ञानने आवरे, ते नःपर्यवज्ञानावरणीय ममें कहियें. केवल संपूर्णज्ञान आवरे, जे मेघ, सर्व सूर्यनी जाने आवरे एं जे मे, ते केवलज्ञानावरणीय ममें हीयें.

अहीं जीव चेतनप्रकाशस्त्रस्प, जीवरूप सूर्य ते केवल ज्ञानावरणरूप वा देखे री सर्व ढंकाय तो पण अक्तरनो अनंतमो नाग सर्व शिवने उघाडो रहे. अहीं श्रुत केवलज्ञान साधारण पर्यवाक्तर खेबुं. जे नणी अनिधेयवर धर्म, ते स्वपर्यायके ने अनिधेयवर धर्म ते परपर्यायके ने केवल ानना तो ते जिधे य, अनिधेय बेहु स्वपर्यायके ए बे ज्ञानना पर्याय सरखा होय, ते पर्यवाक्तर. तेहनो अनंतमो नाग उट शे श्रुतकेवलीने होय ने ज्ञान्यनाग निगोदिया जीव ने ह्यार संज्ञादि चेतनारूप होय. दापि ते पण ढंकाय तो जीव चैतन्यपणा ने अनावें अजीव हेवाय तेथी ते वादकें री पण ढां शे न । यो एवो जे रात्रीदिवसविनागकारी सूर्य तेज सरखो चेतनारूप जीव ण करड्या ंबला सर खो सि इ देशचाति मितज्ञानावरणादि चार प्रकृतियें आवरीयें, तेथी तेने क् योपशमिवशेष न्हाने महोटे अई छिड़ें प्रसरतां रिवप्रकाशनी पेरें ज्ञाननुं तरतम पणुं होय. तेमांहे पण एक मनःपर्यवज्ञान, बीजुं अवधिज्ञान. ए बेहु ज्ञानना । वरणना केटलाएक रसस्पर्वक. सर्वधातिया, शेष देशघातिया पणे ए बेहु क् योपशमियी अविरोधनणी देशघाति कह्यां. अने केवलज्ञानाआवरण सर्वधाती हो य. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय. ए चार घातिकमें कहियें.

एम ज्ञानावरणीयना पांच चेद कह्या. द्वे नव चेद सिहत दरीनावरणीय नामें बीजं कमे विवरे हे देखीयें सा ान्य प्रकारें रूपें निर्विशेषपणे वस्तुनें जेणे करी अथवा देखवो सामान्यरूपें वस्तु नो इ वबोध ते दर्शन हियें. ते ए ुद्दीन, बीज्ञं कुद्दीन, त्रीज्ञं अव धिद्दीन ने ग्रेष्ठं केवलद्दीन ए चार नेद अने एक निष्ठा, बीर्जा निष्ठानिष्ठा, त्रीजी प्रचला, चोथी प्रचलाप्र ला, पांचमी थीनदी. ए पांच निष्ठा पण इंड्या वबोधने हंधेने, तेथी ए पांचने पण दर्शनावरणीयकमें हीयें. ए चार दर्शन ना आवरण ने पांच निष्ठा ली नव नेद दर्शनावरणीय कमेना थाय.

ते दर्शनावरणीय म्मेनो स्वनाव (वेत्री कें णोली । सरखों हो जो पोली आयें मार्ग दीधा विना लो , राजाने ली शके नहीं अने राजा पण कहां लोक ं स्वरूप देखे जाणे नहीं, ं जाणे के लोकमांहे सु । कोण हे तथा इःखी को णहे ? तथा जलो कोण हे के नूंमो कोण हे ? एवं ं इ जाणी शके नहीं; तेवी रीतें चक्तुप्रसुख दर्शनावरण हूप दरवान दूर थया विना जीवरूप राजा ते घटा दिक लोक हं सकर देखे नहीं तेने क्योपशमें घटादिक लोक, दर्शनस्पर्शन विषय थाय. ते जणी पोलीया स ।न दर्शनावरण कम्म कहां ॥ ए ॥

चकू दिि अचकू, सेसिंदिय छिह केवलेहिं च ॥ दंसण मिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं च हा॥ प ांतर "हवइ च हा"॥ १०॥

श्रथ-एक (चर्कूदिि के०) चहुदर्शन, बीखं (श्रचरकू के०) श्रच दर्शन, ते (सेसिंदिय के०) श्रांख विना बीजां इंड्यिथकी थयेलुं दर्शन, त्रीछं (उद्धि के०) श्रवधिदर्शन, चोथं (केवलेहिंच के०) केवलदर्शन, (दंसणिमह साम के०) ए दर्शन एटले सामान्यावलोध (तस्सावरणं के०) तेनां चार दर्शनावरण पण (तपंच उहा के०) तेज नामें चार चेदें होया पाठांतरें (हवइच उहा के०) कोइ एक एम कहें हो चार चेदें द्रीनावरण होय॥ इत्यहरार्थः॥ १०॥

र (चकु के०) आंख तेणे करी घटादिक पदार्थ सामान्यपणे देखवुं, ते पहेलुं चकुदरीन अहीं लोकमांहे देखवानो व्यवहार, खने विषे प्रसिद्धे तेथी तेनुं दरीन निन्न कहां.

वत्या ते चकुरिंडिय विना शेषेंडिय जे श्रवण, नासिका, जीन, स्पर्शेंडिय तथा नोइंडिय जे मन एणे करी जे शब्दादिक श्रर्थनो सामान्यावबोध थाय, तथा परनवणी श्रावतां र ।मांदे इव्येंडिय विना पण जे, जीवने सामान्यावबोध दो य, ते श्रवहुद्दीन कहीयें. एणे इव्येंडियें करीज जोकमांदे देखेंछे. एवो व्य वहार न होय. तथी ते सर्वन्नं एकज, दर्शन बीखं कह्यं. ३ ( अवधि के॰ ) इव्य, क्षेत्र, काल अने नाव. ए चार मर्यादामां हे रह्यां जे रूपिइव्य, तेना सामान्यांशनो अवबोध, ते अवधिदरीन त्री जं जाण दुं.

ध (केवल के॰) सर्वेड्व्यनो सामान्यांशनो अववोध ते केवलद्दीन, निराव

ण, प्रतिपाति चोशुं जाणवुं.

ह्वे द्रीनपदनो अर्थ कहें हो. सामान्य, विशेष. ए वेहु रूप, पदार्थनां हो तेमां हे सामान्यपणे निराकारोपयोगरूप वस्तुनो अववोध जाति, गुण, कियादिक विशेष पणे रहित धर्मी मात्रविषय करे, ते निर्धिक त्परूप अववोध, ते द्रीन कहीयें. ते दर्शननें जे आवरे, रोके, ते दर्शनावरणीय कर्मी कहियें. जेम पोली अशाहो होय त्यां लगें लो ने रोकी राखे तेथी ते लोको ने सरूप राजा पामे नहीं; तेम ए कर्मी ज्यां लगें विवर न आपे, त्यां लगें अर्थनो सामन्यपणे अववोध न थाय. ए चार दर्शन मध्यें जे मेदलें करी जे द्रीन अवराय, ते नामें आवरण चार जाणवां त्यां प्रथम जे चुद्रीनने रुंधे, ते चक्नुद्रीनावरण बीजं जे अचक्नुद्रीनने रुंधे, ते चुद्रीनावरण. त्रीजं अवधिद्रीनावरण. चोधुं केव ल द्रीनने रुंधे, ते केवलद्रीनावरण जाणवुं.

एम ए चार विरण ह्यां अने मनने विपे चिंतव्यो अधी, विशेपरूपज होय पण अव्य बोध सामान्यरूप न होय, तेथी तेने विपे करें एवं मनःपर्यवज्ञानने पण तेनुं दर्शन न कह्यं. शेप ्निनां चार दर्शन ह्यां, तेमांहे पण श्रुतज्ञानं, मित पूर्व होय तेथी मितज्ञाननां चकु ने अचकु ए वे दर्शन कह्यां ॥ १०॥ हवे पांच निज्ञानुं स्वरूप हेने.

> सुह पडिवोहा निहा, निहा निहाय इकपडिवोहा॥ पयला विवेवविहस्स पयल पयलाय चंकमव॥ ११॥

अर्थ-( सुह्पडिबोहा के०) प्रयम सुखें प्रतिबोध एटले जागबुं जे ज्यां ते ( निहा के०) निहा कही यें. बीजी ( निहानिहाय के०) निहा निहा ते कही यें ज्यां ( इफ़पडिबोहा के०) दोहिलो प्रतिबोध एटले जागबुं के, त्रीजी ( पयला के०) प्रचला नामें निहा ते ( विवेवविद्यस्त के०) जनाने, वेवाने, आवे ( पयल पयला यचंकमर्थ के०) प्रचला प्रचला ते कही यें जे चालतां थकां आवे॥ इत्यक्रार्थः॥११॥

निड्यं करी इंड्यिना विषय रुंधाय, तेथी समस्त द्दीननो घात थाय, ते न णी सर्व घातीनी प्रकृति कही, तथापि मेथें आवरित सूर्यनी पेरें खंशमात्र खना नो अवबोध ते दर्शन हियें. ते ए ुदर्शन, बीज़ं कुदर्शन, त्रीज़ं अव धिदर्शन ने चोछुं केवलदर्शन ए चार नेद ने एक निझा, बीजी निझनिझा, त्रीजी प्रचला, गोथी प्रचलाप्र ला, पांचमी थीन ही. ए पांच निझा पण इंडिया वबोधने हंधेने, तेथी ए पांचने पण दर्शनावरणीय में कहीयें. ए चार दर्शन ना आवरण ने पांच निझा ली नव नेद दर्शनावरणीय कमेना थाय.

ते द्दीनावरणीय म्मेनो खनाव (वेत्री के०) पोली । सरखोठे जे पोली छायें मार्ग दीधा विना लो , राजाने ली शके नहीं छाने राजा पण कहां लो ं स्वरूप देखे जाणे नहीं, हां जाणे के लोकमांहे हा । ोण ठे तथा इःखी को ण ठे ? तथा जलो ोण ठे के जूंमो कोण ठे ? एवं ं इ जाणी शके नहीं; तेवी रीतें चक्छप्रमुख दर्शनावरण रूप दरवान दूर थया विना जीवरूप राजा ते घटा दिक लोक हुं सकरूप देखे नहीं तेने क्योपशमें घटादिक लोक, द्दीनस्पर्शन विषय थाय. ते जणी पोलीया सान दर्शनावरण कम्मे कहां ॥ ए ॥

चकू दिि अचकू, सेसिंदिय छिह केवलेहिं च ॥ दंसण मिह सामन्ने, तस्सावरणं तयं च हा॥ पा ांतर "हवइ च हा"॥ १०॥

श्रथ-एक (चरकूदिि के०) चहुदरीन, बीखं ( चरकू के०) श्रचहुदरीन, ते (सेसिंदिय के०) श्रांख विना बीजां इंड्यिथकी श्रयेखं दरीन, त्रीझं (उदि के०) श्रवधिदरीन, चोधं (केवलेहिंच के०) केवलदरीन, (दंसणिमह साम के०) ए दरीन एटले सामान्यावबोध (तस्सावरणं के०) तेनां चार दरीनावरण पण (तयंच उहा के०) तेज नामें चार जेदें होय. पाठांतरें (हवइच उहा के०) कोइ एक एम कहें हे जे चार जेदें दरीनावरण होय॥ इत्यक्तरार्थः॥ १०॥

र (चकु के०) आंख तेणे करी घटादिक पदार्थ सामान्यपणे देखवुं, ते पहेलुं चकुदरीन अहीं लोकमांहे देखवानो व्यवहार, खने विषे प्रसिद्धे तेथी तेनुं दरीन निन्न कहां.

र तथा ते चकुरिहिय विना शेषेंहिय जे श्रवण, नासिका, जीन, स्पर्शेंहिय तथा नोईहिय जे मन एणे करी जे शब्दादिक छार्थनो सामान्यावबोध थाय, तथा परनवथी छावतां रस्तामांहे इच्चेंहिय विना पण जे, जीवने सामान्यावबोध हो य, ते श्रचकुद्शीन कहीयें. एणे इच्चेंहियें करीज लोकमांहे देखेळे. एवो व्य वहार न होय, तथी ते सर्वन्तं एकज, दर्शन बीखं कहां.

३ ( अवधि के ० ) इव्य, द्वेत्र, काल अने नाव. ए चार मर्यादामांहे रह्यां जे रूपिइव्य, तेना सामान्यांशनो अवबोध, ते अवधिदरीन त्रीज्ञं जाए दुं.

ध (केवल के ए) सर्वेड्यनो सामान्यांशनो अववोध ते केवलदरीन, निराव

ण, प्रतिपाति चोधुं जाणवुं.

हवे द्रीनपदनो अर्थ कहें छे. सामान्य, विशेष. ए वेहु रूप, पदार्थनां छे तेमांहे सा ान्यपणे निरा रोपयोगरूप वस्तुनो अवबोध जाति, ग्रुण, कियादिक विशेष पणे रहित धर्मी मात्रविषय करे, ते निर्विकल्परूप अवबोध, ते द्रीन कहीथें. ते द्रीननें जे आवरे, रोके, ते द्रीनावरणीय कम्मे कहियें. जेम पोली अड़ाडो होय त्यां लगें लो ने रो ही राखे तेथी ते लोको नं सहस्य राजा पामे नहीं; तेम ए कम्मे ज्यां लगें विवर न आपे, त्यां लगें अर्थनो सामन्यपणे अववोध न थाय. ए चार द्रीन मध्यें जे मेदलें री जे द्रीन वराय, ते नामें आवरण चार जाणवां. त्यां प्रथ जे ुद्रीनने रुंधे, ते चुद्रीनावरण बीजं जे अचकुद्रीनने रुंधे, ते चुद्रीनावरण. त्रीजं अवधिद्रीनावरण. चोथं केव ल द्रीनने रुंधे, ते केवलद्रीनावरण जाणवुं.

ए ए र विरण ं अने नने विषे चिंतव्यो थी, विशेषरूपज होय पण अव्य बोध सामान्यरूप न होय, तेथी तेने विषे रे एवं नःपर्यवज्ञान हो पण तेनुं दर्शन न कहां, शेष ज्ञाननां चार दर्शन ह्यां, ते ंहे पण श्रुतज्ञानं, ति पूर्व होय तेथी मितज्ञाननां चक्नु ने अचु ए बे दर्शन ह्यां॥ १०॥ हवे पांच निड्ानुं स्वरूप हेने.

> सुह पिडवोहा निहा, निहा निहाय इकपिडवोहा॥ पयला विवेवविवस्स पयल पयलाय चंकमवै॥ ११॥

अर्थ-( सुह्पिड बोहा के ) प्रथम सुखें प्रतिबोध एट से जाग बुं छे ज्यां ते ( निहा के ० ) निहा कही यें बीजी ( निहानिहाय के ० ) निहा निहा ते कही यें ज्यां ( इफ़पिड बोहा के ० ) दोहिलो प्रतिबोध एट से जाग बुं छे, त्रीजी ( पयला के ० ) प्रचला नामें निहा ते ( विचेव वि हस्त के ० ) चनाने, वेवाने, आवे ( पयल पयला यचंक मर्च के ०) प्रचला प्रचला ते कही यें जे चालतां यकां आवे ॥ इत्यक् रार्थः ॥ १ १॥

निड्यें करी इंडियना विषय संधाय, तेथी समस्त दर्शननो घात याय, ते न ए। सर्व घातीनी प्रकृति कही, तथापि मेवें आवरित सूर्यनी पेरें अंगमात्र अना

वृत रहें तो द्यादि सांजलें तेमां जे सुखें साद ात्रें री जागे, ते निड़ा, जे कमेप्रकृतिना उदयथी होय, ते कमेप्रकृतिनुं नामपण निड़ा हीयें. रिणें कार्यनो उपचार जाणवों तथा इःखें करी धूधणावीने घणा घणा छा रा शद्दें करी दोहिलो जगावीयें एहवी निड़ा, जे कमेप्रकृतिना उदयथी जीवने आवे, ते कमेप्रकृति नाम निड़ानिड़ा हीयें. प्र लायें धूमे प्राणी जेणे, एवी निड़ा आवे, ते निड़ानुं नाम प्रचला, ते स्थित एटले उनाने तथा उपवि एटले बेगने पण आवे एवी निड़ा, जे कम्मेप्रकृतिना उदयथी होय ते कमेप्रकृति ना प्रचला कहीथें. प्रचलाप्रचला निड़ा ते कहियें जे हस्तीनी पेरें चालतां दालतां पण आवे, तो सुतां बेगं अने उना थकां आवे, ते तो हेवुंज ं? एवी घणी निड़ा जे कमेप्रकृतिना उदयथी आवे, ते प्रकृति नाम पण प्रचलाप्रचला हीयें. तथा अथनी पेरें जेवारें अथने दाणो चरतां कांकरो दाढ वे आवे, ते वारें निड़ा मांहे जागे, तथा रणमांहे जागे, ते प्रचलाप्रचला निड़ा हीयें॥ ११॥

दिण चिंति अञ्च करणी, घीण दी अद्वचिक अद्वबता ॥ महुितत्त खग्गधारा, लिहणं व हा वे अणि अं॥ १५॥

अर्थ-पांचमी (दिणचिंति छकरणी के०) दिवसें चिंतव्या र्थनी रनारी निड़ा, ते (श्रीण की के०) श्रीण की हीयें ( क्चिंब के०) क्च वर्षि जे वासुदेव तेना बलशी (अक्बला के०) क्वल होय जेमां (महुलिनखग्गधारा के०) मधुलिप्त खड़ुधारा एटले मधुयें खरडेली तरवारनी धारा सरखी धाराने (लिहणंव के०) चाटवा सरखी शाता अने अशाता एवा (इहाउ के०) बे न दे (वेअणी अंके०) वेदनीय कमें कह्यं॥ इत्यक्तरार्थः॥ ११॥

जे निड़ा छावे थके ते पहेलां दिवसमध्यें तथा रात्रिमध्यें पण जा गतां जे कार्य चिंतव्युं हे ते कार्य करे, ते थीन ही. तथा स्त्यान कहेतां एक वी थड़ एवी क्रिक्क कहेतां छात्मानी शक्त ज्यां ते स्त्यानार्क कहीयें तथा रहि कहेतां ज्यां मननी इन्ना एक वी थड़ ते स्त्यान रहि पण कहीयें एवी छत्यं त छा जा कम्मेत्रकतिना उद्यथी छावे, ते कमेत्रकति नाम पण स्त्यानार्कि तथा स्त्यानर्रिक कहीयें। छार्क चित्रों कहेतां चक्रवार्त्तमुं बल, छाने क्रिक् तेथकी छाड़े वल तथा छाड़ीं क्रिक जेनी एट हो त्रिखंमनोक्ता वासुदेव, तेना वलथकी छाड़ी वल वलक पननाराच संघयणवालाने ए निहामां हे छावे तथा हेव

हा संघयणवालाने पण ए निज्ञा हि ब णुं णुं जोर वधे. ए व दर्शा व वरणीय म्मेना चेद ह्या. एटले बीज्ञं में, दर्शनावरण ह्यं.

हवे त्रीजा वेदनीयक स्वरूप, जेद, संख्या, हेंग्ने. i धुलिप्त एवी जुनी धारा तेने लिहण हेतां जीने री चाटवुं ते सरखुं बे प्रारें वेदनीय में धुं छे. एटले जे मधुलि खड़्धारा चाटतां प्र िवा नो रस वेदतो था। वित, सुख ाने पण खड़्धाराथी जीन छेदाय तेथी ख पामे. ते पांचेंडि ना रूप शब्दादि अनुकूल पा। शाता वेदे ते धु सर ो अने तेनी अप्राें विरह रख वेदे, ते निचेदन रखुं जाणवुं. ए वेदनीय में नि बे जेदें हुं.

र्नसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरिच्च निरएसु ॥ ंव मोहणीच्यं, इविहं दंसण चरणमोहा ॥ १३॥

थै—( उस ं के०) प्राये ( सुर णुएसाय के०) देवताने ने ष्यने शा तावेदनीयनो उदय होय ने ( सायंतु के०) ातानो उदय होय ते क्यां होय? तोके (तिरिञ्जनिरएसु के०) तिर्थ गित ने नर गितमां प्रायें घणो होय. ने ( ंव के०) दिशानी पेरें ( ोहणी खं के०) ोहनीय में जी वने विकल रे, ते ( विहं के०) बे चेदें छे, एक (दंसण के०) दर्शन ोहनी य ने बी ं (चरणमोहा के०) चारि ोहनीय ॥ इत्यह्नरार्थः ॥ १३॥

उस ं ए देशीय शब्द प्रायि वाची तेथी उस ं एट के प्रायें (सुर के०) दे वता ने (णुए के०) नुष्य ए बे गित दि शातानी उदय होय ते नणी ए बे गित पुल्पनी प्रकृति ते हि एमां है शातानी बहु जता ने अने क्यारें वियोगादिकें शाता पण वेदे तेथी प्रायें हुं अने तिर्यचगित तथा नर गित ए बे पापप्रकृति तेथी अशातावेदनीयनो त्यां घणो उदय अने ति यैच ं ोइए हस्ती, र प्र आदर महत्व पामे, तथा नारकी पण श्रीजिन ज्याणि समयें दिएक : खमंदतायें शाता पण वेदे, तेथी प्रायें शब्द कहाो. ए रीतें िं जुं वेदनीयकर्म बे नेदें कहां.

हवे चोथा मोहनीय कर्म 'स्वरूप तथा चेद कहें हे ए मेनो मिदरा जेवो स्वनावहे जे द्यपान ह्या पढ़ी जीव विकल घाय तेम मोहनीयना उद्धें जीव, पोता हुं हित न समजे कदापि समजे तो पण मोहें करी करी न शके, ते मोहनीयकर्म बेप्रकारें कहें हे. एक दर्शन एटले सहहणारुचिरूप त्यां जीव मुंजाय जेम तापना जोरयी

पण्य रुचे नहीं, ते मिण्यालना उदयथी ग्रुड्देव, ग्रुड्गुरु, ग्रुड्घमें, जे ाट हितकारी हे ते रुचे नहीं. ग्रुरु, देव ने धमे डुगीतना दायकहे ते रुचे, एवी रुचि जेना उदथी होय, ते दर्शनमोहनीयकमें कहीयें.

तथा जे कर्मना उदयथी पोतानां हितकारी जे धर्मध्यानादिक तेने ाचरी न शके, जेम परवश पड्यो मनुष्य, पोतानुं हित करी न शके; एवो ि याविप यास जेएो करी होय, ते चारित्रमोहनीय कर्म बीचुं जाए वुं॥ १३॥

> दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मि तं॥ सुदं अद विसुदं, अविसुदं तं हवइ कमसो॥ १४॥

अर्थ-(दंसणमोहं के०) ते मांहे दर्शन मोंहनीय (तिविहं के०) ए नेदें कहें हो. एक (सम्मं के०) सम्यक्त्वमोहनीय, बीजुं (मीसं के०) रिश्राो नीय (तहेव के०) तेमज त्रीजुं (मिन्नतं के०) मिण्यात्वमोहनीय ते (सुदं के०) शोध्युं पुंज ते सम्यक्त्व (अदिवसुदं के०) अदिवसुद पुंज तेमिश्र ने (अविसुदं के०) अणशोध्युं पुंज ते मिथ्यात्व (तं के०) ते (हवइ के०) होय. (कमसो के०) अ अभें॥ इत्यक्त्रार्थः॥ १४॥

तथा जेवी वस्तु जेवा धर्में करी सिहत है तेवीज विश्वासपूर्व जाणे, तेने दर्शन कहीयें. तिहां मुंजावे विकल करे तेणे संदेह, विपर्धय, मूढतायें त पर खी न शके, ते दर्शनमोहनीय कम्में त्रण नेदें है, ते किह्यें हैथें.

र जेम मदनकोइवा, जेने खाधे मीणो चढे, तेने खांमी, तुश उतारी डाणपाणी देई शोधीयें ते कोइवाथी विशेष प्रकारें मादकता न होय, तेम जीवने विकल रे एवा जे मिध्यालनां दल, ते पण त्रण करण प्रयोगें एटले करणना त्रण प्रकार. एक यथाप्रवृत्तिकरण तेहने विपे जे मनना परिणाम जजला थया, तेथी घणेरा जजला थाय ते अपूर्वकरण, तेथी पण घणा परिणाम जजला थाय, ते अनिवृत्तिकरण. ए करण. ते मनना परिणाम विशेषके तथा जपशमसम्यक्त्वें करी शोध्यां तेनो चांडाणि उ. त्रण डाणी उ. वेडाणी उस्त टाली, शेष एकडाणी आ मात्र रससहित राख्या, ते टलगुं जीव तलनी परीक्षा विपे मुंजाय नहीं, पण आत्मस्यक्त्व पश्मिकक्षायिकसम्यक्त्व तेने उद्यें न होय. तथा स्हमपदार्थने विषे देशशंका य सम्यक्त्वें मेन जपजावे. ते नणी ते ग्रुद्दलनुं नाम सम्यक्त्वमोहनीय कह्यं.

१ श्रने जे मिथ्यालदल, श्रण ड्या दनकोड्वानी पेरें श्रईवि ६ दल जे जिहांची बेवाणीर्ट ात्र रस रह्यो, ते बीखं मिश्र ोहनीय म्मे.

रतम जेहवो बांध्यो हतो, तेहवोज जे चोठाणीओ, हि ठाणीओ, बेठाणीआ रत सहित अनुपहत सर्वेघाति रस त्वसदहणाविपयीसनुं रनार, ष सहित अ णखांम्बा मदन होइवानी पेरें जन्मादजन्य मेदल, ते त्रीजं मिच्यात्व हिनीयकमें।

१ तथा शोध्युं दल ते जेम चस ां दृष्टितेजने आवरतां पण सूक्तां यह दृष्टि वहरावे, तेम जीवने त्वरुचि वहरावे, ते सम्यक्त्वमोहनीय म्मे.

शतथा अर्६वि ६ एटले ईखांम्या अर्६ढंम्या एवा दन नेड्वानी पेरें विकारजन्य. कांइ ार्य रे, ांड्क कार्य न करे जेथी तत्वरुचि न होय अने अ तत्वरुचि पण न होय, एवी मिश्ररुचि चपजावे, ते बीज्ञं मिश्रमोहनीय मे.

इ तथा अद्युंज, दन ोड्वानी पेरें तथा धतुरानी पेरें हि ने फेरवे, ेणे हि ते तेहने हि चे फेरवे, ेणे हि ते तेहने हि चे अठतो वह धमें प्रतिनासे. जेम धोला शंखने पीलो एणियें, ते उज्ज्वल जिन त तेने लिन देखे अने मिलन एवा जे ागे, तेने उज्ज्वल देखे, ते त्री इं मिण्याल ोहनीय में. ए मिण्याल ोहनीयादि त्रणहे.

अहीं जे सम्यक्त्वमोह्नीयादिक प्रकृति ते कारण. तेणे करी तत्वविषयिणी ६, मिश्र, अने अग्रु इरुचि जीवनी होय ते कार्य. एम कारण ते इव्य, अने कार्य ते नाव. ए विवक्षायें एक सम्यक्त, बीजुं मिश्र, त्रीजुं मिथ्यात्व. ए त्रण मोह्नीय, इव्यना वथी जाणवी. कारण ते इव्यकम, कार्य ते नावकम, इव्यकम केवजी जाणे अ ने इव्यकमंथी चेष्टादिक थाय ते नावकम, ते आपणे पण जाणियें ॥ १४॥ हवे तत्वाथेसदहणा ते सम्यक्त्व कहियें. ते हि तत्व हेंगे.

> जिन्छ न्रजिन्छ पुष् पावा, सव संवर बंध मुख नि रणा॥ जेणं सद्दह तयं, सम्मं खङ्गाई बहुनेन्छं॥ १५॥

श्रथ—(जिश्र के॰) जीवतल्वना चौद नेंद, (श्रजिश्र कें॰) श्रजीव तल्वना चौद नेंद, (प्राप्त के॰) प्राप्तल्वना बाशी नेंद, (श्राप्त के॰) श्राश्रवतल्वना बेंतालीश नेंद, (संवर के॰) संवरतल्वना सत्ता वन नेंद, (बंध के॰) बंधतल्वना चार नेंद, (मुक्त के॰) मोक्तल्वना नव नेंद, (निक्तरणा के॰) नि रातल्वना बार नेंद, (जेणे के॰) जेहने उपष्टेंनें (सदह ६ के॰) सदहें (तयं के॰) तेंनुं नाम (सम्मं के॰) सम्यक्ल तें (ख्ड्गाई

के ) क्षायकादिकें री (ब नेअं के ) बहु ने दें हे॥ इ क्रार्थः ॥ १५॥

१ त्यां प्रथम जीवतल हेते. पांच ईिंच, ए बल, ए खासो सं ने आयु. ए दश इव्यप्राण तथा उपयोगरूप नावप्राणधारी लो । शप्रदेश प्र माण, प्रदेशात्मक, झानदरीनखनाव. इव्यार्थि नयें नित्य, ने पर्यायार्थि नयें अनित्यपरिणामि इव्य. व्यवहारनयें मेनो ती, नो ।, ने निश्चयनयें ग्रुद्ध चित्पर्यायनों कर्ता, निजलरूपनों नोक्ता. औदिय , औपश्चि , क्वायिक, मिश्र, पारि णामिकादिनावमेलापकरूप, तक्सम्थने चेष्टादिलिंगगम्य, केवलीने प्रत्यक् शरीरप्र । ण, श्रुरूपी जीवइव्य, जिनवचनें सद्द ं, ए जीवतत्व, ने एथी विपरीत निज मतिकव्यनायें जाणे, ते श्रुतत्व कहीयें. ते ए , जीव तत्वना चौद चेद्रते.

१ जे जीव अने अजीवने उपनोग्य चेतनारहित गति, स्थिति, वर्तना, ने व काश दानसमधी, एवा धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, ाल,आकाश,अने पुजलरूप जीवने तथाप्रकारें सद्दहुं, ते बी जीवतल ते अजीवतलना पण चौद नेद्रे

र ते जीवनुं दान, दयाजुता, सरागसंयमादि शुनपरिणाम, ते नावपुत्यः ने शातावेदनीयादिक शुनकमेत्रकृति ते इव्यपुत्य. ए पुत्यप्रकृतिना वेताजीश नेद्रहे.

४ तथा मिण्यालादि उद्यें उपहत जीवने मिलन परिणाम, ते नावपाप अने मिण्यालादिक कमेप्रकृति, ते इव्यपाप. ए पापतलना बाशी नेद्रहे.

ए तथा मिण्यालाऽविरत्यादिक श्रौदियकनावपरिएत जीव, ते नावाश्रव. निमित्त कमेदलतुं श्रावबुं, ते इव्याश्रव. ए श्राश्रवतलना बेंतालीश नेद्रहे.

इ कम्मे रंधवा समर्थ क्वायिकक्वयोपश्चिमकादिकनावें करी जे छं , नि रुपाधिक थया निरुपाधिक कहेतां स्वानाविक ते नावसंवर अने तेणे री जे जे आश्रवनुं रुंधवुं. ते इव्यसंवर. ते पांच समिति, त्रण ग्रुप्ति, बावीश परीसहनो जय, दश यतिधमे, बार नावना, ने पांच चारित्र ए बद्धा मली सत्तावन नेदें हे.

ष्ठ तथा ग्रुद्धात्मने प्रतिकूल कषायादि संबंधजन्य कर्मबंधहे ची एता, ते नाववंध अने तेणे करी आत्मप्रदेशें क्मदल बंधाय ते इव्यबंध चार नेदें.

ण कम्मे निर्मूलवा समर्थ ग्रुद्धात्मानो अ नव ते ,नावमोह्नः तेणे री जे जीवप्रदेशनुं सर्वाशें कम्मेप्रदेशथी मूकावनुं, ते इव्यमोह्न, नव नेदेंहे.

ए कम्मेगिक ने हीन करे, एवा तपसंयमसंवरनावनाजन्य ग्रुद्धोपयोग शिक्त, ते नाव निर्क्तरा; तेणे करी जे जे कम्मेप्रदेशनुं आत्मप्रदेशची खेरचुं, ते इच्य निर्क्तरा. ते वार नेदं तप, ते निर्क्तरा.

जेणे री ए पूर्वी नवपदार्थ जे श्रीजिनेंड्देवें नांख्या इच्यार्थि नयें नि स्थ, पर्यायार्थि नयें छनित्य, निश्चयनयें छनि , व्यवहारनयें निन्न, सा ान्यनयें एक, विशेषनयें नेक, ज्ञाननयें ज्ञेय, त्रियानयें हेयोपादेय, ए नयनिक्तपासहि त परस्पर सापेक्क, छनंत्धमीत , धंचित् उत्प , धंचिदिन , धंचिद्धुव. ए

त्रिरूप ए स यें सहहे, ए जिनवाणी रुचे, ते ए क्वायि सम्यक्त. बीर्ज श्रीप शमिकसम्यक्त, त्रीजं क्वायोपशमिकसम्यक्त इत्यादिक बहु नेदर्रे, ते देखाडीयें हैयें.

तलार्थनी सद्दहणाएं ए विधसम्यक्ल तथा ात्मानो ग्रुड्झानादि परि णा अथवा ग्रुड्परणित आत्मा, ते निश्चें सम्यक्त्व, अथवा वीतराग सम्यक्त्व ते निश्चयसम्यक्त्व अने सरागसम्यक्त्व ते व्यवहारसम्यक्त्व, अथवा क्रग्रुर, क्रु देव ने मार्गनो त्याग अने सुग्रुरु, सुदेव अने सुमार्गन्नं आदरन्नं, ए व्यवहार सम्य क्ल बे नेदेंग्ने. तथा नंतानुबंधीया चार षाय अने दर्शनमोहनीय त्रण. ए सात प्रकृतिना क्यथी प्रगटी जे तत्वरुचि ते क्हायि सम्यक्त अने ए सात प्रकृतिने उपश वि, ते औपश्चिम सम्यक्त अने ए सात प्रकृतिनो रसोदय आव्यो ते खपाव्यो शेष उदय नथी आव्यो, ते क्हायोपश्चिम क एने ंतरे सम्यक्त्वमो हनीयोदय उपप्रंनजन्य तत्वरुचि ते वेद सम्यक्त्व. एम त्रिविध सम्यक्त्व जाण वुं. तथा जिनोक्त रे, ते ार सम्यक्त्व तेह्ने रुचीयें करीरोच सम्यक्त्व प्रसूप करीदीपावे, ते दीपकसम्यक्त्व. ए अने प्र ारें सम्यक्त्व जाणवुं॥ १५॥

> मीसा न रागदोसो, जिएधम्मे अंत ुंहु जहा अने ॥ नालिअर दीवमणुणो, मित्रं जिएधम्म विवरीअं॥ १६॥

अर्थ-(मीला के॰) मिश्रमोह्नीयना छदयथी (जिएधम्मे के॰) जिनधमें ने विपे (नरागदोसो के॰) राग देष न होय. (अंतमुहु के॰) अंतरमुहूर्नसुधी नो काल (जहा के॰) जेम (नालिअरदीवमणुणो के॰) नालिकेर दीपना मनुष्यने (अे के॰) अ ने विषे राग देष न होय तेनी पेरें जाणबुं. अने (मिह्नं के॰ मिथ्याल ते) जिएधम्मविवरीअं के॰) श्री जिनधमेथकी विपरी त जाणबुं॥ इत्यहरार्थः॥ १६॥

मिश्रमोहनीयना उदयधी जीवने श्रीसर्वेज्ञनाषित धर्म उपरें अन्यंतरराग न होय एटले श्रीवीतरागदेवें कहां, ते तेमज पण अन्यथा नहीं. ए सरखं बीजं कोइ जीवने हितकारी नथी, एवो अन्यंतरचित्तप्रतिबंध ते पण न होय तथा ए धर्म खोटो हो एम निंदारूप अन्यंतर हिचरूप देष पण न होय. जिनधर्मने विषे मि श्रनाव होय तेनो । ल अंतर हूर्न प्रमाण है जेटलो व्यंजनाव हनो । लश्वासो ह्यास प्रथक्त प्राण तेटलो जाणवो ते उपरांत मिण्याल तथा सम्यक्त पामे.

दीं हष्टांत देखाडेंगे. जे (के ) धान्यरसवती उपरें रुचि जे त्यंत आदर एटले ते विना नज चाले एवो राग पण न होय तथा अरुचि एट ले दीतुं न सुहाय, एवो देष पण न होय. ते कोने न होय ? तो के ज्यां घणा नालियेरना वृक्त्वे एवो जे दीप त्यानां लोक, सदा नालियेरादि फलथी उदरव ति करेग्ने परं ते दीपनिवासीयें अन्न, केवारें पण दीतुं नथी, तेथी तेनो स्वाद लह्या विना अन्न उपरें राग पण नथी उपजतो तेम देष पण नथी उपजतो तेम मिश्र मोहनीयसैदांतिकमतें मिथ्यालयी मिश्रें आवे पण सम्यक्लयी मिश्रें नावे, तेथी तेणे सम्यक्ल रस लह्या विना जिनधमेने विषे रुचि तथा अरुचि न होय, ए नाव

मिध्याल तेने कहियें जेने उद्यें जिनोक्त पदार्थथी विपरीत पदार्थ सहहे. जे म धतुरो खाधायकी जीव, विकल थाय तेथी सुवर्ण न होय, तेने पण सुवर्ण करी सहहे, माने तथा तापना जोरथकी जीवने अ न नावे, अपध्य रुचे, तेम ए मिध्याली जीवने पण राग, देव, मोहादिक दोषवंतने विषे देवरुचि थाय अने आरंज तथा परीयहवंतने ग्रुरु करी सहहे, स्वमतिक विपत्थमें सहहे. त्यां र साधुने असाधु करी माने, १ असाधुने साधु करी माने, पूजे, ३ क्लांत्यादिक धर्म ने अधर्म माने, ४ स्नानहोमादिक अधर्मने धर्म करी माने, ए अजीवने जीव री माने, ६ जीवने अजीव करी माने, ७ गतानुगतिक जन्मागीने मार्ग करी सहहे, ए सम्यक् झानादिक मोक्मागीने जन्मागी करी सहहे, ए कमेरिहतने कमें सहित करी माने, १० सकम्मीं रुखादिकने परमेश्वर करी माने, ए दश मिथ्याल ते विपरी तश्रदान ते मिण्यालमित, तेने दश्रीनमोहनीय कहीयें ॥ १६॥ हवे पचिश चारित्र मोहनीयनी प्रकृति कहेते.

सोलस कसाय नवनो, कसाय इविहं चरित्त मोहणियं॥ अण अणचकाणा, पचकाणाय संजलणा ॥ १९॥

श्रथ-( सोलसकसाय के०) शोल कपाय मोहनीय, ( नवनोकसाय के०) न व नोक्रपायमोहनीय. ( इविहंचरित्तमोहणीयं के०) ए वे नेदें चारित्र मोहनीय ना पत्रीश नेद, ( अण के०) अनंतानुवंधीआ चार, ( अपचरकाणा के०) अप्र त्याख्यानावरणीयना चार, (प स्काणा के०) त्याख्यानावरणीय चार, (सं जलणा के०) संज्वलनकषाय चार, ए शोल षा ोह्नीय॥इत्यक्रार्थः॥१॥ त्यां प्र शोल षायमोह्नीय हेंग्ने. (प के०) संसार तेनो (श्राय के०) लान होय जेना चदयथी जीवने, ते नणी एनुं ना षाय ते ोध, मा न, ाया, श्रमे लोन ए चार श्रमंतानुबंधादि प्रत्येकें चार चार 'नेदेंग्ने एम चार चोक शोल नेद एणे री जीव संसार हें रहे तथा हास्यादिक व श्रमे त्र ण वेद, ए नवनें नोकषाय एवं नाम कहीयें जे नणी एथी कषाय चपजे; हास्य यी क्रोध तथा राग चपजे तथा रागादिकथी हास्यादिक होय एम कषायने समी पें ार्यतायें तथा राणतायें होय, ते नणी एने नो षाय हीयें. एम जीव ने श्रहिताचरण प्रवृत्तिहे श्रमे हिताचरणरोधक, ए बेहु त्रियाविपर्यांस रे, ते ाटे ए चारि ोहनीयना चत्तर नेद पञ्चीश होय.

हवे ए पञ्चीश, नेदनां स्वरूप हेर्रे.

तिहां सूं ते सूचन त्र होय तेथी एक पदांश कहे थके पण आखुं पद छेतुं. जे नी केवा थ ी नीमसेन स जायते. ते ए एवुं पद कह्या थकां अनंता तुं बंधी । पाय जीजें,जे । टे जेनो ंत नहीं तेने अनंत कहीयें एट छे अनंत संसार तेहना नुबंधी हेतां नुिंद रनारा जे पाय, ते अनंतानुबंधीआ क पाय जाएवा। दायहरूप युत्ति यें बुद्धि सून्यपणे एकांतवादिनी रुचि ट छे नहीं. ए नंतानुबंधी रागयुक्तियु पणे जिन त नपरें रुचिरूप देष, ते अनंतानुबंधी तेणे बाह्यनुचिंयें जो पण कषायोद्य मंद देखायते तो पण युक्तिहीन स्वमतपक्त पातिने नियमा अनंतानुबंधीयानो नदय जाएवो। अहीं श्रीशीनंगाचार्यें ए चार अनंता बंधी अने त्रण मिथ्यालमोहनीयादिक, एवं सात प्रकृति सहहणा फेरवे ते एम ह्यंत्रे,ते माटे ए सातने दश्चीनमोहनीयमां गणीते अने शेप एकवीश प्रकृति चारित्र मोहनीयनी कहीयें। विशेषार्थीयें श्री आचारांगनी टीका जोवी। ए अनंता नुबंधी चार पाय कह्या।

जेना उदयथी (अप्प खाणा के॰) अप्रत्याख्यान एटले देशविरतिपणुं तेने पण आवरे, रोके, तो सर्वविरतिपणुं होयज केम? एवी क्रोधादिक प्रकृतिनुं नाम अप्रखाख्यानावरणीय षाय चार जाणवा. आत्माने प्रवृत्तिमार्गथी प्रतिकूल करवो ते प्रखाख्यान सर्व विरतिआत्मगुण रूप जाणवुं तेना उदयने जे आवरे, आववा न दिये,ते प्रखाख्यानावरण क्रोधादिक चार कपाय जाणवा. (सं कें॰) थोडुं ग्धं परीसहादिकें करी यतिने (ज्वले के०) दीपे, पठी तरत विसराल याय ते संज्व : लन, क्रोध, मान, माया खने लोन जाणवो एम चार कपायना शोल नेद कह्या. ' ह्रवे मुग्धजनने एनो नेद जणाववाने गाथा कहेर्ने

नानीव वरिस चन्नास, पक्तरगा निरय तिरिय नर अमरा॥ सम्माणु सवविरई, अहंखाय चरित घायकरा॥ १७॥

श्रथं—(जाजीय केंण) प्रथम जायजीय सुधी रहे, ते श्रनंतानुंत्रधी कपाय कही यें. बीजो श्रप्रखाख्यानी कपाय ते (विरिस केण) एक वर्ष सुधी रहे, त्रीजो प्र खाख्यानी कपाय, (चडमास केण) चार मास सुधी रहे, चोथो संज्वलनकपाय ते (परक्रगा केण) पंदर दिवस सुधी रहे, पहेलो (निरय केण) नरकगित हे तु, बीजो (तिरिय केण) तिर्धेचगितहेतु, त्रीजो (नर केण) मनुष्यगितहेतु, चो थो (श्रमरा केण) देशविरतिनो घात करे, त्रीजो (सबविरई केण) सर्वविरित नो घात करे, चोथो (श्रह्मायचिरित केण) यथाख्यात चारित्रनो घात करे. ए रीतें ए चार पूर्वोक्त पदार्थना (यायकरा केण) यथाख्यात चारित्रनो घात करे. ए रीतें ए चार पूर्वोक्त पदार्थना (यायकरा केण) यातना करनारा जाणवा इत्यणा जावजीय सुधी जे कोथादिक चारे कोइ रीतें निवृत्ते नहीं, एवा इःसाध्य, ते श्रमंताज्वधीश्रा कोथादिक चारे श्रवक्तमें लेवा. जे कपाय, एकवर्ष सुधी घणा उपायें कोइ पण रीतें निवृत्ते नहीं ते श्रप्रत्याख्यानावरण कोथादिक चार कपाय इःसाध्य जाणवाः जे चार महीना सुधी निवृत्ते नहीं, ते प्रत्याख्यानावरण कोथादिक चार कपाय जाणवाः जे पंदर दिवस सुधी उत्कृष्टा रहे, ते सुसाध्य कोथा दिक चार कपाय संज्वलना कहीयें. हवे संक्षेशतारतम्य कहेते.

अनंतानुवंधी आते उद्यं जीवने नरकप्रायोग्यकमे वंधाय, अप्रत्याख्यानावरण कपाय चारने उद्यं जीवने तिर्यंचप्रायोग्यकमे वंधाय, प्रत्याख्यानावरणकपाय चारने उद्यं जीवने मनुष्यगितप्रायोग्य कमे वंधाय, संज्वलनाकपाय चारने उद्यें जीवने मनुष्यगितप्रायोग्य कमे वंधाय, संज्वलनाकपाय चारने उद्यें जीवने देवगित प्रायोग्य कमे वंधाय, हवे एना धातगुण कहे हे.

अनंतानुवंधीया कपायनो चद्य, सम्यक्तनो घात करे. अप्रत्याख्यानावरण क पायनो चद्य, अणुत्रतनो घात करे. प्रत्याख्यानावरण कपायनो चद्य, सर्वविरति नो घात करे. संस्वलनाकपाय चारनो चद्य, यथाख्यातचारित्रनो घात करे. एना चद्ययी यथाख्यातचारित्र नावे, केम के चपशांतमोह्यणवाणुं आर्युं ते पण सं ज्वलनाने चद्यें जाय. तथा सरागसंय ने विषे पण देशनंगरूप तिचार चपजा वे, जे नणी सर्वविरतिने विषे अतिचार, ते संज्वल ाने चद्यें होय. अने शेष बार षायने चद्यें अनाचाररूप मूलनंग थाय.

तथा खंहीं जावजीव, वर्ष, चार ।स, पक्, इत्यादिक ।त । सुं तथा नर ।दिगतिप्रायोग्यबंध ह्यो, ते सर्व ग्धजन समजाववाने प्रायि जाणबुं. अन्यथा बाहुबलीने ए वर्षसुधी मान रसुं, पण तेथकी चारि नो सर्वधात न थयो, ते न णी संज्वलनो मान तथा प्रस चंड्राजिषिनी पेरें खंतर हूर्त ।त्र पण नंता बंधी छ रहे, तेथी अनिय जाणवो ॥ १०॥

ह्वे बाह्यह ांत देखाडवापूर्वक पायस्वरूपनेद हेते.

जल रेणु पुढिव पवय,राईसिरसो च विहो कोहो॥ तिणसलया क ऽिष्ठ, सेलबंनो वमोमाणो ॥ १ए॥

अर्थ-(जल के॰) जलरेखा रखो, (रेणु के॰) धूलिरेखासरखो, (पुढवि के । ।टीनी रेखासरखो, (पवय के ०) पाषाणनी (राईसरिसो के ०) राइ सरखो, (चर्डिहो के॰) चार नेदें (ो ो के॰) तेथ होय. (तिएसलया के॰) ने नी बडीनी पेरें नमे, ते संजलनो हियें। ( ह के ) छिनी पेरें प्रत्या निर्ज. ( िह्य के ० ) हाडनी पेरें र्नम प्राख्यानी डे, ( सेल डं नोव ो के ० ) पाषा णस्तंननी पेरें नमे नहीं, ते अनंतानुबंधीर्र (माणो के ) ान जाणवो ॥ इत्य ।। जे पाणी ां लीक रतां पाढलश्री लती जाय, एम जे ोधें री विघटवो ते तरत हो, ते संज्वलनो ोध. जेम धूलिमां हे ली शिधे जे धूल जूदी थाय, ते केटलाए कालें वायुविशेषें पाढी मलें, ए रीतें नांग्र न, उपायें म ले ते बीजो प्रत्याख्यान ोध जाएवो. सूका तलावमां माटी फाटी, ते मेघ वरसवाथी ले, तेम जे न नांगु होय ते घरो उपायें घरो कालें मले, ते त्रीजो अप्रत्यास्यानि उ ोध. तथा पर्वतं फाटचो ते ोइ रीतें न मखे, तेम जेहतुं न नांग्र ते कोइ उपारें न क्षे, ते चोथो नंता बंधी है भेध एम चार प्रकारें क्रोध कह्यो, जेमाटे विघट नस्वनाव क्रोधने तेणे सरखाइयें, चार रेखाने दृष्टांतें री चार नेदें ोध समजा व्यो. छहीं षायमोहनीयप्रकृति ते इव्यक्तोधादिक ते पांच वर्ण, पांच रस, वे गं ध, चार स्पर्श, तेना शोल नेद. अने तेहना उदयथी थया जे जीवना मलिन अ ध्यवसायरूप नावकोधादिक ते अवर्ण, अगंध, अरस ने अस्परी तेना असं

ख्याता नेद याय जेमाटे रसबंधहेतु अध्यवसायस्थानक असंख्याता कह्याठे.
एम क्रोध चार कह्या. हवे मानना चार नेद कहेठे. (तिएसलया के०) नेत्रनी ठडी ते जेम सुखें नमें, तेम जे मानने उदयें जन्यहर्ठनिर्गुण पक्ष्पातहर सुखें सकुहरपदेशमात्रें नमे,वाव्यो वजे, ते मानतुं नाम संज्वलनोमान जाएवो. जेम सुकं काएने तैलादिक चोपडी इःखे नमावीयें तेम जे मानना उदयवंत जीवने घणा प्रयासें वालीयं, मार्गसन्मुख आणीयं, ते वीजो प्रत्याख्यानी मान जाएवो. जे अत्यंत घणे कष्टें हाडनी पेरें नमावीयें, मार्गसन्मुख करीयें तेवो इःसाध्य, ते त्रीजो अप्रत्याख्यानी मान जाएवो. जेम पहरनो स्तंन कोइ रीतें नमे नहीं तेम जे कदा यह, कोइपण उपायें न ढांमे,ते चोथो अनंतानुबंधी मान जाएवोः एम मान मिष्यानिनवेशहर अनमनखनाव, तेथी ए तिएसलयादिक ग्रं नाम्य इर्नाम्य नेदें चतुर्विधमान कह्यो. नावथी एना असंख्य नेद कहीयें.

हवे मायाना चेद कहेते.

मायावलेहि गोमु,ति मिंढसिंग घणवंसमूलसमा॥ लोहो हलिह खंजण, कहम किमिराग सारिनो ॥ ५०॥

अर्थ-(माया के०) माया ते (अवलेहि के०) वंशनी होति सरखी (गोमुति के०) बलद सुतरे ते सरखी, (मिडसिंग के०) मिडाना शिंगडा सरखी वांका (घण वंसमूलसमा के०) किन वांसना सूल सरखी वांकी माया हे (लोहो के०) संज्वलना लोननो रंग (हिलिह के०) हलदर सरखो जाणवो, (खंजण के०) सरावलानो मे ल (कहम के०) कईमपास सरखो (किमिराग के०) करमजीपाटनो रंग ते (सारिश्वो के०) समानरंग अनंता हुंबंधी लोननो जाणवो.

मायावक्रतास्वनाव आपणा अनिप्रायणी नि वचन कायचेष्ठा देखाडवी, ते माया जाणवी त्यां कांइ सुसाध्य इःसाध्यपणाने विषे दृष्ठांत कहें हे जेम (अवले ही के०) वंशादिक ढोलतां ढोती नीकले, ते वांकाशपणुं जेम करमहण मात्रें दली जाय, तेम जेनी माया सुखें दले, ते संज्वलनी माया जाणवी तथा जेम (गो के०) बलद चालतो मूतरे, तेनी वक्रता थूल मांहे सूकाया पढी दली जाय, तेम जे उपायें करी जे माया हूटे, ते प्रत्याख्यानी माया जाणवी तथा मीढाना शिगडानी वक्रता अत्यंत घणा करें कोइ एक टाले, तेम जेना मननी वांकाइ दो हली दले, ते जीजी अप्रत्याख्यानी माया जाणवी. तथा वांसनुं मूल तेनी

व ता कोइ पण पा थी टर्ज़े नहीं, तेम अनंतानुबंधिनी मायाने चर्चें करी जे जीवने वक्रता होय, ते घणे चपदेशें तथा घणा चपायें टर्ज़े नहीं ते अनंतानु बंधी माया जाणवी. एटर्ज़े ह ांतपूर्वक चार प्र ारनी ाया ही.

हवे लोनना चार नेद हेंगे. जे लोनना चदयथी जीवने धनादि परियह उपरें लनो रंग होय, परंतु हलदरना रंगनी पेरें सुखें चा ते जाय, ते लोन ं नाम संज्वलनलोन जाणवों तथा (खंजन केंग्) सरावलानो ची णो मेल जे चपायें टक्षे, तेम जे लोनना चदयथी थयो जे धनादि नो रंग,तेने चपायें टाली शाय,ते प्रत्याख्यानी चे लोन जाणवों. तथा वि जे गांडाना पड़डानो चरो व स्त्रें लागों, ते घणा साबू प्र ख इव्यें री स्त्रें तरे, ते जे लोनना चदयथी एवो स्वसाध्य परीयह चपर रंग होय,ते त्रीजो अप्रत्याख्यानी चे लोन जाणवों. तथा किर जी पाटनो रंग, गेइ पण रीतें चतात्वों न जाय, ते जे लोनना चदयथी थयो जे धनादि नवविध परि हनो रंग, जे कोइ रीतें चतात्वों न व्य, ते नंता बंधी चे लोन ए,लोननो स्वनाव रंजन हो. जे नणी परइव्यसार्थें तन्मय थावे रीने व स्माने रंगे. ए शोल कषाय विनिधना चेद, हांत पूर्वक ह्या ॥ १०॥ हवे नव नो षाय विह्नी चेदसहरूप हेहे.

> जरसुद्या होइ जिए, हास रइ अरइ सोग नय कुडा॥ सनिमित्त मन्नहा वा, तं इह हासाइ मोहणिखं॥ ्१॥

थ-( स्सुद्याहोइजिए के॰) जेना उद्यथी जीवने होय (हास के॰) हांसी, (रइ के॰) रित वेदे, (अरइ के॰) रित उद्देग, (सोग के॰) शोक जूरवा दि, (नय के॰) नय बीक, ( जा के॰) जुंगुप्सा ते गंजा ते (सिनिमित्त के॰) सकारण, निमित्त सहित (वा के॰) तथा अथवा ( हा के॰) अन्यथा एट से रिण विना होय (तं के॰) ते (इह के॰) अहीं (हासाइ दिणअं के॰) हास्यादि । दिनीय में जाण वुं ॥ इ क्रार्थः॥ ११॥

तेमां पण जे कमैना उद्यंथी तथाविध नांमचे दिक देखवे री कारण त या कारण विना सहेजें हांसी आवे, ते प्रथ हास्यमोहनीय तथा जे प्रकृति ना उद्यंथी रिण तथा रिण विना इंडियानुकूल विषय पामे, ते रित एटले ते वस्तुने विषे अंतरचित्तप्रतिबंध होय, ते बीजं रितमोहनीय तथा इंडियना प्रतिकूत विषयसाधक अर्थ मल्यायकी जे चित्तोहेग उपजे, ते सकारण, ते वि ना सहेजें चहेग, उपांपलो उपजे ते निष् रिण, ए त्री छं छरितमोह्नीय जाण छं. तथा जे प्रकृतिना उद्यं हि वियोगादि रिण ले यके तथा कारण मत्या विना एण रुद्नादि होय, ते हिंगुं हो मोह्नीय जाण छं. त । जे प्रकृतिना उद्यं श्री छा जोकने विषे छ प्यादि देखीने वीये, ते इह्लोकनयः तथा छ सप्प व्यादि तथा नूत प्रेतादि थी हिंगे, ते बीजो परलोकनयः तथा नयनां हे जे चोरादि, ते इव्य लेइ जरों? ए हिंगे, ते त्रीजो छादाननयः तथा जे वी हिंगी तथा बंदूकना शब्द श्री ण चिंतव्यो नय थाय, ते चोथो छ स्मात् नयः पांचमो दिहीने । जीविकानो नयः उद्यो मरवानो नयः सातमो छपयश थवानो नयः ए सात नय तथा बीजा पण नय सकारण तथा निःकारण उपजे, ते पांच नयमोह्नीय जाण छं. तथा जे कमेना उद्यं हिंगी, कुरूप पदार्थ दे खी सकारण छन्यशा निःकारण सूग उपजे, तेथी नाक मचको है, शूंके, इत्यादि चिन्द करे, ते उद्यं गंडा छ एसामोह्नीयकमें जाण छं. एम हास्य, रित, छरित, शोक, नय ने गंडाः ए उ नोकषायमोह्नीय नेद कह्या ॥ ११ ॥ हवे ण वेद नोकषाय हेडे.

पुरिसि ित उप्तयं पइ, अहिलासो जवसा हवइ सो ॥ यी नर नपुं वे द , फुंफुम तण नगर दाहसमो ॥ १२॥

अर्थ-(पुरिस के०) पुरुषनी इन्ना, (नि के०) निनी इन्ना, (त नयं के०) पुरुष तथा नि ने (पइ के०) प्रत्यें (अहिलासो के०) अनिलाष में नसं कारूप (जवसा के०) जे कर्मने वशें जीवने (हवइ के०) होय (सो के०) ते (च के०) तुशब्द परस्परनी पेक्लायें करी पुनःशब्दनो वाचकते. (थी के०) स्त्रीवेद, (नर के०) पुरुषवेद, (नपुं के०) नपुंसकवेद, ए (वेचंद्रच के०) वेदना चदयथी विषयनो ताप, (फुं म के०) कोचदाह, (तए के०) तृएपदाह ने (न गरदाहसमो के०) नगरदाह सर ते, एम में होवा॥ इत्यक्तरार्थः॥ ११॥

वेद एट खे जे कर्मना जदयथी जीवने पुरुष दरीन, स्पर्शन, ालिंगनादि विषद् जिलाष उपजे, जेम पित्तना जोरथी मि । नावे, तेम पुरुष ोहा एो लागे, ते प्रथम विदनोकषायमोहनीयक तथा जे मेप्र तिना जदय थी जीवने स्त्रों दरीन, ालिंगन, मेथुनादिकनी इहा थाय. जेम श्लेष्मना जोरें करी खटाश नावे, ते पुरुषवेदनोकषायमोहनीय बो ं जाए ं तथा जे मेना

चर्यथी जीवने स्त्री खने पुरुष, ए ब े वेदनो खनिलाष चपजे, जे पित्तश्लेष्मने जोरें री खाटा, खारा चपर खनिलाष चपजे, तेम जे नयवेदविषयिणी इ हिए, ते त्री जं नपुंस वेदनो पायमोहनीय जाण हुं.

हवे ए वेदमांहे या वेदनो विषय, केवो तीब्र, मंद होय ? ते दृष्टांत पूर्वक हेते. स्त्री, पुरुप अने नपुंसक. ए त्रण वेदना उदयने विषे अ क्रमें कोउनो अ दि, तृणनो अदि, अने नगर दाह, ते सरखा जाणवा. एटले विदेना उदयथी जी वने विषय, फुंफुम एटले ढाणानो गोर तेनो अदि एटले ोठ, ते जेम जे खोरीयें, ते तेम वलतो जाय तेम, जेम जेम पुरुपना करस्पर्शादिक होय, ते ते विषयादि वधतो जाय, ए प्रथम स्त्रीवेद तथा पुरुषवेदने उदयें नृणख जाना प्रिनी पेरें अनिजाप थाय जेम तृणाप्रिनी ज्वाला, एकवार उठे पण पठी तरत समाइ जाय, तेम पुरुप पण स्त्रीसेवन करवाने उतावलो थाय, पण सेव्या पठी तरत समाइ जाय, ए बीजो पुरुषवेद जाणवो. तथा जेम नगर बलतां उ रहादिक जाग्या, ते घणा दिवस धीवलें, तेम नपुंसकवेदोदयें थयो जे विषय, ते ोइ रीतें निवृत्ते नहीं, ते त्रीजो नपुंस वेद् एम वेदने कहेवे नव, नो पाय ा तेथी अद्यावीश मोहनीयनी प्र ति कही ॥ १२ ॥ हवे पांच अप्रुप्त मोहनीयनी प्र ति कही ॥ १२ ॥

सुर नर तिरि निरयार्छ, हिडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं॥ वायाल तिनवइविहं, ति तरसयं च सत्त ही॥ १३॥

श्रथ—एक ( सुर के० ) देवायु, बीछुं (नर के०) मनुष्यायु, त्रीछुं (तिर के० ) तिर्यचायु, चोछुं (निरयान के०) नरकायुः ते आयुःकमेनो (हिंहसिरसं के०) हिंहना सरखो स्वनाव जाणवोः अने (नामकम्मचित्तिसमं के०) नामकमेनो स्वनाव, चितारा सिरखो, ते (वायाल के०) वेंतालीश चेदें तथा (तिनवइविदं के०) त्राणुं चेद पण नामकमेना जाणवा अने (तिनवरसयंच के०) त्रण अधिक एकशो चेद पण हो यः वती (सत्त ही के०) शहशत चेद पण नामकमेना हे॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १२ ॥ तेमध्यं जे नामकमेना हदयथी सुर कहेतां देव प्रायोग्यगत्यादिक हेतु जे सुरचो गनुं नाजननूत, ते प्रथम सुरायुः नर कहेतां मनुष्यगित प्रायोग्यनोगनुं नाजननूत, ते बीछुं मनुष्यायु. तिरि कहेतां तिर्यचगितप्रायोग्यनोगनुं नाजननूत, ते त्रीछुं तिर्यं चायुः नरकगितप्रायोग्यनोगं नाजननूत, ते चोछुं नरकायु. जेम ( हिंह के० )

कार नो खोडो, ते दि रोक्यो जीव ते नि जी के नहीं हिड नांगे तेवारें निकले, तेम गितनो । ष्योदय खाव्यो ते नोगव्या विना त्यांथी जीव नि जी शके नहीं परं! पूर्ण नोगवी र । पा सुखें निकले ए खायुःकमनो स्वनाव हे एम खा कमना । र नेद ।.

ह्वे ना मैना नेद हेंगे ना मैनो खनाव, चिताराना सरखो हें जे चितारो विचित्र वानें री विविध कारना हस्ती, घोडा, ष्यादि नां नलां तथा नूंमां रूप छोखे, ते ना कमें पण देव, मनुष्य, तिर्धेचादिक अनेकरूप, नाना संस्थान, नानावर्ण घडे ते ना कमेनी ए पेक्स्यें बेंतालीश प्रकृति पण कहीयें. तथा वांतर खनावनी पेक्स्यें त्राणुं पण नाम मैना नेद हियें एकशो अडतालीश सर्व प्रकृति सत्तायें छेतां तथा कमस्तवि तरीने तें तथा कमेप्रकृति ने मतें पांच बंधनना प र नेद छेखवतां एकशो त्रण प्रकृति नाम मैनी, ए शोने अडावन प्रकृति सत्तानी पेक्स्यें खाय तथा बंध, उदय, ने उदीरणानी पे क्स्यें नामकमैनी प्रकृति शड हनेदें जा वी ॥१३॥

हवे प्रथम बेंताली चेंद हेवाने पिंमप्रकृति चौद हेते.

गइ जाइ तणु वंगा, बंधण संघायणाणि संघयणा॥ सं ।ण वस् गंध रस, फास अणुपु विवहगगई॥ १४॥

अर्थ-एक (गई के०) गितन , बीज़ं (जाई के०) । तिनाम, त्रीं (तणु के०) शरीरनाम, चोणुं ( उवंगा के०) उपांगनाम, पांचं ( बंधण के०) बंधण नाम, उंजुं ( संघायणाणि के०) संघातननाम, सातं ( संघयणा के०) संघयण नाम, आवमुं ( संवाण के०) संस्थाननाम, नवं ( वासु के०) वर्णनाम, दशमुं ( गंध के०) गंधनाम, अर्थाआरं ( रस के०) रसनाम, बारं ( फास के०) स्पर्शनाम, तेरमुं ( अणुपुवि के०) आनुपूर्वीनाम, चौदं ( विद्यागई के०) विद्या योगितनाम कहेवां ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ २४॥

र देवता मनुष्यादिक पर्याय कारण, ते गतिनामकर्म. १ एकेंडियादिक जी वपयीयनुं कारण, ते जातिनामकर्म. ३ औदारिक शरीर पामवाना तथा परिणा मवाना हे, ते शरीरनामकर्म. ४ ह ादिकपणे पुजल परिण वानां हे, ते उपांगनामकर्म. ५ औदारिकादिक पुजलं परिणामवा मांहोमांहे जोड वानुं हेतु जे कर्म, ते बंधननामकर्म. ६ पांच शरीरना पुजलनो निचय रवानी हे जे में ति, ते संघा नना में तेणे करी । पणा रीर हेंग में पु ल संधनों रिशि ए वो रियें । जे खीला हिकें री । डाहि । संधि करियें, ते शरीरने विषे हाड संधि हुं हुढ रवा हुं हें हु, ते संघयणन में । ए श रिरनो शुन था अशुन । ।र, ते संस्थ ते ं हें हुनू जे में, ते संस्थान । कमें । थ शरीर पुजर् के के में, ते वर्णना में । १० शरीरें गंध गेंधपणुं थावा हुं हे नूत जे में, ते गंधना में । ११ शरीरें ति । हिक रस थवानी हे नूत जे में प्रकृति, ते रसना में । १२ जे में थी शरीर ! शि । , उसाहि स्पर्श होय, ते स्पर्शना में । १३ जे मेना दयथी व गतिथी राशें । एथा वल दनी पेरें उत्पत्तिस्थान रूप ग । एथे जीव । वे, ते । एप पूर्वी ना । में । १४ जे में थी जीवने शुन तथा न चाल होय ते विहायोगित ना । में । १ वें गितना हुं तेथी निम्न पणुं जणाववाने ए विहायोगित ना ही यें।

पिंमपयिडित्ति च दस, परघा स्सास आय बुक्कों ॥ अगुरुल ुति निमिणों, वघाय मिस्र अ पत्ते आ॥ ५५॥

अर्थ-(पिंमपयिडितिच वर् के०) ए पूर्वो पिंम प्रकृति चौद हीयें. (पर्धा के०) पराधातना में, (उस्सास के०) २ उह्या ना में, (आयव के०) ३ ा तपना कमें, (उ लेखें के०) ४ उ तिना में, (अग्रुरुत के०) ५ अग्रुरुत घुना कमें, (ति के०) ६ तीर्थं करना में, (निमिण के०) ७ नि णिना में, (उवधाय के०) ए उपधातनाम में, (ि अअ इपने । के०) एम ए । उपद्ये प्रकृति जाण्वी ॥ इस्रकृरार्थः ॥ १५॥

जे ध्यें एकेक प्रकृतिमांहे चार तथा पांच तथा ठ. एम अवांतर जेढ़ होय. जे गति दें चार जेढ़, जातिमांहे पांच जेढ़, एम प्रकृतिनो पिंम एटखे समुदा य, ते सामान्यविवङ्कायें चौद्धे ने विशेषापेद्धायें पञ्चोतेर तथा पांशवहे.

१ जे कमेथी परनी शिन हणीयें एट छे परें गंज्यो न जाय, ते पराघातना मि. १ जे कमेथी श्वासोहास पूर्ण रे, एवो लिब्धवंत जीव होय, ते च्रह्वासनामक मि. १ जे मिने चद्यें जीव श्रिर, चण्णप्रकाशवान् होय, ते द्यातपनामकमे. १ जे मिने चद्यें ज्यातपनामकमे. १ जे क मिने चद्यें ज्यातपनामकमें ५ जे क मिना चद्यथी जीव श्रिर, द्यत्यंत स्थूल पण न होय तथा द्यत्यंत रूशपण न होय, ते द्यारुला पुनामकमें ६ जे कमेना चद्यथी द्यारुला प्रतिहार्योद्दिक चतुर्विध संघ

स्थापनादि तीर्थ र पदवी लहे, ते तीर्थ रना में ७ जे कमेना उद्यें जीवनां आंगोपांग वा ना वा आवे, पण फेरफार न आय, ते निर्माणनाम में. ए जे में ना उदयथकी जीव, पोतानां अधिके तथा ठें अंगें करी पीडा पामे, ते उपघातना मकमें ए व प्रत्येक प्रकृति हीयें. रिण के ए मांहे बीजा विशेष चेंद्र ने पामियें, ए प्र ति ए जीज होय ॥ १५॥

तस बायर प तं, पनेय थिरं सुनं च सुनगं च॥ सुसरा इज जसं तस, दसगं थावर दसं तु इमं॥ १६॥

थ-१ (तस के०) त्रसनामकर्म, १ (बायर के०) बाद्रनाम मे, ३ (प ढ नं के०) पर्याप्तनामकर्म, ४ (पत्तेय के०) प्रत्ये नामकर्म, ५ (थिरं के०) स्थिरनामकर्म, ६ (सुनंच के०) सुननामकर्म, ७ (नगंच के०) सौनाग्यनामकर्म, ७ (सुसर के०) स्वरनामकर्म. ए (अइ के०) आदेयनामकर्म. १० (जसं के०) यशःकीर्तिनामकर्म. ए (तसद्सगं के०) त्रसद्श जाएवो अने ( थावरद्सं इमं के०) स्थावरद्शक एमज, ए ागली गाथामां हेशे॥ इत्यक्त्रार्थः॥ १६॥

१ जे कमेना उद्यथी जीव,स्थावर िटीने थाय हाले,चाले,ते सना मे. १ जे कमेने उद्यें जीव,स्. शरीर मूकी बादर चकुर्या शरीरने पामे,ते बादरनामकमे. १ जे कमेना उद्यथी जीव, आरंजेली पर्याप्त सर्व पूर्ण करे, ते कमेप्रकृति 'नाम पर्याप्तना मकमे. १ जे कमेने उद्यें जीव, साधारण शरीर मूकी पोताना एक शरीरनो स्वामी थाय, ते कमें 'नाम प्रत्येकनामकमे. १ जे कमेने उद्यें जीवना दांत, हाड प्र ख दृढवंथ हो य, ते स्थिरनामकमे. ६ जे कमेना उद्यें जीवनी नाजी उपरलो नाग जे म कादिक अंग ते न होय, परने लागे तोपण ते इःख न माने ते शुननामकमे. १ जे कमेने उद्यें जीव, उपकारादिक का विना तथा संबंध विना पण लोकने वल्लन होय, ते सौनाग्यनामकमे. ए जे कमेने उद्यें जीवनो कोकीलादिकनी पेरें मधुर स्वर होय, ते सीनाग्यनामकमे. ए जे कमेने उद्यें जीव 'वचन सर्वने मानवा आद्रवा योग्य होय, ते आद्यनामकमे. १० जे कमेना उद्यें जीव 'वचन सर्वने मानवा आद्रवा योग्य होय, ते आद्यनामकमे. १० जे कमेना उद्यथी जीवनी यश, कीर्त्ते, सर्वत्र प्रसरी जाय, ते यशःकर्तिनामकमे. ए त्रसादिक दशप्रकृति 'नाम, त्रसद कहीं, ए सं इाले. ह्वे स्थावरादिक दशप्रकृतिनो स दाय ते स्थावरदशक किह्यें, ते इम कहेतां ए हवे आयल कहे ', ते जाणवं ॥ १६॥

## थावर सुद्धम अपं, साहारण अथिर असुन इनगाणि॥ स्सर अणाइ । जस, मिअनामे सेअरा वीसं॥ २ ॥

थ-१ (थावर के०) स्थावर । मे, १ (के०) सूना मे, १ (पंके०) अपयो नां मे, १ (साह्यारण के०) साधार । मे, ५ (अथिर के०) अस्थिरना मे, ६ (न के०) अना मे, १ (न न के०) वीनींग्यना कमे, ए (सर के०) । रना मे, ए (णाइ के०) नादेयना मे, १० (अस के०) पश्च अप भित्ता मे, (मि न नामे के०) ए नामे स्थावरद (से के०) ते (इअरावीसं के०) इर जे सद , ते साथें मेलवतां वीश कित थाय ए रीतें ना मेनी बेंताली !कित थइ एटले पिंमप्र ति चौद, त्ये ति । । द ने साथ वरदश . एवं बेंतालीश चेद या॥ इल्यक्तराथेः ॥ १९॥

१ जे मैना उदयथी जीव, स ीटी ह विर यि, हाजी चाली के, ते ह विरना मैं १ जे मैना उदयथी घणां शरीर ह यां पण चक्कुर्योद्य । एवुं सूह रीर जीव पामे, ते सुद्ध ना मैं ३ जे मैंने उदयें जीव एरं जेली पर्याष्ट पूरी । विना रण पामे,ते पर्या न मैं ४ जे मैंने उदयें नं जीव 'साधारण एक शरीर होय, निगोदिया जीव । प्रत्ये शरीर पामे, ते साधारणना मैं. ५ जे मैंने उदयें जीव लोहीलां इत्यादि शियल वयव होय, ते अस्थिरनाम में. ६ जे मैंने उद्यें जीवना पग प्र ख अ न ग होय जे बीजाने लागे थके ते अप्रीति पामे,ते श्रुनना में. ५ जे मैंने उद्यें विवन पण परने विज्ञन लागे, ते दौर्नांग्यना में. ए जे मैंने उद्यें जीवनो खर, खर, ार्जार ने उंट सरखों जूंमो होय, ते :खरना में. ए जे मैंने उद्यें जीवनो खर, खर, ार्जार ने उंट सरखों जूंमो होय, ते :खरना में. ए जे मैंने उद्यें जीवनो खर, खर, ार्जार ने उंट सरखों जीव ' पयश निंदा, सर्वत्र विस्तरें, ते नादेंयना में १० जे मैंने उद्यें जीव ' पयश निंदा, सर्वत्र विस्तरें, ते पयश पकीर्त्तिन कर्मे. ए रीतें ना मैंने विषे स्थावरद तेथी इतर हेतां एनी प्रतिपद्धीनूत त्रसादिक दश प्रकृति सहित करतां त्रसविंशित हियें ए छावीश प्रत्येक प्रकृति कहीयें ॥१॥॥ हवे यंथलाध्य करवाने चतुष्कित्र हितें ए छावीश प्रत्येक प्रकृति कहीयें ॥१॥॥ हवे यंथलाध्य करवाने चतुष्कित्र हितें ए छावीश प्रत्येक प्रकृति कहीयें ॥१॥॥ हवे यंथलाध्य करवाने चतुष्कित्र हितें ए छावीश प्रत्येक प्रकृति कहीयें ॥१॥॥

तसच थिर ं अथि,रब सुहमतिग थावरच कं ॥ सुनगतिगाइ विनासा, तयाइ संखाहि पयडीहं ॥ ए॥

थै—(तसचन के०) स तुष्क. (थिरढकं के०) स्थिरादि उ प्रकृति, ( थिरढ के०) स्थिरषट् , (सुहमितग के०) सुद्धात्रि , (थावरचन्नं के०) स्थावरच ष्क, (सुनगितगाइ के०) सीनाग्यत्रिक. इ दिक (विनासा के०) वि व्यविनाषा संज्ञा, (तथाइ के०) ते ते प्रकृतिथी आदे देइ जेटली (सं हिं के०) संख्या हीयें, तेटली (पयडीहिं के०) प्रकृति लइयें ॥१०॥

स, बादर, पर्याप्त ने प्रत्ये . ए चार प्रकतिनी संज्ञा सचतुंष्क हियें. स्थि र , नना , सीनाग्यनाम, सुख्रनाम, ादेयना , यज्ञः शिर्तनाम. ए उप्त तिनो स दाय, तेनी संज्ञा स्थिरषट्क कहीयें. छिर्द्यरनाम, छाउननाम, दीनीग्य नाम, ःखरनाम, नादेयना ,छ्यद्याकीर्तिनाम. ए उप्त तिना दायनी संज्ञा छिर्द्यरषट् कहीयें सहमना , पर्याप्तनाम, साधारणाना , ए त्रण प्रकृतिनी स दाय, तेनी सं । स् त्रिक कहीयें स्थावरना ,स्त्र्यानाम, छपर्याप्तना ,साधारण न ए चार प्रकृतिनी संज्ञा स्थ रच ष्क कहीयें सीनाग्यनाम, सुख्ररनाम ने आ देयनाम, ए त्रण प्रकृतिनी संज्ञा, सीनाग्यत्रिक कहीयें. इत्यादि ए शास्त्रमां हे (विनासा के०) विश्व प्रकृपण संज्ञा जाणवी. तेथी संकृत पामे थके शा ान गम थाय जे प्रकृतिथी जेटली संख्यावाची शब्द कह्यो, ते प्रकृतिथी तेटली प्रकृति एतां ते ते विनाषा होय, जेम त्रस्थी मांमी चार प्रकृति क्षेतां सच ष्क ही यें, एम सर्वत्र समजी कें. ए शा रहस्य जाणवुं ॥ १०॥

वस्च अगुरुल हु च , तसाइ ति च र ब मि ।इ॥ इय अन्नावि विज्ञासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं॥ २०॥

थै-(वस्मचं के॰) वर्स्च का, ( रुत चं के॰) रुत चं का, (तसाइड के॰) त्रसादि हिंक, (ति के॰) त्रसत्रिक, (चं चर के॰) सच का, (व के॰) पट्क, (मिल्लाइ के॰) इत्यादिक (इय के॰) एह, (त्रावि के॰) नेरी पण (विनासा के॰) सं । जाणवी. । गल सूं हिं जे पटिते नाम कहेंगे, (तयाइसंखाहिपयडीहिं के॰) ंथकी ंमीने तेटली ख्यायें प्रस्तिनी विनाषा जाणवी॥ इ क्रायीः॥ १ए॥ ज्यां वर्णचतुष्क स न्यें कह्यं होय,त्यां? वर्ण ना , १ गंवना ,,३ र ....., ४ स्प

रीनाम, एचार प्रकृति लीजें अगुरुलघुचतुष्क कह्यं होय, त्यां १ अगुरुलघुनाम, १ उपयातनाम, ३ पराघातनाम, ४ उञ्चासना ए चार प्रकृति लीजें १ त्रसनाम, १ बाद्रनाम, ए वेने त्रसिह्क हीयें त्रस, बाद्र अने पर्याप्त प्रण प्र तिन्नं नाम, त्रसित्रक कहीयें त्रस, वाद्र, पर्याप्त, प्रत्ये ए चार प्रकृतिनं नाम त्रसचतुष्क कहीयें त्रस, वाद्र, पर्याप्त, प्रत्येक, हिथर अने ग्रुन ए त्रसपट्क कहीयें एम जेटली प्रकृति त्रसादिकथी जोड्यें, तेटली संख्या होतां तेह्वो संकेत, पंमितें जा एवो थीण हीत्रिक ज्यां कह्यं होय, त्यां थीण ही, निड्निड्न अने प्रचलाप्रचला. ए त्रण प्रकृति होवी, ए विशेष हो पाढलो अर्थ क्रार्थमां लखायो हो॥ १ए॥

हवे वेंतालीश ना कमैप्रकृति कही. ते मांहे गत्यादिक चौद पिंमप्रकृति कही श्र ने श्राचीश प्रत्येक प्रकृति कही। एम एकत्र वेंतालीश, तेमध्यें चौद पिंमप्रकृति ना उत्तर चेद पांशव श्राणवाने श्रमु में एके प्रकृतिनी उत्तरचेद्संख्या हेते। एम सर्व चडद पिंमप्रकृतिना सर्व उत्तर चेद मजी विशेपापेक्षायें पांशव चेद होय, विशेप चेद गुणतां सामान्य चेद चौद न खेवा। जे चणी विशेपनयें सामान्य न देखाय श्रमे सामान्यें विशेष न देखाय. हवे चौद पिंमप्रकृतिनी उत्तर प्रकृति कहे ते।

> गइः अर्इण उक्कमसो, चनु पण पण ति पण पंच ब बकं ॥ पण इग पण च इग, इञ्ज तर नेच्य पणसही॥ ३०॥

अर्थ-(गइआईण मसो केंग्) गत्यादिक चौद पिंमप्रकृतिना अनुक्रमें उत्तर स्नेद कहेंगे प्रथम गित, (चड केंग्) चार नेदें हो. जाति (पण केंग्) पांच नेदें हो. चर्रार (पण केंग्) पांच नेदें हो. डपांग (ति केंग्) त्रण नेदें हो. बंधन (पण केंग्) पांच नेदें हो. संघातन (पंच केंग्) पांच नेदें हो, संघयण (ह केंग्) ह नेदेंहो. संस्थान (हकं केंग्) ह नेदें हो. वर्ष (पण केंग्) पांच नेदें हो. गंध (ड्रग केंग्) हे नेदें हो. रस (पण केंग्) पांच नेदेंग्हो. स्पर्श (अह केंग्) आह नेदेंहों आनुपूर्वी (चड केंग्) चार नेदें हो. विहायोगित (ग केंग्) हे नेदेंहों. (इअड सरनेअपणसिंही केंग्) एम सर्व चडद पिंमप्रकृतिना सर्व मिली विहोप नेद ग्रण तां सामान्य न दिसे,एरीतें उत्तर नेद पांशह थाय ॥ इति समुच्च यार्थः॥ ३०॥

अडवीस जुआ तिनवइ, संते वा पनरवंधणे तिसयं॥ वंधण संघाय गहो, तणूसु सामस् वस् चऊ॥ ३१॥

थे-ए पूर्वोक्त पांशव प्रकृतिने आव पराघातादिक,दश त्रसादिक अने दश पावरादि . एवं (अंडवीसज्जुआ के॰) अहावीश प्रत्येक एटखे हूटी प्रकृति जेमां हे उत्तर नेद न होय, एवी प्रकृति तेऐ। करी युक्त करीयें, तेवारें सर्व मलीने नामकर्मनी सत्तायें (ति नवइ केण) त्राणुं प्रकृति थाय,ए एकशो ने छाडतालीश प्रकृतिनी सत्तानी छापेक्सयें थाय. (संते के 0) संति ए प्राकृत शब्द होवाधी सत्ता वाचक वे एथी सत्कर्मनी प्र तीतिनो बोध थायहे. वाशब्द, विकल्पना अर्थवालोहे एटले एनाथी व्यवहित संबं धनी योजना थायहे,एटले अथवा (पनरबंधणे के ०) एनी साथें पांच बंधनने स्था नकें विशेष अपेक्सयें पंदर बंधण लेखवतां सेलवीयें,तेवारें पिंमप्रकतिना पांशत उत्तर नेदने स्थानकें प तिरे याय, एटले दश वधे तेमां वली अहावीश प्रत्येक प्रकृति मेलवीयें तेवारें सिद्धांतने मतें,कम्मपयडीने मतें,सर्व मली(तिसयं के 0)एकशोने त्रण प्रकृति नामकर्मनी थाय, तेवारें सर्व कर्मनी मली एकशोने अहावन प्रकृति सत्तायें हो य. द्वे नामकर्मनी शहशव प्रकृति एवी रीतें थाय, ते कदेते. जेवारें खीदारिकादिक पंदर (बंधण केण) बधन तथा औदारिकादिक पांच (संघाय केण) संघातन, ए वीश प्रकृति, तेनुं (गहों के॰) यहण ते (तणूसु के॰) केवल पांच शरीरसाथेंज विविक्तियें यहण करीयें, एटर्से ए वीश जेद जूदा न गर्णीयें, केवल पांच शरीरमां हे पोत पोतानां बंधन,संघातन जेलवीयें, जे माटे प्रदेशबंधन करतां पिंमप्रकृतिना ग, ते बंधन संघातनो जूदो न होय, शरीर नामकमैमांहे आवे, ते कारणमाटे ए वीश प्रकृति शरीरमांहेज आवी, ते डीढी करवी. तथा (सामसुवसुच कें) सा मान्यपरो वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शे ए चार गणतां एटले वर्ण, गंध, रस अने स्परीता उत्तर नेद वीश थायहे. तेनी त्यां सामान्यपणे चार प्रकृतिज होवी, बा कीनी वर्णादिक शोल प्रकृति उंग्री करवी, अने वीश पूर्वली, ए रीतें बदी मली बत्रीश प्रकृति, ते पूर्वीक एकशोने त्रण प्रकृतिमांहेथी कहाढीयें, तेवारें शेष शड शव प्रकृति नामकर्मनी रहे ॥ इति स यार्थः ॥ ३१ ॥ वली तेहीज हेते.

> इच्छ सत्तरी बंधो, दएका नय सम्म मीसया बंधे ॥ बंधुदए सत्ताए, वीस इवीसऽ वस्तसयं॥ ३०॥

अर्थे—( इञ्चलत्ति के । एम शहशह नामकर्मनी प्रकृति ते ( बंधोदए के ।) वंधनी अपेक्सयें तथा उदयनी अपेक्सयें खने उदीरणानी अपेक्सयें होयः व

ती (सम्म के॰) सम्यक्त्वमोहनीय अने (मीसयाबंधे के॰) मिश्रमोहनीय नो बंध, (नय के॰) न होयः माटे (बंध के॰) बंधें (वीस के॰) एकशोने वी श प्रकृति अने ( उदए के॰) उद्यें ( इवीस के॰) एकशो बावीश प्रकृति तथा (सत्ताए के॰) सत्तायें ( अहवस्मसयं के॰) एकशोने अहावन प्रकृति होयः इति॰॥

एम एज शहशह नामकर्मनी प्रकृतिनो ज्यां बंध तथा उद्य तथा उद्दिश्ण तथा चश्च्यकी बीजा पण कारणें त्यां शहशत जेवी, तथा बीजां सात कर्ममांहे मोहनी यकर्मनी अहावीश प्रकृति हो, तेमांहे सम्यक्त्वमोहनीय तथा मिश्रमोहनीय ए बे प्रकृतिनो बंध नथी. कारण के ए बेहु प्रकृति हुं इल मिथ्यात्वमोहनीय हुं हे जे नणी उपशमसम्यक्तें करी शुद्ध कथा विपयीसजनक खनाव जेथी टाव्यो, ते सम्यक्त्व मोहनीय कहीयें. जे थकी अई विरोधस्वनाव टल्यो, ते मिश्रमोहनीय. तेथी ए ब ने प्रकृतिबंधमां न जेखवीयें अने एनो उद्य निन्न होय जेमाटे सम्यक्त्वमोहनीय नो देशवाती रसोदय देशवातिक कहेतां समक्तिने कांइक हुणे ते देशवाति

हीयें, मिश्रमोहनीयना जावयी कांइक अधिक सम्यक्त्वनें हणे, ते देशघाति उरतो दय. अने मिश्रमोहनीयनो बेठाणी उरतोदय तथा मिथ्यात्वमोहनीयनो च उठाणी उरति स्विधाति रसोदय तेमाटे सर्वकर्मनी प्रकृति, बंधिवचारें एक होने वीश केंसवीयें. अने उदय तथा उदीरणाविचारें सम्यक्त्वमोहनीय अने मिश्रमोहनीयनो उदय अधिक केंस्वतां एक होने बावीश प्रकृति केंसववी तथा कमेनी सत्ता विचारतां नामकर्मनी त्राणुं तथा एक होने त्रण प्रकृति होय, ते जूदी जूदी लखी देखाडीयें हैयें.

इानावरणीयनी पांच, द्रीनावरणीयनी नव, वेदनीयनी बे, मोहनीयनी वृद्धी श्र, आयुनी चार, नामकर्मनी शहशह, गोत्रकर्मनी बे, अंतरायनी पांच, ए सर्व यह एकशोने वीश प्रकृति बंधयोग्य जाणवी. अने ए पूर्वोक्त प्रकृतिमां मोहनी यनी अहावीश प्रकृति गणतां सर्वकर्मनी एकशो ने बावीश प्रकृति उदय उद्दीरणा यें जाणवी. तथा उपशमनायें पण सर्वोपशमनायें मोहनीयनी अहावीश संक्रमे, माटे एकशोने बावीश जाणवी. तथा मोहनीयनी अहावीश, नामकर्मनी एकशो ने त्रण, शेष व कर्मनी सत्तावीश. एम सर्व मली सत्तायें एकशोने अहावन्न प्रकृति होय. अने जो पंदर बंधनने स्थानकें पांच वंधन गणीयें, तेवारें नामकर्मनी त्रा एं प्रकृति लेखवतां एकशोने अहतालीश प्रकृति सत्तायें होय ॥ ३१॥

हवे प्र तिना उत्तर चेद, ना अने अर्थ हेत्रे. नरय तिरि नर सुरगई, इग बिद्य तिद्य च पणिंदि जाई ।। उराल विनवा हा, र तेच्य कम्मण पण सरीरा (पा ांतरे) उरा लिख वेर्गविख, खाहारगे तेख म्मइगा॥ ३३॥

र्थ- जे मेप्र तिना चदयथी जीवने नारकी एवे नामें बोलावीयें, ते मे नुं नाम (निरय के ०) नरकगति कहीयें. जे थकी तियेच नाम कहेवाय, ते कर्म नं नाम (तिरि केण) तिर्यचगित. जे कमेना उदयधी जीव, मनुष्य कहेवाय, ते कर्मतुं नाम (नर के॰) म ष्यगति जे कर्मना उदयथी जीव, देवता कहेवाय, ते कर्मेनुं नाम (सुर केण) देवगति. एम चार श्रीदियक पर्याय मांहेला एक पर्या यथी बीजे पर्यार्थें जीव जाय, ते माटे एने (गइ के०) गति कहीयें. ए गतिनाम कमें चार कह्यां, जे कमेप्रकृतिना चद्यथी जीव, एकेंड्यि कहेवाय, ते (इग के । ते कर्म नाम एकेंडिय जाति जे कमेत्रकृतिना चदयथी जीव, बेइंडिय कहेवाय, ते कमेनुं नाम (बिख्य केण) बेंडियजाति. जे कमेना चद्यथी जीव, तें डिय कहेवाय, ते कर्म नाम (तिद्य कें ) तेंडियजाति. जे कर्मना उदयथी जी व, चर्चारेंडिय कहेवाय ; ते कमें नाम (चर्च के । चर्चारेंडियजाति. जे कमेना चद्यथी जीव, पंचेंड्य कहेवाय, ते कमेप्रकृतिनुं नाम (पणिंदिजाईन के ) पं चेंडियजातिनामकमे कहीयें. ए जातिनामकमे पांच कह्यां. जो पण नावेंडि य इंडियावरणक्योपशमयी होय अने इच्येंडिय इंडियपयीतिनामकर्मना उदय थी होय पण एज जीव, एकेंडिय हो. एवं नाम जातिनाम उदयथी होय.

हवे शरीरनामकर्म, पांच कहें हे. ( उराल के ) श्रीदारिकनामकर्म, ( वि चव के । वैति यनामकर्म, ( ।हार के । आहारकना कर्म, (ते अके ।) तैजसनामकर्म, (कम्मण के॰) कार्मणनामकर्म, (पणसरीरा के॰) ए पांच, शरीरनामकमे कह्यां तथा पावांतरें बीजा पदोनों अर्थ तो मलतोज हे परं (कम्मइगा के॰) एक कार्मिक काम्मेण शरीर, पांच ं लख्युं हो.

र जे उदार एटले सर्वशारीर मांहे प्रधान, जे कारण माटे ए शरीरें करी मोक्स साधीयें तीर्थंकर गणधरादिक पदवी नोगवियें,ते नणी म ष्य,तिर्थंचनुं औदारिकशरीर,जे कमेना चदयधी लहीयें तथा औदारिकपणे पुजल परिणमावियें, ते औदारिक शरीर

२ तथा जेएो करी नूचरथी खेचर थाय, खेचरथी नूचर थाय, न्हानुं टाजी

होटुं रे ने होटुंटाली न्हां रे,सूरूप, रूप रे. इत्यादि विविधिक वं दिया, ते वैत्रिय बे नेदें छे. ए औपपाति ते देवता । नार ही नां रीर नव त्य । जाणवां बीज्ञं तिर्थेच ता ध्यने ल्ब्धिप्र य ते वैक्षि यपणे प्रेजल परिण विधें, ते जे मेना दयधी लहीयें, ते । वित्र यशरीर हीयें।

३ वि लिब्धवं चौद पूर्वधर विषे रनी क्रि देखवा निम् नें था संशय नां वा निम् नें म ह प्राण श्रा स्फिट रखुं स्वष्ठ श्रितसूक्त हिएक वर्गणाना स्कंधें री रीर नीपजावीने जिनेश्वर पासें ूके, ते श्राहार शरीर एखुं. ते जे मेना द उथथी थाय तथा श्राहारक पणे पुजल परिण वि ते, मेपकति ना वि हिरक शरीरना में जाण बुं.

ध तथा जमेला ।हारने पचाववा ं हेतु तथा तेजोलेश्यानिर्ग हेतु, ते तैज शरीर जाएं, ते जे मेना चदयथी लहीयें, ते मैप्रकृतितुं नाम तै

जस रीर ाणवुं

प जे कमेदल, जीव प्रदेशसायें क्रीर नीरनी पेरें ली र ंग्ने ते ामेण रीर सर्व रीर ं बीजनूत, जे मेना उदय । मेवर्गणादल लेइ मेपणे परिणमा वे, ते पांच ं ामेण शरीर जाण कुं था (पानंतरें) टी। ारें देलुंगे जे मे पर ाणुने विषे निष्प थयुं होय तेने ािंक एक कामेण रीर हियें कमें पर ाणुज ाद प्रदेश सहित क्रीर नीरनी पेतें न्योऽन्य नुगत थायग्ने ते कामेण श रीर देवायग्ने कमेनो विकार, तेज ामेण एवी व्युत्पत्तिग्ने ॥ इति स यार्थः॥ ३ ३॥ ह्रेव ए पूर्वो औदारि दि शरीरें अगोपांग होय, ते ाटे अंगोपांग कहेगे बाू रु पिठि सिर र, अरंग वंग अंगुलीपसुहा ॥ सेसा अंगोवंगा, पढम तणुतिगरसुवंगाणि ॥ ३४॥

थे—ते ं प्रथ आठ शंगनां नाम कहें हें (बाहू के ) बाहु बे एट ले जुना बे, (रुके ) बे नंघा साथल, एवं चार, (पिछि के ) पुंति वांसो, एवं पां च, (सिर के ) स्तक एवं ह, (उर के ) हृदय है थुं, एवं सात, (उथरंग के ) उदर एट लें पेट एवं आठ, ए आठे अंग कही यें. (उवंग अंगुली पमुहा के ) उपांग ते अंगुली प्र ख नाणवा एट लें ए अंगने लागा जेम हाथ, तेम हाथने लागी अंगुली. नंघाने लागा ढीचण प्रमुख, तेने उपांग एवी संज्ञा कही थें (सेसा अंगोवं गा के ) ए यकी शेष थाकता एवा जे आंगलीना पर्व, रेखा प्रमुख ते अंगोपांग

जाणवा. ए अंगोपांग (पढमतणुतिगस्सुवंगाणि के०) पहेलां त्रण शरीर जे श्रो दारिक, वैत्रिय अने आहारक,एने होय. त्यां औदारिकशरीरें औदारिक अंगोपांग, अने वैत्रियशरीरें वैक्रियअंगोपांग, आहारकशरीरें आहारक अंगोपांग, एम त्रण जाणवा. ए अंग अने उपांगथकी शेषरह्या जे अंगुलीना विसुआ, हाय पग नी रेखा, नख, केश, रोमादिक, तेने अंगोपांग कहीयें. एम एक अंग, बीजां उपांग अने त्रीजां अंगोपांग. ए पण त्रण किह्यें. पढमतणु एटले जे कमेना उद यथी औदारिकादिक शरीरपणे परिणम्या पण ते पुजल एहवे अंगोपांगने आकार पणे परिणमे, हस्तादिक आकार नीपजे, ते अंगोपांगकमे अथवा ए त्रण शरीरें होय ह ने तैजस तथा कामेण ए वे शरीर जीवप्रदेशनी साथें ह्वीर नीरनी पेरें मली रह्या वे तेह ंक ं संस्थान नथी, तेथी तेनां अंगोपांग न होय॥ इति समुच्चार्थः॥३॥। हवे ए अंगोपांगना पुजल बंधन,नामकमैविना न बंधाय,तेन्नणी पढी बंधननाम कहेवे.

अरलाइ पुरगलाणं, निबद बर्श तयाण संबंधं ॥ जं कुणइ जर समं तं, बंधण मुरलाई तणु नामा ॥ ३८॥

अर्थ-( ग्रस्ताइपुग्गताणं के०) श्रोदारिकादिक शरीरना पुज्तने ( निबद्ध के०) पूर्वे बांधेला श्रने (बक्कं के०) हमणा बंधाता, (तयाण के०) तेनी साथें (संबंधं के०) संबंध करे. जोडे श्रने (जं के०) जे (कुणइ के०) करे, (जग्रममं के०) लाख राल सरखुं (तं के०) ते (बंधण के०) बंधननामकमे. (मुरलाइतणुनामा के०) श्रोदारिकादिक पांच शीरीरने नामे जाणवुं ॥ इत्यक्त्रार्थः॥ ३५॥

श्रीदारिकशरीरें तथा श्रादिशब्यकी वैक्रियें, श्राहारकें तथा तैजसें श्रने कामिणें ए पांच शरीरनामकर्मने उद्यें शरीर पणे परिणम्या पण पुजल मांहोमांहे पूर्वें बांध्याने श्रने वली बांधतो जोडतो जायने, ते पुजलनो मांहोमांहे बंध पडेने तेणे करी जूदा विखरता नथी, जे कर्मना उद्यथी, ते कर्मनुं नाम बंधननाम ए मा न्युं जोड्यें श्रन्यथा मांहोमांहे पुजल मली न रहे, जेम राल, लाख श्रने गुंदरादि कें करी जे निन्न वस्तु जोडीयें ते केटलो एक काल सुधी मली रहे, जि न थाय, ते म जे कर्मने उद्यें जे पूर्वें यहांने एवा श्रीदारिक पुजल तेणे करी नवां श्रही, ते श्रीदारिक पुजल मेलवी मेलवी जोडी शरीर वधारे ने जे कर्मने उद्यें, ते श्रीदारिक वधन. एम जे कर्मने उद्यें पूर्वें बांध्यां वैक्रिय पुजल साथें बंधाता नवा विक्रिय पुजल बांधी शरीर वधारे, ते बीजुं वैक्रियबंधन, तेमज जे कर्मने उद्यें श्राहारक

पुजलसायें आहारकपुजलनो बंध करी करी शरीर बांधे, वधारे, ते आहार बंधननाम. ए त्रण शरीरना आरंजने समयें सर्व बंध जाणवो पढ़ी ज्यां सुधी ते शरीर धारण रे, त्यां सुधी देशबंध जाणवो अने तैजस तथा कामेण. ए वे शरीरनो सर्वथा देशबंधज होय, पण सर्वबंध न होय, जे नणी ए वे शरीरनो केवारें अबंध होय ने बंध नथी होतो तेथी ए शरीरनो प्रथम आरंज स य न पामीयें, तेथी सर्वबंध न होय. जे कमेने उद्यें तैजस शरीरना प्रजलने पूर्वें बांधेला तैजसपुजलनी साथें बंध पाडे, ते तैजसबंधननाम. तेमज जे कमेना उद्यथी पूर्वें य ं कमेद लसाथें नवा मेपुजलनो संबंध करे, तेकामिणबंधननाम. एम प्रजलनें बंधन तो खाय, जो पूर्वें मह्या होय तो थाय, ते माटे बंधननाम कहीयें ॥ ३५॥ हवें संघातनना हेते.

जं संघायइ रला, इ पुग्गले तणगणं वदंताली॥ तं संघायं बंधण, मिव तणु नामेण पंचविहं॥ ३६॥

अर्थ-( जं के 0 ) जे कमे ( संघायइ के 0 ) एक वां करवां, ( उरलाइ के 0) औ दारि दि पांच शरीरना जे (पुग्गले के०) पुजल, ते प्रत्ये (तएगणंवदंताली के 0) जे तृ एखलाना समूह प्रत्यें दंताली एकतो करे,तेनी पेरें करवा (तं के 0) ते (संघायं के 0 ) संघातननामकमे कहीयें ( बंधणिमव के 0 ) बंधननी पेरें तेना पण (तणुनामेण के ) पांच शरीरने नामे (पंचविद्धं के ) पांच चेद्वे॥इस्ट स्थः॥३५॥ जे मेना चदयथी औदारिकादिक योग्य पुजलने संघातयति केतां एकवा करे, ते सं घातनः ह्वे जीव,प्रथम संघातननामने उद्यें करी औदारिकादिक पुजलनो राशि करे, ते बंधननामें करी बांधे अने अंगोपांगनामथी हाथ,पगना आकार घडे, अहीं हष्टांत देखाडें हे. जेम दंताली कहेतां मारवाडमां प्रसिद्ध काप्र उपकरण विशेष तेणे करी जेम विखरेलां तृणखला ने बूहारीने एकवा करीयें पढी तेनो सुखें नारो बंधाय, तेम संघातननामकर्में करी एकवा कस्तां एवां जे दल तेनो बंधननामे बंध होय, ते संघातननामकर्म ते पण जेम पांच श्रारीरना पांच वंधन कह्यां, तेम ए संघातन पण पांच नेदेंगे, ते सूत्रधी कहीयें वैयें जे कमिने उदयें जीव, औदारिकपुत्रत मेलवे, ते पहेलुं औदारिक संघातनः जे कमेने उदयें जीव, वैक्रिय पुजल सेलवे ते बीजुं वैक्रियसंघातन. जे कमेने उद्यें जीव, आहा रकना पुजल मेलवे, ते त्रीजं आहारकसंघातन जे कमेने उद्यें जीव, तेजस शरीर ना पुजल मेलवे, ते चोशुं तैजससंघातन. जे मिने उद्यें जीव, मिणना पुजल मेलवे, ते पांच कामिणसंघातन एम पांच संघातनना ह्यां. ते पढ़ी संघयण कहेजें ॥३६॥ तथा प्र ारांतरें सत्तायें प र बंधन आणवाने गाथा कहे हे.

र्राल वि वा हा, र याणं सग ते अ कम्मजुताणं ॥ नव बंधणाणि इअर, इ सिह आणि तिन्नि तेसि च ॥ ३७॥

अर्थ-( उराल के०) औदारिक, (विज्ञ के०) वैहिय तथा ( आहारयाणं के०) आहारक, ए त्रणने ( सग के०) पोत पोतानी साधें जोडतां त्रण बंधन थाय, ने ए त्रण शरीरने, ( तेश्र के०) तैजससाधें अने ( म के०) का मेण साधें, ( नाणं के०) क करतां पण त्रण त्रण श्राय. ( नवबंधणाणि के०) एम त्रण शरीरना नव बंधन थाय तथा ( इश्रर के०) इतर जे तैजस अने कामेण, ए ( इ के०) बेनी साथें ( सिह्ञाणि के०) सिहत करतां ( तिहि तेसिंच के०) त्रण त्रण बंधन तैजस कामेणनां. ए पंदर बंधन थाय॥ इत्यक्तराथेः॥३॥ औदारिक,वैक्रिय ने आहारक, ए त्रणने पोत पोतानी साथें जोडतां ए बं

आदारिक,विक्रय ने आहारक, ए त्रणने पात पातान। साथ जाडता ए व धन थाय. तथा ए त्रण साथें तैजस शरीर जोडतां पण त्रण बंधन थाय तथा ए त्र ए साथें कार्मण शरीर जोडतां त्रण बंधन थाय. एवं नव बंधन दे ।डीयें वैयें.

र जे कर्मना उद्यंथी औदारिक साथें औदारिक पुजल बंधाय, ते औदारि क औदारिक बंधन. १ जे कर्मना उदयंथी वैत्रिय साथें वैक्रिय दलनो बंध याय, ते वैक्रियवैत्रिय बंधन. १ जे कर्मना उदयंथी आदारक दलनो बंध याय, ते आहारक आहारक बंधन. १ जे कर्मना उदयंथी औदारिक दल साथें तैजस दलनो बंध याय, ते औदारिकतैजस बंधन. ए जे मेना उद्यें वैक्रियसाथें तैजस दल बंधन होय, ते वैत्रियतैजस बंधन. ६ जे कर्मना उद्यें आहारक जुं तैजसदल साथें बंधन होय, ते आहार तैजस बंधन ए म एज त्रण साथें कार्मण पण जे बुं, १ जेना उद्यें औदारिक साथें ार्मण द लनो बंध याय, ते औदारिक कार्मण बंधन. ए जेना उद्यें वैत्रियदल साथें कार्मण दलनो बंध याय, ते वैक्रियकार्मण बंधन. ए जेहना उद्यें हारा साथें कार्मण दलनें बंधन होय, ते आहारक कार्मण बंधन. ए रीतें नव बं धन कहां. ए मिश्र योगने विषे जाववां तथा बीजे पण जाववां.

१० तेमल औदारिकादिक त्रणनी साथें इतर कहेतां जूदां जे तेज.. ू.ने का

र्मण तेना मिश्रस्कंध साथें एटले ए बन्नेनी साथें श्रीदारिकनो जेने चद्यें बंध होय, ते दशमुं औदारि तैजसकार्भणबंधन. ११ जेना उदयें वैत्रियसार्थे तै सं मिणदल मन्ने, ते वैत्रियतैजसकार्मणबंधनः १२ जेना चद्यें आहारक साथें तैजसकार्मणबंधन होय, ते आहार तैजसकार्मणबंधन हवे त्रण तैज स कार्मणनांज बंधन देवे. एटखे १३ जेना उदयें तैजसदल साथें तेजस नो बंध होय, ते तैजसतैजसनुं बंधनः १४ जेना नदयें ाम्मणसायं तैजसनो बंध होय, ते तैजसकामेणबंधन. १५ जेना उद्यें मिणसायें िण भदल नो मांहोमांहे बंध होय,ते पंदर कार्मण िणबंधन ए पंदर बंधन कह्यां॥३॥॥ हवे ए प र बंधनने ग्रुणवाने । रांतरें पाठां र गाथा हेरे. " वरलाईण व सग ते, अकम सिह्याण पण चर ति बंधा॥ पढमाण ते म्मेहिं, तिन्नि इस्र पनर बंधणया॥१॥ ह्वे ए गाथानो थे हेते. (जरलाईण के ०) श्रीदारि दि पांच रीरना पुजलनां (सग के 0) । प । प साथें लवानां हेतुनूत धन, (तें अ म्मसिं । एपएच इतिबंधा के ०) ते तै सव्यतिरें शेष चार शरी रना दलने तैजससायें लवानां हेतुनूत चार बंधन, या तैजस ार्मण विना अनेरां जे ए शरीरदल, तेने ।मिएसाथं मेलववानां ए बंधन तथा तेने तैज स िणसंबंधें त्रण बंधन. एवं पंदर बंधननां ना जिखीयें वैयें प्रथ श्रीदारिकबंधन, बीजुं वैत्रि यवैक्रियबंधन, त्रीजुं श्राहारकश्राहारकबंधन, चोयुं तैजस तैजसबंधन, पांचसुं का एकार्मणबंधन. ए पांच पोतपोताथी. तथा उडुं औदारिक तै जसबंधन, सातमुं वैत्रि यतैजसबंधन, आतमुं आहारकतैजसबंधन, नवमुं का भेणतेजसबंधन, दशमुं औदारिककार्भण्वंधन, अगीयारमुं वैक्रिय भिणवंधन, बारमुं आहारककार्मणबंधन, तेरमुं औदारिकतेजस मिणबंधन, चौदमुं वैक्रि यतैजसकार्मणबंधन, पंदरमुं आहारकतेजसकार्मणबंधनः ए (पढमाणतेश्रक म्मेहिंतिन्नि के॰) ए पावला त्रण बंधन, े तैजसकार्मणनी साथे प्रथमना श्रीवा रिकादिक त्रणने विषे लवानां हेतु जाणवां एम पंदर वंधन अंयातरें कह्यां ॥३ ॥ हवे औदारि शरीरपणे परिणम्या जे सात थातु, तेमध्ये अस्थिसंधिने हढ ता थवानां हे नूत संघयण हैः तेनां नाम कहीयं हैयं.

संघयण मिश्तिचड, तं दा व रिसह नारायं॥ तह्य रिसह नारायं, नारायं अदनारायं॥ ३०॥

थ-( 'वयणं) संवयण ते ( हिनिचर्र के ०) स्थि जे हाड तेनो मेलाप , (तंबदा के 0) ते नेदें छे. ां प्र (व रिसहनारायं के 0) व क्षननाराचसं घयणना मे, (तह्य के०) ते बी (रिसहनारायं के०) क्रषननाराचसंघ यणना में त्री (नारायं कें) नाराचसंघयणनामकर्म. चोधुं (अद नारायं के) दिनाराचसंघयणना में ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ३०॥

त्यां प्रथ 'वयण' रूप हेते. स्थिना संधि ' लवुं, जोडवुं, ते नि मित्तजूत जे नाम मं, जेने छदयें जेह बुं संघयण होय, ते तेवा नामें संघयण ना म मैं जाएं ते संघयएना उ जेद्वे. तेऐ ते नाम मेना पए उ जेद, ार्यजे र्दे रिएप्नेद यिते १ ां पढ घयण ते ज्यां बेहु हाड बेहु पासें कटबंधें बांध्यां, ते उपर ऋषन एवे नामे । हाड,तेरो पाटानी पेरें वींट्या ते उपरें ते त्रण हाडने नेदे, एवा व ािलियें खीव्यां च ं स्थि स्थिर होय, एं संघयण, जे मैना ठदवधी होय, ते प्र वज्रक्षननाराचसंघयणना

१ ज्यां बे हाड बे पासें केटबंधें बांध्यां, तें उपर त्रीजे पाटा सरखे हार्डे बांध्यां पण ज्यां खीली न होय, ते बी क्षननाराचसंघयण, जे मेने ठदयें होय, ते मेप्रकृति ना पण ते जाणबुं.

३ ज्यां बे पासें ह ने मर्कटबंध होय, पण पाटो ने खीली न होय, तें नाराचसंघयण, जे कर्मना चद्यथी होय, ते कर्मप्रकृति ना पण तेज जाण बुं ध ज्यां एक पासें मर्कटबंध ने बीजे पासें खीली, एवो हाडनो संधि जि हां होय, ते ६ नाराचसंघयण, जे कमिप्रकृतिना छदयथी लहीयें, ते मिप्र कतिं ना पण तेज जाणवुं ॥ ३०॥

> कीलिअ वेव ं इह, रिसहो प ो अ कीलिआव ं॥ नर्ने डबंधो, नारायं इम**्रा**लंगे ॥ ३ए॥

थे- पांचमुं (कील के०) कीलिकासंघयणनामकमे, बहुं (बेवहं के०) वेवहुं संघयणनामकर्म ( इह के ॰ ) इहां ( रिसहोपट्टो के ॰ ) रिषनते पाट र हाड. (कीलिया केण) खीलीरूप तें (व केण) वज हीयें ( उनर केण) बे पातें छांकडा नराववा, ते (म डबंधो के ०) मर्कटबंध एने (नारायं के ०) नाराच कहीयें. (इम रालंगे केण) ए संघयण, औदारिकशरीरें होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥३ए॥ जेम खीजीसात्रें सांधि, काष्ठसंधि होय, तेम ज्यां हाडसंधि होय, पण

बंध पाटो न हो , ते जिल ।संघयण, जे कमेप्रकृतिना दयें ते जिल ।सं। यण प्राप्त थाय, तेने तेज ना में कहीयें ज्यां स्थिनो अंतर एके ने स्प जि ने रहे पण खीली, नाराच अने क्षण, ए त्रण हि एके पण न होय, लगारे ज्यां ने लागवाथकी जूदा थइ जाय, एवो त्यंत निर्वल ज्यां संधि होय, ते हुं हें वहुं संघयण, जे मेना चदयथी थाय, तेने तेज ना में हीयें.

हीं स यनाषायें जैनशा संकेतें (क्षम के०) बे हाडना संधि स्थिर र वाने पाटा सरखुं ि खुं हाड, ते परिवेष्टि तप हीयें. तथा ते बे, ण हाडें नेदी ने संधि हढ करे, एवं चोछुं थवा त्री खुं हाड खीजी रूप, ते वज्ज हीयें. ने ज्यां बे हाड ए ए साथें ं डे छां डो नराय, ते ोइ पण रीतें ढूटे नहीं. एवो बन्ने स्थिनी ंहो ंहे हढसंधिनो रनार केट बंध, ते नाराचशब्दनो थीं जाणवो. केटबंध, ते वानर बाल , ताने हइए वलगी रहे. ते हाड ना ढेडा बीजा हाडने वलगी रहे, ते मर्कटबंध जाणवो. ए ण शब्द समयना षायें खेवा ए संघयण, हाडसंधि रूप हो ये जिल्हा शिरो संघयण होय पण वैष्टिय ने हार रीरें न होय, ए छपे क्लायें एकें डियने संघयणी ं.॥ ३ए॥ हवे ए संघयण हनां वइय संस्थान होय, ाटे संघयण पढ़ी संस्थान हे छे.

सम च रंसं निग्गो, ह साई खु ! इ वामणं हुं मं॥ सं । णा वस् किएह, नील लोहिय हिलद सिच्या ॥ ४०॥

अथ-(समच ग्रंसं के०) १ समच र संस्थान, (निग्गोह कें०) १ त्ययो धसंस्थान, (साइ के०) ३ सादिसंस्थान, (खु ।इ के०) ४ कुटलसंस्थान, (वामणं के०) ५ वामनसंस्थान, ६ (ढुंमं के०) ढुंमसंस्थान, ए (संवाणा के०) संस्थाननां नाम कह्यां (वस्मिकिएह के०) १ रुक्षवर्णनामकर्म, (नील के०) १ नीलवर्णनामकर्म, (लोहिय के०) ३ लोहितवर्णनामकर्म, (हिलाह के०) ४ हरिइकपीतवर्णनामकर्म, ५ (सिखा के०) श्वेतवर्णनामकर्म ॥ इत्यक्षरार्थः ॥४०॥

र सम एटले समा सरखा चतुः एटले चार श्रस्न एटले खूणा ज्यां होय, ए टले पलोंती वाली बेठां थकां दोरी साथें, मवीयें ज्यां बन्ने जानुनुं श्रंतर, श्रने मावो जानुनो जमणो खंनो तथा जमणा जानुनो माबो खंनो पलोंती पीत साथें ललाट मवतां ए चारे दोरी र ।। थाय, ते स चतुर संस्थानः थवा स स्त श्रंग सा डि शा । लक्क्णसिंहत श्रुन होय, ते स चतुरस्रसंस्थान ही थें. ते जे मैप्रकृतिना चद्यथी होय, ते समच र संस्थानना कम जाणवुं. ते देवता सर्वने समच र संस्थान होयः

श जेम वटवृक्ताे उपरलो नाग पूर्ण होय, ते जे संस्थानें री नानी उपरलो नाग त्रिकलक्षणोपेत पूर्ण प्रमाण होय अने नीचलो नाग हीन होय, एवं न्ययोधसंस्थान, जे मेना उदयथी पा विं, ते मेप्रकृति ना , न्य योधसंस्थान जाणवं

३ ज्यां नाजीयकी नीचेनां छंग, उत्तम ानोपेत होय ने पेट उपरना छंग हीन होय, ते सादिसंस्थान, जे क्मेना उदयथी थाय, ते मेतुं नाम पण तेज जाणवुं.

ध ज्यां हाथ, पग, ने शीवादि जत्तम होय ने हदय, पेट, पूंठ, धम हीन होय, ते ब्जलंस्थान, जे मेना जदयथी पामीयें, ते मेनुं नाम तेज जाणवुं

५ ज्यां हाय ने पग, हीन होय ने बीजां अंग उत्तम होय, ते वामनसं स्थान, जे कमेना उदयथी पामीयें, ते कमे नाम तेज जाणवुं.

द ज्यां सम श्रंगना वयव लक्ष्णहीन नूंमा होय, ते हुंमसंस्थान, जे मेना चदयथी प्राप्त थाय, ते कमें नाम पण तेहीज जाणवुं. संस्थान ते शरीरनो श्राकारिवशेष, तेनुं हेतुनूत जे नामकमेप्रकृति, ते संस्थाननामकमें कहीयें. ग नज, तिर्थेच, मनुष्यने व संस्थान होय श्रमे शेष सर्वजीवने हुंमसंस्थान होय.

हवे पौजलिक शरीरने विषे व्यवहारें जे वर्णा दिक होय तेनां हे जूत वर्णा दि क चारनां नाम कहे छे. तेमां प्रथम पांच वर्णनां नाम कहे छे.

र जे कमेना उदयथी जीव शरीर, मशीनी पेरें तथा गुलीनी पेरें नीख़ुं, का खुं होय, ते कमेत्रकति नाम कष्णवर्ण कहीथें.

श जे कमेना उदयथकी जीव ं शरीर, किप हा सरखुं तथा जंगाल सरखुं नील होय, ते कम्प्रकतिनुं नाम नीलवर्ण कहीयें.

र जे कर्मना उदयथी जीवनुं शरीर, हलदर तथा हरियाल तथा चंपाना फू ल सरखुं पीले वर्णें होय, ते हरिड्कपीतवर्णनामकर्म जाणवुं. ४ जे मिना उ दयथी जीवनुं शरीर, हिंगलो तथा सिंदूर तथा जास्त्रलनां फूल जेवुं (लोहित के०) रातुं होय, ते कर्मनुं नाम लोहितनामकर्म जाणवुं. ५ जे कर्मना उद्यें जीवनुं शरीर, शंख, कुंद, चंड्किरण सरखुं तथा गौरवर्ण होय, ते श्वेतवर्णन कर्म जाणवुं. एम वर्णन ही, ते पुजलग्रणसाहर्यें धना हेहे.

ुरही छरही रस पण, तित्त कडु कसाय अंबिला महुरा॥ फासा गुरु लहु मि खर, सी एह सिणिइ रुक्ता॥ ४१॥

श्र-(सुरही कें 0) सुरनिगंधना क , (रही के 0) खरनिगंधना में, (र पण के 0) रस पांच ्रे (तित्त के 0) तिक्तरसनाम में, ते तिक्तरस, ( डु के 0) कटु रसना , ते टुरस, १ (कसाय के 0) पायलरसनामक ते कषायेलो रस, ध (श्रंबिला के 0) म्लरसना में, ते खाटो रस, श्रांबली नो रस, प ( डुरा के 0) मधुररसना में, ते ति रस, (फासा के 0) हवे श्राठ फरस हे छे. १ (ग्रुह के 0) ग्रुह्हपर्शना में, १ (ल के 0) लघुहपर्शनामक में, ३ (रि ठ के 0) स्पर्शना , ४ (खर के 0) खरहपर्शनामकर्म, ५ (सी के 0) शीतहपर्शना में, ६ (ठाह के 0) उष्णहपर्शनामकर्म, ७ (सिण्डि के 0) हिनग्धहप्रीना में, ७ (हस्त के 0) क्रह्हहप्रश्नीना में ए (श्रुष्ठ के 0) श्राठ ह्मा जाणवा॥ ६ क्रुराशः॥ ४१॥

ते गंधना बे नेंद्र है. १ जे मैंने चद्यें पूर, हरी, अने फूलना सुगंध सरखो शरीरनो गंध होय, ते में ना सुरिनगंधनामकमें कहीयें ए शरीर श्री तीर्ध र तथा पिंद नी निज होय. १ जे कर्मने चद्यें जीवनुं शरीर, ल णादि नी पेरें, मृत नी पेरें गेंधवालुं होय, ते मेंनुं नाम, हरिनगंधनामक में हीयें. ए बे गंधनां न ह्यां.

ह्वे रसनां ना हेंग्ने. ते रसना पांच चेद्ग्ने. जो पण क्रारादिक रस यं थांतरें ान्याग्ने ते पण एमांहे छांतर्नवेग्ने १ जे कर्मना उद्यें जीवनुं शरीर, जींब रियाताना सरखुं ति कडवुं होय, ते तिक्तरसनामकर्म. १ जे कर्मना उद्यें जीवनुं शरीर, ग्रुंव अने मरी सरखुं कडु कहेतां तींखा रस जेवुं होय, ते मेनुं ना टुरस नामकर्म. ३ जे कर्मना उद्यथी जीवनुं शरीर, हरडे अने बहेडा सरखुं कपायेला रस जेवुं होय, ते कर्मनुं नामपण तेज जाणवुं. ध जे मेना उद्यें जीवनुं शरीर, जींवू अने आंबजीना रस जेवुं आम्ज ए टक्षे खादुं होय, ते कर्मनुं नाम तेज जाणवुं. ५ जे कर्मने उद्यें जीवने शरीरें शेजडी, दूध, ने शाकर जेवो मीवो रस लहीयें, ते कर्मनुं नाम, मधुररसनाम कर्मे. ए पांच रसनां नाम कह्यां.

हवे आत स्पर्शनां नाम कहेते.? जे कमेने उद्यें जीवनुं शरीर, लोहना गोला नी पेरें नारी होय, सहेजें नीची गित होय, ते कमेनुं नाम ग्रुरूपर्श जाणवुं. १ जे कमेने उद्यें जीवनुं शरीर, अर्कतूलनी पेरें हलवुं होय, ते लघुस्पर्शनाम कमे. १ जे कमेने उद्यें जीवना शरीरनो स्पर्श, वेतस तथा माखणनी पेरें सु माल मुड़ होय, ते मुड़नामकर्म. १ जे कमेने उद्यें जीवना शरीरनो स्पर्श, गायनी जीजनी पेरें बरसव होय, ते बरसवनामकर्म. १ जे कमेना उद्यें जीवना शरीरनो स्पर्श, हीमनी पेरें अत्यंत शीतल होय, ते शीतनामकर्म. ६ जे कमेना उद्यें जीवना शरीरनो स्पर्श, अभिनीपरें उम्र होय, ते उम्रनामकर्म. ७ जे कमेना उद्यें जीवना शरीरनो स्पर्श, शृत तैलनी पेरें चीकट स्नेहवंत होय, ते कमेप्रकृति नाम स्निग्ध जाणवुं. ए जे कमेना उद्यें जीवना शरीरनो स्पर्श, राखनी पेरें लूक् निः स्नेह होय, तेनुं नाम रूक् जाणवुं ॥ ४१॥

ए वर्णादिक वीश प्रकृतिमां है ग्रुन केटली? अने अग्रुन केटली? ते हेते.

नील कसिणं डगंधं, तित्तं कडुछं गुरुं खरं रुकं ॥ सीछं च छसुद्द नवगं, इक्कारसगं सुनं सेसं ॥ ४०॥

अर्थ-(नील के०) नीलवर्ण, (किसणं के०) रुह वर्ण, ए बे वर्ण ने (डगंधं के०) डगंध, ए एक गंध, तथा (तित्तं के०) तिक्तरस, (कडुअं के०) कटुकरस. ए बे रस, अने (गुरुं के०) गुरुस्पर्श, (खरं के०) खरस्पर्श, (हर्षं के०) रुह्स्पर्श, (सीअंच के०) शीतस्पर्श, ए चार स्पर्श. (आ हनवगं के०) एवं अग्रुन पापप्रकृतिनुं नवक जाणवुं. अने (सेसं के०) शेष रही जे (६ रि सगं के०) अगीआर प्रकृति, ते ग्रुन जाणवी ॥ इस्रकृरार्थः॥ ४२॥

श्रीदारिकशरीरथी मांमीने इहां सुधी जे कमेप्रस्ति कही, ते सर्वपुजलविपाक नी कही, जेनणी एनो विपाक एटले रसोदय ते जीवाश्रित श्रीदारिकादि शरीर श्राश्रयीने होया शरीर, श्रंगोपांग, बंधन, संघातन, संघयण, संस्थान, वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शे ए समस्त विशेष जे कह्यां, ते शरीरपुजलने विषे होया तेथी एनां हे नूत कमें, ते पुजलविपाकी कहीयें. तथा श्रहीं शरीरना वर्णादिक, लोकव्यवहारनयथी जेवा, श्रन्यथा निश्रयनयमतें तो श्रीदारिकादिकशरीर पुजलें पांच वर्ण, हे गंध, पांच रस, श्राव स्पर्शे, एवं वीश ग्रण होया. पण श्रहीं जे वर्णादिक लो वहारें कहें वाय ते उत्कट वर्णादिक पर्याय हेतुनूत नामकमें, तेनी प्रस्ति कही, तेमांहे एक

नीलो, िनो लो, ए बे वर्ण. था ए गैंध, एवं ए था तिक ने टुए बे रस, एवं पांच, था रु, खर, रूक् ने शी, ए चार स्पर्शे ए नव प्रकृति लो ने विषे श्रिन होया ते हि श्र नहे तेथी एना हेतुनूत कर्म ना पण इ न जाणवुं. जे रिण हि सं शें एनो दुरस धे, श्रमे विशोधें घटे, तेथी ए नव, पापप्रकृति ध्यें खेखवीयें, तेथी ए श्र ननव हुं. पाप प्रकृति हि सा हि वर्णीद चार न क हि. श्रमे श्रदीं विशेषें नव क है.

ए नव नेदंशी शेष रह्या जे अगीआर नेद, ते नहे सर्व हो ने इ होय, ते नहीं ते नहीं निमत्तन्त जे कमे, ते पण विद्यु हैं तेनों मि रस वधे, ते हो न पुष्पप्र ति ही. ते अगी हिनां नाम हेहे. श्वेत, पीत ने रक्त, ए ए व र्ण. ए रिनांधः षायल, हिनांध ए ए रस. लघु, मृ, स्निग्ध ने उस, ए हिनांध एवं गी हिने विशेषनयें पुष्पप्रकृति हीयें ए वर्णी हि वी हिने ति ही॥ धर्॥

हवे । पूर्वी ना में हे*हे.* 

च हगइ णुपुवी, गइ पुविडमं तिगं निस्रा जुस्रं॥ पुरी दर्रव , सुह स्रसुह वसु विहम गई॥ ४३॥

थै—(चन्नहर्गईव के०) चार चेद गितनी पेरें, ( अणुपुवी के०) आनुपूर्वी ना के (गईपुवी गं के०) गितने । पूर्वी, ए बेद्ध होतां दिक कहेवाय अने (तिगंनि । चन्नु के०) जे वारें एने पोताना आ सिहत लिह्यें, तेवारें आनु पूर्वी के पाय (पुवीनदर्गने के०) आनुपूर्वी ने उदय ते वियहगितयें, ( सुह के०) ग्रुन चा , ( सुह के०) नचाल (वस के०) बलदनी पेरें, अने ( नट के०) ग्रंटनी पेरें, ए बे प्रकारें (विह्नगाई के०) विह्नायोगितनामकमे ॥ इत्य० ॥ ४३ ॥ चार चेदें गितनी पेरें । पूर्वी । मकमे के एक नरकानुपूर्वी, बीजी मनु ष्यानुपूर्वी, त्रीजी देवानुपूर्वी, चोषी तिर्यं चा पूर्वी ए चार आनुपूर्वी नामके इहां पी स श्रेणिव्यतिरिक्त नर हिं वतरतां एक समय त्यां जो स श्रेणियें । ये, त्यां । जे बलदने नाथे । जी गमाणे बांधियें, ते नरकानुपूर्वी नो उद्ध य, गरके एते ते तिर्यं चमां हे पण हिसमय, त्रिसमय, च समय, एक वक्तादि गित वतरतां तिर्ये चानुपूर्वी नो उद्दय होय, तेम मनुष्यग तिमध्यें गपजतां व गितयें प्यानुपूर्वी नो ग्रदय नाववो, तेम देवतामां हे अवतर

तां व गतिक्तेत्रें देवा पूर्वीनो जदय. ए चारें ानुपूर्वी, क्ते विपा नीहे, तेथी ज्यां समश्रेणिथी वजे, ते क्तेत्रें । पूर्वीजदय वि.

तथा ज्यां श्रागल नरकि ह्यं, त्यां नर ति श्राने नर । पूर्वी. ज्यां तिर्ये क्षिक कह्यं, त्यां तिर्येचगित तिर्येचा पूर्वी. ज्यां नुष्यित त्यां नुष्यगित, ष्यानु पूर्वी. ज्यां रिक त्यां देवगित ने देवानुपुर्वी. ए बे बे प्रकृति िह शब्दें लेवी. ए संज्ञा पूर्वे नथी कही, ते । हे हीं ही.

ज्यां त्रिक कहे, त्यां । सिंहत त्रण छोवी। नर त्रि से नर गित, नर व । तुपूर्वी, नरकायु. तिर्यचित्रक ते तिर्यचगित, तिर्यगानुपूर्वी, तिर्यगायु, ए त्रिक संज्ञा कहीयें। एम मनुष्यित्र ते मनुष्यगित, ष्यानुपूर्वी, ष्यायु, देवित्र ते देवगित, देवानुपूर्वी, देवायु, ए । पूर्वी नाम मेनो नद्य, जीवने ने वारें वे समयादिकनी विश्रहगित रे, तिहां थाया ए । पूर्वीना ह्यं.

हवे विहायोगित नाम कहें छे. जे मेना छर्यथी प्राणी चालतो था विल् एटले बलदनी पेरें, तेमज हाथीनी पेरें हंसादिकनी पेरें, जली रीतें चाले, ते कमें प्रकृतिनुं नाम निवहायोगित कहीं यें. तथा जे मेने छर्यें छंटनी पेरे, खरनी पेरें, तीडनी पेरें, चालतां बन्ने पग घसाय, एवी माठी चालने जीव पामे, ते छुन विहायोगित कहीं यें. पूर्वें गतिनाम कहां, तेथी एने नि पणुं जणाववाने (विहाय के०) आकाशनाम पूर्वें जोड्युं, तेथी खगित पण कहीं यें. व हों चालवुं, ते विहायोगित कहीं यें, ए त्रस जीवने होय. एम चौद पिंमप्र तिना पां व तथा पानेर चेदनुं सहए कहां ॥ ४३॥

हवे ाव प्रत्ये प्रकृति स्वरूप हेते.

परघा छद्या पाणी, परेसिं बिलणंपि होइ इइरिसो ॥ इसिसण लिब्जुत्तो, हवेइ कसासनामवसा॥ ४४॥

अर्थ-(परघाउदया के०) पराघातनामकर्मना उदयथी (पाणी के०)
णी एटले जीव, ते (परितं के०) पोताथकी बीजा (बिलणंपि के०) बलवंत जीव
ने पण (होइड्दिसो के०) इःखें जींपवा योग्य छंग होय. ने (उसित लिख्जा के०) थासोबासनुं लिध्य एटले पामबुं. ते (हवेइ सिना वसा के०) उद्यासनामकर्मने वर्शे एटले उद्यें करी होय॥ इत्यक्तरार्थः॥ अध॥

पराघात नाम मेना ठदयथी जीव, इव्यप्राण जे पांचेंडिय, त्रण बल, श्वा सोह्वास अने आयु. ए दश इव्य प्राणने धरे तथा नावप्राण ते झान, दर्शन अने चारित्ररूपने धरे, तेने प्राणिशव्दें जीव कहीयें. ते (परेसिं के०) आप वि ना बीजा जीवने तथा वैरीने पण इर्द्ध एटले इःखें, घणे उपायें री एह परा नव्यो जारों ? एवी बुद्धि, बलवंतने पण उपजावे,तो निर्वल वैरीथी केवी रीतें आ संग्यो जाय ? एटलें जे कर्मना उदयथी सबल राजसनामां पण बोलतो थको बीक न राखे, परंतु उलटा तेनाथी बीजा घणा जण बीयें, तेना दर्शनमात्रथी पण वैरी कंपाय ान थाय. एवो प्रतापवान् जे जीव होय, ते पराघात नामकर्म. ए प्रथ प्रत्ये प्रकृत जाणवी.

( ज्ञ्वास के ०) उंचो श्वास शरीराज्यंतरचारि वायुविशेष, आनप्राण एवे नामे, एना कहेवायकी निःश्वासपण लेवो, जे नीचो ज्ञ्वास मूकवो, ते निः ह्वास जाणवोः ए बेंद्र जे कमेना जदयथी सुखें लही शके, ते कमेनुं ना ,श्वासो ब्वासनामकमे जा णवुं. ए लब्धिनुं नाम, श्वासो ब्वासलब्ध, ए बेंद्र कमेना जदयथी होय ते नणी औ दिवकी प्रकृति कहीयें तेणे लब्धियुक्त एटले सहित जीव होय अने श्वासो ब्वासपण पर्याप्तिने जदयें तद्योग्य पुजल यही स्वासो ब्वासपणे परिणमावी अवलंबि मू कीयें एवी शक्तिहोय, अने श्वासो ब्वास व्यापारव्यय करी स्वासो ब्वास प्राण ए त्रणनो नेद तथा सर्वे लिख व्यापेशिकी शास्त्रें कहीयें वैयें पण ते प्रायिक वचनने जे नणी वैक्रियलब्धि, आहारकलब्धि इत्यादिक औदियकी पण होय. तथा वीर्यातराय क्योपशम पण एनो निमित्त होय, तेमाटे औदियकी थकां का योपशमिकी केहेतां थकां पण विरोध नथी॥ ४४॥

द्वे आतपनामकर्मनुं खरूप कहेते.

रविविवे जिञ्जंगं, तावजुञ्जं ज्यायवाठ नठजलणे ॥ जमुसिण फासरस ताहें, लोहियवस्रस ठद ति॥ ४८॥

अर्थ-(रविधिंबे छिन अंगं के ण) सूर्यमं महाने विषे रह्मना जीव मुं अंग, (तावजु अं के ण) ताप छण्ण प्रकाश सहित ते (आयवा छ के ण) आतपनामक मेना छ द्य थी होय पण (न छ ज ले ण) ते आतपनामक में अग्न गरीरें न होय (ज मु सिण पासस्तति हैं के ण) जे जणी छण्ण स्परीनो छ दय ते अग्निना गरीरें ने तथा

(लोहियवसुस्त उद्द कि ) रा । वर्णनो उदय हे तेथी उष्ण यको पण रातो प्रकाश रेहे ॥ ६ क्रार्थः ॥ ४५॥

सूर्यने विमाने जे र ना बादर एकेंडिय पर्या । प्रथिवी । यिश्रा जीवने तेनां शरीर, शीतस्परीवंतने, ते तां पण तेजःप्र । शाउण्ण । रे,तावडादिक । पनी पजावे उष्णप्रकाश वालुं रे, सूर्य मलने विषे र ना जीव छंग. तेश्रातप नामकर्मना उदयथी एवो रीरनो ते :प्रकाश पामे ए में, । दर थिवी । यि पा पर्याप्ताने प्रायोग्य होय, ते नणी बी । ने एनो उदय न होय. ोइ हेरों के ए कर्मनो उदय मिना जीवने पण हरों, जे । टे तेपण ह प्र । श रेने? ते निषे ये ने. ज्वलन एटले हिना जीवने ते मेनो उदय नथीं, तेज । यिया जीवने श रीरश्राश्रयी उष्णस्पर्शनो उदयने तेथी ते हि जे जे हू डो होय, ते ते व ते वि माहेशी वीनडेला केटलाए हि । यि । जीवने तेना शरीरनो उष्णस्पर्शी । पणा शरीरें लागेने पण ते प्र । श उष्ण जाणवो नहीं ते नणी त्यंत द्रथको ताप न करे. जे जे जी होय, ते ते ताप रे ने सूर्यमं मल तो दूरथकी तपेने तथा मिना रीरें व्यवहारें री राता वर्णनो उदयने ते थी करी तेनो प्रकाश रातो थायने । टे र वर्ण जे प्रना ते तेज । यियाजीवनां श रीर जा वां पण । तप नथी. ए नावने ॥ ४५॥

हवे जात सक्रप हेते.

अणुसिण पयासरूवं, जिञ्जंगमु ने अएइ ु नेस्रा॥ जइ देवुत्तर विवि स्र, जोइस ख नेस्र माइव॥ ४६॥

अर्थ-(अणुसिण के०) जे व्हण एटले उच्छा नहीं, परं शीत होय अ ने (पयासहवं के०) प्रकाशहूप एटले प्रकाश सहित जे (जिअंग ो एइह के०) जे जीव जुं शरीर, उद्योत करे ते इहां (उ ते आ के०) ज तिनामना उदय थी जाणवो. (जइ कें०) यति अने (देव के०) देवताने (उत्तरविधि अ के०) उत्तरवैक्तियहूप करतां होय (जोइस कें०) ज्योतिषीमंमलें वि ान ( ते माइब के०) खयोतादिकनी पेरें शरीरें उद्योततानो उदय होय ॥ इत्यक्रार्थः॥४६॥ उप्तप्रकाशधी निम्न जे शीत प्रकाशहूप वालुं रे जे उद्यार्थः॥४६॥ करे तेथी निम्न प्रकाश करे,तेना उदयधी जीवं अंग कहेतां शरीर, तिप्रकाश जवा लुं करे.ते कमेत्रकृतिनुं नाम उद्योत कहीयें. अंहीं उद्योतना उदय स्वामी देलाडेवे. यति एटले साधु, वैत्रिय लिब्ध्यें री जत्तर वैक्रियरूप रे था देवता पण मूलगा नवधारणीय शरीरथी बीजं जावा आववा सारु जत्तरवित्र यरूप रे, ते नो प्र शा शीत होय, ते ज्योतना ना जदयथी जीवने जाणवो तथा ज्योतिषी जे चंइमा, यह, नक् , तारा, ए चारे जातिना ज्योतिषीना विमानें जे प्रथिवीका यिया रत्नना जीव, तेनां शरीर हे, तेने ज्यो नो जदय जाणवो. तेम खज्जआने पण जाणवो आदि शब्दथकी र औषधि प्र ख रात्रें दीपक सरखी देखायहे, ए रीतें ज्यां शीतप्र शा देखाय, ं ज्योतना मेनो जदय जाणवो ॥ ४६॥ हवे गुरु लघु तथा तीर्थ रना ुं खरूप हेहे.

अंगं न गुरु न लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरु लहु दया॥ तिचेण तिहुअणस्सवि, पु ने से दर्व केवलिणो॥ ४७॥

र्थ-( अंगं के o ) शरीर, ( नगुरुनल अं के o ) नारी पण न याय अने हल वुं पण न याय, ( जायइजीवस्तअग्रुरुल चद्या के o ) जीवने अग्रुरु लघुनामक मेना चद्यथी होय अने (ति छण के o) ती र्थंकरनाम मेना चद्यथी (ति हुअणस्त वि के o) हि ज्ञवनने एट ले स्वर्ग त्यु पातालवासी जीवोने पण (पु ो के o ) पूजनीय होय. (से चद् चे के विलाणों के o) तेनो चद्य के वलीने होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ४४॥

(अंगं केण) जीव ' औदारि दि शरीर, ते गुरु एट जे जारी अत्यंत स्यूज निर्वेद्यं न जाय एवं पण न होय तथा जघु एट जे हल वं अत्यंत इर्बज प ण न होय, जो अत्यंत जघु होय तो वायरे उमाडतां राख्यं न जाय, तेथी अ त्यंत स्यूज पण नहीं अने अत्यंत रूप पण नहीं एवं समधारण शरीर, जे कमे ना उद्ययी जहींयें, ते कमेनुं नाम अगुरुजघुनामकमे जाणवुं.

हवे तीर्थंकरनामकमें कहें वे. तीर्थंकरनामकमेना प्रदेशोदयथी पण आज्ञा ऐश्वर्य अन्य प्राणीनी अपेक्षायें विज्ञोप होय तथा जे नवें तीर्थंकर पदवी पामज़े, ते नवने विपे कल्याणक महोत्सवें इंडादिक पूजे, स्तवे तथा एक आहारनिहार करतां कोइ देखे नहीं, वीर्जुं रोगरहित सुगंधिसहित प्रस्वेद, मल रहित ज्ञरीर होय. करतां कोइ देखे नहीं, वीर्जुं रोगरहित सुगंधिसहित प्रस्वेद, मल रहित ज्ञरीर होय. त्रीजुं सुंगंधिमान् श्वासोह्यास होय. चोथुं लोही, मांस उज्ज्वल. ए चार अतिज्ञय जन्मथी प्रदेशोदय होय तथा चारघातीयां कमें, क्र्य कथा पठी केवलज्ञान पामे पके तीर्थंकरनामकमेने उद्यें समवसरणादिवनूति होय. पांत्रीगगुण सहित वाणीयें करी नव्यजनप्रतिवोधि तीर्थंकर कहेतां साधु, साधवी. आवक, आविका

रूप चतुर्विध संघनी स्थापना करे तथा प्रथम गणधरनी स्थापना रे तथा दे शना अफल न थाय तथा कर्मक्षयथी अगीआर अतिशय थाय. देवताना क खा उंगणीश अतिशय होय ए सर्व तीर्थंकरनामकर्मना रसोदयथी थाय॥ ४७॥ हवे निर्माण नामकर्मनुं खरूप हीयें हैयें.

> अंगोवंग निस्रमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं ॥ वघाया व हम्मइ, सतणु स्रवयवलंबि गाईहिं॥ ४०॥

अर्थ-(अंगोवंग के०) अंगोपांगनुं (निस्नमिणं के०) तामनुं ताम आणवुं, ते (निम्माणं णइ के०) निर्माणनामकर्म करे, (सुत्तहारसमं के०) ते सूत्र धार सरखुं जाणवुं. ( उवघाया के०) उपघातनामकर्मधी ( उवहम्मइ के०) ह णाय, पीडाय, (सतणु के०) पोताना शरीरना, (अवयव के०) अवयवें करी (जं विगाईहिं के०) पडजीनी चोरदंतादिकें करी॥ इत्यक्तरार्थः॥ ४०॥

श्रीदारिकादिक त्रण शरीरनां श्रंगोपांग हाथ, पग, पेट,पुंठ, मस्तकादिक जे ज्यां जोइयें, ते त्यां थापे, पण फेर फार न होय. हाथने ठामें पग न होय श्रने पगने ठामें हाथ न होय परंतु पगने स्थानकें पग श्रने हाथने स्थानकें हाथ होय, एम पंचेंडियपणुं जे ज्यां ते त्यां होय, एम श्रंगोपांगनो नियम निर्दार, जे कर्मना उदयथी जीव करे,ते निर्माणनामकर्म. ए कर्में करी श्रंगोपांगनामें करी नीपाव्यां जे श्रंगोपांग तेनां ठाम,व्यवस्था होय. श्रहीं दृष्टांत देखाडे हो. जेम सूत्रधार, काष्ठ

पापाणनी पुतलीनो करनार पूतलीने घडतो जूदां जूदां हाथ पगना आकारना का घखंम ते ज्यां जेवा जोइयें त्यां तेवा मेलीने पूतली करे, ते निर्माणनामकर्म. हवे उपघात नामकर्ममुं स्वरूप कहें उपघात नामकर्मशी जीव हणाय, पीडाय, स्वलना पामे, होणे करी स्वलना पामे? ते कहें (सतणुत्रवयव केण) पोतानां अंग, पडजीनी, चोरदंत, तथा अधिक अंगुलि होय. तथा रसोली प्र ख अधिक अंगें करी तथा उठे अंगें करी जीव इःख पामे, ते उपघातनाम कमेनो उदय जाणवो॥ ४०॥

हवे त्रसादिक दश प्रकृति ं स्वरूप कहें हो.

वि ति चछ पणिदि तस्सा, वायरछं बायराजिङ्मा यूला ॥ निञ्ज निञ्ज पक्षति जुञ्जा, पक्षता लिंद्र करणेहिं ॥ ४ए॥ अर्थ-(बि के०) बे इंड्य, (ति के०) तेंड्य, (च छ के०) चौरिंड्य, (प णिंद के०) पंचेंड्य जीव, ते (तस्ता के०) प्रथम त्रस नामकर्म, बीजुं (बा यर के०) बादरनामकर्मना उदयथी (बायराजिआधूला के०) जीव ादर, स्यूल कहेवाय, सूक्ष्म फीटी वादर थाय, त्रीजुं (निश्चनिश्चप तिज्जुआ के०) पोत पोतानी जेटली पर्याप्त होय तेटली पर्याप्त सहित जीव होय, ते (प जाल दिकरणेहिं के०) अपर्याप्ता लिंध्यें करी तथा करणे री ए वे नेदें करी पर्याप्ता तेमज अपर्याप्ता पण वे चेदें जाणवा॥ इत्यक्तरार्थः॥ ४ए॥

र जे त्रास पामे तापादिकें करी इःखयकी बी पामतो वायायें आवे तथा आ हारादिकने अर्थे स्थानांतरें जाय ते त्रसः जे कमेने उद्यें जीव स्थावर पणुं वांमी वे इंड्यादिक त्रस पणुं पामे, त्रस नाम धरावे, जे कमेना उदयथी ते त्रसनाम कमे. श तथा जे कमेथी जीव, त्रस पणुं मूकी थावरपणुं पामे ते स्थावरनामकमे. बी जो बादर एटले इंड्यें यहवा योग्य, जो पण एकेंड्य प्रथिव्यादिक चारनां शरीर, एक, बे तथा संख्यातां मत्यां थकां पण इंड्यें यहवाय नहीं, केवल असंख्याता शरीरनो पिम इंड्यें यहवाय, ते पण बादर कहेवाय अने जो असंख्याता असंख्याता जेर्दे मले, तो पण जे इंड्यें न यहवाय, ते सूच्याशरीर कहीयें ए बे प्रकृति पण पुजलविपाकीनी हो. तथी आपणुं विपाकशरीर, पुजल देखावे, ते नणी बादरपर्याय ं निमिन, ते बादरनामकमे अने जे सूच्यापर्ययनुं निमिन, ते सूच्यानामकमे. एम बादरनामकमेन सूच्यानामकमे बे साथें कह्यां.

र हवे त्रीजं पर्याप्तिनामकमें कहें हैं जे कर्मना उदयथी जीव, आरंनेली पर्या प्रि पूर्ण कहा विना मरे नहीं, ते पर्याप्तिनामकमें जाण हुं. त्यां एकेंडियने धूरनी चार पर्याप्ति तथा विकलेंडियने अने असित्रया पंचेंडियने नापा होय, ते नणी पांच पर्याप्ति होय, तथा सित्रया पंचेंडियने मन होय, ते नणी हपर्याप्ति उत्पत्तिना प्रथम समयथी आरंने, ते आप आपणी आरंनेली पर्याप्ति पूर्ण कह्या पही मरे, पण अधुरियें न मरे, ते लिब्धपर्याप्तो तथा करण एटले आहार श्रीर अने इंडिय पर्याप्ति पूर्ण नयी थइ, त्यां सुधी तेने करण अपर्याप्तो कही थें अने पूर्ण यया पही करणपर्याप्तो कही थें अथवा जे जे पर्याप्ति पूरी करी नथी ते तेनी अपेक्षायें करण अपर्याप्तो अने जे कमेना उदयधी आरंनेली पर्याप्ति, पूर्ण कह्या विना मरे, ते लिब्धअपर्याप्तो होय. ते अपर्याप्तनाम कमें त्यां पर्याप्ति कहेतां पुजलना उपचयथी थयुं जे पुजनपरिणमनहेतु शक्ति

'ं स्र.

विशेष, ते विषयनेर्दे उ प्रकारेंगे. १ खाहार, १ शरीर, ३ ईह्य, ४ खासो ह्वा स, ५ नाषा, ६ मन. ए उ पर्याप्तिगे. तेमध्ये १ जे शक्तिविशेषें जीव, एजल य ही खल रस जूदा करे, ते खाहारपर्याप्ति. १ जे शक्तिविशेषें रस थयो तेने सात धातुपणे परिणमावे, ते बीजी शरीरपर्याप्ति. १ ते धातुने इव्येंड्यपणे परिण माववानी शक्त, ते त्रीजी इंड्यपर्याप्ति. ४ श्वासो ह्वास वर्गणादल लइ श्वास पणें परिणमावी अवलंबी मूकवानी शक्त, ते पांचमी नाषापर्या पिरणमावी अवलंबी मूकवानी शक्त, ते पांचमी नाषापर्या पिर मनोइव्य लेइ मनपणे परिणमावी अवलंबी मूकवानी शक्त, ते पांचमी नाषापर्या पिर मनोइव्य लेइ मनपणे परिणमावी अवलंबी मूकवानी शक्त, ते वही मनः पर्याप्ति ए उए पर्याप्तिनो खारंन समकालें होय,ते पढी एक समयें खाहार पर्याप्ति पूर्ण करे, ते पढी खेतरमुहूर्ने शरीरपर्याप्ति पूर्ण करे, ते पढी औदारिक शरीरवालो खंतर मुहूर्न मुहूर्तने खांतरें शेष चार पर्याप्ति पूर्ण करे अने वैक्तिय तथा खाहारक शरीर वालो समय समयने खंतरें पूर्ण करे, खागली बे पर्याप्ति सूच्यले, तेथी कालनो फेर थाय जेम व जणी कांतनारी,साथें कांतवा बेठी तेमां जे स्थूल कांते, ते वहें छं कोकडुं पूरुं करे खने सुच्य कांते ते, मोडुं कोकडुं नरे,एम पर्याप्तिने पण नाववी॥४ए॥ हवे प्रत्येक नामकर्म कहें हो.

पत्ते अतणू पत्ते, ठदएणं दंतअि हमाइ थिरं॥ नाजुवरि सिराइ सुहं, सुजगार्ठ सवजणइहो॥ ५०॥

अर्थ-(पत्तेअतणू कें) ४ औदारिक तथा वैक्रिय शरीर, प्रत्येक एटले जीव जीव प्रत्यें जूडं जूडं निरालुं आप आपणी निष्ठानुं शरीर होय. (उदएणं कें) जे कर्म ना उदयथी ते (पत्ते कें) प्रत्येक नामकर्म. एटले साधारण अनंता जीवनुं एक शरीर निगोद्दे. ते मूकीने प्रत्येक शरीरपणुं पामे जे कर्मथी, ते प्रत्येकना मकर्म. तथा प्रत्येक पणुं मूकी साधारणमांहे अवतरे साधारण नाम धरावे, जे कर्मना उदयथी ते साधारणनामकर्म. तथा ५ (दंतअिक्तमाइथिरं कें) दंत अस्य प्रमुख अवयवनो दृढ बंध होय स्थिर निश्चल होय, जे कर्मना उदयथी ते स्थिरनामकर्म. तथा कान, पापण, जीन प्रमुख शरीरावयव, जे कर्मना उदयथी अस्थिर एटले चपल होय, ते अस्थिरनामकर्म. ए वे प्रकृतिनो उदय अविरोधी वे ध्रुवोदय नणी साथें होय.

ः ख ादि वयव नना मेना दयधी न होय,तेने स्पर्शें कोइ प्री हि पामे । नानीने नीचेनां छंग जे पग प्र ख, ते जेने लागे तेथी ते छाप्रीति पामे, ते नना मेथी होय.एबे कृति पण ध्रुवोदयी उदयें अविरोधीनी हे. छ हवे सौनाग्यना में हेते. (सुनगार्रसद्वजणइहो के ) सौनाग्यना में । उदयभी जीव तथाविध उप र । विना तथा स्वजनादि संबंध विना पण सर्वजनने ६ , वहान होय, सुबा नी पेरें. था दौनींग्यना मेना जदयथी जीव, कोइने घणा उप र रे तो पण या स्वजनादि ने पण वसुदेवना पूर्व नवनी जीव, नंदीषेणनी पेरें नि लागे, ते दौनीग्यना मे ॥ ५०॥ हवे खरना में हेते.

> सुसरा महुर सुह ुणी, आइ । स लोख गि वर्ड ॥ जसर्रे जसकितीने, यावरदसगं विव हं॥ ५१॥

थ-(सुसरा के 0) सुस्वरना मेना उदयथी (महुर के 0) धुर तिो, (सुह के०) सुखदायि, (ुणी के०) ध्विन एटले खर होय. (आइा के०) आदेयना मेथी ते पुरुपतुं (सबलोख के०) सर्व लो ने (गिष्र के०) यह वा योग्य एवं ( वर्ष के ० ) वचन होय, ) जसर्वजसि नीर्ड के ० ) यशकीर्तिना मैथी जीवनी यहा, शिक्ति, सर्वे होय ( यावरदसगंविव है के ० ) स्थावरद को ए थ ही विपरीताथी जाएवो ॥ इत्यक्राथीः ॥ ५१ ॥

ण ो शिलानी पेरें जीणो, शिलो, क सालही केतां मेना, तथा यूर्नी पेरें छन सुखदा्यि :खवार स्वर लहीयें, ते सुस्वरना मेना उदयथी जाणवो. तथा खर, चंट, फेतकारी, खुंकडी, मार्झीर, घूडना राब्द्नी पेरें डवो, कागना स्वरनी पेरें अनिष्ट, घोघरो विरूप स्वर पामीयें, ते इःस्वरनामकमेनो उदय, ए नापापयीति पूरी कस्या पती होय, ते नणी वचनप्रतिबंधने ने श्रोत्रेंडियने सुखदायी तथा डःखदायि होय.

ए आदेयनामकमेना उदयथी जीवनुं वचन, गुन शकुनना वचननी पेरें इप्टमा नवा योग्य सुखें समजवा योग्य होय, तेमज अनादेयनामकर्मना उदयथी जी व जो पण माद्यं दितकारक वचन कहे, तो पण तेनुं वचन कोइने सुहाय नहीं अग्रुन ग्रुकननी पेरें अनिष्टपणे माने, सुखर थका पण अपग्रुकननी पेरें सुहा य नहीं. छहीं छादेयथी मान्य वचन होय छने सुस्वरनामकर्मयी सुकंव होय

एटलो नेद जाएवो.

१० जे एकदिशें नाम विस्तरे, ते कीर्तिः अने जे चारे दिशायें शोना बोलाय, ते यश, अथवा दान शीलादि गुणें करी शोना वधे, ते कीर्ति अने पोताना परा में इव्यनाव शत्रुजयादिक गुण विस्तरे, तेने यश कहीयें. ए बे वानां जे कर्मना उद यथी जीव लहे, ते यशःकीर्तिनामकर्म. तथा जेना उदयथी यशःकीर्तिन ल हे, ते अयशःकीर्तिनामकर्मे. ए त्रस दशको कह्यो.

अने ए थकी विपरीत उलटो अर्थ स्थावरादिक दश नामकर्मनो जे नेद, जे नणी त्रस फीटी स्थावर थाय, ते स्थावरनाम कर्म, तेमज बादर पणुं फीटी सक्सपणुं पा मे, एम अनुक्रमें स्थावरदशक जाणवुं. एटले त्रसविंशतिनुं स्वरूप ह्यं. ए री तें नाम कर्मना शडशह तथा त्राणु तथा एकशोने त्रण नेद ं स्वरूप कह्यं ॥५१॥ हवें गोत्र तथा अंतराय एवे कर्म कहेते.

गोर्च डहुच नीस्रं, कुलाल इव सुघड नुंनलाईस्रं ॥ विग्घं दाणे लाने, नोगुवनोगेसु विरिएस्र ॥ ५२॥

अर्थ-(गोश्रं के०) गोत्रकर्म, (इह के०) बे नेदें हे एक (उ के०) उच्चे गेंत्र, बीजुं (नीश्रं के०) नीचैगेंत्र, त्यां (कुलाल इवसुघड के०) कुंनारनी पेरें घडेला नला घडा सरखुं उच्चेगेंत्र, अने (जंनलाईअं के०) कुंनार अग्रुन ंनल एटले मिहरा प्रमुखनो घडो पण घडे, तेना सरखुं नीच्चेगेंत्र, तथा (विग्धं के०) अंतरायकर्म, पांच नेदें एक (दाणे के०) दानांतरायकर्म, (लाने के०) लानां तंरायकर्म, (नोग के०) नोगांतरायकर्म, (जवनोगेसु के०) जपनोगांतरायकर्म, (विरिएअ के०) वीर्यांतरायकर्म ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ५२॥

ते गोत्रकर्मना वे नेद. एक उच्चैगींत्र. बीजुं नीच्चैगींत्र, ते वे दृष्टांतें करी सम जावें वे. विशिष्टजाति क्तियकार्यपादिक, उपादिककुल, उत्तम बलविशिष्टरूप ऐश्वर्य, तपोग्रण, विद्याग्रण सिंहत होय ते उच्चेगींत्रः तथा नि कादिक, लहीन वात्यादिक लहे, ते नीच्चेगींत्र.जेम कुलाल एटले कुंनार ते नला घडा नीपजावे, ते लोकमां कुसुम, चंदन,आखा एटले अक्तर्यं पूजा पामे,मंगलकार्ये कलश स्थापे, तेम उच्चेगींत्रना उद्यथी जीव विशिष्ट जात्यादिक ग्रुणें करी जो पण बुद्धादिकें हीन होय तो पण उत्तम जातिकुलादिक ग्रुणे करी मनायः तथा नीच्चेगींत्रना उद्य यी जीव ज्ञंनला एटले मिद्रानुं ताम जे घडो ते जोपण मिद्रान्हीन होय तो पण

मान न पामे, तेमज जो बुद्धादि ग्रणवंत होय. तो पण नीचकुल हो हो ते जीव पांति न पामे ए शैलें गोत्र में कह्युं

हवे आतमुं अंतराय में कहे हे, एना पांच नेदहे जे कमेना उदयथी जीव, युद्द्य हते, युद्द पात्र मसे यके दान देवाने वांहतो पण दान आपी न शके, ते पहेलुं दानांतरायकमे. जे कमेने वशें देवावालो हतां इष्ट वस्तु वांहतो याचे तथा व्यापारें माद्यो थको पण इष्ट वस्तु न पामे,तेलुं नाम बीखं लानांतरायकमें तथा जे एक वेला नोगवाय, ते फूल आहारादिक नोग इच्य हते नोगववा वांहतो, विर ति विना नोगवी न शके,ते त्रीखं नोगांतरायकमें. तथा जे घणा वखत नोगवाय,ते उपनोग, एवा स्त्री तथा आनरणादिकना उपनोग वांहतो, आनरणादिक हते ढुंते जे कमेना उदयथी पहेरी नोगवी न शके,ते चोधुं उपनोगांतरायकमें. तथा जे कमेना उदयथी पिष्पा कियाने समर्थ थको पण जीव,ते किया करी न शके, ते बालवीयां तरायकमें तथा जे सम्यक्टि साधु मोक्हार्थें किया करवाने हींसे, एटसे प्रवर्ते, तो पण करी न शके,ते पंक्तिवीर्यातरायकमें तथा जेणे करी देशविरतिपणुं वांहतो पाली न शके, ते बालपंक्तिवीर्यातरायकमें. ए पांचमुं वीर्यातरायकमें जाणबं॥ ५२॥

१ २ ३	मोहनीय कर्म-	m 20 25 10 9 11	अवधिदर्शनावरणीयः केवलदर्शनावरणीयः निद्राः निद्रानिद्राः प्रचलाः प्रचलामचलाः	U Q O P P P P	अनंतानुवंधीमानः अप्रत्याख्यानमानः प्रत्याख्यानमानः संज्यलनमानः अनंतानुवंधीमायाः अप्रत्याख्यानमायाः
,	शंतराय कर्मः इानावरणीयनीप्रण्यः मितिज्ञानावरणीयः श्रुतज्ञानावरणीयः अवधिज्ञानावरणीयः मनःपर्यवज्ञानावरणीयः केवलज्ञानावरणीयः द्रीनावरणीयः १ चक्षुदर्शनावरणीयः २ अचक्षुदर्शनावरणीयः	7 A B & A A A 3 5 6 9	शातावेदनीयः अज्ञातावेदनीयः मोह्नीयनीप्र । १ ए सम्यक्तमोहनीयः मिश्रमोहनीयः मिश्रमोहनीयः भिश्यात्वमोहनीयः अनंतातुवंधक्रोध अमत्याख्यान क्रोधः मत्याख्यान क्रोधः संज्वलन क्रोधः	0 U of 0 or 0' 0' 0' 0'	अनंतानुवंधी लोभः अमत्याख्यान लोभः मत्याख्यान लोभः संज्वलन लोभ हास्यनोकपायः रतिनोकपायः अरिननोकपायः भगनोकपायः भगनोकपायः नुगुप्यानोकपायः

42

२६	पुरुषवेदनोकषाय-	२८	आहा० का० बंधनः	६४	गुरुस्पर्शनामकर्म्-
२७	स्रीवेदनोकपाय-	२९	आ० तै० का० बंधन.	६५	लघुस्पर्शनामकर्मू.
१ट	नपुंसकवेदनोकषाय.	30	तैजसतैजस बंधन.	६६	शीतस्पर्शनामकर्मः
ย	आयुःकर्मनी प्रण ध	३१	तिजसकार्मण बंधनः	६७	उष्णस्पर्शनामकर्मः
१	1 _	37	कार्मणकार्मण बंधनः	80	- 111 11 11 11 11
	देवायु-	३३	औदारिकसंघातन.	66	रूक्षस्पर्शनामकर्म-
S 25	मनुष्यायु.	३४	वैकियसंघातन.	90	न्रकानुपूर्वीः
8	तिर्यगायुः	39	आहारकसंघातन.	७१	तियगानुपूर्वीः
it	नरकायु.	३६	तैजससंघातननाम	७२	म् जुष्या जुपूर्वी
ार पर	नामकमेनी प्रण १ण३	३७	कार्मणसंघातननाम.	७३	नेखानु पूर्वी. देवानु पूर्वी.
1 8	नरकगति नामकर्मः	30	वज्रऋषभनाराचसंघयण.	ક્ર	४ गाउँ रूपान श्रुभविहायोगतिन
२	तिर्यग्गति नामकर्मः	३९	ऋषभनाराचसंघयण.	69	अशुभविहायोग् <b>ति</b> -
3	मनुष्यगति नामकर्मः	धुः	नाराचसंघयण.	७६	। पराघातनामकर्मः
ક	देवगति नामकर्म.	ध्र	अर्द्धनाराचसंघयण.	હહ	
9	एकेद्रिय जातिनाम.	धर	कीलिकासंहनन-	95	उच्छ्वासनामकर्मः   आतपनामकर्मः
६	वंद्रिय जातिनाम.	ध ३	छेवहुसंहनन.	७९	उपायनगानवानः उद्योतनामकर्मः
9	तेंद्रिय जातिनाम.	នន	समचतुरस्रसंस्थान-	C0	अगुरुलघुनामकर्मः
٤	चतुरिंद्रिय जातिनाम.	છલ	न्यग्रोधसंस्थानः	८१	तीर्थं करनामकर्म-
٩	पचाद्रय जातिनाम-	ध्रह	सादिसंस्थान.	53	निर्माणनामकर्म.
१०	औदारिक शरीरनाम-	ઇક	वामनसंस्थान-	८३	उपघातनामकर्मः
88	वैकिय शरीरनाम.	80	कुब्जसंस्थान.	<β	त्रसनामकर्म-
83	आहारकशरीरनाम.	કલ	हुंडसंस्थान-	ولع	वाद्रनामकर्म
१ १ १		५०	कु <b>ष्णवर्णनाम</b>	८६	पर्याप्तनामकर्मू-
१५	कार्मणकारीरनामः	५१	नीलवर्णनाम.	C0	प्रत्येकनामकर्मः
१६		५२	लोहितवर्णनाम.	5	स्थिरनामकर्म.
१७	भारतज्यापातः आहार्कअंगोपांगः	५३	हारिद्रवर्णनाम.	८९	थुभनामकर्म.
१८	औदारिकऔदारिक र्व०	५४	श्वेतवर्णनाम.	९०	सौभाग्यनामकर्म-
१९	आदारिक तैजूसवंधनः	44	स्रभगंध.	९ १	स्वरनामकर्म-
२०	अद्गिरिक कार्यणनंपन	५६	दुरभिगंध	९२	आदेयनामकर्म-
25	अद्यारिकतंज्य कार्याण्य	५७	तिक्तरस.	९ ३	यशःकीर्त्तिनामकर्म-
२२	वित्रियवित्रयवंधनः	५८	कडुकरस-	८४	स्थावरनामकर्म.
53	वाक्रयतजसर्वधन.	५९	कपायरसनामकर्म.	९५	स्रक्ष्मनामकर्म.
1 53	विकियकार्मणबंधन	६०	आम्लर्सनामकर्म.	९६	अपर्याप्तनामकर्म-
20	विकियनैजसकार्मणवंदनः	६१	मधुररसनामकर्म.	९७	साधारणनामकर्म.
१ ५६	' । <sup>आहारक आ० वंधन</sup>	६२	कर्कवास्पर्धानामकर्म.	९८	अस्थिरनामकर्मः
1 -	आहार तर वंधन.	६३	मृदुस्पर्भ नामकर्म.	९९	
		2,3==			अशुभनामकर्म.

300 200 200 200 200 200 200	दुःस् अना	ानामक वरनाम देयनाम् शःअकी	र्म-	कर्मः	१ ड २ नी <b>५ छ</b>	ोत्र मेर्न चैगोंत्र. चैगोंत्र. तरायनी नांतरायः	<b>७</b> ५	२ भोग ४ उप	मांतरायः गांतरायः भोगातरायः गांतरायः ५८कर्मम०	जाणवी.
ः मेना	म.	ज्ञा.	द.	वेः	ारे	आयु.	ना .	गो	अं 0	स यः
बंधप्रव	हति.	ų	ש	হ	२ ६	В	६ छ	इ	ų	१२०
चद्य.		บุ	Ų	হ	হ ড	В	६७	घ	પ	<b>१</b> २ २
<b>चदीर</b> '	णा.	ų	Ų	য়	२ ७	B	६ ७	ą	ų	<b>१</b>
सत्ता.		Ų	Ų	হ	२ ७	В	<u> </u>	য়	ų	185

सिरि हरिश्रसमं एशं, जह पिंडकूलेण तेण रायाई॥ नकुणइ दाणाईशं, एवं विग्वेण जीवोविं॥ ५३॥

थे— (सिरिहरिश्च के॰) जिद्यानुं घर एटले श्रीगृह ते नंमार, तेनो धि ारी ते पण श्रीगृही एटले नंमारी (समंएश्चं के॰) ते सरखुं, ए श्चंतराय मे खुंछे. (जह के॰) जेम ते नंमारी (पिडकूलेण के॰) प्रतिकूल थके, (तेणरायाई के॰) ते राजादि दानादिक करवा वांछे, पण छते योगें (नकुणइ दाणाईश्चं के॰) दान लान नोगादिक न री शके (एवंविग्घेणजीवोवि के॰) ए श्चंतरायकमें करी जीवरूप राजा पण जाणवो ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ५३॥

नंमारी नुं दी धुं, जेम राजा दी ये, लाने, नोगवे, तेम अंतरायक मेनो जेवो क् योपशम तेवो जीव दी ये, लाने, नोगवे, जेम ते नंमारी, ढते माले देवराववा न हिंमे, तालुं न खोले तो राजा मालनो धणी छे तो पण दइ, लेइ, नोगवी न शके. एम दिशब्द यकी मंत्रीश्वर, श्रेष्ठी, सार्थवाहादिक पण नंमारी यें रूं धि वस्तु नुं दान, लान, नोग न पामे, तेम जीवरूप राजा पण अंतरायक मेरूप नंमारी ने वश् यको दान, लान, नोग, उपनोग, वीर्य, वांछतो पण दइ, लइ, नोगवी, उप नोगवी तथा वीर्यवल फोरवी न शकें, जेवारें तेने क्योपशमें तथा क्यें करी तथा आत्माने आयत वस्तु होय, तेवारें ते यथे हायें देइ, लेइ, नोगवे, बल वीर्य फोरवे. एटले अंतरायक मेनी पांच प्रकृति कही. ए रीतें आहे कमेनी मूल उत्तर एक शोने आहावन प्रकृतिनां लक्कण स्वरूप कह्यां तेनो यंत्र पण लख्यो॥ ए३॥ हवे ए आत कमें बांधवाना ख्यहेतु तो मिण्याल, अविरित, षाय अने योग.
ए चार हेः ते तो आगल चोषा कमें यंपने विषे सिव र पणे हेज़े, परंतु इ हां स्थूल हेतु हेहें त्यां प्रथ ज्ञानावणीय दर्जनावरणीयना हे हेहें.

> पिंक्णि अत्तर्ण निन्हव, उवघाय पर्वस अंतराएणं ॥ अज्ञासायण याए, आवरण डगं जिन्नं जयई॥ ५४॥

अर्थ-(पितणी त्रण के०) ग्रुवीदिक तुं प्रत्यनी एट खे अनि आचरणनो करनार, (निन्हव के०) उलवि करी, (जवघाय के०) जपघात एट खे हणवे विनाशवे करी, (पर्जस के०) प्रदेष राखवे री, (अंतराएणं के०) अंतराय रवे करी, (आ सायणयाए के०) ज्ञानदर्शननी अत्यंत आशातना करवे करी, ( वरण के०) ्। नावरण ने दर्शनावरण ए बे आवरणने (जिर्ज के०) जीव, (जयई के०) जपाँ॥ इत्यक्तरार्थः॥ ५४॥

र मतिश्रुत प्रमुख पांचकाननी तथा कानवंतनी तथा ।नोप रण पुस्त ।दि नी प्रत्यनीकता एटले अनिष्टपणुं, प्रतिकूलपणुं करबुं, जेम ज्ञान, ज्ञानवंतने मातुं याय तेम करे, १ तथा निन्हव एटलें जेनी पासेंथी जल्यो होय ते ग्रुरुने उलवतां, तथा जाएयाने अजाएयुं कहेतां, ३ तथा ज्ञानवंत तथा ज्ञानोपकरणनो उपघात एटले अभिशस्त्रादिकें करी विनाश करतां, ध तथा ज्ञानवंत उपर तथा ज्ञानोपकरण उपर प्रदेष करतां, अंतरंग अरुचि, मत्सर धरतां, ए नणताने अंतराय एटले वस्त्र, वित्ति, निषेधतां, कार्यातरें जोडतां, वार्तातरें लगावतां, पवनविश्वेद करतां, ६ झा नवंतनी अत्याशातना करतां, ए हीनजाति हे. इत्यादिक ममे हेदवे करी, आल देवे क री, प्राणांत कर देवे करी तथा आचार्य उपाध्यायने अविनयें मत्सर करतां, अकालें सङ्जाय करतां, योगोपधान हीन नएतां, अस ायें स ाय करतां, ज्ञानोपकर ण पासें वते त्यां लघुनीति, वडीनीति, मैश्रुन करतां, पग लगाडतां, श्रुंक लगाड तां, ज्ञानइच्य विनाशतां, विणसतो चवेखतां, ज्ञानावरणकमे बंधायः तेम दर्शनावर ण पण दर्शनप्रत्यनीकतादिक दोषें करी बंधाय. पण एट छुं विशेष जे दरीन एट छे चक्नु, अचक्नुप्रमुखदरीनी साधु, तेना पांचे इंडिय तेना उपर विरूच चिंतवतां, तथा सम्मति तत्वार्थ नयचक्रवालादिक द्दीनप्रनावक शा , तेनां पुस्तक ते चपर प्रत्यनीकतादि समाचरतां थकां, दरीनावरणकमे बंधाय. एम आवरण वंध हेतु वेना कह्या ॥ ५४ ॥

हवे शा । तथा अशातावेदनीय बंधहे कहें है. गुरुनति खंति करुणा, वय जोग कसाय विजय दाण जुउ ॥ दुढ धम्माई ख्र इ, साय सायं विव यउ ॥ ५५॥

थ-( रुनति के०) ग्रुरुनिक्षयें री, (खंति के०) क्रायें री, ( रुणा के०) रुणानावें री, (वय के०) व्रत पालतां (जोग के०) संय योगें री, ( सा विज के०) षाय ोंपतां, (दाणजुर्ज के०) दानशीलादिक ग्रुणें री हि हो (दढधम १६ के०) दृढधम्भीं, प्रियधम्भीं इत्यादि न रिणे री, ( इके०) उपाक्षें, (सायं के०) शातावेदनीयने ने (असायंविव यर्ज के०) अशातावेदनीय एथी विपरीत पणे ंघे ।। इत्यक्तरार्थः ॥५५॥

र गुरु एट खे पोतानां ाता, पिता, ध ि ार्थ, तेनी निक्त एट खे सेवा रतां, २ क् ा एटले स र्थाइ बते पारका पराधने सहन करतां, ३ परजीवने इखीया देखी तेना ःख टालवानी वांढा धरतां, ४ पांच महाव्रत तथा अणुव्रत निर्दूषण पालतां, ५ योग एटले दश्विध च वाल समाचारीरूप संयमयोग साचवतां, ६ ोध, ान, ाया ने लोचरूप कषाय तथा हास्यादि नो षाय, तेनो विजय एटले ींपवे करी, उदय खाव्याने निःफल करतां, ७ सुपा दान तथा खनय दान देतां, सर्व जीवने उप ार रतां, दित चिंतवतां, ए धर्मने विषे स्थिरपरिणाम राखतां, ए टले रणांत क आवे यके पण धर्मने न मू तां, एवो धर्मराग्स हित जीव तथा आदि द्थकी बाल, वृद्ध, ग्लानादिकतुं वैयावच रतो, धर्मवंतने धर्म कर्त्तव्य मां वर्ततां सहाय देतो, चैत्यनिक रुडी पेरें करतो, सरागसंयमें देशविरित पालतो, तथा अकामनिर्क्तरा, बालतप, शौच, सत्यादिक ग्रुनपरिणामें वर्ततो जीव, शाता वेदनीय कमे उपाें, बांधे. ए शातावेदनीयना बंधहेतु कह्याः तेथी विपरीतें चाल तो अशातावेदनीय बांधे, एटखे गुरुने विराधतो, अक्यायें वर्ततो, निःकरुणायें प्र वर्त्ततो, व्रत लइ विराधतो, समाचारी लोपतो, घणो कपाय वदीरतो, रूपणताये ध मेने अस्थिरपणे चैत्यादिकनी आज्ञातनायें तथा ज्ञील लोपतां, हाथी, घोडा, बलद, उंट, प्र खने दमतां, नाथतां, श्रंकतां, पीडा देतां, परने शोक, संताप उप जावतां, अविरति, अहित परिणामें जीव, अशातावेदनीय बांधे ॥ एए ॥ हवे मिण्यालमोहनीयना बंध हेतु कहेते.

मगग देसणामगग, नासणा देव देव हरणेहिं॥ दंसणमोहं जिण मुणि, चेइअ संघाइ पडिणीडे॥ एइ॥

अर्थ- ( च ग्गदेसणा के ० ) उन गिनी देशनायें, ( ग्गना णा के ० ) ज्ञानादिक सन्मारीनो विनाश रतां, (देवदवहरऐहिं के०) देव इव्य ह रण करतो जीव, (दंसणमोहं केण) दर्शनमोहनीयकमे बांधे. वली (जिण के । तीर्थ र, ( णि के ।) साधु, (चेइश्र के ०) चैत्य, ते जिनप्रतिमा, (संघाइ के 0) संघ प्रमुखना (पिंडणीर्र के 0) प्रत्यनीकपणे दर्शनमोहनीय में बांधे 50॥ १ उन्मार्ग एटले संसारहे जे हिंसादिक आश्रव तेने मोक्तहे परो देखाड तां, एकांतनयें एकली क्रिया अथवा एकला ज्ञानथी मोक्त एमज विनय दयादि एकांतें उपदेशतां, १ तथा भी एटखे विशि क्योपशमजन्य विशि ग्रणकान, द्रीन, चारित्र, स दायरूप मोक्त्प्राप्तिहे स्वरूप फल ६, तेने नसाडवे री एट ले सन्मार्गे रह्या जे परजीव, तेने ए ांतनयनी देशनायें री ार्गथकी चूर वतो, र देवड्व्य, ज्ञान ड्व्यादि त्यां देशशरने उपयोगी एटले । वे, एवं । , पा षाण मृत्तिकादिक तथा तिः मित्त हिरएय, धनादिक तथा देरा रनी नूमिप्र ख तेने हरतो तथा देवइव्यें री घर कार्य रतो, व्यापार रतो, परने देवइव्य विणाशतो देखी, उती शक्तियें उवेखी मू तो थको पण जीव, हीं दर्शनमोह नीय कहेतां, मिण्यालमोहनीयकमे बांधे. जे नणी एटलां कार्य मिण्यालने उद यें होय. त्यां बंध, मिण्यालनोज होयः वली बीजा पण हेतु कहेते. (जिन के०) केवली तथा तीर्थकरनी प्रत्यनीकता एटखे अवर्णवाद बोर्खे, जे ए सर्वज्ञहे तो अग्रुचिरस स्वाद लहे? तथा समवसरणाइक ऋदि नोगवे हो तो वीतराग शाना? इत्यादिक निंदा करतो, तथा सुनि एटले सुसाधु, चैत्य एटले जिनप्रतिमा देहरादि क तथा संघ जे साधु, साधवी, श्रावक छने श्राविकानो स दाय. छादि शब्दथ की सिद्ध श्रुतादिक, तेनी प्रत्यनीकता प्रतिकूलपणुं आचरतां, प्रदेष धरतां, अव र्णवाद बोलतां, एमना गुणवर्णन अण करतो, जिनप्रवचननुं मातुं देखाडतो, उ मूह वधारतो, अयश करतो, घणा जीवना बोधबीज हुणे, तेणे करी मिध्याल मोहनीय बांधे, छने पूर्वें वांध्युं होय तेने निकाचित करे ॥ ए६ ॥ हवे चारित्र मोहनीयना बंधहेतु कहेते.

> डिवहंपि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विव समणो ॥ वंधइ निरयाछ महा, रंज परिग्गह रहे रहो ॥ ५७॥

श्रर्थ-( इविहंपिचरणमोहं के० ) पहेलुं कपायमोहनीय, ने बीजुं नोकपायमो

हनीय, ए बे प्रकारनुं चारि मोहनीय बांधे, ते (कसाय के 0) षाय (हासाइ के 0) हास्यादि तथा (विसयविवस णो के०) विषयने विषे तत्पर लोलुपी परवश चित्त थ ों धि अने जे (बंधइनिरयान के 0) नर ायु बांधे, ते जीव, (महारंन के 0) । हारंनें वर्ततो, (परिग्गहरर्ड के०) परीयह ां रातो थ ो (रुद्दो के०) रोइध्या ने वर्ततो, एटले हाकषायवंत, जीवघातनो रनार, परिणा । होय ॥ ५७॥ १ ए कषायमोहनीय, बीखं नो षाय । दिनीय, ए वे नेदें चारि । दिनीय म बांधे ते हि ने पायने छद्यें जीव वर्ने, ते पायनी चो डी बांधे, जे नंतानुबधीया तथादि ने जद्यें सघला षाय बांधे, प्रत्याख्यानीयाने जद्यें बार कषाय बांधे, प्रत्याख्यानीयाने चद्यें प्रत्याख्यानीया चार वाय, तथा संज्व लना चार षाय, ए रीतें ाठ षाय बांधे. संज्वलना षायने उदयें संज्वलना चार षाय बांधे तथा हास्य रतो, नांम चे। रतो तथा बहु बोलतो थको जीव, हास्य तिहनीयकर्म बांधे १ देश देखवाने रसें, विचित्र तीडारसें मुखरीपणे एट खे लबाडीप एो, । ए, मोहन करतो, परने कुतूहल देखाडतो जीव,रितमोह नीयकर्म बांधे. ३ राजवेध करतो, नवो राजा स्थापतो, परस्परें संजेडा लगाडतो, परने रति, च ाट चपजावतो, न में राववाने चत्साह् वधारतो, ग्रुन ार्थे उत्साह नांजतो, निष्कारण आर्त्तध्यानें वर्ततो जीव, अरितमोहनीयकम बांधे ४ परजीवने त्रास प ाडतो, निर्देय परणामी श्रको, नयमोहनीयकर्म बां धे. ५ परने शोक, चिंता, संताप, छपजावतो, तपावतो श्रको जीव, शोकमोहनी यकमी बांधे. ६ धमीवंतसाधुजननी निंदा रतो, तेनां मलमिलन गात्र देखी सूग करतो जीव, जुगुप्सामोहनीयकमे बांधे. १ शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्शी, ए अनुकूल विषयने विषे अत्यंत आसक्त थको परनी अदेखाइ, मत्सर धरतो, मा या मृषा सेवतो, कुटिल परिणामें परदारा सेवतो जीव, स्त्रीवेद वांधे. १ सर्ल प णे स्वदारा संतोपें ईष्यरिहित मंदकषायें जीव, पुरुषवेद बांधे. ३ तीत्रकषायें द शैनी शील नंजावतो, तीव्रविषयी, पशुघातक, मिथ्यात्वी जीव, नपुंस वेद् वांधे चारित्रियानो दोष देखाडतो, असाधुना ग्रण महण करतो, तो जीव, चारित्रमोहनीयकमे बांधे.

हवे आंधुःकमेना वंधहेतु कहेते. महाआरंन चक्रवर्त्ति प्रमुखनी क्रि नोगव तो घणी मूर्ज्ञी परियह सहित, अविरितपरिणामी, अनंतानुबंधिया कषायने च दयें पंचेंड्यिनी हत्या निःशंकपणे करतो, मद्य, मांसादि साते कुव्यसन सेव हो, कतन्नतापणुं, विश्वासहोह, मित्रहोहादिक मोहोटां पाप आचरतो, उत्सूः नांख तो, मिण्यात्वनो महिमा वधारतो, अ नपरिणामें क ादिक त्रण जेश्यायें वर्ततो जीव, अग्रुन परिणामें करी नारकीनुं आयु बांधे ॥ ५७॥ हवे तिर्थचना आयुर्बंध हेतु कहेते.

तिरिच्छा ने गूढि इंचर्ड, सढो ससद्धो तहा मणुरसा ।। पर्याप्य तणु कसा ने, दाणरुई मिष्मगुणो च्य ॥ ५७॥

श्रथ-(तिरिश्रार्त के०) तिर्धवनुं श्रायु बांधे. (गूढिहश्रद्ध के०) गूढ हृद्य नो धणी, (सढो के०) मूर्व, धूर्न, (ससझो के०) मिण्यात्वादिक शृष्यसित, (तहा के०) तेमज हवे (मणुस्सार्त के०) मनुष्यनुं श्रायु बांधे, ते (पयईय के०) प्रकृति एटले स्वनावें (तणुकसार्त के०) श्रष्ट्प कषायवंत होय. (दाणुरु के०) दान देवाने रुचिवंत होय. (मिश्रमगुणोश्र के०) मध्य गुणवंत होय ॥६०॥

गूढ हृदय एटले जेना अनिप्रायनी कोइने खबर न पहे, उदायिन राजाने मा रवानी पेरें गूढानिप्राय होय, तथा शव एटले मायावी, कपटी कहे तेम करे तथा वाणीयें मधुर, परिणामें दारुण होय, जूडं उवट प्रकाशे, आर्नध्यानी, ा लोकें मान पूजाहेतुयें तप करतो, सशब्य एटले आपणी पूजा महत्व न्यून थइ जशे? एवा नयें करी जेवां पापकमें आच्छां होय, तेवां पूर्ण आलोचे नहीं, ह्य रा

खे, इत्यादि माया अज्ञानना तीव्र मोहादिकें जीव, तीर्यगायु बांधे.

तेमज मनुष्यायु बांधवाना पण विशेष हेतु कहेते. त्यां देवता तथा नारकी तो सम्यक्ल कर्तव्यतायें ग्रुजनावें करी मनुष्यनुं आयु बांधे ते जणी जवप्रत्ययें तेहने देवायु न बंधाय तथा मनुष्य, तिर्थच, जेह प्रकृति कहेतां सहेजें उपाय क खा विना मिथ्यालने मंदरसोद्यें करी कषायनो पण मंदरसोद्य होया तथी तणु एटले प्रवित्त एवा कपाय, जेम धान्य न मलवाथी प्रवित्तता थाय, एवो प्रकृतियें जड़क धूलिरेखा समान कपायें वर्ततो,सहेजें सुपात्र,कुपात्र,परीक्षा कहा विना विशेष यशःकीर्त्तं,प्रमुख आण वांत्रतो पण खनावें दान देवानी रुचि तीत्र होय जेने एवो, क्मा, आर्डिव, माईव, सख, शौचादिक, मध्यम गुणें वर्ततो, ए टले अनागाढमिथ्याली, गुणहीन सम्यक्ष्टिए उत्कष्टगुणना ते नणी अनागा है. मिथ्याली, मध्यम गुणकुं संवोध्य एटले बूफव्यो, देव, गुरुपूजा प्रीय कापोतलेखा परिणामें जीव, मनुष्यायु वांधे॥ ५०॥

## हवें देवायुना बंधहेतु हेते.

अविरय माइ सुरार्ड, बालतवोऽकाम नि रो यइ ॥ सरलो अगार विद्धो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥ ५ए॥

अथ-(अविरय ाइसुरार्च के०) अविरित्तसम्यक् चादि देवायु बांधे, (बा सतवोऽका नि रो यइ के०) बालतपें री था, ह्मचर्यें री अ। नि रा चपा , अने (सरलो के०) निष् पटी, (अगारिव हो के०) गारवरिह था। (सहनामं के०) नना मेनी प्रकृतिर्च विंधे, तथा (हा सुहं के०) न्य या पट गारवसिह न ना मेनी प्रकृतिर्च बांधे॥ इत्यक्तरार्थः॥ ५ए॥

श्रविरित्तसम्यक्टिष्टि, नुप्य, तिर्येच, देवायु बांधे, घोतना परिणामें सुमि संयोगें, धमेरुचिपणे, देशविरित्युणे, सरागसंयमें देवायु बांधे. बालतप एटले इःखगर्नित, मोहगर्नित वैरागें री ष्कर कष्ट पंचान्निसाधन रसपरित्यागादिक श्रमेक मिण्यात्वझानें तप रतो, सिनदान उट ट एटले अत्यंत आकरो, रोष गारवें तप करतो, श्रसुरादि योग्य ायु बांधे. तथा श्रकामिन रायें, श्रझान पणे नूख, तृपा, टाढ, ताप, रोगादिक सहेतो, स्त्री श्रण मिलते शील धारण रतो, विषयसंपत्तिने श्रनावें विषय श्रण सेवतो. इत्यादिक श्रकामि रायें तथा बालमरण एटले हिंएक तत्त्रायोग्य श्रनपरिणामें वर्नतो, रह्म त्रिविराधनायें व्यंतरादि योग्य श्रायु बांधे, तथा श्राचार्यप्रत्यनीकतायें कित्वि षिकायु बांधे, तथा सुग्धजन मिच्यात्वीना ग्रण प्रशंसतो, मिहमा वधारतो, पर माधामीनुं श्रायु बांधे. एम श्रायुः मैना बंधहेतु ह्या. तथा श्रकमैनूमिना म तुष्यने श्रणुत्रत, महात्रत, बालतप, श्रा मिनक्रीरादिक देवायुना बंधहेतु विशेष कोइ नथी, तथा हीं केटलाए मिच्यात्वीन तेथी तेने देवायु केम संनवे ? परंतु तेने शिलवतत्वपणे देवायुनो बंधहे हेवो. एम तलार्थटीकामांहे होने.

हवे नामकर्मना बंधहें हेठे. सुरगत्यादि ने त्रीश ननामकर्मप्रकृतिना वंधहे तु होय, ते हेठे. सरल एटले पटरहित जेवो हृदयमांहे होय तेवो छाचार वोले, कोइने पण कूडां तोल, मापें करी ठगे नहीं, परवंचनबुदिरहित, क्रिशारव, रसगार व,शातागारव रहित, पापनीह, परोपकारी, सर्वजनित्रय, क्रमादिग्रणयुक्त, एवो पुरुष, शुननामकर्मनी प्रकृति त्रीश बांधे तथा अप्रमन्तपणे चारित्र पालतो, आहार दिक बांधे, अरिहंतादिक वीश स्थानक आराधतो, ग्रणवंतन्तं वैयावच करतो, जिननामक

में बांधे. तथा ए थकी विपरीत एट से घणों पटी, कूंडां तोलां, ान, ाप रतो, परने वंचतो, परहोही, हिंसादि पांच आश्रवें रातो, चैत्यादि नो विराध , व्रत लई विराधतो, त्रण गारवें ातो, हीनाचारी, एवो जीव, नर गत्यादि चो शिर ननामकमेनी प्रकृति बांधे. ए डश्चा प्रकृतिना बंधहेतु ह्या ॥ ५ए॥ हवे चचैगों मेना बंधहे हेते.

गुणपेही मय रहिछ, अष्ट्रयणष्ट्रावणा रुई नि ।। पकुणइ जिणाइ नतो, चं निअं ईअरहाछ ॥ ६०॥

श्रथ—(ग्रणपेही कें ०) ग्रणप्रेही पार । णनो देखनार, ( यरहिं के ०) श्रात मद रहित, (श्रष्ट्रयणश्रावणारुईनि के ०) नणवा नणाववा उपर रुचि नि निरंतर होय. (पक्रणइ के ०) प्रकर्षे री करे, (जिणाइननो के ०) जिन रिहं तादिकनो नक, (उन्नं के ०) उन्नेगीं उपार्जे ने (निश्चं इश्वरहार्ड के ०) ते थ की इतर श्रन्यया विपरीत ण देषमद्वंत होय, ते नी नैगीं त्र बांधे ॥ इ क्रायः॥ ६ ०॥

कान, दर्शन, चारित्रादिक ए ज्यां जेटलो जाएो, त्यां तेटलो प्रकारो, अवग्रण देखीने निंदे नहीं, ते ग्रणप्रेक्षी हीयें. १ जातिमद, १ कुल द, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ श्रुतमद, ६ ऐश्वर्यमद, ७ लानमद, ए तपोमद, ए ाठ मद रहित संपदा उतां मद न होय जेने एवो जीव, अध्ययन एटले सूत्रसिक्षांत सूत्रयी, थे थी, नएवा नएवववानी रुचिठे जेने, निरदंकार यको सुबुद्धिने शा हितबुद्धियें करी अर्थ समजावे, देतुदृष्टांत देखाडी, सुमित पमाडे, कुमित टाले. इत्यादिक परहित करतो, नित्य एटले सदा काल प एइ एटले प्रकंष करे. एटले वाने करी जीव, उच्चेगींत्रकमे बांधे, जिन एटले तीर्थकर देव, आदिशब्द यकी सिद्ध तथा प्रवचन सं घादिकनो अंतरंगप्रतिबंधवंत एवो जीव, उच्चेगींत्र च जाति, लादि गम्य मे बांधे. अने एथकी विपरीतग्रेणवालो एटले मत्सरी, जात्यादि ाठ मद सहित अदंकारें करी कोइने नएो नएववे नहीं, जिनसिद्ध प्रवचन चैत्यादि नो न एवो जीव, दीनजात्यादिगम्य नीच गोत्रकमे बांधे॥ ६०॥

हवे अंतरायकमेना बंधहेतु कहेते.

जिणपूष्ण विग्घकरों, हिंसाइ परायणों ऽजयइ विग्घं॥ इय कम्मविवागोष्णं, लिहिओं देविंदसूरीहिं॥ ६१॥ इति कर्मविपाकनामा प्रथमः कर्म थः॥ १॥ थ-(जिणपूत्रा के०) जिनपूजादि नो (विग्ध रो के०) वि रनार, पू जा निपेधतो, (हिंसाइपरायणो के०) हिंसादि आश्रवने विषे तत्पर थको, (अजयइविग्धं के०) अंतरायकमे उपा ें. (इय म विवागोअं के०) एणी पेरें ध्मेविपा एवे नामें ग्रंथ, ते (लिहिओदेविंदसूरीहिं के०) पागहाधिराज श्री देवेंइसूरीश्वरें लख्यो ॥ इ क्र्रार्थः ॥ ६१॥

श्रीजिन प्रति । ती पूजानो निषेधनार, पूजायें पुष्प, फल, जलादि ना अने जिना घा थाय, ते जणी जिनारंजी, ते गृहस्थने पण हेयहे. जेम कोइए ूर्व, टुकोषध पान साजा नुष्यनी पेरें दिन पण निषेधे, तेनी शातानो श्रंत राय रे, ते कु ति जीव, नारंजी साधुनी पेरें जीनारंजरोगक्य रिश्रीपधप्रा य पूजादि प्रति रंज निपेधतो, परना हित ंवि रतो, श्रंतराय मे बांधे था पोतानी तियें री जिन त विपरीताथ प्रह्मपतो, नंत संसार वधारे, तेवारें श्रनंत जीवनो घातक थाय तथा बीजाने पण उन गि प्रवर्णायी श्रनंत जीवघात करे, तेथी श्रनुबंधहिंसावंत तथा श्रनुबंध सृषाजाषी तीर्थेकर श्रदत्तमाग्प्रवर्ज

इत्यादिक नुबंधें छढार पापस्यान नो सेवनार जीव, छंतरायकमे बां धे. तथा साधुने दानलाजादिकनो छंतराय रतो, ोक्सार्ग हणतो, एवो जीव, पण ते ज जाणवो. एणी पेरें कमेप्रकृति, पंचसंग्रहादिक प्राचीनकमेग्रंथ, सविस्तर जोइ ग्ध दि, संक्षेपरुचि जीवने स जाववा सारु तथा छात्माने पण परिहतकरणरूप रुणाजन्यिन रा छुँथे घोडे छक्तरें री, जेम विशेषक्कान पा मे, ते लख्यो पुस्तकें चढाव्यो, ते कहेत्रे. पर रुगहाधिराज शिखलाचारिनवार क, तपाबिरुद्धार , जद्दारक श्री. १००० श्रीजगचंड्सूरीश्वर, पद्टप्रजावक, श्रीदे वेंड्सूरिश्वरें तपगह्यनायकें लख्यो, पुस्तकें चढाव्यो.

#### ॥ अय प्रशस्तिः॥

इति कमेव्ययोन्मायिकमेग्रंथार्थसंविदे ॥ गुरूपास्तिरताः संतो, नवंतु नविन्द्रष्ट हाः ॥ १ ॥ श्राव्याविद्याविद्धित्ये, साद्यनंतपदाप्तये ॥ श्राद्यः कमेविपाकाऽर्थो, ना व्यो नाविद्यारदेः ॥ १ ॥ इत्तं कमेविपाकपाकह्तयोपाकाहितायंतवेः, पाकप्रापर नामस्रिरसुग्रुहर्गायूपग्रुढं ततः ॥ एतत्कमेविपाकसच्चिद्दशनिं, सात्मीक्रुह्ध्वं जनाः ! इमेध्याङ्गानिरिच्चिदेकवियद्यः, सोमोक्तया सिद्दशा ॥ ३ ॥ कमेविपाकटवार्थों, ऽन्वर्थः प्राथ्योंधिनः स्वग्रहनकाः॥ प्रथमादर्शे लिखितो, मुनिना कव्याणसोमेन ॥ ४ ॥ प्रत्यक्तं गणनया यंथमानं सस्त्रं ॥ इति श्रीवालववोधः प्रथमकमेंग्रंथ सहितः संपूर्णः ॥

## ॥ उँ नमोऽ हते॥

॥ अय ॥

॥ श्री बालवबोधसहित कर्मस्तवनामा दितीयक ं यः प्रारन्यते ॥



॥ तत्र ॥

॥ ादौ ।जवबोधकत गलाचरणम्॥

॥ षुब् वृत्तम्॥

त्रिजगत्मृष्टिसंतान, स्थितिनाशव्यवस्थितं ॥
दिशत्ये सममार्द्दये त्रिपद्ये हृद्यहृ ह्यि ॥ १ ॥
कर्म बंधोदयावस्था, त्रिपुर क् हशा ध्रुवम् ॥
तस्ये यस्याप्रशस्याङ्गा, वरिवस्य शिवोज्ञवेत् ॥ १ ॥
ध्यान धाम्नि निधायो ः, स्वग्रुरु रुगौरवान् ॥
श्रीमत्कर्मस्तवे वें, टबार्थिलिखन मम् ॥ ३ ॥

॥ मूल गाया ॥

तह युणिमो वीरजिणं, जह गुण ाणेसु सयल कम्माइं॥ वंधुदयोदीरणया, सत्तापत्ताणि खिवच्याणि ॥ १॥

श्रथे—(तह के०) तेम (श्रुणिमो के०) स्तवीशः (वीरिजणं के०) श्रीमहा वीरदेवप्रत्यें, (जह के०) जेम (ग्रुणवाणेसु के०) ग्रुणवाणाने विषे (सयलक म्माई के०) सघलायें कमे प्रकृतिप्रत्यें (बंधुद्योदीरणया के०) बंध, जद्य, ज दीरणायें करी (सत्तापत्ताणि के०) सत्तायें पामीने (खिवश्राणि के०) कृपिता नि एटले खुपाच्यां, निर्क्तश्यां ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १ ॥

श्रथ वार्तिकं लिख्यते ॥ जेम कमे खपाववा रूप पायापगम ग्रण वर्णवर्शे, क मेशत्रु विदारवे करी वीर कहीयें: जेम मिध्यादृष्ट्यादिक एठाणा, शिवमंदिर चढवा ने पावडीश्रा एटले पगिथयां सरखा जीवना ग्रुक, ग्रुक्तर, ग्रुक्त , ध्यवसाय वि शेष. यद्यपि तेश्रध्यवसाय श्रसंख्याता हे, तो पण स्थूलव्यवहारें चौद कहीयें. ते ने विषे झानावरणीयादिक श्राह मूलप्रकृति, मित्झानावरणीयादिक उत्तरप्रकृतिवंध शोग ए ोने वी द दीरणायें योग, ोने बावीश, सायें ए ोने हाती, ते हि हां जेटली लही, ा जिहां जेटलीनो विश्वेद री जे मेवरीणा दलसायें ि ध्यात्वादि । श्रवें री जीव दे ने दूध पाणीनी पेरें था लोह हि है, तेवी रीतें ए मे था बुं, ते बंध ही यें.

शते ांध्यां में सहेजें ांधा ां ति के पवर्त्तनादिक रण वि शेषें री हि तिघा थइ था हि था हु, घातीया । घा राीखार वेदं, ते उदय हीयें

ध ते में बांधवुं तथा सं मण रणे री पणा स्वरूपने पामी जे में प्रकृति, ते जीवप्रदेश साथें जी रहेवुं, खरवुं नहीं, निधाननी पेरें रहेवुं, ते सत्ता हियें. ए चार ध्यें बंधन तथा उदीरणा, ए बेहु जीवनां रण, वीर्य विशेष के खने उदय, तथा सत्ता, ए बेहु करण नहीं, एट छे ए नावार्ष के. जेम श्रीवीर जिनें जे ग्रेणगणे जेट जी प्रकृति कमेनी बांधी, उदय पामी, उदीरी था सत्तायें धरी तथा जिहां जिहां जेट जी प्रकृतिनो बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, विश्वेद जहीं जे ग्रेणगणे जेट जी प्रकृति खपावीने खा में ग्रुद्ध स्वरूपी थया, ए खपायापगमा तिश्वय ग्रुण गटवारूप असाधारण ग्रुणस्तवन रशे॥ १॥

हवे प्रथ गुणवणानां ना था स्वरूप कहें हो.

मिन्ने सासण मीसे, अविरय देसे पमत अपमते ॥ निअहि अनिअहि सुहुमु, वसम खीण सजोगि अजोगि गुणा॥५॥

यी-पहेंचुं (मिन्ने के०) मिथ्यादृष्टिगुणस्थानक, वीचुं (सासण के०) सा स्वादनसम्यक्दृष्टिगुणस्थानक, त्रीचुं (मीसे के०) मिश्रगुणस्थानक, चोछुं (खविरय के०) विरित्तसम्यक्दृष्टिगुणस्थान , पांचमुं (देसे के०) देशविरितगुणस्थानक, वर्षुं (पमत्त के०) प्रमत्तगुणस्थानक, सातमुं (खपमत्ते के०) खप्रमतगुणस्थानक, खावमुं (निख्यद्वि के०) निवृतिगुणस्थानक, नवमुं (खिन्छिट्व के०) खिन्वितगुण स्थानक, दशमुं (सुद्धुम के०) सुक्कासंपरायगुणस्थानक, खगीखारमुं (जवसम के०) जपशांतमोदगुणस्थानक, बारमुं (खीण के०) क्षिणमोदवीतरागगुण स्थानक, तेरमुं (सजोगी के०) सयोगीकेवलीगुणस्थानक, चोदमुं (खजोगीगु णा के०) अयोगीगुणस्यानक. ए चौद णठाणानां ना है ॥ इ क्रार्थः ॥ १ ॥ त्यां जीवना ग्रुण, ज्ञान, दर्शन, चारि रूप जीवस्वनाव, तेनो रत विशेषक तनेदें करी ग्रुणठाणानां स्थानकहे ते जीवनापण नेद जाणवा.

१ प्रथम मिथ्याल हेतां जिनवचनथी विपरीतदृष्टि एटखे जीवादि तल्वनी प्रतिपत्ति जेम धतुरानां बीज खाधे के श्वेत वस्तुने पण पीली वस्तु री पडिव हें, अंगीकार करें तेम मिण्यालमोहनीयना जोरा राग, देष होदादि नां चिन्ह सहित जे देवपणाना णें करी हीन होय, तेने देव री ाने ारंनपरी हादि कवंत गुरुनां लक्ष्णें हीन होय, तेने गुरु री पडिव े, हिंसादि ने धर्म करी माने, यथा नयवचनें प्रमाण री ाने, नि ता, अ निता, निन्न ता, अनिन्नता, सत्ता, असत्ता, लघुता, दीर्घता, ए वस् नी ए ांतता पण सापेक्षपणे न माने तथा संपूर्ण जिनवचन इहतोपण हो ए क्र मात्रनो अविश्वास आणे, तेपण जमालीनी पेरें मिष्यादृष्ठि जाणवोः कोइ कहेरो जे मिथ्याखदोषें इष्टने ग्रणवाणी के हीयें? तेनो उत्तर. के जो प ण मिण्यालमोहनीय प्रकति,सर्वघातीनी हे तेेणे सर्व ते स्वप्रतिपत्ति हणाय, तोप ण ते मेघघटा आवरित सूर्यप्रनानी पेरें रात्रीदिवस विनागनी रनार, एवी प्रना, अनावृति होय, तेम जीवने पण एकांशें घटादिकनी प्रतिपत्ति अविरुद होय. त था अक्रनो अनंतमो नाग उघाडो सदा सर्वदा सर्व जीवने रहे, ते पर निकृष्ट गुणनी अपेक्सयें मिण्यालीने पण गुणस्थानक कहां. तथा कोइए कहें हे ने वारें मिण्यात्वी पण मुक्तिहेतुकिया करे, त्यां गुणवाणुं होय अन्यथा मिण्यात नूमिस्य कहीयें तथा ए सम्यक्लादिक ग्रण पामशै, ते माटे ग्रणवाणुं कहीयें

१ तथा औपश्मिक सम्यक्त पामी एक समयें तथा व आवित शेष सम्य क्त काल होये थके अनंतानुबंधियाना उद्यथी औपश्मिक सम्यक्त वमतां, है। रना स्वाद सरखो जाव, मिण्यालगुणस्थानक पाम्या पहेलां, जे होय, ते सास्वादन सम्यक्टिप्रिणवाणुं बीजुं जाणवं.

र तथा मिश्रमोहनीयना उदयधी जिनवचन उपर रुचि अरुचि बेहु न होय मिश्रता होय, एवा जे अध्यवसाय ते मिश्रदृष्टिग्रणवाणुं, त्रीज्ञं जाणवुं. मिथ्याल अने मिश्र ए वे ग्रणवाणा औदियकनावें होय.

ध तथा विरितगुण जाणतो, नवप्रत्ययें तथा अप्रत्याख्यानावरणकषायोदयें करी आदरी न शके एटले एक जाणी न आदरे, न पाले, ते श्रेणिकराजानी पेवें था जाणी, आदरें, पाले, ते अ र वि ानना देवता, था जाणी आदरे न पाले, ते संवि , पाह्मि ए त्रणनांगे वर्ते हे हाथिक २ औषशि क अने ३ वेद ए दिलो एक तत्वरुचिरूप सम्यक्त्व पा हि जे अध्यवसायें जिनवचन थावस्थितपरो परिणमे, तेनुं ना विरतिसम्यकूटिश्यणगणुं चोथुं जाणवुं.

प तथा साव योगनी ए देशें विरित रे, जे निरंपराध, निरंपेक्ष, सं ल्पी स जीव हणवो. इत्यादि हिंसानिषेधरूप सम्यक्त सहित अध्यवसाय जे जाणे, दिरे, पाले,ए नांगें वर्त्ततां देशविरितग्रणगणुं पाचमुं जाणवुं. हीं सम्य क्लासह नो रिसी रे, तेपण ए ं जाणवी.

द था द, विषय, षाय निज्ञा, ने वि था। ए पांच प्र दिं री चारित्र, जिनाध्यवसाय होय अप्र त ध्यवसायनी अपेक्सयें अनंतगुणहीन जिन जाएवो. देशविरतिनी अपेक्सयें नंत ग्रणविश्च होय. एवी ।या परिणामें वर्त्तनां, प्र त्तसंयत ग्रणवाणुं ढकुं जाएवं.

ष तथा ते पांच प्राद रहितं नंत ग्रुणिव ६, निश्चयचारित्रें स्थिरता रू प ते सहित जे ध्यवसाय, ते प्रमत्तसंयतग्रुणगणुं सातमुं.

ण तथा चारित्र दिनीयनी प्रकृति ए वीश उपश विवा तथा खपाववाने कें जेणे त्यंत विद्युद्ध ध्यवसार्थे री वीर्यविशेष उझसे थके तेनो रस घात, स्थितिघात, गुणश्रेणि, गुणसं , अपूर्वस्थितबंध ए पांच वानां धुरस मयथी अपूर्व करणे हीयें. तथा एक समयें नेक जीव गुणठाणे चढ्या, ते गुद्ध गुद्धतरादिक ध्यवसायनेदें री निवृत्ति कहेतां फेरफार होय, त्यां एनुं नाम निवृत्तिगुणठाणुं पण हीयें, ए आठं जाणवुं अहीं समय समय, अनंतगुण विश्वदि होय.

ए तथा नवमे गुण वाणे अनेक जीव एक समयें चढे, तेने अध्यवसायें फेर फार न होय, तेथी एनुं नाम अनिवृत्ति कह्यं. तथा (बादर के ०) महोटा खंम (सं पराय के ०) षायना अहीं रे, एटले ए गुणवाणे कषायना महोटा खंम करे, तेथी एनुं बीज़ं नाम बादरसंपराय पण कहीयें.

१० सूक्ष्म की टीक मैरुत लोन वेदतां शेप मोहनीयने क्वें तथा उपशमें यथा जे वि दाध्यवसाय ते सूद्रमसंपरायग्रणनाणुं दशमुं जाण हुं।

११ जलने तलीये मल, नीचो वेसे तेथी पाणी निर्मल थाय, तेम मोहनीयना उपशमें अध्यवसाय निर्मल थाय. वली कपाय सत्तामांहे रह्याहे, ते माटे कपाय उ

दय पामें, तेवारें मोहला नीरनी पेरें फरी मेला वानो संनवलें, जे एी एं नाम जपशांतमोहनीय. ए ह वीतराग एउएएं गीआरं जाए बुं. इहां थी वश्य पड़े ने जो रए पामें, तो त्तरवा ी देवता था. तेवारें त्यां चोथे गुए। वारों आवीने रहे, न्यथा पड़े तो दशमे वि.

१ श तथा सर्व ोदनीयप्रकृति खपावे थके, ोहसत्ता टां धकें, जे ट्यंत वि ६ ध्यवसायस्थानक, ते इशिण ोहवीतरागढ स गुणवा ार जाण्

१३ केवल ज्ञान पाम्या पढ़ी ज्यां धी बादर योग न, वच , ।या प्रवर्ते, हाले, चाले, बोले, व्यांसुधी सयोगीकेवलीगुणवाणुं तेर जाण .

१४ बाद्रयोग रुंधे थके न, वचन, याना व्यापारने नार्वे रण वीर्धर हित मेरुनी पेरें निःप्रकंप नणी दीं होतिसीकरण रतां, योगीकेंवलीग्रेणवां चौदमुं जाणवुं. अहीं व्युपरति य एटले गइने क्रिया ज्यां, अप्रतिपाति एवे नामें क्षा ध्याननो चोथो पायो होय, ते नणी सूहम ययोगने ते नणी केंवलीने यो गिनरोधध्यान होय तेतो सर्वथा योगने अनावें न होथ अने अयोगी पंते बा द्रयोगना अनावनी अपेक्षायें लेवुं. ए चौद गुणवाणा स्वरूप हां.

हवे ए चौदगुण गणा कालमान हें हो. मिण्यालनो तो नव्यने अनाहि नं त अने नव्यने नाहि सांत तथा साहि सांत जाणवो, ने पांच ।, तेर ।, वधा अने सातमानुं कालमान, देशें णी धूर्व कोडी जाणवो. चोथा तेत्रीश सागरसा थिक कालमान हो सास्वादननो ह विलिप्रमाण, चौदमानो पां हस्वाद्धरनो काल जाणवो अने शेष ह गुणगणानो काल अंतर हूर्न. ए उत्कृष्ट कालमान जाणवुं ॥ १॥

हवे छाहीं बंधप्रकृति हेते.

छिनिनव कम्मग्गहणं, बंधौ छेहेण तत्व वीस सयं॥ तित्रयरा हारग छग, वज्जं मिह्नंमि सतर सयं॥ ३॥

श्रिपे-(श्रिनिवकम्मग्गहणं के०) नवा कर्म श्रे ग्रह्तुं, जीवप्रदेश साथें मैम जनुं मेलवन्नुं ते (वंधो के०) वंध जाणवो, (तन्न के०) त्यां (उद्देण के०) उ घे एटले सामान्य नयें (वीससयं के०) एकशोने वीश प्रकृतिनो वंध जाणवो. अने (तिउयर के०) एक तीर्थकरनामकर्म अने (श्राहारगङ्ग के०) आहारकिक, एवं त्रण प्रकृति ( वक्षं के॰ ) वर्जीने ( मित्तं मिसतरसयं के॰ ) मिष्यात्वग्रणगणे एकशोने सत्तर वंधाय ॥ इस्रकृरार्थः ॥ ३ ॥

मिण्यालश्चित्रत्यादिक सत्तावन सामान्य बंधहेतु वे अने ज्ञानकानवंतादिकनी प्रत्यनीकतादिक ते विशेष वंधहेतु वे, तेणे करी नवां कमे, पूर्वे वांध्यां वे, तेनी अपेक्षा यें नवां बंधातां जे ज्ञानावरणीयादिक मूल आठ प्रकृति तथा मितज्ञानावरणीयादिक चत्तर प्रकृति एकशो वीश, तेनो स्थितरस अने प्रदेशपणे निक्रित्वो, जीवप्रदेश साथें मेलाववो, ते बंधनकरणजीववीर्यविशेष त न्य ते बंध कहीयें. ति हां उध एट छे सामान्यें च उद गुणवाणां गुणचेद, जीवचेदादिक विशेष निर्पेक् स वैजीवने सामान्यप्रकारें ज्ञानावरण पांच, दशनावरण नव, वेदनीय वे, मोहनीय विशेष, आयुनी चार, नामकमेनी शहशव, गोत्रनी वे, अने अंतरायनी पांच एम सर्वे मली एकशोने वीश उत्तर प्रकृति बंधाय ए रीतें सामान्यें सर्व जीवने बंध कहीयें

हवे गुण स्थानकविशेष किंद्र, बंधप्रकृति विशेषें किंद्रें वैथें तिहां प्रथम मिण्याल गुणगणे वर्तमान जीवने बंध कहें हो ते पूर्वीक ए शोने वीश वंधयोग प्रकृति मांहे एक जिननामकर्म, वीखं आहारकश्रारिनामकर्म, त्रीखं आहारकश्रापेगाना मकर्म, ए त्रण प्रकृति, मिण्याली जीव, न बांधे कारण के जिननामकर्म, सम्यक्त विना न बंधाय अने आहारकि हक. गुड्चारित्र विना न वंधाय, ते सम्यक्त अने चारित्र ए वे वानां मिण्यालें नधी, तेथी ए त्रण प्रकृति न बंधाय तेथी ते वर्जीने शेप झानावरणीयनी पांच, हर्शनावरणीयनी नव, वेदनीयनी वे, मोहनीयनी वृशी श, आयुनी चार, नामकर्मनी चोशव, गोत्रकर्मनी वे अने अंतरायकर्मनी पांच एम सर्व मली एकशोने सत्तर प्रकृति सर्विम्यालीजीवनी अपेक्त्रायें प्रथमगुणगणे वंथ योग्य होय केमके मिथ्याल, अविरत्ति, कषाय अने योग, ए चार मूलहेतु त्यां हो य तेथी ते निमित्ते एकशोने सत्तर प्रकृति वंधाय, अने सम्यक्त्यर्यिक जिनना म तथा चारित्रप्रत्यिक, आहारकि हक, ए त्रण प्रकृति न होय ॥ ३॥

ह्वे मिथ्यालगुणगणे केटली प्रकृतिनो वंधविवेद थाय, ते कहेते.

नरय तिग जाइ थावर, चछ हुंमा यव ठिवह नपु मिछं॥ सोलंतो इगहि असय, सासणि तिरि थीण छह्ग तिगं॥४॥

अर्थ-(नरयतिग कें।) नरकत्रिक, (जाइ कें।) एकेंडियादिक जाति चार.

## अण मशागिइ संघय, ण च नि ो अ कुखगइ हिति॥ पणवीसंतो मीसे, च सयरि डहा अ अबंधा॥ ॥॥

अर्थ-(अए के॰) अनंता बंधी चतुर ं, (ागिइ के॰) मध्याकृति एट खें ध्यसंस्थानचतुर्क, (संघयणच के॰) मध्य संघयणचतुर्क, (च के॰) ए त्रण चतुर्कनी बार प्रकृति थइ. (नि के॰) नीचैगों में, (च तेश्र के॰) उद्यो तना कमें, (खगइ के॰) ग्रुनविह्ययोगित, (िक्वित्त के॰) स्त्रीवेदमोह नीय. इति एट खेए (पणवीसंतो के॰) ए पचीश प्रकृतिनो अंत बंधि दे सास्वा दने थाय. तेथी (मीसे के॰) मिश्र ग्रुणवाणें (च उसयिर के॰) चम्मोतेर प्रकृतिनो बंध होय. जे नणी ए ग्रुणवाणें (हाउ अबंधा के॰) मनुष्यायु तथा दे वायु, ए वे आ नो अवंधि । टे चम्मोतेरनो बंध थाय, ॥ इत्यह्हराथेः ॥ ए॥

अहीं ए कहेतां अनंतानुबंधीआ। प्रमुख ए शब्दने ते आगल चन शब्द जोडीयें, तेवारें त्रणच वक याय एटले अनैतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लो न ए चारने अनंतानुबंधीचन हीयें ने न्ययोध, सादि, वामन अने क्रव्ज. ए चार मध्य एटले वचलां संस्थान, ए ध्यमसंस्थानच चकः अहीं आकृति एटले शरीराकार ते संस्थानरूप तन्निमित्तक कमे प्रकृति पण आकृतिनाम जाणवी तथा क्पननाराचसंघयण, नाराचसंघयण, छर्डनाराचसंघयण छने कीजिकासंघ यण, ए चार वचलां संघयण है एने मध्यसंघयणच उक कही यें. एटले त्रण चोक बार प्रकति कही अने त्रण त्रिक नव प्रकृति पूर्वेली गायामां कही. एवं एकवीश प्रकृति थइ. बावीशमुं नीचगोत्र, त्रेवीशमुं उद्योतनामकर्म, चोवीशमुं अग्रनिव हायोगित, पञ्चीशमुं स्त्रीवेदः एवं पञ्चीश प्रकृतिमध्यें एक उद्योतनाम अने वीजुं तियीगायुः ए वे प्रकृति विना शेष त्रेवीश पापप्रकृति, तीव्रसंक्षेशें वंधाय अने ते त्रित्रसंक्षेत्र अनंतानुवंधीयाने उद्यें होय अने ए मिश्र प्रमुख आगले गुणवा णे अनंतानुबंधीयानी जदय न होय, तेवारें ए ग्रणवाणे एनो पण बंध न होय अने चयोतनाम, तथा तिर्यगायुः ए वे पुल्यप्रस्तिने पण तिर्वक्प्रायोग्य प्रस्तिवंध टलेथी एनो पण वंध न होय. ए पञ्चीशमध्यें घीण दीत्रिक, दशनावरणकर्मनी छने अनंतानुवंधीया चार तथा स्त्रीवेद ए पांच प्रकृति, मोह्नीयकर्मनी एक गोत्रप्रकति, एक तिर्यगायुप्रकति. एवं दश यइ छने शेप पंदर प्रकति नामकर्म

नी एवं पचीश प्रकतिनो बंध प्रांतसाखादनें होय, तेवारें हा। वरणीय पांच, दर्श नावरणीय ठ, वेदनीय बे,मोहनीयनी जंगणीश, नामकर्मनी ठन्नीश,गो नी ए ने छांतरायनी पांच. एवं चम्मोतेर प्रकति मिश्रगुणठाणे सर्व जीवनी अपेक्सायें बंधा य. जे माटे साखादनगुणठाणे एकशोने एक प्रकतिनो बंध हतो, तेमांहेषी नंतानुबधीयाना उदयने अनावें तिन्नमित्तक प शि प्रकतिनो बंध टल्यो तेवारें ठहोंतेर प्रकतिनो बंध रह्यो, ते मध्यें पण मिश्रगुणठाणे आंगुबंध योग्य ध्य वसाय नथी, तेथी त्यां देवागु, मनुष्यागु, ए बे आगु पण न बंधाय. जे नणी शास्त्रें कह्यं छे के "समामिन्नदिष्ठिआ उग बंधिन रेई" पण आगलें चोथे गुणठाणे बंध करशे तेथी ए बे आगुनो बंध विन्नेद न कह्यो, पण अबंध ो तेथी चम्मोतेर प्रकतिनो बंध,मिश्रगुणठाणे होय इहां ोइ प्रकतिनो बंधविन्नेद नथी॥॥॥

सम्मे सग सयरि जिणा, बंधि वइर नरित अ बि अ कसा या ॥ ठरल इगंतो देसे, सत्त ही तिय कसायं तो ॥ ६॥ ते वि पमत्ते सो, ग अरइ अधिर इग अजस अ स्सायं॥ वृज्ञिक बच्च सत्तव, नेइ सुराठेजया नि ॥ ९॥

शर्थ—(सम्मे के०) श्रविरित्तसम्यक्दृष्टिगुणवाणे (सगसयि के०) सत्त्यो तेर प्रकृतिनो वंध होय. (जिणाज के०) जिननाम श्रने मनुष्यायु तथा देवायु ए वे श्रायु. एवं त्रण प्रकृति (बंधि के०) वांधे तेमाटे.श्रने (वहर के०) वज्रक्षननारा चसंवयण, (नरितश्र के०) मनुष्यित्रक, (जिश्रकसाया के०) जीजा श्रप्रत्याख्या नीश्रा चार कपाय श्रने (जरजङ्गांतो के०) श्रोदारिकिक ए दश प्रकृतिना वंध नो श्रंत करे, तेवारें (देसे के०) देशविरितगुणवाणे (सत्तद्धी के०) शहशुन प्रकृतिनो वंध करे श्रने त्यां (तियकसायंतो के०) त्रीजा प्रत्याख्यानावरण चार कपा यनो श्रंत करे ॥६॥ तेवारें (तेविष्ठपमत्ते के०) त्रेश्च प्रकृतिनो वंध, प्रमत्तगुणवाणे दोय श्रने एक (सोग के०) शोकमोह्नीय, जीजी (श्रर्द्द के०) श्ररतिमोह्नीय, श्रि विरुण के०) श्रह्यिरिक, एवं चार. पांचमुं (श्रज्जस के०) श्रयशःकीर्तिनाम कमे. तर्हु (श्रस्तायं के०) श्रशातावेदनीय, (त्रञ्च के०) ए त्र प्रकृति (वृश्चिक के०) वंधियी विवेद पामे. (सत्तव के०) श्रयवा सात प्रकृति विवेद पामे. (ने

इ रार्डज ानिर्ह के॰) जो ोइ प्र त साधु देवायु धिवा मि, अने संपूर्ण री ने । प । डे पोचाडे. ो सा प्रकृतिनो अंत रे ॥ ७ ॥

. अविरतिसम्यक्र्हि ग्रणवाणे ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय ठ, वेद नीय बे, मोह्नीय उंगणीश, आयुनी वे, नाम मेनी साडत्रीश, गोत्र मेनी ए , अने अंतरायकर्मनी पांच, ए रीतें सत्त्योतेर प्रकृतिनो वंध हे, ध्यें चम्ोतेर प्रकतिनो बंध जे मिश्रगुणवाणे ह्यो तेज आहिं होवो ने अहीं सम्यक्टि है तेथी तन्निमित्त जिननाम मैनो पण बंध लाने तथा सम्यक्टि देवता, तथा नारकी, ए बेहु नुष्यायुज बांधे अने सम्यक्टि मनुष्य, ते तियंच अने देवायुज बांधे, तेथी सर्वजीवनी अपेक्सयें चोथे ग्रणगणे सत्त्यो तेर प्रकृतिनो बंध पामे. द्वे छादीं विचेद हेते. वज्रक्षननाराचसंघयए, वु प्यगति, ष्या पूर्वी, नुष्यायुं, ए ष्यत्रि, श्रौदारिकशरीर श्रने श्रौदारिक अंगोपांग ए औदारिक दिक. एवं व प्रकृतिनो वंध चोथे गुणवाणे देवता अने नार ीने होय. **नुष्यगति प्रायोग्य बांधे आगला गु**णनाणां देवता अने नारकीने न होय. तेथी एउपरुतिनो बंध न पामीयें,तेथी वि द तथा अप्रत्याख्यानी चार पायनो बंध पण आगले गुणवाणे न लाने आपणा उदयने अनावें कषायनो बंध पण न होय, तेथी ए दश प्रकृतिनो बंध विश्वेद चोथे ग्रुणगणे तेमध्ये अप्रत्याख्यानीआ चार, ते मोह्नीयनी प्रकति, मनुष्यायु ते आयुनी प्रकति. शेप पांच नामकमेनी प्रकति, एवं दश प्रकृति टली. शेप ज्ञानावरणीयनी पांच, दश्नीनावरणीयनी ब,वेदनीयनी वे, मोहनीय पंदर, आयुनी एक, नामनी बत्रीश, गोत्रनी एक अने अंतरायनी पांच, ए शहशत प्रकृतिनो बंध, देशविरतिगुणवाणे उधे होय, तिहां बंधविष्ठेद त्रीजो कपाय जे प्रत्याख्यानावरण, तेनी चोकडी ए चार कषायनी प्रकृतिना बंधनो अंत घाय. जे नणी प्रथम बार कपायनो वंध आपणे उदय हुंते थके आगल उदय नधी ते थी बंध पण न होय. तेवारें शडशह प्रकृतिमांहेथी मोहनीनी चार टालवी ॥६॥ बाकी झानावरणीय पांच, द्रीनावरणीय ढ, वेदनीय वे, मोहनीय अगीआर, आ युनी एक, नामनी वत्रीश, गोत्रनी एक अने अंतरायनी पांच, ए त्रेशव प्रकृतिनो वंध, प्रमत्तगुणवाएी मनुष्यने होय.

खां व तथा सात कमेप्रकृतिनो वंधविवेद अने वंधप्रांत होय, ते हवे कहेने. एक शोक, अने वीजी अरित. ए वे मोहनीयनी प्रकृति. एक अस्थिरनामकर्म, वीजं अग्रु ननामकर्म, ए अस्थिरिक त्रीजं यशः शिर्तना मे.ए ए ना मेनी प्र ति अने एक अशातावेदनीयनी प्रकृति ए त्रए मेनी उ प्रकृतिनो निम् त्रप्र ादं ते ते प्रमाद वते ए अग्रुनप्रकृति बंधाय. आगले ग्रुणवाणे वि दाध्यवसायनए। योगज न्य जे प्रकृति, ते प्रमादने अनावें न बंधाय, तेथी त्यां अग्रुनयोगनिवर्ने, त्यां एप्रकृतिनो वंध पण निवर्ने, तेथी वनो बंधवि छेद अने आग्रुःक्रमेनो बंध अतिवि द्रपरिणामें न होय. तिहां घोलना परिणामें प्रमत्तगुणवाणें देवायु बांध्या पठी सातमे ग्रुणवाणे चढ तो सात प्रकृतिनो बंध वि छेद जे नणी अतिवि छ द अध्यवसायनणी । युबंधप ए आगले ग्रुणवाणे नथी, तेवारें उ प्रकृति प्रथम ही ते अने सात ं सुरायु. ए सात प्रकृतिबंधनी अपेक्षायें प्रमत्तगुणवाणे वि छेद पामे ने जो प्र नें देवा युनो बंध करतो ते बंध पूर्ण क । विना अप्रमत्तें चढें तो केवल देवायुनोज ज्यां सुधी बंध पूर्ण करे,त्यांसुधी अप्र नें पण । युबंध पामीयें, तो प्रकृतिना वंधनो वि छेद होय तेवारें ज्ञानावरणीय पांच, द्रीनावरणीय ढ,वेदनीय ए , तो हनीय नव, आग्रुनी एक, नामनी एकत्रीश्र,गोत्रनी ए अने अंतरायनी पांच॥ ॥॥ ॥

गुणसि अपमते, सुरा बदं तु जइ इहा गर्छे॥ अतह अठावता, जं आहारग छगं बंधे॥ ए॥

अर्थ-ए सर्व मली ( ग्रुणसिष्ठिष्यमने के० ) ओगणशाव प्रकृतिनो बंध अप्रम्त नगुणवाणे होय. ( ग्रुरा चब दंतु के० ) देवायु बांधतो यको ( जइ के० ) यदि एटले जो ( इहाग के० अप्रमतगुणवाणे आवेतो अने ( अ ह के० ) अन्यया देवायु विना तो ( अठावन्ना के० ) अठावनप्रकृतिबंध होय. ( जंआहारगड गंवें ये के० ) जे नणी आहारकिक बांधे, तेवारें अठावन्न अथवा ओग एशाव प्रकृतिनो वंध याय ॥ इत्यक्त्रार्थः ॥ ७ ॥

ए उंगणशाव प्रकृति अप्रमन संयत्युणवाणे प्रवर्ततो बांधे. अहीं शिष्य पूर्वे वे के हे नगवन ! आयुवंध घोलना परिणाम होयहे, ते अहीं घोलना परिणाम नणी तो केम आयुवंधहोय ? तत्रोत्तरं. हे शिष्य! जो प्रमत्त थको घोलना परिणाम करी देवायुवंध करतो प्रमत्तनो काल पूर्ण थये देवायुवंध अपूर्ण हुवे थके अप्रमत्तगुणवाणे पण आवे, तिहां कुंनारना चक्रजमणन्यायें करी पूर्वे घोलना परिणामें आरंनेलो आयुवंध ज्यां सुधी पूर्ण करे, त्यां सुंधी अप्रमत्तगुणवाणे पण

देवायुवध पामीयें, तेथी उंगणशाव प्रकतिनो बंधने पण अप्रमन नते आयुवंध आरंने निहं. अन्यथा एटले जो प्रमन्तगुणनाणे सुरायुवंध आरंनी पूर्ण करतो, वलतो अप्र नगुणनाणे आवे,तो आयु विना सात मेमांहेली ज्ञानावरणीय पांच,दर्शनाव रणीय न वेदनीय एक, हिनीय नव, नामनी एकत्रीश, गोत्रनी एक, अने अंतरा यनी पांच. ए अहावन्न प्रकति वांधे. तिहां शिष्य पूनेने के, ए केम होय जे नणी प्रमनंवंध, त्रेशन प्रकतिनोने ते ांथी न प्रकृतिनो वंधि निहंद यथो, तेवारें सन्तावन प्रकृति होय अने सात प्रकृतिबंधि निहंद करतां निष्न प्रकृति होय, पण उंगणशान अने अहावन्न प्रकृति केनी रीतें होय? तिहां गुरु उत्तर हेने के, अहीं अतिविग्नु व्यारित्रने सातें तै निक आहारकश्रीर अने आहार अंगोपांग, ए वे प्रकृति अधि वंधाय, ते जेलतां होगणशान अने अहावन थाय. ए रीतें सुरायु विना श्रेष अहावन प्रकृतिनो वंध अप्रमन्तसंयतने कह्यो ॥ ए ॥

अडवन्न अपुवा इमि, निहडगंतो पन्न पण नागे॥ सुर इग पणिदि सुखगइ, तस नव रल विणु तणु वंगा॥ ए॥

अथ-(अडवन्न के०) अहावन प्रकृतिनो वंध (अपुदाइमि के०) अपूर्वकरणना प्रथमनागने विषे (निद्दछगंतो के०) त्यां निइ। दिकनो छंत थाय, तेवारें (उपन्न पणनागे के०) उप्पन्न प्रकृतिनो वंध, दितीयादिकथी मांमी उहा सुधीना पांच नागें होय, पांचे नांगें सत्ता तो उप्पन्ननीज पण स्थितियात, रसयात, गुणसेढी, गुण संक्रम, अपूर्ववंध, ए पांचवानां करें (सुरहुग के०) सुरिद्दक, (पणिंदि के०) पंचें इियजाति, (सुखगइ के०) ग्रुनविद्दायोगित, (तसनव के०) त्रसनवक, (जरलविणुतणुवंगा के०) एक औदारिक विना शेष चार शरीर अने वैक्तियोपांग तथा आहारकोपांग, ए वे जपांग एवं ओगणीश प्रकृति॥ इत्यह्नरार्थः॥ ए॥

तेह्ज अपूर्वकरण एवं नामे आर्वमं ग्रणवाणुं अंतरमुहूर्चकाल प्रमाणनुं तेना सात नाग करीयें, तेमांहेला प्रथम नागने विषे अज्ञवन प्रकृति वांधें, तिहां निहा अने प्रचला, ए वे दर्शनावरणीयनी प्रकृति तेना वंधनो अंत आवे, ते आग कें अतिविद्य हपणे करी ए वे प्रकृति न वंधाय, शेष ज्ञानावरणीय पांच, दर्शना वरणीय चार, वेदनीय एक, मोह्नीय नव, नामनी एक त्रीश, गोत्रनी एक अने अंतरा यनी पांच. एवं ठणन्न प्रकृति, वीजे, त्रीजे, चोथे, पांचमे अने ठहे, ए पांच नागें

वंधाय,ए रीतें अपूर्वकरणना उनागने विषे बंध ह्योः हवे उठे नागें जे प्रकृतिनो वंधविहेद होय, ते कहें अंहीं देवगितप्रायोग्य एकत्रीश ना मेना बंधमांहेलो त्रीश प्रकृतिनो वंध विहेद थाय, ते हें देवगित अने देवानुपूर्वी, ए सुरिक त्री जुं पंचें िष्ठ्यजातिनाम, चोशुं निवहायोगित तथा एक त्रसनाम, बी बादरनाम, त्री जुं पर्योप्तनाम, चोशुं प्रत्येकनाम, पांच हियरनाम. उठुं शुनना , सातमुं सौ नाग्यनाम. आवमुं सुस्वरनाम, नव आदेयनाम, ए त्रसनवक कहीयें एवं तेर. त या औदारिकश्रीर अने औदारिक अंगोपाग, ए बेनो बंधविहेद चोथे ग्रणवाणे ययो तथी ते बे विना शेष विक्रयश्रीर, आहारकश्रीर, तैजसश्रीर ने मि एश्रीर ए चार श्रीरनाम अने वित्र यश्रंगोपांग तथा आहार गंगोपांग, ए बे अंगोपांग एवं व प्रकृति ए रीतें धुर्यी सर्व मली टीग्णीश प्रकृति थइ ॥ ए॥

समच विमाण जिए व, न अगुरु ल हु च बलंसि तीसंतो॥ चरमे बवीस वंधो, हास रई कु नय ने ।। १०॥

शर्थ-वीशमुं (समचगर के०) समचतुरस्रसंस्थान, एकवीशमुं (निमिण के०) निर्माणनाम, वावीशमुं (जिए के०) जिननाम, तथा (वस्न के०) वर्ण चतुष्क श्रने (श्रगुरुलहुचग के०) श्रगुरुलघुचतुष्क, (बलंसितीसंतो के०) ब हे नागें ए त्रीश प्रकृतिना वंधनो श्रंत थाय, एटले विश्वेद थाय, तेवारें (चरमे के०) बेले, सातमे नागें (बवीसबंधो के०) बवीश प्रकृतिनो बंध द्रोय, त्यां (हास के०) हास्यमोहनीय, (रई के०) रितमोहनीय, (कुछ के०) श्रगुप्सामोहनीय, (न यनेत्रं के०) नयमोहनीय. एचार प्रकृतिनें बंधधीटाले ॥ इत्यक्तरार्थः॥ १०॥

वीश्रमुं समचतुरस्रसंस्थान, एकवीश्रमुं निर्माणनाम, बावीश्रमुं तीर्थकरनाम तथा वर्ण, गथ,रस, छने स्पर्श, ए वर्णचतुष्क एटले ए चार नाम कर्मनी प्रकृति एवं वृवीश तथा छ्रगुरुलघुनाम, उपघातनाम, उल्लासनाम, पराघातनाम, ए छ्रगुरुलघुचतुष्क एवं सर्व मली नामकर्मनी त्रीश प्रकृतिनो बंध विश्वेद थाय, जे नणी चारित्रमोहनी पनं खपावतो तथा उपशमावतो छ्रपूर्वकरणकरे, तिहां विद्युद्धाध्यसायें करी संसारच्च मणहेतुगतिप्रायोग्य नामकर्मनो वंध विठोडे. छहीं शेप सुरगतिप्रायोग्यनामप्रकृति एकत्रीशनो वंध रह्यो हतो, तेमांहेथी एक यशःकीर्त्तिवना शेप त्रीश प्रकृतिनो वंध वे, तथी नवचमणनुं वीज न करे, छतिविद्युद्ध माटे न करे. एरीतें विछे नागें

त्रीश प्र ितनो 'धिविश्वेद रे, तेवारें अपूर्व रणने बेह्र सातमे नागें झानावर णीय पांच, द्रश्नीनावरणी चार, शातावेदनीय ए , तथा संज्वजन पाय चार, हा स्य, रित, नय, गुंप्सा, पुरुषवेद एवं मोह्नीनी नव, यशःकीर्तिना , ज्ञ्चेगोंत्र अने पांच अंतराय, एवं सात मेनी उत्तरप्रकृति वीश बांधे, तथां बंधिविश्वेद हेबे. पूर्व रणना सा । नागना प्रांतें तिवि ६ अध्यवसाय थया, तेमाटे ए हास्य हिनी, बीछं रितमोह्ननी, त्रीछं छ प्सामोह्ननी, चोधं नयमोह् नी, ए चार प्रकृतिना बंधयोग्य अध्यवसायस्थान टली जाय. तेवारें शेष बावीश प्रकृतिनो 'धरहे॥ १०॥

अनि अहि नाग पणगे, इंगेगहीणो डवीसविह बंधो॥ पुम संजलण च एहं, कमेण बेर्र सतर सुहुमे॥ ११॥

अर्थ—(अनिअहिनागपणगे केण) अनिवृत्तिकरण नामे नवमा ग्रणवाणाना पांच नागने विषे (इगेगहीणो केण) नागनाग दीठ एकेक प्रकृतियें हीन, (इवीसविह्बंधों केण) बावीश प्रकृतिनो बंध होय, ते केम ? तोके पहें जे नागें बावीशनो बंध हो य, बीजे नागें (पुम केण) पुरुषवेद डेढों रतां एकवीशनो वंध तथा तेवार पढ़ी तृतीयादिक नागने विषे (संजलणच उएहं केण) संज्वलन कषायनी चोकडीमांहे जी एकेक प्रकृतिनो बंध, (कमेण केण) अनुक्रमें वंधधी ( ढेडे केण) हेदाय, ते वारें (सतरसुहुमें केण) सत्तर प्रकृतिनो बंध सूक्ष्म संपरायनामा दशमे ग्रणवा णे जाणवो ॥ इस्रकृरार्थः ॥ ११॥

श्रीनवृत्तिकरण एवे नामे नवमुं ग्रणवाणुं वे तेनो काल श्रंतर मुहूर्त प्रमाण. तेना पांच नाग कल्पीयें; तेमध्यें प्रथम नागें कानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, वेदनीय एक, मोह्नीय पांच, यशःकीर्त्तिनाम, उच्चेगींत्र श्रने श्रंतराय पांच. एवं बावीशनों बंध वे, तिहां पुरुषवेदनों बंध विश्वेद थाय, तेवारें बीजे नागें एकवीश प्रकृतिनों बंध तिहां संज्वलनाक्रोधनों वंध विश्वेद थये थके त्रीजे नागें वीश प्रकृति नो वंध. तिहां संज्वलना माननों वंधविश्वेद थाय, तेवारें चोथ नागें उगणीश प्रकृतिनों बंध, त्यां संज्वलननी मायानों बंध विश्वेद पामे.तेवारें पठी ए श्रृतिवृत्तिकरण ग्रुणवाणाना पांचमा नागें क्षानावरणीय पांच,दर्शनावरणीय चार,वेदनीय एक मो हनीय माहेलों संज्वलनों लोन एक. श्रुने यशःकीर्त्तनाम. एवं वार. उच्चेगींत्र श्रने

वंधाय,ए रीतें खपूर्वकरणना छनागने विषे बंध ह्योः हवे छठे नागें जे प्रकृतिनों वंधविहेद होय, ते कहे छे. खंदीं देवगितप्रायोग्य ए त्रीश ना मेना बंधमां हे लो त्रीश प्रकृतिनों बंध विहेद थाय, ते कहे छे. देवगित खने देवानुपूर्वी, ए सुरिक त्री खंपें विद्यातातिनाम, चो खं जित्रायोगित तथा एक त्रसनाम, बी बादरनाम, त्री खं पर्योप्तनाम, चो खं प्रत्येकनाम, पांच हियरनाम. छ छ छ जना , सात सौ नाग्यनाम. खाठ सुं सुखरनाम, नव सुं खादेयना , ए त्रसनवक कही यें एवं तेर. त या खीदारिक शरीर खने खीदारिक खंगोपाग, ए बेनो बंधविहेद चोषे छ ए ठाए यो तेथी ते बे विना शेष वित्र यशरीर, खाहारक शरीर, तै जस शरीर ने मि एशरीर ए चार शरीरनाम छने वित्र यश्रंगोपांग तथा खाहार गोपांग, ए बे खंगोपांग एवं छ प्रकृति ए रीतें धुर्थी सर्व जी डंगणीश प्रकृति थइ ॥ ए ॥

समच विमाण जिए व, न अगुरु ल हु च छलंसि तीसंतो॥ चरमे छवीस वंधो, हास रई कु च नय ने छ।। १०॥

श्रथ—वीशमुं (समचगर के०) समच रस्नसंस्थान, एकवीशमुं (निमिण के०) निर्माणनाम, वावीशमुं (जिए के०) जिननाम, तथा (वस्न के०) वर्ण चतुष्क श्रने (श्रयुरुलहुचग के०) श्रयुरुलघुचतुष्क, (उलंसितीसंतो के०) उ के नागें ए त्रीश प्रकृतिना वंधनो श्रंत थाय, एटले विश्वेद थाय, तेवारें (चश्मे के०) ठेले, सातमे नागें (उवीसबंधो के०) उवीश प्रकृतिनो बंध होय, त्यां (हास के०) हास्यमोहनीय, (रई के०) रितमोहनीय, (क्रिश्व के०) ज्ञयुष्सामोहनीय, (ज्ञयून्सामोहनीय, ए चार प्रकृतिनें बंधश्री टाले ॥ इत्यक्करार्थः॥ १०॥

वीश्मं समचतुरस्रसंस्थान, एकवीशमं निर्माणनाम, बावीशमं तीर्थकरनाम तथा वर्ण, गध,रस, श्रने स्पर्श, ए वर्णचतुष्क एटले ए चार नाम कमेनी प्रकृति एवं ववीश तथा श्रगुरुत्तधुनाम, उपधातनाम, उह्यासनाम, पराधातनाम, ए श्रगुरुत्तधुचतुष्क. एवं सर्व मली नामकमेनी त्रीश प्रकृतिनो बंध विवेद थाय, जे नणी चारित्रमोहनी पन खपावतो तथा उपशमावतो श्रपूर्वकरण करे, तिहां विग्रुद्धाध्यसायें करी संसारत्र मणहेतुगतिप्रायोग्य नामकमेनो वंध विठोडे. श्रहीं शेप सुरगतिप्रायोग्यनामप्रकृति एक श्रीशनो वंथ रह्यो हतो, तेमांहेथी एक यशकी चिना शेप त्रीश प्रकृतिनो बंध है. तथी नवत्रमणनुं वीन न करे, श्रतिविग्रुद्ध माटे न करे. एरीतें ठिने नागें

त्रीश प्रकृतिनो बंधिविहेद रे, तेवारें अपूर्वकरणने बेहले सातमे नागें ानावर णीय पांच, दर्शनावरणीय चार, शातावेदनीय ए , तथा संज्वलन पाय चार, हा स्य, रित, नय, जुगुंप्सा, पुरुषवेद. एवं मोहनीनी नव, यशःकीर्तिनाम, ज्ञ्चेगोंत्र अने पांच अंतराय, एवं सात मेनी उत्तरप्रकृति ब्रवीश बांधे, त्यां बंधिविहेद हेबे. अपूर्वकरणना सात । नागना प्रांतें अतिवि ६अध्यवसाय थया, तेमाटे एक हास्य हिनी, बीज्ञं रितमोहनी, त्रीज्ञं जुगुप्सामोहनी, चोशुं नयमोह नी, ए चार प्रकृतिना बंधयोग्य अध्यवसायस्थानक टली जाय. तेवारें शेष बावीश प्रकृतिनो बंधरहे॥ १०॥

अति अहि नाग पणगे, इगेगहीणो डवीसविह बंघो॥ पुम संजलण च उण्हं, कमेण बेर्र सतर सुहुमे॥ ११॥

अर्थ—(अिन अहिनागपणगे के०) अिन वित्तिकरण नामे नवमा ग्रणवाणाना पांच नागने विषे (इगेगहीणों के०) नागनाग दीव एकेक प्रकृतियें हीन, (इवीस विह्वंधों के०) बावीश प्रकृतिनों बंध होय, ते केम ? तोके पहेले नागें बावीशनों बंध हो य, बीजे नागें (पुम के०) पुरुपवेद उंढो करतां एक वीशनों वंध तथा तेवार पढी तृतीयादिक नागने विषे (संजलण च उपहं के०) संज्वलन कषायनी चोक डीमांहे ली एकेक प्रकृतिनों वंध, (कमेण के०) अनुक्रमें वंधथी ( देर्च के०) देदाय, ते वारें (सतरसुदुमें के०) सत्तर प्रकृतिनों वंध सूक्ष्म संपरायनामा दशमें ग्रणवा णे जाणवो॥ इत्यक्ष्रार्थः॥ ११॥

श्रिनिव्हित्तकरण एवं नामे नवसुं ग्रुणवाणुं तेनो काल श्रंतर मुहूर्न प्रमाण. तेना पांच नाग कल्पीयें; तेमध्यें प्रथम नागें झानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, वेदनीय एक, मोह्नीय पांच, यशःकीर्त्तिनाम, उच्चेगींत्र श्रने श्रंतराय पांच. एवं बावीशनो बंध हे, तिहां पुरुषवेदनो बंध विवेद थाय, तेवारें बीजे नागें एकवीश प्रकृतिनो बंध तिहां संज्वलनाक्रोधनो बंध विवेद थाय थके त्रीजे नागें वीश प्रकृति नो बंध. तिहां संज्वलना माननो बंधविवेद थाय, तेवारें चोथ नागें उगणीश प्रकृतिनो बंध, त्यां संज्वलना माननो बंधविवेद थाय, तेवारें पही ए श्रिनवृत्तिकरण ग्रुणवाणाना पांचमा नागें झानावरणीय पांच,दर्शनावरणीय चार,वेदनीय एक,मो हनीय माहेलो संज्वलनो लोन एक. श्रने यशःकीर्त्तनाम. एवं वार, च्यांत्र श्रने

पांच छांतराय एवं अढार प्रकृतिनो बंध होय. नवमा ग्रुणवाणाने वेडे संज्वलनालो ननो वंध पण विह्नेद पामे, जे रिण हि एनो बंध बादर षायोदय प्र इर्ड वे, ते बादरकपायोदय टक्के, तेथी तेनो बंध पण टक्के, तेवारें स्त संयरायनामें द में ग्रुणवाणे कानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, वेदनीय ए , यशः ीर्ति ए , गोत्र एक, छने छंतराय पांच, ए सत्तर प्रकृतिनो बंध होय, ते हो ॥ ११॥ हवे दशमा णवाणे शोल प्रकृतिनो छंत रे, ते हेवे

चन दंसणुच जस ना, ए विग्घ दसगंति सोलसु ।

तिसु साय बंध है,सजोगि बंधंत छणं तोछा।बंधो सम्मत्तो।११। छर्थ—(चडदंसणु के०) चार दर्शनावरणीय, छने पांच ं है गों , ढहुं (जस के०) यशःकीर्त्तनामकर्म, (नाण के०) पांच झानावरणीय, (विग्ध के०) पांच छंतराय, (दसगंति के०) ए दश प्रकृति. एवं सर्व मली (सोलस के०) शोल प्र तिना बंधनो (डिहेड के०) विहेद होय छने (तिसु के०) त्रण गुणुवाणो (सायबंधनेड के०) एक शाता वेदनीय बंधने, तेपण नेदाय एटले (सजोगीबंधंत के०) सयोगी गुणुवाणाने छंतें शातावेदनीयना बंधनो पण छंत (णंतो के०) नंतो करे। (बंधोसम्मत्तो के०) बंधाधिकार संपूर्ण थयो। इत्यक्तरार्थः। ११॥

पांच निड़ा विना चक्नुरादिक दर्शनावरणीय चार प्रकति, पांच मुं उच्चेगींत्र, वर्षु यशःकीर्तिनाम, तथा पांच झानावरण अने पांच अंतराय, ए दश प्रकतिने झानवि दशक कहीयें एवं शोल प्रकतिनो बंधकषाय प्रत्यिक हो, तो आगले गुण हाणे वीत राग दशायें कपायोदय न होय, ते नणी बंधाय नहीं, तेथी अहींयां बंधि हे हे थाय. तेवारें शेष एक शातावेदनीयज एक उपशांतमोह, बीजो स्वीणमोह, ने त्रीजो सयोगी केवली, ए त्रण गुण हाण योग हो तेथी योगप्रत्ययें करी बंधाय, अने योगनिरोधें एनो पण बंध विशेद होय. जिहां जेना कारणजूत मिण्याल अविरत्यादिक वंधहेतु तथा विशिष्टबंधाध्यवसाय तत्प्रायोग्य टले, तिहां तिहां ते ते प्रकृतिनो बंधिव हेद थाय. ज्यां सुधी कारणनो अंत न होय, त्यां सुधी कारणनो कंत न होय, ते अंत अनंत जाणवो. एटले ए बंधनो अंत एवो करे, के तेना अंतनो अंत नावे, एवो करे, माटे अनंतो कह्यों जे नणी वसतो कोइ वारें ते जीवने वंध करवो न थाय. ए रीतें अर्थोग्जिनेथरें च उद गुण हाणो कर्मनो वंधिव हेद कत्यो तेने अर्थे नमस्कार होय. इति अयः॥ एम चाद गुण हाणा छा अर्थीने कर्मप्रकृतिनो बंधिधकार पूर्ण थयो॥ १ शा

#### ॥ बंध यंत्रकम् ॥

१४	गुणस्थानकर्मप्रकृति	मूलमकृति-	<b>डत्तरमक्क</b> ति	ज्ञानावरणीय.	दर्शनावरणीय.	वेदनीय.	मोहनीय.	आयुःकर्म.	नामकर्म.	गोत्रकर्म.	अंतरायकर्म.
0	ओर्घेः	c	१२०	لع	९	२	२६	ध	६७	२	4
?	मिथ्यात्वें.	ح	११७	لع	९	२	२६	ક	६४	7	4
२	सास्वादने-	<b>c</b>	१०१	4	९	२	२४	३	48	२	4
३	मिश्रें-	9	७४	لع	६	२	१९	0	३६	3	4
S	अविरतें.	6	७७	لع	६	२	१९	3	३७	1	4
9	देशविरतें.	6	६७	4	६	२	१५	8	32	१	4
3	ममत्तसंयते.	C	६३	بع	६	२	११	१	32	8	4
છ	अप्रमत्तरंगतें-	ul9	<u> ७</u> ९ <u>५</u> ८	4	ક	2	९	5.	3 8	- 8-	4
		१७	45	الع	દ્	१	6	0	३१	१	4
	1 6	२ ७	५६	ام	ક	8	९	0	38	१	4
		३ ७	५६	4	ક	१	९	0	38	₹ ,	بر
=	· ·	8 0	५६	4	ક	१	९	0	३१	१	بع
		4 9	५६	4	ક	१	९	0	३१	१	4
1	पे १	रं ७	५६	٠,	ઇ	8	९	0	३१	3	4
		و ا د	२६	4	8	8	<u> </u>	0	?	<u> </u>	<u> </u>
	I 🔼	१७	99	بع	ઠ	१	4	0	8	3	4
1		२ । ७	२१	4	ક	१	ន	۰	8 ;	3	4
٩	1 -	३ ७	२०	٦	ઇ	8	વર	0	१	₹.	4
		ઇ હ	१९	4	ક	१	ຈຸ	0	ζ,	8	4
	भा गें.	4 9	१८	ч	ક	१	१	0 '	3	3	4
१०	_ ् सृक्ष्मसंपरायेः	Ę	१७	4	8	- ?	•	<del></del> '	<u> </u>	<u> </u>	4
18	उपशांतमोहं.	- 7	1 8		0	3	0	•	·	•	-
88	क्षीणमोहं.	<u> </u>	1 8	0	0	3	0	0		0	6
१३	सयोगी केवली		1	•	0	- 3	0	0	•	•	s
१४	अयोगीकेवलीय		0	0	0	•	•	<u> </u>	c	0,	0

ए च उद गुणगणे वंधयंत्र जाणवो.

हवे बांधेली प्र ति, पोत पोतानो बाधा ालक्यें विपा दे ाडे, जे ाटे बंध पढ़ी उदय करे, तिहां प्रथ उदयलक्षण ता ते सरा णी उदीरणा करण विशेष तेनुं पण लक्ष्ण हेवापूर्व चौद गुणनाणा श्रियीने उद य स्वामिल्व विवरे हे.

> दर्ग विवाग वेञ्रण, ुदीरण मपति इह इवीस सयं॥ सतर सयं मिश्चे मी, स सम्म ञाहार जिण्णुद्या॥१३॥

अर्थ-( उद्विवागवेअण के० ) कर्मरस ं विषा । । । वेद्युं, ते उद्दयः ने ( सुद्दीरणमपित के०) उद्दयकाल अण पदोंचे खेंचीने वेद्युं, ते उद्दीरणा जाण वी. (इद्दुवीससयं के०) एवी एएकशोने बावीश कर्मप्रकृति उदें होय ने (सत रसयंमि के०) एकशोने सत्तर प्रकृतिनो उद्दयं, मिथ्यात्वशुणावाणे होयं, के मके ए गुणावाणे ( मीस के० ) मिश्रमोहनीय, ( सम्म के० ) सम्यक्तव । । ह्री य, ( आहार के० ) आहारकिक, अने ( जिण के० ) जिननामकर्मे ए पां च प्रकृतिनो ( अणुद्या के० ) उद्दयं न होयं ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १३॥

त्यां उद्य एटले बांधेलां जे कमे, तेनो जे विपाक एटले तीव्र, ंद, घातीडी, श्रामित्री, कटुक, मिश्र, इत्यादिक रस, सहेजें उद्य ाल आवे धके वेदे, जोग वे, ते उदय कहीयें. अने जे कमेदलने उदयकाल, अण आवे धके जीव पोतातुं करणवीर्यविशेष तेणे करी उदयाविकामांहे आणी अप्राप्तकालें जोगवे, ते उदीरणा कहीयें, तेथी उदयना बे जेद हो. एक उद्योदय अने बीजो उदीरणोदय. त्यां अहीं सामान्यपणे गुणवाणां जीव जेदादिक विवक्ता कह्या विना सर्व जीव नी अपेक्षायें एकशो वावीश प्रकृति होय, जे जणी सम्यक्त्वमोह्नीय अने मिश्र मोहनीय, ए वेप्रकृति बंधें न लेखवी अने उदय उदीरणायें विशेषनणी नि लेख

ववी, तेथी ज्ञानावरणादिक एकशोने बावीश प्रकृति खेवी.
हवे गुणवाणादिक विशेषापेक्षायें उदय प्रकृतिविचार पूछे, त्यां प्रथम मि
ध्यात्वगुणवाणें सर्व मिध्यात्वी जीवनी अपेक्षायें एकशोने सत्तर प्रकृतिनो उद य लाने. तेम उदीरणायें पण एकशो सत्तर लाने, केमके मिश्रमोह्नीयनो उद य, मिश्रगुणवाणेज होय अने सम्यक्त्वमोह्नीयनो उद्य, चोथा गुणवाणाधी क्षेत्र ते सातमा गुणवाणा सुधी होय, अने आहारकश्रीर, तथा आहारक अंगोपांग, ए वे प्रकृतिनो उद्य, चोद्द पूर्वधरने हे ते प्रमत्तगुणवाणे लाने. तीथी र में दल ने उदय, चो । एताए। थी मिने । र गुण ताणा लगें हो . पण प ं ोह्मपणुं तीथें रने नज होयः तीथें र । मेनो रसोदय ने तेरमें ने उदमे एताणे होय. निर्ध रने ि ध्यात्व, सास्वाद , िश्च ने उप ं ोह. ए चार गुणताणां न होय. ते तीथें रना मेनो दय तेरमें चौ दमें एताणें लाने, पण बीजा बार एताणें लाने, तेथी ए पांच प्रकृतिनों उद , ि ध्यात्व एताणें लाने. ते पांच श्रमुदय उघ ए शो बावीश हिथी। । दिशें होष ए शो सत्तर प्रकृतिनों उदय, श्रागलें गुणताणें जाणवो, पण ए पांच चनो उदय य वस्थान लानशें ते नणी उदय विश्वेद न कह्यो।। १३॥ हवें जे प्रकृतिनों उदय, मिष्यालेंज हो, पण श्रागल नथी ते हहें.

सुहुम तिगा यव मिचं, मि तं सासणे इगारसयं॥ निरयाणुपुविणुदया, अण घावर इग विगल अंतो ॥ १४॥

र्थं-(सु तिग के०) सूद्यात्रि ,(आयव के०) छातपनामकर्म,(मिन्नं के०) मि थ्या मोहनीय, ए पांचनो (मि छतं केण) मिण्यालयुण्ठाणाने अंतें उदयवि छेद थाय, तेथी ( सासएो के॰ ) सास्वादनग्रुणवाएो ( इगारसयं के॰ ) एकशो ने गी र प्रकृतिनो चद्य लाने के के (निरयाणुपुत्रिणुद्या के॰) नरकानु पूर्वीनो इहां दयने ते । हे. अने (अण के॰ ) अनंतानुबंधीया चार, ( यावर कें • ) स्थावरना , ( इग के • ) एकें डि्यजाति, ( विगल के • ) विकलित्रकजाति, एवं नव प्रकृतिना चद्यनो ( अंतो के० ) अंत साखादने होय ॥ इस्रक्त्रार्थः॥ १ ४॥ सूद्मानाम, अपर्याप्तनाम, साधारणनाम, ए सूद्मात्रिक. एनो उदयविहेद प्रथ णवाणे याय, जे नणी सूक्षानामनो चदय, सूक्षा एकेंड्य जीवने होय, अप र्याप्तनामनो उदय, एकें ि्यादिक लिब्धि अपर्याप्ताने होय, साधारणनामनो उदय, निगोदिया जीवने होय ए त्रणे तो नियमा, मिध्यालीज होय तथा आतपनामनो उदय,बादर एकेंड्यिन पर्याप्तावस्थायें होय. ते मिथ्यालीज होय अने अपर्याप्ताव स्थायें साखादनगुण होय, पण त्यां छातपनो उदय न होय. मिथ्यात्वमोहनीय ने रसोदयें तो मिथ्यालगुणवाणुंज होय पण बीजां तर गुणवाणां न होय. बाद्रश्य पर्याप्ता प्रथ्वीकायस्फटिकने आतपनामकर्मनो उदय न होय. ते वेलायें साखा दनगुणनाणुं होय, पण मिध्याल गुणनाणुं न होय.

एम एकशोने सत्तर प्रकृतिमांहेथी ए पांचना उदयनो अंतप्रांत मिथ्यात्वें ज होय.

तेथी सास्वादनगुणवाणे ए शोने गी ार कतिनो चद र हो. अहीं हिष्य प्रश्न करें है, के एकशोने सत्तर प्रकृतिनो उदय, मिय्यात्वें हतो ते ांधी पांच प्रकृ तिनो उद्य टले,तेवारें शेष एकशोने बार प्रकृतिनो उदय रह्यो जोइयें, हे ए शोने अगीआर प्रकृतिनो चद्य, सास्वादने होय ए केम घटे? हीं गुरु चत्तर हेर्डे. के एकशो बार प्रकतिनो चद्य रह्यो तेमांहे पण नर्। पूर्वी ं चद्यपणुं साला द्नें न होय. जे नणी नरकानुपूर्वीनो जदय, व गतियें नरे गति दे ातां वच से समयें होय अने औपशमिक सम्यक्त वमतां नरकगति ।हे न जाय. परं वि थ्या त्वी थकोज नरकगितमांहे जाय. सास्वादनग्रणगणानो धणी नुष्य जेवारें वक्र नरकें जाय, तेवारें पहेले समयें सास्वादननो उदयहे तेवारें ध्य होयतो मनुष्यायु ने तिर्थेचहोयतो तिर्थेचायुनो चद्य होय ए जाएवं ने तेवार पढी सम्यक्त वमतां नरकानुपूर्वीनो चदय होय अने वम्या पढी नरकायुनो चदय होय. जेमाटे मिथ्यात्वी थइ नरकें जाय पढ़ी त्यां नरकें उपन्या थका त्यां पयिशा ख्या पढ़ी चपशमसम्यक्त आवे. वली तेने वमे ते वन्या पढी साखादनगुणवाणुं होय, तेवारें नरकायुनो पण जदयने अने ऋायिकसम्यक्लनो धणी तो श्रेणि राजानी पेरें सम्य क्ल सहितज नरकें जाय अने साखादन औपशमिक ने इरायोपशमि क्लनो धणी, सम्यक्ल वमीने नरकें जाय. तेथी एनो पण अनुदय जाणवी. ते थी शेप ज्ञानावरणीय पांच, दरीनावरणीय नव, वेदनीय बे, मोहनीय प शिर् श्रायुनी चार, नामनी र्राणशात, गौत्रनी बे अने अंतरायनी पांच. एवं एकशोने अगीयार प्रकृतिनो उदय, साखादने होय. अहीं उदयविश्वेद नव प्रकृतिनो होय, ते केवी रीतें ? तोके अनंतानुबंधीया कषायने चद्यें, आगलां एवाणां न हो य तथा स्थावरनाम, एकेंड्यिजाति, ए बे प्रकृतिनो उदय, एकेंड्यिने होय तथा वेइंडियजातिनो उदय, वेइंडियने होय. तेंडियजांतिनो उदय, त्रेंडियने होय याने चौरिं इियजातिनो उदय, चौरिं इिय जीवने होय. अने ए एकें इिय तथा विकलें इियने मिण्याल अने साखादन ए वे ग्रणगणां विना शेप मिश्रादिक बार गुण वाणां न होय, तेयी ए पांच प्रकृति तथा छनंता हुवंधीया चार, एवं नव प्रकृतिनो चदय विधेद, सास्वादने होय ॥ १४ ॥

मीसे सय मणुपुवी, णुद्या मीसो दएण मीसंतो ॥ च उसय मजए सम्मा,णु पुवि खेवा विच्य कसाया॥ १५॥

श्रथ—( मीसेसय के॰) मिश्रगुणवाणे एकशो प्रकृतिनो चद्दय होय, ( मणुपु वीणुद्दया के॰) त्रण श्रानुपूर्वीनो चद्दय, श्रहीं होय नहीं श्रने (मीसोद्दएण के॰) मिश्रमोह्नीयनो चद्दय होय, तेथी। तथा ( मीसंतो के॰) मिश्रमो श्रंत होय, ते वारें ( चच्चय मजए के॰) एकशो ने चारनो चद्दय श्रविरतिसम्यकूदृष्टिगुणवाणे होय. ( सम्माणुपुविखेवा के॰) एक सम्मक्त्वमोह्नीय श्रने चार श्रानुपूर्वी, ए पांच चद्दयप्रकृति क्रेपवियें तेवारें एकशोने चार श्रायः श्रहीं ( विश्रकसाया के॰) बीजा श्रप्रत्याख्यानावरणीय कषायनी चोकडी ॥ इत्यक्त्रार्थः ॥ १५॥

तेवारें एकशो छागीछारमांथी नव काहि, शेष एकशोने बे रहि तेमांहेथी पण देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी छाने तिर्यचानुपूर्वी. ए त्रण छानुपूर्वीनो उदय, मिश्रगुणवाणे न हो य,जे नणी मिश्रगुणवाणे वर्ततो जीव, मरे नहीं. जेथी करी छांतराहें वक्रगति न पा मीयें तेथी छानुपूर्वीनो उदय छहीं न जाने, तेवारें शेष नवाणुं प्रकृतिनो उद य रह्यो छाने मिश्रमोहनीयनो उदय छांहीं पामीयें. केमके एना उदयधीज ए गुण वाणुं होयने, तेथी ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, वेदनीय वे, मोहनीय बा वीश, छागुनी चार, नामनी एकावन, गोत्रनी बे छाने छंतरायनी पांच, एवं शो प्रकृतिनो उदय, मिश्रगुणवाणे होय। छां एक मिश्रमोहनीयनो उदयविहेदः जे नणी मिश्रगुणवाणा विना बीजे को श्रुणवाणे मिश्रमोहनीयनो उदय न होय.

हवे अविरित्सम्यक्दिष्ठ नामे चोथे ग्रणवाणे उदयप्रकृति कहें एकशो चार मांहेथी नवाणं मिश्नें हती अने इहां सम्यक्त बतां पण चारे गितमाहें जीवनी उत्पत्ति लाजें. तेथी वक्रगित करतां चार आनुपूर्वींनो उदय लाजे अने द्वायो पश्मिक सम्यक्दिष्टिने सम्यक्त्वमोहनीयनो उदय होय, माटे ए पांच प्रकृतिनो उ दय जेलतां एकशो चार प्रकृतिनो उदय चोथे ग्रणवाणे लाजे अहीं सत्तर प्रकृति नो उदय विक्षेद थाय, ते कहें . वीजा अप्रत्याख्यानावरणीय कपाय चार॥ १ ए॥

> मणुतिरिऽणु पुवि विछव, ६ छह्ग अणाइऊङ्ग सतर वेछ।। सगसीइ देसि तिरि गइ, आछिन छङोख्य ति कसाया॥ १६॥

अर्थ- तथा (मणुतिरिऽणुपुत्ति के०) मनुष्यानुपूर्वी अने तिर्यवानुपूर्वी, (विज्ञवह के०) वैक्रियाएक, (इह्ग के०) दौनींग्यनामकर्मे, (अणाइफड्ग के०) अनादेयिहक, ए (सतरहेड के०) ए सत्तर प्रकृतिनो जदयविवेद याय तथा वाकी (सगसीइ के०) सत्याशी प्रकृतिनो जदय, (देसि के०) देशविरित पांचमे ग्र

एगणे होय. अहींयां (तिरगइ के०) तिर्यचगित, ( ां के०) तिर्ये ा , (नि के०) नीचैगींत्र, ( वं तोख के०) वद्योतना , (ति साया के०) तिजा प्र । स्यानावरण कषायनी चोकडी ॥ इत्यक्तार्थः ॥ १६॥

मनुष्यानुपूर्वी, तिर्धेचानुपूर्वी, ए बेनो छद्य, ष्य, तिर्थेचगति हि वतर तां वक्रगति जीवने होय. त्यां विरति न होय, के के विरति सिहत जीव परन वें अवतरे नहीं तथा वैत्रिय रीर, वैत्रियश्रंगोपांग, देवि ने नर त्रि ए वैक्रियाएक एनो छद्य देवता तथा नार शिने होय, तेने चोथा एगणणा । छ परला गुणताणां न होय, तेथी ए । छ प्र तिनो छद्य, अहीं वि द पामे. तथा वैक्रियश्ररीर अने वैक्रिय अंगोपांग, ए बे प्रकृतिनो छद्य, ष्य. तिर्थेचने ज व्याययवैक्रिय श्ररीर करतां होय, तेथी देशविरति तथा प्र च गुणताणे एनो छद्य लाने, केमके वि , कुमारादिकने करतां सांनव्यों , तो पण ते छद्य सा नाविक नहीं, तथा अल्पकाल होय तेमाटे अथवा बीने कोइ । रणे हीं कह्यों नहीं. ते वात, ज्ञानवंत जाणे तथा देशविरति, सर्वविरति, गुण ढतां जीवने दौनी ग्य, अनादेय वचन अने अयशःकीर्ति, ए त्रणनो छद्य न होय. ए सत्तर प्रकृतिनो छद्य, चोथा गुणताणां सुधी लाने, पण आगले न लानें ए रीतें मोहनी यनी प्रकृति अप्रत्यास्थानीआ चार कपाय अने देवायु, नर । यु, ए बे । युनी प्रकृति, शेप अगीआर नामकर्मनी एवं सत्तर प्रकृतिनो छद्यविक्षेद चोथे गुणताणो जाणवो. शेप सत्याशी प्रकृतिनो छद्य, देशविरतिनामें पांचमे गुणताणे लाने.

त्यां नीचेगींत्र तो ध्रुवोद्य तिर्थचगितमांहे होय, तेथी तिर्थचने देशिवरित नी अपेक्सयें लेवो अने मनुष्यने चोथे ग्रुणनाणे विह्नेद होय. १ तिर्थचगित, १ तिर्यचायु, ३ न्योतनाम, ४ नीचेगींत्र, ए चार प्रकृतिनो नद्य स्वामी तिर्थच, ते ने देशिवरितयी नपरलां ग्रुणनाणां न होय. नवप्रत्ययें तेने सर्वविरितनो निषे भ कह्यो, जो पण निंदमणीआरनो जीव, देडको हतो तेणे नशनने समयें 'मन्नपाणाईवापं पचलामी'' इत्यादिक न्यार श्रीक्षातासूत्रमध्यें कह्यों हो, पण ते वेजविरितनें रूपें जाणवो, जो सर्व विरितिपणुं तिर्थचने होय, तो केवल ान केम निपेश्राय ? तथा ज्योतनामकर्मनो चद्य, जोपण प्रमत्तगुण णे वैक्रिय शरीर करतां नाधुने होय, तोपण ते लिब्धप्रत्यय नणी विवक्ष्युं नहीं. तथा प्रत्याख्या नावरणीय कपाय चारने उदयें सर्व विरितिपणुं न होय ॥ १६॥

### अ हेर्न ्गसी, पमित आहार जुअल पकेवा॥ थीणितगाहारग इग, हेर्न सयरि अपमते॥ १९॥

अर्थ-(अड़बेर्ड के०) एवं आत प्रकृतिनो उदय विश्वेद थाय, तेवारें शेप (इ गसी के०) एकाशी प्रकृतिनो उदय (पमित्त के०) प्र नगुणताणे होय. (आहार अलपक्षेवा के०) आहार शरीर अने आहारकअंगोपांग, ए वे प्रकृति उगणा एंशी दे प्रकृपीयें, तेवारें ए शिथाय अने त्यां (थीणतिंग के०) थीण कि (आहारग गठेड के०) आहार दिक, एपांच प्रकृतिनो उदय विश्वेद थाय. तेवारें शेप (उसयरिअप ने के०) उहीं तेर प्रकृतिनो उदय, सातमे अप्रमनगुणताणें होय॥ इत्यक्तरार्थः॥ १७॥

तेथी ए आत प्रकृतिनो उद्यविश्वेद देशविरितग्रणताणे होय, एटले मोहनी यनी चार कषायप्रकृति, तथा तीर्यगायु एक, नामकर्मनी वे,गोत्रनी एक. एवं आ व प्रकृतिनो चद्यविश्वेद सत्याशीमांथी याय, तेवारें चंगणाएंशी प्रकृतिनो चद्य रह्यो तेमांहे वली आहारक शरीर अने आहारक अंगोपांग, ए वे प्रकृतिनो उदय चौद पूर्वधर मुनिने श्रीतीर्थकरनी क्रि देखवा निमिनें, तथा सुक्षार्थ संदेह टाल वा निमित्तें, आहारक शरीर आरंनतां, लब्धि प्रयुंजतां होयः तेथी ते उंगणाएंशी मांहे ए वे प्रकृति नेलतां एकाशी प्रकृतिनो उदय, प्रमन्तगुणवाएो लाने एटले झा नावरणीय पांच, द्रीनावरणीय नव, वेदनीय वे, मोह्नीय चौद, मनुष्यायु एक. ना मनी चुम्मालीश, उच्चेगीत्रनी एक, अने अंतरायनी पांच, एवं एकाशीनो उदय वे, ते मांहेथी पांच प्रकृतिनो उदय, छहीं विवेद पामे. जे नणी एक यीण दी, वीजी निङ्गिन् छने त्रीजी प्रचलाप्रचला, ए त्रण निङ्ग स्यूलप्रमाद्वे तेमा टे अप्रमत्तें न होय. तथा आहारकशरीर अने आहारकअंगोपांग, ए वेनो उदय लिब्धप्रत्यय आहारक शरीर उतां विग्र-६पणे, स्रप्रमत्तपणे होय. ते अपेका यें आहारकिकनो उदय अप्रमत्तगुणवाणे पामियें, पण अहीं शा कारणें क ह्यो नहीं ? ते जाणवामां आवतुं नथी। तथा अल्प नणी विवद्धं नहीं तथा "स्व कत टीकामां ए विषे ञ्चाम जर्ले के, ञाहारकिक करनारो चिति. श्रीत्सुकं करी श्वक्य प्रमादवश थायहे, माटे ए पण श्रप्रमत्तने विषे जदयनो श्राथय घटे न हीं. ए विपे आम पण सांनलवामां आव्युं हे के प्रमत्त यतिन आहारकने विरुत क

रीने पत्नी विद्युद्ध परिणा ना वरायी हि। वंत या जिल्ला अप्र च गुणताणां प्र त्यें पामें है, ते कांइ पण स्वल्पकालादि रिणें री पूर्वीचार्ये विवस्युं नथी." ए म त्रण दरीनावरणीय तथा वे नाम कमेनी लीने पांच प्रकृतिनो उद्य, एका शीमां हेथी टाले थके शेष ज्ञानावरणीय पांच, दरीनावरणीय ह, वेदनीय वे, मोह नीय चौद, आयुनी एक, ना नी वेंतालीश, उच्चेंगी नी एक अने अंतरायनी पांच एवं हहों तेर प्रकृतिनो उदय, अप्रमन्तसाधुने सातमे गुणहाणे होय॥ १९॥

सम्मत्तं तिम संघयण, तिस्रग होते बिसत्तरि स्प्रपृवे॥ हासाइ क स्रंतो, सि स्नि स्निस्टि वेस्रतिगं॥ १७॥

श्रधि—त्यां (सम्मन के०) सम्यक्तमोहनीय, (श्रंतिमसंघयणितश्रम के०) वे लां त्रण संघयण, ए चार प्रकृतिनो उदय, (हेड के०) विहेद होय, तेवारें (विसन्तिश्रपुवे के०) वहांतेर प्रकृतिनो उदय, श्रपूर्व रणगुणवाणे होय, त्यां (हासाइवक्षश्रंतो के०) हास्यादिक व प्रकृतिना उदयनो श्रंत एटले विहेद हो य, तेवारें (व्रसिष्ठश्रिनश्रिष्ट के०) वाशव प्रकृतिनो उदय निवृत्तिकरण गुण वाणे होय. तेमांथी (वेश्रतिमं के०) वेदित्रक ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १०॥

व्यां चार प्रकृतिनो उद्यविद्वेद थाय, तेनां नाम कहें हे. एक स स्यक्तमोह नीयना उद्यें ह्यायेपश्चिक सम्यक्त्व पुजिलक होय, तेतो सातमा गुणवाणां सुधी होय, श्वने श्रावमाणी लेइ श्रागले गुणवाणे ह्यायिक तथा श्रीपश्चिक सम्यक्त जीव स्वनावरुचिरूप अपुजिलक होय. त्यां सम्यक्त्वमोहनीयनो उद्य, न लाने तथा प्रथमसंघयणे क्ष्पकश्रेणि करे अने प्रथमना त्रण संघयणे श्रीण मश्रीण श्रारंने, श्रेप श्रादेनाराच, कीलिका अने हेव हा संघयणना धणी श्रीण श्रारंने नहीं. तथी श्रागले गुणवाणे ए त्रण संघयणनो उद्य न लाने, तेवारें वहां तेरमाहेथी ए चार प्रकृतिनो उद्य काढतां, श्रेप बहों तर प्रकृतिनो उद्य श्रावमे गुणवाणे लाने. तेमांथी हास्य, रित, श्ररति, नय, श्रोक, श्रुगुप्सा, ए व मोह नीय पापप्रकृति बन्ने श्रेणिना विद्युद्धपरिणामें श्रारंनना उद्यथी श्र मा गुणवा पाने प्रांत हेदे, तेवारें प्रवांक बहों तरमांथी ह प्रकृतिनो उद्य विश्वेदे,तेवारें श्रेप वात्र प्रकृतिनो उद्य विश्वेदे, तेवारें श्रेप श्रारंने ते,

प्रविदोदय हेदे पही पुरुषवेदोदय हेदे, पही पुंस वेदोदय हेदे पही संज्वलना नेधादिक चारनो छदयवि छेद होय पुरुष वेदें श्रेणि में ते, प्रथ प्रुष्ठ वेदोदय वि छेदे, पही स्त्री वेदोदय वि छेदे, पही नपुंस वेदोदय वि छेदे, ए पही संज्वलना षायनो छदय वि छेदे नपुंसकवेदें श्रेणि में ते, प्रथम नपुंस वेदोदय हेदे, पही स्त्रीवेदोदय हेदे, पही पुरुषवेदोदय हेदे॥ १ ए॥

> संजलण तिगं बेड, सही सुहुमंमि तुरिच्य लोजंतो॥ वसंत गुणे गुण स,िरिसह नाराय इग छंतो॥ १ए॥

थ-छने (संजलणितगं के०) संज्वलनित्रक, ( ढढें डे के०) ए ढ प्रकृतिनो उद्यविद्वेद थाय, तेवारें (सिंह्युसुंमि के०) स्रक्षासंपराय दशमे ग्रणवाणे शाव प्रकृतिनो उदय होय, तिहां (तुरिछलोजंतो के०) संज्वलननी चोकडीमांहेला चोथा लोजना उद्यनो छंत थाय, तेवारें ( उवसंतग्रणे के०) उपशांतमोहगुण वाणे (ग्रणसिंह के०) छोगणशाव प्रकृतिनो उदय होय, त्यां ( रिसहनारायङ्ग छंतो के०) क्षजनाराचसंघयण छने नाराचसंघयण, ए बे प्रकृतिनो उदय, विद्वेद पामे ॥ इत्य रार्थः ॥ १ ए ॥

पठी संज्वलनकोध, मान, माया, ए त्रणनो उदयविद्वेद थाय, केमके एने उद्यें, सूद्धा संपराय चारित्र न होय तेमाटे ए उ प्रकृतिनो उदयविद्वेद थाय तेवा रें शेष झानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय ठ, वेदनीय वे, मोहनीय एक, आधुनी एक, नामनी ओगणचालीश, गोत्रनी एक, अने अंतरायनी पांच एवं शाव प्रकृतिनो उदय सूद्धासंपरायनामा दशमे गुणवाणे लानें. त्यां चोथा संज्वलनालोननो उद्य वेदाय, केमके संज्वलनने उद्यें यथाख्यातचारित्र हणायवे, अने आगले चार गुण वाणे यथाख्यातचारित्र होय तेथी त्यां संज्वलनो लोन न होय, तेवारें शेप ओ गणशाव प्रकृतिनो उद्य उपशांतमोह वीतरागवद्धस्थनामा अगीआरमे गुण वाणे लाने, त्यां क्पननाराचसंघयण, वीजं नाराचसंघयण, ए वे नामकमेनी प्रकृतिनो उद्य विद्वेद थाय, केमके वज्रक्पननाराचसंघयण विना वीजा संघय णना थणी, क्ष्पकश्रेणि आरंने नहीं, अने आगलां त्रण गुणवाणानी प्राप्ति क्ष्पकश्रेणि विना थाय नहीं. तेथी ए वे संघयणनो उद्य न होय माटे पूर्वोक्त आगणशाव प्रकृतिना उद्य माहेथी वे संघयणनो उद्य टाले थके॥ १०॥

# सगवन्न खीण इचरिमि, निद्द गंतो अचरिमि पणव ।॥ नाणंतराय दंसण, च बे सजोगि बायाला ॥ २०॥

अर्थ-(सगवन्न के०) तेवारें सत्तावन प्रकृतिनो दय ते (खीण चिरिम के०) ह्यीणमोहगुणगणाना गेला दिचरमस यथी वाँग बीजा स यलगें हो य. (निद्दुगंतोअचिरिम के०) त्यां वली निद्दा ने प्रचला ए वे प्रकृतिनो जदयि हेद थाय, तेवारें गेले समयें (पणवा के०) पंचावन प्रकृतिनो जदय होय त्यां (नाण के०) ज्ञानावरणीय पांच, (अंतराय के०) अंतराय पांच, (दंस चल के०) व्दीनावरणीय चार, एवं चौद प्रकृतिनो जदय, (हेल के०) गेदाय, तेवारें (सजीग के०) सयोगीगुणगणे (बायाला के०) बेतालीश प्रकृतिनो जदय होय ॥६०॥

शेप ज्ञानावरणीय पांच, दश्नीवरणीय ह, वेदनीय हे, ायु ए , नामनी सा डत्रीस, गोत्रनी एक, छांतरायनी पांच, एवं सत्ताव प्रकृतिनो चद्य वीतरागढ स्थ क्षीणमोह ग्रणगणाना इचरिम एटले ए ग्रणगणानो ।ल, श्रंतर हूर्न प्रमाणने तेना ठेला वे समय ते मांहेलो प्रथम ठेलाथी पहेलो समय त्यां लगें होये. त्यां निहा थने प्रचला,एवे दर्शनावरणीयनी प्रकृतिनो उदय विश्वेद पामे. हीं केटलाए र्य कहेरे के उपशांत मोहेंज वे निड़ानो उदय होय पण क्वीणमोहें न होय तथा सन रिनामे वहा कमें यंथना अनिप्रायें तो क्ष्पकश्रेणिना धणीने ति वि द नणी निज्ञानो उदय, निपेध्योठे. पण आ ठेकाणे ग्रं जाणीयें, केवा अनिप्रायधी निज्ञानो उदय, ऋपकने मान्यों ? ते जणातुं नथी ते अपेक्षायें बारमा गुणवाणाने हेहें सम यें पंचावन प्रकृतिनो चद्य लाने, त्यां चौद प्रकृतिनो चद्यविहेद थाय, तेनां नाम क हेरे. ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, ए चौद प्रकृति त्मगुणवातीनीने ते विद्यक्षरिणामें करी उदय तथा सत्तायें साथंज टले तेवारें केयल क्वानादिक आत्मगुणनिश्रयनयानिप्रायें वारमा गुणवाणाना अंत समयें ध्यने व्यवहारनयथी तेरमा ग्रणगणाने पहेले समयें, प्रगट थाय. त्यां केवलका न, केवल दरीन, तथा दान, लान, नोग, उपनोग, वीर्य, ए पांच ऋायिक लिब्ध गृण प्रगटे तेवारें पूर्वोक्त पंचावन प्रकृतिमांहेथी चौद प्रकृतिनो उदय विश्वेद थ ये पके जोप एकतालीश प्रकृतिनो चढ्य रहे छाने मूलपाठें वेंतालीशनो चढ्य क ह्योंने ते केवी रीतेंं ? तेनुं व्यागली गाषायें समाधान करेने ॥ २०॥

तिज्जुदया रलाथिर, खगइ ग परित्त तिग सं ।णा॥ अगुरु लु वन्न च निमि, ण तेअ म्माइग संघयण॥ ११॥

थै—(तिबुद । केण) त्यां । थिंकरना मैनो उदय होय । दे वें । ली ही. । हीं ( उरल केण) औदारि ६ , ( थिर केण) अथरिदक, ( गई ग केण) । गिति , (पिर तिग केण) प्रत्ये हि , ( संवाणा केण) वसंस्थान, ( गुरु ल केण) गुरुल ए , (व च व केण) वर्णचतुष् , (निमिण केण) नि । । । (ते केण) ते सशरीर, ( म्मा केण) । मेणशरीर, ( इगसंघयण केण) ए वज्नक्षचनाराचसंघयण एवं सत्तावीश प्रकृति ॥ इत्यक्षरार्थः॥ ११ ॥

जे ाटे रसोदयनी पेक्सपें रीने जिनना मेनो चदय हीं लाजें ते एो करीने पोतानी देशनायें च विंधसंघ स्थापे. बीजो जिननामनो बाधाकाल, ंतर र्तनो ह्यो ते प्रदेशोदयनी पेक्सयें जाणवो जिननामने प्रदेशो द्य थये के पण बीजा जीवनी अपेक्सयें तेनी । इस ऐश्वयीदि वधे पण ते हीं विवक्ष्युं थी छहीं सघले स्थानकें रसोदय विवक्ष्यों हे तेथी ते एकता लीश दि दि जिनना दिय जेलतां नाम मेनी डिजीश तथा मनुष्यायु नी ए, वेदनीयनी बे ने जैंगीं नी एक. एवं वेंतासीश प्रकृतिनो चद्य, सयो गी गुण णे लाने, त्यां त्रीश प्रकृतिनो चद्य विश्वेद होय, ते कहेरे. श्रीदारिक शरीर अने औदारि अंगोपांग, ए औदारि दिक अस्पिर अने अग्रुन ए अस्पिर चित्रायोगित ने अग्रुनिवहायोगित, ए खगिति ६क, प्रत्येकनाम, स्थि रनाम, शुननाम, ए प्रत्येकत्रिक. समचतुरस्त्र, न्ययोध, सादि, वामन, कुञ्ज, छने दुंम ए व संस्थान अग्ररुलघु, जपवात, पराघात ने जञ्चास, ए अग्ररुलघुच तुष्क. वर्ण, गध, रस ने स्पर्श. ए वर्णचतुष्कः एवं त्रेवीश प्रकृति थइ. निम्मीण नाम, तैजसश्रीरनाम, कामणशरीरनाम, वज्रकपननाराचसंघयण, ए सत्तावी श प्रकृति ।ययोग रुंधे यके काययोगने अनावें करी अयोगीगुणवाणे एनो वद्य न होय॥ ११॥

सूसर दूसर साया, ऽसाए गयरं च तीस वुहेड।। वारस छाजोगि सुनगा, इक जसऽनयर वेछिणिछं ॥ १०॥

अर्थ-(सूसर के०) सुखरना में, (दूसर के०) स्वरना में, तथा (सायाऽसाएगयरंच के०) शातावेदनी अने अशातावेदनी ए दिली एक प्रकृति। ए रीतें (तीसबुक्केड के०) त्रीश प्रकृतिनो उदय विकेदें, तेवारें (बारसञ्जांगि के०) बार प्रकृतिनो उदय अयोगी ग्रुणवाणे होय. तेनां नाम हेंग्नें (सुनग के०) सौनाग्यनामकर्म, (आइ के०) आदेयनाम, (जस के०) यशःकीर्ति नाम, (अन्नयरवे अण्छं के०) व मांहेलुं अनेरुं एक वेदनीय, एवं चार प्रकृति यह ॥

ए पुजलविपाकनी प्रकृति जीवने कायसंबंध टक्के थके इहां प्रदेश घन करे. अने वचनयोग रुंध्या पढ़ी चौदमे ग्रुणवाणे स्वरितरोधें सुस्वरें इःस्वरनामनो उदय विवेद पामे. ए उंगणत्रीश यइ तथा शातावेदनीय उदय प्राप्त होय तो अशातावेद नीयनो उदय विद याय अने अशातावेदनीयनो उदय प्राप्त होय तो ातावेदनी यनो उदय विद याय एम वेद्ध प्रकृतिमांहेथी एक प्रकृतिनो उदय वेदे, पण नाना जीवनी अपेक्तायें वेद्धनो उदय अयोगी ग्रुणवाणे जाने तथापि एक जीवने स्तोककाल नणी एकनोज उदय पामीयें, ते अपेक्तायें त्रीश प्रकृतिनो उदय विवे द सयोगी ग्रुणवाणे कह्यो माटे बेतालीशमांहेथी त्रीश प्रकृतिनो उदय विवे द सयोगी ग्रुणवाणे कह्यो माटे बेतालीशमांहेथी त्रीश प्रकृतिनो उदय टब्यो, तेवारें शेप वेदनीय एक, आग्रु एक, नामनी नव, गोत्रनी एक, ए बार प्रकृतिनो उदय चोदमा अयोगी ग्रुणवाणाना चरम समयसुधी जाने अने वेद्धे समय ए वार प्रकृतिनो उदयविवेद थाय, ते कहेते. सौनाग्यनामकर्मजीवविपाकी, आवे यनामकर्मजीवविपाकी, यशनामकर्मजीवविपाकी, जेनो उदय विवेद सयोगी ग्रुणवाणाने प्रांतें नथी तथा शाता अशाता माहेलो एक वेदनीयकर्मजीविपाकी। कि. ए चार प्रकृति जीविपाकीनी जाणवी॥ ११॥

तस तिग पणिदि मणुञ्जा, छ गइ जिणु चंति चरिम सम यंतो ॥ छद्छ सम्मतो ॥ छद्छबुदीरणया, परमपमताइ मग गुणेसु ॥ (पाठांतरे ) पमताई सगतिगुणा ॥ १३॥ पाठांतर गाया॥ जंवेच्यणि च्याहार इग,यीणितिग नराछ च्यड पमत्तता ॥गुणयालस जोगिछदी,रणंतु च्यणुदीरगु च्यजोगी ॥१४॥ थे—( सितग के०) त्रसित्र , (पिषंदि के०) पंचेंदि जाति, (मणुआ जगई के०) ज्यायु ने नुष्यगित, (जिणु ति के०) जिनना ने गाँ , ए तर प्रकृतिना जदयनो अयोगी गुणनाणाने (चिर समयंतो के०) अंतसमयें अं थाय. एटले (जद्जेसम्मनो के०) जदयाधिकार संपूर्ण थयो. ( द्जबुदीर णयापर प नाइसगग्रणेसु के०) जदयनी पेरें जदीरणा जाणवी. पण एटलुं विशेष जो, अप्र नादिक सात गुणनाणे जदीरणात्रि न्यून जाणवो. पानंतरें (प ना ईसगितगुणा के०) अप्र तादिक सात णनाणे जदयनी प्रकृति कही हो, ते थकी जदीरणात्रि णुं हेवुं. ॥ १३॥ हवे पानं र गायानो करार्थ कहेहे.

(जंवे णि के०) जे वेदनीय वे तथा ( हार ग कें०) हार दि , (यीणितग के०) यीणि हित्रक, (नराठ के०) व्यायु, ए (अड के०) व्यायु प्रकृतिनो ठदीरणानो विश्वेद (पमनता कें०) प्रमतग्रणाणे याय तेथी अप्रमनादिक ग्रणाणे ठदयथी ठदीरणा त्रण त्रण प्रकृतिनी ठठी करीयें, तेवारें यावत् (ग्रणयालसन्नोगिठदीरणंतु के०) ठंगणचालीश प्रकृतिनी ठदीरणा सयोगी ग्रणाणे होय (अणुदीरगुअनोगी के०) अने अयोगीग्रणाणे अ दीर होय॥ इत्यक्तरार्थः॥ १४॥

त्रसना ,बादरनाम,पर्याप्तिनाम ए त्रसित्रक ए जीवविपाकीनी, एवं सात. पंचें डियजातिन कमे,पंचेंडिय एवा उद्यिकपर्यायहेतु नवचरमसमय सुधी होय,एवं छात, मनुष्याग्रेप्रकृति ते मनुष्य नविपाकीनी नणी नवचरमसमयसुधी एनो उद्य होय, एवं नव. मनुष्यगतिनामकमे पण मनुष्य एवा उद्यिकपर्यायहेतु एवं दश्च, जिननाम कमेपण तीर्थेकरपर्यायहेतु चरमसमयसुधी होय. एवं छगी छार प्रकृति छड् छने उच्चेगींत्र पण जीवविपाकी नणी चरमसमयसुधी लाने ए बार प्रकृतिना उद्यनो तथा एनी सन्तानो विवेद छयोगी ग्रणवाणाने वेहेले स मर्चे होय, जेमार्टे तेवार पढी कमेकलंकरिहत मनुष्यत्वादिक उद्यिक पर्याय छन्निय सहजानंदस्वरूपी, ग्रुक्तिपयोगी, ध्येयसिक्दशा छनुनवे. तेथी ए उदय विवेद छन्तेत होय ॥ इति श्रीकमेस्तवटवार्थे उदयाधिकारः समाप्तः ॥

## ॥ दय यं कम्॥

	गुणटाणे उदयप्रकृति	मूलपकृति.	उत्तरमकृति.	ज्ञानावरणीय.	दशैनावरणीय.	वेदनीय.	मोहनीय.	आयुःकर्म.	नामकी.	गोत्रकर्म.	अंतरायकर्म.
		मि	עו	श्रीक	िक	ीं	THE STATE OF	"	चा	ਜ`   -	ন
	ओघें.	ح	१२२	ب	९	२	२८	8	६७	२	4
?	मिथ्यात्वें.	۲	११७	ч	<u> </u>	२	२६	8	દ્દ છ	8	4
ર	सास्वादने.	۲	१११	ч	९	7	२५	8	<b>पे</b> ९	२	4
3	मिश्रें.	c	१००	ч	९	२	२२	8	48	2	4
8	अविरते.	٧	१०४	ч	<u> </u>	<b>ə</b>	२२	8	५५	२	ч,
9	देशविरतें.	c	८७	ч	٩	२	१८	<u>-</u>	នន	7	ч
Ę	ममत्तसंयतें.	c	८१	4	<u> </u>	२	१४	3	<del>।</del>	२	4
0	अप्रमत्तसंयतें.	c	७६	ч	Ę	<b>ર</b>	१ध	8	ध२	8	4
c	अपूर्वकरणे.	c	७२	4	દ	२	१३	<u></u>	<b>3Q</b>	8	4
0,	अनिष्टत्तिकरणें.	c	ક ક	4	હ	ء م	9	<b>ء</b>	<b>३</b> ९	१	4
₹0	सुक्षमंपराये.	c	60	4	w	ء ح	<del>ै</del>	3	<b>३</b> ९	8	4
155	उपशांतमोहं.	9	५९	4	દ	<del>-</del>	0	- 2	<del></del>	2	4
१६	र्शाणमारें.	9	U <sub>i</sub> g Uu	ч	E, u	ے م	•	8	३७	8	4
13		ક	કેર્		•	—– २	0	8	36	2	•
1 :	अपागीकवलीयें.	3	१२	· 		₹	0	3	९	3	•

ह्वे द सह ारिणी णी उदीरणा हीयें यें देगे यो दीरणो दय, ते ध्यें दीरणोद दीरणाना रणजीविवरोष तेणे री जे सहज हे उदयावित उपरां दितया था रस । भी उदयावित हि ।णी नोगवे तेना उदयथ ही जे विरोषस्वाम् त्वपणुं तेने उदीरणा हीयें हैथें. ते उंधें तथा मि व्यात्वादि ग्रणवाणों जेम उदयस्वामित्व ह्यं, ते त्यां तेटलुंज उदीरणा स्वाम्त्व पणुं जाण ं.इहां उदय उदीरणानो विशेष नथी, पण एटलुं विशेष जे प्र त्त ग्रणवाणाने अंते थीण दीहि , अने आहार दिक, ए पांच प्रकृतिनो उदयविष्ठेद ह्यो अने उदीरणा विश्वेद ो थीण दीनिहा ए , निहानिहा बे, प्रचला प्रचला प्रचला अवाहार दिक, शाता शातावेदनीय बे, अने ध्याप्तुं. ए आठ प्रकृतिनी उदीरणा विश्वेद होय, तेवारें अप्र त्तरणवाणों रोष तहों तेर प्रकृतिनी उदीरणा होय. जेमाटे जुष्या प्र ना योगें री उदीरीयें तेथी बहु ।ल वेदवा योग्य ते थोडा कालमां वेदी, अपवर्त्तन करणविशेषें री वेदे तेथी सोप म आग्रु होय, अकाल मरण पामे ने प्र तादिक ग्रणवाणे अकाल मरण न होय तथा शाता अश्वातानी उदीरणा पण प्रमत्तपणे होय ने उदय सर्वग्रणवाणे लाजे, तथी ए त्रण प्रकृतिनो उदय, उदीरणा विना अप्रमत्तें लाजे ॥ १३ ॥

द्वे पाठांतरें चोवीशमी गायानो अर्थ कहें छे. जे नणी शाता अशाता ए वेहु वेदनीय प्रमुख प्रमन्तगुणठाणे पण उदीरी वेदे पण अप्रमन्तपणे उदीरणा नथी.तेथी अप्रमनादिक आठ ग्रणठाणे ए प्रकृति उनो उदय होय पण उदीरणा न होय. त या आहारकशरीर अने आहारक अंगोपांग, ए वे प्रकृति नामकर्मनी छे. तेनो उदय तथा उदीरणा प्रमन्तगुणठाणे होय पण अप्रमनें न होय अने थीण ही. नि इानिइा तथा प्रचला प्रचला, ए त्रण दशैनावरणीयप्रकृतिनो उदय अने उदीर णापण प्रमन्तपणे होय पण अप्रमन्तगुणठाणे न होय, एवं सात. तथा मनुप्पायु पण अप्रमन्तपणे उदीरे नहीं, तथी अकालमरण न होय. तेमाठे ए आठ प्रकृतिनो उदीरणाविष्ठेद प्रमन्तगुणठाणे होय. तेवारें शेप झानावरणीय पांच. दशैनावरणीय छ, मोह्नीय चौद,नामनी वेतालीश, गोत्रनी एक, अंतरायनी पांच. ए तहोंतेर प्रकृतिनी उदीरणा अप्रमन्तगुणठाणे होय. एम अपूर्वकरणादिक गुणठाणे पण उदयथी त्रण प्रकृति फेर उदीरणायें उठी जाणवी। एम यावत सयोगीगुणठाणे उदय वेता जीश प्रकृति अने उदीरणा उगणवालीश प्रकृतिनी होय. यने अजोगी गुणठाणे

चदीरणा नथी योगने अनावें स स्त योगरिं होय ने चदीरणा ने त्रि रण विशेषकरणविधियोगवल ए श्रिपयीयना हे तेथी रणविधिने अनावें योगी नगवंतने यद्यपि अनंतवल हुंतो पण नेइ में चदेरी न शके, ते नणी अ दीरक कह्यं, तेमज १ वंधन, १ सं म, ३ उद्दर्शना, ४ अपवर्त्तना, ५ उपश ना, ६ नि धत्त, ७ निकाचनादिकरण पण अयोगीगुणनाणे न होय, जो पण बार उदयवती प्रकृतिमां से अनुद्यवती तहों तेर प्रकृति स्ति सं में सं ावती ही, पण सं कमणकरण न होय, ए तल्लहे॥ १४॥

एसा पयडी तिगुणा, वेञ्जणि ञाहार जुञ्जल थीण तिगं॥ मणु ञा पमत्तंता,ञजोगिञ्जणुदीरगो नयवं॥ २५॥ दीरणा सम ता॥

श्रथं— (एसापयडी के॰) ए उदीरणाप्र ति ते उदयथ ी (तिग्रंणा कें॰) त्रण कणी जाणवी (वेश्रण के॰) वेदनीय बे, (श्राहारज्ञश्रल के॰) श्राहारक हिक, (श्रीणतिगं के॰) श्रीणदीत्रिक, (मणुश्रात के॰) श्रागुं, ए श्राव प्रक तिनी उदीरणा, (पमत्ता के॰) प्रमत्तगुंणवाणाना श्रंत लगेंज होय. (श्रजो गिश्रणदीरगोनयवं के॰) श्रयोगी नगवान् सर्वकमेनो जुदीर जाणवो. (उदीरणासम्मत्ता के॰) ए उदीरणाधिकार संपूर्ण थयो॥ १५॥

ए उदीरणा अप्रमत्तादिक सात गुणवाणे उदयथी त्रण प्रकृति ओढी णी जाण वी, केमके ए सर्वगुणवाणे मूलनी व प्रकृतिनी उदीरणा होय. एटले वेदनीयनी व, अने मनुष्यायु, ए त्रण प्रकृतिनो उद्य होय पण उदीरणा न होय, तेथी सूल प्रकृति व तेनी. उत्तरप्रकृति तहोंतेरनी उदीरणा लेवी, तेथी अप्रमत्तगुणवाणे वहीं तेर प्रकृतिनो उद्य अने तहोंतेर प्रकृतिनी उदीरणा तेमांहेथी एक सम्यक्तमोह नीय अने अहिनाराच,कीलिका अने वेवहुं, ए त्रण संघयण, एवं चार प्रकृतिनी उदीरणाविधेट यये थके आवमे गुणवाणे अोगणोतेर प्रकृतिनी उदीरणा होय, तेमांथी हास्य, रित. अरित, नय, शोक, अगुण्सा, ए व प्रकृतिनी उदीरणाविधेर. नवमे गुणवाणे त्रेशव प्रकृतिनी उदीरणा जाणवी. तेमांथी त्रण वेद, संच्य जनो कोथ, संज्यलनो मान, अने संज्यलनी माया, ए त्रण संज्यलनी प्रकृति मली व प्रकृतिनी उदीरणा विधेद थये थके दशमे गुणवाणे सत्तावन प्रकृतिनी उदीरणा विधेद यये थके दशमे गुणवाणे सत्तावन प्रकृतिनी उदीरणा विधेद यये थके मोहनीयनी उदीरणा विधेद

थइ, तेवारें शेष पांच मेनी प्रकृति एटले ज्ञानावरणीयनी पांच, दरीनावरणीयनी व, ना नी गेगणचालीश, गोत्रनी ए ने रायनी पांच. ए प्यन कतिनी उदीरणा अगी रिमे गुणवाण होयः तिहां क्षन रिश्च ने नाराच ए बे प्रकृतिनी दीरणावि होर दोष चोप प्रकृतिनी चदीरणा द्वीण बिरुणगणे होय, तेना ण नांगा करतां स याधि वितिशेष निष् अने प्रचलानी उदीर णा विज्ञेदे अने विलिशेषें ज्ञानावरणीय पांच, दशनावरणीय चार अने अंतराय पांच, एवं चौद प्रकृतिनी उदीरणा विश्वेदे, तेवारें बार । ग्रुणनाणानी अंत आवलीयें ना कमेनी साड शिश, ने गो नी एक एवं आडत्रीश प्रकृति नी उदीरणा लाने जे नणी ज्ञानावरणादि अंतआविलयें उदीरवा योग्य श्रिध दल नथी रह्यां,ते ाटे शुं उदीरें ? तथा सयोगीगुणवाणे जिनना य होय, तेथी तेनी बदीरणा पण लाजे. ते जेलतां आडत्रीशना कमेनी अने ए क उच्चैर्गोत्र, एवं वंगणचालीशनी उदीरणा होय, तिहां प्रांते ए जिननाम, औदा रिक दिक, अस्थिर, अग्रुन, खगति दिक, प्रत्ये त्रिक, संस्थान व, अग्रुरुलघु, व पघात, पराघात, उस्वास,वर्णचतुष्क, तैजसनाम, ाम्मेणनाम, निम्मीणनाम, प्रथ मसंघयण, खरिक, सौनाग्यनाम, दियना , यशःकीर्त्तिनाम, त्रसत्रिक, नर गति, पंचें इियनाति, व ौर्गात्र. ए वंगणचालीश प्रकृतिनी वदीरणाविहेद अये अके चौदमे गुणवाणे अनुदीरक नगवंत होय ॥ चदीरणाधिकार सपूर्ण थयो ॥ २५ ॥

चदीरणा नथी योगने छानावें समस्त योगरिहत होय याने चदीरणा तो त्रिकरण विशेषकरणविधियोगबल एकार्थपर्यायनामने तथी करणविधिन यानावें छायोगी नगवंतने यद्यपि छानंतबल हुंतो पण कोइ कमें चदेरी न शके, ते नणी छानुदीरक कहां, तेमज १ वंधन, १ संक्रम, ३ उद्दर्भना. ४ छापवर्त्तना, ७ उपशमना, ६ निधन, ७ निकाचनादिकरण पण छायोगीगुणनाणे न होय, जो पण बार चटयवती प्रकृतिमांहे छानुदयवती तहोंतेर प्रकृति स्तिनुक संक्रमे संक्रमावती कही, पण सं इ मणकरण न होय, ए तल्वने ॥ १४ ॥

एसा पयडी तिगुणा, वेञ्जणि ञाहार जुञ्जल छीण तिगं॥ मणु ञा पमतंता,ञजोगिञ्जणुदीरगो नयवं॥२०॥ वदीरणा सम्मता॥

अर्थ- (एसापयडी के०) ए उदीरणाप्रकृति ते उदययकी (तिगुंणा कें०) त्रण कणी जाणवी. (वेद्यणि के०) वेदनीय वे. (आहार ज्ञञ्चल के०) आहारक दिक, (यीणितगं के०) यीणि हीत्रिक, (मणुञ्चाउ के०) मनुष्यापुं, ए आत प्रकृतिनी उदीरणा, (पमनंता के०) प्रमन्तगुणनाणाना अंत लगेंज होय. (अने गिञ्चणुदीरगोन्यवं के०) अयोगी नगवान् सर्वकर्मनो अनुदीरक जाणवो. (उदीरणासम्मना के०) ए उदीरणाधिकार संपूर्ण थयो॥ १०॥

ए चद्दीरणा श्रप्रमत्तादिक सात गुणुगणे चद्द्यणी त्रण प्रकृति श्रोठी कणी जाण वी, केमके ए सर्वगुणुगणे मूलनी उ प्रकृतिनी चद्दीरणा होय. एटले वेटनीयनी के, श्रमे मनुष्यायु, ए त्रण प्रकृतिनो चद्द्य होय पण चद्दीरणा न होय. तेथी मूल प्रकृति उ तेनी, चत्तरप्रकृति तहोंतेरनी चद्दीरणा लेवी, तेथी श्रप्रमत्तगुणुगणे ठहीं तेर प्रकृतिनो चद्द्य श्रमे तहोंतेर प्रकृतिनी चद्दीरणा तेमांहेथी एक सम्यक्तमोह नीय श्रमे हिनाराच, कीलिका श्रमे ठेवछुं, ए त्रण संघयण, एवं चार प्रकृतिनी चद्दीरणाविष्ठेद थये थके श्रावमे गुणुगणे श्रोगणोतेर प्रकृतिनी चद्दीरणा होय, तेमांथी हास्य, रित, श्ररति, त्रय, शोक, अगुप्सा, ए व प्रकृतिनी चद्दीरणाविष्ठेद, नवमे गुणुगणे त्रेशव प्रकृतिनी चद्दीरणा जाण्यी. तेमांथी त्रण वेद, संज्य जनो कोथ, संज्यलनो मान, श्रमे संज्यलनी माया, ए त्रण संज्यलनी प्रकृति मली व प्रकृतिनी चद्दीरणा विष्ठेद थये थके दशमे गुणुगणे सत्तावन प्रकृतिनी चद्दीरणा विष्ठेद श्रमे गुणुगणे सत्तावन प्रकृतिनी चद्दीरणा विष्ठेद

यइ, तेवारें शेष पांच मेनी कृति एटले झा वरणीयनी पांच, दशैनावरणीयनी ढ, ना नी ोगणचालीश, गोत्रनी ए रायनी पांच. ए प्य ने ं चदीरणा अगी रिमे गुणवाण होयः तिहां क्षननाराच ने नाराच ए बे प्रकृतिनी दीरणावि होर्ष दोष चोप प्रकृतिनी छदीरणा द्वीणमोहगुणगणे होय, तेना ण नांगा करतां समयाधि वितिशेष निहा अने प्रचलानी उदीर णा विज्ञेदे अने विलिशेषें ज्ञानावरणीय पांच, दशीनावरणीय चार अने श्चंतराय पांच, एवं चौद प्रकृतिनी उदीरणा विश्वेदे, तेवारें बार । गुणवाणानी अंत आवलीयें ना मेनी साड शिश, ने गोत्रनी एक एवं आडत्रीश प्रकृति नी उदीरणा लाने जे नणी ज्ञानावरणादिक अंतआविलयें उदीरवा योग्य अधिक दल नथी रह्यां,ते । दे ग्रुं उदीरें ? तथा सयोगीग्रणवाणे जिननामकर्मनो उद य होय, तेथी तेनी वदीरणा पण लाने ते नेलतां आडत्रीशना कर्मनी अने ए क उच्चैर्गा , एवं रंगणचालीशनी रदीरणा होय, तिहां प्रांते एक जिननाम. औदा रिक दिक, अस्थिर, अशुन, खगति दिक, प्रत्येकत्रिक, संस्थान ढ, अगुरुतपु, उ पद्यात, पराद्यात, उस्वास,वर्णचतुष्क, तैजसनाम, काम्मेणनाम, निम्मीणनाम, प्रथ मसंघयण, स्वरिक, सौनाग्यनाम, छादेयनाम, यशःकीर्त्तिनाम, त्रसत्रिक, नर गति, पंचेंड्यजाति, उच्चैगींत्र. ए र्राणचालीश प्रकतिनी उदीरणाविहेद श्रये श्रके चौदमे गुणगणे अनुदीरक नगवंत होय ॥ चदीरणाधिकार सपूर्ण थयो ॥ १५॥

#### ॥ उदीरणा यंत्रकम् ॥

	Į	रुणटाणे उदीरणा मकृति-	म्लमकृति.	उत्तर्प्रकृति	ज्ञानावर्णीय.	द्शनानस्णीयः	नेडनीय.	मोहनीय	त्रायुः प्तमं.	नाम तेम.	मीनक्षे.	अंतरायकर्म.
0		- ओर्घे	6	१२२	4	٥,	3,	36	ક ,	8.3	<del></del>	19
8	7	मिध्यात्वें.	c	११३	ч,	٧,	ر ج	ર્દ	ક	કે છુ	*	٠,
-	?	सास्वादने	c	१११	4 1	0,	2	ξų,	ઇ	40,	ą	ч
,	3	<b>मि</b> श्रें•	ح	१००	4,	٥,	, ,	55	S ,	43	5	4
	ક	अविरतें.	U	१०४	4	९	२	२२	ક	44	3	l.
	9	देशविरतें.	v	८७	4	٩	२	₹=	ا عر	ફર	, 3	4
	દ	<b>ममत्तसंयतें</b>	c	८१	ч	९	oʻ.	१४	3	65	٠ १	4
	૭	अपमत्तसंयतें.	ફ	७३	ч	દ	0	१ध	0	કર	· ?	4
	ح	अपूर्वकरणें.	É	દ૯	4	દ	0	१३	•	34	, 3	4
	۹	अनिष्टत्तिकरणें.	٤	દ રૂ	ч	E	0	ડ		39	<b>₹</b>	4
	१०	सूक्ष्मसंपराये.	Ę	90	4	६	0	र	•	३९	1 8	4
	११	उपशांतमोईं.	9	षद	4	દ	0	0	0	30	1	4
	१२	क्षीणमोहें.	4	<u>08</u>	4	ξ 8	0	0	0	३७	?	4
	१३	सयोगी केवलीयें.	8	39	0	0	0	0	0	३८	?	0
Į	१४	अयोगीकेवलीयें.	0	0	o	•	0	0	0	0	0	•

वे नुक्रमे दीरा तिवि ारीने चौ 'एगणे सावि ारें हो।

सत्ता म । ए ६६, धाइ लड्ड अत लानाएं ॥ संते अडयाल सयं, जा वस विजिणु बिअ तहए ॥ २६॥

सत्ता एटले मेदल जीवसायें संबंधप मिल्हपें रहेवुं, ज्यां सुधी बां ध्यां मेनां दल, जीव प्रदेशथी खरे नहीं तथा न्यप्रकृतिपणे सं मे नहीं, त्यां सुधी तेनी ना जाणवी ते में केहेवां हे के जेने बांधवे री तथा संक्रमणे री लाधो पाम्यो हे जे ाट लान तिक्वानावरणादि आट खनाव जेणे, एवां में एट छे सजातिय उत्तर प्रकृति । हे नि स्थितिरसदल तुं परिणमाव तुं. जेम देव गित, ष्यगत्यादिक हि सं विनि सत्तायें रहेवुं, ते कमेप्रकृति सत्तायें उधें ए ोने डतालीशनी विवद्धा रवी. हीं वंधनना , शरीरनी पेरें पांच लीधां तेथी ए शोने छडताजीश प्रकृति उधें तथा मिण्याल, छविरति, देशविरति, प्रमत्त, प्रमत, निवृत्ति, श्रनिवृत्ति, सुक्षासंपराय, उपशांतमोह लगें उधें एकशोने श्रहता लीश प्रकृति सत्तायें होय. तीर्थकरनामकर्मनी सत्ता होय. ते जीव, वीजे, त्रीजे ग्रण गणे न आवे तेमाटे जिननामनी सत्ता, ए बेहु गुणगणे न लाने अने मिण्यात्व ग्रुणवाणे जिननामनी सत्ता अंतरमुहूर्त संनवे, जेम कोइएक द्वायोपश्मिक सम्यक दृष्टि जीव, पूर्वे मिण्यालप्रस्ययें नरकार्य वांधी पढी सम्यक्त पामि जिननाम वांधी ते मरण समयें सम्यक्लयो मिष्यालें जाय, पण साखादनें न जाय. तेथी मिष्यात्वें शंतरसुदूर्त मात्र जिननाम सत्तायें होय, पण साखादन अने मिश्रें न होय. तेथी ए बंने गुणवाणे एकशो ने सडतालीश नी सत्ता होय ॥ १६॥

> अपूबाइअ च3के, अण तिरि निरयाउ विणु विञालसयं॥ सम्माइ चउसुसत्तग, खयंमि इग चत्तसय मह्वा ॥ ५७॥

अर्थ-(अपूबाइअच के के ) अपूर्वकरणादिक चार गुणवाणे (अण के ) अनंतानुबंधीयानी चोकडी, (तिरि के ) तिर्यचायु, (निरयाच के ) नरकायु ए व प्रकृति, (विणु के ) ते विना शेप, (विद्यालसमं के ) एकशोने वंतालीय प्रकृतिनी सत्ता होय अने (सम्माइच उसु के ) अविरितसम्यक् हिष्ट चार गुणवा णा प्रमुखें क्वायिक सम्यक् हिप्टें (सत्तगख में के ) सात प्रकृति कृप गठ ते नणी (इगचत्तसय के ) एकशो एकतालीय प्रकृति मत्तायें दोय. (अद्या के ) अथवा पक्षांतरें ए अर्थ, आगली गायामां लखाशे॥ इत्यक्रायें:॥ १०॥

ए हवे विशेषें कहें हे. अहीं पंच संग्रहने मतें अनंतानुवंशीया कपाय चारनी विसंयोजना तथा क्षणा कहा विना उपगमश्रेणीएं तथा क्ष्मकश्रेणीयं आनमुं, नवमुं, दशमुं, अने अगीआरमुं ए चार गुणागणां स्पशें नहीं. विसंयोजना एटले वि शेष जे खपाव्यां हतां पण मिण्यालाहिक प्रत्ययें वली वंधाय, ते खपणानुं नाम वि संयोजना कहींयें अने बव्या वीजनी पेरें फरी पहार्च नहीं. ते खपणा कहींयें. वेहुप रिसत्ता न होय. तथा नरकायु, तिर्थेगायु बांध्या पठी उपशमश्रीण न करे तेथी ते वे आयुनी सत्ता हुंते एके ए चार गुणगणां न होय, तथी अनंतानुवंशी कपायनी चोकही, तथा नरकायु ने तिर्थेचायु, ए उपरुतिनी सत्ता विना शेप एकशोने वेंता जीश प्ररुतिनी सत्ता होया तथा देवायु बांधे थके उपशमश्रीण करवानुं संनवे ते थी देवायुनी सत्ता खने मनुष्यायुयें वर्ते तेथी तेनी पण सत्ता हुंते ए चार गुणगणां होय, तथा पूर्वे अगीआरमा गुणगणां सुधी एकशोने अडतालीशनी सत्ता कहीं ते संनव, सत्तानी अपेक्लायें जाणवो, जेनणी उपशमश्रीणना धणी पण तिहांधी पाग पडी मिण्यालाहिक प्रत्ययें वली ते उपस्वित बांधशे, ए सत्तानो संनवने. योग्य तापणे अपेक्लायें एकशोने अडतालीशनी सत्ता कहींयें, इहां कांइ विरोध नथी.

१ अविरितसम्बक्र्हिष्टि, १ देशविरिति, ३ प्रमत्त, ४ अप्रमत्त, एचार गुण वाणे वर्तता ऋायिक सम्बक्ष्टिष्ठ जीवने अनंतानुवंधिया चार कपाय, मिष्यालमो हनीय, मिश्रमोहनीय, अने सम्बक्त्वमोहनीय, ए सात प्रकृति खपावी ते नणी ते सातनी सत्ता टली, तेवारें शेष एकशोने एकतालीशनी सत्ता होय ए अचरम शरीर ऋषिक सम्बक्ष्टिशिनी अपेक्षायें चरम शरीरक्षायिक सम्बक्ष्टिशिनो विशेष. ए अर्थ वली पक्षांतरें आगली गायामां कहेशे॥ १९॥

#### खवगंतु पण च सुवि, पणयालं निरय तिरि सुरा विणा॥ सत्तगविणु अडतीसं, जा अनिअ ही पढम नागो॥ २०॥

अर्थ- पक्षांतरें (खवगंतुपप्पचन्नस्वि के०) तथा क्षपक केवली, चरम शरी रीने ए चार ग्रुणनाणें (निरयतिरिसुरान्निणा के०) नरकायु, तिर्धेचायु, अने देवा युं, ए त्रण आन्यां विना (पण्यां के०) ए शो पीस्तालीश प्रकृति कहीं अने (सत्तगिवणुअडतीसं के०) सप्त क्यें क्षायि सन्यक्ष्ष्टिने एकशोने आड त्रीशनी सत्ता (जाअनिअडीपढमनागों के०) चोथा ग्रुणनाणाथी लड़ने यावत् अनिवृत्ति नवमा ग्रुणनाणाना प्रथम नाग लगें होय॥ इत्यक्ष्रार्थः॥ २०॥

श्रयवा एट खे पहांतरें हुप एट खे तेही ज नवमां सर्व प्रकृतिनो खपा वनार थही एवो जे मनुष्य, चरमशरीरी तेने चोथे, पांचमे, ढहे, छने सात मे, ए चार गुंणवाएँ। ऋायोपश्मिक, छाने ऋायिक ए वेंद्र सम्यक्त्व बतां तथा मिथ्यात्वादिकें पण चरमशरीरी है, ते नणी देवायु, नरकायु ने तिर्यगायु, ए त्रण पोत पोताना चरमजवने विपे जोगवीने खपाव्यां हे तेथी तेने सत्तायें एकशोने अड तालीशमांथी त्रण काहाढतां शेंष एकशो पीस्तालीश प्रकृति सत्तायें होय. ए स्वरू प, सत्तानी अपेक्सयें जाणवुं, तेथी शतकनामे कमेयंथमध्यें सात प्रकृति खपाव्या पढी ए त्रण आयुनी क्पणा, संनव सत्तापेक्सयें कही. तेह्र विरोध न होय जे नणी तिहां (खपणा केण) ए त्रण आर्युना बंधयोग्य टाली तेणे जीव करे नहीं. एटले वली ए त्रण आयु बांधे नहीं, तथा क्वायिकसम्यक्दृष्टिने चरम शरीरें चोथा गुणवाणेथी मांभीने पांचमे, बहे, सातमे, आवमे, ए पांच गुणवाणे तथा नवमा गुणवाणानो अंतर मुहूर्च कालना नव नाग करीयं. तेना प्रथमनाग सुधी एकशोने आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता होय, ते आवी रीतें के चरम शरीरी नणी पूर्वीक प्रकारें देवायु. नरकायु. तिर्यगायु. ए त्रणनी सन्ता टली अने द्वा यिक सम्यक्तव वे माटे अनंतानुवंधीया कपाय चार तथा मिध्यात्व, मिश्र ने स म्यक्तव, ए त्रण मोह्नी. एवं सात प्रकृतिनी पण सना टली एटले एकशोने श्रह तालीशमांदेथी ए दश प्रकृतिनी सत्ता विना शेप एकशोने आडत्रीश प्रकृतिनी स त्ता नवमा गुणुगणाना नव नागमांहेला प्रथम नाग लगें होय. तेवार पठी तेर नामकर्मेनी छने त्रण द्रीनावरणीयनी, एवं शोल प्रकृतिनी सत्ता वि वेद पाय, ते कहेरे ॥ २०॥

थावर तिरि निरया यव, इग थीण तिगे ग विगल साहारं॥ सोल खर्र इविस सयं, विञ्जंसि विञ्ज तिञ्ज कसायंता॥ १ए॥

श्रथ—( थावर कें। ) स्वावरिद्धक, (तिरि कें। ) तियंचिद्धक, (निरय के। ) नरकिद्धक, (श्रायव के। ) श्रातपिद्धक, ए चार (इग के। ) दिक श्रने (धीणितग के। ) धीणदीत्रिक, (एग के। ) एकेंड्यजाति, (विगल के। ) विकलेंड्यित्र क, (साहारं के। ) साधारणनाम, एवं (सोलखड़े के। ) शोल प्रकृतिनो ह्य होय, तेवारें (इविससयं के। ) एकशो वावीश प्रकृतिनी सत्ता. (विश्वतिश्रकसायं तो के। ) बीजा श्रने त्रीजा कपायनी चोकडीनो श्रंत थाय।। इत्यद्धरार्थः।। २ए॥ निर्मा श्रीजा श्रमे त्रीजा कपायनी चोकडीनो श्रंत थाय।। इत्यद्धरार्थः।। २ए॥ निर्मा स्वान श्रीजा कपायनी चोकडीनो श्रंत थाय।। इत्यद्धरार्थः।। २ए॥ निर्मा स्वान श्रीजा कपायनी चोकडीनो श्रंत थाय।। इत्यद्धरार्थः।। २ए॥ निर्मा के।

स्थावरनामकर्म अने सूक्षानाम कर्म. एवं वे प्रकृतिनी सत्ता विद्युक् पिरणामें टले अने तिर्धेचगित तथा तिर्थगानुपूर्वी. ए तिर्धेचित्र टले. नरकगित, नरकानु पूर्वी, ए नरकिक टले, आतपनाम, जद्योतनाम, ए आतपिक्क. ए वेहु वद्यिप पुख्पप्रकृतिने तथापि सहेजें तिर्थगित प्रायोग्यने ते नणी विद्युक् अध्यवसा यें एनी सत्ता पण टलें थीणकी, निक्तिक्त छने प्रचला प्रचला, ए धीणकीित्र क द्रीनावरणीय कर्मनीने तेनी सत्ता टलें एकेंडिय वेंडिय. तेंडिय. अने ची रिंडियजातिनामकर्म तथा साधारणनामकर्म. एवं शोल प्रकृतिमध्यें थीणकीित्रक द्रीनावरणीयनुं ने शेष तेर प्रकृति, नामकर्मनीने. ए शोल प्रकृतिनो जदय नव माने प्रथमनागें करे तथा एक आचार्यने मतें अनंतानुवंध्यादिक सात प्रकृति खपावी अने बीजा चार तथा त्रीजा चार कपाय खपाववा मांमे, तेनी कृपणावि चालें ए शोल प्रकृति खपावे,तेवारें एकशोने आडत्रीश्मांहेथी शोल खपावे थकें शेष एकशोने बावीश प्रकृतिनी सत्ता बीजे नागें रहे, तिहां वीजा अप्रव्या ख्यानावरणीय कषाय चार, तथा त्रीजा प्रत्याख्यानावरणीय कपाय चार, ए ।व कषायनी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने बावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने बावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने बावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने बावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने बावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने बावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने वावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने वावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति पावे, तेवारें एकशोने वावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा सक्ति प्रवृत्ति पावे प्रकृति निक्ति चावीश प्रकृतिमांहेथी आठ कषा य क्रयानी प्रकृति निक्ति प्रवृत्ति निक्ति स्रवृत्ति सत्ता, नवमाना बीजे नागें रहे॥ रूणा व क्रयानी प्रवृत्ति सत्ता व स्रवृत्ति सत्ता व स्रवृत्ति सत्ता व स्रवृत्ति सत्ति सत्ति सत्ति स्रवृत्ति सत्ति स्रवृत्ति सत्ति स्रवृत्ति सत्ति सत्ति स्रवृत्ति सत्ति सत्ति

तइञ्राइसु च दस ते, र बार व पण च तिहिञ्ज सय कम सो ॥ नपु इहि हासबग पुस, तुरिञ्ज कोहो मय माय खर्छ॥३०॥ थै-(तइ इ के॰) तीयादिकनागने विषे एटले नवमाना त्रीजा नाग ने विषे (च उदस के ०) एक शोने चौद प्रकृतिनी सत्ता होय, चोथे नागें (तेर के ०) ए शो तेर, पांचमे नागें (बार के ०) एक शो बार, ठ छे नागें (ठ के ०) एक शो ठ, सातमे नागें (पण के ०) एक शो पांच, आठमे नागें (च उ के ०) एक शो चार, नवमे नागें (तिह्यसय के ०) एक शोने त्रण, ए ( मसो के ०) अनु क्रमें सत्ताप्रकृति जाणवी त्यां (नपु के ०) नपुंसक वेद, (इिंड के ०) स्त्रीवेद, (हासठग के ०) हास्यादिक ठ, (पुस के ०) पुरुष वेद, (तुरि ोहों के ०) चो थो संज्वलनो होथ, (मय के ०) मद एट छे संज्वलन हन, ( य के ०) संज्वलन माया, तेनो (ख वे के ०) क्रय, अनुक्रमें थाय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ३०॥

क्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय ढ, वेदनीय बे,मोह्नीय तेर, आयुनी एक, नामनी एंग्री, गोन्ननी वे अने अंतरायनी पांच, एवं एकशोने चौद प्रकृतिनी सत्ता रही, ते अनुक्रमें (तङ्आइसु के ) त्रीजो नाग आदें देइ अनिन्निकरणना न वमा नाग लगें अनुक्रमें एकशो तेर, एकशो बार,यावत् नवमे नागें एकशोने त्रण प्रकृतिनी संख्या जोडवी, ते आवी रीतें के त्रीजे नागें एकशो ने चौद प्रकृतिनी सत्ता रही, तेमांहेथी नपुंसकवेद कृप करे. ते वारें चोथे नागें एकशोने तेरनी सत्ता रहे, त्यां स्त्रीवेद कृप करे, तेवारें पांचमे नागें एकशोने बार प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां स्वावन के प्रकृति कृप करे, तेवारें विचे नागें एकशो व प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलन क्रीधनो कृप करे, तेवारें आतमे नागें एकशो चारनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलन क्रीधनो कृप करे, तेवारें आतमे नागें एकशो चारनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलन माननो कृप करे, तेवारें वाक्षे नागें एकशो चारनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलन माननो कृप करे. तेवारें नवमे नागें एकशो चारनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलन माननो कृप करे. तेवारें नवमे नागें एकशोने त्रण प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलनी मायानो कृप करे, तेवारें वाक्षे चारें एकशोने त्रण प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलनी मायानो कृप करे, तेवारें नवमे नागें एकशोने त्रण प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलनी मायानो कृप करे, तेवारें नवमे नागें एकशोने त्रण प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां संज्वलनी मायानो कृप करे, तेवारें वाक्षे प्रवृत्तिना ग्राण स्त्राण वारित्रयी कां इक कर्णु ने केमके सूक्ष्य लोजना निदान कांइकने तेथी द्यामे ग्रणनाण एकगो वा प्रकृतिनी सत्ता होय अने यथाख्यात ते सर्वया वीतराग होय ॥ ३०॥

सुहुमि इमय लोहंतो, खीण इ चरिमेगसय इनिह खर्छ॥ नवनवड् चरिम समए, चर् दंसण नाण विग्वंतो॥ ३७॥

श्रथ-(मृहुमि के॰) सक्स संपरायग्रणवाणे (इसय के॰) एकशो ने व प्र कितिनी सत्ता होय, त्यां (सोहंतो के॰) संज्यसनासोननो क्य दोय, नेयारे (खीणइचरिमेगसय के॰) क्षणमोहगुणवाणें दिचरम समयें एकशो ने एक प्र

कृति सत्तायें होय, त्यां ( इतिह्रखर्र के० ) ये निक्षानो क्य प्राय, तेयारें ( नय निक्चिरमसम्प के० ) नवाणुं प्रकृतिनी सत्ता, नेह्ने समयं होय. त्यां ( चर्डं स्प के० ) चार द्वीनावरणीय. ( नाण के० ) पांच ज्ञानावरणीय द्यने ( विग्वं तो के० ) पांच छातराय. एवं चोद प्रकृतिनो क्य याय ॥ इत्यक्रायेः ॥ ३१ ॥

स्वासंपराय दशमे ग्रणगणे झानावरणीय पांच. दर्शनावरणीय त, वदनीय व. मोहनीय एक, मनुष्यायु एक. नामनी एंशी. गोत्रनी वे, श्रंनगयनी पांच, एवं एक शोने वे प्रकृतिनी सत्ता रही. पठी त्यां रह्यो थको श्रश्यवसाय विशु हैं करी सूज्य लोन पण खपावे, तेथी तेनी सत्ता विश्वेद याय. तवारें एकशोने एक प्रकृति सत्तायें रही, क्षपकश्रेणिमांहे अपशांतमोह श्रगीश्रारमुं ग्रणगणुं न होय. केमके मोहने उपशानो थके अपशांतमोह कहेवायठे. श्रने श्रहींयां नो मोहने खपाय तो गयोठे तेथी तेनी सत्ता पण टालतो गयोठे तेणो करी ते क्रिणमोहवीतराग उद्यस्थ ग्रणगणी कहेवाय.श्रहींतो तेने समय जन निजगुणस्थानकाल लगें एक शो एक प्रकृतिनी सत्ता होय.त्यां ठेहला समयथी पहेलो समय ते इत्रिम समय कहींयें त्यां निहा, प्रचला,ए वे प्रकृति खपावे, तेवारे वारमा ग्रणगणान ठेहले समयें नवाणुं प्रकृतिनी सत्ता रहे.श्रहींश्रां मतांतरें वारमा ग्रणगणाना ठेहले समयें चक्रुदर्शनावरणीय, श्रचक्रुदर्शनावरणीय, श्रविदर्शनावरणीय, केवलदर्श नावरणीय, ए चार दर्शनावरणीय श्रने पांच झानावरणीय तथा पांच श्रंतरा य, एवं चौद प्रकृतिना क्यें तेनी सत्ताविश्वेद होय,तेवारें केवल झान अपने ए नवाणुंमांहेशी चौदनी सत्ता टली ॥ ३१॥

पणसीइ सजोगि छाजो,गि इ चिरमे देव खगइ गंध डगं॥ फासह वस रस तणु, बंधण संघाय पण निमिणं॥ ३०॥

अर्थ-(पण्मिश्सजोगि के०) तेवारें पंचाशी प्रकृतिनी सत्ता सयोगीगुणुगणे होय, अने (अजोगडचिरमे के०) अयोगीगुणुगणे पण इचरमसमयलों पंचा शीनी सत्ता होय, त्यां (देव के०) देविहक, (खगइ के०) खगितिहक, (गंध के०) गंधिहक, (डुगं के०) ए त्रणिहक, (फासफ के०) स्पर्श आव, (वर्ष के०) पांच वर्ण, (रस के०) पांच रस, (तणु के०) शरीर पांच, (बंधण के०) बंधन पांच, (संघाय के०) संघातन पांच, (पण के०) ए सौ पांच पांच, कहेवां. (निमणं के०) निर्माणनाम. एवं चालीश प्रकृति थइ॥इत्यक्त्रार्थः॥३॥

तेवारें तेरमे सयोगीगुणवाणे तथा चौदमा अयोगीकेवलीगुणवाणाना वेहला समयना उपरला समय लगें वेदनीय वे, नामनी एंशी, आयुनी एक अने गोत्रनी वे,ए पंचाशी प्रकृतिनी सत्ता रहे, त्यां अयोगीगुणवाणाना अंतना समयथी पहेलों जे समय तिहां अनुद्ववती, बहोंतेर प्रकृति खपावे, ते प्रकृतिनां नाम कहें वे. देव गित, देवानुपूर्वी, ए देविहक. ग्रुनिवहायोगित अने अग्रुनिवहायोगित, ए लगित दिक, सुरनिगंध अने इरनिगंध, ए गंधिहक, ए त्रण आगल दिक शब्द जोडीयें, तेवारें ठ प्रकृति थाय, आव स्पर्श, पांच वर्ण, पांच रस, पांच शरीर नामप्रकृति, तेमज ते नामे औदारिकादिक पांच, वंधननी प्रकृति, तथा औदारिकादिक पांच संघातननी प्रकृति, वर्णादिक पांचथीआगल जेटला शब्द कह्या, ते सर्वनी आगल पण शब्द जोडीयें तथा निम्मीणनाम, ए चालीश प्रकृति थहा। ३१॥

संवयण अधिर संवा, ण वक अगुरुलहु चन अपकतं॥ सायं च असायं वा, परितुवंगातिग सुसर निः ॥ ३३॥

अर्थ-( संययण के॰) संवयण ढ, (अथिर के॰) अहियरपट्क, (संवाण के॰) संस्थान ढ, (ढक्क के॰) ए त्रण ढक्क जाणवां (अगुरुज़हुच के॰) अगुरुज़ घुच तुष्क, (अप क्षचं के॰) अपर्याप्तनाम, (सायंच के॰) शातावेदनीय, (असायंवा के॰) अथवा अशातावेदनीय, ए बे प्रकृतिमांहेथी एक छेवी. (परित्त के॰) प्रत्येकित्र क, ( चवंगातिग के॰) चपांगित्रक, (सुसर के॰) सुस्वरनाम, ( निञ्जं के॰) नीचैगींत्र, एवं बहोंतेर प्रकृति थइ॥ इत्यक्त्रार्थः॥ ३३॥

पूर्वेली गाथामां कहेली चालीश प्रकृति तथा व संघवण, श्रह्यरताम, श्रण्य जनाम, दोर्नाग्यनाम, इःस्वरनाम, श्रनादेयनाम, श्रयशःकींत्रनाम.ए श्रह्यरपट्क. व संस्थान, ए त्रण पद श्रागल वक्त जोडीयें. श्रग्रस्त्रघु, उपयात. परावात श्रने उन्नास, ए श्रग्रस्त्रघुचतुष्क कहीयें. श्रप्याप्तनाम, शाता श्रयवा श्रशाता.ए वे वद नीयनी प्रकृतिमांहेलो ज उद्य होय, ते विना वीजी एक प्रकृति श्रमुद्यवती होय, ते खपावे. प्रत्येकनाम. हियरनाम, श्रुन्नाम. ए प्रत्येकत्रिक. श्रीदारिक. विक्रिय ने श्राह्मरक. ए उपांग त्रण, सुस्वरनाम. नीचगात्र. एवं वहोंतर प्रकृति श्रव ते मांहे सीतर नामकर्मनी. एक वेदनीय. एक नीचगात्री जाणवी. ए वहात्र प्रकृतिनो पण त्यां उद्य नहीं. तेथी वहोंतर प्रकृतिनी सत्ताविश्वद श्राय ॥ ३३॥

विसयरि खर्न छ चरिमे,तेरस मणुच्य तसतिग जसाइकं॥ सुनग जिणुच्च पणिंदिच्य, सायासा एगयर ठेर्न॥ ३४॥

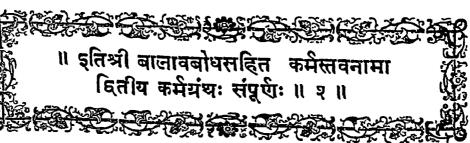
अर्थ-( बिसयरिखर्ग के ० ) ए वहांतेर प्रकृतिनो क्य होय. ( चिरमे के ० ) वली ठेह्र समयें ( तेरस के ० ) तेर प्रकृतिनी सत्ता विद्येद पाय, ते कहेते. ( म णुअ के ० ) मनुप्यत्रिक, ( तस के ० ) त्रसित्रक. ए वे ( तिग के ० ) त्रिक जाण वां. ( जस के ० ) यशःकीर्तिनाम, ( आइक्तं के ० ) आदेयनाम, ( सुनग के ० ) सौनाग्यनाम, ( जिए के ० ) जिननाम. ( ज्ञ के ० ) उञ्चगीत्र. ( पणिदिश्य के ० ) पंचें इियजाति, अने ( सायासाएगयरते ने के ० ) शाता अशातामां हे जी एक उदयवती प्रकृतिनो विद्येद होय ॥ ३४॥

ते बहोंतेर प्रकृति छापणुं दल छन्यसजातिय उदयवती प्रकृतिमांहे सिवुक संक्रमे, संक्रमावी खपावे, जेम मनुष्यगति जद्यवतीने, तेमध्यें शेप त्रण गतिनुं द लिक संक्रमावी खपावे, तेम बीजी पण यथायोग्य जाणवी. स्तिबुकसंक्रम त कहीयें जेम पाणीनो पर्पोटो सहेजें पाणीमांहे संक्रमे. तेम जे सहेजें स्व स्तोकदिक परप्रकृतिमां हे संक्रमे, पण जीववीय न संक्रमे तेथी ए स्तिवृकसंक्रमण करण मांहे गएयो, तेथी ते अयोगीगुणवाणाने वेह्ने समयं मनुष्गति, मनुष्गनुष्वीं अने मनुष्यायुः ए मनुष्यत्रिक. त्रसनाम, बादरनाम अने पर्याप्तनाम, ए त्रसत्रिक. य शःकीर्त्तिनास, छादेयनाम, सौनाग्यनाम, तीर्थकरनाम. उद्येगीत्र, पंचें िर्यजाति नाम, आशाता ने शाता, ए वे वेदनीयमां हेथी जेनो उदय होय, ते एक लेवी ए वं तेर प्रकृतिनी सत्ता होय. तेमां एक वेदनीय नी, एक आयुनी, एक उच्चैगींत्रनी ने शेष दश प्रकृति नामकर्मनी रहे. ए सत्तरी प्रमुख शास्त्रनो विरुद्ध जे नणी त्यां बाद्र नामकमेनी प्रकतिनां सत्तास्थानक कह्यां, ते मध्यें आत प्रकृति तथा जिन नाम सिहत होय, ते वारें नव प्रकृतिरूप सत्ता स्थानक कहां, पण दश प्रकृतिरूप स्तास्थानक न कहां. ए अपेक्। यें अही आं ते केम संनवे ? तथा बार उदयवती प्रकृति स्तिबुक संक्रम विना खपावे अने मनुष्यानुपूर्वीने उद्यें वक्रगति होय ते पण अहीं आं नहीं होय तेणें सिबुकसंक्रम विना केम खपावे ? तेणे अंहीआं कोइ आचार्य मनु ष्यानुपूर्वीनो विश्वेद पण इचरिमसमयें सानेने तेने मतें अयोगीगुणनाणाना नेहला वे समय, तेमध्यें पहेले समयें तहों तेर प्रकृति खपावे अने हेहले समयें बार प्रकृति खपावे. अहीं आं व्यवहारनय जेवो. अने निश्चयनयें तो सिद्यमन समयें ज बे तेहिज मतांतरें आगली गाथायें देखाडे ।। ३४॥

	॥ सत्ता यंत्रकम् ॥												
o	गुणटाणे सत्ताः	मूलमकृति.	डत्तरमकृति.	डपशमश्रेणी.	क्षपकश्रेणी.	झानावरणीय.	दर्शनावरणीय.	वेदनीय.	मोहनीय.	आयुःकर्म-	नामकीम-	गोत्रकर्म.	अंतरायकर्म.
0	- ओंघें.	v	१५८			ч	٩	ર	२८	ક	९३	9	4
2	- मि्थ्यात्वें	U	१४८			4	۹,	२	२८	ક	९३	२	ч
ર	सास्त्रादनें	۲	१४७			4	९	२	२८	S	९२	२	4
३	मिश्रे-	6	१४७			4	۷,	ર	२८	ક	९२	ર્	4
S	अविरतें.	ح	356	१८१	350	4	९	2	35	8	९३	ર	4
4	देशविरतें.	<u>-</u>	१४८	१८१	3 3 7	4	٩,	२	२ <u>८</u> २ ७	ک و	९ ३	२	4
8	<b>ममत्तसंयतें</b> .	G	१४८	१४१	3 \$5	ч	९	२	3 g	<u>¥</u>	९३	ર	4
8	अप्रमत्तर्सयतें.	c	१४८	१४१	3 40	ч	९	२	36 31	<u>\$</u>	९३	ર	4
1	अपूर्वकरणें	٦	385	१३९	१३८	4	९	ે	7 2 2	ماحر	५३	२	4
		6	385	१३९	१३८	بع	९	ર	२१	3	९३	5	4
	ु म			0	१२२	પ	દ	٤,	<b>२</b> १	8	C0	ર	وح
li	भाग न			•	११५	لع	Ę	3	१३	8	C0 1	ś	4
11	<sup>ड</sup> ची	1		0	११३	4	Ę	5	85	<b>1</b>	60	5	ري
٧	पुर्व			0	११२ १०६	4	E	5	११	१	60 '	٥,	٠,
<u>[</u>	अनिद्यत्तिक १७००				१०५	્ય	દ	5	ય	ς · \$	C 0	5	٠,
	ं जी			) 0	રે ૦ છું	ų	દ	ર્	3 '	· ?	<b>G</b> 3 '	3, 5	
	अंग्रि			, 0	१०३	4	8	રું	ર	7	60	, ב	·
1 20	मृक्ष्मसंपराये .	-	185 785	१३९	१०२	<u> </u>	- <u>Ę</u>			<u> </u>	• :	3	4
- 88	उपशांतमोहं.	•}	15.	१३९	101	4	- E	<del>\</del>	A A A !	_!	٠٠٠.	 	-
25	~   <del>-                                  </del>	2	1	_ <del>`` _ `</del>	1.2			<del>"</del>	0	<u> - ټ</u>	۶ . 5°	 ئ	
13	सयोगीकेवलीय-	3	\ \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	, 0	5	•	ە گى	خ _	o	;	 	ີ່ວ່	3
१२	अयोगीकेवलीयें	- <u>s</u>			122	- <del></del> -	•	<del></del> -	•	5		~ <del>;</del>	- 6

नर छणुपुि विणा वा, वारस चरिम समयंमि जोखविछ॥ पत्तोसिद्धं देविं,द वंदिः छं नमह तं वीरं॥ ३५॥ सत्ता सम्मता॥ इति कर्मस्तवारूयो दितीयः कर्मग्रंथः संपूर्णः॥ १॥

अर्थ-( नरअणुपुविविणावा के० ) मनुष्यानुपूर्वीनो जदय नथी, तेथी ते विना मतांतरें (बारसचरिमसमयंमि के०) बार प्रकृति, हेले समयें (जोखविड के०) जे खपावीने (पत्तो के०) प्राप्तो एटले पाम्यो, (सिद्धि के०) सिद्धगति एटले मोद्ध गति, ते प्रत्यें ( देविंदवंदिश्चं के॰ ) देवेंई वंदित तथा देवेंई सुरियें वंदित,(नमह तंवीरं के ०) एवा श्रीमहावीरदेवनां चरणकमल ते, तेने नमस्कार करो॥ ३५॥ पूर्वोक्त कारणनणी मनुष्यानुपूर्वीनो चदय नथी ते विना मनुष्यगति, मनुष्यायु, त्रसं, बाहर, पर्याप्ति, यशःकीर्त्ति, छादेय, सीनाग्य, तीर्थंकरनाम, उज्जेगीत्र, पंचे डियजाति, एक वेदनीय, ए बार प्रकृति चरमसमर्थे उदयवतीने ते नणी ए लि बुकसंक्रम विना खनावें स्थितिक्थ थाय, ते माटे ए वार प्रकृति छुंक्षध्याननो चोथो पाइड समुहिन्निक्रयाञ्चनिवृत्ति एवे नामे हे. तेऐ करी खपावीने साकारोपयो में वर्ततां सकल कमें टाली शुद्ध सहजरूप निरुपाधिक शुद्धोपयोगी एक समय समश्रेणि ज्यां श्रीञ्रपापानगरीयें हिल्लिपालराजानी राजसनायें देशना देतां यकां खां जे आकाशप्रदेश अवगाह्या हता, तेह्नी कर्ध्वसमश्रेणियें जे सिद्देश्त्रना आका शप्रदेश, ते आकाशप्रदेश अवगाहि, अचलरूप रह्या, पण ते श्रेणिना वचला आ काराप्रदेश स्पर्या नहीं ए अचिंत्यशक्तिना धणी जो आतमप्रदेशना दंम विनास्प री हुंतें जाय तो असंख्याता समय लागे, तेनणी सिद्नी अस्प्रशक्ति मानवी. एवा श्रीमहावीर वर्दमान चरम तीर्थंकर अनेक देवेंड् कहेतां चोशव इर्डे पूजित अथवा यंथकर्ता तपागन्नाधिराज नद्टारक श्रीदेवेंड्स्रियें वंदित,तेह् प्रत्यें वांदों तेने निक्र्ये क नमस्कार करो ॥ ३५ ॥ इतिश्री दितीयकमेस्तवाख्यस्य बालावबोधः संपूर्णः ॥श॥



॥ ॥ ॥ बालावबोध सहित बंधस्वामित्वारूय तृतीयकर्मग्रंथः प्रारज्यते ॥

#### त ॥ खादौ बालावबोधकृत मंगलाचरणम्॥

॥ स्वागतावृत्तम् ॥

ऐंड्चांड्पदवी न स्थिव , विश्वविश्वग्रहता न गरिष्ठा ॥ चेतिस स्फुरति चेदलि ।, जैनगीर्ग नयौघपविष्ठा ॥ १ ॥

॥ ।योवृत्तम् ॥

किंचिजुरूपदेशादवचूर्णं किंचिदन्यशा ेन्यः॥ वंधस्वामित्वेऽस्मिन् लिखामि सारं समधिगम्य॥ १॥

॥ मूल गाया ॥

वंधविहाण विमुक्तं, वंदिश्य सिरिवदमाण जिएचं दं ॥ गई शाईसुवृत्तं, समास वंधसामितं॥ १॥

थी—(बंध केण) कर्मनो बंध तेनुं (विधान केण) करनुं, तेथी (विमुक्तं केण) विशेषें काणा एवा (तिरिव समाण केण) श्रीवर्धमान एवे नामे (जिएचंदं केण) सामान्य केवलीमांहे चंइमा सरखा, ते प्रत्यें (वंदिश्च केण) वांदीने (ग ईश्चाईसु केण) गत्यादिक चौद मार्गणास्थानकने विषे (समासर्गं केण) संदेष थी (बंधसामिनं केण) वंधसामित्वपण्णं (बुद्धं केण) कद्दीग्रं॥ इत्यद्धरार्थः॥१॥

इानावरणीयादिक आठ कमें, तेनुं (विधान के०) करनुं, तेणे करी विमुक्त एटले रहित एटले बल्या बीजयी अंकूर न होय, तेम जे नावकमेरिहत थया ए वा (श्री के०) अप्र महाप्रातिहायीदिक बाह्यलक्ष्मी अने केवल झानादिक अन्यंतर लक्ष्मी, तेणे करी वर्धमान एटले वधतो तथा तेणे सहित श्रीवर्धमान ए वे नामे (जिन के०) केवलीमांहे चड्मानी पेरें अधिक, ते प्रत्यं मन, वचन अने काया, ए त्रिकरणणुद्धे वांदी नमस्कार करी ध्यायीने गित आदे देइने चांद मूल मागेणा स्थानक, तेना बाशव उत्तर चेंद्र, ते मागेणा द्वारचेदं ग्रणवाणे हुं वो

लीश, एम शिष्यने सावधान करवाने प्रतिका करी संक्ष्पें करी एटले प्रवीचार्यकत यं सिक्ष सिक्ष

हवे चौद मार्गणानां नाम कहेते.

गइ इंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणेय॥ संजम दंसण लेसा, नवसम्मे सन्नि च्याहारे॥ १॥

अर्थ- प्रथम (गइ के०) गतिमार्गणा, बीजी (इंदीए के०) इंड्यिमार्ग णा, त्रीजी (काए के०) कायमार्गणा, चोथी (जोए के०) योगमार्गणा, पांच मी (वेए के॰) वेदमार्गणा, उन्नी (कसाए के॰) कपायमार्गणा, सातमी (ना णेय केण) ज्ञानमार्गणा, ष्यावमी (संजम केण) चारित्रमार्गणा, नवमी (दंस ण के॰) दरीनमार्गणा, दशमी ( लेसा के॰ ) लेखामार्गणा, अगीआरमी ( न व केण) नव्यमार्गणा, बारमी (सम्मे केण) सम्यक्लमार्गणा, तेरमी (सन्नि के॰ ) संज्ञिमार्गणा, चौदमी (आहारे के॰) अहारकमार्गणा॥ इस्रक्रायीः ॥शा गति ाश्री सर्वे जीव विचारीयें तो देव, मनुष्य, नारकी छने तिर्यंच, एम चार चेदें जाणवा. इंडियापेक्सयें एकेंडिय, वेंडिय, तेंडिय, चौरिंड्य अने प्ंचेंडिय, एम पांच जेदें जाएवा। कायापेक्सर्ये पृथिवी, अप, तेज, वायु, व्नस्प ति अने त्रस, एम व नेदें जाएवा. योगापेक्षायें मनोयोग, वचनयोग अने का ययोग, एम त्रण नेदें जाएवा. वेदापेक्तायें स्त्री, पुरुप ने नपुंसक. एम त्रण ने दें जाणवा. कषायापेक् यें कोधी, मानी, मायी ने लोनी. एम चार नेदें सर्व जी व जाणवा. ज्ञानापेक्सर्ये मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, श्रवधिक्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, केवलकानी, मतिश्रकानी, श्रुतश्रकानी ने विजंगकानी. ए श्रात नेदें जाणवा चारित्रापेक्वायें, सामायकचारित्र, वेदोपस्थापनीय, परिहारविद्युद्धि, सूइमसं पराय, यथा ।त, देशविरति अने अविरति. एम विरतिनी अपेक्षायें सात ने दें जाएवा दरीनापेक् यें चकुदरीनीय, अचकुदरीनीय, अवधिदरीनीय अने के वलदरीनीय, एम चार नेदें जाणवा. लेरयापे कार्ये कहा, नील, कापोत, तेज, पद्म ने , लेक्यावंत, ए व नेदें जाएवा. नव्य एटले मुक्तिगमन योग्यायोग्यनी अ पेक्तयें दिविध जीव, नव्य अने अनव्य. ए बे नेदें जाएवा. सम्यक्दृष्टिश्रद्धान ग्रुणनी अपेक्षिं मिण्यात्वी, साम्बादनीय, मिश्र, क्षायोपरामिक, श्रोपशमिक, अने क्षायिक. एम व नेदें जाणवाः मनोज्ञाननी अपेक्षायें सिन्नश्चा जीव, तेथी विपरीत ते असिन्नश्चा जीव, एम वे नेदें जीव जाणवाः श्चाहारनी अपेक्षा यें श्चाहारक अने अनाहारक, एम वे नेदें सर्व जीव जाणवाः ए रीतें मार्गणाना मूल नेद चौद, अने उत्तर नेद बाशव जाणवा ॥ १॥

जिण सुर विज्वा हारङ, देवाज छ निरय सुहुम विगल तिगं॥ एगिंदि घावरा यव, नपु मित्रं हुंम वेवर्ड॥ ३॥

अर्थ-( जिए के० ) जिननाम, ( सुर के० ) सुरिंद्दक, ( विग्न के० ) वैक्षिय दिक, ( आहार के० ) आहारकिक, ( इ के० ) ए अए दिक, एवं सात प्रकृति यइ. ( देवाच्य के० ) देवायु ( निरय के० ) नरकित्रक, ( सुहुम के० ) सृह्मित्र क, ( विगल के० ) विकलित्रक, ( तिगं के० ) ए अए त्रिक जाएवां. ( एगिंदि के० ) एकेंड्यजाति, ( यावर के० ) स्थावरनामकर्म, ( आय्य के० ) आतप नामकर्म, ( नपु के० ) नपुंसकवेद, (मिन्नं के०) मिथ्यालमोहनीय, ( हुंम के० ) हुं मसंस्थान, ( वेवहं के० ) वेवहुं संघयए ॥ इस्यक्रार्थः ॥ ३ ॥

हवे यंय गौरव टालवा नणी कमेत्रकति न्यूनाधिक करवानिमित्त जेम व्या कणीदिकमां वर्ण संख्या छल्पाइन्रें जाणवा निमित्त छाद्यहर छंत्याहर साथें कहेतां प्रस्याहार संज्ञा करीछे. तेम छहींयां पण जे प्रकृति छागले संख्यापद होय, ते प्रकृतियी तेटली प्रकृति खेवी, एवी संज्ञा करेछे.

जेम जिननामयी आगली प्रकृति १ जिननाम, १ देवगति, ३ देवानुपूर्वा. ४ विक्रियशरीर, ए वैक्रियांगोपांग, ६ आहारकश्रीर, ७ आहारकश्रेगोपांग, ७ देवा यु, ए नरकगति, १० नरकानुपूर्वा,११ नरकायु. ए जिनेकादश कहीयें ए एकंडि य अने विकलेंडियनें नवप्रत्ययें न वंधाय.

सूद्रमथी छेइ तेर प्रकृति कहेवी, ते स्हमत्रयोदशक, १ ल्हमनाय. १ छपयी सनाम, ३ साधारणनाम, ४ वेंड्यजाति, ५ तेंड्यजाति. ६ चर्डारेंड्यजाति. ७ एकेंड्यजाति, ७ स्थावरनाम, ७ छातपनाम, १० नपुंसकवेद, ११ मिच्या लमोह्नीय. ११ हुंमसंस्थान, १३ वेवष्ठं संययण. ए स्हमत्रयोदशक ए मिच्या लप्रस्थिक मिन्यात्वें वंधाय.

तया मुरिहक, वैक्रियिहक, आहारकिहक, मुरायु, एवं सातः नरकित्रक, स्च

त्रिक, विकलनातित्रिक, एवं शोलः एकेंडियनाति, स्थावरनाम, आतपनाम, ए उंगणीश प्रकतिनुं नाम सुरएकोनविंशतिक कहीयं.

१ नषुंत्रक, १ मिष्याल, ३ हुं मसंस्थान, ४ नेवहुं संवयण. ए नणुंनकचतुष्क कहीयें. ए रीतें ज्यां ज्यां जेटली प्रकृतिन्नुं काम होय, त्यां ते ते प्रकृति धुर रेड़ तेटली तेटली संख्या जोडीयें, ते संझा होय. ए गायामां चोवीश प्रकृति कहीं, ते मध्यें एक मिष्याल, बीजी नणुंसकवेद, ए वे प्रकृति मोहनीयनी. अने देवायु, नर कायु, ए बे आयुनी. शेष वीश प्रकृति, नामकर्मनीने ॥ ३ ॥

चण मजागिइ संघयण, कुखगइ निच्न इति इत्ग घीणितगं॥ इक्षोच्य तिरिइगं तिरि, नराउ नर उरल इग रिसहं ॥ ४॥

अर्थ- पूर्वोक्त चोवीश अने (अण के०) अनंतानुवंधीकपाय चार. (म जागिइ के०) मध्याकति एटले मध्यसंस्थान चार. (सॅययण के०) मध्यसंवय ण चार, एवं बत्रीशः (कुखगइ के०) अग्रुनखगति, (निश्च के०) नीचेगोंत्र, (इिंड के०) स्त्रीवेद, एवं उंगणचालीशः (इह्ग के०) दोन्नीग्यत्रिक, (यीणित गं के०) घीणदीत्रिक, एवं पीस्तालीशः (उद्घोख के०) उद्योतनाम, (तिरि हुगं के०) तिर्यचिह्क, (तिरि के०) तिर्यचायु. (नराउ के०) मनुष्यायु, (न र के०) मनुष्यदिक, (उरलङ्ग के०) औदारिकिह्क, (रिसहं के०) वज्रक षजनाराचसंघयणः एवं पंचावन्न प्रकृति घइ॥ इत्यक्रार्थः॥ ॥॥

श्रनंतानुबंधीनी चोकडी अने मध्य एटले पहेला अने नेहला ए वे विना व चला आकृति कहेतां आकार विशेष एटले संस्थान चार. तेमल वचलां संघयण चार, एवं बार प्रकृति थई. कु एटले श्रमुन खगित, एटले हिंमवानी गित लेथकी श्रमुन होय, ते नामप्रकृति, नीचैगोंत्र, स्त्रीवेदनोकषाय मोह्नीय, दौनींग्य, इःसर, श्रमादेय, ए दौनींग्यत्रिक. एवं श्रद्धार प्रकृति थई. श्रीण्डी, निझ्तिझ ने प्रचलाप्रच ला, ए श्रीण्डीत्रिक, उद्योतनामकर्मे, तिर्यचगित, तिर्यचानुपूर्वी, ए तिर्धचित्रक, एवं चोवीश प्रकृति श्रनंतानुबंधीयाने उद्यें बंधाय, ते नणी मिश्रादिक गुण्वाणे न बंधा य. ए अनंतानुबंधी चतुर्विश्वित्रक कहेवाय. ते मध्ये तिर्यचायु अने मनुष्यायु, ए बेप्रकृति सहित करतां अनंतानुबंध्यादिक षड्विश्वित्रक कहीयें. तथा मनुष्यगित, मनुष्यानुपूर्वी एवं श्रम्वानुबंधा ने श्रीदारिकश्रिंग, श्रीदारिकश्रंगोपांग, ए श्रीदारिकि, श्रमे वज्रक्षननाराचसंघयण, एम ए बीजी गाथामध्यें श्रमंतानुबंध्या

दिक एकत्रीश प्रकृति कही.तथां पूर्वेली गायामां चोवीश प्रकृति कही,ए बेहु मली पंचावन्न प्रकृति कही, तेमां दर्शनावरणीयनी त्रण, मोहनीयनी सात, आयुनी चार, गोत्रनी एक,शेप नामकर्मनी चालीश प्रकृति कही,एम संझासंग्रहगाया वे कही॥४॥ हवे प्रथम गतिमार्गणामध्यें नरकगतिनेविषे वंधस्वामित्वपणुं विचारे वे

सुरइगुण वीस वकं, इगसन नहेण बंधहिं निरया॥
तिचविणा मिचि सयं, सासणि नपु चनविणा नुइ॥ ॥॥

अर्थ-(सुरइगुणवीसव ं के०) सुरादिक उंगणीश प्रकृति, एकशो वीशमांहे थी व ींथें, तेवारें (इगसर्र के०) एकशोने एक प्रकृति, (र्रेहेण के०) र्रें एटले सामान्यपणे (बंधिहंनिरया के०) नरकगतिना जीव बांधे. अने (तिष्ठ विणामिश्विसयं के०) तीर्थकरनामकमे विना तेह मिथ्यात्व ग्रुणगणे शो प्रकृति बांधे अने (सासणि के०) सास्वादनग्रुणगणे (नपुचर्गविणा के०) नपुंस कादिक चतुष्क विना (उनुइ के०) उन्नं प्रकृति बांधे ॥ इस्वक्र्रार्थः ॥ ५ ॥

१ सुरिकादिक उंगणीश प्रकतिमध्यें सुरिक, वैक्रियिक, देवायु, नरकगित, नरकानुपूर्वी, नरकायु, ए आत प्रकतिनो वंध, नारकीने न होय, जेमाटे ए आ त प्रकृति देवता अने नारकी प्रायोग्यत्वें अने नारकीतो मरीने फरी देवगित तथा नरकगितमां उपजे नहीं, तेथी ए आत प्रकृति न वांधे

तथा सूद्द्यनाम, अपर्याप्तनाम अने साधारणनाम, ए त्रण प्रकृति एण न बांधे, केमके सूद्दम एकेंड्यमध्ये तथा अपर्याप्तातियेंच अने मनुष्यमध्ये तथा साधारण वनस्पतिमध्यें पण नारकी अवतरे नहीं. एवं अगीआर प्रकृति थइ तथा ए केंड्यजाति, स्थावरनाम, आतपनाम, ए त्रण प्रकृति एकेंड्य प्रायोग्यने, तथा विकलजातित्रिक, ते विकलेंड्य प्रायोग्यने, ते पण नारकीने एकेंड्य तथा विकलं ड्यमांहे अवतरत्रं नथी,तेमाटे ए व प्रकृति पण नारकीन वांधे तथा आहारकि क पण चारित्रने अनावें न वांधे. ए रीतें नरकगतिना जीव, नव प्रल्यें ए वंगणी श प्रकृति न वांधे, तेमाटे ए वंगणीश वर्जीने शेप झानावरणीय पांच, दशेनावरणी य नव, वेदनीय ले, मोहनीय ववीश, आयुनी ले. नामनी पचाश, गोत्रनी ले. अन रायनी पांच, ए रीतें एकशोने एक प्रकृतिनो वंध. ( वधे के ० ) सामान्यें होव एटले अमुक नरकमां तथा अमुक ग्रणवाणे इत्यादिक विशेषपणुं कर्या विना वांधे नारे नरकगतिमां कर्मप्रकृतिनो वंध होय, ते कह्यों.

हवे गुणवाणादिक विशेषापेद्वायं नरकगतिमांहे वंथस्वामित कहेते. ते एक

शोने एक प्रकृतिमध्यें पण तीर्थंकरनामकर्म, मिथ्यान्वगुणवाणे न वांधे. जे माटे तीर्थंकरनामकर्म, सम्यवत्व विना न वंधाय. त्राने मिश्वात्व गुणवाणे सम्य क्तव नथी तेमाटे जिननाम पण न वांधे. शेष एकशो प्रकृतिज वांधे.

खां नपुंसकादिक चार प्रकृतिनो विवेद होय जे नणी नग्कत्रिक. जातिचतु कि, धावरचतुष्क, ढुंफसंस्थान. आतपनाम. ठेव हुं संघयण, नपुंसक वेद. मिय्या लमोहनीय, ए शोल प्रकृति मिथ्यालप्रस्थिकी हो मांह नग्कत्रिक, प्रकृति मिथ्यालप्रस्थिकी हो मांह नग्कित्रिक, प्रकृतिनो तो ना रकीने नवप्रस्थे अवंध हो, तेथी ते अही आं लीधी नथी. शेप नपुंसक वेद, मिथ्या त्वमोहनीय, ढुंफसंस्थान अने हेव हुं संघयण. ए चार प्रकृति मिय्यालयी वंधाय अने सास्वादनग्रणहाणे मिय्यात्व नथी, पण अविरतिहे. तेथी पूर्वाक्त शो प्रकृति माहेथी ए चार प्रकृति टालीयें, ते वारें हक्नुं प्रकृतिनो इंध नरक्षितिमां हे सास्वादनग्रणहाणे होय ॥ ५॥

त्यां सास्वादनग्रणगणे मिण्यात्व छविरति प्रत्यिकी पञ्ची प्रकृतिनो वंध विश्वेद याय, ते छागले ग्रणगणे न वंधाय. ते कहेते.

विणु अण व्वीस मीसे, विसयरि सम्मंमि जिए नराठ जुआ। इस रयणाइसु नंगो, पंकाइसु तित्रयर हीएो ॥ ६॥

अर्थ-(विणुअणववीस के०) अनंतानुबंध्यादिक नवीज प्रकृति विना, (मीसे के०) मिश्रगुणनाणे शेष सीत्तर प्रकृति वांधे, ते(जिण के०) जिननाम अने (नरान के०) मनुष्यायुषं करी, (ज्ञा के०) यक्त करतां (विसयरि के०) वहों तर प्रकृति (सम्मंत्रि के०) अविरतिसम्यक्ष्टिगुणनाणे वांधे. (इञ्चरयणाइसुनंगों के०) एम रत्नप्रनादिक त्रण नरकें नेपेधी चार गुंणनाणा सुधी एहिज नांगो जाणवी, अने (पंकाइसु के०) पंकप्रनादिक त्रण नरकष्टयवीयें (तिज्ञयरहीणों के०) तीर्थकरनामकर्मनो बंध न लाने, तेथी ते प्रकृति हीन करीयें ॥ इत्यक्षरार्थः॥६॥

अनंतानुबंधिया कषाय चार, सध्यसंस्थान चार, मध्यसंघयण चार, कुखग ति, निचैगीत्र, स्त्रीवेद, दीनिग्य, इःस्वर, अनादेय, धीण दीत्रिक, उद्योतनाम, ति यैचित्रक, ए पञ्चीश प्रकृति अनंतानुबंधीयाने उद्यें बंधाय, ते अनंतानुवंधीया मिश्रगुणनाएं नथी ते माटे ए पञ्चीशना बंधनो अंत, बीजे गुणनाएं होय. अने

मिश्रगुणगणे वर्ततो जीव कोइ आयुवंध न करे तेथी अहीं मनुष्यायुनो वंध पण न थाय. ए रीतें वन्नुं प्रकृतिमांहेथी ए ववीश प्रकृति विना मिश्रगुणगणे सीनेर प्रकतिनो बंध नारकीने जाणवो तथा नारकी अविरतिसम्यक्दृष्टि चोथे गुणवाणे वर्ततो कोइ ए सम्यक्त्व गुणे करी जिननाम कमे पण अहींआं वांधे तथा सम्यक्दृष्टि नारकी, कोइएक मनुष्यायु पण वांधे. तथी ते सीनेर प्रकृतिमां हे ए वे प्रकृति नेलीयें, तेवारें बहोंतेर प्रकृति चोथे गुणवाणे वांधे, एम नार कीने प्रथमना गुणवाणां चार होय, जे नणी देवता तथा नारकीने नवप्रत्ययें वि रितपणुं न होय तथी ए आगला दश गुणवाणे न होय एम नरकगतिने विपे चे वे तथा गुणस्थानकविशेषें प्रकृतिबंधस्वामित्व विनाग कही, हवे रह्मप्रनादिक प्रथि विनेदें करी निन्न नारकी विशेषने चें तथा मिथ्यात्वादिक गुणस्थानकविशेषें प्रकृतिबंधस्वामित्व विनाग कहें गुणस्थानकविशेषें प्रकृतिबंधस्वामित्व विनाग कहें गुणस्थानकविशेषें प्रकृतिवंधस्वामित्व विनाग कहें ने

ए रीतें एट जे नरकगितमध्यें उपें एट जे सामान्यपणे तथा मिध्यात्वादिक ग्रण स्थानिवरेषें जे हवुं पूर्वें वंधस्वामित्व कह्यं, ते हवुंज धम्मानामें रत्नप्रनागोंत्रें प्रथम नरकप्रध्वी, बीजी वंशानामें शर्करप्रनागोंत्रें, त्रीजी शैलानामें वालुकप्र नागोंत्रें, ए त्रण नरक प्रध्वीना नारकीने उपें एकशो ने वीश प्रकृतिमां हेथी सुर एकोन विंशतिक विना शेष एकशोने एक प्रकृतिनों वंध होय. ते मांधी जिननामहीन शो प्रकृतिनों वंध मिध्यात्वगुणवाणे होय ते वली नपुंसकादिक चतुष्कविना वृद्धं प्रकृतिनों वंध, सास्वादनगुणवाणे होय ते मध्यें अनंतानुवंध्यादिक वृद्धीश प्रकृति हीन करीयें, तेवारें सीनेर प्रकृतिनों वंध मिश्रगुणवाणे होय ते सीनेरने जिनना म, मनुष्यायु सहित करतां बहों तेर प्रकृतिनों वंध चोथे गुणवाणे पहेली, वीजी तथा त्रीजी,नरकना नारकी वांधे

तथा श्रंजनानामें पंकप्रनागोत्रें चोथी नरकप्टिथवी, रिष्टानामें धूमप्रनागोत्रें पां चमी नरकप्टिथवी, मघानामें तमप्रनागोत्रें उठी नरकप्टिथवी, ए त्रण नरकना नार कीने तीथंकरनामकर्मनो बंध न होय. जेमाटे ए त्रण नरकप्टिथवीथी द्याच्यो जी व, तीथंकरपदवी न पामे. केमके शास्त्रमां कत्तुंठे के प्रथम नरकनो श्राच्यो च कवित्ते थाय, वीजीनो श्राच्यो वासुदेव थाय, त्रीजी सुधीनो श्राच्यो तीथंकर घाय, चोथी सुधीनो श्राच्यो केवली थाय, पांचमी सुधीनो श्राच्यो यित थाय. उठी सुधी नो श्राच्यो देशविरित थाय, सातमी सुधीनो श्राच्यो मत्सादिक सम्यक्त पामे.पण देशविरितपणुं न पामे, तेमाटें पंकप्रनादिकथी श्राच्यो तीथंकर न होय. तेनणी ना मान्यं ए नरकगितना जीवनो वंथ जिननामकर्मथी हीन कीजें. तेथी पंकप्रनादि त्रण नरकें एकोतेर प्रकृतिनो वंध. सम्यक्त्वगुणुवाणे जाने ॥ ६ ॥

ए उ प्रथिवी तुं बंधस्वामित्वपणुं विचारी, हवे सातमी तुं वधस्वामित्वपणुं विचारेते.

ख्य जिण मणु खाउ उहे, सत्तमिए नरङगुच विणु मिन्ने॥ इग नवई सासाणे, तिरिच्याउ नपुंस चउवकं ॥ ७॥

अर्थ-(अजिणमणुआ के०) जिननाम तथा मनुष्यायु एवे प्रकृतियं हीन ( वेहे के०) वेषें नवाणुं प्रकृति (सत्तिए के०) सातमी नरकें बंधाय अने ( न र अर विष्णु के०) मनुष्यिक अने व वेषांत्र, ए त्रण प्रकृति विना ( मिन्न के०) मिष्याल गुणवाणे बन्नं प्रकृति वंधाय अने (तिरिआ के०) तिर्धे चायु तथा ( न पुंस च व के०) न पुंस का दिक चार प्रकृति व क्षीं ने ( इगनव ईसा साणे के०) ए का णुं प्रकृति सास्वाद न गुणवाणे वंधाय ॥ इस्व करा थेः ॥ ॥ ॥

जिननामकर्म तथा मनुष्यायु ए वे प्रकृति तथाविध विग्रुक्ताने द्यनावें मायव तीनामें तमतमप्रनागोत्रें जे सातमी नरकपृथिवीठे, तेना नारकीने न वंधाय. तेथी सामान्यनारकीय एकशो एक प्रकृतिरूप वंधमांहेथी ए वे प्रकृति हीन करीयें. जे नणी सातमीनो आव्यो कोइ मनुष्य, न थाय ते वारें तीर्थंकर पण न थाय ते थी तत्प्रायोग्य मनुष्यना नवने योग्य ए वे प्रकृति पण न वंधाय. शेप नवाणुं प्रकृति उपें वंधाय, अने जेवारें ते नरकने विषे गुण्ह्यानकविशेषें वंध विचारीयें, तेवारें सातमी नरकना मिष्यात्वी, नारकी, एक मनुष्यगित, मनुष्यानुपूर्वी, उद्यगेंत्र, ए त्रण प्रकृति न बांधे. जे नणी सातमी नरकना नारकीने उत्कृष्ट पुण्यप्रकृति एहि जठे तेतो उत्कृष्टिवग्रुक्षाध्यवसायें वंधाय अने उत्कृष्ट विग्रुक्षाध्यवसायस्थान क तो तेने चोथुं गुणुवाणुंठे, तेथी ए त्रण प्रकृति तिहां बांधे पण मिष्यात्वग्रुण न बंधाय. तेथी नवाणुंमांहेथी ए त्रण प्रकृति हीन करीयें, तेवारें शेप वर्षुं प्रकृति मिष्यात्वग्रुणों वंधाय.

ते बन्नं प्रकृतिमांहेली ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, वेदनीय बे, मोहनी य चोवीश, नामनी पीस्तालीश, गोत्रनी एक, अने अंतरायनी पांच,ए एकाणुं प्रकृति, सास्वादनग्रणवाणे सातमी प्रथिवीना नारकी बांधे. शेष पांच प्रकृति न बांधे. केम के,ए ग्रण णे रह्या थका मिण्यालोदय विना आयु न बांधे, माटे तिर्यगायुनो बंध सास्वादनें न होय तथा नपुंसकवेद, मिण्यालमोहनीय, ढुंमसंस्थान अने वेवर्षुं सघयण. ए चार प्रकृति मिण्यालोदयी है. ते चणी ते इहां न बांधे तथी ए पांच प्रकृति, ुंमांदेथी काढीयें, तेवारें शेष एकाणुं प्रकृति बांधे॥ ॥॥

र ौ बंधस्वाि त्वयं कं ा र प्रचा, शर्करप्रचा, वालुकप्रचा, नारके ष्विप पं चा, धू। प्रचा, अचा, नार । एां उंचे तथा चतुर्थे ग्रुणस्थ के हिनहीनयं म्॥

नरकगतीघरत्न ! नादिकत्रय पं ! प्रनादि यजि नहीन	<u>ৰ্</u> থস্কূন্য:	अंधत्ररू यः	बंध विक्रेद्रफत्यः	ज्ञानावरणीय.	दर्शनावरणीय.	वेदनीयप्रकतयः	मोहनीय प्रकृतयः	आयुप्रकतयः	नामप्रकृतयः	गोत्रप्रकतयः	अंतरायप्रकृतयः	स्लप्रकतयः
<b>अविरतें</b>	<u> </u>	<u>४८</u>	ס	ય	६	হ	१ए	?	इ इ	?	ų	घटण
मिश्रें.	90	ųσ	ט	ų	६	হ	? ሢ	ס	₹ श	?	Ų	3
सास्वादनें	ए६	হ ধ্র	१६	ų	Ų	হ	হ প্র	য়	88	য়	ų	बऽज
मिथ्यात्वें.	ס ס ז	হ ত	В	ų	Ų	হ	१६	য়	ษเ	য়	ų	৪১৫
उंघें.	909	30	ū	ų	Ų	श	१६	व	טָ ט	á	प	<u>a2c</u>

तमतमायां.	<b>बंधप्रकृतयः</b>	<b>अवं</b> धप्रकृतयः	<b>बंधविक्षेद्रम</b> ुरा	ज्ञानावरणीय. १	द्रीनावरणीय. श	वेदनीय. व	मोहनीय. ४	आयुक्तमे. ए	नामकमे. ६	गोत्रकमे. ७	अंतराय. प
छविरतें.	90	Ųσ	۵	ц	६	হ	3 W	ט	₹ २	; }	ų
मिश्रें	9 o	५०	ū	प	६	á	१ए	΄ σ	३ २	3	Ų
सास्वादनें.	<b>@</b> ?	श्र	হধ	ų	ָ ע	श	२ध	0	ध ए	?	U
मिथ्यातें.	ए६	হধ	ц	प	Q	, হ	्र ह	₹	83	3	U
चेंबे•	୯୯	२ १	Ų	ų	,	់ ១	ងខ	3	पुष्ठ	ນ	U

अण च वीस विरिह्ञा, सनर ङगुचाय सयरि मीसङ्गे॥ सतरसर् रीह मिन्ने, पज तिरिञ्जा विणु जिणाहारं॥ ७॥

श्रध-(श्रणचग्रवीस कें) श्रनंतानुबंध्यादिकथी तिरिद्धग लगें चोवीश प्रकृति, (विरिद्धश कें) विरिद्धत करीयें, श्रने (नरप्रग्रद्धाय कें) मनुष्यिद्धक तथा ग्र हैगोंत्र, ए त्रण प्रकृतियें (स कें) सिद्ध करीयें, तेवारें (सयिर कें) सीनेर प्रकृतिनों बंध, (मोसप्डगे कें) मिश्र ध्यने श्रविरित, ए वे ग्रणनाणे होय धने (पजितिरश्चा कें) पर्याप्ता पंचेंडियतिर्थेच ने (विणुजिणाहारं कें) तीर्थंकर नामकर्म श्रने श्राहारकिक विना (सतरसर्ग्रविद्धित कें) एकशो सत्तर प्रकृतिनों बंध र्थं सामान्यें मिष्यालग्रणनाणे होय ॥ इस्रकृरार्थः ॥ ए ॥

अनंतानुबंधीया कषाय चार, मध्यसंस्थान चार, मध्यसंघयण चार, कुलगित, नी चैगींत्र, स्त्रीवेद, दोनींग्यत्रिक, धीणकीत्रिक, उद्योतनाम, तिर्वचगित, तिर्यगानुपूर्वी, ए चोवीश प्रकृति अनंतानुवंधीना उदय विना न बंधाय, तेथी ते कपायोदय ही न हे, माटे सिश्र अने अविरतिग्रणवाणे पूर्वीक एकाणुंमाहेची चोवीश हीन करीयें, तेवारें शेष शहशव प्रकृति रहे, तेमांहे मनुष्यगित, मनुष्यानुपूर्वी, अने उच्चेगींत्र. ए त्रण प्रकृति एउने अतिविद्यक्ष अध्यवसायें बंधाय, जे नणी ए घकी अधिक पुष्पप्रकृतिबंध सातमी प्रथिवीना नारकीने नथी, तेथी अहींयां विद्युक्षध्यवसायें ए त्रण प्रकृति बंधाय, तेणे सिहत करतां झानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय ह, वे दनीय बे, मोहनीय उगणीश, नामनी बत्रीश, गोत्रनी एक अने अंतरायनी पांच, एम सीनेर प्रकृतिनो बंध त्रीजे, चोथे, गुणवाणे जाणवो.

एम नरकगतिमध्यें उपें एट से सामान्यें तथा विशेषें वंधस्वामित्व कही, हवे तियेचने उपें तथा विशेषें वंधस्वामित्व कहे हे.

श एक शो वीश प्रकृतिमां हेथी त्रण प्रकृतिनो बंध, तिर्धचगितमध्यें न लाजे,तेथी तिर्धच विशेष पर्याप्ता लिब्धयें करीने पंचें इय तिर्धचने उधें तथा मिण्यालगुणस्था नक विशेषें एक शोने सत्तर प्रकृतिनो बंध होय, छने नामक भेनी त्रण प्रकृति न बंधा य, जे जणी तिर्धचने जवप्रत्ययें तिर्धिकरनामक भे सत्तायें पण न होय, तो बंधें केम होय? तथा । हारक शरीर, छाहारक छंगोपांग, ए बे क भे प्रकृति विशिष्टचारित्र विना न बंधाय. ने तिर्धचने तो सर्वविरति न होय, तेथी ए त्रण नामक भेनी प्रकृति लिब्धपर्याप्ता तिर्धच न बांधे, शेष एक शोने सत्तर बांधे॥ ए॥

ते ह्वे मि प्यात्वें शोल प्रकृतिनो बंधविश्वेद करे, ते कहे छे.

विणु निरय सोल सासणि, सुरा अण एग तीस विणु मी से ॥ ससुरा सयरि सम्मे, बीअ कसाए विणा देसे ॥ ए॥

अर्थ-(विणुनिरयसोल के॰) नरकत्रिकादिक शोल प्रकृति विना (सासणि के॰) सास्वादनग्रणवाणे एकशोने एक प्रकृति बांधे, (सुरान के॰) देवायु अते (अण्ण्यतीस के॰) अनंतानुबंध्यादिक एकत्रीश प्रकृति. एवं बत्रीश प्रकृति (विणु के॰) विना (मीसे के॰) मिश्रगुणवाणे नंग्णोतेर प्रकृति बांधे, तेने (ससुरा न के॰) देवायुयें सहित करतां (सयरि के॰) सीत्तर प्रकृति (सम्मे के॰) अविर तिसम्यक्ष्टिग्रणवाणे बांधे. तथा (वीअकसाएविणा के॰) बीजा अप्रत्यास्यानाव रण चार कपाय विना (देसे के॰) देशविरतिग्रणवाणे नाश्वत प्रकृति बांधे ॥ए॥

तेवारें सास्वादनग्रणवाणे नरकत्रिक, चार जाति, थावरचतुष्क, ढुंमसंस्थान, वेवहुं संघयण, श्रातपनाम, ए चौद प्रकृतिमांहे तेर नामकर्मनी श्रने एक नरका ग्रुनी तथा मिण्यात्व श्रने नपुंसक, ए वे मोह्नीयनी. एवं शोल प्रकृतिनो वंध मिण्यात्वने चद्यें करी होय, ते मिण्यात्वनो चद्य श्रहींश्रां नथी ते माटे ए शो ज प्रकृति विना शेप एकशोने एक प्रकृति लिब्धपर्याप्ता पंचेंड्य, तियंच, वी जे सास्वादनग्रणवाणे वांधे.

ते एकशोने एक प्रकृतिमांहेथी सुंरार्यु अने अनंतानुवंध्यादिक एकत्रीश एवं वत्रीश प्रकृति विना शेप झानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय ठ, वेदनीय वे. मोह्नीय चेगणीश, नामनी एकत्रीश, गोत्रनी एक, अंतरायनी पांच, एवं छेगणो तेर प्रकृति मिश्रगुणवाणो लिह्धपर्याप्ता पंचेंडिय तिर्यंच वांथे केमके त्यां मिश्रगुणवाणे आयुवंध न होय, ते माटे सुरायुनो अवंध कह्यो अने अनंतानुवंधीया चार. मध्यसंस्थान चार, मध्यसंघयण चार, कुखगति. नीचैगोत्र, स्त्रीवेद, दोनोंग्यित्र क, थीणदीत्रिक, उद्योतनाम, तिर्यचित्रक, ए पञ्चीश प्रकृति अनंतानुवंधीयानो उ दय अहीं आं नथी, ते माटे न वंधाय. अने नरित्रक, आंदारिकिह्क अने प्रथम संघयण एवं व प्रकृति मनुष्यप्रायोग्य देवता अने नारकी जेह्वी विशुद्धियं वांथ, तेवी विशुद्धियं तिर्यंच अने मनुष्यने देवप्रायोग्य वंधाय तेथी ए व प्रकृति न वंधाय. हवे ए छंगणोतेर प्रकृतिमांहे वली चोथे गुणवाणे आयु वंधाय नेथी

र् रा बंध जेलतां सीतेर प्रकतिनो बंध, श्रविरतिसम्यक्दृष्टिग्रणगणे लिश्यिप यीप्ता पंचेंडिय तिर्येच बांधे.

ए सीतर प्रकृतिमां से मोहनीयनी प्रकृति जे श्रप्रत्याख्यानावरणकपाय चार. ते नो बंध विश्वेद होय, जेमाटे ए कपाय तो पोतानो उदय ज्यां सुधी ठतो होय त्यां सुधी बंधाय ने प्रत्याख्यानावरणकपायनो उदय, देशविरितगुणठाएो रसस्या प्राख्यानीश्या चार कपायनां दल, प्रख्याख्यानीश्या कपाय चार, लेश जींत्या याटे तेथी ं न बंधाय, तेथी सीत्तरमां हेथी चार काढतां शेप ठाशठ प्रकृति देशविरित पांचमे गुण ऐ लिब्धपयीमा पंचें इिय गर्भज तिर्थेच वांधे श्रागलां गुण ठाणां नवप्रत्ययें तिर्थेचने न होय, तेथी तेनुं वंधस्वामित्व न कहां॥ ए॥

### गर्भजसं क्षिपयीमा पंचे दिय तिर्यचगति वंधयंत्रकम्॥

तिर्यचगती बंध स्वामित्व.	बंधप्रकृतयः	अवैधप्रकृतयः	विकेदप्ररुतयः	क्रानावर्षाय. १	द्रशैनावर्षाय. श	वेदनीय. व्	मोह्तनीय. ४	आयुक्ती. ए	नामकर्म. ६	गोत्रकर्भ. ७	अंतरायप्रकृतयः	मूलप्रकृतय:
उंघें.	\$ \$ 8	₹	ס	¥	ש	ą	वृद्	8	६४	য়	ų	១১៤
मिष्यालें.	\$ ? 3	Ę	? ६	ч	ש	घ	२६	ਬ	<u></u> Ę ধ্র	ą.	ų	वऽष
सास्वादनें.	१०१	? પ્	<b>ন্</b>	ų	ש	য়	হ ধ্র	₹	43	₽ 	ų	១८៤
मिश्रें.	इए	५१	ס	ų	६	- P	₹ @	<u>ק</u>	₹ ?	?	4	9
अविरतें.	90	५०	В	ų	<del></del>	হ	₹₩	?	₹ `	<u>,</u>	4	 55 G
देशविरतें	६६	५४	ש	ų	Ę	श	<u></u>	?	₹ ?	?	य	950

ए तिर्थे ध्यें । ान्यें या विशेषें धिसारि त ही, हवे नुष्य ध्यें हेते. इस्र च गुणेसु वि नरा, परमजया सजिए नेंहु देसाइ॥ जिए इ ।रस हीएं, नव सय स्रपजत्त तिरिस्र नरा॥ १०॥

र्थ-(इ उ ऐसिव के०) एमज चार ग्रुणगणाने विषे तिर्थचनी पेरें (नरा केण) ज्यने पण एमज हेवुं. (पर जयासजिए केण) पण एटलुं विशेष जे विरतिसम्यक्त ग्रणवाणे जिनना सहित ए गेतेर प्रकृति बांधे. ( छ देसाइ के । देशविरति प्र ख गुणवाणे छघ एट छे भस्तवो नी परें कहे बुं अने (जिएइ र हीएं के॰) जिनएकादशकें हीन एटले जिनादिकथी नरक त्रि लगें अगी र प्रकृति हीन कींधे,(नवसय केण) ए शो ने नव प्रकृतिनो वंध,(अ प त्तिरि नरा के०) अपर्या । पंचें इिय तिर्यच तथा नुष्य बांधे ॥ इत्यक्रार्थः॥ ३ ए पर्याप्ता ग तिर्थंचनी पेरें गर्नज मनुष्यने पण मिथ्यात्वादिक प्रथम नां चार गुणवाणाने विषे प्रकृतिनो बंध जाणवों तेथी उपें मनुष्यने एकशो वीश प्रकृतिनो बंध हेवो जे । दे आहारकिक वंधहेतुविशिष्टचारित्र हे ते तथा जिन ना वंधहेतु एने संनवे, तेथी उंघें ए ए प्रकृति सहित गर्वजमनुष्यने उंघें एक शोने वीश प्रकृतिनो बंध जाणवो, ते ध्यें जिननाम अने आहारकिक, ए त्रण प्रकृति मिथ्यात्वें न बांधे, तेथी प्रथमग्रणगणे एकशोने सत्तरनो वंध जाणवो, तेमध्यें नरकादिक शोल प्रकृति हीन रतां सास्वादनें (१०१) नो वंध तेमां थी सुरायु तथा खनंतानुबंध्यादिक एकत्रीश. एवं वत्रीश हीन करतां शेप (६ए) नो मिश्रगुणवाणे बंध. तेमध्यें सुराष्ट्र तथा जिननाम ए वे प्रकृति, चोये गुणवाणे मनुष्य वांधे, तेवारें उंगणोतेर मांही वे मेलवतां (७१) प्रकृतिनो चोंचे गुणवाणे वंध. कमें यमां चोषे गुणवाणे सत्योतेर प्रकृतिनो बंध कह्यो हे, तेमां थी व प्रकृति दीन करीवें तेनां नाम कहेते. मनुष्यत्रिक, छोदारिक श्रीर, वर्ष्ट्र सं स्थान, अने वर्षु संघयण, ए व टालीयें, तेवारें एकोतेर प्रकृति रहे ते, अंही आं चोषे गुणगणे मनुष्यने वंध कहेवी तेमांथी वीजा कपायनी चोकडीनो वंध टाजे, तेवारें पांचमे (६८) नो वंध. तेथी डांचें त्रीजे, चोथे छने पांचमे ए त्रण गुणता णे श्रागला तिर्थचना नवनो वंध जिननाम सिहत करीयें, एटलुं विशेषने. ध्यने प्रमत्तादिकगुणवाणे कमिस्तवोक्त वंधने, जे नणी मनुष्य विना वीजाने ए

गुणवाणां न संनवे, तेथी तेनो बंधस्वामी मनुष्य ने एटले प्रमनें त्रीजा कपायनी चोकडी हीन करतां (६३)नो वंध. तेमांथी शोक, खरति, छस्थिर ६ क, खयश छने अशाता, ए व प्रकति हीन करतां अने आहारिक जेजतां अप्रमतें उंगणशाव नो बंध.तेमांची सुरायु हीन करतां ञाठमाना प्रयमनागें (५०)नो वंध. तेमांची निड़ा दिक हीन करतां आउमांना बीजायी मांमीने उठा सुधीना पांच नागें (५६) नो वंध. सातमे नागे त्रसनवक, तथा औदारिकिक विना श्रेप छंगोपांग ठक्क, एवं पंदर त था देविक, अगुरुलघुचतुष्क, वर्णचतुष्क, पंचेंडिय, गुनविद्वायोगति, प्रथमसं स्थान, निर्माण, जिननाम, एवं त्रीश प्रकृति हीन करतां(१६) नो वंध. तेमांथी हा स्यचतुष्क हीन करतां नवमा ग्रेणवाणाना प्रथमनागें (११) नो वंध. पुरुषवेद हीन करतां बीजे जागे (११) नो वंधः संज्वलनक्रोध हीन करतां त्रीजे जागें(१०) नोवंधः संज्वलनमान दीन करतां चोथे नागें (१ए) नो वंध. संज्वलनमाया दीन करतां पां चमे नांगे(१ ए) नो बंध. संज्वलनो लोन हीन करतां दशमे गुणवाएो(१ ७)नो वंध ते मांथी ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, नामनी एक, गोत्रनी एक छने छं तरायनी पांच, ए शोल प्रकृति हीन करतां अगीआरमा प्रमुख त्रण गुणगणे ए क शातानों वंध जाएवों अने अयोगी अवंधक है एम डेपें कर्मस्तवोक्त वंधप्रमत्ता दिकगुणगणे मनुष्यने लेवो. जे नणीए नव गुणगणां मनुष्य विना बीजानें न होय.

जिनादिक अगीआर प्रकृति एटजे जिननाम, देविहक, वैक्रियिहक, आहारकि क, देवायु अने नरकित्रक, ए अगीआर प्रकृति एकशोने वीशमांथी हीन करीयें, तेवारें शेष एकशोने नय प्रकृतिनो वंध, उमें तथामिध्यालयुणवाणें लिंड्ध अपर्या सामुष्य तथा तिर्यचने होय. एने बीजां तेर गुणवाणां न संज्ञवे. ए मिध्यालीज हो या, ते जणी जिननाम तथा आहारकिहक न बांधे. तथा ते मरीने देवगितमां पण न जाय तथी देवित्रक तथा वैक्रियिहक न बांधे तथा नरकगितमांहे पण न उपजे माटें नरकित्रक पण न बांधे, तेथी ए अगीआर प्रकृति हीन कीजें,तेवारें एकशोने नय प्रकृतिनो बंध, उमें तथा मिध्यात्वें होय, ए लिंध्य अपर्याप्ता लेवा अने करण अपर्याप्ता तिर्थच तथा मनुष्यने अपर्याप्तावस्थायें पण देविहकादिकनो बंध थातो कह्यों वेथी ते न कह्या, करणपर्याप्ता देव तथा मनुष्य तथा तीर्थकरनाम कमें बांधे, ते लिंध्यपर्याप्ता चोथे गुणवाणे जाणवो ॥ १०॥

## ॥ ध्यारीणा यंत्रकम्॥

_	बंधपकृति.	अवं धमकृति-	विच्छेद्मकृति.	ज्ञानावरणीय.	दशीनावरणीय.	वेदनीय.	मोहनीय.	आयुःकर्म.	नामकर्भ.	गोत्रकर्म.	अंतरायकर्म.	मूलमकृति.
ઓર્વે. ————————————————————————————————————	१२०	0	સ્	ч	९	२	२६	ક	६७	२	ч	320
मिथ्यात्वें.	११७	३	१६	ч	९	२	२६	ક	ફ્ષ્ટ	2	ч	950
सास्वादनें.	१०१	१९	३२	4	9	ء ح	રક	3	५१	२	4	950
मिर्श्ने.	६९	५१	0	ч	(SV	٥	१९	o	38	8	٤	9
अविरतें.	७१	धर	ક	م	EV.	٩	१९	8	35	१	4	<b>95</b> c
देशविरतें.	६७	५३	છ	ч	ફ	٦	१५	2	३२	3	ч	220
मगत्तसंयते.	६३	५७	6	ч	દ	مر	२१	१	३२	१	4	<b>55</b> c
अपम त्तसंयतें.	<u> </u>	£ 9	१	ч	ફ	१	٩,	3	३१	१	4	<u>5</u> 5c
निष्टर्चे.	w 2  2, m m 2	20 00 TO	12	ч	*	१	٧,	0	३१	8	4	હ
अनिष्टत्तें भागें-	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	:1%	-b	ч	ક	१	,6ام	0	१	?	G,	9
अनिष्टत्तें भागें	3 4	903	9 7	4	ક	8	9 12	0	3	?	4	उ
सूक्ष्मसंपरायें.	१७	१०३	१६	4	ક	१	0	0	₹,	3	4	E
खपशांतमोर्हे.	१	११९	0	0	0	१	0	0	0	0	0	?
क्षीणमोर्हे.	१	११९	o	0	0	8	0	0	0	0	0	?
सयोगीकेवलीयें-	१	११९	१	0	. 0	3	0	0	0 1	• ;	0	?
ययोगीकेवलीयें.	۰	१२०	o	0	0	S	0	•	0 '	٥	0	°

एम मनुष्य तथा तिर्यचगतियें, उधें तथा गुणस्थानादिकविशेपें वंधस्वामि ल कही, हवे देवगतिने विपे उधें तथा विशेपें वंधस्वामित्व कहेते.

निरयव सुरा नवरं, उहे मिन्ने इगिंदि तिग सिह्छा॥ कण्डमे विच्य एवं, जिणहीणो जोइ नवण वणे॥ ११॥

अर्थ-(निरयवसुरा कें ) नरक गितना बंधनी पेरं देवतानो पण वंध जाण वो परंतु (नवरं के ) एटलुं विशेष जे ( उदे के ) उपे एकशो चार प्रकृति अ ने ( मिन्ने के ) मिण्यालगुणवाणें एकशो ने प्रण प्रकृति ते ( इगिंदितिगसिह्या के ) एकेंडियादिक त्रण प्रकृति सिहत बांधे, एटले एकेंडियादिक त्रण प्रकृति नारकीथी अधिक बांधे. (कप्पडुगेविअएवं के ) वे देवलोकें पण सुर्उधनी पेरं उपे एकशो चार, मिथ्यात्वें एकशो त्रण, सास्वादनें उन्नं, मिश्रें सीनेर, अ विरितियें बहोंतेर, अने ( जिणहीणो के ) जिननाम विना शेष एकशो त्रण प्रकृति उपे ( जोइ के ) ज्योतियी तथा ( चवण के ) ज्यवनपतिने अने ( वणे के ) व्यंतर ए त्रणेने उपे एकशो त्रण, मिष्यात्वें एकशो त्रण, सास्वादनें उन्नं, मिश्रें सीनेर, अने अविरितियें एकशो त्रण, मिष्यात्वें एकशो त्रण, सास्वादनें उन्नं, मिश्रें सीनेर, अने अविरितियें एकोतेरनो बंध जाणवो ॥ इत्यक्त्रार्थः ॥ ११ ॥

ध जेम नरकगितमध्यें वंधस्वामिल कहां, तेमज देवगितमध्यें पण जाणवं. के मके जेम नारकीने नरकगित तथा देवगितमांहे उपजवुं नथी, तेम देवताने पण चवीने ए बे गितमांहे उपजवुं नथी. तथी तत्प्रायोग्य देवित्रिक, नरकित्रक, वै क्रियिक, ए खाठ प्रकृति न बंधाय, अने विरित्त न होय, तथी खाहारकिक न बंधाय. स्क्रा एकेंडियमध्यें तथा विकलेंडियमध्यें पण देवता न उपजे, ते थी स्क्रात्रिक अने विकलित्रिक, ए उ प्रकृति पण न बंधाय. एम विंशोत्तरशत प्रकृतिमांहेथी ए शोल प्रकृति टले, तेवारें एकशोने चार प्रकृति उपें बंधाय, ते मांथी मिथ्याल गुणवाणे जिननाम न बंधाय. तथी ते हीन करीयें, तेवारें एक शो त्रण प्रकृतिनों बंध मिथ्यात्वें होय, तेणे नारकीने द्यां विशेष? जे नार की एकेंडियमध्यें न जाय खने देवता सक्ष्य एकेंडियमांहे न जाय पण बादर ए केंडियमांहे जाय तथी बादर एकेंडिय प्रायोग्य एकेंडियजाति, स्थावरनाम, खा तपनाम, ए त्रण प्रकृति नारकीथी देवता धिकी बांधे, तथी उपें एकशो चार अने मिथ्यात्वें एकशो त्रण बंधाय. तथा मिथ्यात्वें एकशो त्रण बंधाय. तथा मिथ्यात्वें एकशो तथा हों एकशो चार अने मिथ्यात्वें एकशो त्रण बंधाय. तथा मिथ्यात्वें एकशो तथा वर, खातप, नपुंसकवेद, मिथ्यात्वमोहनीय, दुंमसंस्थान, छेवर्छु संघयण, ए सा वर, खातप, नपुंसकवेद, मिथ्यात्वमोहनीय, दुंमसंस्थान, छेवर्छु संघयण, ए सा

पण अवतरे तेथी, एकेंड्यादिक त्रिकारे पण वंध करे, तेथी तेमज जाणवुं.

हवे ते एकशोने चार प्रकृतिरूप देवताना उंचे वंध है तेने जिननामधी हीन करीयें, तेवारें एकशो ने त्रण प्रकृतिनो वंध उंचें तथा मिण्यात्वें जे नणी अहीं आं जिननाम ते कम्म पूर्वें काढगुंहे तथी अंही मिण्यात्वगुणगणे हीन नथी करहुं. माटे ए चंइ स्वादिक ज्योतिपी तथा ज्ञवनपति अने व्यंतर ए त्रण निकायना देवता ने वंध प्रकृति उंचें एकशो त्रण, अने मिण्यात्वें पण एकशो त्रण, सास्वादने ठल्लें, मिश्रें सित्तर, अने चोथे ग्रणगणे नरायुनो वंध वधे, तेवारें एकोतेर प्रकृतिनो वंध थाय, अने ए त्रण निकायना देवतामांहेलो आव्यो तीर्थंकर न थाय. जे माटे ए हने जे अवधिकानहे ते जीवने परनवे आवीन शके अने श्रीतिर्थंकर तो त्रण कानें सहित उपजे, तेथी ए देवोने जिननाम न वंधाय एटलुं विशेषहे. शेपपूर्ववत्॥११॥ सहित उपजे, तेथी ए देवोने जिननाम न वंधाय एटलुं विशेषहे. शेपपूर्ववत्॥११॥

॥ उपें तथा १ सोधमे, १ ईशान, विद्धं देवलोकें वंधस्वामित्वयंत्रकमिदम्॥

देवगती.	वंधप्रकृतयः	<b>अ</b> वंधप्रकृतयः	बंथ विशेद्यकतयः	ज्ञानावरप्तीय.	दर्शनावर्षाय.	वेदनीयम्कतयः	मोहनीय प्रकृतयः	आयुप्रकत्यः	नामप्रकृतयः	गोत्रप्रकत्यः	अंतरायप्रकृतयः	गुप्रक
चंधें.	र ०४	१६	. ?	' ט	Ų	য়	१६	হ্	υą	á	นุ	350
मिध्यात्वें.	, १०३	\$ 8	9	, प्	ָט	२	२ ६	Į.	บุจุ	ਬ	U	355
सास्वादनें	က်င်	,२४	१६	Ų	Ŋ	á	១ង	Ð	83	á	1,	320
मिश्रं.	ខូ០	UO	D	U	Ę	হ	१ए	Ū	30	7	1)	3
श्रविरतं	ធ វ	<u>ម ក</u>	ט	Ų	Ę	5	र्ए।	?	9 <del>9</del>	?	ับ	336

#### ॥ ज्योतिषि, ज्ञवनपति, वानमंतरव्यंतरेषु वंधस्वामित्वयंत्रकमिदम् ॥

ज्योतिषीच्चवन पतिव्यंतरा दिकेषु.	क्षप्रकृतयः	अवंधप्रकतयः	बंधवि हेदप्ररुत्यः	ज्ञानावर्षीय. १	द्रीनावरणीय. श	वेदनीयः ३	मोह्नीय. ४	ष्ट्रायुःकर्मे. ए	नामकमे. ६	गोत्रकर्म. उ	अंतराय. ट	मूलप्रकतयः
उधें.	१०३	\$ 8	۵	ų	Ų	হ	१६	হ	<b>५</b> श	হ	ų	១১៤
मिष्यातें.	१ण३	<b>8</b> \$	8	ц	Ŋ	হ	१६	হ	५१	ā	ч	बद्रव
सास्वादनें.	ए६	१ ध	<b>२</b> ६	ų	Ų	इ	হয়	श	8 8	য়	ц	ឧទ្ធ
मिश्रें	OB	Ųо	ס	ų	६	হ	१ ए	ס	<b>३</b>	3	ų	9
अविरतें.	9 <b>?</b>	ង៤	ם	ч	ह	व	१ए	?	<b>३</b>	3	ų	85 <b>0</b>

रयणुव सणं कुमारा, इ आणयाइ ठकों अ चठरहिआ॥ अप क तिरिअव नव सय, मिगिंदि पुढवि जल तरु विगले॥१२॥

अर्थ-(रयणुव के०) रत्नप्रनानारकीनी पेरें (सणंक्रमाराइ के०) सनत्कु मारादिक देवलोकने विषे चेंघं एकशो एक, मिण्यात्वें शो, सास्वादने वसुं, मिश्रें सितर, अने अविरतियें बहोंतेरनो बंध जाणवो. (आणयाइ के०) आणता दिक चार देवलोक तथा नव मैवेयकें ( ज्ञांअच जरहिआ के०) ज्योतादिक चार प्रकृति रहित करीयें, तेवारें चंचें सत्ताणुं, मिश्यात्वें बसुं, सास्वादनें बाणुं, मिश्रें सीतर अने अविरतियें बहोंतेरनो बंध होय तथा (अपक्रतिरिश्चव के०) अप यीता पंचेंडिय तिर्यचनी पेरें ( नवसय के०) एकशोने नव प्रकृतिनो बंध (मिनिंदि के०) एकंडिय, (पुढवि के०) एथिवीकाय, ( जल के०) अपुकाय, ( तरु के०) वनस्पतिकाय, (विगले के०) बे इंडियादिक,त्रण विकलेंडिय, एवं सातेने बंध होय. रत्नप्रनाप्टथ्वीना नारकी जेटली प्रकृति, चंचें तथा ग्रुणस्थानकविद्रोषें बांधे, नेटली स्वल्या

तेटली सनत्कुमार, माहेंड्, ब्रह्म, लांतक, ग्रुक्त, अने सहस्त्रार, ए व देवलोकना देवता बांधे जे नणी ए देवता पण चवीने एकेंड्यिमांहे न उपजे, तेथी एकेंड्यि जाति, शावरनाम अने आतप ए त्रणनो बंध उंघें तथा मिथ्यालें न होय, तेवारें एकशो ने ए उंघें बांधे तेने जिननाम हीन करीयें,तेवारें मिध्यात्वें शोप्रकृति बांधे. तेमांथी नपुंसकादि चतुष् हीन करतां साखादनें बच्चे प्रकृति बांधे. तेमांहेथी श्चनंतानुबंध्यादिक ववीश प्रकृति टले, तेवारें शेप सीनेर प्रकृति मिश्रगुणवाणे बांधे, तेने जिननाम तथा नरायु सहित करीयें, तेवारें बहों तेर प्रकृति, चोथे यु णगणो वांधे. एना हेतु पूर्वनी परें लेवा. आणत, प्राणत, आरण अने अच्युत, ए चार देवलोक तथा नइ, सुनइ, सुजात, सौमनस्य, त्रियददीन, सुददीन, छमो घ, सुप्रतिबद, अने यशोधर, ए नव यैवेय तथा पांच अनुत्तरविमान. एवं चौ द स्थानकें तथा खढार स्थानकें उद्योतना तिर्येचत्रिक, ए चार प्रकृति न बांधे जे नणी त्यांनो आवेलो जीव, मनुष्यज थाय, पण तिर्यंच न थाय, तेमाटे तत्प्रा योग्य ए चार प्रकृति न बंधाय तेमाटे मूलौधमांहेथी सुरिहकाहिक उंगणीश प्र कति खने ए चार प्रकति, एवं जेवीश प्रकेति टले,तेवारे शेप झानावरणीय पांच, दरीनावरणीय नव, वेदनीय बे, मोहनीय वहीश, आयुंनी एक, नामनी सडताली रा, गोत्रनी बे अने अंतरायनी पांच, एवं सत्ताएं प्रकतिनो बंध उधें होय तेने जिननाम हीन करतां मिण्यात्वें ढच्चं प्रकृतिनो बंध शेष पूर्वेली पेरें जाएवो. तथा अ तरविमानवासी देवोनें एकज चोखं ग्रणवाणुं होय, शेप ग्रणवाणां न हो य तेथी तेने उंघें एटले सामान्ये तथा विशेषें बहोंतेर प्रकृतिनोज वंध जाएवो. एम देवगतियें बंधस्वामित्व कह्युं. अहीं सुधी गतिमार्गणाना चार चेदें बंध स्वामित्व कह्यं.

हवे इंड्यिमार्गणायें तथा कायमार्गणायें वंधस्वामित्व कहेते. त्यां इंड्यिमार्गणामध्यें एकेंड्यि वेंड्य, तेंड्य, अने वोरिंड्य, ए चार मार्गणा अने काय मार्गणामध्यें एथवी अप अने वनस्पतिकाय ए त्रण मार्गणा ए वेंड्ड मली ना तकारें डंपवंध लिख्यप्रपर्वाता. पंचेंड्य तिर्थचनी पेरे एकशोने नय प्रकृतिनां वंध होय, केंमके ते जीवोने सम्यक्त चारित्र नथी तथा ते देवगित अने नरकगित मांहे न उपजे. तथी जिननाम. सुरित्रक. नरकित्रक. विक्रियिक्त. आदारकिक. ए अगीआर प्रकृति विना शेप एकशोने नय प्रकृति डोवें तथा मिन्यात्वे वांध पण लिख अपर्याता पंचेड्यितिर्यचने एकज मिथ्यात्वगुणवाणुं होय अने ए मातने तो मिन्या त्य अने सास्यादन ए वे गुणवाणां संनवे. जे माटे ए मध्यें मन्यक्त यमनो जीव. अयतरे. ते कारणे आपर्यातावस्थायें सास्यादनपणुं संनवे. ए विशेषने ॥ १०॥

# ॥ आणतादिच ये तथा यैवेयकनवके बंधस्वामित्वयंत्रकमिदम्॥

छविरतें.	ब श	ង ច	O	ų	Ę	য়	3 @	3	₹₹;	3	ų	८८७
मिश्रें.	O B	ŲО	ם	ય	६	घ	7 ए	0	३ १	?	ų	9
सास्वादनें.	एश	হ ড	₹ ?	५	ע	য়	হ প্র	?	88	भ	ų	950
मिथ्यात्वें.	ए६	হ ধ্র	B	ų	ע	श	इ६	?	ध६	হ	ų	950
<b>चे</b> घें.	ए व	१३	?	ч	Ų	হ	श्ह	?	នឧ	হ	ય	950
आएता दिचतु छये तथा भेवे यकनवके.	बंधप्ररूति.	अवंधप्रकृति.	विज्ञेदप्रकृति.	ज्ञानावरणीय.	न्जीनावरणीय.	नेन्नीयक्रमे.	मोद्रतीयकर्म.	आयकमे.	नामकर्म.	गोत्रकर्म.	छंतरायकमे.	मूलप्रकृतिः

नवइ सासणि विणु सुढु,म तेर केइ पुण विंति च नवइ॥ तिरिच्य नराऊहि विणा, तणु पक्जित्तं न जंति जर्छ॥ १३॥

अर्थ-(विणुसुद्धुमतेर के०) सुद्धादिक तेर प्रकृतिना बंध विना ( उनवइसास णि के०) उन्न प्रकृति सास्वादन ग्रुणवाणे बांधे, ( केइ के०) कोइ एक आवार्य ( पुण के०) वली आवी रीतें ( बिंति के०) कहे हे के, ( तिरिश्चनराक्ति विणा के०) अपर्याप्ता तिर्थेच नुं आयु अने मनुष्यायु, ए बे प्रकृति विना (च व न व इ के०) चोराणुं प्रकृति, सास्वादनें बांधे, जेमाटें ( तणुप कि के०) श्रारिपर्याप्ति ( न जंतिज के०) सास्वादनपणे पूरी न करे तेमाटे ॥ इत्यक्त्राधिः ॥ १३ ॥ जवनपति, व्यंतर, ने ज्योतिषी, ए त्रण, सौधमी, ईशान, ए बे वैमानिक, देवता मिण्या त्वप्रत्ययें एकें हिय प्रायोग्य आयु बांधी, पढी वली अध्यवसायिव दें सम्यवत्व पामी मरणसमयें सम्यवत्व वमतो, एथिवी, प्रवनस्पति, ए एकें हियमां हे वतरे, तेने शरीरपर्याप्ति प्रणे करीन होय तथी पहेलां सास्वादन होय, तेने उन्हें प्रकृतिनो बंध होय. जे जणी सू त्रिक, विकलजातित्रिक, एकें हियजाति, थावर, आतप, नपुंसकवेद, मिण्यात्वमोद्दनीय, 'मसंस्थान. सेवार्तसंघयण, ए तेर प्रकृति

मिध्यात्व विना बंधाय, तेथी छहीं छां एकशोने नव मांहेथी तेर टालतां शेप बहुं प्रकृति सास्वाद्नें बंधाय. छहीं छा को इएक छाचार्य श्रीचंड सूरि प्रमुख एकें डियादिक साते मागेणा हारे ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, वेदनीय वे, मो हनीय चोवीश, नामनी सडतालीश, गोत्रनी बे, छंतरायनी पांच. एवं चोराणुं प्रकृति बंधाय एवं हेढें, जेनणी ए सात मागेणाएं करण छपप्यितावस्थायें ज साखादन पणुं हुंते पण पर्याप्तावस्थायें सन्यक्त्व नथी, तो तेथी वमतां सास्वादनें जावपणे केम होय? तेणों ते सास्वादन गुणवाणे वर्चतां शरीरपर्याप्ति पूरी न करे, छने शरीर इंडिय पर्याप्ति पूरी ह्या विना रण छपप्यीता, परनवायु न वांधे तेथी सुरायु छने नरकायु, एवं प्रकृति नवप्रत्ययें नथी छने तिर्यगायु तथा मनुष्यायु ए वे पण करण छपप्यी प्रान वांधे, तेथी छायु विना सूलप्रकृति सात छने उत्तर मुहूर्च प्रमाण सास्वादन का लस्तोक, ते नणी विकलेंडियमध्यें मनुष्य छने तिर्यच सम्यक्त वमतो छावे, को इएक छाचार्य कहें के साखादनगुणवाणुं शरीरपर्याप्ति पूर्ण थया पठी रहे. तेवारें वे छायु बांधे बीजा छाचार्य वली एम कहें के शरीरपर्याप्ति पूरी थया पठी सा स्वादनगुणवाणुं रहे, तेवारें वे छायु न वांधे.

कर्मग्रंथना टबाकार श्रीजीवविजयजी माहाराजें एम लख्युंठे के साखादन ग्रुणवाणे स्वस्त्रित्राहिकथी ठेव हा सुधी तेर प्रकृति, एकशो नवमांहेथी उठी की धे थके व्युं बांधे, एने वेज ग्रुणवाणां होय. अने केटला एक श्राचार्य कहेने के तिथेचायु अने मनुष्यायु विना चोराणुं वांधे, जे चणी. एकंडियादिक मास्वादन वंत थको शरीर पर्याप्ति पण पूरी नकरी शके तो श्रायु केम बांधे? तेवारें त्यां पहे ले मतें शरीर पर्याप्ति पूरी थया पठी पण सास्वादन रहे, त्यां श्रायु बांधे. तेवारें ते वृद्धे प्रकृति बांधे अने वीजे मतें तो शरीरपर्याप्तिथी श्रागलज मास्वादन जा य तो श्रायु क्यांथी बांधे? तेवारें ते चोराणुंज बांधे. ए वे मत जाणवा. एमांह चोराणुनो मत खरो चातेने. जे चणी एकेंडियादिक मुं जयन्यायु पण बशो वपन्न श्राविकानो कुलक चव होय. ते श्रायुना वे चाग गये थके एकशोन एकोनेग्मी श्राविकानों कुलक चव होय. ते श्रायुना वे चाग गये थके एकशोन एकोनेग्मी श्राविकानों खायु बंधाय. श्रुने मास्वादनपणुंतो चत्रुष्टुंपण व श्राविकानुं हो य तेटलामांहे परचवनुं श्रायु केम बंधाय? ते माटे चागणुंज बांधे. ए मन गु ह जणायने श्रुने ग्रंथकारें वृद्धे कही तेनों कोण जाणे श्रेष्टाचें कही हो हो नथा श्राविक प्रित्रने पण नामादने श्रायुवंध निवानोंने " नामणिच नवदा

विणा, नरतिरिया सुद्धुमतेर " ए गाथायें निवास्त्रों तो ते छाई। छां पण एमज जोइयें, केमके ते छाने ए साखादन, एकज हे ॥ १३ ॥ एटले ईिइय छाने काय मार्गणा मांहेला सात हारें बंधस्वामित्व कहां. एवं छागीछार मार्गणा हार थया। ॥ अपयीप्ता एकेंडिय, प्रथ्वी, छाप्, वनस्पति, विकलत्रय वंधस्वामित्व घेत्रकम् ॥

श्रपयीप्ताएकेंडि यादि बंधस्वा मिल्वयंत्रकमिद म्र.	बंधणात्रकति.	अबंधप्ररुति.	विक्रेद्रमकति.	ज्ञानावरणीय.	द्रीनावरणीय.	वेदनीय.	मोहनीय.	आयुःकर्म.	नामकमे.	गोत्रकर्म.	अंतरायकर्म.	मूलप्रकति.
<b>उ</b> घें	१०७	? ?	ס	ц	ש	হ	१६		य ज	হ	ų	១८៤
मिथ्यात्वें.	१ ०ए	? ?	१३	ય	ę	व	२ ६	হ	५ ७	ঠ	ų	बऽए
सास्वादनें.	<u> ९६</u> <b>९४</b>	₹ ₹	Ū	ų	Ų	श	হয়	2	ខ ខ	হ	ų	ឧឧ

छेहु पाणिंदि तसेगइ, तसे जिणिकार नरतिगुच्च विणा॥ मणवय जोगे छेहो, रखे नरनंगु तम्मिस्से॥१४॥

श्रथ—( चेहु के० ) चेघबंध, (पणिंदि के० ) पंचेंड्यमार्गणायें, (तसे के०) त्रसकायमार्गणायें चेघें, मिध्यात्वें श्रने सास्वादनादिकें एम मूल बंधस्वामिल जाण खं. तथा (गइतसे के०) गतित्रस ते तेचकाय श्रने वाचकाय मार्गणायें (जिणिक्का रनरितग्र विणा के०) जिनादिक श्रगीश्रार प्रकृति तथा मनुष्यित्रक, च्यौगींत्र, ए पंदर प्रकृति विना एकशो पांच प्रकृतिनो बंध जाणवो. (मणवयजोगेचेहो के०) चार मनोयोगमार्गणायें, चार वचनयोगमार्गणायें, मूल चेघें बंध लेवो. (चरले के०) शौदारिक श्रौदारिककाययोगें,(नरजंग के०) मनुष्यना बंधनी पेरें बंधनो नांगो लेवो, (तिमस्से के०) तेमज श्रागल श्रौदारिकमिश्रयोगें पण लेवो ॥ इस्रकृराधः॥१॥॥ माताना चदरमांहे चपजे, ते वेलायें श्रौदारिककाय पूरी न थायः त्यां लगें श्रौदारिकमिश्र होय, तेने एकशोने चौद प्रकृतिनो बंध होय पढी ( उध के० ) जे

बीजे कमिस्तवें सर्व जीवनी पेक्तायें जे गुणवाणे बंध क ो,तेहिज जाणवो. एट हो उंघे एकशोने वीश, मिथ्यात्वें एकशोने सत्तर, इत्यादिक चौद गुणवाणां पर्यत बंधस्वामित्व जे प्रमाणे सर्व जीवनी अपेक्सयें मेस्तवमां कहां हे ते प्रमाणे पं चेंड्य मार्गणा दारें अने त्रसकायमार्गणा दारें बंधस्वामित्व जाणी लेवुं एवं तेर

ह्वे गित त्रस एटले जोपण स्थावरनामकमेना उदयथी लिब्धस्थावरहे, तो पण चालवाने साधमें त्रस होय एटले तेउ, अने वाउ, ए वे काय ज ध्वेग न तिर्यग्गमन करे, ते माटे एने गितत्रस कहीयें ते गितत्रसने विपे जिना दिक अगीआर प्रकृति तथा जुष्यित्रक, उच्चैगीत्र, एवं पंदर प्रकृति न बंधाय. जे नणी तेउ अने वायुमध्येंथी देवता नारकी तथा मनुष्य न उपजे, तेथी तत्प्रा योग्य देवत्रि , नर त्रिक, वैक्रियिक, जिननाम, आहारकिक, मनुष्यित्रक, ने उच्चेगीत्र. एवं पंदर प्रकृति न बांधे. तेवारें शेप इत्तावरणीय पांच, दर्शना वरणीय नव, वेदनीय बे, ोहनीय हवीश, आयुनी एक, नामनी हप्पन्न, गोत्रनी एक अने अंतरायनी पांच, एवं एकशोने पांच प्रकृति वांधे, ए तेउ अने वाउ ए वे ए ज तिर्यचगितमां अवतरे, तेथी तिर्यंच मध्यें तो नवप्रत्ययें एक नीचैगीत्रज उदय होय, तेथी उच्चैगीत्र पण न बांधे. ए बेमांहे सास्वादन ग्रणताणुं न होय जे नणी सम्यक्त वमतो पण ए वे मांहे कोइ अवतरे नहीं. एम इंड्यमार्गणा तथा कायमार्गणा कही एटले पूर्वे गितमार्गणानां चार हार कहेलांहे अने इंड्य तथा कायमार्गणा कही एटले पूर्वे गितमार्गणानां चार हार कहेलांहे अने इंड्य तथा कायमार्गणा हारी हार. एम बहां मली पंदर मार्गणाहारें वधसामित्वपणुं कहां.

हवे योगमागिणायें वंधस्वामित्व कहें छे खां एक सखमनोयोग. वीजो छस त्यमनोयोग, त्रीजो सत्यामृषामनोयोग, चोयो श्रसत्यामृपामनोयोग. ए चार म नोयोग छे अने सत्यवचनयोग, असख्यवचनयोग, सख्यामृपावचनयोग. श्रमत्यामृ पावचनयोग, ए चार वचनयोग छे छाते योग पहेलां ग्रणाणां मां मीने वारमा हिणमोह ग्रणाणां लगें हे. तेथी वीजे कमेश्रंथें जे ग्रणाणाश्राश्रिय मृत वंश कह्यो एटले ठीयें एकशोने वीश प्रकृतिनो वंध तथा जिननाम श्रने श्राहारण हुगें हीन. मिथ्यात्वें एकशो सत्तर प्रकृतिनो वंध सास्वादने एकशोने एकनो वंध.मिश्रं चमोनेर नोवंध, श्रविरतियें सत्त्यातेरनो वंध. दशविरतियें शहशवनो वंध.प्रमने त्रशवनो वंध. एम वारमा ग्रणाणालागें प्रवांक्त रीतें वंधस्वामित्व जाणां हुं ए श्राव योगें वार ग्रणाणां होय. तथा वे मनना. श्रने वे वचनना योग, तरमे ग्रणवाणे होय. ए ग्राव तें मन तथा वचनना श्रावयोगने विषे वंध कह्यों एटले सत्तर मागणां हार श्रवां.

हवे सातकाययोगें वंध कहेते. ते सात काययोगमध्यें खीडारिककाययोगें तो म तुष्यनी पेरें वंधस्यामित्व जाणवुं. जे नणी खीडारिक शरीर मनुष्य खने निर्वच विना न होय तेमांहे पण अधिक ग्रणस्थानके अधिक प्रकृतिना बंधस्वामी मनु ष्यहे, तेथी हीं आं नुष्यनो नांगोज कह्यो एटले डीचें एकशो वीश प्रकृतिनो बं ध, मिथ्यात्वें एकशो सत्तर, सास्वादनें एकशोने एक, तेमांथी सुरायु तथा अनं ता बंध्यादि एकत्रीश एवं बत्रीश प्रकृति हीन करतां मिश्रें जगणोतेर, तेवली सुरायु तथा जिनना सहित अविरितयें एकोतेर वांधे अने देशविरितयें शहशव, प्र में त्रेशव, एम पूर्वजी पेरें तेर ग्रुणवाणे बंध स्वामित्व जेखववुं. एम श्रीदारिक ाययोगें बंधस्वामित्व कह्यं ॥ १४॥

हवे ते औदारिक मेणसाचें मिश्र काययोगी अपर्याप्तावस्थायें जे मनुष्य त था तियेंच होय, त्यां बंधस्वामित्व कहे हे

आहारवग विणोहे, च दसस मिचि जिए पएग हीएं॥ सासणि च नवइ विणा, तिरिच्य नराउ सुद्रुम तेर ॥ १५॥ थ-( हार्बग्विण के॰) आहारबक्क विना (उहे के॰) उधें (चडदस च केण) ए शोने चौद प्रकृति बंधाय, अने (मिश्चि केण) मिथ्यात्वें (जिएए एग के । जिनपंचकनी पांच प्रकृति, (ही एं के ।) हीन करी थें, तेवारें एक शो नव बांधे. तथा ( सासिण के॰ ) सास्वादनग्रणवाणे तो ( च वनवइ के॰) चोराणं प्र ति बंधाय, (तिरिद्य के॰) तिर्यचायु, (नराज के॰) मनुष्यायु, (सुहुम तेर केण) सुद्धादिक तेर प्रकृति, (विणा केण) विना चोराणुं प्रकृति बंधाय ॥१५॥ ते खौदारिकमिश्रयोगी जीवने आहारकशरीर, अने आहारक अंगोपांग, ए वे प्र ति प्रमत्तगुणस्थान ने अनावें न बंधाय, तथा सुरायु अने नरकत्रिक ए चार प्र ति सर्व पर्याप्ति पूर्ण क । विना न बंधाय, माटे ए व प्रकृति अपर्याप्तावस्था यें न बंधाय, तेथी हान पांच, दरीन नव, वेदनीय बे, मोहनीय ववीश, आयु बे, ना मनी त्रेशत, गोत्रनी बे ने अंतरायनी पांच. एवं एकशोने चौद प्रकृति उपें औदारि ककामण मिश्रकाययोगें वर्त्ततो मनुष्य तथा तिर्यच बांधे अहीं आं जे शरीरपयांति पूरी कस्या विना ग्रीदारिकयोग माने तेने मतें औदारिक मिश्रयोगीने नरायु तथा तिर्यगा नो बंध प्ण न घटे ? शरीरपर्याप्ति पूरी धया पढी मनुष्यने ने तिर्यचने आयु बंधाय तेमाटे तेना मृतें एकशोने बार प्रकृतिनो बंध उधें होय, तेमांहेथी

जिननाम, रगति, रा पूर्वी, वैत्रि यशरीर, वैक्रिय अंगोपांग. ए पांच प्रकृति मिथ्या

त्वी म ज्य तथा तिर्यचने पर्याप्तावस्थायें तथाविध वि दिने नार्वे न बं

धाय तेथी गैदारि मिश्रयोगी मिथ्यात्वीने ए पांच प्रकृतिनो बंध न पामीयें, शेष ए शो नव प्र तिनो बंध मिथ्यात्वें होय.

तेने सास्वादनगुणगणे नरायु, तिर्यगायु, ए बे कृति रीरपर्याप्ति पूरी खा विना न बंधाय. के के सास्वाद नावें वर्त्ततो छपर्या विस्थायें शरीरपर्याप्ति पूरी न करे, तथी ए बे प्रकृति न बंधाय था ि प्यात्वनो जदय नथी तथी सुद्धात्रिक, विकल त्रिक, एकें डि्यजाति, थावर, तप, नपुंस , मिथ्यात्व, हुंमसंस्थान, वेव हुं संघ यण, ए तर प्रकृति न बांचे. एवं पंदर प्रकृति पूर्वी ए शोने नव मांहेथी हीन रीयें तेवारें शेष ज्ञानावरणीय पांच, दश्नीनावरणीय नव, वेदनीय बे, मोहनीय चो वीश, । नी सहताली , गोत्रनी बे छने छंतरायनी पांच, एवं चोराणुं प्रकृति नो बंध छौदारि ि श्रकाययोगीने बीजे गुणगणे होय.

तथा मिश्रगुणवाणे वर्ततो जीव, मरण न पामे तेथी उपजे पण नहीं तेथी छ पयीप्तावस्थायें जावी औदारिक मिश्रयोगें मिश्रगुणवाणुं न कहां॥ १५॥ हवे चोषा गुणवानां बधस्वामित्व कहेते.

अण च वीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जोगिणो सा यं ॥ विणुतिरि नरानु कम्मे, वि एवमाहारङ्गि नहो ॥ १६॥

श्रथ-(श्रणचं विता किं ) श्रनंता नुबंध्यादिक चोवीश प्रकृति विना (जिएपण कें ) जिनपंचक (ज्ञश्र कें ) युक्त, पंचोतेर प्रकृति (सिन्म कें ) श्रविरितसम्यक्ष्टि एए एए वारों बांधे, श्रने (जो गिणोसायं कें ) सयोगी गुण गणे एक शातानों वंध तथा (तिरिनरां कें ) तिर्धेच श्रने मनुष्यायु. एवे प्रकृति (विणु कें ) विना श्रेप (कम्मेवि कें ) कामेणकाय योगी ने पण श्रीदारि क मिश्रयोगीनी पेरें (एवमाहार जिन्हों कें ) एमज श्राहार कका ययोगें श्रने श्राहारक मिश्रकाययोगें पण उप एट कें कमेस्तवमां कह्या मुजव वंध कहेवो ॥ इ०॥

ते चोराणुं प्रकृतिमहिणी अनंतानुंबधीया चार, मध्यसंस्थान चार. मध्य संघयण चार. कुखगति, नीचैगांत्र, स्त्रीवेद, दोनांग्यनाम. इःस्वर. अनादेय. थी णक्षित्रिक. जद्योत. तिर्यगति. तिर्यगानुपूर्वा, ए चोवीश प्रकृति अनंतानुवंधीया कपायने जद्ये वंधाय. ते जदय चोथे गुणनाणे न होय, तेथी न वंधाय, तेथी शे प सीत्रर प्रकृति रही तेमध्ये विद्युक्षाध्ययतायें करी पांच प्रकृतिनो वंध होय, तेथारे ज्ञाननी पांच, दर्शननी ठ, वेदनीयनी वे. मोहनीयनी जंगणीश. नामनी साइत्री

रा, गोत्रनी एक, श्रंतरायनी पांच, ए पंचोतेर प्रकृति वंधायः ह्वे ते पांच प्रकृति नां नाम कहे हे. जिननाम, देवगित, देवानुपूर्वी, वैक्रियशरीर, वेक्रियशंगोपांग, ए पांच प्रकृति, सम्यक्त्वप्रत्ययें वांधे. तेमाटे ते चेत्ततां श्रविरितसम्यक्दृष्टि गुण्ठा एो प ोतेरनो बंध होय. श्रहीयां सिद्धांतमतें वैक्रियलिध तथा श्राह्मारकलिध वैक्रियादिक शरीर करतां श्रोदारिक मिश्रयोग मान्यो पण ते श्रहीश्रां विवद्द्यों नहीं, तेथी प्रमत्त तथा देशविरितगुण्ठाणानो बंध न कह्यो.

तथा औदारिक मिश्रकाययोगना स्वामी मनुष्य छने तिर्यंच हे तेने चो ये गुणवाणे सीनेर तथा एकोतेर प्रकृतिनो बंध कह्यो, नरिंदक, औदारिकिदिक, प्रथमसंघयण, ए पांच प्रकृतिनो बंधस्वामी, चोथे गुणवाणे वर्त्ततो कोण औदारि व मिश्रयोगी न पामे ? तथा छनंतानुवंधि चोवीश छादें देइ छहीछां चोवीश छा गल ादि शब्द कह्योहे तेणे छादिशब्दथी वीजी केइ प्रकृति शेप लेवी, तेथी जाणीयें हैयें. जे ए पांच प्रकृति, छादिशब्दथकी लेवी तथी मनुष्य तिर्यचने त्रीजे चोथे गुणवाणे छण एकत्रीश विना शेष सीनेर प्रकृति कही, तेम छहीछां नरा छ ने तिर्यगायु ए बे पूर्वे टालीहे तथी शेष छगणत्रीश प्रकृति चोराणुमांहेथी काढीयें छने जिनपंचक घालतां सीनेर प्रकृतिनो बंध होय एम संनवेहे. पही जेम बहुश्रुत कहे, ते प्रमाणहे

तथा सयोगीगुणवाणे केवली केवलसमुद्घात करे, त्यां बीजे, वर्षे छने सात मे, ए त्रण समयें औदारिकमिश्रयोग होय तेने योग प्रत्यिय एक शातावेदनी य प्रकृतिबंध होय, मिथ्याल श्रविरतिय तथा कषायने श्रनावें शेष प्रकृति न बंधाय.

एम श्रीदारिक मिश्रयोगीनी पेरें कार्मणयोगीनुं बंधस्वामित्व पण जाणवुं. परं एटखुं विशेष जे कार्मणकाययोग परनवर्थी आवतां एक, तथा बे तथा त्र ण समय लगें वियहगतियें होय तथा तेरमे ग्रणवाणे आव समयनो केवली स द्धात करतां त्रीजे, चोथे अने पांचमे, ए त्रण समय आत्मप्रदेशें करी सर्व लोक पूरे, तेवारें कार्मणकाययोग त्यां होय. श्रायुवंध न होय, एने ग्रणवाणुं पहें खीं चों श्रुं अने तेर होय तथी त्यां तिर्यगायु, नरायु, ए बे प्र कित टाली शेष श्रीदारिक मिश्रयोगीनी पेरें खेंबुं, एटखे मूलीध ए शोने वीश तेमां हेथी आहारव तथा ए बे । , एवं ाव प्रकृति हीन रतां शेष एकशोने बार प्रकृतिनो उधें बंध ते जिनपंचकिवना शेष एकशोने ात मिथ्यात्वें बांधे ते स्त्राद्दिक तेर प्रकृति हीन चोरा ंसास्वादनें बांधे, ते अनंता विधीवादिक

चोवीश प्रकृतिहीन ने जिनपंचक युक्त रतां पच्चोतेर प्रकृति चोथे गुणवाणे वांधे ने तेरमे गुणवाणे एक शातानों बंध कामणकाययोगें होयः

एवी रीतें एक आहारककाययोग, बीजो आहारकिमश्रकाययोग, ए वे यो गें उंघ हेतां बीजा कर्मस्तवमध्यें जे प्रमत्त गुणवाणें त्रेशव प्रकृतिनो बंध क ह्यो ते लेवो. जे नणी ए योग चौद पूर्वधर जेवारें आहारकशरीर करें, त्यां होय. त्यां लिब्ध प्रयुंजता प्रमत्त होय. तथा आहारकयोगें अप्रमत्त गुणवाणुं मानतां य कां त्रेशक बंह्यी व प्रकृति काढीयें अने एक सुरायु नेलीयें तेवारें अध्वत्त प्रकृतिनो बंध होय माटे पंचसंग्रहने मतें आहारक शरीर करीने चाले तेवारें त्रेशव अध्वा सत्तावन अधवा अधवन अधवा उंगणशाव प्रकृति बांधे, त्रेशव प्रकृतिनो वंध कह्यो ते लेवो 'सगवन्ना तेविच्चंधित आहार उन्पत्तु" ए पंचसंग्रहमध्यें कह्यो वे ते यी बंत्रे गुणवाणे आहारकश्रीरने सत्तावन्न प्रकृतिनो वंध होय. अध्यरिक, अयश, अशाता, अरित अने शोक, ए व प्रकृतिविद्युद्ध नणी न बंधाय. अने आहारकिम श्रयोगें त्रेशव प्रकृति बंधाय.ए प्रारंजवेलायें औदारिकसाथें मिश्र होय. ॥ १६॥

सुर छेहो वे छवे, तिरिच्य नराछ रहि छच्च तिम्मिस्से ॥ वेच्य तिगा इम वि च्य तिच्य, कसाय नव इच छ पंच गुणा॥ १५॥

अर्थ-(वेजवे के०) वैक्तियकाययोगने (सुर उहा के०) देवतानी पेरें बंध क हेवो. उधें एकशो चार मिथ्यात्वें, एकशो ने त्रण. इत्यादिक. (तिम्मस्ते के०) तेम ज वैक्तियमिश्रकाययोगीने (तिरिश्चनराजरिह उके०) तिर्धेचायु श्वने मनुष्यायु ए वे प्रकृतियी रिहत वैक्तियनी पेरें कहेतुं. हवे वेदादिकमार्गणायें वंध कहेते. (वेश्वतिग के०) वेद त्रणेने प्रथम (नव के०) नव गुणगणां होय (श्वाइम के०)श्वादिम कपाय ते श्वनंतानुवंधी चार कपायवंतने (इके०)श्वरतां वे, गुणगणां होय. (विश्व के०) वीजा श्वप्रत्याख्यानीश्वा चार कपायवंतने (चन के०) धुरतां चार गुणगणां होय. (तिश्व के०) त्रीजा प्रत्याख्यानीश्वा कपायवंतने (पंच गुणा के०) पांच गुणगणा होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १०॥

देवगतिनी पेरे वंध स्वामित्व वैक्रिय काययोगें लेवुं. छदीं छां सहेजतो विक्रिययों ग देवता तथा नारकीनी छपे द्वायें लीधों तेणे मनुष्य छने तिर्धेचने उत्तरवैक्रिय कर तां विक्रिययोग होय. त्यां छिषकगुणवाणां होयः तथा छिषक प्रकृति वांधे ते दूप ण न लेखवतुं. तेणे मूर्जाय एकशोने वीश प्रकृतिमांहेथी सुरादिक शोल प्रकृति वि

ना उपें ए शो ने चार प्रकृतिनो बंध जाणवो तेमांथी जिननाम हीन रतां मि ध्यात्वें ए शोने णनो बंध, तेमांथी नपुंसकादिक चार, एकेंडिय, थावर, आतप, ए सात प्रकृति विना साखादनें उन्नं नोबंध. तेमांथी अनंतानुवंध्यादिक उन्नीश प्रकृति हीन रतां मिश्रें सीतर नोबंध तेने जिननाम तथा मनुष्यायु सहित करतां अ विरतिगुणवाणे बहोंतेर प्रकृति बंधाय.

एम वैक्रिययोगनी पेरें वैक्रिय मिश्रयोगें पण वंधस्वामित्व जाणवुं, पण एट द्धं विशेष जे खहीं खां मिश्रग्रणवाणुं न संनवे, तेथी जेनणी देवता नारकी ने ख पर्याप्तावस्थायें कामणसाथें मिश्रवैक्रिययोग ते लीथो त्यां मिश्रगुणवाणुं न हो य. शेष त्रण गुणवाणे पण तिर्यगायु अने मनुष्यायु ए वे आयुं, न वांधे. लिब्ध अपयीप्तो देवता तथा नारकी न होय तेथी अपयीप्तावस्थायें आयु न वांधे ते वारें ए वे ायु, सुरिंक,वैक्रियिक, सुरायु, आहारिंक, नरकत्रिक, सूझित्रिक, विकलित्रक, ए अढार प्रकृति विना शेष ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, वेदनीय बे, मोहनीय बबीश, नामनी त्रेपन, गोत्रनी बे, अंतरायनी पांच, एवंएकशोने बे प्रकृतिनो बंध उंधें जाणवो.तेने जिननाम हीन करतां मिण्यात्वें एकशो एक बंधाय. तेमांथी एकें डियजाति, थावर, ञातप, नपुंसक, मिष्यात्वमोहनीय, हुंमसंस्थान, वेवहुं संघयण, ए सात प्रकृति हीन करतां साखादने चोराणुं प्रकृति बंधाय तेमां थी अनंतानुबंध्यादिक चोवीश प्रकृति हीन करी जिननाम सहित करतां एकोतेरनो बंध चोथे गुणवाणे जाणवोः एने शेष गुणवाणां न संनवेः तथा हीं आं लिध प्रत्यिय ए पर्याप्तो वैक्रिय मिश्र न लेखवुं. तेथी देशविरति अने प्रमत्त ए बे गुण वाणां न कह्यां एटले पूर्वला सत्तर मार्गणा दारमां ए कायमार्गणा जेलवतां अ ढार मार्गणा दारें बंध स्वामित्व कह्यं. इवे अंथगौरव टालवा नणी शेष चुम लीश मार्गणा दारें गुणवाणानी संख्या कदीने जिहां जेटलां गुण णां होय, तिहां तेटलां ग्रणस्थानकनो बंध कमस्तव जोइ हेवो.

त्यां विद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, ए त्रण वेदमार्गणादारें मिण्यातादिक नव ग्रण णां होय. तिहां उपें एकशो ने वीशनो बंध, मिण्यात्वें ए शोने सत्तर, साम्रा दने एकशो एक, मिश्रें चम्मोतेर, विरतिसम्यक्ष्टियें सत्योतेर, देशविरतियें श हशव, प्रमत्तें त्रेशव, अप्रमतें उगणशाव, अष्ठावन्न, अपूर्वग्रण पो हाव , वपन्न, विश्वीश, बादरसंपरायें बावीश, एकवीश, तेवार पढ़ी वेदोदय टक्के अही नं वेदादिक कहें

तां वेदोद्यवंत जीव इव्यपर्यायनी जेद्विवक्सयें जीधाः एवं एकविश मार्गणा हा । रें वंधस्वामित्व कद्युं. द्वे कषाय ।र्गणायें वंधस्वामित्व हेर्छेः

प्रथम पाय अनंतानुवंधीआ चार, त्यां मिथ्याल अने साखादन, ए वे गु एताएां होय ते मध्यें उपें ए शोने सत्तर प्रकृतिनो वधः अनंतानुवधीयाने उ द्यें सन्यक्ल अने चारित्र एवे न होय तेथी तत्प्रायोग्य जिननाम था आहार किक ए त्रण प्रकृति न बंधायः । टे एकशोने सत्तर प्रकृति वंधायः

तथा वीजा कपाय अप्रत्याख्यानावरणनी प्रकृति चार त्यां मिध्यालादिक चा र गुणवाणां होय, त्यां उपें एकशोने अढार प्रकृति वंधाय, जे नणी ए चार गुणवाणाने उद्यें चारित्र न होय. तथी आहारकिक न वंधाय अने मिध्यात्वें जिननामहीन एकशो सत्तर वंधाय, साखादने एकशो एक, मिश्रें चम्मोतेर, अने अविरितियें सत्त्योतेर वंधाय.

त्रीजा प्रत्याख्यानावरण कपाय चार.त्यां मिण्यात्वादिक पांच ग्रणवाणां होय तेम ध्यें उपें एकशोने खढार मिध्यात्वें एकशो सत्तर, सास्वादनें एकशो एक, मिश्रें च म्मोतेर, खविरतियें सत्योतेर, देशविरतियें शडशह, खहीं ख्यां प्रकृतिनी संख्या कम स्तवयी. लेवी खिंद्यां कपाय शब्दें कपायोदयवंत जीव लेवा. त्यां ग्रणस्थानक संनवे.

संजलण तिगे नव दस,लोहे चन अजइ इ ति अनाणितगे॥ वारस अचकु चकुसु, पढमा अहखाइ चरिम चऊ॥ १७॥

श्रये—( संजलणितगे के०) संख्वलनित्रक, ( नव के०) नवमा गुणवाणा सुधी (दसलोहे के०) संख्वलनो लोन, दशमा गुणवाणां सुधी ( चड के०) चार गुण वाणां (श्रज्ञ के०) श्रविरतिमार्गणायें होय, (इतिश्रनाणितगे के०) वीजुं श्रयवा त्रीजुं गुणवाणु,श्रक्षानित्रकने होयः (वारसञ्चचकुचकुसुपढमा के०) श्रवकुदरीन, चहुदरीन मार्गणाने विषे पहेलां वार गुणवाणां होय. श्रने (श्रह्लाइचित्रमचक के०) यथाख्यातचारित्रमार्गणा दारें वेहेलां चार गुणवाणां होय ॥इस्रक्र्रार्थः॥१ ।।।

अहीं आं जीवड्वें कपाय पर्यायनो उपचार. संज्वलना कोध मान, ने माया ए त्रण संज्वलना कपायोदयवंतने मिथ्यात्वादिक नव गुणवाणां होय, त्यां उपें एकशो वीश, मिथ्यात्वें एकशोने सत्तर. साखादनें एकशो एक. मिश्नें चन्मोतेर, श्रिवरित्यें सत्योतेर. देशविरित्यें शहशव. प्रमत्तें त्रेशव. स्प्रमतें उपण्याव. तथा श्रावमानिवृत्तियें श्रष्ठावन. वपन्न श्रानं विवीश, श्रिनवृत्तियें कार्षे वावीश.एक वीश, वीश. ने माने बावीश, एकवीश, वीश ने छोगणीश. मायायें बावीश, एकवीश, वीश, डंगणीश, ने छढार प्रकृतिनो वंध जाएवो.

संज्वलनलोनें मिथ्यालयी मांनीने सूद्धासंपराय लगें दश गुंणठाणां होय, जे नणी दशमा गुणठाणां लगें संज्वलनना लोननो चदय होय, तेथी औदियकिन ज्य नामें संज्वलनलोनोदयवंत जीव, तेने चेवें एकशो खढार, मिथ्यात्वें एकशो सत्तर, इत्यादिक यावत् सूद्धासंपरायें सत्तर प्रकृतिनो बंध जाणवो. एवं पचीश.

संयममार्गणामध्यें एक अविरितमार्गणायें प्रथम चार गुणठाणां होय त्यां आहारकिक हीन उपें एकशो अहार, मिध्यात्वें एकशो सत्तर, साखादनें एकशो एक, मिश्रें चम्मोतेर, अने अविरितयें सत्त्योतेरनो वंध जाणवो अहिआं सम्यक्त प्रत्ययें जिननामबंधाय माटे. एवं ढवीश मार्गणादारें बंधस्वामित्व कह्यं.

इानमार्गणामध्यें त्रण अझानमार्गणा हारें जे जीव, मिष्यात्वयकी मिश्र गुणगणे जाय तेने मिष्यात्वनो अंश अधिक होय, तेथी मिश्रें अझान जेखनतां झानने त्रण गुणगणां होय अने जे जीव सम्यक्त्वथी मिश्रगुणगणे आवे तेने सम्यक्तांश अधिक होय ते नणी मिश्रें झान जेखनतां अझान ने पहेतां वे गुण गणां होय. एम कोइ आचार्य कहेने के, त्रण अझाने त्रण गुणगणा होय अने कोइ कहेने के त्रण अझानने वे गुणगणां होय, त्यां नेचें एकशोने सत्तर, मिष्यात्वें एकशो सत्तर, साखादने एकशो ए अने मिश्रें चम्मोतेर प्रकृतिनो वंध होय. एवं नेगणत्रीश.

द्दीनमार्गणामध्यें चकुद्दीन अने च द्दीन, ए बे मार्गणा दारें मि॰ । दिक्षी क्षीणमोद्दांत बार णगणां होय. हीं आं द्दीन शब्दें अनेदोपचारें द रीनवंत जीव लेवा ए क्षायोपशमिकनाम तेने बार गुणगणां होय. त्यां उर्वे एक शो वीश, मिथ्यात्वें एकशो सत्तर, सास्वादनें एकशो एक, मिश्रें चम्मोतेर, विर तियें सत्त्योतेर, देशविरतियें शहशत, प्रमत्तें त्रेशत, प्रमत्तें उगणशात, हावन, निवृत्तियें हाव , उप , ववीश, निवृत्तियें बावीश, एकवीश, वीश, उगणीश, अहार, स्वासंपरांयें सत्तर, उपशांतमोदें एक, क्षिणमोदें, एक, प्रकृतिनो बंध जा एवो. क्षानावरणीय दर्शनावरणीयना क्योपशमधी चकुद्दीन, चकुद्दीन बार गुणगणा लगें होय. जेनणी आगले गुणगणों इंड्यजन्य क्षान दर्शन न होय अतीं हिय होय. एवं एकत्रीश मार्गणा दारें बंध स्वामित्व कह्यं.

संयममार्गणामध्यें एक यथाख्यात चारित्रे एट बे यथाख्यातचारित्रवंत जीवने (चरमच के ) हे हे जां उपशांतमोह, ही एमोह, सयोगी अने अयोगी, ए चार गुणताणां होय, तेमध्यें पहे जां त्रण गुणताणे एक शातावेदनीयनो बंध होय, अने अयोगी गुणताणे अबंधक होय, जेमाटे त्यां योगाश्रव नथी तेनणी अगीआरमा नुं औपशमिक नाम हे शेंपनुं क्षायकनामहे एवं वत्रीश मार्गणा हार थयां ॥१०॥

मणनाणी सग जयाइ, समइच्च बेच्च चन इन्नि परिहारो॥ केवल इगि दो चरिमा, अजयाइ नवमइसु निह इगे॥ १ए॥

अर्थ-(मणनाणी के॰) मनःपर्यवज्ञानीने (सगजयाइ के॰) प्रमत्तादिकथी मांनी सात ग्रुणवाणां होय, (समइअवेख के॰) सामायिक छने वेदोपस्थापनी य चारित्रने (चन के॰) वहाथी नवमा सुधी चार ग्रुणवाणां होय छने (परिहा रो के॰) परिहार विद्युद्धि चारित्रने (इन्नि के॰) वहुं छने सातमुं, ए वे ग्रुणवाणां होय (केवलड़िंग के॰) केवलज्ञानी छने केवल दर्शनी ए वेने (दोचरिमा के॰) वेदेलां वे ग्रुणवाणां होय. (मइस के॰) मित्रङ्गानी श्रुतङ्गानीने विषे तथा (विह्रुगे के॰) छवधिङ्गानी छवधिद्द्यीनी एचारने विषे (छजयाइनवम के॰) छविरितसम्यक्ट छिथी ह्यीणमोह लगें नव ग्रुणवाणां होय ॥इस्रह्मरायेः॥ १ए॥

इानमार्गणामध्यें मनःपर्यवङ्गानवंतने संयतादिक सर्वविरित प्रमत्तादिक सात गुणवाणां होय,त्यां वंध, उपें पांशव, प्रकृतिनो होय, जे नणी त्रेशव, प्रमत्तनी प्रकृति मांहे आहारगड्डग नेजतां उपें पांशव, प्रमत्तें त्रेशव, अप्रमत्तें उगणशावः अघावन्न. निवृत्तियें श्रघावन्न, वपन्न, ववीश, अनिवृत्तियें. वावीग,एकवीश.वीश, उगणीश ने श्रहार.सुद्धासंपरायें सत्तर, उपशांतमोहें एक, हीणमोहें एक, ए सात गुणवाणां होय.

ए क्षायोपश्मिकनाम चारित्रमार्गणामध्यें सामायिक चारित्रें तथा वेदोप स्थापनीय चारित्रें संयतादिक प्रमनादिक चार गुणवाणां होय. त्यां श्राहारिह्र सिहत वेपें वंध पांशव. प्रमनें त्रेशव. श्रप्रमनें वेगणशावः श्रप्तावन्न. निवृत्तियं श्रष्ठावन्न. व्यत्रमनें वंध पांशव. प्रमनें त्रेशव. श्रप्तावशीश. एकवीश. वीश. वेगणीश ने श्रदार. ए क्षायोपश्मिकनावें श्रनेदें चारित्रवंत परिहारिवग्रिह्मारित्रें वर्नतां जीयने प्रमन. यप्रमन. ए वे गुणवाणां होय. त्यां वेपें वंध पाशवः श्राह्मारकिक वांधे. पणवें नहीं. जे नणी एने चीद पूर्व. संपूर्ण न होयः नेशी श्राह्मारक शरीर न करे.माटे प्रमनें श्रेशव. श्रप्तमनें श्रष्टायन्ननो वंध.ए क्षायोपश्मिकनाम ए त्रत्रीशमुं मार्गणा द्वार.

केवलज्ञान अने केवल दर्शन ए बे मार्गणादारें एटले एतत्क्वायिकनिष्पन्न केव लज्ञानी, केवलदर्शनी, जीवने चरम कहेतां छेहेलां वे ग्रणगणां होय, त्यां सयो गी ग्रणगणे योगप्रत्ययें एक ज्ञातावेदनीय बांधे. अने अयोगी अवंधकहे.एवं ३००

हानमार्गणामध्यें मित्ज्ञान छने श्रुतज्ञान तथा ( छविष्ड्रंग कें ) छविष्ठ हान छने अविषद्भीन, ए चार, ह्यायोपशिमक निष्पन्न छनेदें जीवनाम त्यां छ संयतादिक छविरतिसम्यक्दृष्टिणी मांनीने ह्यीणमोह्यां नव गुणवाणां होय त्यां ठेवें बंध ठंगणाएंशी,केमके छविरतियें सत्त्योतेरते ते मांहे छाहारक शरीर, छा हारक छंगोषाग ए वे प्रकृतिघालियें तेवारें ठेवें गुणाएंशी होय छविरतियें सत्त्यो सेर, देशविरतियें शहशत, प्रमत्तें त्रेशत, छप्रमत्तें ठंगणशात, छावन्न, निवृत्तियें, छावन्न, वपन्न छने ववीश छिन्दियें बावीश, एकवीश, वीश, ठंगणीश छने छहार, स्क्रासंपरायें सत्तर, ठपशांतमोहें एक,हिणमोहें एक,ए नव गुणवाणां हो य तेनो बंध कह्यो ॥ १० ॥एवं बेंतालीश मार्गणा हारें वंध कह्यो.

> अड उवसमि चछ वेअगि, खइए इक्कार मिल तिगि देसे॥ सुदुमि सठाएां तेरस,आहारग निअ निअ गुणोहो॥ २०॥

अर्थ-(अड उवसिम के ०) चोथा थकी अगीआरमा सुधी आव गुणवाणा उपश मसम्यक्लीने होय (च उवेअगि के ०) चोथाधी सातमा सुधी चार गुणवाणां वेदक एट खे क्वायोपशमिक सम्यक्लीने होय (ख इए इक्कार के ०) क्वायिकसम्यक्लीने चो धाथी चौदमा लगें अगीआर गुणवाणां होय (मिइतिंगि के ०) मिथ्याल सास्वादन

नेमिश्र (देसे कें o) देशविरति, (सुडुमि के o) सुद्धासंपराय चारित्र एटला ने (स वाणं के o) पोतपोताने नामे एकेक ग्रणवाणुं होया (तेरसञ्चाहारम के o) श्रा हार करे ते श्राहारकमार्गणा तेने सयोगी लगे तेर ग्रणवाणां होया, ए सर्व पूर्वें कह्यां तेने (निश्चनिश्रगुण के o) श्रापञ्चापणे ग्रणवाणे प्रकृतिनो बंध ( वहां के o) विषें एटले कमे स्तवें ो ते लेवो ॥ इत्यद्धरार्थः ॥ २०॥

चोंछुं, पांच मुं, व छुं ने सात ं, ए चार गुणवाणां श्रेशिनेद करतां देश विरित सर्विविरित सिहत उपशमिक म्यक्ल पामे, तेथी नाना जीवनी पेका यें होय तथा छ मुं, नव ं, दशमुं ने गी आरमुं ए चार गुणवाणां उपशम श्रेणियें होय वली वेदक एट छे क्लायोपशमिकसम्यक्ल जाण बुं परं हीं सम्यक्ल मोहनीय वेदे तेमाटे वेदक नाम कहां त्यां चो छुं, पांच मुं, व छुं ने सात ं, ए चार गुण

वाणां होय,त्यां वेवें वंघ वंगणाएंशी प्रकृतिनो,श्रविरतियें ६४, देशविरतियें ६४,प्रम नें ६३, श्रप्रमनें वंगणशाव, श्रहावन, एवं तेतालीश मार्गणा दार थया.

हायिकसम्यक्त मार्गणायें चोषाधी मांमीने अयोगी ग्रणवाणासुंधी अगीआर ग्रंणवाणायें चंवें बंध चंगणाएंशीनो अविरितयें ७७.देशविरितयें शहशव,प्रमन्तें ६२, अप्रमन्तें ५ए,-५०.निवृत्तें ५०-,५६.-१६अतिवृत्तियें ११ इत्यादिक अहीं आं विचा रवा योग्यवे जे नणी पूर्वबदायुमनुष्य,हायक सम्यक्त लहे,तेने तो आयु बांधवुं नधी पूर्वें बांधी मुक्युं वे तेमाटे. अने अबदायु मनुष्य हायिक सम्यक्त लहे, ते तो चरम शरीरी होय तेने पण आयुवंध न होय तो पांचमें अने विच ग्रणवा णे सरायुवंधनो स्वामी कोण? तथा कोइ कहेशे जे "पहनगोचमणुसो, निह्नगोच चसुविगइसु" ए अपेक्षयें दर्शनक्षायिक निष्ठापक मनुष्य धने तिर्धच देशविरित ग्र णवाणे सुरायु बांधे, ते खोटुं वे जे नणी ते तो असंख्याता वर्षायुवाला मनुष्य तिर्धच होय तेने देशविरित ग्रणवाणुं न होय पण अहीं आं संचिवयें वैयें जे "ति चयरचंसमचलईअ सत्तमाईतईआए" इत्यादिकनी पेरें साथें संचिवयें वैयें एवं ४४

मिष्याल. सास्वादन, मिश्र, ए त्रण सन्यक्लमार्गणामध्यें तथा चारित्रमध्यें देशिवरितचारित्र छने सूद्धा संपराय ए वे चारित्रमार्गणा एवं पांच मार्गणा दारें पो त पोताने नामे एकेक, गुणठाणुं होय,त्यां वंध जे प्रमाणे कर्मन्तवमध्यें कह्योठे,ते हो वो. त्यां मिष्यात्वमार्गणायें प्रथम गुणठाणे वंध एकशो सत्तरनो,सास्वादने वंध ए कशो एकनो, मिश्रें वंध चमोतेरनो, देशिवरितियें वंध शडशघ्नो छने सूच्य संपरा यमार्गणायें वंध सत्तर प्रकृतिनो होवो. प्रकृतिनी संख्या कर्मस्तवधी होवी.एवं ४ए

मिच्यात्वयी मांनीने तेरमां सयोगी गुणवाणा लगें आहारपर्याप्ति, एटले नैजस श्रीदारिकादिक नामकर्मने उद्यें जीव आहारी होयः तेथी आहारकमार्गणा ६१रं तेर गुणवाणे कर्मस्तवें जे वंथ कह्यो,ते लेवो.एटले उपें एकशो वीजःमिध्यात्वे एक शो सत्तर साखादने एकशो एक अने मिश्रें चमोतेर. इन्यादिक एवं पज्ञाशःएम जे मा गेणा ६१रंजे जे गुणवाणां जेनी साथेंकह्यां तेटलां गुणवाणानुं तेमज कर्मस्तवमध्ये जेम वंथ कह्यो तेमज ते गुणवाणे वंध खामित्व लेवुं एमां जेटलुं विजेपने ते कहेने.

> परमुवसमि वहंना, छाउन बंधंति तेण छजवगुणे॥ देवमणुळाउ हीणो, देसाध्यु पुण सुराउविणा॥ ११॥

अर्थ-(परम के०) एटलुं विशेष के जे (ज्वसमि के०) छौपशमिक सम्यक्ष्में (वहंता के०) वर्तता जीव, (ाज के०) परनवायु (नवंधंति के०) न बांधे (तेण के०) तेनणी (अजययुणे के०) अविरतिसम्यक्ष्ष्टि गुणवाणे (देवम णुआज्हीणो के०) देवायु, अने मनुष्यायु, ए बे प्रकृति हीन करवी, अने (दे साइसु के०) देशविरति प्रमत्त अप्रमत्त गुणवाणानेविषे (पुण के०) वली (सु राज्विणा के०) एकज देवायु विना बंध कहेवो॥ इत्यक्ष्रार्थः॥ ११॥

श्रीपशमिक सम्यक्दिष्ठि जीव, एक परनवायुवंध बीजो मरण त्रीजो श्रनंतातु बंधीया कषायनो बंध तथा छदय, ए चार वानां न करे, सास्वादनें करे, ते णे आयुर्वंधहेतुनूत अध्यवसायना अनावें श्रीपशमसम्यक्तवें सुरायु अने म नुष्पायु, ए बे आयु न बांधे, अने नरकायु तथा तिर्यचायु ए वे आयु तो पूर्वेज निषेध्यां है बाकी ए बेनो छहीं छां संनव होय ते पण निपेध्यो है तेवारें उधें झान पा च, दर्शन व, वेदनीय बे, मोहनीय उंगणीश, नामनी उंगणचालीश, गोत्रनी एक अने अंतरायनी पाच, ए मत्योतेर प्रकृतिनो बंध जाएवो. तेमध्यें चारित्र प्रत्य यितं आहारक दिक. अविरतिसम्यक् दृष्टिगुणवाणे न बंधाय, तेथी शेष पंचोतेर प्रकृति बांधे, तेमांथी बीजा अप्रत्याख्यानावरण कषाय चार, औदारिकिहक, प्रथ मसंघयण, मनुष्यिक, ए नव प्रकृतिनो बंधवि हे यथे यके पांचमे गुणगणे वा शह प्रकृतिनो बंध. अहीं आं सुरायुवंध उवधी टले,तेथी अहीं आं जीधो नहीं तथा प्रमत्तगुणवाणे त्रीजा प्रत्याख्यानावरण कषाय चार,न बांघे.तेथी बाशव प्रकृतिनो बंध अप्रमत्तें जाएवो अने प्रमतें पूर्वली परें चंगएशावनो तथा अवावननो बंध, निवृत्तिगुणगणो अटावन्न, वप्पन ने बवीश. अनिवृत्ति गुणगणो बावीश, एकवीश, वीश, जेगणीश अने छढार. सूझ्मसंपरायें सत्तर अने उपशांतमोहें एक, शातावेद नीयनो बंध जाएवो. एम आन ग्रुएगाएो औपश्विकतम्यक्ष्टितो बंध कह्यो.श्र हीं आं औपरामिक अने क्षायोपरामिक सम्यक्तमां हे एट खुं विशेष जे अनंतातु बंधीया चार, मिष्यात्व मोहनीय अने मिश्रमोहनीय एनो रसोदय टर्ज अने प्र देशोदय हुंते थके जे तलक्षि होय, ते इरायोपशमिक सम्यक्त कहीयें सात प्रकृतिना बेहु उदय टर्स थके औपशमिक सम्यक्त होय ॥ ११ ॥ एवं सर्वमली एकावन्न मार्गणा ६ारें बंध स्वामीत्व कह्यो।

हवे जेर्यामार्गणा हारें बंधसामित कहेंगे. गुहे छा रसयं, छाहार छगूणमाइ लेस तिगे ॥ तं तिजोणं मिजे, साणाइसु सवहिं गुहो ॥ ११॥

अर्थ—( उहे कें o ) सा ान्यें ( आहार गूणं के o ) आहारि णो कर तां ( अहारसयं के o ) ए शोने अहार प्रकृतिनो बंध ( ाइबेसितिगे के o ) आ दिनी त्रण बेश्याने विषे होयः (तं के o ) ते ( तिज्ञोणं के o ) तीर्थंकरनाम में हीन रीयें, तेवारें ( मिंज्ञे के o ) मिथ्यात्व गुणवाणे एक तेने सत्तर प्रकृति बांधें अने ( साणाइ सबहिं के o ) साखादनादिक आगले सर्व गुणवाणे ( उहा के o ) कमस्तवनी पेरें सामान्यें बंध जाणवो ॥ इत्यक्त्रार्थः ॥ ११ ॥

प्रथम कस, नील अने । पोत, ए त्रण अ न लेक्यावंत जीवने उधें एटलें सामान्यें जीवस्थानादि जेद विवक्ता कस्या विना एकशो अढार प्रकृतिनो बंध जा णवो. जे नणी आहारक शरीर तथा आहारक अंगोपांग, ए वे प्रकृतिनो बंधः श्रग्रुन क्षेत्रया त्रण मध्यें न होय. ए बे प्रकतिनो बंध तो श्रप्रमत्तगुणराणे हो य, त्यां श्रग्रुन जेरया न होय. श्रग्रुनजेरया तो प्रमत्तग्रुणवाणा सुधी होय, त्यां ए वे प्रकृतिनो वंध नथी. अहीं आं कोइएक देवता तथा नारकीने इव्यक्षेत्रया श रीरवर्णहर माने हे जे नणी ते कहे हे के सातमी नरकप्टथवी यें सम्यक्त प्राप्ति क ही छने त्यां कुसलेक्या इव्ययी कही छने श्री छावइयकमध्यें ग्रुनलेक्यायें स म्यक्तव प्राप्ति कही हे तेथी एम जाणीयें है यें जे इव्य जेश्या शरीररूपेंज जाणवी अने अध्यवसाय विशेष नावलेश्या ते नावपरावर्ने ह लेश्या होय, तेथी तेने छन सेर्या नावपरावर्ने होय, एवं कहेन्रे ते अयुक्तने. जे नणी जो श्ररीरवर्णरूप इव्यलेश्या होय तो श्रीनगवतीस्त्रमध्यें प्रथम ज्ञतकें "नेरइञ्चाणंनंते सबे स समवसा गोयमानोइण हे समहे नेरङ्श्राणं नंते सबे समलेस्सा " ए वे सुत्र निन्न क री कहेत नहीं तेथी अहीं आं छेरया ते कापायिक दल संबंधजन्य जीवनो श्रम् स्वनाव जाएवो श्रने नावपरावानियें व लेड्या कही, तेनो ए श्रर्थवे के जेम वैक्ष्यमिणि राते सुत्रें परोयो थको रक्तरूप न थाय पण राती जेवी ठाया दे खाय. तेम क्रमलेर्यादिकड्वा तेलोलेर्यादिक इव्यसंवधं करी तेलोलेक्यापणे परिणमे नहीं पण आकार नायमात्रें तथा प्रतिविवक्षें तेजोक्षेत्र्या नरखी देखाय तेथी सम्यक्त्य प्राप्ति सातमी नरके विगुठ नहीं पण परमार्थे ने रूसनेश्याज जा णवी. एम अनव्यने छक्कनेश्वा पण तमज जाणवी. तेण इव्यथी जाणवी. तेम अ

इन लेखायें, मिथ्यात्वें, जिननाम बंधाय नहीं तेथी एकशोने सत्तर प्रकृतिनों वं ध, मिथ्यात्वें जाणवो छने सास्वादनादि पांच गुणवाणे ( ठीय के०) कमेस्तवमध्यें जे प्रमाणे गुणवाणानो बंध कह्यो, ते छांदीं पण लेवो. एटले सास्वादने एकशोने एक, मिश्रें चम्मोतेर, छविरतियें सत्त्योतेर, देशविरतियें शहशव छने प्रमत्तें त्रेशव प्रकृतिनों बंध जाणवो. छहीं को इपूर्वे जे चोथा गुणवाणाधी छागल, सुरायुवंध केम होय? जे नणी छ न त्रण लेख्यामांहे सम्यक्दिष्ट मनुष्य, तिर्थच, एक देवायु न बांधे. एम श्रीनगवतीसूत्रना एकत्रीशमे शतकें वरुणणात्यानो मित्र सम्यक्त्य धारी हतो पण कष्णलेख्या माटें देवता न थयो पण मनुष्य थयो. एम कहांते.

तथा जे लेखायें । यु बांधे ते लेक्यायेंज मरण पामे अने तेज लेखावंत देवोमांहे अवतरे तो वैमानि देवोमध्यें अग्रुजलेक्या नधी, तो क्यां आवी उ पजे? तेथी चोथे ग्रुणवाणे बहोंतेर, पांचमे बाग्रह, बहे बाग्रह प्रकृति बांधे. सुरा युबंधस्वामि तिहां न पामीयें, तेजणी ए वात बहुश्चतने विचारवा योग्यवे ॥११॥

तेऊ निरय नवूणा, ोख्य चन्न निरय बार विणु सुक्का॥ विणु निरय बार पम्हा, छाजिणाहारा इमा मिन्ने॥ २३॥

अथी—(ते निरयनवूणा के०) तेजों जेश्यायें नरकादिक नव प्रकृतियें णो, डं घें एकशोने अगीआर प्रकृतिनों बंध करे. (च ोअच्छ के०) उद्योतादिक चार अ ने (निरयबारिवणु के०) नरकित्रकादिक बार, एवं शोल प्रकृति विना शेष एक शोने चार प्रकृतिनों बंध डंघें (सुक्का के०) शु लेश्यावंतने जाणवो. (विणुनिरयबा र के०) नरकित्रकादिक बार प्रकृति विना शेष एकशोने आत प्रकृति (पम्हा के०) पद्मलेश्यामार्गणायें बांधे अने (अजिणाहाराइमा के०) जिननाम तथा हिरक् हिक, ए त्रण प्रकृति वर्जीने शेष बंधप्रकृति, (मिन्ने के०) मिण्यात्वें कहेवी,

तेजो छेर्यामार्गणायें तेजो छेर्यावंत जीवने सात ग्रणवाणां होय, ते ां विषे एकशो गीश्चार प्रकृतिनो बंध होय, जेनणी एकशो वीश्यमांहेथी नरकत्रिक, स् क्षानाम, ध्यपर्याप्तनाम, साधारणनाम, बेंडियजाति, तेंडियजाति, चर्ठारेंडिय जाति, ए नव प्रकृति न बंधाय. जेनणी नारकी ने सूक्षा एकेंडिय तथा विकर्डें डियमध्यें तेजो छेर्यावंत देवतापण ए पांचमध्यें न उपजे, हीं नारकीमां नार कीत्रिक, तथा सू एकेंडियमां सू त्रिक, तथा विकर्डेंडियमां विकर्डेंडियनिक, एवं नव प्रकृति विना शेष एकशोने गी पर प्रकृति विषे बंधाय.

ह्य जेश्यावंत जीवने उपें एकशोने चार प्रकृतिनो वंध होय, जे नणी एक शो वीश प्रकृति मांहेथी उद्योतनाम, तिथेंचगित, तिथेंचानुपूर्वी, तिथेंचायु ए उ द्योतचतुष्क तथा नरकगित, नरकानुपूर्वी, नरकायु, स्ट्लम, अपयीप्त, साधारण, वि कलजातित्रिक, एकेंड्यजाति, यावरनाम, आतपनाम, ए नरकादिक बार प्रकृति. एवं शोल प्रकृति न बंधाय. जे नणी प्रायें सहस्रार देवलोकथी उपरला घणा ह्य क्लंडिस्यावंत देवताउने ए शोल प्रकृति न बंधाय. अंहीं देविहक तथा वैक्रियि कनो बंध मनुष्य तिथेंचनी अपेक्लायें छेवो. तथा लांतक, ह्यक अने सहस्रारना देवता ह्यक्लंडिस्यावंत पण तिथेंचमांहे अवतरे, तेथी तेमने उद्योत चतुष्कनो बंध पण पामीयें, परंतु अहीं श्रां विवद्यो नहीं तेथी जाणीयें ठैयें के छानंतादिकना देवनेज ह्यक्लंडिस्या छेखववी. तेवारें झानावरणीय पांच, दशैनावरणीय नव, वेदनी य वे, मोहनीय उदीश, आयुनी वे, नामनी त्रेपन्न, गोत्रनी वे अने अंतरायनी पां च, एवं एकशोने चार प्रकृतिनो बंध उपें होय.

नरकत्रिक, सूचा, श्रपयित अने साधारण ए सूहमत्रिक, विकलजातित्रिक, ए केंड्यजाति, स्थावर अने श्रातप, ए बार प्रकृतिनो वंध पद्मलेश्यावंतने न होय जे नणी नारकी तथा सूद्मत्रिक एकेंड्यजाति अने विकलेंड्यमध्यें पद्मलेश्या न होय तथी तत्प्रायोग्य ए बार प्रकृति श्रहीं न वंधाय तथा पद्मलेश्यावाला स नत्कुमाराहिक देवलोकना देवता चवीने, एकेंड्यमध्यें न उपजे, तेथी शेप झाना वरणीय पांच, दशीनावरणीय नव, वेदनीय वे, मोहनीय ठवीश. श्रायुनी त्रण. ना मनी उप्पन्न, गोत्रनी वे अने श्रंतरायनी पांच, एवं एकशोने श्राठ प्रकृति उवें वांध

तेमांहे जिननाम, श्राहारकशरीर श्रने श्राहारक श्रंगोपांग. ए त्रण प्रकृति सम्यक्तव चारित्र प्रत्यपिक नणी मिण्यात्व गुणवाणे न बंधाय. तथी एकशोने श्राव प्रकृतिमांहेथी त्रण प्रकृति टले, तेवारें एकशोने पांच प्रकृति पद्मलेख्या वंतने मिण्यात्वगुणवाणे वंधाय.

तेमांहेथी मिच्यात्व प्रत्ययिक नपुंसकवेद, मि॰्यात्वमोह्नीय, हुंमनंस्यान, नेव कुं संवयण, ए चार प्ररुति न बंधाय, तेवारें श्रेप एकशोने एक प्रकृति, नान्वाद ने बंधाय छने मिश्रं चम्मोतेर, छविरितयें सन्यातर, देशविरितयें शहराव, प्रमनें श्रेश व छने छप्रमनें चंगणगाव, छक्षावन्न, इत्यादिक पूर्वली परं बंधम्यामिन्य क्षेत्रं,

णुक्क लेखायें जिननाम अने आदारकिक विना जेप एक जो ने एक प्रकृति मि ध्यारवें बंधाय. ते नपुंसकारिक चच पदीने जेप सनाणुं प्रकृति, साम्याकते संसाय बीजे कमें अंथें साखादन ग्रणगणे एकशोने एक प्रकृतिनो वंध कहाो है तेमां है थी उद्योतादि चार प्रकृति श्रुक्क केश्यावालाने उधेंज न वंधाय माटे ते श्रंहीं न जे वी तेथी ते काढीयें, तेवारें शेष सत्ताणुं प्रकृति, श्रुक्क केश्यायें साखादन ग्रणगणे वंधाय, मिश्रें चम्मोतेर, श्रविरितियें सत्त्योतेर, देशविरितयें शहशव, प्रमत्तें त्रेशव, श्रप्तांतें सत्त्योतेर, देशविरितयें शहशव, प्रमत्तें त्रेशव, श्रप्तांत स्वादें वा वीश, एकवीश, वीश, उगणीश, श्रद्धार, स्रुक्क संपरायें सत्तर, उपशांत मोहें एक नो वंध जाणवो. एवं सत्तावन मार्गणा दारें वंधस्वामित्व कह्युं ॥ १३ ॥

सब गुण नवसित्रसु, वेहु अनवा असित्र मिह्निसमा॥ सासिण असित्र सित्रव, कम्मणनंगो अणाहारे॥ १४॥

थे—( नवसिं के ) नव्य अने संज्ञी, ए वे मार्गणाने विषे (सवग्रण के ) सर्वे ग्रणवाणां होय. त्यां प्रकृतिनों वंध, ( चंद्रु के ० ) च्यनी पेरें के हवों इ ने (अनवा सिं के ० ) अनव्यमार्गणायें अने असंज्ञिमार्गणायें तो (मिं ज्ञि मा के ० ) मिध्यात्वग्रणवाणां सरखा वंध हेवा ने (सासणि के ० ) सा स्वादने ( सिं के ० ) असंज्ञी ने (सिं व के ० ) संज्ञीनी पेरें वंध के हेवो तथा ( णाहारे के ० ) अणाहारीने विषे ( म्मणनंगों के ० ) कामणकाययोगीनों नांगों कहेवो ॥ इ ऋरार्थः ॥ २४ ॥

त्रांगा कहेवा ॥ इ क्रांथः ॥ १४ ॥
हवे पारिणामिकनाविष्ण नव्यानव्य मार्गणामध्यें नव्यमार्गणायें तथा
क्रायोपश्मिकनाव निष्ण मनोविज्ञानवंत ते संज्ञी जीव, ते ं बंधस्वामित्व कहे
छे. नव्यजीवमध्यें तथा संज्ञीया जीवमध्यें सर्वे चौदे ग्रुणठाणां पामीयें, त्यां बंधस्वा
मित्व (ठेषें केण) बीजा मैथंथें जेम कह्यं,तेमज जेवुं. एट जे ठेषें एकशो वीश,मिध्यात्वें
एकशो सत्तर, सास्वादने एकशो ने एक, मिश्रें चम्मोतेर, ख्रविरतियें सत्योतेर, हे
श्रविरतियें शहशठ, प्रमत्तें त्रेशठ, अप्रमत्तें ठेगणशाठ, अश्ववनः निवृत्तियें अश्ववत्र,
ढप , उद्दीशः निवृत्तियें बावीश, एकवीश, वीश, ठेगणीश ने ख्रद्धार. स्क्रासंपरायें
सत्तर, उपशांतमोहें एक, क्रीणमोहें एक, सयोगीयें एक ख्रने योगी बंधक,
हींख्यां इव्यमनने संबंधें सङ्गीठ जेवो ख्रन्यथा बार ग्रुणठाणां जाने. सिद्धांतमांहे
केवलीने जावमन नथी तेमाटे नोसंङ्गी, नो संङ्गी क छि ते जिप्रायें तो सं
ङ्गीने बार ग्रुणठाणां घटे, पण अहिंखां केवलीने इव्यमनछे ते विवक्षायें संङ्गी कह्यों।
ख्राच्यजीवने तथा मनोविज्ञानरिह्त संङ्गीख्रा जीवने सम्यक्त्व चारित्र न

हों ने ने तिथा जिनना था हिए हि , ए त्रण प्र िन बंधा कि नि शे ए शो तर प्रकृतिनों ध, उपें था मिथ्यात्वें हो . ते दि नव्यने ए व मिथात्व एवाएं हो , नि एकेंडि यी मिथात्वें हि एवा एकेंडि यी मिथात्वें हि यतियेंच पर्यंत तिर्ये थ्यें सम्यक्त्व व ं ं एवा पण बोइ जीव वतरे, तेथी ते ं पर्या वस्थायें सास्वादनप ं पण पा निं, तेथी स शियाने ।स्वादन एवाएं स ि ।नि पेरें सास्वादननों बंध हेवो ए टि ए प्रकृतिनों बंध हेवो, पण हीं ं विचारवा योग्यहे. जे एि । जी पर्या विस्थायें ।म्भेण तथा दि मिश्रयोग होय, ते योग ध्यें । ।स्वादन एवाएं हुं तथा चोरा ं प्र ितनों ध हेवो । रि , था वैत्रि यि , ए पांच प्रकृतिनों बंधस्वामी । ।ए योग ध्यें पा नियें ? जे नणी पंचसं ह ध्यें ह्युं हे, जे रीरपर्याप्ट पूरी । विना पहें हुं सास्वादनप ं ट छो, तो नरा ने तिथेगा नो बंध पण के बंधाय? तथी जाणीयें हैयें जे शरी रपर्याप्ट पूरी । पढ़ी श्रीदारि योग ।नता तथा त्यां सुधी, सास्वादनग्रण रहे हे. ए ं ।नतां ए वात घटेडे, पण ए दि धटि छियें री ब श्रुतें विचारवुं,

तथा नाहार जीवने एवाणां पांच होय, ए विध्यात्व, हो । स्वा दन, हिं विरित्तसम्यक्दि हिं, चोंग्रुं सयोगीकेवली ने पांच योगीकेवली, ए पांचलें तेमध्यें जीव, वि हगित रे । वचला ए , बे, त्रण समय लगें छौदारि रीर संबंधने नावें छणाहारी होय, ते छपेद्दायें पहेलुं, बी ं ने चोंग्रुं ए ए एवाणां संनवे तथा केवली सुद्घात रे, त्यां त्रीजे, चोंथे तथा पांचमे ए त्रण समयें छनाहारी होय, ते छपेद्दायें सयोगीग्रणवाणुं लीधुं. ए चार योगें । स्मेणयोग ं बंधस्वामित्व लेवुं. जे नणी एकशो वीशमध्यें । हारकिक, देवा

ने नर त्रिक, ए उ प्रकृतिनो बंध न होय तथा नरायु ने तिर्यगायुनो पण बंध न होय शेष एकशोने बार प्रकृतिनो बंध, उधें बंधाय, तेमांथी जिनना म, सुरिद्दक, वैि यिद्दक, ए पांच काढीयें, तेवारें मिण्यात्वें एकशोने सात बंधाय, तेमांथी सुद्धात्रिक, विकलित्रिक, एकेंडियजाति, स्थावरनाम, आतपनाम, नपुंस कवेद, मिण्यात्वमोह्दनीय, ढुंमसंस्थान, ठेवफुं संघयण, ए तेर प्रकृति मिण्यात्व विना न बंधाय, तेथी सास्वादने चोराणुं प्रकृति वंधाय. तेमांहेथी अनंतानुवंध्या दिक चोवीश प्रकृति काढीयें, तेवारें सीनेर होय, अने जिनपंचक अंहीं वंधाय, ते चेलीयें, तेवारें चोथे ग्रणगणे पंचोतेर प्रकृतिनो वंध जाणवो अने सयोगीग्रणगणे

## बंधस्वामित्वनामा तृतीय कर्मग्रंथ.

0		ओंध		२	1	3/ 8	B	٧,	€	9	5	8	10	9 2	२१	₹
मार्गणा	138	वंध							İ							:
त्रेद्रिय.	२	909	909	3 9 8												
चौरिंद्रियें.	२	909	१०	१ ९६ ९४	.			İ								
पंचिद्रिय	9.8	9 २०	994	900	9 68	y ७७	ا چ ر	9 8	₹ાંપ	ع <sub>ا</sub> لا	4	र	9	₹	?	3
पृथ्वीकाय	२	909	909	4 E												
अप्काय.				38			1									1
तेउकाय.	9	904	904	٠ <u>،                                     </u>		]	}									
वारकाय.			904													
वनस्पतिकाय	२	909	909	4 8			ļ					-				
त्रसकाय.	98	१२०	996	909	ું હ	ଓଡ	Ęυ	<b>ا</b> ق	الم	g v,	८	२१	હ	8	१ १	1
मनेायोग- ४	93	१२०	996	909	98	७७	ξv	ا 4 ت	ع بر د	عابر	22	२	ဖ	۱ اع	? ?	
व्चनयोग ४	93	१२०	996	909	ષ્ટ્ર	७७	६७	<b>ا</b> ق	وإبره	عامره	= 2	२१	હ	₹  :	1 8	ĺ
भौदारिककाय योग	93	920	996	909	98	७७	६७	<b>₹</b> :	१५	مادر	43	ર ર	હ	र्।	9 3	
औदारिक मिश्रकाय योग.				. ९४		७५										
वैक्रियकाय योग.	8	308	303	९६	7			ļ								ļ
वैक्रियमिश्रकाय् योग			909	8.8	3	98	İ	1								
आहार ाय योग	9							<b>§</b> 3	٤			1				
आहारकमिश्रकाय योग कार्मणकाय योगः	9	•		١				₹ ₹	1					Ì	9	
			900			७५										
स्रविद्	8	१२०	996	909	8 0	७७	६७	€ ३	بهو	العر	Į į	ર			1	
पुरुषवेद्.	\ <b>S</b>	१२०	996	909	108	00	६७	8 3	الرو	( <b> </b> 4/	ılə :	۱ (				į
नपुंसकवेद्.	९	920	996	909	98	७७	६७	६ ३	we	342	२	2				
अनंतानुबंधी	વ	996	996	908												
अप्रत्यानावरण	8	996	990	908	98	७७				1	İ					
प्रत्याख्यानावरण संज्वलनः ३	۷ م	996	996	909	98	७७	ξv									
संख्वलनः ३ संख्वलनलोभ	9 9	१२० १२०	1990	909	98	७७	६७	६३	५९	42	२२					
		140	7799	१०१	98	99	દ્ છ	६३	५९	40	२२	180	9			
म <b>िनी</b> - श्रुतज्ञानी	8		į.			<i>७७</i>	ફ હ	६३	५९	46	२२	१७	?	8		
ञ्जुताताता अवधिज्ञानीः	8	७ <b>९</b> ७९				90	६७	६३	५९	42	२२	130	9	9		
मनःपर्यवज्ञानीः	9					७७	६७	६३	५९	42	22	95	9	9		
केवलज्ञानी.	( )	* 1						44	५९	46	२२	99	9	9	9	
मतिभन्नानीः					l										7	

ह मेत्ररुखादिक प्राचीनग्रंथने अनुसारें थोडे क्रें घणो अर्थावनास थाय, ते वी रीतें लख्यों ते बीजो पोतानो करेलों जें कर्मस्तव, तेमध्यें जे उधें बंधस्वामित्व पणुं ह्युं, ते धारीने अहीं आं पण ज्यां जेटली प्रकृति ं बंधस्वामित्व घटे, त्यां तेटली प्रकृतिनुं बंधस्वामित्व जाणी खेनुं, तथा पूननारने सावधान पणे देनुं. जे जिनवन्त्रन दृषाय नहीं ते देनुं॥ १५॥

॥ श्लोक ॥

॥ बंधस्वामित्वेऽस्मिन् टबार्थिलिखनाद्यदार्जितं सुकृतं ॥ तेनास्तु मे धानिध ारी नव्यसंदोहः ॥१॥ तृतीयक्ञान दान ानाप्तिकृते कृतीन् ॥ एतत्र्ययंथार्थान् यशः सोम खात्रृणु ॥ १ ॥ अष्टादश दादश घनअलिखत् स्व क्षिकेत् ॥ लिखेस्व । द्विलेखा, यसोमसुधीरि । तिम् ॥ ३ ॥

अर्थ-बारने बार गुणा रीयें. तेवारे ए शो ने चुम ातीश थाय. तेने फरी । र गुणा करीयें, तेवारें एक हजार सातशो ने अहावीश थाय तेमांथी बार ाढीयें,

तेवारें सत्तरशो ने शोल रहे, ते वर्षे । यंथनो बालावबोध ोहे.

मार्गणा.	गुण १४	ओघ बंध		ર	ঽ	8	ų	Ę	ဖ	1	9	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	99	9 २	9 ३	98	
नरकगती रत्नप्रभादिः ३		l .	१०० १००	1 .	1	હર હ <b>ર</b>	1										
पंकप्रभादि ३ तमतमप्रभा	8		१०० <b>९६</b>			99 90							!		 		
तिर्यचपर्याप्त तिर्यचथर्याप्तः			११७७  १०९		<b>Ę</b> 8	90	६६					1					
मनुष्यपर्याप्त मनुष्यअपर्याप्तः		1	996		وَ حَ	৩৭	€ ⁄9	६३	ષર	4८	२२	90	9	9	9		
देवगतिः भवनव्यंतरस्योतिप्यः			903			, ,											
सौधर्म र्रशान. सनस्कुमागदि ६	8 &	१०१ १०१	903	९ <b>६</b> ९ <b>६</b>	৩০	હ ર			!	1	į		• 	. !		!	
अनंतादि ४ नवग्रैवेयक अनुत्तरविमान एक चोशुगुणठाणु	9	9 ર				92	i i		, , ,				1	1			
एकेद्रिय. वेद्रिय	ર ર	900	905	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2			}	1					1	1		;	

## बंधरवामित्वनामा तृतीय कर्मग्रंथ.

मार्गणा	<b>३</b> ८ गुण	ओघ बंध	8	२		<b>₹</b>   8	3 '	<b>\</b> 	€ '	9		S ?	0/9	9 3	२।१
त्रेद्रिय.	2	909	909	९ ९४											
चौरिद्रिर्पे			१०९							1		1			1
पंचिद्रिय			996			७७	<b>ξ</b> (	9 <b>ξ</b>	₹ u,	٤ <mark>/</mark> ٧٠	٧,	રાવ	9	۱ ۱	₹ 1
पृथ्वीकाय	२	१०९	909	9 E											
अप्काय.			909								1				
तेउकाय.			904				}								
वाउकाय.	9	904	904				l								
वनस्पतिकाय			909												1
त्रसकाय.			99७		98	७७	६७	<b>Ę</b> :	१५९	العر	<b>!</b> ?	२१५	۶ اه	1	1
मनायोग ४	१३	१२०	999	909	98	७७	ξv	Ę :	१५९	42	, २:	र १५	9 8	8	1
व्चनयोग ४	93	१२०	996	909	98	७७	६७	हि इ	إبرع	ابرد	२ः	294	1	1	8
भौदारिककाय योग	93	१२०	996	909	98	७७	६७	€ ३	પુષ	42	: २ः	र १५	१	9	1
भौदारिक मिश्रकाय योग.	8	998	908	९8		७५		-							
वैक्रियकाय योग.	8	908	१०३	९६	၂၀၀	७२									
वैक्रियमिश्रकाय् योग	3	१०२	909	\$ 8		७१		Ì				1			
भाहारककाय योग	9	• •						६ ३							
थाह्रारकमिश्र्काय योग.	9							<b>₹</b> ३							
कार्मणकाय योग.	8	993	900	88		૭૫									9
स्रविद्	8	9 २०	99७	909	૭ ૪	७७	६७	६३	us	42	२ २				
पुरुषवेद्.	%	720	996	309	108	७७	e 3	83	49	42	55	1			
नपुंसकवेद.	९	१२०	996	909	98	७७	६ ७	दं ३	५९	42	२२				
अनंतानु <b>वं</b> धी	२	99७	996	908											
अप्रत्यानावरण	8	996	996	908	98	७७								l	- 1
प्रत्याख्यानावरण	<b>'</b>	996	999	909	98	७७	او ع								
संख्यलन. ३	5	१२०	999	909	98	७७	६७	६३	५९	42	२२				
संख्वलनलोभ	90	१२०	999	१०१	98	७७	Ę 0	६३	५९	40	२ २	१७			
मतिज्ञानीः	٩	७९				७७	६७	६३	५९	46	२२	१७	१	१	
श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी-	8	७९				७७	६७	६३	५९	42	२२	१७	9	9	
मनःपर्यवज्ञानीः	<b>९</b> ७	७९				७७	६७	€ ₹	५९	42	२२	99	9	9	
केवलज्ञानीः	२	ξų						६३	५९	42	२२	99	9	9	
मतिअज्ञानी.	1 1	9	990										-		9

## षडराितिनामा चतुर्घ मंग्रंथ.

मार्गणा		ओंघ बंध		२	2	8	ष	Ę	و	6	٩	१०	99	१२	93	98
श्चनथज्ञानः विभंगअज्ञानः		9 9 9 9 9 9			1											
सामायिकचारित्रः छेदोपस्थापनीयचारित्र परिहारविशुद्धिचारित्रः सृक्ष्मसंपरायचारित्रः यथाख्यानचारित्रः देशविरतिचारित्रः	3 3 7 9 3 9	5,4 5,4 9,9							५९	ሤሪ	<b>२२</b> २२		?	?	2	
असंजतः चक्षदर्शनः अचक्षदर्शनः अवधिदर्शनः	99	99८ 9२० 9२० ७९	99७ 99७	909	98	७७	६७	६३	49	45	२२	१७	१	१११		
केवलद्र्यानः रूप्णलेश्याः नीललेश्याः कापोनलेश्याः तेजोलेश्याः	४ ४ ७	9 99८ 99८ 99८ 999	99७ 99७ 9०८	909 909 909	98 98 98	<i>७७</i> <i>७७</i> <i>७७</i>									2	
पद्मलेख्या- शुक्कलेक्या भन्य-	93	999 908 920	909	९७	98	୦୧	६७	६ ३	48				9	9	2	
अभन्य उपरामिक.	9	996	996			૭૫							9			
सास्वादन श्वायोपश्रामिकः श्वायिकः   मिश्रः   मिथ्यात्व	9 9	७९ ७९			98	७७ ७७	६७ ६७	<b>5</b> 3 4	48	3C	2 2	30	9	9	9	
मंती अमंती	=	3 9 9 0 1 9 9 0	999	909	i		į						5	9	<b>?</b>	
आगारी अणारारी.		(1983		1	1		70		,,,	1			1	3 1	·,	

ા ચાં

॥ बालावबोधसहित षडद्यीतिकारूय चतुर्धकर्मग्रंथः प्रारप्यते॥

तत्र

॥ आदौ बालावबोधकारप्रणीत मंगलाचरणम्॥

॥ श्रायीवृत्तम् ॥

प्रिणिधाय परं तेजो, जीव गुणमार्गणाचितिरूपम् ॥ षडशीतिके टबार्थ, लिखाम्यहं सुग्धबोधाय ॥ १ ॥ ॥ सूलगाथा ॥

निम्य निणं निष्य मग्गण, गुण । णु वर्रग नोग ले सार्र ॥ बंध पबहू नावे, संखि । इ किमवि वृत्तं ॥ १॥

अर्थ-(निम जिएं के०) निमने जिन प्रत्यें ए (जिल्ला कें०) जीवस्थानक, बी (मगण के०) मार्गणा दार, त्रीज़ं ( एवाण के०) गुणस्थान , चोशुं ( उव चैग के०) चपयोग, पांच ं (जोग के०) योगदार, वर्जु (क्षेसाच के०) क्षेत्र्या दार, सात ं (बंध के०) बंध दार, श्रावसुं (अप्यबहू के०) श्रद्धपबद्धल दार, न व ं (नावे के०) नाव दार, दशं (संखि ।इ के०) संख्यातादिक एटले संख्या ता ११ श्रसंख्याता १२ श्रनंतानो विचार, (किमविवुक्तं के०) कांइ कदीश्र॥

जिन श्री वीतराग देवप्रत्यें नमस्कार करीने ? चौद जीवस्थानकें विचार, श्रमार्गणास्थानिचार, ३ गुणवाणानो विचार, ४ जपयोग एटले जीवलक्षणनेंद्र, तेनो विचार, ५ योग एटले करणवीर्य ते मनवचनादिक जाणवा तेनो विचार, ६ लेक्या एटले इव्यक्षायसायें जीवनो परिणामिवरोष जेम, नीला पीलादिक इव्यसं वंधें स्फिटकतुं रूप नीलुं पीलुं कहेवाय. तेम कषायादिक संबंधें जीवनो जे अग्रु इस्ताव, ते कष्णलेक्यादिक कहेवाय, तेनो विचार, ७ वंधहेतु जे मिथ्यालादिक स्तावन तेनो विचार, ७ अल्पबहुत्व एटले कोण कोणधी अल्प अने घणा, तेनो विचार, ७ जाव एटले जपशमादिक पांच तथा ह, तेनो विचार, १० संस्थाता दिक एटले संस्थाता नव आदि शब्द यकी असं ।ता नव ने नंता नव,

मुं (संत के ०) कया जीवने कया मूल छात कर्ममांहेला केटला केटला कर्मनी सत्ता होय? ते छातमुं प्रतिदार ( छाटपए के ०) ए छात प्रतिदार चीव जीव नेददारें विवरहां॥ इति समुज्जयार्थः॥ १॥

एमज ए जीवचेदगति इंडियादिक चेदें करी निम्न करतां चतुर्विध पंचविधादिक होय, तेनी मार्गणा विचारणानां मूल द्वार चौद्वे, तेने विषे व प्रतिदार कहेवे॥

तह मूल चठद मग्गण, ठाणेसु बासिं ठत्तरेसु च ॥ जिख्य गुणजोगु वर्ठमा, लेस प्पबहुं च बहाणा ॥ ३॥ पाठांतरं ॥ चठदस मग्गणठाणेसु, मूलपएसु बिसिंड इ खरेसु ॥ जिख्य ग्रणजोग्रवर्ठमा, लेसप्पबहुत्तबहाणा ॥ ३॥

अर्थ-(त्र केण्) तेमज वली (मूलच वदमग्गण वाषोसु केण) मूल चौद मार्गणा स्थानकने विषे अने (बासिं इन्तरेस के ) उत्तर बाबार मार्गेणा स्थानने विषे (जिञ्च के॰) एक जीवनेंद, (ग्रुण के॰) बीजां ग्रुणगणां, (जोग के॰) त्री जा योग, ( ववर्रगा के० ) चोथा चपयोग, ( होस के० ) पांचमी होस्या, ( छप्पबहुंच के ॰ ) बहुं छद्रपबहुत्व, (बहाणा के ॰) ए व स्थानक कही छुं ॥३॥ हवे पार्वातर गायानो अर्थ कहें ( मूलप्एस के ए ) मूलपर्दे, ( च इदसमग्ग णगणेसु के ए) गति, इंडियादिक सूल चौद मार्गणानी स्थान तेने विषे तथा (बिसहिइअरेसु के॰) गत्यादिक मूलमार्गणाना अवांतर चेद बाशव जेम गतिचार, इंडिय पांच, इत्यादिकनां नाम आगल मंथकत्ती पोतेंज कहेशे. तेथी अहीं आं नथी लख्यां, ते कइ कइ मार्गणायें केटला केटला ( जिस्र के ० ) जीव चेद होय ? ते कहेवानुं प्रथम दार तथा ( ग्रुण के॰ ) कइ कइ मार्गणायें केट लां केटलां गुणवाणां होय ? ते कहेवानुं बीखं दार, तथा (जोग के॰) कई क इ मार्गणायें केटला केटला योग होय ? ते कहेवानुं त्रीखं दार, तथा ( जवर्ड गा के ) कइ कइ मार्गणायें केटला केटला उपयोग होय ? ते कहेवातुं चोषुं दार, तथा (जेस के०) कइ कइ मार्गणायें केटली केटली छेक्या होय? ते कहे वानुं पांचमुं दार, तथा (अपबहुत्त के ण) सहु मार्गणायें कोण अदप, कोण बहु ? एकहेवानुं बहुं दार, (बहाणा के ) ए व विचारस्थानक बाशव मार्गणायें वि वरी कहीं ॥ इति समुचयार्थः ॥ ३ ॥

ह्वे ए । गेणादार स्थितजीव णगणी होय, तेथी गुणगणादारें प्रति द शदार हेवो, ते हेवे

> च उदस गुणेसु जिञ्जनो, गु व उग लेसाय बंधहे ऊय ॥ वंधाइ अ च अपा, बहुं च तो नाव संखाई ॥ ४॥ पा ांतरं॥ च दस गुणा णेसु, जिञ्ज जोगुव उग लेस्स वं धाय ॥ बंधुद्यु दीरणा उ, संतप बहुत दस । णा ॥ ४॥

थ-(च उदसगुणेसु के ०) वली चौद ण ठाणाने विषे (जि के ०) १ जी वना चेद, (जोग के ०) १ योग, ( उव उंग के ०) ३ उपयोग, ( जेसाय के ०) ४ छेद्रा, ( बंध हे य के ०) ५ बंध हेतु, ( बंधाइ अच उ के ०) वंधादि चार, एट जे वंध, उदय, उदीरणा अने सत्ता, एवं नव ( प्याब हुंच के ०) एतुं अ छप ब हुत्व (तो के ०) तेवार पठी ( चाव संखाई के ०) ११ चाव अने ११ संख्याता दिक नो विचार ही छुं, ए ए दारें करी तथा त्रण प्रक्रेप गाथा अने त्रण पाठांतर गाथा यें री जे दार ह्यां, ते अ में हे हो ॥ इति स यार्थः ॥ ४ ॥

ह्वे पावांतर गाथानो थे हेवे. (च उदसग्रणवाणे सु के०) जो पण जीवना संख्याता अध्यवतायस्थानक नेदें असंख्य ग्रणस्थानक होयवे, तो पण स्थूल व्यवहारें चौद ग्रणवाणां क ं ते चौद ग्रणवाणांने विषे (जिञ्र के०) या क या ग्रणवाणे केटला जीवनेद पामीयें? ते केवा 'प्रथम दार, (जोग के०) कया ग्रणवाणे केटला योग पामीयें? ते केवा 'बीछुं दार, (उवर्जन के०) कया ग्रणवाणे केटला उपयोग पामीयें? ते केवा 'बीछुं दार, (बंधाय के०) कया ग्रणवाणे केटला विश्वा पामीयें? ते केवा चं चोछुं दार, (बंधाय के०) कया ग्रणवाणे केटला मिण्यात्वादि वंधहेतु पामियें? ते केवा चं पांच मुं दार, तथा (वंध के०) या ग्रणवाणे केटला कमना बंधस्थानक पामीयें? ते केवा चं वहुं दार तथा (उद्यक्ष्ण) कया ग्रणवाणे केटला कमना उद्यस्थानक पामीयें? ते के वा चं सातमुं दार तथा (उदीरणार्च के०) कया ग्रणवाणे केटला कमनी उदीर णानां स्थानक पामीयें? ते कहेवा 'आवमुं दार, तथा (संत के०) कया ग्रणवाणे केटला कमनी सत्ता पामीयें? ते कहेवा चं नव मुं दार, तथा (अप्पबहुत्त के०) चौदे ग्रणवाणे वर्तता जीवो ग्रं अव्यवहुत्व कहेवा ग्रं दशमुं दार, (दस हाणा के०) ए दशस्थानक एटले दश बोलनो विचार चौद ग्रणवाणे विवरी ग्रं ॥ ॥

हवे प्रथ जीवना चौद नेद जाएया विना मार्गणास्थान ग्रणस्थानादिक नेद जाएया न जाय, जे नणी । गिणादि नेदें जीवतत्वनुं विचारवुं, तेनणी स्थूल व्यवहारनयें जीवना चौद नेद हे, ते हेहे

दार गाहारे ॥ अय जीवस्थानान्याह ॥ इह सुहुम बाय रेगिं, दि बि ति च असिन सिन्न पंचिंदी॥ अपजता प ता, कम्मेण च दस जिस्राणा॥ ॥॥

थै-( इह के॰ ) । जगत् दि छावी रीतें विचारतां जीवना चौद नेद था य १ (सुद्ध कें ०) सू ना कर्मना छदयथी सूक्षाशरीरधारी, सर्वेलोकमांहे व्यापी र । एवां जे पृथ्वी, पाणी, तेज,वायु अने वनस्पति.ए पांच जातिना जीव व्य वहार अयोग्य पांच यावर ते प्रथम सूद्रम एकेंडि्य कहीयें अने ( बायरेगिंदि के॰ ) बादरनामना उदयथी बादर व्यवहारयोग्यशरीरधारी पांच थावर, ते बीजा बादर ए केंडिय हीयें (बि के॰) त्रीजा जे स्पर्शन अने रसन ए बेंडियने धारे, ते बें डि्यसंख्यादिकने कहीथें, (ति के ०) चोथा स्पर्शन, रसन अने घाण, ए त्रण ईडि्यने जेने ते तें डिय कहीयें, (चन केण) पांचमा स्परीन एसन, ब्राण अने चकु, ए चार इंडियने जे धारे, तेने चौरिंडि्य कहीयें. ( असिन्न के॰ ) उठा पांचेंडि्य पूर्ण होय, पण वर्षु मन न होय, तेने असित्रशा पंचेंडिय संमूर्श्विम, मनुष्य, तिर्थेच जीव कहीयें, अने सातमा (सिन्नपंचिंदी के ) जेने मन सहित पंचेंडिय होय, ते सित्रया पंचें इिय गर्ने ज मनुष्य तिर्थेच तथा उपपातिक देव नारकी जीव जाण वा ए सात चेद (अपजना के०) अपयीप्ता तेमज सात चेद (प ना के०) पर्याप्ता एवा (कम्मेण केण) अ कमें ए पर्याप्ताऽपर्याप्ता यइने (च च च द स जि अ छ णा केण) चौद जीवनां स्थानक एटले नेंद, सर्व संसारी जीवना होय ॥इतिणाए॥ त्यां एकेंडियने १ आहार, २ शरीर, ३ इंडिय, ४ श्वासोन्नास, ए चार पर्याप्ति पहेले समयें करवा मांने. ते ज्यां सुधी पूरी न थाय, त्यां सुधी अपयोगा कही यें अने ते चारे पूरी कहा पठी पर्याप्ता कहीयें. एम बेंडिय, तेंडिय, चौरिंडिय अने असिन्न पंचेंडिय, ए चार जातिना जीव, आहार, शरीर, इंडिय, श्वासो ह्वास अने नाषा, ए पांच प्याप्ति साथें आरंजें, ते ज्यां सुधी पूरी न करे,त्यां धी ते चारने अपयोता कहीयें अने पांचे प्यांति पूरी कस्ना पढ़ी पर्याता कहीयें तेमज ए पांच पर्याप्ति तथा ढां सन,ए ढ पर्याप्ति आरंजी,पूरी नथी करता त्यां सुधी सन्निया

पंचेंडिय अपर्याप्ता द्यें अने ए उ पर्याप्त पूरी । पठी पर्याप्ता कहीं से हवे ते अपर्याप्ता वली बे ने हें ठे.ए तो आरंनी पर्याप्त पूरी कह्या विना रे ते लिंडिय अपर्याप्ता कहीं यें अने ज्यां सुधी पर्याप्त पूरी नथी। री, त्यां सुधी तेने रण पर्याप्ता कहीं यें ते हें पण प्रथ नी त्रण पर्याप्ति पूरी क्या विना को जीव रे न हीं. रणके आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति अने इंडियपर्याप्ति पूरी कह्या विना तो परनव अं आयु पण न बंधाय तो ते आयु वांध्या विना क्यां जइ उपजे? तेमाटे ए त्रण नियतपर्याप्त अहीं आं अपर्याप्त रण विवक् यें जाणवी. एम चौद नेद जीवना ह्याः अने ए जे चौद नेद जीवना कह्या ते गुणवाणा विना न होय जें नणी ज्ञानादि गुण ना वृद्धिहानिने हें गुणवाणा नेद हेवाय अने ज्ञानादि गुणशून्य आत्मा होय तो इव्य न कहेवाय, तेमाटे जे गुणनो आश्रय ते इव्य हीं ॥इति सम् यार्थः॥ ते ज्ञानादिगुण ज्यां परम एट जे उत्कष्ट हीणा पामी यें ते मिथ्यात्व गुणवाणुं जाण गुं. एम चढते चढते गुणवाणे चौद गुणवाणाविं सर्वजीव ने हें गुणवाणां ही यें वैथें॥ अथ जीवस्थाने गुणस्थानान्याह.

बायर असिन्न विगले, अपि पढम बिस्र सिन्न स्र पजते॥ स्रजय जुस्र सिन्निपके, सबगुणा मि सेसेसु॥ ६॥

श्रथ—( बायर के० ) बादरएकेंडिय, ( श्रसि के० ) श्रसंक्षिपंचेंडिय, ( विग के० ) विकलेंडिय त्रण, ( श्रपि के० ) ए पांच श्रपयीप्ताने ( पढमिब के० ) पहेलुं श्रने बीज़ं ग्रणगणुं होय श्रने ( सि श्रपजने के० ) सि या पंचें डिय पयीप्ताने ( श्रजय श्र के० ) श्रविरतिग्रणगणा सिहत त्रण ग्रणगणां हो य, श्रने ( सि प े के०) सि पंचेंडियपयीप्ताने ( सवग्रणा के०) सर्वग्रणगणां हो य, तथा ( सेसेसु के० ) श्रेप सर्व जीवने ( सि के०) सिथ्याल्युणगणुं जाणवुं इ०॥

बादर, एकेंडिय, प्रथ्वी, अप्र अने प्रत्येक वनस्पतिमांहे तथा वीजा असिह या पंचेंडिय तिर्यंच तथा विकलेंडिय, ते बेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय ए पांच अ पर्याप्त जीवनेदें पहेलुं मिण्यात्व अने वीज्ञं सास्वादन ए बे ग्रणवाणां होय.तेमांहे पण सास्वादन ग्रणवाणुं करणअपर्याप्तानेंज होय अने पहेलुं ग्रणवाणुं लिध्यअ पर्याप्ता तथा करणअपर्याप्ता ए बे ने होय जे नणी सम्यक्त्व वमतो जीव, ए पूर्वों क ए पांच करण अपर्याप्तामांहेज अवतरे पण लिध्यअपर्याप्ता पांचमध्यें न अव तरे, तेथी तेमांहे सास्वादनपणुं न संजवीयें. तथा वादर अपर्याप्त तेच, वायुमध्यें ह ने पांच सूंस्म ध्यें हो सम्यक्त व तो पण होई जीव हि। जपजे नहीं, ते थि। तेने किथ्यात्वग्रणगणुंज होय, ए पांच जेर्दे ग्रणगणां क ां.

हा संज्ञी पंचेंडिय पर्या । जीवजेद ध्यें तो ए िध्यात, बी सासा दन, ने त्री विरित्तसम्यक्दि , ए त्रण णठाणां संज्ञवे, के के परनव प्री ग्रेड जीव म्यक्टव सिंह ए संज्ञी पंचेंडियमांहे छावी छवतरे, तेने छपर्यी सावस्थायें छविरित चोधुं ग्रण्ठा होय था जे जीव सम्यक्टव व तो एमांहे छवतरे, तेने रीरपर्याः पूर्ण । पहें सास्वादनग्रंणठाणुं होय, ए बे वि ना शेष जीवोने मिष्यात्व ग्रण्ठा होय ने लब्धि छपर्याप्ता सिंह । पंचेंडिय जीवने ए ज िष्यात्व एठा होय.

सात । सिंह । पंचेंड्यपर्याप्ता ए जीवजे हैं मिण्यात्वधी । मीने छयोगी तमें स वें चौदे ग्रेण एां संनवे, के के प्य पए सिन्न छा पंचेंड्य तेने चौदे ग्रुण । एां होय तथा केंवली पए इच्य नसंबंधें सिंह ने कह्यो, तेथी होतां बे ग्रुणना एां पए प्यमां जाएवां. म ए ह्या जे सात जीवजेद तेथी शेष र । जे स एकेंड्य पर्याप्ता तथा पर्याप्ता बेंड्यपर्याप्ता, तेंड्यपर्याप्ता, चौरेंड्यपर्या प्रा, छसि पंचेंड्यपर्याप्ता, बादर एकेंड्यपर्याप्ता ए सात जीवजेदें मिण्यात्व ग्रुणनाएं होय ए रीतें चौद जीवजेदने विषे चौद ग्रुणनाएां ं।

ते पढ़ी तें हीज जीव ए एावाएी रह्या ढता मन, वचन, अने याना ।पा रहूप योगें करी कमें बांधे, तेनए। योगदार जीव नेदें विवरीयें हैयें ॥ ६॥

हवे जीवनेर्दे योग संख्या कहेते.

अथ योगानाह।। अपजत बिक कम्मुर, लमीस जोगा अ प सन्नीसु॥ ते सवि वमीसएसु, तणु पेसु रले॥ ॥॥

अर्थ-(अपजनति के०) पर्याप्ता त जीव नेदने विषे ( मं रतमीसजोगा के०) औदारिक काम्मीण अने औदारिकमिश्र, ए वे योग होय ने ( प सन्नी स के०) अपर्याप्ता, सि या पंचेंड्यने विषे (ते के०) ते पूर्वता वे योगने (वि उविमीस के०) वैक्रियमिश्रें (स के०) सिहत रतां त्रण योग होयः (ए त णुपज्जेस के०) एमां वली शरीर पर्याप्तानेविषे ( उरल े के०) प्रीदारिक योग कोइएक आचार्य मानेते॥ इस्रक्तरार्थः॥ ॥॥

सित्रिष्ठा श्रपयीप्ता विना बीजा ह जे एकेंडियादि ....पर्याः.. ाीव चेदहे, तेने

एक काम्मेण अने बीजं औदारिक काम्मेण साथें मिश्र, ए बे योग संनवियें केमके औदारिक शरीरी एकेंडिय होय, तेथी तेने परनवथी आवतां विचालें म्मिण शरीर होय, तेमाटें त्यां म्मिणयोग होय अने वतत्वा पढ़ी ज्यां सुधी पर्याप्ति पूरी न करे, त्यां सुधी म्मिणपुनलें करी औरिदा पुनलमिश्र होय, तेथी मिश्रं पुनने उपष्टंनें जीव ं जे रणवीर्य, ते औदारिकमिश्रयोग जाणवो. ए इ अपयी प्रालब्धि तथा करण ए बेहु प्र रिना लेवा. ए इ जीवनेंदें योग ा.

अपर्गाप्ता, स िआ, पंचेंडियने विषे बे योग पूर्वली परें खेवा अने त्रीजो वैकि यिमश्रयोग पण होय, जे नणी स िआ पंचेंडिय दे देवता तथा नारकी पण आवी गया,तेमने तो वैकियशरीर पण र खंढे तेथी ते । म्मेणपुजल वैि य साथें मिश्र रे, तेथी तेने परनवयी वतां रस्तामां हे । म्मेणयोग होय अने ढ पर्याप्ति । एंन्या पढी ज्यां सुधी पूरीन रे,त्यां सुधी वैत्रियमिश्रयोग होय. ए बे योग थाय ने ज्य तथा तिर्यंचनी पेक्तायें त्रीजो औदारि मिश्रयोग पण खेवो. ए रीतें त्रण योग होयः हीं आं तांतर देखाडे छे. ोइए । चार्य, शरीरपर्याप्ति पूरी खा पढी शेष पर्याप्तियें री पर्याप्ताने औदारि योग माने छे. तेथी तेना मतें देंवता अने नारकी ने पण शरीरपर्याप्ति कस्ता पढी वैकिययोग मानवो जोइयें, तो तेना मतें सि आ अपर्याप्ताने विषे र औदारिक, १ औदारिकमिश्र, ३ वैकि य, ४ वेत्रियमिश्र, ए । म्मेणयोग, ए पांच योग संनवे तथा श्रीशीलांकाचार्यने म तें चार योग होय जे नणी ए छ नेद, अपर्याप्ता जे कह्या ते लिब्धि अपर्याप्ता पण खेवा अने देवता तथा नारकी तो लिब्ध पर्याप्ता न होय, तेथी चार योग सि आ पर्याप्ताने होय ॥ ॥

संबे सिं पजते, रलं सुढुमे सनासु तं च सु ॥ बायरि स विनुबि इगं, इप्रयोपयोगानाह ॥ पनसिन्नसु बार वर्नगा ॥ ७॥

श्रधी—( संवेसि पजते के ) संक्षी पंचें इयपर्याप्ताने सर्व पंदर योग होय श्रने ( सुदुमें के ) सूद्रम एकें इय पर्याप्ताने ( उरलं के ) ए ज श्रोदारि काययो ग होय, ( सन्ता तंच उसु के ) ते हिज नाषा सहित विकल त्रिक श्रने संक्षी पंचें इय, ए चार पर्याप्ता जीव ने दें एक श्रोदारिक योग श्रने बीजो सन्तासु एट ले नाषासहित एट ले स । मृषावचनयोग, ए वे योग होय श्रने ( बायरि के ) बा दर एकें इयपर्याप्ताने विषे ( सवि उ वि इयं के ) श्रोदारिक साथें वै किय श्रने वि किय

मिश्र सहित रतां ए बे योग । श्रौदारि ,एवं ए ोग होय.हवे उपयोग । हेंग्रे. (प सि बार उव उंगा के ) पर्या । संझी पंचें िय वि र उपयोग होय. संझी पंचें िय पर्याप्ताने विषे नना योग चार, वचनना योग चार, ौदारिक, हाहार , हार िश्र, वैिय, वैियमिश्र, श्रौदारि िश्र ने मिर्मण ए पं दरे योग होय. तेमां हे वैियि देवता नार नी श्रपेक् थें पा उत्तरविव यशरीर रतां प्रारं नवें लायें प्य पा तिर्य ने पए वैित श्रौदारि साथें िश्र होय पत्री वैित्र यथोग होय पा हार रीर चौद पूर्वधर प्य जिनक्ष देखवा निमित्तें रे, तेवारें रं नती वेलायें ते श्रौदारि साथें हार पुजल मिश्र करे, त्यां हार िश्रयोग होय. पत्री हार पत्री हार प्रजल मिश्र करे, त्यां हार िश्रयोग होय. पत्री हार पत्री होय. पत्री होय पा केवलीने । व स यनो केवलस सद्धात करतां बीजे, उंचे ने सातमे ए ए समयें श्रौदारि मिश्र योग होय तथा िने, चोथे श्रने पांचमे, ए ए यें मिर्मणकाययोग लेवा. पए श्रप्यीप्तावस्थायें जे मिर्मण । ययोग होय ते न लेवा. केमके ते पर्याप्तामां हेज गएवाने. ए सी पंदर योग होय.

स्र एकेंडिय पर्याप्ताने ए प्रीदारि योग होय. जे ए। तेने वैत्रि यादिक योग रवानी शित्त नधी ते न ने व न पण नधी ौदारि मिश्र काम्मेण तो पर्याप्तावस्थायें होय पण पर्याप्तावस्थायें निहं होय. हवे औदारि योग ने सा पावचनयोग ए बे योग, (चड के०) बेईड्यपर्या।, तेंड्यपर्याप्ता, चौरिंड्यपर्याप्ता ने संक्षिपंचेंड्यपर्याप्ता, ए चार जीवनेदें होय जे नणी ए ने मोहोडुं हे तेथी व्यवहारें नाषा बोले.

न माहाडुं तथा व्यवहारें नाषा बोले.

बादर एकेंडियपयीप्ताने ए श्रीदारि, बीजो वैक्रिय ने ीजो वैक्रियनिश्र ए त्रण योग संनवीयें, जे नणी बादरएकेंडियपर्याप्ता वा य जीवने वैक्रियलिंध हें ए तथा योग संनवीयें, जे नणी बादरएकेंडियपर्याप्ता वा य जीवने वैक्रियलिंध हें तथा किया है कि सारें विक्रिय होय हो ए वे योग ने हेज रीरें श्रीदारिक होय. पर्याप्ता शेष चार स्थावरने ए श्रीदारि योग तथा ए रीतें पंदर योग क ए योगें री विना ना न उपयोग होय ते नणी हवे पढ़ी उपयोग क हीयें वैथें. पर्याप्ता संज्ञीया पंचेंडियने विषे बार उपयोग पामीथें, जे नणी व्यमांहे बार उपयोग लाने होया एक समयें जीवने ए उपयोग होया ते उयोग ह स्थने श्रांतरमुद्दे काल अने केवलीने (सामायि के ०) एक समयें ं ज्ञान पांच, ज्ञान त्रण, एवं श्रांत उपयोग जणवा. । ए श्रांने चार दर्शन ते निराकारोपयोग एम

वार उपयोग जाणवा. एवं बार उपयोग होय, निराकारं साकारं दर्शनं. इति ॥ण॥ पज च रिंदि असन्निसु, इदंस इअनाण दससु चस्कुविणा ॥ सन्निअपके मण ना, ण चस्कुकेवल इगविहूणा ॥ ए॥

अर्थ-( पजच वरिंदि असिन्स के० ) पर्याप्ता चौरिं ड्यिने तथा असंक्षीपंचें डिय पर्याप्ताने (इदंस के 0) वे दर्शन अने (इअनाए के 0) वे अज्ञान, एवं चार उपयोग होय. अने शेप (दससु केण) दश जीवनेदने विषे (चस्कुविणा केण) चक्कद रीन विना त्रण उपयोग होय अने (सित्रअपके केण) संज्ञी अपर्याप्ताने (म णनाण के । एक मनःपर्यवज्ञान, (चर्कु के । बीजं चहुदरीन अने (केवल ग के 0 ) केवल दिक, ए चार (विदूषा के 0) विना शेप आंत उपयोग होय ॥ए॥ पर्याप्ता चौरिंडि्य तथा असंज्ञीया पंचेंडिय, ए बे जीवनेदें ए चु अ ने बीज़ं अचकु, ए वे दरीन तथा मतियकान, अने श्रुतअकान ए वे अकान. एवं चार उपयोग होय केमके ए मिच्यालग्रणगणे होय. माटे वे अज्ञान कह्यां शे ष सूक्त एकेंड्य पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता बादर एकेंड्य पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता, बेंडियपर्याप्ता तथा अपर्याप्ता तेंडिय पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता चौरिंडिय अपर्यो प्ता अने असन्निआ पंचें दिय अपयोता. ए दश जीव नेदें पूर्वोक्त चार उपयो गमांदेथी एक चकुदरीन न होय तेथी मतिञ्रकान, श्रुत् कान ने र्शन, ए त्रण उपयोग होय. ए कमैयंथनो मत कह्यो अने सिदांतने तें बेंडि यादिक चारने अपयीप्तावस्थायें साखादनपणुं संनवीयें, तो त्यां मिष्यात्वने अ नावें मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान,ए वे ज्ञान कह्यां तो ते पेक्सयें वेंडियादि चार पर्याप्ताने पांच उपयोग संनवे हे.तथा एकें डियादिक दश जीव नेदने विषे श्रोत्र ज्ञान, लब्धिज्ञान विना पण श्रुत अज्ञान सुं, ते आहारादि संज्ञानी पेक्तायें कह्यं है. जे नणी कुधावेदनीयना चदयथी । पुजलयहण । प्यी हारी ुधा निवर्त्ते, पुष्टि होय एवो शब्दार्थ पर्यालोचन रूप वस पामवानो Ę य, ए श्रुतनेदने । द्वारसंझा दीयें ते ध्यवसाय पणे एकेंडियने पण्डे तो ।हार लेवाने प्रवर्ते हे तथा ए स्पर्शेनें डिय तो ए विोने हे ने ते विना बीजा च रादि इ ें डिय लिध ग्रून्य एवा एकेंडि । हे तो पण ते ने सूर् जा वेंडिय पांच । न सिदांतें मान्युंहे यतः " मं नावेंदिय, नाणं दिवंदियाण विरहेवि॥ दब आजावंिन, विजाव श्रंपिक्ववाईणं॥ १॥ पंचिंदियब छलो, नरुवसविव उवलं । उं " इति विशेषावस्य नाष्यें जे पारो, ी हुं रूप देखीने दोडे तथा ब लादि फूले. ए मेलें एकें इयने श्रुत ह्युं.

संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्ताने विषे बार उपयोग मांहेला चार उपयोग न होय तेनां नाम कहेले एक नःपर्यवज्ञान पर्याप्तावस्थायें विरति न होय ते नणी ए ान पण न होय तथा चक्रुरिंडियनो व्यापार नथी, ते ाटें बीजो चक्रुर्द्रीन पण न होय वली केवलज्ञान अने केवल दर्दीन, ए बे पण कमिक्र्यने अनावें त्यां न होय वोष त्रण ज्ञान, त्रण ज्ञान अने बे दर्दीन, ए आत उपयोग होय केम के जिनादिक प्रस्थों ज्ञान सहित उपजेले, ते पेक्षायें होय ए रीतें त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने बे दर्दीन ए ाव सिंह ाने अपर्याप्तावस्थायें पामियें ए सौ करण अपर्याप्ता खेवा, एटखे त्रीज्ञं उपयोगदार जीवस्थानने विषे कह्यं ॥ ए ॥

हवे ना न उपयोगें प्रवर्ते, ते लेक्या हीयें, तेथी उपयोग दार कहा। पढ़ी चोथुं लेक्या दार हेते.

सिन्न इंगि लेस अप, बायरे पढम च तिसेसेसु ॥ अय बंघादि च घाराणि॥सत्ति बंधुदीरण, संतुदया अ तेरससु॥१ण॥

अर्थ-(सिन्नडिंग के०) सिह आना बेहु नेदें (उद्येस के०) उ द्येया पामियें, तथा (अप बायरे के०) अपर्याप्ता बादर एकेंडियमांहे (पढमच के०) प्रथम नी चार देया होय अने (तिसेसेस के०) शेष अगीआर जीवनेदें त्रण देशा होय. देयायें करी जीव कमें बंध करे ते नणी हवे बंध उदय उदीरणाने सत्ता कहेंडे. (सत्त के०) सात तथा आठ कमेनो (बंधुदीरण के०) बंध तथा उदीर णा होय अने (संत के०) सत्ता तथा (उदयाअठ के०) उदय आठ कमेनो (तेरसस के०) प्रथम तेर जीवनेदने विषे जाणवो ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १०॥॥ अथ जीवनेदेख देश्यामाह ॥ सिन्नआ पंचेंडिय पर्याप्ता तथा पर्याप्ता ए वे जीवनेदें कक्षादिक उए देश्या संनवे. एमां करण पर्याप्ता देश

श्रपयिप्ताने प्रथमनी त्रण छेश्या होय.

बादर एकेंडिय पर्याप्तामांहे प्रथमनी चार छेश्या पा थिं, केमके जवनपति, ज्योतिषी, व्यंतर ने ईशानदेवलो धीना वैमानि देवो प वीने र हि क प्रथ्वी, श्रप्, प्रत्येक वनस्पति, एवा प्रत्येक बादरमांहे वि छपजे छे. ते देव ता तो पोताना जवनी छेश्यायें चवीने ए त्रण मांहे जावी जवतरे, त्यां ोतिषी

ा सौधम ने ई। देवलो ना देवोने तेजो क्षेत्रया हो तेथी पर्या विस्थायें ए एने ते ग्रेथी जो क्षेत्रया पए। पा गियें. । जीना जीवने दोष ए क्षेत्रया होय। ए जिन्नेदथी होष राजे अगी। र जीवनेद, तेने विषे कस, नील अने पोत, ए ए क्षेत्रया होय। एटके जीवना चौद ने दें क्षेत्रया दार कहां.

हवे क्षेत्रवायें री जीव, मेबंध रे ते नणी बंध, जदय, जदीरणा ने ।

हेते. ॥ थ बंधादि दाराणि ॥

ए संज्ञी पंचेंडिया पर्याप्ता विना शेष तेर जीवजेरें सात तथा आठ ए बें वंधस्थान तथा उदीरणास्थानक जाणवां त्यां तथा पोताना जवने त्रीजे, न वमे तथा सत्तावीशमे इत्यादि जागशेषें परजवायु बांधे ते । खें त्यां आठ में नो बंध । एवो ने शेष । खें सात मेनो बंध जाणवों तथा । युः ममें उदयप्रा ए । वलीमात्र शेष रहे, त्यां सुधी आठ मेनी उदीर । जाणवीं ने उदयप्रा नी ए उदयाविला । के तेवारें उदयाविला । उपरांत कमेदल र खुं नथी, तेथी । नी उदीरणा रे? जे जणी जीवयोगकरणे री उदयाविलयी परखुं ममेदल उदयाविलमांहे खेंची लावी । एविने वेदे, तेने उदीरणा हीथें. तेमाटे ते आवली शेष । ष्य रहे थके सात मेनी उदीरणा होय ए लिब्ध पर्या । खेवा. केमके रणअपयीप्ताने सातनी उदीरणा न होयः

तथा एहिज तेर जीवर ानकें आठ कमेनो उदय निश्वें होय ने सत्ता पण ाठ मेनी होय, जे जणी सातमुं, अने अगीआर ं गुणठाणुं एमां पण सत्ता आठ कमेनी ाजे ने सात कमेनी सत्ता तो बारमे गुणठाणे जाजे. ते तेने नहोय. एम तेर जीव स्थानकें बंध, उदय, उदीरणा ने सत्तानां स्थान कहां॥१०॥ हवे सिन्नआ पंचेंड्य पयीप्ताने विषे बंधादि स्थानक कहें हो.

सत्त हे ग बंधा, संतु द्या सत्त छाठचतारि॥ सत्तर पंचडगं, दीरणा सन्निप ते॥११॥

थे—( तह के॰) सातनो तथा ाठनो ( ग्रेग के॰) ग्रेनो तथा एकनो (बंधा के॰) ए चार बंध स्थान संङ्गी पंचेंड्यिने होय अने (सत्तअहचनारि के॰) सात , ाठ ने चार ए त्रण (सं दया के॰) सत्ता स्थानक तथा उदयस्थान होय. ने (सत्त ह्यपंच छगं के॰) सात, आठ, ७, पांच अने

बे. ए पां . ( बदीरणा के० ) दीरणास् ान (सहिप ते के० ) ं।।
पंचेंडिय पर्या ाने विषे हो ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ११ ॥

सं शिया पंचें हि पर्याप्ताने विषे ज्यां धी । न बांधे तिहां धी ।त में नो बंध होय ने परनवं । ांधे, तिहां ख्यात कमें । ध हो ने द में एो चढ़्यो ।हिनीय । ए बे ांधे, त्यां छ मेनो बंध होय ने । गी। रा एताए। उपरां ए वेदनीयनो बंध होय, एवं ।र बंध र ।न होय. तथा तेने चार ।न ए होय, तिहां ।त मेनी । गी। रा एता ए। धी होय त्यां वली।हिनीय क्ष्य । पत्नी। रमें एताएो ।त कमेनी सत्ता होय. तिहां वली ज्ञानावर ए।य,दर्शनायर ए।य ने खंतराय, ए ए मेक्ष्य

क । पछी तेरमे ने चौदमे एवाणे चार मैनीस । होय,ए एससा स्थानकः एज रीतें द मा गुणवाणा धी ।व मैनो चदय होय अने गीयारमे तथा बारमे, ए वे गुणवाणे ।ोहनीय विना सात मैनो चदय होय अने सयोगी तथा अयोगी ए वे गुणवाणे चार घातीयां मैनो चदय होय. ए ध्यने 'नवे ते धी मनुष्यनी अपेक्तायें संज्ञी । पंचेंड्यने ए चदय स्थान ं.

हवे उदीरणास्थानक हेळे. विला शेष निजनवायु रहे, त्यां धी वि कर्मनी उदीरणा होय, ए प्रथम स्थान ने युनी छेहेली उद्याविला पें उदी रणा टली जाय, तेवारें सात मेनी उदीरणा जाणवी. ए बी 'स्थान ने उन्न गुणवाणाथी आगलें वेदनी अने । ए बे मेनी उदीरणा न होय माटें ति हां उ कर्मनी उदीरणा होय. ए त्री 'स्थानक तथा दशमे णवाणो वेदनीय, । अने मोहनीय, ए त्रण कर्मना पांच कर्म विना उदीरणा उपशांत हो ए खो थे पामीयें, केमके आवलीमा रहे, त्यां हिनीयनी उदीरणा न होय हे ए चो थें स्थानक तथा झानवरणीय, दश्तेनावरणीय ने 'तराय ए ए मे विलक्ष मात्र थाकतां होय, तेवारें बारमे एवाणो एनी उदीरणा नहीं जाणवी तेथी । प वी नाम अने गोत्र, ए बे कर्मनीज उदीरणा होय ए सयोगीयें पण बेनी उदीर । अने अयोगी अ दीरक होय, ए पांच 'स्थान . एम ए सर्व ध्यने विषे 'नवेळे. तेनणी सिनया पंचेंडिय पर्याप्ताने विषे ए पांच उदीर स्थान ं. एटले मूलजीव नेद हारें एवाणादिक आव बोल ।, ए जे जीवना नेद । ते जी वना नेद गत्यादिक नेर्दें करी विचारतां च विध पंचविधादि थाय, तेथी चौद ने वर्ग अनियत पर्णं देखाडग्रं॥११॥ उ । नि जीवस्थाने अगुणस्थानादी नशें हाराणि.

## ॥ ार्गणास्या हि॥

गइ इंदि एच्य काए, जोए वेए कसाय नाणेमु॥ संज दंसण लेसा, जव सम्मे सिह च्याहारे॥ १५॥

अर्थ-(गइ के०) गित रि, (इंदिए के०) पांच एकेंडियादि इंडि, एवं नव. (ए के०) ध्वी यादि जीविन यि जीविसमूह ते नि हियें, एवं पंदर. (जोए के०) बोलं, लिखुं, इस्यादि चे यें जोवे ते योग ए, एवं रि. (वेए के०) इंडियें री वेदियें, तेनणी वेद ए, एवं ए वीशः (साय के०) ष एटले संसार तेनो या एटले लान होय तेनणी षाय हियें, तेनी चार गिणा, एवं पिशः. (नाणेसु के०) जाणी वह पर्यापद्धं इणे, ते नणी ज्ञान हीयें. तेनी मार्गणा ति एवं ते शि थइः (संजम के०) साव योगधि निवर्ततुं तेने संय हीयें तेनी गिणा सात. एवं चालीशः (दंसण के०) दर्शन सा न्यावबोध तेना चेद चार, एवं चुन लिशः (लेसा के०) षायोदयें अ दाध्यवसाय थाय था योगप्रवृत्ति ते लेक्या तेनी छ गिणा, एवं पारः (नव के०) जिल्यमार्गणा, एवं बाव (सम्मे के०) सम्यक्त मिथ्या लादि चेदें तत्त्वश्रदानवंत जीव चेदः . एवं छावन, (हि के०) नसहित ते सं शिया ही असिह आ, ए वे चेदें जीव, एवं वि. (हि के०) ोजाहा रादि रे, ते हिरारी अने हिरार रे, ते णाहारी ए वे चेदें जीव. एवं व चेद् उत्तर एखाः इति यार्थः ॥ १२॥ हवे चौद मूल गिणा हारना उत्तर व गिणा हार हें हें.

सुर नर तिरि निरय गइ, इग बिद्य तिद्य च पणिंदि ।या॥ नू जल जलणा ऽनिल वण, तसाय ण वयण तणु जोगा॥ १३॥

थ-नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ने वै नि , ए चार ( र के ) देवग तिना , (नर के ) मनुष्यगतिना एकेंडिय, विकर्जेडिय, पंचेंडिय, जलचर, स्थलचर ने खेचर, ए सर्व. (तिरि के ) तिर्थेचगतिनाम. साते नरकना नारकीने (निरय के ) नरकगतिना , एम गतिनी पेक्सपें सर्व संसारी जीव विचारतां चार नेदें होय, ए प्रथम चार (गइ के ) गतिमार्गणा जाणवी कि विचारतां चार (इग के ) एकेंडिय ते प्रथिव्यादिक पांच स्थावर, (विश्व के ) वेंडिय, ते शंखादि , (तिश्र के०) तेंडिय, ते ीडीप्र ख, (चन के०) चन्नरिंडिय ते जमरादिक, (पणिंदि के०) देवता, नार ी, श्रमंङ्गीश्रा, मंङ्गी ा, ष्य तथा तिर्थेच. एम विचारतां इंडियवंत जीवनी पेक्सयें सर्व मंसारी जीव, पांच प्रकारें होय. ए बीजी इंडियमार्गणा पांच प्र ारें जाणवी.

( उक्काया के ० ) व प्रकारना जीव ायमागिणायें विचारतां होय, त्यां (नू के ० ) माटी, पाषाण, धातुना जेद तथा मीवुं, पारो, जोमल, र नी जाति, ए सर्व बादर, पृथ्वीकाय तथा सूक्ष्म पृथ्वी ाय जीव ौदराज लोकें जाणवा तथा ( जल के ० ) पाणी, हीम, करहा इत्यादि ए ाय जीव एवा. ( जलण के ० ) छिं, वीजली, इत्यादि ते चकाय जीव जाणवा. ( निल के ० ) वायुकाय ते गुंजवायु, विंटोलीचे इत्यादि जाणवा, ( वण के ० ) ंब निंवा दिक, ते प्रत्येक वनस्पति तथा छानंतकाय निगोद सूक्ष्म बादर ए वे जेद वनस्प तिकाय. ( तसाय के ० ) विकलें इ्या ने पंचे इय, ए सकाय जाणवा. ए म कायापेक्षायें व जेदें जीव जाणवा. ए कायमागैणा त्रीजी जाणवी.

(मणवयणतणुजोगा के०) ाययोगें री मनोवर्गणायें इव्य छेइ नपणे परिणमावे तेनी साथें संबंधजन्य जीव ं करणविधि, ते मनोयोग. ए जाषापणे परिणमे, इव्यसंबंधजन्य जीवविधि ते वचनयोग, ज्यां खात्मा प्रदेश विस्तारे, ते काया, तेह संबंधजन्य जीवविधि, ते काययोग. ए त्रणे योगें करी सयोगी जीव, त्रण जेद जाणवा. एम सर्व जीव, योगमार्गणायें विचारतां मनयोगी, वचनयोगी ने काय योगी, ए त्रण प्रकारें जाणवा. ए चोथी योगमार्गणा। इति स यार्थः ॥ १३॥

वेश्र निर ज्ञि नपुंसग, कसाय कोह मय माय लोजिति॥ मइ सुश्र ऽविह मण केवल,विजंग मइ सुश्र नाण सागारा॥१४॥

अर्थ-(वेश के०) वेदमार्गणायें वेदनी पेक्सायें वि रतां ए जेदें सर्व संसारी जीव हो त्यां जे दाढी, ंड हित खपुरुषा रवंत, ते व्यपुरुष जाण वो अने जे स्त्री विषयिणी जिला रूप मैथुनसङ्घा सहित जे विव वर्ते, ते जावपुरुष जाणवो. ए (नर के०) पुरुषवेद ो तथा न, योनि प्र ख व यव सहित अने दाढी मुंड रहित एवा ने जे धारण करे, ते इ विजाणवी अने पुरुषविषयिणी जिलाषा रूप मैथुनसंङ्घा सहित जे जीव ते ना विजाणवी, ए बीजो (इिंड के०) स्त्रीवेद. तथा स्त्रीना जवयव समादिन तथा पुरुषना

खंग, दाही, मृत, प्रमुख ए वेहु जेनें न होय ते इव्यनपुंतक जाणवा नया स्त्री खन पुरुष, ए वेहु विषयिणी अनिलापायं जे जीव वर्जे, ते नावनपुंतक जाणवा. ए त्रीजो (नपुंत्रग के०) नपुंत्रक वेदः एम वेद खाश्री इव्य खन नावनेदें करी जीव त्रण प्रकारें जाणवाः ए पांचमी वेदमार्गणा त्रण प्रकारें जाणवीः

(कलाय केंग) कपायोदयंत्र विचारतां (कोइसयमायज्ञोतिति केंग) को धी, मानी, मायी छन लोनी, ए चार नेंद्र सर्व संसारी जीव होय, त्यां बीजानी लायं चित्र विवहन परिणत ते कोथी। पोताने विषे छायकता बुडियं छनमन विचावपरिणति, ते मानी। परनें बंचवा हेतु कुटिजता परिणति ते मायी। पर्ड्य मायं छनेदताबुडिपरिणति, ते लोनी। ए चारे कपाय, बद्य विरोधी हे. जे नणी कोधादिकने बद्यं मानादिकनो बद्य न होय, छने मानने बद्यं कोधनो बद्यं न होय, ए रीतं हिंदी कपायमार्गणा चार प्रकारें जाणवी.

हान, यहानचेर करी जीवचेर विचारतां द्यात प्रकारमांह सर्व जीव यावे, ए क्योपरामिक क्रायिकपर्यायें लाणवां त्यां इंड्यि पांच, यन नोइंड्यि, ए नि मित्त वर्त्तमान विषय हानविशेष, ने प्रथम (मइ क्रंण) मित्तहान. शद्य संवंध खर्य विषयक त्रिकालविषयवस्तुपर्यालोचन हानविशेष, ते वीछं (सुझ केण) श्रुतहान. खर्विष एटजे मर्यादायें कपिड्यविषयप्रत्यक्त, ते त्रीछं (खर्विह केण) खर्विद्यान. मनुष्यक्त्रमांहे जे सन्नीया पंचेंड्य जीवना मनागन चाव चेदलें जाणवुं ते चोछं (मण केण) मनःपर्यायहान. नकत खावरण रहिन नंपू एं सर्ववस्तु विषयित्रं खनंतड्यविषद्यं हान, ते पांच हं (केवन केण) केवनहान जाणवुं. मिय्यात्वें करी विरुद्धनेंगें विषरीत पणं वस्तुनो परिवेद, ते वहुं (विचंग केण) विचंगहान कहीयें. जेम शिवरार्जाय सात हिए खने नान समुड् देखी जाणवा लागो. जे में नविदिष, समुड्, दीवा एम मिय्यात्वें छुत ते पण छहान कहीयें. विषरीत एम मिय्यात्वें छुत ते पण छहान कहीयें.

जे नणी अनंतयमांत्मक वस्तुने एकरूपें पूर्ण करी जाणा. ने संसारहेतु नेने मो क्हेतुरूप जाणे, एकज विधिक्षप जाणे, अथवा निपेयरूप जाणे, एम एकांत जाणे पण उनयहर्षे न जाणे तथी अज्ञानी मिय्याली कह्या. नम्यज्ञहिमां एक ज्ञानी ते केवजी अने वे ज्ञानी ते मितज्ञानी अने अत्र ज्ञानी. तथा त्रण ज्ञानी ते मित. श्रुत अने अवधि ज्ञानी तथा चार ज्ञानी. ते मित. श्रुत, अवधि ज्ञाने मनःपर्य वज्ञानी. ए चार ज्ञानी कह्या. ए आव (नाण केंण) ज्ञान ने नाकारापयोग नामा

न्यविशेषात वस्तुने विषे ाति, एा,त्रि याविशि वस ंजाएवुं. ते (सागारा के॰) । रोपयोग जाएवुं. ए सात ।। ज्ञान गिएा आठ नेदें जाएवी॥ १४॥ इवे विरति विरति गिए। बे ली सा नेदें हे हे

> सामाइ छ छ परिहा, र सुहुम छह्खाय देस जय छज या ॥ चक्कु छचकू ही, केवलदंसण छणागारा ॥१५॥

थ-(सामाइ के०) सा ाय चारित्र, (वे के०) वेदोपस्थापनीय चारित्र, (परिहार के०) परिहारित ग्रुद्धिचारित्र, (सुदुम के०) सुद्धासंपराय चारित्र, (श्रद्धाय के०) यथाख्यातचारित्र, (देसनयश्रन्या के०) देशिवरित चारित्र, ने श्रविरितचारित्र, ए सात चारि , ने ( खु के०) चहुद्दीन श्रने (श्रवस्तू के०) अचहुद्दीन, (वेही के०) विधद्दीन, (केवल के०) केवलद्दीन, ए चार (दंसण के०) द्दीन ते ( णागारा के०) श्रना रोपयोग जाणवो॥१ ॥॥

हवे सातमी चारित्रमार्गणा हे हे. सर्वविरति, देशविरति ने अविरित एवी रीतें विचारतां सात जेदें संव संसारी जीव होय. तिहां (सम केंग) का न, दर्शन ने चारित्रनो ज्यां (आय के०) लान होय ते नणी सामायकचारित्र सर्व सावद्य विरतिरूप प्रथम जाए बुं अने जे पूर्व पर्याय हो दीने बीजा वि ६ पर्या युनुं उपस्थापन करवुं. ते बीखं वेदोपस्थापनीय चारित्र, ते एक सातिचार अने बीजो निरतिचार, एवा बे नेदें जाण छुं त्यां श्रीवीर तीर्थंकरना साधुने दूषण जागे थके जे व्रत पर्याय होदे, जेम विषधर जे सर्प तेएों मंशेली आंगलीने शरीर राखवाने हेतें हेदे. एम् व्रत राखवा निमिन् सदूषण व्रत पर्याय हेदी जनमणी करीयें, ते साति चार हेदोपस्थापनीय कहीयें, अने बीजो निरतिचार ते श्रीपार्श्वनाथना शिष्य श्री वीर जिनपासें फरीची व्रत छ रे, ते निरतिचार वेदोपस्थापनीय चारित्र बीर्ड जाण बुं एट जे तीर्थ यकी न्य तीर्थं सं मण करे जेम श्रीपार्श्वनाथना साधु के शी गांगेय प्रमुख श्रीवीरना शासनमां वि पंच महावत च री पूर्व पर्याय वे दी नवो पर्याय यहारे, ए निर्तिचार हीयें. त्री छं परिहार तपोविशेष, ं साडा नव पूर्वधर तो ज्ञाणत्रीश वर्ष जपरांत वहे, तेहने नवनो गह होय. तेमध्यें एक वाचनाचार्य अने चार साधु परिहार तपोनिविष्ठ तथा चार साधु ते वैयावन करे, ते ब मास तप पूर्ण करे, तेवारें ते चार वैयावची साधु तप छादरें छने तप करी रह्या जे चार सांधु, ते तेह्नुं व मास सुधी वैयावच करे, वलतुं व मा स सुधी वाचनाचार्य तप करे बीजा वि साधु तेनुं वैयाव रे, एम छढार मासनुं तप करे, ते तपनी विगत छावी रीतें हे के, जण्ण विं जयन्य चोय ल में मध्यम हुन छने उत्क छुन्म तप करे, शीतकालें जयन्य हुन, मध्यम छुन्म छने उत्कृष्ट दशम तप रे. पर्पाकालें जयन्य छुन्म, ध्यम दशम छने उत्कृष्ट हुवा लग तरे. पारणें छायंबील करे. एम तप पूर्ण करी जिनकहुप पहिवजें तथा गुज्ञमांहें छावे, ते परिहार वि दिचारित्र त्रीज्ञं जाणवुं. सूझ्मसंपराय गुणवाणे सूझ्मसंपराय गुणवाणे सूझ्मसंपराय गुणवाणे सूझ्मसंपराय चारित्र चोशुं होय. गीछारमा गुणवाणाची मांमीने चार गुणवाणे श्रीवीतराग निरतिचारचारित्र ते पांचमुं यथाख्यात चारित्र जाणवुं. देशविर ति निरपराध निरपेक् संकृष्ट्यी स जीव न हुणुं, ते हुं देशविरति चारित्र, इत्या दिक सर्व विरति, देशविरति चारित्र जाणवुं. ए छात्रमी चारित्रमार्गणा सात नेदें जाणवी.

हवे नवमी दर्शनमार्गणा कहे हे. जे आंखें करी देख हुं, ते च हुंदर्शन अच कुं कहेतां आंख विना शेष इंड्य चार तथा मन तेणें करी जे वस्तु हुं सामान्यां श यहण ते बी छं अच हुंदर्शन अविध एट छे इव्य, हेंत्र, का ला दिक मर्योदायें सा मान्यपणे रूपी इव्य हुं यहण, ते त्री छं अविध दर्शन अने संपूर्ण इव्य विषय सा मान्यांश हुं यहण विषयक ते केंवल दर्शन चो छं जाण छुं. ए चारे अना कार हे. जे न णी जाति, गुण, कियादिक विशेषण रहित वस्तु आकार रहित का इंएक ए छुं देखी यें, ते नणी अना कारोपयोग कही थें, ए नवमी दर्शनमार्गणा जाण वी॥ १५॥

हवे दशमुं लेक्यामार्गणानुंदार कहे हे.

किष्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हाय सुक्क निवच्चरा॥ वेच्यग खइगुवसममिच मीस सासाण सन्निच्चरे ॥ १६॥

श्रथ—(किएहा के०) रुस लेखा, (नीला के०) नील लेखा, (कांक के०) कापोत लेखा, (तेक के०) ते जोलेखा, (पम्हाय के०) पद्मलेखा, (सुक के०) शक्कलेखा, (जब के०) नव्य, (इश्ररा के०) इतर एटले श्रनव्य, (वेश्र ग के०) वेदक सम्यक्त. (खइग के०) हायिकसम्यक्त, (श्रवसम के०) श्री पश्चिक सम्यक्त, (मिन्न के०) मिथ्यात्तसम्यक्त, (मीस के०) मिश्र सम कित, (सासाण के०) साखादन समिकत, (सिन्नश्ररे के०) सिश्र्या श्रने इतर वीजा श्रसिन्नश्रा ए तेरमी संज्ञीमार्गणा जाणवी॥ इत्यक्तरार्थः॥ १६॥

लेक्या दिय पर्याय नेर्दे री जीवनेद वि रि ं नेर्दे सर्व जीव एवा. कसादि इव्यसंबंधें जीवनो मेर परिए नहे दनाव ते लेक्या कही यें. ते क्ष्म जंबूफल खावा निम्त्त हो, ते पुरुषना ध्यवसाय नेर्दे जाएं जे पुरुषें जंबूहरू फल्यो दे ।। एकें चिंतव्युं, के ए हक्स मूलयकी हेदीयें. ए क ले विंत बीजे ह्यं के, खा हेदीयें, ए नीललेक्या, त्रीजे ह्यं लघु शाखा हेदो, ए पोत लेक्या, चोथे ह्यं ह होदो, ए ते विलेक्या. पांचमे ह्यं ल विद्यो, ए पोत लेक्या, हो हो ह्यं नीचें पड्या फल लक्क्यें ए लेक्या एम देदें जीव होया ए दशा ।। लेक्यामार्गणा जाएवी।

ह्रवे नव्यमार्गणायें पारिणामि नावें जीवनेद विचारतां बे नेदें सर्व संसा री विवे त्यां रि जावा योग्य जे जीव इच्य ते नच्य जीव ने जे केवारें प ण हि यें न जाय ते अनव्य जीव. ए गी रिमी नव्य गिणा बे नेदें जाणवी. हवे नवतल श्रदानग्रण सु तायें द्वायोपशमि , द्वायि , औपशमि ने औ द्यि , ए चार पर्याय जेदें वि रितां जेद सर्व जीवना थाय त्यां प्रथम वेदक हेतां म्यक । हिनीयना प्रदेश रस वेदे हे. ए ना क्वायोपशिमक क हीयें. जे जणी मिथ्याल ोहनीयनो र सर्व घातीत तद्यें । व्यो धको नोग वी क्यें की धो ने जदय नथी ाच्यो, एवो जे दय रूप ते जपशम्यों है ए ने ांतरे जे ात्मानी तलरुचि ज्यां लगें जागे, ते पहेलुं क्रायोपशम सम्यक्ल हीयें. उक्तंच "मितं ज इनं, तं खीणं अणुइअं च उवसंतं॥ तिनी नावंपरिण य, वेइक्कंतं खर्चवसमं "।। १ ॥ तथा श्रीजिनकार्जे प्रथ संघयणी म ष्य कृप क श्रेणि करतो पहेला नंता बंधीया चार कषाय तथा ए दर्शन मोहनीय, ए स प्रकृति खपावे, तेवारें जे प्रथ ो आत्मानो ६ श्रदान खनाव, ते बी हायिक सम्यक्ल ए बदायु पामे, तेनी पेहायें तो चारे गति मध्यें पामीयें तथा ए साते प्रकृति रसयी तथा प्रदेशयी उप ावे थके जे छुड़ श्र दान गुण प्रगट्यो ते त्री ं श्रीपशमि म्यक्ल जाणवुं. मिथ्या ने उद्यें वि परीतरुचि ते चोछं मिष्यालः तथा मिश्रने उद्यें मिश्ररुचि ते पांच मिश्र-तथा सम्यक वमतो, मिष्यात्वें नथी पहोतो, एनी वें जे ह्यु इरुचि ते वर्ष्टुं सा सादन सम्यक्त जाणवुं. ए बारमी समिकत । गेणा व जेदें । एवी.

हवे संज्ञा क्वायोपशमजन्य जीव कानविशेष ते पण अहीं ं दीर्घकानिकी संज्ञा तेणे सिहत ते सन्नीया जीव मन हित जाणवा तथा ते संज्ञायें रहित जेने हो ते स िया जीव ए संज्ञामार्गणायें वि रितां सर्व जीव बे ारें एपवा ए संहि ार्ग र तेर रे बे ने वें जाएवी ॥ १६ ॥ हिरे अर ने आ, सुर निरय विनंग मइ सु डिह इगे ॥ सम्मत्त तिगे पम्हा, सु र स रिसु सन्निष्डगं ॥ १ ॥

ह्वे बाश्राह मार्गणा दारें चौद जीवजेद विचारे हो. देवगति अने नरकगति ए बे गति ।गेणामध्यें संज्ञी पंचेंड्य पर्याप्तो अने करण अपर्याप्तो लेवो. केमके लब्धि पर्याप्तो देव अने नारकी न होय माटें.

त्रीजा विजंग ज्ञाने अपयोप्तावस्थायें विजंग ज्ञानी होय. ते अपेक्सर्ये लेवुं तथा पंचसंयहमांहे विजंगें एकज जीवजेद मात्र सि पर्याप्तोनोज कह्योग्ने ते संज्ञीया मांहेथी आव्यो जे देवता, अने नारकी तेने अपयोप्तावस्थायें विजंगज्ञान न होय. तेथी ते पेक्सर्यें एकज जेद लीथो हो. ए विशेपहे.

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, श्रवधिज्ञान, ए त्रण ज्ञान श्रने दर्शनमार्गणामांहे एक श्रवधिदरीन ए चार मार्गणादारें संज्ञी पंचेंडिय करण श्रपयीतो जीव त्रण ज्ञान सहित सम्यक्दृष्टि अवतरे, ते पेक्तार्थे अपयोप्ता लीधा तथा बीजा संज्ञी पर्या प्रा सम्यक्रृहि जीवने पण होय. एटजें बे जीवनेद होय.

त्रण सम्यक्तवें पण ए बे जीवनेद जाणवाः त्यां बदायु सात प्रकृति मोह नी खपावी, चार गितमां इं उपजे, त्यां अपयीप्तावस्थायें क्वायिक सम्यक्त होय. ते अपेक्तयें एक संक्षीआ पयीप्ता छेवा तथा उपश्च श्रेणियें उपश्चम सम्यक्ष्टिए ए मरण पामीने अ तरवासी देवता थाय. ते अपेक्तयें बीजा संक्षी अपयीप्ता पण छेवाः हींआं कोइ कहे हे जे संक्षी अपयीप्ताने उपश्च सम्यक्त केम होय? तेनो उत्तर जे अंहीं रण अपयीप्ता छेवा, पण लिंध अपयीप्ता न छेवा.

वेदक सम्यक्त्वें, पद्म लेर्यायें, लेक्यायें तथा संज्ञी गिणायें, ए चार मार्ग णायें तथा पूर्वली नव. एवं तेर मार्गणास्थानें (सिह गं के०) संज्ञी छाना बे नेद होय, एट ले पर्याप्तों ने पर्याप्तों ए बे नेद होय. त्यां छपर्याप्ता उपजती वेलायें करण्यी लेवा जे नणी लिब्ध छपर्याप्ता तो तथा विध विद्यक्ति छ नावें ए तेर मार्गणा दारें न पामीयें. ए तेर मार्गणायें जीव नेद कह्या. हीं वे दक छने ह्यायोपश्चिक सम्यक ए जा ए तेर मार्गणा थइ॥ १४॥

तमसित अप जुअं, नरे सवायर अप तेऊए॥ यावर इगिंदि पढमा, च बार असित इड विगले॥ १०॥

अर्थ-(तं के०) ते बे नेद ( सि अप छुअं के०) असंज्ञी । लिब्ध अ पर्याप्ता सिहत ए त्रण नेद, (नरे के०) म ष्यगितने विषे होय (सवायरअप ते कए के०) ते वे वादर अपर्याप्ता सिहत त्रण नेद तेजो केश्यामां हे होय. अ ने (धावरशों दि के०) पांच स्थावरकाय अने इंडिय गिणामां हेली एकेंडिय, ए व बोलने विषे (पढमाच छ के०) प्रथमना चार नेद जीवोना होय. तथा (बा रअसित के०) प्रथमना वार नेद संज्ञीमां होय, ने (इड़विगले के०) वे वी जीवनेद प्रत्येक विकलेंडियमां हे होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १०॥

ते संज्ञीपयितो अने संज्ञी अपयितो, ए बे नेद अने असंज्ञी लिब्ध पर्या तो, ए त्रण नेद मनुष्यगितमांहे पामीयें, जे नणी मनुष्यना मल मूत्रादिक चौ द स्थानकें संमूर्जिम मनुष्य, असंख्य उपजे, ते अपयिताज मरण पामे. पण पूरी पर्याति न करे. गर्भज मनुष्य बे नेदें होय ते गर्भज मनुष्य सन्नीआना बे नेद त था बादर एकेंडिय अपयिता सिहत त्रण जीव नेद ते तेजोक्षेक्यायें होय. जेन णी दिर एकेंडिय दिला प्रथ्वी, प् अने वनस्पति ध्यें देवता खेश्या सिहत अवतरे हे. तेनी अपर्याप्तावस्था होय तेवारें था सिह दो पर्याप्ता अपर्या हा ए बेहु अवस्थायें तेजोखेश्या होयः हीं पण करणअपर्याप्ता खेवा.

हवे व य गिणानां दारने विषे एक स य मार्गणा रहेवा दीजें ते मूकीने बा हीनी पांच स्थावर यमार्गणा अने इंड्यिदारने विषे बेंड्यि, तेंड्यि, चौरिंडि अ ने पंचेंड्यि रहेवा दीजें, बा री एकेंड्यिनी ए ज गिणा जहीयें, तेवारें पांच था वरने विषे पण जीवना चार जेद लाजें अने इंड्यिदार दिला एकेंड्यि ध्यें पण जीवना चार जेद लाजे, ते चार जेदनां ना हे हे एक स्त एकेंड्यिपयीप्तो, बीजो स्त एकेंड्य पर्याप्तो, तथा त्रीजो बादरएकेंड्यिपयीप्तो, चोथो बादरएकेंड्यि अ पर्याप्तो ए रीतें पांच स्थावरकाय गिणा था ही एकेंड्य गिणा, ए ह । गिणा दारें पूर्वीक्त चार जीवजेद होय.

ए रीतें पूर्वली गाथामां तेर गिणा दारें जीवजेद कह्या अने आ गाथामां अंदीं सुधी नुष्यगतिमार्गणा तथा तेजोक्षेदया गिणा, पांच स्थावरकायमार्गणा, अने एक एकेंड्यमार्गणा, एम सर्व ली एकवीश गिणायें जीव जेद कह्या.

बावीशमी संज्ञी गिणायें बार जीवनेद होयः तेनां नाम हेते. सूक्षण् केंड्यपर्याप्ता अने अपर्याप्ता, बादरएकेंड्यपर्याप्ता ने अपर्याप्ता, बेंड्यपर्याप्ता आने अपर्याप्ता, तेंड्यपर्याप्ता अने पर्याप्ता, चौरिंड्य पर्याप्ता अने अपर्याप्ता आसंज्ञी पंचेड्य पर्याप्ता ने अपर्याप्ता, ए बार नेद असंज्ञी गिणायें होय जे नणी एउने इव्यमन न होय ने नावमन होयः ते नणी असंज्ञी हीयें. ए बावीश मार्गणा दारें जीवनेंद कह्याः

त्रेवीशमी बेईड्य मार्गणायें बेंड्य पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ए वे जीव जेंद्र पामीयें चोवीशमी तेंड्यमार्गणायें तेंड्य पर्याप्ता ने अपर्याप्ता, ए वे जीवजे द पामीयें, पञ्चीशमी चौरिंड्यमार्गणायें चौरिंड्य पर्याप्ता अने चौरिंड्य अ पर्याप्ता, ए वे जीवजेद पामीयें ॥ १ ७ ॥

दसचरिम तसे अजया, हारग तिरि तणु कसाय इ अनाणे॥ पढम तिलेसा चिवअर, अचकु नपु मिह्नि सबेवि॥ १ए॥

अर्थ-(दसचरिम के॰) दश नेद हेझा, (तसे के॰) त्रसकायमार्गणायें पा मीयें तथा (अजयाहारग के॰) अविरतिमार्गणा, आहारकमार्गणा (तिरि के॰)

तियैचगति, (तणु के ) । ययोग । गेणा ( साय के ० ) चार षाय । गेणा (इ अनाएं के ) वे अज्ञानमार्गणा, (ति तेला के ) य नी ए लेक्या मा र्गणा, (निवंशर केण) नव्य गिणा ने इतर ते नव्य गिणा, (च ुकेण) अचकुदरीनमार्गणा, (नपु के०) नपुंस वेदमार्गणा, (हि क्वि के०) मिथ्यालमा र्गणा, एटली मार्गणायें (सवेवि के ) सर्व चौदे जीव जेद प रिये ॥ इत्य ।।१ ए॥

सूक्त एकेंडिय पर्याप्ता ने अपयीमा तथा ।दर एकेंडिय पर्याप्ता अने सा, एवं चार जेद विना बा ही चौद ांची चर एटले हेला बेईडियादि दश विनेद त्रसकाय मार्गणायें पा गियें जे नणी बेंडिय, तेंडिय, चौरिंडि ने पंचेंडिय जीवने

त्रस नाम मेनो चदय है, तेथी पोताने बर्जे हाले चालेहे.

अने एक संयम गिणामध्यें विरति गिणायें ीजी ।हार गिणामध्यें आहारकमार्गणा त्रीनी गतिमार्गणा ध्यें तिर्यचगति र्गणायें, चोषी योगमार्ग णामध्यें काययोगमार्गणायें तथा चार कषाय ार्गणायें एवं ाठ मार्गणा. त या मित् अने श्रुत ए बे अज्ञान गिणायें एवं दश. जेश्यामार्गणामध्यें कुल, नील अने कापोत, ए त्रण केश्या गिणायें एवं तेर तथा जव्य ने (इतर केंगू) छनव्य ए वे मार्गणायें एवं पंदर त । दरीनमार्गणा ध्यें अचकुदरीनमार्गणायें एवं शोल. वेदमार्गणामध्यें नपुंस वेद, र्गणायें एवं सत्तर. सम्यक्त मिष्यात्वमार्गणा, एवं अढारमार्गणा ध्यें र स्नद् एकेंड्य, २ बादर एकेंड्य, ३ वेंडिय, ध तेंडिय, ५ चौरिंडिय, ६ असंक्षीपंचेंडिय, ७ संक्षीपंचेंडिय, ए सात प्या सा तेमज ए सात अपयीसा, एम चौद नेद जीवना होय. जे नणी १ एं, १ आहारकपएं, ३ तिथैचपएं, ४ ।ययोगीपएं, चार कषायनो जदय, बे कान, क , नील अने कापोत ए त्रण लेखा, नव्यप ं, अनव्यपणुं, चहुदरी न, नपुंसकवेद, मिथ्यात्व, ए ढारे बोल चौद जीवनेदमांहे संनवे, त्यां मिथ्यात् तो एकेंडियादिक बार जीव नेदने विषे एक अ नोग मिथ्यात्वज होय जे नणी तेर्रेने अव्यक्तपणे तलरुचि नथी तेथी तेने तलरुचि विना मिाय्याल हीयें तथा पंच संग्रहमध्यें ए बार जीव चेदने निनग्रहित मिथ्याल कहां है. जे नणी एणे कोइ देव गुरुने यहण कस्रो नथी ते अपेक्सर्थे कह्यं हे तथा ए लब्धिथी तथा करण थी अपर्याप्ता वेहु अहीं लेवा अहीं आं इंड्यपर्याप्ति पूरीक । विना इव्येंड्यिन अना वें पण अचकुद्दीन कहां ते एटला वास्ते जे आंख विना बीजा ईडिय तथा नी इंडिय तथा इव्येंडियने अनावें जे इंडियविषयित सामान्यावबोध ते

र्रीन जाणवुं जे नणी वि हगतिने विषे था ।मैणयोगें पण अनाकारोपयोग सिद्धांतमां द्युं हो त्यां वाटें वहेता जीवमां जे अवधिदरीनी जीव नथी तेने वी । । युं दरीन होय ? ते नणी त्यां पण अचकुदरीन । त्युं हे. एट हे मूलयी चुम्मा लीश गेणा हारें जीव नेद । ॥ १ ए ॥

> प सिन्ने वल इग, संजम णनाण देस मण मीसे ॥ पण चरिम प वयणे, तिय वि पि इपर चकुंमि॥ ए॥

अर्थ-(पक्तसि कें) पर्या संज्ञी पंचें हियनो एक नेंद्र, ते गीआर मार्ग एग हारें पामीयें, तेनां नाम हे छे. (केवल ग कें) केवलज्ञान ने केवलद्दीन, (संजम कें) संय मार्गणा हिली पांच मार्गणायें एवं सात. (मणनाण कें) नःपर्यवज्ञान, (देस कें) देशविरति, (ण कें) मनोयोग, (मीसे कें) मिश्रहि मार्गणायें एवं गीआर र्गणाने विषे पूर्वोक्त एकज जीवनेद होय. तथा (पणचरिम कें) पांच छेज्ञा जीवनेद (पद्धा कें) पर्याप्ताना ते (व यणे कें) ए वचनयोगमार्गणानें विषे होय ने (तिय कें) ए अथवा ए ज ज्ञणने (पि अर कें) पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए वे नेदें करतां (छिव कें) छ जीवनेद (च संतुर्धि कें) एक च हुद्दीनमार्गणाने विषे होय॥ इत्यक्त्रार्थः॥ १०॥ इत्यक्त्रार्थः॥ १०॥

द्वे रणपर्याप्तो संज्ञी पंचेंड्यिनो एक जीवनेद अगी ार मार्गणा दारें पा मीयें, ते अगीआरनां ना हे हे ? केवलज्ञान, १ केवलद्दीन, ३ सामायिकचा रित्र, १ हेदोपस्थापनीयचारित्र, ५ परिहारिवग्रिदिचारित्र, ६ स्क्रासंपरायचारित्र, ७ यथाख्यातचारित्र, ७ मनःपर्यवज्ञान, ७ देशविरति. १० योगमार्गणामांहे एक मनोयोग,११ मिश्रद्दीन, ए अगीयार मार्गणा संज्ञी पंचेंड्यपर्याप्तानें होय अहीं के वलज्ञानी अने केवलद्दीनी पण, इव्यमन संबंधें सज्ञी केवली होय, ते अपेद्रा यें संज्ञी लेवो. बीजं केवलीनें मित्ज्ञानावरणीय द्वायोपशमजन्य ज्ञानिवशेष नावमन न होय जे नणी केवली ज्ञान क्षायिकनावें हे पण द्वायोपशम ना वें नथी. ए पर्याप्तो लिह्यथी तथा करण्यी उनयप्रकारें लेवो. बीजा तेर जीवनेदें ए अगीआर बोल न पामीयें देशविरतिचारित्र अने सर्वविरतिचारित्र पण संज्ञी पर्याप्तानेंज होय.

(पणचरिम के०) पांच जीवनेद वेद्या पर्याप्ताना क्षेवा, एटके १ वेंड्य, १ तेंड् य, ३ चारिंड्य, ४ असंज्ञीपंचेंड्य, ५ संज्ञीपंचेंड्य, ए पांच पर्याप्ता करणधी तथा लिब्धिथी जनय प्रारें क्षेवा ए पांच नेद वचनयोग गिणायें होय. केम के ए पांच जीव नेदनें नाषा होय, शेष नव जीवनेदनें नाषा न होय ाटें.

त्रण तथा व नेद एटले १ चौरिंड्यपर्याप्तो, १ असंज्ञीपंचेंड्यपर्याप्तो, १ संज्ञीपंचेंड्यपर्याप्तो, ए त्रण जीवना नेद चुदर्शन गिणायें होयः तथा कोइएक आचार्य इंड्यपर्याप्ति पूरी ा पठी इतर एटले शेष पर्याप्तियें री अपर्याप्ता एवा एज त्रण जीवनेद, एवं व नेद होय. एटले एज ए नेद पर्याप्ताना अने एज त्रण नेद अपर्याप्ताना एवं जीवस्थानकें जुदर्शन होय, ए हे वे. एट ले सत्तावन मार्गणादारें जीवनेद ।।। १०॥

थी नर पणिदि चरमा, च अणहारे सन्नि अप ।॥ ते सुहुम अप विणा, सासणि इत्तो गुणे वुं॥ ११॥

अर्थ-(यीनरपणिंदि केण) स्त्रीवेद ने पुरुषवेद तथा पंचें ड्यि, ए त्रण मार्गणारें (चरमाच छ केण) वे ह्या चार जीव चेद जाणवा अने ( णहारे केण) अणाहारक मार्गणायें ( इसिन्न केण) वे संज्ञीआ, ( वअप ा केण) व पर्याप्ता, ए आव जीव चेद होयः ( ते केण) ते ाव चेदमांथी ( सुहुम प विणा केण) सूक्ष्म अपर्याप्ता विना बाकीना सात जीव चेद, ( सासिण केण) सास्वादनमार्गणायें जा णवाः ( इत्तोगुणेवु इं केण) हवे अहीं आंथी आग के बाग ह ार्गणा दारें गुणवाणां कही शुं ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ११ ॥

वेदमध्यें स्त्रीवेद अने पुरुषवेद तथा इंडियमध्यें पंचेंडिय, ए ए मार्गणाहा रें वेद्या चार जीवनेद होय, एट के असंक्षी पंचेंडियपयीपो अने पयीपो तथा संक्षीपंचेंडियपयीपो ने पयीपो ए वेद्या चार जीवनेद होय, अहीं आं पि पुरुप विन्हरूप वेद असि आने जेवा पण नाववेद तो नपुंसक वेदें ज वे. शेष वे नेद न होय तथा सिन्न पण करणअपयीपो जेवो. केम के जिब्ध अपयीपा ने तो नपुंसक वेद होय.

अनाहारक मार्गणा हारें केवली स द्वातनी वेलायें ? संज्ञी पंचेंड्य पर्याप्तो होवो. १ अपर्याप्तो,३ सूक्ता एकेंड्य अपर्याप्तो,४ बादर एकेंड्य पर्याप्तो, ५ बेंड्यअप यितो, ६ तेंड्य अपर्याप्तो,  गतियें बे, त्रण समय लगें होय, त्रण समय अनाहारी रहे. ए अपेक्षायें ए साते अपर्याप्ता अनाहारक मार्गणायें पामीयें,

तथा केवली केवल स द्घा रतो त्रीजे, चोथे ने पांचमे, ए त्रण स यें का म्मिणयोगी नणी णाहारी होय. ते ाटें संज्ञी पंचेंड्यपयीप्ता पण लेवा. जे नणी ड्या नसंबधें केवलीने सन्निर्ड हीयें.

१ दिर एकेंडिय, १ बेंडिय, ३ तेंडिय, ४ चर्ठारेंडिय, ५ संज्ञी पंचेंडिय, ६ संज्ञी पंचेंडिय ए ढ जीव ने इ अपर्या ाना अने सातमो संज्ञी पंचेंडियपयित्रो, ए सात जीव ने इ साखादन ार्गणायें लाने केम के ो इ जीव सम्यक्त वमतो सू क्ष्म एकेंडियमां हे न ठपजे, तेथी पर्याप्तावस्थायें साखादनपणुं सूक्ष्मएकेंडियने न होय, ते नणी बा निना ढ जीवने इ पर्याप्ताना लीधा के के ए ढए रण अ पर्याप्तामां हे सम्यक्त व तो जीव अवतरे, ते पेक्स्यें लीधा तथा सिन्नआ अ पर्याप्ताने ग्रंथिने दें उपरा सम्यक्त लही एक समय जवन्य अने उत्कृष्ट ढ विलिशेषसम्यक्तें प्रथम षायोद्यें पडतां तथा उपरामिश्रणीथी पडतां सा खादने आवे माटें हिएम बाराह मार्गणा हारें जीवने इ क हिएण बाहिरा ए टले ए सर्व हिणा स्थित जीव ग्रणावाणा विना न होय, ते नणी ग्रणवाणां अ में मार्गणा हारें जिहां जेटलां संज्वे, तिहां तेटलां कहीयें ढेयें ॥ ११ ॥

पण तिरि च सुर निरए, नर सिन्न पणिदि नव तिस सवे॥ इग विगल नूदगवणे, इ इ एगं गइ तस अनवे॥ ११॥

थै—(पणतिर के॰) पांच णगणां तिर्थेच गतियें होयः (चग्रस्तिरए के॰) चार ग्रुणगणां देवगति अने नरकगतियें जाणवां तथा (नरसित्रपणिंदिनवत ति के॰) र म ष्यगति, २ संज्ञी, ३ पंचेंडिय, ४ नव्य अने त्रस, एपांच मार्गणायें (सवे के॰) सर्व णगणां होय तथा (इगविगल के॰) एकेंडिय, विकलेंडिय, (नूद्गवणे के॰) प्रथ्वी, अप अने वनस्पतिः ए सात मार्गणायें (इड के॰) वे बे ग्रुणगणां होय ने (एगंगइतसअनवे के॰) गतित्रस तथा अनव्यने वि षे एगं एटले ए मिथ्याल ग्रुणगणुंज होय ॥ इस्रक्रार्थः ॥ २२ ॥

गतिमार्गणामाहे तियैचगतियें मिण्यालयी मांमीने देशविरति लगें पांच ग्र णवाणां पामीयें शेप नव ग्रणवाणां नवप्रत्ययेंज तेने न होयः

श्रने मिथ्यात्वथी मांमीने श्रविरतिसम्यक्टिष्ट लगें चार ग्रेणवाणां देवगति त या नरकगतिमध्यें लाने. शेष दश ग्रुणवाणां नव प्रत्ययेंज विरतिने श्रनावें तेष्ठ ने न होय. एवं त्रण गतिमार्गणा थई.

इंडिय गि । ध्यें 'डिय, बेंडि, तेंडि ने गिरंडि. वं ।र ने । य गिणा ध्यें ध्वी, प् अने व स्पति ए ए ।गि । एवं ।गिणामध्यें मिण्या ने ।स्वादन, ए बे एगाणां लाने के के जे म्यक व तो पूर्वबदा ए सात ध्यें व रे, तेने पर्या ।वस ।यें । ।द एगां होय बी ं सर्व दा मिण्या गंज होय, जे नए। ए वेने नानोगपणे त्वश्रदान एणे यहां नथी, तेथी ए नियहीतपणे हीयें एवं पंदर ।गिणा ई

गति सते ति हियें हालवे ालवे करी एवा पण सपणे सन कमेना उदयथी नहीं, एट हो ते छा ने वा ।, बे गिणाना वि हिथ इसगतियें स हेवाय तेने, । गी प्यें ए ऐं एगों मिथ्याल गुण णुं होय, जे जणी ए ध्यें ोइ वि, म्यक् व तो पण न उपजे तथा इ जव्यनेतो सम्यक्त रूपें ज नहीं, तेथी जव्यने । दिन एवा न होय. एवं ढार मार्गणा दारें ए एां ।। ११॥

वेश्र ति कसाय नव दस, लोने च जइ ति नाण तिंगे॥ बारस अचकु चकुसु, पढमा अहलाइ चरिम च ॥ १३॥

र्थ-(वेश्वित साय कें) ए वेदें, ने निध, ान, ाया, ए त्रण क यें (नव कें) नव ग्रण एां होय ने (द लोने कें) लोन गिणायें दश ग्रण एां होय. (चड जइ कें) ार एवाएां विरतिमार्ग ायें होय. (इत ना एतिंगे कें) वे तथा त्रण एवाएां श्रद्धानित्रकें होय. तथा (बारस चखुच खुसुपढमा कें) श्रचकुद्दीनीय ने चकुद्दीनीय जीवने पढमा एटले प्रथमनां वां र ग्रुणवाएां होय श्रने (श्रद्धखाइचिरमच कें) यथा ।तचारित्रं वेह्छां चार ग्रुणवाएां होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १३॥

स्त्री, पुरुप छाने नंपुसक, ए त्रण नाववेद तथा क्रोध, मान ने । ,ए त्र ण कपाय. एवं ठ प्रकृतिना चद्यवंत जीवनें प्रथमनां नव उणवाणां होय, केम के न । पर्य वेद ने ष । दय हे, ते । एपे छौ वि पर्यायने व एवा ां जाने एवं । वि । भी । ईः

लो गिणायें सू 'परा एवा हो, जे नए। िध्या ।

मांभीने द । गुणवाणा धी लोननो द हो, ते । लोनी । विने द गुण ं

हो , । । ए ं वेद ने ने विषे ं वे. पहें छे एवाणे ं ।

मुंधी । ने रखो ं ज्वल को कोध, । जे मिश्रगुण ऐ विरित्त प ि । ने

सर । ं ज्वलनो कोध, देशविरित एवाणे प स्काणी । ने रखो ं ज्वलनो हो ता च वाणाधी । मीने संज्वलनानें सर । संज्वलन होय. एवं प । ।

श्रसंयि एट छे विरित रहित जे जीव, तेने विषे मिथ्यालयी । मीने विरित म्यक्ट ि धीनां । र गुणवाणां लाजें, जे न । पां मे गुणवाणो दे विरित हो ,

ने जपरला नव एवाणें सर्वविरित होय पण ं विरित नहीं होय । दें वी .

ति ज्ञान, श्रुतश्रज्ञान ने विजंगज्ञान, ए त्रण गिणायें ते सम्यक ं ि श्र णवाणे धि होय तो तेवारें ए ज्ञाननें बे ग्रुणवाणां होय ने ि श्र ण णे मिण्या ंश धि होय ते ज्ञा घ होय, तेवारें ि प्याल है धि होय ने ए वाणीयुं ि प्याल वेदे, तेवारें सम्यक्ल धि होय तथा जे तें म्यक्ल विना वे ज्ञानी जीव ा, ते तें ए ए ज्ञानने ए खातां जाने, जे नणी मिश्रदृष्टि पण ज्ञानी वे मिश्रग्रुणवाणे पण क्षुं मि ज्ञान ने श्रुक्त ान होय. या क्षुं विनंगज्ञान ने श्रुक्त विश्वान होय तथा पूर्ण ति ज्ञान ने पूर्ण विनंगज्ञान ने श्रुक्तं विश्वान होय तथा पूर्ण ति ज्ञान ने पूर्ण विनंगज्ञान, तेवारें पहेले, बीजे एवाणे ए ज्ञान होयः वली ते श्राचा ये हे वे के मिश्रग्रुणवाणे मिथ्याल घणुं होय तेवारें मिश्रग्रुणवाणे णे ा न होय ए बे मत वे पढ़ी साचुं खोदुं तो ज्ञानी जाणे एवं चेगणत्रीश मार्गणा पर्वः

प्रथमनां बार गुणवाणां एटले मिथ्यालयी मांमीने बारमा क्षणमोह गुणवा णा सुधीनां बार गुणवाणां, चकुदंशीन तथा अच दशीन, ए बे मार्गणा दारें होय जे नणी ए बे दशीन, क्षायोपशमिकनावें होय अने आगले बे गुणवाणों क्षायोपशमिक नाव नथी. तिहां क्षायिकनाव होय अने आगले बे गुणवाणे केवलीने केवल दशीन अने केवल झान हो पण केवलीने इंड्यिजन्य झान तथा दशीन, ए बेहु न होय. केवलीनुं पारमार्थिक प्रत्यक् सकल झान हो, ते नणी ए बेहु दशीनें बार गुणवाणां पहेलां संनवे. अहींआं अनेदनयें जीवदशीन जाणवुं. एवं एकत्रीश.

यथाख्यातचारित्र मार्गणायें वेद्झां चार ग्रंणगणां होय एटले उप ांत मोह, ही णमोह, सयोगी अने अयोगी ए चार ग्रणगणां होय, तिहां गीआरमे णगणों क षायोपशमधी यथाख्यातचारित्र औपशमिकनावें होय, ने शेष ण ग्रणगणे क षायह्य थयाथी हायिकनावें यथाख्यातचारित्र वीतरागचारि होय. हीं पण चारित्रवंतने अनेद विवद्यां लीधा. एवं बत्रीश मार्गणा हारें ग्रणगणां ह्यां ॥१३॥

मणनाणि सग जयाई, समइच्छ वेच्छ च डिन्न परिहारे॥ केवल डिग दोचरिमा, जयाइ नव मइसु हि डिगे॥ २४॥

अर्थ-(मणनाणिसगजयाई के०) मनःपर्यवज्ञान गिणायें प्र नादि सात ग्रेणवाणां होय.(समइअवेअच्छ के०) सामायिः ने वेदोपस्थापनीय चारित्रें चार ग्रेणवाणां होय. (इन्निपरिहारे के०) परिहारविद्युद्ध चारित्रें वे ग्रणवाणां होय. (केवलइगिदोचरिमा के०) केवल ज्ञान अने केवल दर्शन, ए वे मार्गणायें वे वेह्नां ग्रेणवाणां होय तथा (अजयाइनव के०) अविरत्यादिक नव ग्रणवाणां (मइसु के०) मतिज्ञानमार्गणाने विषे तथा (विह्न गे के०) विध्ञान ने अविधदर्शनने विषे जाणवां ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ १४ ॥

मनःपर्यवद्यानमार्गणायें (जयाई के०) यह वित्तसाधु तेना ग्रणगणां प्रम चादिकथी मांमीने द्वीणमोह लगें सात ग्रणगणां होय. एटले चारित्रियाने अप्रम च ग्रणगणे मनःपर्यवद्यान उपजे, ते वली प्रमचें आवे, ते पेद्वायें प्रमच ग्रण गणुं पण कहां अने बीजा ग्रणगणां ते साधु उपशमश्रेणि तथा द्वपकश्रेणि करे, ते अपेद्वायें सात ग्रणगणां लाचे. अहीं आं पण ज्ञानवंतने अचेद विव द्वायें ग्रणगणां कह्यां. एवं तेत्रीश.

संयममार्गणामध्यें सामायिक अने वेदोपस्थापनीय, ए बेहु चारित्रें एट खे ए व चारित्रवंत जीवने प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति अने निवृत्ति. ए चार गुण वाणां लाने. ए बेहु चारित्र क्षायोपश्चामकनावें तथा उपश्चमश्रेणियें नवमे गुणवाणे औपश्चमिक चारित्र होय, तेने मतें औपश्चमिकनावें तथा क्षपकश्रेणियें नवमे गुणवाणे क्षायिकनावें एम त्रण नावें होय. एवं पांत्रीश मार्गणा थई.

परिहारिव गुिंद् प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए वे एठाएां होय. ए चारित्रें उपरामश्रेणी तथा क्ष्पकश्रेणी ए बेहुश्रेणी न होय तथी आगलां गुएठाएां ए चारित्रें न होय. ए चारित्र क्षायोपरामिकनावें होय. एवं ठत्रीरा.

केवलज्ञान ने केवलद्दीन, ए बे ागेणा दारें (चर ा के ) वेलां बे ण गणां होय, एटले ए सयोगीने बीखं अयोगी ए बे ग्रणगणां होय, त्यांज केवलज्ञान अने केवलद्दीन होय. ए बेहु क्ष्यि नावें ज्ञानज्ञानवंतने नेदनयें पर्याया थिं नयें स्थतायें ज्ञानमागेणायें ग्रणगणां कह्यां. एवं आह तिज्ञ.

अविरति सम्यक्दि गुणवाणायी ांनीने बारमा क्षीणमोह पर्यतनां व ण वाणां १ तिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ विध् ान, ४ अविधद्दीन, ए चार ागे णायें होय केम के सम्यक्तने नावें मिण्यात्वादि त्रण णवाणें ज्ञान न हो य तथा अविधद्दीन िष्यात्वादि ण गुणवाणे सिद्धांतें ान्युं हे पण म्मीयंथने तें न मान्युं-तेथी त्यां पण नव गुणवाणां ां तथा सयोगी ने अ योगी ए वे गुणवाणे केवलज्ञान अने केवलद्दीन, ए वे होय. ते ांहे हा स्थि । सर्वज्ञान द्दीन आव्यां एवं बेंतालीश गिणा दारें गुणवाणां ह्यां ॥ २४ ॥

> अड वसिन वेअगि, खइए इक्कार मि तिगि देसे॥ सुहुमे रस । ए तेर,स जोग आहार सु । ए॥ १५॥

अर्थ—(अड उवसिम कें ) ाठ एठाएां औपराग्ति सम्यक्त्वें होय, (च उवे अगि के ) चार ग्रुएठाएां, वेद सम्यक्दि होनें होय, (सइए६ ।र के ) हा यिकसम्यक्त्वें अगीआर ग्रुएठाएां होय, (मिन्नतिगि के ) मिध्यात्व, ।स्वाद न ने मिश्र, ए त्रण तथा (देसे के ) देशविरति, (सुदुमे के ) सूच्यसंपराय ए वं पांच मार्गिएा, (स्साण के ) पोतपोताने ग्रुएस्थानकें होय अने (तेरस के ) तेर ग्रुएठाएां (जोग के ) योगनी त्रण ।र्गणा तथा (आहार के ) आहारमार्गणा अने (सुक्काए के ) ग्रुक्कलेक्यामार्गणा, एवं पांच मार्गणायें होय.

श्रविरतिषी मांमीने श्रगीश्रारमा ग्रणगणां लगें श्राव ग्रणगणां सुधीमां श्री पश्मिक सम्यक्त मार्गणा होय तेमांहे श्रविरति, देशविरति, प्रमत्त श्रने श्रप्रम त्त. ए चार ग्रण णां ग्रंथिनेद करतां देशविरति तथा सर्व विरति लहे, ते श्रपेक् यें लेवा. तथा श्रागलां चार ग्रणगणां जपशमश्रेणीयें होय. एवं तेंतालीश

अविरति, देशविरति, प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए चार गुणुगणां (वेदक के॰) हायोपशमिक सम्यक्त्वें होय अने आगले गुणुगणों श्रेणी करतां औपशमिक तथा हायिक सम्यक्त होय पण तिहां सम्यक्त मोहनीय वेदवाने अनावें वेदक सम्यक्त न होयः एवं चुम्मालीश मार्गणायें गुणुगणां कह्यां.

क्वाचि म्यक गिणायें विरति ठाणाधी मिने छ गेगी लगें गियार गुणगणां हो , हीं प्रथ नां एगणां न होय, जे नणी चोथे, पां मे, उहे ने सातमे, ए रिग्रणवाणे हो जेणे मोहनीयनी । कृति खपावी ने पूर्वे परनव । यु । ध्युं होय ते रहे. । जे दा क्र्य श्रेणी रे तो तेनी पेक्सयें गी । इस एगणा होय. हीं । तेइ पूर्व जे क ोहनीयना क्र्यी युं जे लश्र-दान, तेने म्यक के दीयें? त्रोत्तरं जे मिथ्या ना जल, ाद हि रहित शोध्या तंदूलनी पेरें । तेने सम्यक् मोहनीय हियें तेनी पेरें क्षयथी प्रगटचो जे दि । नो ६ श्रदान , जे । वां पमल इतारे ां खना पमल टे, ते ।। ते गटा, तेनी परें जे दार ग्रुण प्रगटे ते ने म्य हीयें ते पाम्या पढ़ी ए नव रे, जो पूर्वे देवायु नरा बांध्युं होय तो ए व रे ने प्या था तिर्था ांध्या पढी ए सम्य त्व लहे, ो जेऐं संख्याता वर्षायु युगलीया वांध्युं होय तेज जीव, म्य त्व जहे. पण जेणे सं ात वर्षायुनो बंध ो होय तो ते जीव पढी ा यिक सम्यक्त न लहे, तो ते पेकार्ये चार नव रे. यतः "तंमि तइ चग्छं, नवंमि तिष्नंति खइ सम्मने ॥ र निरय गिल गई, इं जिएकािल न राणं॥१॥" एवं पी ाली.

राणं ॥ १ ॥ " एवं पी ाली .

सिष्याल गिणायें पहेलुं िध्याल गुणनाणुं होय, । दिन गिणायें सा दिन णगणुं होय. िश्र गिणायें मिश्रगुणना होय, ए सिष्यालादि हि ने विषे । प आपणा नाम गुणनाणुं एके होय तथा देशविरति गिणायें पांच ण णुं होय तथा स् संपरायचारि गिणायें ए स् संपराय नामें द गुणनाणुं होय. एम ए पांच गिणा दारें (स्तन्नाण के०) पोत पोतानां नाम स रखुं एकेक गुणना जाणां. हीं । पण नेदनयें जीवड्व्यने िध्यालादिक पर्याय अनिन्न विविद्धने गुणना जाणां जाणां गिणा द्वारें जीवड्व्यने िध्यालादिक पर्याय अनिन्न विविद्धने गुणना जाणां जाणां स्वां सा त्यनयें सिध्याली चि सनोयोग, वचनयोग ने । यथोग, ए ण योगें सा त्यनयें सिध्याली चि हे तेर गुण णां लाने अने विशेषापेद्धायें तो एक सत्य, बी सत्यामृषा ए वें मनोयोगें अने एज वे वचनयोगें तेर गुंण णां होय अने वीजा नोयोगें तथा वचनयोगें जे चार योग थाय, ते चार योगें बार ण णां जाणवां. वारिति अकाययोगें रिध्याल, १ सास्वादन, ३ अविरति अने ४ सयोगी. ए चार गुण नाणां जाणवां तथा विक्रियकाययोगें प्रथमधी मांनीने सत्तमा लगें सात गुणना

णां जाणवां तथा वैत्रियि श्राययोगें ? मिथ्यात्व, १ सास्वादन, ३ अविरति, ४ देशविरति अने ५ प्र त्त. ए पांच गुणवाणां जाणवां. आहार ाययोगें प्र त्त अने अप्रमत्त, ए बे णवाणां जाणवां. आहार मिश्राययोगें ए ज प्रमत्त गुणवाणुं जाणवुं तथा मिण ाययोगें ए मिथ्यात्व, बीजुं सास्वादन, त्रीजुं अविरति, चोथुं सयोगी. ए चार गुणवाणां होय. एवं त्रेपन मार्गणा थई.

आहारीनी मार्गणायें पहेलां तेर गुणवाणां जाणवां. तथा शुक्कलेश्यामार्गणायें पण ए तेर गुणवाणां जाणवां. था चौदमे अयोगी गुणवाणे अणाहारी अलेशी होय. एवं प विन गिणादारें णवाणां ह्यां॥ १५॥

> असिन्नसु पढम डगं, पढम तिलेसासु च इसु सत्त ॥ पढमंतिम डग अजया, अणहारे मग्गणासु गुणा॥ ५६॥

अर्थ-( असि सुपढमड़गं के० ) असंज्ञीमार्गणायें प्रथमनां वे गुणवाणां हो य. (पढमित सेत सुवच के० ) पहेली व्हादिक त्रण लेखामार्गणायें व गुण वाणां जाणवां अने (इसुसत्त के० ) तेजो अने पद्म ए वे लेख्यायें सात गुण वाणां जाणवां. (पढमंतिम ग के०) प्रथमनां वे गुणवाणां अने अंतनां वे गुणवाणां, एवं चार तथा ( अजया के० ) अविरित गुणवाणुं, एवं पांच गुणवाणां ( अणहारे के० ) अणाहारकमार्गणायें जाणवां. ए ( मग्गणासु के० ) वाशह ार्गणा दारने विषे (गुणा के०) गुणवाणां विवरीने कह्यां॥ इत्यह्तरार्थः॥ १६॥

दीर्घकालिकी संज्ञारिहत एवो असंज्ञी जीव, तेमांहे मि॰यात्व अने साखाद न, ए प्रथमनां वे ग्रुणवाणां लाने, तेमध्यें साखादन तो एकेंडियादिक असंज्ञीआ जीवमध्यें सम्यक्ल वमतो देवतादिक अवतरे तेने करण अपर्याप्तावस्यायें सा खादन होय. शेंष सर्व मिण्याली जीव जाणवा एवं ढणन्न.

रुष्ण, नील, अने कापोत, ए प्रथमनी त्रण लेश्यावंत जीवने मिथ्यालथी प्रम त सुधी प्रथमनां उ गुणवाणां होय, ए गुणवाणे ए त्रण लेश्या पामीयें. वीज़ं वली देशविरतियें तथा सर्वविरतियें ए त्रण अग्रुद्दलेश्या न पामीयें ते मत लेइने वंधस्वामित्वमांहे ए त्रण लेश्यायें चार गुणवाणां कह्यां है. अंहीं आं तो पूर्वें देश विरति तथा सर्वविरति गुण पामीने ए लेश्यायें वर्ते तो पण ए वेहु गुणवाणां न जाय, माटें ए वे गुणवाणे रुष्मादिक त्रण अग्रुद्दलेश्या पण आवे. एम पूर्व प्रतिप न्ननी अपेक्सयें अहीं व गुणवाणां ं पण तेथी जपरांत एवाणां ए छेर्या वंतने न होय, तेथी अहीं आं ोइ विरोध न जाएवो. '' सम तसुओं सवा,सु जहइ सुदासु तिसुवचारित्तं॥पुवपिं जेपुण, अणयरी ए खेसाए"॥१॥ एवं जेगणशावः

तेजोजेश्या,तथा प जेश्या,ए वे जेश्यायें पहेला मिथ्यात्वथी मांमी सातमा अप्र मत्त ग्रणलगें साते ग्रणवाणां पूर्व प्रतिप ने तथा पिडवजताने पण होय, एवं एकशहः

ह्वे अनाहारक गिणायें गुणवाणां हे हे. मिच्यात्व अने साखादन, ए पहे लां वे ग्रणगणां तथा विरति, सम्यक्दिष्टि, ए त्रण ग्रणगणां अहींआंव गृति पांच समयनी रतां वचला त्रण स य अथवा चार स य, अणाहारी होय. तेनी अपेक्सयें पहेलां वे तथा चोथुं, ए त्रण एवाणां वाटें वहेतां जीव ध्यें पामी यें जे नणी यतः "नोएण स्सएणं, छाहारेई णंतरं जीवो ॥ तेण परं मीसेणं, जीवसरीरनिपत्ती ॥ १ ॥ " ते नणी वि हगतियें अणाहारीनां ए त्रण गुणवाणां जाणवां तथा केवली केवलसमुद्यात् ाव समयनो करे तेमध्यें त्रीजे, चोथे अने पांचमे, ए ए समयें कामेणयोगी नणी णा हारी होय. तथा अयोगीगुणवाणुं चौद ' 'अ इ उ क् लू " एवा पांच व्हल अहर उ रितां होय तेटलो काल अणाहारी होय अथवा अनादि अनंत सिद जीव तेने पण योगने अनावें अणाहारकपणुं होय बीजा सर्व जीव एक समयमात्र पण अणाहारी न होय. ए रीतें नाहार मार्गणार्थे एक मिण्यात्व, वीजुं सास्वादन, त्रीजुं विरति, चोछुं सयोगी अने पांच योगी ए पांच गुणवाणां संनवे. अहीं आं कोइ कहेरों के जीव बारमें, तेरमे अने त्रीजे, ए त्रण गुणवाणे मरे नहीं अने बीजा अगीआर गुणवाणे रण पामे तो त्यां वि यहगित करे, तो ते ग्रुणगणे केम णाहारी न होय? तत्रोत्तरं ए अगीआर गुणवाणे मरण पामे एम जे कहां हो, ते व्यवहारमतें कहां हो. बीजं मरणसमयें जीव अविरति होय जे नणी ते समय, परनवायुनो हे. विरति तो आ नवना आयु लगें हे. एम बाराहे मार्गणा दारें प्रत्येकें प्रत्येकें गुणहाणां विवरीने

हवे ते मार्गणास्थित जीवना गुणनुं तरतमपणुं योगजन्य हे. जे नणी छात करण करी कमेने विचित्रपणे जीवने गुणवाणानो नेद हे. तिहां (करण के॰) योग वीर्य जाणनुं. सुगम थाय, ते नणी गुणवाणां कह्यां. पही पन्नर योग वाश्वनमा गणा हारं जिहां जेटला संनवे, तिहां तेटला देखांडे हे.

## ॥ अय मार्गणासु योगानाह ॥

सच्चे अर मीस अस, च मोस मण वय वि वि आहारा॥ रतं मीसा कम्मण, इञ्जोगा कम्म अणहारे॥ २॥

्(स े के ०) सत् एट खे साधुने ृ हे ्ते सत्य ् वादि पदार्थ इव्यरूपें नित्य, पर्यायरूपें अनित्य. ए जे अनेकांतपर्णें चिंतववुं, नोयोग अने तेथी ( इअर के० ) विपरीत पर्णे एकांत पर्णे नित्यविश्व व्यापि इत्यादि चिंतवबुं, ते सत्यमनोयोग. तेमज साचा वचन अात्माने जोडवुं, ते सत्यवचनयोगं तथा असत्यवचनसाथें आत्मानुं जोडवुं, ते असत्य वचनयोग अने ते स योगें करी (मीस के ) मिश्र एट हो कांइएक स इएक सत्यपणे. जेम आ गाममध्यें दश जाया तथा दश वा. अहीं आं कांइ साचुं कांइ जूतुं चिंतवबुं. ते सत्यामृषामनोयोग ने तेम बोलबुं. ते सत्यामृषाव चनयोग. तथा आमंत्रणा याचना जेम के, हे देवदत्त ! आ अमुक वस्तु लाव्य, आ छे, इत्यादि जे चिंतवबुं, तेथी जिनवचन विरोधाय नहीं. माटें जूवपण नहीं अने आ राधक पण नहीं, एटंडे साचपण नहीं ते नणी (अस मोस के ) असत्यामृषाम नोयोग. अने ए रीतें बोले, ते असत्यामृषावचनयोगः ए व्यवहारनयमतें चार मनना तथा चार वचनना योग होय. अने निश्चयनयमतें जे सुद्परिणाम विव क्लापूर्व ते प्रथम सत्य, (मण कें ) नोयोग बीजो मिण्यात्वादिकें सहित जे चिंतवे, ते असत्यमनोयोग एमज (वय केण) ए वे प्रकारें जे बोल दुं ते एक सत्यवचनयोग अने बीजो असत्यवचनयोग, त्रीजो सत्यामृषावचनयोग, चोथो अ सत्यामृपावचनयोग. एवं चार मनना तथा चार वचनना मली आव योग थयाः

(विद्यवि के ०) वैक्रियश्रीरें करी आत्मानो वीर्यव्यापार ते वैक्रिययोग, ते वे नेदें हो. एक लब्धिजन्यमनुष्य तथा तिर्यंचने होय अने नवधारणीय देवता तथा नारकीनां शरीर जाणवां. तेनी साथें आत्मशक्तिन्नं जोडवुं ते वीजो वैक्रिययोग.

( आहारा के ॰ ) चौद पूर्वधरमुनि पोताना मनना संशय टालवाने तथा जिन क्रि देखवानें आहुं स्फिटिक सरखुं मुंढ हाथ प्रमाण शरीर करे, ते आहारकश रीर तेनी साथें आत्मानुं जोडवुं, आहारकशरीरजन्य व्यापार, ते आहारकयोग.

(जरलं के 0) खीदारिक शरीरने योगें जे जीवव्यापार ते खाँदारिकयोग जाएावो.

हवे ए ऐ योगने (मीसा के०) मिश्र रवा एटले पर्या विस्थायें म ष्य अने तिर्यचने भिण सार्थें मिश्र जे ौदारि पुजलजन्यव्यापार ते प्रथ अदारिक मिश्रयोग एएवो.

तथा देवता ने नारकीने पर्या स्थायें भिण थिं मिश्र जे वैत्रियपु जल अथवा नुष्यादि ने उत्तरवैत्रिय रतां ज्यां सुधी तेनी पर्यादि पूर्ण यद्द नथी, त्यां सुधी औदारि पुजलसाथें वैक्रियपुजलि श्र होय तेथी थयों जे जीववीर्यविशेष ते ीजो वैत्रियमिश्रयोग जाणवो.

तथा हारक शरीर रतां ज्यां सुधी तेनी पर्याहि पूरी री नथी त्यां सुधी आहारक पुजल औदारिकसाथें मिश्र होय त न्य जीववीर्यविशेष ते त्रीजो आ हारकमिश्रयोग जाणवो.तेम आहार रीरने संहरतां पण हार मिश्रयोग होयः

(कम्मण के०) कमेदलसाथें आत्मप्रदेश ं लबुं, ते ।म्मेणशरीर कहीयें। तेणे करी परनवादिकथी आगमनशक्ति ते चोथो ।मेणयोग. ए चार योग मिश्र ना तथा त्रण पूर्वें कह्या जे त्रण शरीरना, एवं सर्वे ली सात ।याना योग थया तथा चार मनना अने चार वचनना. एवं पंदर योग क ।

छहीं छां कोइ पूरुशे जे तैजस पण शरीर है, तेणे री पण विने तेजो छेश्या मू कवा जेवादिक नुं कर नुं तथा नोजन पाचनादिक व्यापारें प्रवर्चतो हतो तैजसप एो योग केम न कहाो ? तिहां उत्तर कहे हे के जीवने तैजसशरीर, छने कार्मण शरीर, सर्वदा होय. तेथी कार्मणयोगमां हेज ए जी धुं, ए नाव हे. (इंग्रजोगा केण) एम नामधी तथा स्वरूपथी ए पंदर योग कही.

ह्वे बाशह मार्गणादारें ए पंदर योग विवरे हे.

(कम्मञ्रणहारे के०) अनाहारीमार्गणायें एकज काम्मेणयोग होय. बीजा चाद योगें वर्ततो जीव, आहारी होय अने कामेणयोगें वर्ततो जीव अणा हारी होय तेम आहारी पण होय जे नणी प्रथम समयें कामेणयोगें हारी होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १९॥

नर गइ पणिदि तस तणु, अचकु नर नपु कसाय सम्मङ्गे॥ सिन्न वलेसा हारग, जब मइ सुअ विह ङ्गि सब्ने॥ १०॥ अर्थ-गतिमांहे (नरगइ के०) १ म प्यनी गति, इंड्यिमध्यें (पणिदि के०) १ पंचेंडिय,कायमध्यें (तस के०) ३ त्रसकाय,योगमध्यें (तणु के०) ४ काययोग, दर्री नमध्यें ( श्रचरकु के० ) ५ अचकुद्दीन, वेदमध्यें ( नर के० ) ६ पुरुषवेद, तथा (नपु के०) ७ नपुंसकवेद, (कसाय के०) कषायमध्यें कोधादिक चारे कषाय खेवा, एवं श्रगीश्चार मार्गणा धई. अने ( सम्मन्त्रणे के० ) सम्यक्त्यमार्गणामध्यें हायिक अने ह्वायोपश्चिक, ए वे सम्यक्त्यमार्गणा, एवं तेर. ( सिन्न के० ) १४ संज्ञीमा गेणा, ( बलेसा के० ) कष्णादिक वए लेक्या, एवं वीशः ( श्राह्वारग के० ) ११ श्राह्वारीमार्गणा, ( नव के० ) ११ नव्यमार्गणा, ज्ञानमार्गणामध्यें ( मइसुअर्व हिड्गि के० ) मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने श्रवधिज्ञान, ए त्रण मार्गणा अने दर्शन मार्गणामध्यें ड्रगशब्दें श्रवधिद्दीन, साथें लेवुंः तथी श्रवधिद्दीन मार्गणा एवं व वीश मार्गणादारें ( सबे के० ) सर्वे पंदरे योग संन्त्रवे, जे नणी मनुष्य पंचेंडि यने सर्वयोगनो संन्त्रव वे ते मारें.

अदीं आहारीमार्गणायें कोइएक आचार्य काम्मेणयोग मानता नथी, जे नणी ते "अकम्मगा आहारगेसु" एम पद कहे हे तो तेना मतें आहारक मार्गणायें एक कामेणयोग न होय, शेष चौद योगज होय पण ते केम घटे ? जे नणी क्रज्ञगतियें आवीने जीव, उपजवाने समयें कामेणयोगें आहार जीये हे बीजों कोइ योग तिहां नथी, ते अपेह्रायें काम्मेणयोग आहारी जीवने पण होय तथा नि अयनयें जे यहवा मांम्युं ते यहुं, तेणे औदारिक पुज्जआहारणसमयें औदारिकपुज्जिमार्थें होय. तक्जन्यशक्तिविशेष ते औदारिकिमिश्र कहीयें. ते यी प्रथमसमयें औदारिकिमिश्रयोगी आहारक होय पण कामेणयोगी न होय, एवं पण न घटे जे नणी प्रथमसमयें उपजतुं कार्यज, आपणुं कारणकेम होय ? जेम घडो उपजतो पोतानुं कारण न होय, तेम औदारिकिमिश्र उपजतोज पोतानुं कारण केम होय ? ते नणी जीव, प्रथम समयें काम्मेणयोगें आहार जेइ ते औदारिकपणे परिणमावे, तेवारें बीजे समयें औदारिकिमिश्रयोगी होय. ए वचन विरोध नथी जागतो. पढी तत्व केवजीगम्य.

तथा छहीं छां पण मनुष्यदिक छोदियक पर्यायमुख्यतायें ज्ञानादिक द्वायोप शिमकपर्याय छने द्वायिकसम्यक्तवें द्वायिकपर्याय तथा मनुष्यनवादिक पारिणा मिक पर्यायमुख्यतायें छनेदनयें जीवड्व्य विवद्यायोग,तिहां संनवे. ए गाथामां व वीश मार्गणाहारें योग कह्या छने एक हारें पूर्वेली गाथामां योग कह्या.ए सर्व स नावीश हार थयां।। इति समुच्यार्थः॥ १०॥

तिरि इहि अजय सासण, नाण वसम अजव मि सु॥ तेराहार डगूणा, ते उरलंडगूण सुर निरए॥ २ए॥

र्थ-(तिरि के०) १ तिर्थेचगति ार्गेणा, (इहि के०) १ विदेमार्ग णा, ( जय के०) ३ विरतिमार्गणा, (सासण के०) ध स्वादनमार्गणा, ( नाण के ०) त्रण अज्ञाननी ए । गेणा, एवं सात. ( ववस के ० ) ए ौपशमिक सम्यक ार्गणा, (अनव के०) ए अनव्यमार्गणा, (मिन्नेसु के०) १० मिथा त्वमार्गणा, एवं दश मार्गणा दारें वर्चतां जीवोनें विषे (तेराहार गूणा केण) पंदर योग मांहेथी आहार दि हीन करतां तेर योग होय. तिहां कामी एयोग, वाटें वहेतां वे नवने व जीवने होय तथा िने केंवल स द्घातमां पहेले त्रण समयें होय तथा औदारिक मिश्रयोग पर्याप्तावस्थायें होय. तथा औदारिकादिक अगीयारयोग पर्याप्तावस्थायें होय. तिहां वैत्रिय ने वैत्रियमिश्र, ए बेहु योग तिर्यंच उत्तरवैत्रिय रे, ते अपेक् यें कह्या हे. शेष आहारक अने छाहारकमिश्र, ए वे योग चारित्रने नावें चंडद पूर्वी विना न होय. केम के ते विना आहारकलिध पण न उपजे, तेथी ए बे योग न होय. तथा हीं आं स्त्रीवेद कह्यों ते इव्यथी खेवो. जे नणी हीं सर्वस्थानकें इव्यथीज वेदनी विव क्षा है, जो नाववेद कदीयें तो बार उपयोग जे कह्या है, ते मांहेला केवलकान अने केवलदरीन ए वे योग, नाववेदें केम संनवे ? जे नए। केवली वेदी है माटें केम संनवे ? तेनणी खहीं खां सर्वस्थानकें इव्यवेद कह्या हे, तथा चारित्र होय, पण तु हता गारवब हुलता दिक दोष जाणवा. तेथी निने चौद पूर्व नणवुं निषेध्युं हे, तेथी ते विना ए आहार अने । हारकमिश्र, ए वे योग, । हारकलिंध विना न होय, शेष तेर योग होय. तथा उपशमसम्यक्तवें पण श्रुष परिणाम हे,ते नणी आहारकलब्धिनुं प्रयुंजवुं नथी ानता,तेथी तेने योग वेहु न होय तथा वैक्रिययोग तो देवता तथा नारकी गंतीनेद करतो उप शम सम्यक्त लहे, ते वैक्रिययोगी होय.ए पेक्तायें अहीं लीधं तथा काम्मेण अने वैक्रियमिश्र, ए वे योग उपशमश्रेणीमांहे काल करे, ते अनुत्तर विमानवासी देव होय तो तेने मतें मतांतरें अपयीप्तावस्थायें उपशमसम्यक्त होय. एम मानतां ए वे योग संनवे. पण औदारिकमिश्रयोग क्यांहीं पण संनवतो नथी जे नणी उपश्म श्रेणीतुं उपशमसम्यक्त होय, तिहां मनुष्य अने तिर्थेचनुं अपर्याप्तपणुं न संनवे.

अने मनुष्य तथा तिर्थवने ग्रंथिजेंद पण अपयीप्तावस्थायें न संनवे था ते उपश सम्यक्त्वें मरे पण नहीं, के जेथी जे परनवनुं कहीयें अने केवली विना औदारिक मिश्रयोग अपयीप्तास्थायें जहोय तो उपशमसम्यक्त्वें औदारि मिश्रयोग केम लाजे? ए बहुश्रुतें विचारनुं तथा ते ग्रंथिजेंद करीने मनुष्य, उपश सम्यक्त पामे तेवारें कोइ एकने वैक्रियलिब्ध होय तेथी वैक्रियशरीर करतां औदारि मिश्र योग होय ने तेथी मनाय खरुं पण ते सिद्धांतमतें कह्यं ने, परंतु कर्मग्रंथने तें, नथी मा नता. माटें ए वात केवली गम्य ने अने पूर्वोक्त ए दश मार्गणामांथी शेष सा मार्ग णार्थे चारित्र नथी, तेथी त्यां तो खनावें आहारकयोग बन्ने नथी शेष तेर योग होय

(ते उरल ड्रगूण सुर निरए के ) ते पूर्वें कह्या जे तेर योग ते दिलां औदारिक शरीर देवता तथा नारकीने नथी होतां ते माटें औदारिक तथा औदारिक मिश्र, ए वे योग देव तथा नारकीनें न होय, शेष मनोयोग चार, वचनयोग चार, वे वि य ने वैक्रियमिश्र तथा कामण, ए अगीआर योग होय. ते मध्यें काम्मेणयोग प रनवथी आवतां देवता तथा नारकीमां हे उपजतां प्रथम समयलगें होय. तेवार पढी ज्यां लगें सर्व पर्याप्ति पूरी न करे, त्यां लगें वैक्रियमिश्र होय अने पर्याप्त थया पढी शेष नव योग संनवे. आहारकना वे योग तो तेउने चारित्र नथी, ते नणी न होय. एम ए वें द्वु गतिमार्गणायें अगीयार योग क । एवं सर्व मली उगणचालीश मार्गणा दारें योग कह्या ॥ इति सम्रच्चयार्थः ॥ १ए ॥

कम्मुरलङ्गं थावरि,ते सविन्धि ङग पंच इग पवणे॥ अ सिन्न चरिम वयजुङ्ग, ते विन्धि ङगूण चन विगले॥ ३०॥

श्रथ-(कम्मुरलड्डगंथाविर के०) थावर, एट हो गितथावर श्रहींश्रां तें जकाय पण गितथावरमध्यें गणीयें. जे नणी इंधनादिक संयोग विना ते जकाय, स्थानां तरें न जाय श्रने वायुकाय तो स्वशक्तियें योजनना शतबद जाय, माटें ते गित त्रस कहीयें. एट हो ए वायुकाय गितत्रस विना शेष एथ्वी, श्रप्, तें ज श्रने वनस्प ति, ए चार थावरकायने जपजतां एक कम्म एट हो कामेणयोग होय, वली एने श्रप्तीतावस्थायें जरलड्डगं एट हो श्रीदारिकिमश्रयोग होय श्रनें पर्याता थया पठी एक श्रीदारिकयोग होय. एम चार मार्गणा दारें एक श्रीदारिक, वीजो श्रीदारिकिमश्र श्रने त्रीजो काम्मण ए त्रण योग होय,

(ते के०) ते पूर्वोक्त त्रण योगने (सविडिबिड्ग के०) एक वैक्रिय छने वीज्ञं

वैक्रियमिश्र, ए बे योगें सिहत करीयें तेवारें (पंच के o) पांच योग रहे ते (१ गपवणे के o) एकेंडिय अने वायु ।यनेविषे होय, ते ध्यें ।म्मेण अने औदारि किमश्र, ए बे योग वायु ।यने पर्याप्तावस्थायें होय, तथां औदारि योग तो मूल शरीरनी अपेक्तायें होय तथा ।दरवायुकाय, ध्वजाने आ। रिं उत्तरवित्र यह पकरें, तिहां एक वैक्रिय अने बीजो वित्र यिमश्र, ए बे योग होयः एवं वायुनें पांच योग होयः ते वायरो एकेंडिय हो, तेथी ए एकेंडिय ।र्गणायें पण एहिज पांच योग संन्वे.

( वश्यसिन के ० ) संज्ञीमार्गणा एटले मनरहित जीवने विषे व योग होया ते श्रावी रीतें के, पूर्वे हेला पां योगनी साथें (चिर के ०) वेल्लो (वय श्र के ०) वचनयोग एटले श्रसत्यामृषावचनयोगें युक्त रियें, तेवारें व योग वा ाय सिंह त श्रसंज्ञी वे माटें होय. के के सत्यामृषा ए योग बेंडियादि जीव पण सं ज्ञी वे तेनें पण होय ते श्रपेक्तायें लीधं तथा एमीण श्रने श्रीदारिक मिश्र, ए वे श्रप्यात्रावस्थायें होया श्रीवार्य श्रीदारि पर्याप्तावस्थायें होया तथा विक्रयना वे योग वायुकायने होया एम व योग, नरहित जीवनें होया

(ते के०) ते पूर्वी उ योगमांहेची (विजिविज्याण के०) वैति य अने वैकि यिमिश्र, ए बे योग ए। रतां बाकीना (चन के०) चार योग, (विगन्ने के०) विकर्ने जियमें होय एटने बेंडिय, तेंडिय ने चौरिंडिय, ए त्रणने विकर्नेंडिय कहींयें जेने पूर्ण इंडिय तथा योग न होय. तेनें विकर्नेंडिय कहींयें. तेने वैति यनिन्ध न होय तेथी वे वैक्रिययोग न होय शेष चार योग होय, तेमध्यें कामिण अने औदारिकमिश्र, ए वे योग अपयीप्तावस्थायें होय अने औदारिक तथा असत्या बावचन, ए वे योग पर्याप्तावस्थायें होय एमं चारे योग वे इंडियादिक ए ार्गणादारें होय. एवं जैगणपचाश मार्गणाने विषे योग ह्या ॥ इति स चयार्थः ॥ ३०॥

कम्मुरलमीस विणु मण, वय समइच्य ढेच्य च ु मण नाणे॥ उरल इग कम्म पढमं, तिम मण वय केवल इगंमि॥ ३१॥

श्रथि—(कम्म के०) एक काम्मीण अने बीजो ( उरलमीस विणु के०) श्रीहा रिकमिश्र, ए वे योग विना शेष तेर योग उ मार्गणाना दारने विषे होय. ते व मार्गणानां नाम कहे हे. (मण के०) एक मनयोगी, (वय के०) बीजो वचनयोगी, (समइश्र के०) त्रीजो सामायिक चारित्री है, (हेश्र के०) चोषो हे दोपस्थापनीय चारित्री है, (चिक्र के०) पांचमो चहुदर्शनी, (मणनाणे के०)

विशे नःपर्यवज्ञानी, ए गिणा द्वारने विषे मिण योग न होयः जे नणी मिण योग परनवधी छा ं वाटें होयः तिहां तो जीवने ए नोयोगादि न होय छने केवलस द्घा करतां वच्चें ए स यें मिणयोग होय तिहां पण न ने वच , ए वे गेग होय था दिहां चारि तो यथाख्या होय पण सा ।य छने वेदोपस्थ नीय, ए वे न होय ने दर्शन पण तिहां केवल दर्शन होय पण चहुदर्शन होयः ने नःपर्यवज्ञान पण न होय तेथी ए गिणा दारें वर्तता ।वि, मिणयोगी न होय तेमज औदारि मिश्रयोगी पण होय होष नोयोग चार, वचनयोग चार, वैत्रिय, वेत्रियि भ्र, हार , । हार मिश्र छोदारि , ए तेर योग होयः एवं पंचावन ।गिणा धई.

( उरल ग के o ) औदारि ने औदारि मिश्र ए बे योग तथा । जो ( अने वेहेझो ए बे नयोग तथा एज बे वचनयोग एटखे सत्यमनोयोग, अस त्यामृषामनोयोग, सत्यवचनयोग, असत्या षावचनयोग एवं ए चार योग तथा पूर्वला त्रण मलीने सात योग ते (केवल गंमि के०) केवलकान अने केवल देशीन, ए बे ार्गणादारें होय तिहां वेदनीयादि मेथी आयुःकमे घोडुं होय, तेवारें तेने सरखुं रवाने अर्थें केवली केवलस द्वात रे त्यां प्रथम समयें श रीर प्रमाण जामी एवो उंचो, नीचो, लोक प्रमाणे मंम रे, त्यां औदारिक योगी होय. बीजे समयें बन्ने पासें प रे, तिहां लोका ईवचें पाटप्राय होय. तिहां एक छौदारि छने बीजो मिश्र ए बे योगी होय त्रीजे समयें वे योग लब्धि प्रयुं जे तेथी मंथाणानी पेरें चार श्रेणी करे. चोथे समयें आंतरा पूरे, पांचमे समयें मंथांतर संहरे, ए त्रण समय कामेणयोगी होय, उंछे समयें मंथ संहरे, सात मे समयें कपाट संहरे, ए बे समय छोदारिकमिश्रयोग होय. छातमे मंम संह रे तिहां श्रीदारिक योगी होय ए रीतें त्रण काययोग नाववा तथा श्रवुत्तरवि मानवासी देवता संदेह पूछे, तेनो प्रत्युत्तररूप इव्यरूप मन परिणमे तेवारें ते देवताने सूद्धा मनोड्व विषय करे. एवं अवधिकान हे, तेएो करी ते मनोड्व जाएो, संदेह टले, एम इव्यमनोयोग केवलीने होय. अने नावमन केवलीने न होय छने वचनयोग तो उपदेशादिक छापतां प्रश्नोत्तर कहेतां होय. ए रीतें सात योग केवलकानी अने केवलदरीनीनें होय. एवं सत्तावन मार्गणादार थयां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३१ ॥

मणवय नरला परिहा, र सुहुमि नव ते मीसि सवि वा॥ देसे सवि विङगा, सकम्मुरल मीस छाहखाए ॥ ३२॥

श्रिष्ट (मणवय के०) नोयोग चार, ने वचनयोग चार, ( उरला के०) श्रीदारिक काययोग एक, एवं ( नव के०) नव योग ते ( परिहार के०) परिहार वि किचारित्र श्राने ( सुद्धुर्मि के०) सूद्धासंपरायचारि ने विषे लाजे. शेष व योग न होय जे जणी ए वे चारि ने विषे वर्त्तमान साधु होय ते लब्ध प्रयुंजे नहीं, तेथी वैक्रियना वे योग श्राने श्राहार ना वे योग. ए चार योग न लाजे केम के परिहारविद्यु क्विचारित्रवालाने उत्कृष्टुं श्रुत नव पूर्व पर्यंत होय ने । हारक शरीर तो चौद पूर्वी विना न होय. वली वैक्रियलब्धि प्रयुंजवानी ए चारित्रं श्राहा नथी तथा श्रपर्याप्तावस्थायें कामण श्राने श्रीदारि मिश्रयोग होय, तिहां चारित्र न होय श्राने केवलसमुद्धातमध्यें तो यथाख्यात चारित्र होय तेथी स द्धात मिश्र तो यथाख्यातचारित्रं होय तेथी ते समुद्धातनी श्रपेक्शयें पण ए वे योग ए चारित्रं न संज्वे शेष नव योग लाजे. एवं उगणशाठ मार्गणा हारें योग कहा।

(ते उमीसिसविज्ञा के ) ते हीज पूर्वो नव योगने वैक्तिययोग सहित करी यें तेवारें दश योग थाय, ते सम्यक्त मार्गणामध्यें एक मिश्रसमिकतमार्गणायें होय तिहां वैक्तिययोग देवता तथा नारकीने मिश्रगुणवाणुं होय तेने वैक्तिययोग होय तथा मिश्रं काल न करे, तेथी अपर्याप्तावस्थायें मिश्र न होय, तेथी वैक्तिय मिश्र योग न कह्यो तथा वैक्तिय करवा समयें मिश्रलिध न होय थवा बीजे करें। कारणों वैक्तियमिश्रयोग नथी कार्म ने बेंद्र आहारकयोग तो बे चारित्र नथी के नणी न होय तथा मिश्रगुण णे जीव अपर्याप्ता न होय, तेथी औदारिकें मिश्रकाम्मेण योग पण न होय। एवं शाव मार्गणाहारें योग कह्या।

(देसेसविचिष्ठिमा के०) देशविरितमार्गणायें प्रथम कहेला नव योगने वैकिय तथा वैकियमिश्र, ए वे योगें सिहत किरयें तेवारें अगीआर योग होय, तिहां विकिय अने विकियमिश्र ए वे योगें लिब्ध प्रयुंजे हे. ए अपेक्षायें लीधा केम के देशविरित अंवडादिकें लिब्ध प्रयुंजी हे माटें अगीआर योग होय, शेष चार योग न होय. एवं एक ग्रन्थ मार्गणा दारें योग कह्या.

(सकम्मुरलमीसश्रह्खाए के॰) ते पूर्वीक्त चार मनना श्रने चार वचनना, एवं श्राव योग तथा नवमो श्रीदारिककाययोग, तेने कामण श्रने श्रीदारिक मि छने सम्यक्दि देवादि र गिणा ध्यें , ए द्रीन, एवं लाने. ए स यें जीवने ए उपयोग हो . ए ए उघ हिं ।॥ इति यार्थः॥३३॥ तस जोख्य वेख्यसु ।, हार नर पणिंदि सिन निव से ॥ नयणे खरपण लेसा, कसाय दस केवल गूणा॥ ३४॥

(नयऐअर के॰) चकुद्दीन ने इतर एट खे चुद्दीन, (पण खेसा के॰) क्षा केंच्या तो प्रथम कही है बाकी छादि पांच खेच्या, (कसाय के॰) चार के पाय. एवं अगीआर मार्गणादारें (द केंचल गूणा के॰) केंचलकान ने केंचल द्दीन हीन करतां बाकी दश उपयोग पामीयें, जे नणी ए अगीआर बोखें केंचलकान अने केंचलद्दीन न होंच. अहीं प्रथमनी खेच्या त्रण हला गुणहाणा सुधी होंच अने पाहली वे खेच्या सातमा गुणहाणा लगें होंच अने कषाय दशमा गुणहाणां लगें होंच, तथा चु अने अचकु, ए बे बारमा गुणहाणां लगें होंच. पण तेरमे गुणहाणे ए अगीआर मार्गणामांहेलों कोंइ नथी अने केंचलिक तो तेरमे गुणहाणें होंच ते नणी ए बे उपयोग न होंच॥ इति समुच्चयार्थः॥३॥।

च । वित स्थाप हिंच ना । वित स्थापि स्थापि । वित स्थापि स्थापि । वित स

श्रथे—( चर्डारेंदि के० ) र चौरिंड्यिमार्गणा, ( श्रसिन के०) १ असंझीमा गेणा, ए वे मार्गणा दारें ( इश्रनाण के० ) मतिश्रज्ञान श्रने श्रुतश्रज्ञान तथा ( इंग के०) चहुदरीन श्रने श्रचहुदरीन, एवं चार उपयोग होय. केम के एने च दरीनपण मिश्र लेवां,एवं व उपयोग मिश्र । गिणायें पामीयें ॥ इति स चयार्थः॥ इ ६॥ मण नाण चकु वङ्गा, अणहारे तिन्नि दंस च नाण ॥ च नाण संजमो वस,म वेअगे नेहि दंसे आ॥ ३९॥

अर्थ-(मणनाणचरकुव ा के०) मनःपर्यवज्ञान अने चुद्दीन, ए बे व ीने होप दश उपयोग, (अणहारे के०) अनाहारकमार्गणायें पामीयें, जे नणी अणा हारकपणुं वियहगतियें तथा केवलसमुद्घातमांहे तथा सिक्ने होय. तिहां मनःपर्यवज्ञान अने चहुद्दीन ए बे न होय. अहींआं त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन सिह्त तीर्थंकरादिक अवतरे, तेमने अंतरालगतें अनाहारकपणुं होय तथा त्रण अज्ञान तो, मिण्याली वियहगतियें उपजे तेने होय, ते पेक्लायें जाणवा. एटले सिक्ना तथा केवलसमुद्घातनां केवल ज्ञान अने केवलद्दीन, ए बे उपयोग तथा समकेतधारीने अंतरालगतें मितज्ञान, श्रुतज्ञान अने विजंगज्ञान, ए त्रण उपयोग अने मिण्यालीने मितअङ्गान, श्रुतअङ्गान अने विजंगङ्गान, ए त्रण एवं व. अने सम्यक्लधारीने तथा मिण्यालीने वाटें जातां अचङ्कद्दीन अने अविदिद्दीन, ए वे होय. एवं सर्व मली दश उपयोग पामीयें.

(तिन्नदंसच्छनाण के०) १ चकुद्दीन, १ अचकुद्दीन, ३ अवधिद्दीन, ४ मित्रान, ५ अत्रान, ६ अवधिङ्गान, १ मनःपर्यवङ्गानः एवं सात छपयोग, ते अग्यारमार्गणा हारें होय तेनां नाम कहे हो. (चछनाण के०) केवल ङ्गान विना चार ङ्गान मार्गणा हार तथा (संजम के०) चार संयममार्गणा एटले एक सामायक चारित्र, बीजुं हेदोपस्थापनीयचारित्र, त्रीजुं परिहारविद्यहिचारित्र, अने चोधुं सूद्रा संपरायचारित्र, ए चार मार्गणा. एवं आत मार्गणा हार तथा ( छवसम के०) नवमी छपद्यामसम्यक्त मार्गणा (वेअगे के०) दश्मं वेदक एटले ङ्गायोपद्यमिक सम्यक्त. ए वे सम्यक्तमार्गणा (वेह्दंसेअ के०) अगीआरमी अवधिद्दीन मार्गणा. एवं अगीआर मार्गणा हारने विषे चार ङ्गान अने त्रण द्दीन, ए सात छप योग पामीयं अर्दाआं अवधिद्दीन मार्गणाने विषे मित अङ्गानादिक त्रण अङ्गान निक्त सम्मत हे पण कहा कारणे पूर्वाचार्यें निपेथ्यां ते नथी जणातां ? अन्यथा दश उपयोग होय. अर्दीआं योगमार्गणा हारें मतांतर देखाडे हे॥ इति समुच्चार्थः॥

द्वे त्रण योग मार्गणाने विषे जीवस्थान, गुणस्थान, योग अने जपयोग धाश्रयीन मतांनर कहे हे. पूर्वे योग विवद्या ते अन्ययोग सिंहत अथवा उपयोग रिंहत एम सामान्यें कह्या इहां अन्य योगांतरनाविनी नूतवत् उपचारन्यायेन मुख्यतारिहत योगें ख मुख्यतायें र जीवस्थान, १ग्रणस्थान, ३योग, ४ उपयोग, ए चार बोल विवरी कहे हे.

दो तेर तेर वारस, मणे कमा उप इ च च छ वयणे॥ च छ इ पण तिन्नि काए, जिञ्जगुण जोगोव छ ॥ ३०॥

श्रथे— त्यां वचनयोग श्रने काययोग रिहत केवल एकज मनयोगने विषे सं की पंचेंडिय पर्याप्तो श्रने श्रपर्याप्तो, ए (दो के०) वे जीवजेद होय श्रने एने चीदमा ग्रणताणा वगर बीजा (तेर के०) तेर ग्रणताणां होय तथा एने काम्मेण श्रने श्रोदारिकमिश्र ए वे योग विना बीजा (तेर के०) तेर योग होय जे नणी के वलसमुद्धातावस्थायें प्रयोजनने श्रनावें त्यां मनोयोग न होय. तथा उपजतां श्रपर्यातावस्थायें पण मनोयोग न होय श्रने काम्मेण तथा श्रोदारिक मिश्र तो तिहांज होय. ए माटें ए वे योग मनोयोगीने न होय श्रने ए मनयोगीनेविषे उपयोग (वारस के०) बार (कमा के०) श्रवुक्रमें (मणे के०) मनयोगीने विषे पामीयें.

वचनयोगीने एट के मनोयोग रहित काययोग रहित केवल एकज वचन योगने विषे १ वेंडिय, १ तेंडिय, ३ चौरिंड्य, ४ असंज्ञी पंचेंडिय, ए चार पर्याप्ता अने एज चार अपर्याप्ता एवं (अठ के०) आत जीव नेद होय, अहीं आ योग्यतारूपं वचनयोग लेवो अन्यया वेंडिय अपर्याप्तावस्थायें नापाप यीति पूरी कह्या विना वचनयोगी केम होय? तथा तिहां एक मिध्याल अने बीजं सास्तादन. ए (इ के०) वे ग्रुणताणां पामीयें. केम के ए आत जीवनेदें वे ग्रुणताणांज होय. तेथी वे ग्रुणताणां कह्यां तथा एने विषे १ औदारिक, १ औ दारिकिमअ. ३ काम्मीण. ४ असल्यामृपा, एवं (चच के०) चार योग पामीयें. अने १ मित्यकान. १ श्रुतश्रद्धान. ३ चकुदर्ज्ञीन, ४ अचकुद्दीन, ए (चच के०) चार चपयोग (वयगो के०) वचनयोगीन विषे पामीयें.

तथा मनोयोग श्रने यचनयोग ए वे योगें रहित केवल एकज काययोगिनें विषे एकेंडिय सब्ध श्रने बाहर ते बली पर्यामा श्रने श्रपर्यामा नेहें करी (व / च के०) चार जीवनंद पामीयें, केम के केवल काययोग एनेज होय श्रने (म / च क्या नामाहन, ए ( घ के०) व गुणवाणां प्रविद्यादिकमांहे सम्पन्त / चमतो हेवादिक श्रयनरे, ने मापेद्यायें होय, तथा ? श्रीहारिक, १ श्रीहारिकनि

श्र ३ वैत्रिय, ४ वैत्रियि श्र, ५ काम्मेण, एवं (पण के०) पांच योग पा विं आहीं आं वैत्रियशरीर वायु ायनी पेक् गयें लीधुं. तथा १ ति अङ्गान, १ श्रु त अङ्गान, ३ च ुदरीन. ए (तिर्हिके०) त्रण छपयोग ( ए के०) एक ज काययोगने विषे पामीयें.

काययोगने विषे पामीयें.

ए रीतें मतांतरें योग गिणायें जीवजेद ग्रुणगणां, योग ने जपयोग, ए चार बोल खन्य । चार्य हे छे. ते ह्याः एटले पूर्वे जे योग ह्या तिहां ।य योग सर्व जीवने कह्यो. ने वचनयोग बेंडियादि वेने ह्यो ने नोयोग संज्ञी पंचेंडियने कह्यो. ने हींख्यां तांतरें नेरा । चार्य हे छे. जे ए योग होय तेनें बीजो योग न हीयें. संज्ञीपंचेंडियने नयोग छे. तेने वचनयोग, का ययोग नहीं. विकलेंडिय खने खसंज्ञी पंचेडियने वचनयोगज हेवो. ने एकेंडि यने काययोग कहीयें. तेने तें ए वात ही छे॥ इति स यार्थः॥ ३०॥ हवे मार्गणा दारें छ लेक्या हे छे. जे नणी । गिणास्थित जीवनी जपयोग दिं होक्या छिंदें करी जणाय तथा नयोग प्रवृत्तिपण न जपयोगें जायः छन्योग प्रवृत्तिपण न जपयोगें जायः छन्योग प्रवृत्तिपण न जपयोगें जायः छन्योग प्रवृत्तिपण न जपयोगें जायः

वसु लेसासु स । एं, एगिदि असिन जूद्गवणेसु ॥ पढमा च रो तिन्नि , नारय विगलग्गि पवणेसु ॥ ३ए॥

श्रूष-( उसुलेसासु के० ) उ लेक्या ।गिणा दारें ( सठाणं के० ) स्रस्थान ते श्रूप श्रापणी एकेकी लेक्या होय एटले क लेक्यामार्गणायें क लेक्या ने नील लेक्यामार्गणायें नीललेक्या होय एम स्वस्व मार्गणायें स्वस्व लेक्या एकेकी होय ( एगिंदि के० ) एक एकेंडियमार्गणा, ( श्रुसन्नि के० ) बीजी श्रुसंझीमार्गणा ( त्रू दगवणेसु के० ) त्रीजी प्रथवीकायमार्गणा, चोथी श्रुप्कायमार्गणा, पांचमी वन स्पतिकायमार्गणा. ए पांच मार्गणा दारने विषे ( पढमाच चरो के० ) प्रथमनी चा र लेक्या होय एटले रुप्ण, नील, कापोत श्रुने तेजो ए चार लेक्या पामीयें. ं त्रण लेक्या सहेजें होय श्रुने चोथी तेजोलेक्या तो प्रथिवी, श्रुप् श्रुने वनस्प तिमांहे सौधमें ईशान देवलोकना देवता चवीने श्रुवतरे जे जणी ते देवता पो ताना जवनी लेक्या श्रेप होय, तेनी साथें चवे तेथी एकेंडियादिक मध्यें तेजो लेक्या पामीयें. ( तिन्निच के० ) रुप्ण, नील श्रुने कापोत, ए त्रण लेक्या श्रुम प रिणामें होय. ते ( नारय के० ) नरकगितमार्गणा तथा ( विगलिंग के० ) विक

बेंडियनी त्रण मार्गणा अने पांचमी अविकायमार्गणा तथा (पवणेसु के०) वहीं वायुकायमार्गणा, ए व मार्गणा दारें ए प्रमथनी त्रण खेर्या दोयः ए व ए मार्गणा स्थित जीव अग्रुन अध्यवसाय स्थानकें वर्तें वे ते नणी एने ए अग्रुन केया त्र ए दोय शेष त्रण ग्रुन खेर्या न दोय ॥ ३ए॥

> अहरवाय सुहुम केवल, इगि सुक्का ग्रावि सेस । ऐसु॥ नर निरय देव तिरिआ, घोवा इ असंखणंत गुणा॥ ४०॥

श्रथ—(श्रह्णाय के०) यथाख्यात चारित्र श्रने (सुहुम के०) सुक्कासंपरा य चारित्र, (केवलड्डिंग के०) केवलड्डान श्रने केवलद्दीन. एवं चार मार्गणादा रें (सुक्का के०) एक श्रक्कांक्र्या होय जे नणी श्रतिविद्युद अध्यवसायस्थानकें ए वर्ते, ते नणी एने श्रेप पांच लेक्या न होय श्रने ( ग्राविसेसनाणेसु के०) शे प एकतालीश मार्गणादारें उ ए लेक्या पामीयें, ते एकतालीश मार्गणानां नाम कहे हे. देव, मनुष्य श्रने तिर्यच ए त्रण गितमार्गणा तथा एक पंचेंडियमार्गणा तथा त्रण योगनी त्रण मार्गणा, एक त्रसकाय मार्गणा त्रण वेदनी त्रण मार्गणा, चार कषायनी चार मार्गणा, एवं पंदर. सात ज्ञाननी सातमार्गणा, पांच संयम नी पांच मार्गणा, त्रण दर्शननी त्रण मार्गणा, एवं त्रीश नव्य तथा श्रनव्यमार्गणा. उ सम्यक्तनी उ मार्गणा, संज्ञीमार्गणा, श्राहारकमार्गणा श्रने श्रनाहार कमार्गणा. एवं एकतालीश मार्गणायें उ ए लेक्या होय श्रहींशां जो पण श्र नव्यादिकने श्रशुद परिणाम निण श्रगुद लेक्या कहीयें. तो पण व्यवहारें श्रन योग प्रवृत्तियें करी जेनग्रद्भव्य क्रियायें करी नवमार्थवेयक सुधी पदोचे ते न णि एने पण श्रक्षांक्या कहीयें.

ह्वे ए छेज्यावंतादिक जीव चोद मार्गणादारें विचारतां कया जीव कया जीवनी अपेक्षायें योडा तया घणा अयवा तुल होय? एवा शिष्यनो संगय टालवा निमि न नवमुं अल्प बहुत्व दार कह हो. ते कहेतां यकां इत्यप्रमाणादिक दार पण सुग म याय, ने जिल एकेक मार्गणायें अल्प बहुत्व कह हो.

त्यां प्रथम गतिमार्गणांवें सर्वजीवथी (नर के ०) मनुष्य गतिना जीव (योवा के ०) थोडा जाणवाः त्यां गर्नज मनुष्यनी नंख्याना चंगणत्रीय त्यांक जावीयं वेवें. उ.००२. २०.१.६२.७१.॥२.८.॥७.३७.५७.७.७॥५॥ ए०.३३६.एटता त्याक्ती नंख्यांवें गर्भज मनुष्य जाणवा ध्यने चन्क्रप्रपद् तेथी यानंख्याना नंसृद्धिम होव. केम के मनु ष्य वे प्रकारना छे.एक गर्न्नज अने बीजा संमूर्णि ,ते । संमूर्णि ते गर्न्नज मनुष्यना मलमूत्र हा , शोणीत, मांस, परू, कलेवर प्रमुख अपवित्र चौद स्थानकादिक थी उपजे तेने कहीयें, ते संमूर्णि यद्यपि असंख्याता छे तथापि ते अध्रुव छे जे नणी तेनुं आयु अंतरमूहूर्न होय तथा देखाय नहीं ने तेने उपजवानो वि रहकाल जयन्यथी एक समय तथा उत्कृष्टथी चोवीश मुहूर्न छे, तेथी ते केवारें होय अने केवारें निर्लेप पण थाय. एटले न पण होय ने गर्न्नजनो विरह तो नज होय ते गर्न्नज तो सदैव होयज, ते वली ते संख्याताज होय पण संख्यातान होय-त्यां संख्याताना संख्याता चेद छे.माटे ते मनुष्य केटला छे.तेनुं प्रहूपण करे छे.

कोइएकराशि, तेदिजराशि साथें गणीयें तेने वर्ग कदीयें. त्यां एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग चार थाय, ए प्रथम वर्ग. अने चारनो वर्ग शोल, ए बीजो वर्ग, शोलनो वर्ग बरो नें उपन्न, ए त्रीजो वर्ग एनो वर्ग पांशत इजार, पांचरो ने वत्रीश याय. ए चोथो वर्ग. ४ १०४०६ ७ १०६ ए पांचमो वर्ग. १ ०४४६ ७४४० १३ उण्एपप्रदर्द ए वहां वर्ग. ते पांचमा वर्ग साथें गुणीयें, तेवारें पूर्वीक्त आंक पाय. तेयांकनी संख्या सात कोडाकोडी कोडाकोडी,बाएं जाख कोडाकोडी कोडी,यहावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एकशो कोडाकोडी कोडी, बाशह कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, वेंतालीश हजार कोडाकोडी, उर्शे कोडाकोडी, तेंतालीश कोडा कोडी, साडत्रीरा लाख कोडी, र्गणशाव हजार कोडी, त्रणर्शे कोडी, चोपन कोडी अ ने उपर उंगणचालीश लाख, पञ्चाश ह्जार, त्रणशे ने बत्रीश थया। अथवा एकने बत्र वार वाणां बमणां करीयें तो पण एटजीज राशि थाय. ए पन्नवणामां कह्यं वे. एटजा जधन्यपर्दें गर्भज मनुष्य होय अने जेवारें संमूर्श्विम होय ते साथें गणीयें तेवारें उत्कृष्टपर्दे असंख्याता होयः असंख्याती उत्सार्थिणी अने अवसर्थिणीना जेट ला समय थाय, एटले क्त्रथकी सातराज प्रमाण घनीकत लोकनी एक प्रदेश नी श्रेणी ते श्रेणीना अंगुल प्रमाण देत्रने विषे जेटला आकाशप्रदेश होय, तेतुं प्रथमवर्गमूल त्रीजा वर्गमूलना प्रदेश साथें गुणीयें,ते गुणतां जेटला प्रदेश थाय, तेटला प्रदेशनुं एकेक खंसुक कल्पीयें. अहीं आं अंगुलप्रमाण सूचीक्त्रने विषे आ कागप्रदेग श्रसंख्याता हे. पण असत्कल्पनायें बद्दोनें हप्पन कल्पीयें तेनुं पहेलुं वर्गमृत शोल थाय, अने वीजं वर्गमूल चार थाय, त्रीजं वर्गमूल वे थाय ए त्रीजं वर्गमूल, पहेला वर्गमूल साथें गुणतां वत्रीश थया एटला प्रदेशनुं खंमुक पयुं एवा एकेका खंतुकें एकेक मनुष्य अपहरतां जो एक मनुष्य छिषको

होत,तो स य एकंश्रेणी अपहरात्, एटला उत्क पर्दे संमूर्जिम तथा गर्भज म लोने मनुष्य थाय, ते मार्टे नारकी प्रमुख सर्वे थकी मनुष्य थोडा जाणवा.

ते मनुष्यकी (निरय के०) नारकगितना जीव असंख्यातगुणा अधिक हो य, ालयकी असंख्याती उत्सिष्णि अवसिष्णिना जेटला समय थाय, तेटला नारकी है. क्षेत्रयकी प्रतरने असंख्यातमे नागें असंख्याती अणीना जेटला आ कागप्रदेश थाय तेटला है. ते केवी रीतें तोके अंगुजप्रमाण प्रतर क्षेत्रनेविषे जे टली आकाशप्रदेशनी अणी होय, तेना वर्गमूल असंख्याता उहे. त्यां पहेलुं व ग्रीमूल बीजा वर्गमूलसायें ग्रणीयें यथा असत्कल्पनायें अग्रज प्रमाण प्रतरने विषे वशे ने उप्पन अणी है. तेनुं पहेलुं वर्गमूल शोल, वीजुं चार ते शोलने चा रें ग्रणतां चोशत थाय. ते अणी असंख्याती जाणवी. एटली अणीनी पहोलप ऐ सूची अहीं आं ग्रहण करवी एटली अणीमांहे जेटला आकाशप्रदेश होय तेट ला नारकी है. ते माटें मनुष्य थकी असंख्यात ग्रणा होय.

ते नारकीयकी (देव के०) देवता छसंख्यातग्रणा होया ते केवी रीतें? तोके छंगुलमात्र क्त्रना प्रदेशनुं पहेलुं वर्गमूल तेने छसंख्यातमे नागं जेटली प्रदेश निश्रेणी, तेना जेटला छाकाशप्रदेश होय तेटला तो छसुरकुमार देवता ने तेटला वली नागकुमार देवता ने यावत् तेटला स्तितकुमार देवता ने तथा संख्या त योजन प्रमाण छाकाशप्रदेशनी सूचीहप जेटले खंगुकें करी एकेक व्यंतर छपहरीयें तो घनीकृत लोकनो मांमाने छाकारें समय प्रतर छपहराय. तेटला व्यंतर देवता ने तथा वशेने नण्यन छंगुल प्रमाण छाकाशप्रदेशनी सूचीहप जे टले खंगुकें करी एकेक ज्योतिपी छपहरीयें, तो घनीकृतलोकनो समय प्रतर छपहराय. तेटला खंगुकें करी एकेक ज्योतिपी छपहरीयें, तो घनीकृतलोकनो समय प्रतर छपहराय. तेटला ज्योतिपी देवता ने तथा एक छंगुलमात्र कृत्रना प्रदेशनं त्रीजं वर्गमूल तेनुं घन करीयें तथा बीजुं वर्गमूल त्रीजा वर्गमृलनायें गुणीयें. तेटली घनीकृतलोकनी एक प्रदेशनी श्रेणीना जेटला प्रदेश होया तटला देवा निक देवता ने. एम सर्व नवनपति. व्यंतर. ज्योतिपी. छने विमानिर व्यंता मलीने नारकीयकी छसंख्यातगुणा ने. ए रीतें (इत्रसंया रे०) मनुष्यक्ती मानिने वर्गना के ए सर्व नवनपति. व्यंतर. उत्रसंया रेण ) मनुष्यक्ती नारकीयकी छसंख्यातगुणा ने. ए रीतें (इत्रसंया रेण) मनुष्यक्ती नारकीयकी देवता. एवे छसंस्थातगुणा उत्रसमें एक वीजाकी जाणका

ते देवताथकी (तिरिया के॰) निर्धेच. (यणंतगुणा के॰। सनंतगुणा हे. केमके ते तिर्धेचमां दे वनस्पतिना जीयः निगोरिया ने सनंता हे. ए पन्यमं ष्य वे प्रकारना वे एक गर्भज अने बीजा संमूर्जिम, ते ां संमूर्जि ते गर्भज म ष्यना मलमूत्र हु , शोणीत, मांस, परू, कलेवर प्रमुख अपवित्र चौद स्थानकादिक थी उपने तेने कहीयें, ते संमूर्श्विम यद्यपि असंख्याता हे तथापि ते अधुव हे जे नणी तेनुं आयु अंतरमूहूर्त ें होय तथा देखाय नहीं ने तेने जपजवानो वि रह्काल ज्ञान्यथी एक समय तथा ज्रुक्टिथी चोवीश दूर्न हे, तेथी ते केवारें होय अने केवारें निर्लिप पण थाय. एटले न पण होय ने गर्भजनो विरह तो नज होय ते गर्झज तो सदैव होयज, ते वली ते संख्याताज होय पण असंख्याता न होय त्यां संख्याताना संख्याता चेद हे. माटे ते मनुष्य केटला हे.ते 'प्ररूपण करेहे. कोइएकराशि, तेहिजराशि साथें गणीयें तेने वर्ग कहीयें. ं एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग चार थाय, ए प्रथम वर्ग. अने चारनो वर्ग शोल, ए बीजो वर्ग, शोलनो वर्ग बहो नें उपन्न, ए त्रीजो वर्ग एनो वर्ग पांशत हजार, पांचहो ने वत्रीश थाय. ए चोथो वर्ग. ४ १०४०६ ७ १०६ ए पांचमो वर्ग. १ ०४४६ ७४४ ० ९३ उण्एप्युद्द ए उठो वर्ग. ते पांचमा वर्ग साथें गुणीयें, तेवारें पूर्वीक्त आंक पाय. तेयांकनी संख्या सात कोडाकोडी कोडाकोडी,बाएं लाख कोडाकोडी कोडी,अष्ठावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एकशो कोडाकोडी कोडी, बाशह कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, वेंतालीश हजार कोडाकोडी, उशें कोडाकोडी, तेंतालीश कोडा कोडी. साडत्रीश लाख कोडी, उंगणशाव हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी अ ने उपर उंगणचालीश लाख, पञ्चाश हजार, त्रणशे ने बत्रीश यया. अथवा एकने वर्ष वार गणां बमणां करीयें तो पण एटलीज राशि थाय ए पन्नवणामां कह्यं हे .एटला जघन्यपर्दे गर्भज मनुष्य होय अने जेवारें संमूर्तिम होय ते सार्थे गणीयें तेवारें उत्रुपदं असंख्याता होय. असंख्याती उत्सार्पिणी अने अवसर्पिणीना जेट ला समय याय, एटले क्त्रियकी सातराज प्रमाण घनीकत लोकनी एक प्रदेश नी श्रेणी ते श्रेणीना अंग्रल प्रमाण क्त्रने विषे जेटला आकाशप्रदेश होय, तेवुं प्यमवर्गसूल त्रीजा वर्गसूलना प्रदेश साथें गुणीयें,ते गुणतां जेटला प्रदेश थाय, तेटला प्रदेशनुं एकेक खंदुक कल्पीयें. अहीं आं अंगुलप्रमाण सूची हेत्रने विषे आ कागप्रदेश असंख्याता हे. पण असत्कल्पनायं बहोनें हप्पन कल्पीयें तेतुं पहें छं त्रीजं वर्गमृल, पहेला वर्गमृल साथें ग्रणतां वत्रीश थया एटला प्रदेश छं खं हुक पयुं एवा एकेका खंमुकें एकेक मनुष्य छपहरतां जो एक मनुष्य छिका

होत,तो स य ए श्रेणी अपहरात्, एटला उत्क पर्दे संमूर्श्विम तथा गर्नेज म लोने मनुष्य थाय, ते मार्टे नारकी प्रमुख सर्व थकी मनुष्य थोडा जाएवा.

ते मनुष्यकी (निरय के०) नारकगितना जीव असंख्यातगुणा अधिक हो य, ालयकी असंख्याती उत्सार्णिणी अवसर्णिणीना जेटला समय याय, तेटला नारकी है. क्षेत्रयकी प्रतरने असंख्यातमें नागें असंख्याती अणीना जेटला आ काशप्रदेश याय तेटला हो. ते केवी रीतें तोके अंगुलप्रमाण प्रतर क्षेत्रनेविषे जे टली आकाशप्रदेशनी अणी होय, तेना वर्गमूल असंख्याता उहे. त्यां पहेलुं व ग्रीमूल बीजा वर्गमूलसाथं ग्रणीयें यथा असत्कल्पनायें अग्रुल प्रमाण प्रतरने विषे वशे ने हण्यन अणी हो. तेनुं पहेलुं वर्गमूल शोल, बीजुं चार ते शोलने चा रें ग्रुणतां चोशह याय. ते अणी असंख्याती जाणवी. एटली अणीनी पहोलप णे सूची अहींआं यहण करवी एटली अणीमांहे जेटला आकाशप्रदेश होय तेट ला नारकी हो. ते माटें मनुष्य यकी असंख्यात ग्रुणा होय.

ते नारकीयकी (देव के०) देवता असंख्यातग्रणा होयः ते केवी रीतें? तोके अंग्रलमात्र क्वित्रना प्रदेशनुं पहेलुं वर्गमूल तेने असंख्यातमे नागें जेटली प्रदेश निश्रेणी, तेना जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला तो असुरकुमार देवता ने तेटला वली नागकुमार देवता ने यावत् तेटला स्तितकुमार देवता ने तथा संख्या त योजन प्रमाण आकाशप्रदेशनी स्विह्मण जेटले खंकुकें करी एकेक व्यंतर अपहरीयें तो घनीकृत लोकनो मांमाने आकारें समय प्रतर अपहराय. तेटला व्यंतर देवता ने तथा वशेने नणन अंग्रल प्रमाण आकाशप्रदेशनी स्वीहण जे टले खंकुकें करी एकेक ज्योतिणी अपहरीयें, तो घनीकृतलोकनो समय प्रतर अपहराय. तेटला ज्योतिणी अपहरीयें, तो घनीकृतलोकनो समय प्रतर अपहराय. तेटला ज्योतिणी अपहरीयें, तो घनीकृतलोकनो समय प्रतर अपहराय. तेटला ज्योतिणी देवता ने तथा एक अंगुजमात्र क्विता प्रवानं त्रीजं वर्गमूल तेनुं घन करीयें तथा वीजुं वर्गमूल त्रीजा वर्गमृलनायें गुणीयं. तेटली घनीकृतलोकनी एक प्रदेशनी अणीना जेटला प्रदेश दोय. तेटला वमा निक देवता ने. एम सर्व नवनपति. व्यंतर. ज्योतिणी. अने वमानिक देवता ने एम सर्व नवनपति. व्यंतर. ज्योतिणी. अने वमानिक देवता ने एम सर्व नवनपति. व्यंतर. ज्योतिणी. अने वमानिक देवता ने एम सर्व नवनपति. व्यंतर. ज्योतिणी. अने वमानिक देवता कि०) मनुष्यवर्ध। नारकी अने नारकीयकी देवता. ए वे असंख्यातगुणा अनुक्रमें एक वीजायी जाणवा.

ते देवतायकी (तिरिद्या के०) निर्धेच. (त्रणंतगुणा के०) स्नतंतगुणा ने. गमके ते निर्धेचमां हे वनस्पतिना जीयः निर्गोहिस्या ते स्नतंत्रा ने. ए सनुक्रमें अहीं असंख्याताना असंख्याता नेद्वे. अने अनंताना नंता नेद्वे माटे उ क्तिवरोध जाणवो नहीं. ए गति अल्पबहुत्व कद्यं. इति स यार्थः॥

पण चन ति इ एगिदी, योवा तिन्नि अहिआ अणंत गुणा ॥ तस योव असंखग्गी, नू जलानिल अहिअ अणंता॥ ४१॥

श्रथ— बीजी इंड्यिमार्गणामध्यें सर्वथी (थोवा के ) थोडा (पण के ) पंचेंडिय जीव, जे जणी सातराज प्रमाण घनीकृत लोकनी ए प्रदेशनी सूची श्रेणीना श्रमंख्येय योजन कोडाकोडी प्रमाण तेना जेटला श्राकाश प्रदेशराश तेटला पंचेंडिय जीव हे ते थकी कांड्एक श्रिधका जिहां सुधी बमणा न होय त्यां सुधी विशेपाधिक कहीयें. तेटला (चं के ) चौरिंडिय जीव, ते थकी विशेषाधिक (ति के ) तेंडिय जीव, ते थकी विशेषाधिक (इं के ) बेंडिय जीव. ए रीतें चौरिंडिय, तेंडिय श्रमें वेंडिय, ए (तिन्न के ) त्रण जीवराशि (श्रहिश्या के ) श्रमुक्तमें एक वीजाथी श्रिधका श्रिधका जाणवा श्रमें ते बेंडिय, जीवथकी (एगिंदी के ) एकेंडिय जीव, (श्रणंतग्रणा के ) श्रमंतग्रणा जाणवा. जे जणी एकेंडियमां हे वनस्पतिकाय श्रावे, तेमध्यें निगोदीश्रा जीव पण श्रावी गया माटें ते सर्व त्रस्थी श्रमंतग्रणा होय. ए बीजी इंड्यमार्गणायें श्रव्यबहुत्व विचाखुं.

ह्वे त्रीजी कायमार्गणामध्यें (तसयोव के०) सर्वथी थोडा त्रस कायिश्रा जीव जे नणी घनीकत लोकनी असंख्ययोजन कोटा कोटी प्रमाणनी प्रदेश रा शिप्रमाण त्रस जीवने ते थकी (असंख्या के०) अप्रमा जीव असंख्यात गुणा ने केमके असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण ने ते माटे तथा तथी (नूजलानिल अहिश्र के०) प्रथवीकाविश्रा जीव विशेपाधिक ने ते थकी अप्काविश्रा जीव, विशेपाधिक ने ते थकी अनील एटले वायुकाविश्रा जीव विशेपाधिक ने ए चार कायना जीव ने प्रमाण सूत्रने विषे असंख्यात लोकाकाशप्रदेश प्रमाण अविशेपाधिक ने ए चार कायना जीव ने प्रमाण सूत्रने विषे असंख्यात लोकाकाशप्रदेश प्रमाण अविशेपाधिक ने एण असंख्याताना असंख्याता चेद ने तेमाटें अव्यवहुल घटे ने ते थकी वजी वनस्पति कायना जीव (अणंता के०) अनंतग्रणा जाणवा, जे न प्रा निगोदीश्रा जीव अनंता ने माटें ए त्रीजी कायमार्गणायें अव्यवहुल क प्रं ॥ इति ममुच्चार्थः ॥ ४१ ॥

मण वयण काय जोगी, योवा असंखगुणा अणंतगुणा ॥ पुरिमा योवा इही, संखगुणा अणंतगुण कीवा ॥ ४५॥ थ- दवे चोथी योग गिणामध्यें सर्व थकी (मण के०) मनोयोगी जीव (योवा के०) थोडा जाणवा जे नणी संक्षी पंचेंड्य जीव मनोयोगी होय, ते सर्वथी स्तो हे. ते थकी (वयण के०) वचनयोगी जीव, (असंख्युणा के०) असंख्यातगुणा जाणवा जे नणी बेंड्य, तेंड्य, चौरिंड्य, असंक्षी पंचेंड्य, अने संक्षीपंचेंड्य ए पांच जीवराशि सहु वचनयोगीहे तेथी असंख्याता हे. ते मा हैं ते नेस्तां असंख्यातगुणा होय तेथकी (कायजोगी के०) काययोगी जीवा, (अणंतगुणा के०) अनंतगुणा हो जे नणी एकेंड्य निगोदादिकना अनंता जीव पण काय योगी हे. साटें ए चोथी योगमार्गणायें अल्पवहुत्व कहां.

हवे पांचमी वेदमार्गणामध्यें (पुरिसायोवा के ) सर्व यकी पुरुपवेदी जीव यो डा जाणवा तेयकी (इज्ञी के ) स्त्रीवेदी जीव, (संखगुणा के ) संख्यातगुणाधिक जाणवा जे नणी देवतायकी देवी बत्रीश रूपें अधिक वत्रीश गुणी अधिकी हो य अने मनुष्यथकी मनुष्यणी सत्तावीशरूपें अधिक सत्तावीश गुणी जाणवी. अन तिर्थेच पुरुपयकी तिर्थेचणी स्त्री त्रिगुणी त्रण रूपें अधिक होच ए रीतें स्त्री पुरुप य की संख्यात गुणी अधिक जाणवी तेयकी (कीवा के ) क्रित्र एटले नपुंसकवेदी जीव, (अणंतगुण के ) अनंतगुणा जाणवा. जेनणी एकेंड्य. विकलेंड्य, तथा संमूर्विम मनुष्य अने तिर्थेच तथा नारकी, ए सर्व नपुंसकवेदी ने. तेमांह एकेंड्यमां पण वनस्पतिना जीव अनंता ने. माटें अनंतगुणा कह्या. ए पांचमी वेदमार्गणायें अध्यवहुल कह्यं ॥ इति समुच्यार्थः॥ ४०॥

माणी कोही माई, लोजी छाहिछ मणनाणिणो योवा ॥ इहि छसंखा मइ सुछ, छाहिछ सम छसंख विजंगा॥ ४३॥

श्रयं-विश्व कपायमार्गणामध्यें सर्वथकी स्तोक (माणी कें ०) मानी जीव जाण वा. जे जाणी कोधादिक परिणमन कालयकी मानपरिणमन काल को ने ने जाणी मानी जीव स्तोक जाणवा. तेथकी (कोई कि कि मां) देश नेमार्गणाचे कि श्र के ०) विजेपाधिक ने, ज जाणी मानपरिणमन कालयकी कोधारिणमन कालयकी कोधारिणमन कालयकी कोधारिणमन कालयकी माटें. तेथकी वली (माई के ०) मार्था जीव विजेपाधिक ने जाणी वणा कालपर्यंत माया बहुज दोच माटें. नेथकी (जोजी के ०) जोजी के ०) जोजी के ०) जोजी के ०) जोजी करणायमार्गणाचे प्रक्ष बहुन्य कर्यं.

सातमी क्वामागिणा ध्यें (मणनाणिणोथोवा के ०) सर्व ो नःपर्यवक्वानी जा णवाः जे नणी सर्वथकी थोडा गर्मज नुष्य तेमांहें पण चारित्रया थोडाः वली चारित्रयामांहे पण छप्र त थोडा तेमांहे पण क्विप्राप्त मनःपर्यवक्वानी स्तोक जाणवाः तेथकी वली (उद्दि के ०) अवधिक्वानी जीव (असंखा के ०) असंख्यगुणा जे नणी मनुष्यथी पण सम्यक्दृष्टि देवता नारकी असंख्यात गुणा हे. तेनें तो अवधिक्वान हे. ते अवधिक्वानीयी एक (मइ के ०) मित्रज्ञानी बीजा (सुअ के ०) श्रुतक्वानी, ए वेडु (अद्विअ के ०) विशेषाधिक जाणवाः जे नणी देवताः,नारकी, सम्यक्दृष्टिने मत्या दिक त्रण क्वान होय अने मनुष्य तथा तिर्यच सम्यक्दृष्टिने मति तथा श्रुत, ए बे क्वान होय अने अवधि क्वान होय तथी विशेषाधिक कह्या अने मित तथा श्रुत, ए वेडु मांहोमांहे (सम के ०) सरखा जाणवाः केम के, ए बेडु सांथेज होय माटेंः तथकी (असंखविनंगा के ०) विजंगक्वानी जीव, असंख्यातगुणा जाणवाः जे नणी सम्यक्टृष्टि देवता तथा नारकीयी मिष्यात्वी देवता तथा नारकी असंख्यात गुणा हे ते सर्वने विजंगक्वान होय ते नणी मित्र, श्रुत ए बेडु थी विजंगक्वानी असंख्यातगुणा जाणवाः ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४३॥

केवलीणोणंतगुणा, मइ सुख्य खन्नाणिणंतगुण तुल्ला ॥ सुहुमा घोवा परिहा, र संख खहखाय संखगुणा॥ ४४॥

यथं—ते विनंगज्ञानीयकी (केवलीणोणंतग्रणा के०) केवलज्ञानी जीव खनंतग्रणा जाणवा. जे नणी सिद्धना जीव, केवलज्ञानी हे ते देव तथा नारकीयी खनंतग्रणा हे. ते केवलज्ञानीयी वली (मइसुख्रख्रद्याणिणंतग्रण के०) मित्रख्रज्ञानी खने श्रुत ख्रज्ञानी जीव खनंतग्रणा हे जे नणी सिद्ध्यकी पण निगोदिख्रा जीव खनंतग्रणा हे, ते सहुने मित्रख्रज्ञान तथा श्रुत ख्रज्ञान हे. तेथी छने ए वेहु मां होमांहे (तुल्ला के०) वरावर सरखाहे केम के जेने मित्रख्रज्ञान हे तेने श्रुत ख्रज्ञान पण हे तेथी ए वेहु मांहोमांहे सरखा हे जिहां मित्र तिहां श्रुत होय, मित्रपूर्वक श्रुत हो मिय्याली नणी ख्रज्ञान कहीयें. ए सातमी ज्ञानमार्गणायें ख्रव्यबद्धल कहीं स्वे ख्राहमी संयममार्गणामध्यें (सुहुमाथोवा के०) स्क्र्यसंपरायचारित्रिया जीव सर्वयकी घोडा हे. जे नणी ते चल्क्ष्या तो एक समयें शतप्रयक्त पामीयं प्रयक्त एटले वे यी मांमीने नव पर्यंत संज्ञा जाणवी. तेथी (परिहारसंख के०) पित्रापित्रया संख्यात ग्रुणा होय. जे नणी ते चल्क्ष्या एक समयें सहस्र

प्रथम्ल होय,मार्टे शो थकी सहस ते दशगुणा घया तेथकी वली (अह्खायसंखगुण के॰) यथाख्यातचारित्रिया संख्यातगुणा होय, जे नणी ते कोटी प्रथम्ल उ है। होय हो सहसयी कोटी दश सहस्र ग्रणी होय॥ इतिसमुचयार्थः ।।४४॥ वेद्या समइत्य संखा, देस इप्रसंखगुणऽणंतगुण इजया॥ योव इप्रसंख इणंता, डिह नयण केवल इप्रचक् ॥ ४५॥

थै—तेथकी (छेआ के॰) छेदोपस्थापनीय चारित्रिया संख्यातगुणा जाण वा जे नणी ते शतकोटी प्रथक्त जाने माटें तेथकी वर्जी (समइय के॰) सामायिक चारित्रिया (संखा के॰) संख्यातगुणा जाणवा. केम के ते सहस्रकोटी प्रथक्त जल्हण होय ते वास्ते तथा ते सामायिकचारित्रियाथी वर्जी (देस के॰) देशविरति जीव, (असंखगुण के॰) अख्यातगुणा जाणवा. जे नणी असंख्या ता तिर्थेचने देशविरतिपणुं होय तेनणी असंख्यगुणा कह्या तेथकी वर्जी (अ जया के॰) अविरतिजीव, (अणंतगुण के॰) अनंतगुणा जाणवा जे नणी प्रथमना चार गुणवाणें वर्तता जीव सर्व अविरति छे तेमध्यें निगोदीआ जीव अनंता मिष्याली ते सर्व अविरति छे ते नणी अनंता कह्या. ए आवमी संयम मार्गणायें अव्यवद्वत कह्यं.

द्वे नवमी द्रीनमार्गणायें चार द्रीनमांहे ( उहि के० ) छवधिद्रीन जीव ( योव के० ) सर्वथी स्तोक जे नणी देवतादिक छवधिङ्ञानीने छवधिद्रीन होयः माटें. तेथकी वली ( नयण के० ) चहुद्रीनी जीव, ( छसंख के० ) छतंख्यातग्र णा होय जे नणी चौरिंड्यादिकने तथा मनुष्य, तियंच, पंचेंड्यने छने मिथ्यात्वी देवादिकने पण चहुद्रीन होय तेमाटें तथा तथकी ( छणंता के० ) वे छनंता कहेवा. एटले तथकी ( केवल के० ) केवलद्रीनी जीव छनंतगुणा जाणवा जे नणी सिद्दना जीवोने केवल द्रीन हे. छने ते जीवो त्रसथकी छनंतगुणा हो तथकी ( छचकू के० ) छचहुद्रीनी जीव. छनंतगुणा जाणवा जे नणी एकेंड् यादिकने पण छचहुद्रीन हे. ते छपेहायें लेवा ए नवमी द्रीनमार्गणायें छ स्पबहुत्व कर्षु ॥ इति समुज्ञ्यार्थः॥ ४५ ॥

पन्नाणु पुविलेसा. थोवा दोऽ संखणंत दोछिहिछा ॥ छत्ति छर योवऽणंता, सामण श्रोबोबममसंखा ॥ ४६॥ अर्थ- द्वे (प्राण्पृष्विजेता के०) दशमी जेरवामार्गणापं पश्चानुपूर्व एटजे शुक्क लेरयाथी मांमीने कृष्णलेरया लगें अल्प बहुत्व लेवुं. ते देखाडे हे. (थोवा केण) सर्व स्तोक ग्रुक्क छेरयाना जीव के के लांत घं है। ांमीने अनुत्तर विमानवासी देवता तथा अकर्मनूमिना मनुष्य अने तिर्येच तथा कोइ एक संख्यातायुवाला मनु प्य तथा तिर्यचने शुक्कें होया होया तेमाटें सर्वधकी घोडा कह्या. तेथकी प लेक्यायें वर्तता जीव, असंख्यातग्रणा जाणवा. जे नणी लांतकादि त्कुमार, माहेंइ, ब्रह्मदेवलोकना देवता, असंख्यातग्रुणा हे तेने पद्मक्षेत्रया होय ते नणी. तेयकी तेजोजेरयाना जीव, असंख्यात गुणा जाणवा. जे नणी सौधर्म, ई शानना देवता तेथकी असंख्यातग्रणा है माटें. ए (दोऽसंखग्रणा के०) बे स्थान कें असंख्यात गुणा खेवा. अने केटली एक प्रतिमांहे ए बे राशिना जीव संख्यातगुणा अधिक लखेला हे ते सुक्तायें विचारी जोवुं तेथी कापोत लेश्याना जीव, ( अणंत के •) अनंतग्रणा जाणवा • जे नणी निगोदी आ जीवने पण कापोत के इया होय तेथकी ( दोछिहिछा के ॰ ) वे स्थानकें विशेषाधिक कहेवा एटले कापोतलेक्या थकी नी लंबेज्याना जीव, विशेपाधिक जाणवा. जे नणी नीलंबेज्यावंत नारकी प्रमुख तेमांहे घालीयें, तेवारें विशेपाधिक थाय. तेथकी कसालेश्याना जीव, विशेषाधिक. के म के घणा जीवने रुसखेरया हे यद्यपि निगोदी आ जीवमां त्रणे खेरयाहे तथापि खां क्सलेग्याना जीव अधिक हे तेमाटें ए दशमी लेश्यामार्गणायें अल्पबहुत कहां.

हवे (अनविश्वरयोवणंता के०) अगीआरमी नव्यमार्गणामध्यें अनव्यस्तो क जे नणी अनव्यजीव जवन्ययुक्त चोथे अनंते हे. ते नणी तेयकी इतर जे नव्य जीव ते अनंतगुणा जाणवा. जेनणी अनंतकार्जे पण तेनो अंत नहीं आवे एटला नव्य जीवो है, जोपण सदा मुक्तिमार्ग वहेज है तोपण कोइवारें नव्यजी वयकी शून्य लोक यशे नहीं. ए नव्यमार्गणायें अल्पबद्धल कहां.

हवे वारमी सम्यक्तमार्गणामध्यें (सासणयोवा के०) सास्वादनी जीव, सर्व यकी म्लोक केम के ए गुणवाणे उपशमसम्यक्त्वयी पडतां कोइएक जीव होय ते न णी. तथकी (उवसमसंखा के०) श्रोपशमिक सम्यक्टिए जीव, संख्यात गुणा जाण वा. जे नणी केटला एक न पण पडे,तेनी श्रपेक्तायें जाणवा॥ इति समुच्चयार्थः॥ ४६॥

मीसा संखा वेच्यग, असंख गुण खड्च मित्र ड छणंता॥ सिन्न छर योवणंता, छणहार योवेच्यर छसंखा ॥ ४५॥ यर्थ- ते छापगमिक सम्यक्टिप्यी (मीसासंखा के०) मिश्रदृष्टि जीव संख्या तगुणा जाणवा. केम के सम्यक्तवयकी पण जीव, मिश्रें छावे छने मिण्यादृष्टि जीव पण मिश्रें छावे ते वास्ते. इवे ते मिश्रदृष्टियकी (वेछम के०) क्वायोपश्चिक सम्यक्दृष्टि जीव, (छसंखगुण के०) छसंख्यातगुणा हे. जे नणी तेनो स्थितका ज छसंख्यातगुणो हे केम के उत्कृष्ट हाश्विष्ठ सागरोपम जाजेरा वेदकसम्यक्वें जीव रहे हे. ते छपेक्वायें कह्या ते थकी (खइछमिन्नड्छणंता के०) एक क्वाय कसम्यक्त्वी तथा वोजा मिण्यादृष्टि, ए वे छनुक्रमें एक वीजाधी छनंतगुणा के हेवा, एटजे क्वायोपश्चिकथकी क्वायिक सम्यक्टृष्टि जीव, छनंतगुणा हे. जे नणी सिक्ता जीव छनंतगुणा हे. तेने ए सम्यक्त्व हे ते छपेक्वायें कह्या ते थकी मिण्यात्वी जीव छनंतगुणा हे. जे नणी निगोदीछा जीव सिक्यी पण छनंतगुणा हे. ते सर्व मिण्यात्वी होत ए सम्यक्त्वमार्गणायें छन्प वहुत्व कह्यं.

हवे (सिन्न अर्थोवणंता के॰) संज्ञी असंज्ञीमार्गणामांहे संज्ञीया जीव थोडा जे नणी गर्नज मनुष्य, तिर्थेच. देवता अने नारकी ए जीव सिन्नया ने ते धकी इतर जे अमिन्या एकेंड्यादिक जीव ने, ते अनंतगुणा निगोदीया जीवनी अपेक्स यें ने. ए तेरमी सिन्नमार्गणायें अल्पवहुत्व कहां.

ह्वे (अणहारथोवेश्वरश्चसंखा के ) श्राहारक मार्गणायं श्राहारी श्रने श्रणाहारी जीवमांहे श्रणाहारी जीव स्तोक जे नणी विश्वह्गतियं वर्तता त्रण समय लगं जीव श्रणाहारी होय, तथा सिद्धना जीव श्रणाहारी हो. ते श्रपे हायं कह्या तथा ते थकी श्राहारी जीव श्रसंख्यातग्रणा जाणवा. जे नणी जो पण श्रनंता जीव हे तो पण श्रामुः स्थित श्रसंख्यात समयनी होय तिहां एकक समयोत्पन्न जीव श्रनंता होय तथापि श्रसंख्यसमयोत्पन्न नणी श्रसंख्यातग्रणा कह्या जो पण सिद्धना जीव श्र नंता श्रणाहारी हे तो पण निगोदीश्राना श्र्नंता श्रागल सिद्धनुं श्रनंतुं को इ ले खामां नथी तथी श्रसंख्यातग्रणा होय ए चाद मार्गणायं श्रह्मवहुत्व कह्या। १ ग्रा

ह्वे चीड गुणस्थानकें जीवस्थानादिक दश बीज विचारे हे, ज नणी मार्ग णास्थितजीव गुणस्थानकशृत्य न होय तेथी विशेषादेशें मार्गणाने गुणहाणे जीवनेदादिक वश बोज कहे हे. निहां प्रथम गुणहाणाने विषे जीवनेद कहे हे.

॥ अध गुणस्यानेषु जीवनेदानाह॥ सर जिञ्जवाण मित्ने, सग सासणि पण अपङ सिन्न एगं॥ सम्मे सन्नी इविद्योः सेसेस् सिन्न पङ्गां॥ ४६॥ श्रर्थ—(सविज्ञवाणिमं के के ) तिहां प्रथम मिण्यालगुणवाणे एकें ियादि क चौदे जीवनेद सर्व पामीयें. केम के सर्व जीवनेदें मिण्यालीपणुं अवस्य होय ते नणी अने (सासणि के ) बीजे साखादनगुणवाणे (सग के ) सात जीवस्थान क पामीयें. तेनां नाम कहं हे. एकें िय बादर, बें िय, तें िय, चौरिं िय अने असं क्षी पंचें िय. ए (पण्यपक्त के ) पांच करण्यप्याप्ता अने सिन्न पंचें िय पर्या मो तथा अपर्याप्तो, ए (सिन्न हुगं के ) वे जेद सिन्न आना. एवं सात होय. एटले ए कें ियादिकमध्यें सम्यक्त वमतो जीव अवतरे, तेथी अपर्याप्तावस्थायें साखादन गुणवाणुं होय अने संक्षी पर्याप्ताने यंथिनेद्यी पहतां साखादन होय. तथा (सम्मे सिन्न हित के ) चोथे अविरति सम्यक्त ष्टि गुणवाणे सिन्न पर्याप्तो तथा अपर्याप्ता सो एवे चेद होय केम के सम्यक्त सित आवी अवतरे. ते संक्षि करणपर्याप्तो होय ए पूर्वोक्त त्रण गुणवाणायी (सेसेस के ) शेष र ं जे अगीआर गुणवाणां तेने विषे (सिन्न पो के ) सिन्नपर्याप्तानो एकज चेद होय ॥ ४०॥ हवे चौद गुणवाणे योग कहे हे.

॥ अय गुण ाणेषु योगानाह ॥ मित्र इगि अजइ जोगा,हार इगूणा अपुव पणगे ॥ मण वय उरल सविउवि, मीसी सविउवि इग देसे ॥ ४ए॥

श्रये—( मिन्नड्रिंग के॰) मिष्याल श्रने सास्तादन, ए वे ग्रणगणा श्रने त्रीं ( श्रज्ञ के॰) श्रविरतिसम्यक्दृष्टि ए त्रण ग्रणगणे (जोगाहारङ्गूणा के॰) श्रा हारक श्रने श्राहारकमिश्र ए वे योग न होय. बीजा तेर योग होय. तिहां का मिण श्रने श्रादारिकमिश्र ए वे योग, श्रपर्यावस्थायें मनुष्य तथा तिर्धेचने होय ने विक्रयमिश्र ए एक योग, देवता नारकीने श्रपर्याप्तावस्थायें होय श्रेप मनना चार, वचनना चार, श्रादारिक श्रने वैक्रिय, ए दश योग, पर्याप्तावस्थायें होय श्रे ने चारित्र ए त्रण ग्रणगणे नथी ते नणी श्राहारकिक न होय.

तथा (श्रप्रवपणगेष्ठ के०) श्रप्नविद्य पांच गुणवाणां एटले श्रप्नविकरण, वादरनंपराय, स्वासंपराय, उपशांतमोह श्रने क्षीणमोह, ए पांच गुणवाणे (मण के०) मनना चार योग, तथा (वय के०) वचनना चार योग श्रने (जरल के०) श्रोदानिक ए नव योग पामीयं ए श्रप्नविद्य पांच गुणवाणे श्रितिविद्य पांच नारिञ्जणी विक्रय तथा श्राहारक शरीर न करे, तथी तेना चार योग एने न

ण, ए बे योग केवलसमुद्धातमांहे होय छने छौदारिकयोग मूल होय. (न छजोगि के०) छयोगीगुणवाणे चपलता टली ते माटें एके योग न होय ॥५०॥ हवे चौदगुणवाणे बार उपयोग विवरे हे, जे नणी गुणस्थानक विद्यु हैं वर्ततो जीव,विद्यु ह्योगें करी उपयोग द्याह पामे,ते नणी योग ह्या पही उपयोग कहे हे.

॥ अय गुणगणेषूपयोगानाह ॥

ति अनाण इ दंसाइम, इगे अजय देसि नाण दंस तिगं॥ ते मीसि मीस समणा, जयाइ केवल इ अंत इगे॥ ५१॥

श्रथ—(तिश्रनाण के॰) त्रण श्रज्ञान श्रने (इदंस के॰) चहुद्दीन श्रने श्रचहुद्दीन, ए वे द्दीन एवं पांच उपयोग, (श्राइमड्रगे के॰) श्रा दिम वे गुणवाणे होय, एटले मिण्यात्व श्रने सास्वादन ए वे गुणवाणे पूर्वीक पांच उपयोग होय श्रने (श्रज्ञय के॰) श्रविरतिनामे चोथे गुणवाणे तथा (दे ति के॰) देशविरतिनामें पांचमे गुणवाणे (नाणदंस्तिगं के॰) मति, श्रुत श्रने श्रविष, ए त्रण ज्ञान. श्रने चहुन, श्रचहुन, श्रने श्रविष, ए त्रण द्दीन, एवं व उपयोग होय. देशविरतिमां मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान श्रने केवलद्दीन, ए त्रण उपयोग न होय तथा ए गुणवाणे रहेला जीव, मिण्यात्वी न होय माटें एने त्रण श्रज्ञान पण न होय. एवी रीतें व उपयोग न होय.

(तेमीतिमीत के०) तेज त्रण ज्ञान ते त्रण अज्ञान साथें मिश्र थयला एवा त्र ण ज्ञान तथा तेमज त्रण दर्शन, एवं ढ उपयोग मिश्रगुणवाणे लाने. केम के जेने सम्यक्वांश वहुल होय तेने ज्ञानांशबाहुल्य होय अने जेनें मिथ्यात्वांश बहुल हो य तेने अज्ञानवाहुल्य होय अहीं आं मिश्रगुणवाणे जे अवधिदर्शन कहां ते ति

दांतने श्रनिप्रायें जाणवुं, पण कामेग्रंथिकना श्रनिप्रायें न जाणवुं.

(समणा के०) ते पूर्वोक्त व उपयोगने मनःपर्यवज्ञान सहित करीयें. एट छे चार ज्ञान छने त्रण दर्शन, एवं सात उपयोग (जयाइ के०) प्रमत्तादिक एट छे प्रमत्तरण वाणायी मांमीने वारमा द्वीणमोहर एवं लात अथीनां सात ग्रणवाणो वर्तता जीव, सर्वविरति होय तेथी एने मनःपर्यवज्ञान पण लाचे, माटें सात उपयोग होय छने (श्रंतज्ञों के०) सयोगी, छने छ्योगी ए छंतनां वे ग्रणवाणो (केवल के०) केवल हाने केवल हाने ए वे उपयोग होय होप दश उपयोगी ठाझ हियक वे ते इहां न होय॥ इति समुज्ञवार्यः॥ ए१॥

हवे स्त्रसम्मतपणे केटला एक वोल छहीं छां कर्मग्रंथें नथी मान्या, ते देखा है हे. सासण नावे नाणं, विज्ञ गाहारगे जरल मिरुसं ॥ नेगिदिस सासाणो, नेहाहि गयं सुच्य मयं प ॥ ५५॥

धर्थ-(सासणनावेनाणं केण) साखादननावें साखादनग्रणनाणे साखादन सम्यक्रहिए नणी सिक्षांतमांहे मित अने अतकानी पण कह्या ने. एटले वेंडिया दिक विकलेंडियमां उपजता जीव साखादनपणे क्वानी कह्या ने. तेज कमें यंथानिप्रायें क्वान नथी कह्युं. तेनो ए अनिप्राय जे साखादनपणे सम्यक्त्वथी पडतां होय ने. ते मिण्यात्वने सन्मुख ने माटें मलीनसम्यक्त्व ने तेथी त्यां क्वान पण मलीन ने माटें अक्वानज कह्युं तथा पन्नवणा अने नगवतीप्रमुख सूत्रने विषे (विज्वगाहारणे केण) वैक्रिय अने आहारकश्ररीरवालाने एटले लिख्यप्रत्यिक वैक्रिय श्ररीर अ ने आहारकश्ररिने प्रथम प्रारंनकालें (उरलिमस्तं केण) वैक्रियपुजन औद्यारिक साथें मिश्रनावमाटें औद्यारिक साथें मिश्र होय तेथी ते योगन्नं नाम औद्यारिक मिश्र श्रीतिक्षांतने विषे कह्युं. ने ते कमें येंथें अंगीकार न कह्युं अने कमें यंथने अनिप्रायें तो लिब्यजन्य श्ररीरने मुख्यतानणी वैक्रिय वैक्रियमिश्र कह्युं, तथा अहारक आ हारकमिश्र कह्युं पण औद्यारिकमिश्र न कह्युं तेनो हेतु आम ने के जे ग्रणप्रत्यिक लिब्यने वलवत्तरपणे करीने जे श्ररीर करवा मांमे ते श्ररीरन्नं वलवत्तरपणे होय. ते माटें एने प्रारंनकालें तथा परित्यागकालें पण वैक्रियमिश्र अने आहारकमिश्र कह्यां.

तथा (नेगिंदिसुसासाणों के०) सिदांतने विषे एकेंडियमांहे सास्वादनपणुं नथी कहां. सास्वादनी जीव एकेंडियमांहे न उपजे छने कमें यवाले एकेंडियमां हे सास्वादन पणुं कहां वे एनो हेतु कांइ जणातो नथी जे सिदांतें स्पष्ट ना क ही वे, ते कमें यंचवाले छाद्खुं ए तत्व, केवली जाणे. (नेहाहिगयंसु छमयंपि के०) ए त्रण बोल सर्व स्त्रें मान्या वे पण एनुं छहीं छां यहण नथी कहां. इस्रधेः ॥

तथा वली अहीं आं गाथामां तो नथी कहां पण एवी रीतेंज सिहांतमां है मिण्यात्वादिक त्रण गुणवाणे अवधिद्दीन अनिश्रयपणे कहां वे कम के विजंगें मिण्यात्वज्ञाननणी वस्तुनो निश्रय न कहाो. अवधिद्दीन नथी सामान्याव वोधनणी वस्तुनिश्रय न होय तथी ए वन्ने जूदा खरा पण एकरूप नणी पूर्वों का त्रण गुणवाणे ए वे उपयोग होय, एम कहां अने कमेशंयने मनें चोथे गुणवाणे सन्यक्रहिने अवधिद्दीन होय पण प्रथमना त्रण गुणवाणे अवधिद्दीन न हो

य एम कह्यं अने श्रीनगवतीपन्नवणा तथा जीवानिग प्र ख सूत्रमांहे पहेला गुणगणायी मांमीने बारमा गुणगणा सुधी अवधिद्दीन होय, एम कह्यं हे. अने अहीं आं कमें यंथनें मतें विचंगकानीने अवधिद्दीन न होय एम मानीने चोथा गुणगणायी वारमा पर्यंत अवधिद्दीन होय ए कह्यं.

तेमज वली सिद्धांतने मतें यंथिजेद करतां, प्रथ द्वायोपश्चिम सम्यक्त पामे छने कभेयंथना मतें प्रथम छौपश्चिक सम्यक्त पामे. ए मतजेद हे. पण छहीं छां सिद्धांतमत छाश्रयो नथी छने कामेयंथिक मत छाश्रयो हे. माटें एमां कांइ विरोध न जाणवो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५२॥

हवे चौद गुणगणे लेक्या कहे हो. जे नणी उपयोग सुधी लेक्या सुधीयें होय ते नणी उपयोग कहा। पही लेक्या कहे हो.

॥ अथ गुणस्थानेषु लेइयामाह ॥ वसु सवा ते तिगं, इगि वसु सुका अजोगि अल्लेसा॥ वंधरस मित्र अविरइ, कसाय जोग ति चन हेऊ ॥ ॥ ॥

अर्थ—( ग्रम के० ) मिथ्यालयी मांमीने प्रमत्तलों व ग्रुणगणानेविषे ( सद्या के० ) सर्व क्ष्णादिक व ए लेश्या होय अने (तेग्रतिंगं के० ) तेजोलेश्या पद्मलेश्या अने ग्रुम्भित्ता, ए त्रण लेश्या. ( इिंग के० ) एक अप्रमत्तनामें सात मुं ग्रुणगणं तिहां एक पूर्वप्रतिपन्न तथा बीजो प्रतिपद्ममानक तेने होय अहीं अप्रमानी क्षादिक त्रण लेश्या न होय केम के अहीं आं आर्च अने रीड, ए वे प्यान न होय अहीं विद्युक्परिणामें धर्मध्यान तथा ग्रुक्त ध्याननो पहेलो पायो होय अने ( ग्रुम के०) आगामा ग्रुणगणाथी मांमीने तेरमा पर्यतनो व ग्रुणगणा ने विषे ( ग्रुम के०) एक ग्रुक्तलेश्याज होय केम के अहीं आं अतिविद्युक्त परिणा म होय ते नणी तथा अहीं आं प्रत्येके एकेकी लेश्याना तीत्रमंदपणे अध्यवसा यनां स्थानक पण अनंख्यातां तीत्रमंदपणे होय तेथी ग्रुक्तलेश्या मंदपणे पहेले ग्रुणगणे होय अने तीत्रपणे तेरमे ग्रुणगणे होय तेमज क्ष्मलेश्या तीत्रपणे पहेले ग्रुणगणे होय अने नीत्रपणे तेरमे ग्रुणगणे होय माटें ए वातमां विरोध न प्रा तथा ( श्रुजांगिश्रहेता के० ) अयोगी ग्रुणगणे योगने श्रुनावें लेश्या न श्रंग न नणी योगप्रवृत्ति ते लेश्या कहीं. ते माटें योगने श्रुनावें ए पण प्रवृत्ति पणे न होय. एम चोद ग्रुणगणे लेश्या कहीं.

ते लेइया कषायोदय सिहत योगप्रवृत्ति तेथी बंधनो हे होय तेथी षाय छने योग, ते मध्यें योगें करी प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध करे छने कषायें करी स्थितिबंध तथा रसबंध रे ते निश्ची लेइया कहीने हवे बंधहे संख्या हे हे.

(बंधस्स के॰) ज्ञानावरणीयादिक कमें बांधवानां यूल चार ारण है। तेनां ना हे है. (मि क के॰) एक मिथ्याल एट खे विपरीतरुचि तलार्थनी रुचि, दायहरूप ते मिथ्याल. बीजो मन, वचन, अने कायाना मलीनयोगयी जे निष्ट तिनो अनाव, ते (अविरइ के॰) अविरितपणुं हीयें. त्रीजो ( साय के॰) बाय चारित्रमोहनीय, चोथो (जोग के॰) योग त्रण पूर्वें का ते (तिच हे के॰) इति ए चार मूल बंधहेतु कह्या। अहीं ोइ कहेत्रों के प्रमादपणुं पांच आश्रव, सिदांतें कह्यं हे, ते अहीं आं केम न कह्यं ? तेने उत्तर कहे हे के, द विषयादिक रूप जे प्रमाद हे, ते पण अविरितनामा आश्रवमांहे अंतर्नवे हे. ने बाय तो हीं पण जूदा कहीने नामज कह्यां तथा विकथादिक सहु यो गमांहे आवी गया. एम त्रण बंधहे मांहे अंतर्नवे हे तेथी प्रमाद जूदो न ह्यो. एम मैबंधना मूलहे सामान्य बंधना कारण चार क ॥ इति सम्रच्चयार्थः॥ ए३॥ हवे ए मूलचार बंधहेतुना उत्तर जेद सत्तावन हे हे।

अनिगहिः मणनिगहिः । निनिवेसिः संसइः मणानोगा ॥ पण मित्र बार अविरइ, मण करणाऽनिः अमु व जिः अवहो ॥ ५४॥

अर्थ-( अनिगहिस्र के० ) प्रथम अनिमहित एट छे ग्रण अवग्रण विचासा विना जे मत महण कखुं तेहीज नखुं जाणे अने बीजानी निंदा करे कहे के अमारा वहेरा करता हता ते अमे पण करी ग्रुं. इत्यादिक परी हा कसा विना जे पोता ना धमेनो कदामह होय ते प्रथम अनिमहीतिमध्यात्व जाण ग्रुं. अने वी जुं (मण निगहिस्र के० ) जेणे करी सर्वदर्शन नलां हे एम कहे पण कोइ विशेषपणुं जा णे नहीं एवो कोइ एक मध्यस्य परिणामे ग्रुण अवग्रणनी परी हा करे नहीं ते बी जुं अनिमम्बदीत मिध्यात्व जाण ग्रुं. त्री जुं ( अनिम वेसिस्र के० ) अनि निवे श एट जे पोतानो बोल यापवाने अर्थे सूत्र अर्थ मरहे, क्रुग्रक्त मां में, जेम गोष्टा माहिल निन्हव कमेजीवनो संबंध कं चुकनी पेरें कहेतां प्रकां तेने इर्व लिका पुष्प मित्रें अने कप्रकारें समजाव्यो निरुत्तर कसो, तो पण तेणे पोतानो हठ मूक्यो नहीं. ए त्री जुं आनि निवेशिक मिष्यात्व जाण ग्रुं. चो ग्रुं ( संसइस्र के० ) सांशिव

किमिथ्याल एटले जिनोक्त तलने विषे संशय धरतो रहे एटले ग्रुरुगीतार्थनी साम यी वतां पण मनमां विचारे जे हुं जो प्रवीश तो रखे मुजने ग्रुरु श्रज्ञानी जाएशे? एम जाणीने गीतार्थ ग्रुरुने पूर्व नहीं, संशयवंत थकां, तथा श्रविश्वासी थको रहे. तेने चोष्ठं सांशयिक मिथ्याल कहीयें. श्रने पांचमुं ( णाजोगा के०) श्रनाजोग मिथ्यात्व एटले जेथकी कोइ पण दरीन नूडुं नल्लुं न जाएो जे मूर्जी पामेलो मनुष्य कडुनो रस तथा शाकरनो रस विशेष न जाएो, तेनी पेरें जे एकेंडियादिक जोवो वे ते तत्वातत्व न जाएो, माटें ए सहु श्रनाजोगि मिथ्यालवंत वे, ए पांचमुं मिथ्याल कहां. (पणिमन्न के०) ए पांच प्रकारनां मिथ्याल कह्यां.

हवे (वार के०) वार जेदें (श्रविरइ के०) श्रविरित कहे हे. प्रथम ( ण के०) म ननी श्रविरित ते श्रावी रीतें के मनने विषे हिंसादिकनो संकल्प करवो ते कमेंबंध नो हेतु हे. एवं जाणीने पण मनने न संवरे. ते मननी श्रविरित तेमज (करण के०) पांच इंड्यिना विपयने संसारहेतु जाणीने पण पोत पोताना विषयणी इंड्यिने (श्र निश्रमु के०) निवर्णाववानो परिणाम न करे, ते पंचेंड्यिनी श्रविरित पांच प्र कारें जाणवी, तथा ( हिंशाश्रवहों के०) पांच प्रकारना स्थावर जीवोनी पांच नि काय तथा हिंशाश्रवी विरमवानो परिणाम नहीं ते हक्कायनी श्रविरित. एवं वा र श्रविरित यई ते मध्यें सम्यक्दृष्टि श्रविरित जीव जाणे पण विरमे नहीं बीजा तो जाणे निहं जे जणी तेने जिनवचनने श्रवसारें विषयने निवारवामुं तथा ह कायवंधनुं सक्ष्य ज्ञान नथी ते माटें ते जाल्या विना तेने केम विरमे श्रहीं श्रां मृपावादादिक विरमण ते पण ए बार प्रकारनी श्रविरितमध्यें श्रंतर्नवे हे जे न णी ज्यां इंडियना विषयथी विरम्या तेवारें त्यां मृपावादादिकथकी श्रवश्य विरम्या जाणवा. ते विना सर्वथी विरमी नशके ॥ इति समुच्चार्थः ॥ ५४॥

> नव सोल कसाया पन, रि जोग इच्छ तरा सगवणा॥ इग च छ पण ति गुणेसु, च ति इ इग पच्च वंघो॥ ए॥॥

श्रये-(नव के०) नव नोकपाय एटले हास्य पट्क तथा त्रण वेद एवं नव तथा (सोजकसाया के०) श्रनंतानुवंधीयादिक शोल कपाय. ए शोल कपाय मने कमें प्रकृतिना रमवंधना हेतु हो, केम के कपायिवशेषें रस विशेष होय. ते नणी ए विशेषवंबहतु जाणवा. ए पञ्चीश कपाय कह्या. था (पनिरजोग के॰) नना चार. वचनना चार ने ।याना सातः एवं सर्व मली पंदर योग जे हे, ते प्रदेशबंधना हेतु हे एवं मिण्यात्व पांच, अविरति बार, षाय प शि तथा योग पंदर, (इस्र के॰) ए सर्व ली चार मूल हे ना (छ राज के॰) जत्तरनेद, (सगवसा के॰) सत्तावन होय. एऐं। री जीवने में बंधाय. जे घडनाहें री तलावमांहे पाणी आवे, ते ए पण में ।व वानां बारणां जाणवां, ते नणी ए सत्तावन ंनाम, आश्रव पण हीयें.

हवे चौद णवाणे मूलबंधहेतु कहे हे. छहीं छां िाजा पदनी संख्या, चोथा पदनी सं ।, में जोडीयें, तेवारें (इग के ०) ए मिथ्याल गुणवाणे एनी साथें ( व के ०) च उप द जोडीयें, तेवारें एक मिथ्याल गुणवाणे में बंध चतुः प्रत्यि व होय, एट ले ए मिथ्याल, बीजो छिवरित, त्रीजो षाय छने चोथो योग. ए चार मूल । रणें री बंध होय. हवें (च उके ०) एक सास्वादन, बीं मिश्र, त्रीं वि रित, ो खुं देश विरित. ए चार गुणवाणें (ति के ०) त्रिप्र यि उप में बंध होय. हीं । मिथ्याल टखुं । टें ए मिथ्याल विना विरित, षाय ने योग, ए ए हें यें री बंध होय. तथा (पण के ०) ए प्र च, बीं प्रमच, त्रीं पूर्व रण, चो खुं बादरसंपराय छने पांच स्मातंपराय, ए पांच गुणवाणें ए षाय ने बीजा योग, ए बे ूल बंध हें यें री में बंध होय, ते नणी ( के ०) ए प्रत्यि वंध जाणवो. छहीं छिवरित पणुं पण टल्युं ने (ति पो के ०) ए उप तिमोह, बीं हीण हि, छने त्रीं सयोगी, ए ण गु वाणें (इग के ०) एक योग, (प वंबंधों के ०) प्रत्यि वंध जाणवो. के के हीं । षाय टखो माटें त्र एक योगें करीज कमें बंधाय हें। ने चौ दमें गुणवाणें ए पूर्वे चार हे मांहेलो एक पण हे नथीं, माटें हे ने नावें बंध पण न होय ॥ इति स यार्थः ॥ ए। ॥

हवे ए शो ने वीश उत्तर मेप्रकृति आश्रीने मूल बंधहे विचारे हे.

च मि मि अविरइ, प इञ्चा साय सोल पणतीसा॥ जोग विणु ति पञ्चइञ्चा, हारग जिण व सेसाउ॥ ५६॥

थे— हीं छां बीजा पदना त्रण पद साथें प्रथमनां त्रण पद जोडीयें, एट से (साय के ०) एक शाता वेदनीय, (च छ के ०) चारे बंध हेतुयें करीने बंधा य, तिहां (मिन्न के ०) मिथ्यात्वग्रणगणे मिथ्यात्वप्रत्ययिकी वंधाय, केम के ए वेदनीयनी प्रकृति मिण्यात्वयी मांमीने सयोगी गुणवाणा लगें बंधाय हे, तेमा हें. एक मिण्यात्वें, मिण्यात्वप्रत्ययिकी वंधाय छने वी हुं सास्तादन, त्री हुं मिश्र, चो छुं छित्रित, पांच मुं देशिवरित, ए चार गुणवाणां सुधी छित्रित प्रत्ययिकी वंधाय छने प्रमत्तादिक पांच गुणवाणे कपायप्रत्यिकी बंधाय. छने उपशांतमों हादिक त्रण गुणवाणे योगप्रत्यिकी बंधाय. एम शातावेदनीयना वंधमां हे चार हेतुमां हेलो एक हेतु होय, त्यां लगें पण वंधाय ते नणी चतुःप्रत्यिकी वंधाय.

नरकत्रिक, एकेंडियादिक चार जाति, थावरनाम, ख्रुक्यनाम, श्रपर्यात्राम, श्रमे साधारणनाम, ए स्यावरचतुष्क तथा ढुंमसंस्थान, श्रातपनाम, नपुंसकवेद, वेवहुं संघयण श्रमे मिच्यालमोहनीय, ए (सोल के०) शोल प्रकृति मिच्यालने वद्ये बंधाय, ते विना न बंधाय ते नणी (मिन्न के०) मिच्यालप्रत्यिकी कहीं

श्चनंतानुवंधीया चार, मध्यसंस्थान चार, मध्यसंघयण चार, कुलगित, दोनी ग्यत्रिक, एवं शोल. तिर्घचित्रक, मनुष्वित्रक, श्रोदारिकिक, स्त्रीवेद, नीचेगोत्र, थी णक्षित्रक, एवं ग्रंगणत्रीश, ज्योतनामकर्म, वज्रक्पननाराचसंघयण अने प्रत्याख्यानावरण चार कपाय. ए (पणतीसा के०) पांत्रीश प्रकृति मिष्याख ग्रंण गणे मिष्याखप्रत्यिकी वंधाय. अने मिष्याखयी श्चागले गुणगणे श्वविरित प्रत्यिकी वंधाय. एम मिष्याख तथा श्वविरित, ए वे माहेलो एक हेतु होय तो पण वंधाय परंतु ए विना वीजा हेतुयें न वंधाय, ते नणी ए पांत्रीश प्रकृति मिष्याख तथा (श्वविर्द्ध के०) श्वविरित (पञ्चइश्चा के०) प्रत्यिकी वंधाय.

तथा (खाहारगिलणविक्षमेसार् के०) आहारकिक अने जिननामकमे वर्नानं रोप क्वानावरणीयनी पांच, द्रीनावरणीयनी ठ, अशातावेदनीयनी एक, मोहनीयनी पंदर, नामनी वत्रीश, उच्चेगात्रनी एक अने अंतरायनी पांच, ए पांशठ प्रकृति तथा देशविरतिग्रणगणे जे शहश्च प्रकृतिनो वंथ हे. ते मांदेशी जिननाम तथा शाता वेदनीय, ए वे प्रकृति विना शेप पांश्च प्रकृति, जेवारें मिच्यात्व ग्रणगणे वंथाय. तेवारें मिच्यात्वप्रस्थिकी कहेवाय. अने जेवारें साम्बादनादिक चार ग्रणगणा लगें वंथाय, तेवारें अविरति प्रस्थिकी वंथाय अने तेथी आगल कपा य प्रस्थिकी वंथाय ए रीतें (जोगविणुतिपच्चश्चा के०) एक योग वंथहेतु विना जोप एक मिच्यात्व, बीजो अविग्नि. त्रीजो कपाय त्रण वंथ हेतु प्रत्यिकी ए पांचाच प्रकृति वंथाय, परंतु ए त्रण वंथहेतु विना केवल एकज योग वंथ हेतु करी न वंथाय.

श्राहार शरीर, श्राहारकश्रंगोपांग, ए वे प्रकृति, निरवद्य योगरूप सराग सं यमप्र यें करी वंधाय तथा जिननाम में तो श्रारहिंताहिकनी निक्ररूप सम्य कल्व र्त्तव्यें री बंधाय. परं प्रशस्तरागें करी बंधाय तेथी ए पण परमार्थें पायप्रत्यिकी होय. एम सर्वप्रत्यिकी प्रकृति एकशो ने वीश बंधयोग्य हो, तेना मू ल बंधहेतु विचात्वाः जीवविजयजीयें तो ए त्रण प्रकृति चार हेतुमांहेला ोइ हेतु यें न वंधाय. त्र ए सम्यक्लगुणें करीनेज वंधाय, एम लख्युं हो " सम्मनगुण निम् तं तिश्वयरं संजमेण श्राहारं" इति वचनात् ॥ इति स यार्थः ॥ ए६ ॥ हवे चौद गुणहाणे उत्तर बंधहेतु हे हो.

> पणपन्न पन्न तिस्र बहि, स्रवत्त गुणवत्त व च हगवीसा॥ सोलस दस नव नव स,त हे णो नव स्रजोगंमि॥ ५९॥

ये-मिथ्यालगुणवाणे (पणप के०) प विन बंधहेतु होय तथा सा स्वादनें (प के०) पचारा बंधहेतु होय अने मिश्नें (ति के०) तेंतालीश बंधहे होय, तथा अविरितयें (बिह्अचन के०) बेंतालीश बंधहे होय तथा हे श्विरतिगुणवाणे (गुणचन के०) वंगणचालीश बंधहेतु होय अने प्रमनें, प्रमनें तथा अपूर्वकरणें, ए त्रण गुणवाणे अनु में (बच्चड्रगवीसा के०) बवीश, चोबीश अने बावीश, बंधहेतु जाणवाः अने अनिवृत्तिबादरें (सोलस के०) हो ल बंधहेतु जाणवाः स् संपरायें (दस के०) दश बंधहेतु जाणवाः उपशांत मोहें (नव के०) नव बंधहेतु जाणवाः हीणमोहें (नव के०) नव बंधहे जाणवाः स्थागीयें (सन्त के०) सात वंधहेतु जाणवाः ने (हेचणोनचअजोगंमि के०) अयोगीगुणवाणे बंधना नावमाटें वंध हेतु पण नधी॥ इति स यार्थः॥५॥।

पणपन्न मिन्नि हारग, डगूण सासाणि पन्न मिन्नविणा॥ मी स इग कम्म अण विणु, तिचत्त मीसे अह चता॥ ५७॥

थी—(मिश्च के॰) मिध्यालगुणगणे उपें सर्वजीवनी अपेक्सयें ( हारग गूण के॰) आहारकि हों हीन (पणपन्न के॰) पञ्चावन कर्मबंधना हेतु होय. जेनणी तेने विशिष्ट चारित्र नथी तेथी आहारक लिब्ध न होय,माटें हार श रीर अने आहारकि मश्र, ए वे योग न होय. शेप मिध्याल पांच, अविरित बार अने कपाय पञ्चीश तथा योग तेर. एवं पञ्चावन कर्मवंधना हेतु पामीयें अने वि शेषादेशें एक जीवप्रत्यें एक समयें जयन्यपदें दश बंध हेतु होया अने जरकटा छढार कमेवंधना हेतु होय ए १०-११-११-११-१४-१५-१६-१७-१७-ए नव स्थानक होय अने (सासाणि के०) बीजे सास्वादन ग्रणगणे (मिन्नविणा के॰) पांच मिण्याल न होय. माटें पच्चावनमांहेशी पांच मिण्याल ाढीयें. तेवारें अविरति बार, कषाय पञ्चीश अने योग तेर. एवं (पन्न केण) प श बंधहेतु उधें हो य तथा विशेपादेशें एक जीवप्रत्यें एक समयें जघन्यपर्दे दश हेतु होय. एम ए केक वधतो होय, तेवारें उत्कृष्ट सत्तर बंधहेतु होय. एम दशयी मिनि सत्तर ल गें आत वंधहेतुनां स्थानक होय अने (मीसड्ग के०) मिश्रिव एटले औरा रिकमिश्र छने वैक्रियमिश्र, त्रीजो (कम्म के०) कार्मणयोग, ए त्रण योग छने (अण के॰) अनंतानुवंधीया कपाय चार. एवं सात कमे वंधना हेतु, (विणु केण) विना शेष अविरति बार, कपाय एकवीश अने योग दशः एवं (तिचत के०) तेंतालीश वंधहेतु उंघें (मीसे के०) मिश्रगुणवाणे होय अने विशेषादे ज़ें एक जीवप्रत्यें एक समयें पंचेंडियमध्यें एक इंडियनी खविरति, हक्कायना वं धमध्यें एक कायनो बंध, बे युगलमध्यें एक युगल, तथा त्रण वेदमध्यें एक वेद तथा चार कपायमध्येंना त्रण नेद होय तथा दश योगमध्यें एक योग एवं नव वंध हेतु जघन्ययी होय छने उत्ऋष्टियी तो तकायनो बंध, एक इंड्यिनी छविरित, एक युगल, एक वेद, कपायना त्रण नेद, नय, जुगुप्सा अने एक योग, ए शोल वंधहेतु लाने, ए मिश्रगुणवाणे जीव. काल न करें, तेथी अपर्याप्तावस्थायें नावी त्रण योग न होय छने वंधहेतुस्थानक नवधी मांमीने शोल लगें छात होय.

(छह के०) अथ एटले इवे अविरति, सम्यक्तहिंशनामा चोथे ग्रणगणे (ठ चत्ता के०) ठॅतालीश वंधहेतु होय, तेमध्यें तेंतालीश मिश्रमां कह्या, ते लेवा.

हवे या गायामां मिथ्याल, सास्वादन अने मिश्र, ए त्रण गुणवाणे कमेवंधना हेतु कह्या तेना जेटला नांगा याय ते खनुक्रमें ए त्रणे गुणवाणाना लखीयें वैयें

पञ्चावन बंधहेतु, मिण्याल ग्रणवाणे डीवें होय अने विशेषादेशें तो एक स मयं एक जीवने मिण्यात्वें जयन्यथकी दश बंधहेतु होय अने उत्कृषा श्रहार बंध हेतु होय केम के पांच मिण्याल माहेलुं एक मिण्याल होय तथा उक्काय मध्यें एक कायनो बंध होय, केम के उक्कायमध्यें कोइ एक जीव, केवारें कायनोज वध करे.ते पण प्रथ्वीकायनोज वध करे अथवा अप्कायनोज वध करे. ए रीतें ठ फायना उ नांगा थाय तेमज वली कोइ एक जीव, एक समयें वे कायनो पण वध करें तेना दिकसंयोगीया पंदर नांगा थाय तथा कोइएक जीव, त्रण कायनो वध ं रे तेना हि संयोगी ावी नांगा था शहर जीव, चार ायनो वध रे, ते च :संयोगी पंदर नांगा थाय, था ोइए जीव, पां ायनो वध करे, तेना पंच संयोगी जांगा थाय ने कोइ एक जीव, ायनो वध रे, तेनो षट्संयोगी ए नांगो थाय पांच इंडिय हिला ए इंडियनो विषय होय. ते नी विरति होय, त्रण वेद ध्यें ए वेद होय हास्य ने रति तथा शो ने रित, ए बे गल दिलुं ए गल होय. एवं उ थया. तथा चार पाय दि ला ए षायना प्रत्या नि एक, प्रत्या नि बीजो, संज्वलनो त्रीजो, ए त्रण वेदे, जे जणी शेधादिक चदय विरोधी है. तेथी क्रोधादि ने चद्यें ।नादिकनो चद य न होय तथा उपश श्रेणीयें नंतानुबंधीयानी विसंयोजना रे, तेवारें तेनी सत्ता टले ते श्रेणीयी । लक्ष्यें री पडतो अ में पहेले गुणवाणे आवे. त्यां वली मिण्यालने उद्यें अनंता बंधीया बांधे ने बीजी आवलीयें तेने संक्रमावे, ते ए बंधावली ने बीजी सं मावली ए बे आवलीलगें अनंतानुबंधीयानो उ दय न पा वियें तेथी ए प्रत्याख्यानादिक षाय त्रणनोज बंध पामीयें एटले ए षायना एज नेद पा थिं, एवं नव थया तथा मिथ्यालगुएगणे अनंता बंधीयाना चद्य विना मरें नहीं तेथी अपयीप्तावस्थानावी एक कामेण, वी जो औदारि मिश्र, त्रीजो वैवि यमिश्र, ए ए योग पए न लाने अने आहारकना बे योग तो पूर्वेज ाढी नाख्या के ज़ेष दश योग मांहेलो एक योग होय. एम ज घन्यथी दश है एक समयें मिच्यात्वी जीवनें होय. त्यां नांगा वत्रीश हजार हो य. जे जणी पांच मिथ्यालने ह ।यना वंध साथें ग्रणतां त्रीश थायः तेने पांच इंड्यि साथें ग्रणतां दोढशो याय तेने हास्य छने रित तथा शोक छने छरति, ए

ते मध्यें नय तथा जुगुप्ता तथा बे कायनो बंध तथा अनंतानुवंधी एक जेलतां चार प्रकारें अगीआर देतु होय. तथां नांगा (१०००००) थायः एमां दे वे जेलतां बार बंधदेतु होय तथां (५४६६००) नांगा होय अने त्रण जेल तां तेर बंधदेतुयें (०५६०००) नांगा होय अने चार जेलतां चोद वंधदेतुयें (००१०००) नांगा होय, पांच जेलतां पंदरवंध देतु त्यां नांगा (६०४०००) होय, अने ह जेलतां शोल वंधदेतु. त्यां नांगा (१६६४००) थाय, तथा सात जेल

वे युगलसायें युणतां त्रणशो थाय, तेने त्रण वेद साथें युणतां नवरों थाय. तेने चार कषाय साथें युणतां वत्रीशहों थाय. तेने दश योग साथें युणतां वत्रीश हजा

र थाय. ए दश हेतुना नांगा थया.

तां सत्तर बंधहेतु ां नांगा (६०४००) थाय ने ए नय, शि गुप्ता, त्रीजो अनंतानुबंधी तथा ढ ।यनो बंध एवं नव दशं ि ध्यात्व ए गल एवं वार. त्रण वेद, एवं पंदर बे षाय ने ढार शे योग ए उत ए समय अढार बंधहेतु होय अहीं ां नागां (७०००) ए सर्व जी ि ध्यात्वें (३४७९६००) नांगा होय.

तथा विक्षायमां एक यबंधना नांगा , बे य बंधना नांगा पंदर ण बंधना नांगा वीहा. चार बंधना नांगा पंदर पांच बंधना नागा व ने बंधनो नांगो एक, तेथी ज्यां जेटला बंध होय, त्यां तेटला नांगा साथें पां िष्याल णीयें, तेने पांच इंडिय साथें ग्रणीयें एम तां नांगा नीपजे तथा जिहां नंता बंधिया सिहत णीयें तिहां तेर योग थें णीयें, हीं ं ननी विरित इंडियमांहे छावी गइ. जे नणी प्रायें बाह्येंडियनी विरित, नोविरित पूर्वक के ते नणी छाहींछां विशेषार्थें पंचसंग्रह जोवो. हवे ते नंगा विवरीने देखाडे के

हवे पूर्वोक्त दशमध्यें नय छने कुछा नेलीयें, तेवारें बार हेतु थाय. तिहां (३६०००) नंग थाय तथा नय छने वेकाय खेखवीयें, तेवारें वे कायना पंदर नंग साथं गुणतां (७००००) नंग थाय, तथा कुछा छने वे काय साथं गुणतां (०००००) नंग थाय, तथा कुछा छने वे काय साथं गुणतां (०००००) नंग थाय तथा त्रण कायनो वध खेखवीयें, तेवारें वीश नांगा सा थ गुणनां (१२००००) थाय, तथा छनंतानुबंधीनो चद्य होय, तेवारें नं

तानुबंधी अने जय जेंजवीयें, तिहां योग तेर होयः तेवारें (४६०००) जंग थाय तेमज नंतानुबंधी अने ा जेजवतां पण (४६०००) जंग थाय, त था नंता वंधी अने बे ाय जेखवतां (११७०००) जंग थायः ए बार हे; ना सात वि व्पें थइने (५४६६००) जंग थायः

हवे पूर्वी दश ध्यें नय छने हा नेलीयें छने बे काय लेखवीयें, तेवारें तेर हे षाय तिहां (ए००००) नंग षाय तथा नय ने त्रण ाय लेखवी यें, तेवारें (११००००) नंग षाय था हा छने त्रण काय लेखवीयें ते वारें पण (११००००) नंग षाय तथा छनंता बंधीने उदयें नय छने हा नेलीयें तेवारें तेर योग साथें ग्रणतां (४६०००) नंग षाय तथा छनंता नुबंधी नय छने वे ाय ले वतां (११००००) नंग षाय, तेम ज छनंतानु बंधी हा ने वे ाय लेखवतां पण (११००००) नंग षाय. तेम वली छनंता नुबंधी ने त्रण काय लड्यें, तेवारें त्रिकसंयोगी वीश नंगे ग्रणतां (१५६०००) नंग षाय तेमन पूर्वोक्त दश साथें चार काय लेखवीयें तेवारें (ए००००) नंग षाय. ए तेर हेतुना छात वि हपें घड़ने शरवाले (ए५६०००) नंग षाय.

हवे पूर्वी दशमध्यें नय अने कुछा नेलीयें अने त्रण काय गणीयें, तेवारें चौद हेतु थाय तिहां (१२०००) नंग थाय नय नेलीयें, अने काय चार लेखवीयें, तेवारें (ए००००) नंग थाय. छा नेलीने चार काय लेखवीयें, ते वारें पण (ए००००) नंग थाय, काय पांच गणीयें, तेवारें पांच संयोगी व नंगें गुणतां (३६०००) नंग थाय. अनंतानुवंधीने उद्यें नय, कुछा नेलीयें अने वे काय गणीयें, त्यां योग तेर होय. तेवारें (११०००) नंग थाय, अनंतानुवंधी नय अने त्रण काय गणतां (१५६०००) नंग थाय, तेमज अनंतानुवंधी कुछा अने त्रण काय गणतां (१५६०००) नंग थाय तथा अनंतानुवंधी अने चार काय गणतां (११०००) नंग थाय तथा अनंतानुवंधी अने चार काय गणतां (११०००) नंग थाय. एम चौद हेनुना आत विकल्पें थइने (०००००) नंग थाय.

ह्वे ए पूर्वीक्त दश मध्यें नय. क्रुहा नेलीयें अने चार काय लेखवीयें, तेवारें पंदर हेतु थाय. तिहां नंगा (ए००००) थाय. नय अने पांच कायना (३६०००) थाय, क्रुहा अने पांच कायना (३६०००) थाय. ठक्काय नेले (६०००) थाय. तथा अनंतानुवंधीने उदयें योग तेर होय. तिहां अनंतानुवंधी अने नय, क्रुहा, भेलीयें अने काय त्रण गणीयें. तेवारें (१०६०००) थाय. अनंतानुवंधी

तथा नय नेलीयें, तथा चार य. गणीयें, तेवारें (११७०००) थायं. नंतानुबंधी कुला अने चार ाय नेलवीयें, तेवारें (११७०००) थायं, नंतानुबंधी अने पांच काय लेखवीयें, तेवारें (४६०००) थायं, ए पंदर हेतुना वि हप ाठ, ते ना शरवाले नंगा (६०४०००) थयां.

पूर्वोक्त दशमां नय, ा ने पांचा एवं हित्ना नंग (३६००७) पाय तथा नय ने उ य हे विथें, तेवारें (६०००) नंग पायः तेम हा अने उ य हेखवीयें, तेवारें पण (६०००) नंग पाय. नंता बंधी नय ने कुष्ठा अने चार य साथें गणतां (११७०००) पाय. हवे नंता बंधी नय तथा पांच काय साथें गणतां (४६०००) नंग पाय. ते नंता बंधी कुष्ठा अने पांच काय साथें एतां पण (४६०००) नंग पायः नंता बंधी अने उक्ताय नेतीयें, तेवारें (७०००) नंग पायः ए शोल हेतुना सात विकल्पें पड़ने (१६६४००) नंग बंध हे ना पायः

हवे ए पूर्वोक्त दशमध्यें नय हा ने ायनो वध लड्यें, तेवारें सन्तर वंधहेतु थाय. तिहां नंग (६०००) थाय ने अनंतानुवंधीने उदयें नय, हा तथा पांच कायनो वध ले वीयें, तेवारें (४६०००) नंग थाय. अनंता वंधी नय अने उक्काय लेखवतां (४०००) नंग थाय, ते नंता वंधी हा अने उक्काय लेखवतां पण (४०००) नंग थाय. ए सत्तर हेतुना चार विकल्पें थड़ने (६०४००) नंग थाय.

हवे उक्काय, एक मिथ्याल, एक ईड्यि, चार कषाय, ए हास्यादि युगल, एक वेद, एक योग, एक नय अने एक कुन्ना, ए अढार हेतुना ( ७०००) नंग थाय, ए रीतें मिथ्यालगुणठाएों दश्यी मांमीने अढार धीना हेतुने नव वि ल्पें थई ने ( ३४७७६०० ) नंग थाय.

हवे सर्व नांगानो शरवालो करी देखाडे हे. द बंध हेतुना नंगा (१६०००) ह्यगी छार वंधहेतुना नांगा (१०००००) बार वंधहेतुना नांगा (५४६६००) ते र वंधहेतुना नांगा (०५६०००) चौद वंधहेतुना नांगा (००१०००) पंदर वंधहेतुना नांगा (६०४०००) शोल वंधहेतुना नांगा (१२६४००) सत्तर वंधहेतुना नांगा (६०४००) छाडार वंधहेतुना नांगा (१०००) एकंदर शर वंधहेतुना नांगा (१४७००) होय.

द्रवे बीजा सास्वादन ग्रणवाणे (३०३०४०) नांगा थाय, ते कहे हे. तिहां न

घन्य हेतु दश होय ने नणी अंहीं मिष्यात्व न होय, पण ए कषायना चार नंग हो ये केम के अनंतानुवंधी पहेला कषायोदय विना ए बीजं ग्रणताणुं न होय, ते धी ए कपाय चार, एक वेद, एक ग्रुगल, एक इंड्यिनी अविरति, एवं आत. एक व थिनो बंध अने तेर योगमध्यें एक काययोग, ए दश हेतु होय अने उत्कृष्टा सत्तर हेतु. ए समयें होय, तेवारें दशधी सत्तर पर्यंत आत विकल्प होय, पण एटलुं विशेष ने नपुंसकवेदें वैक्रियमिश्रयोग न होय केम के नारकी, अपर्याप्ता वस्थायें सास्वादनी, न होय तथी त्रण वेद, तेर योग साथें ग्रणतां उगणचालीश थाय ते मांहेथी ए हप काढीयें, तेवारें आडत्रीश होय. ते । यना बंध सा धें ग्रणतां वशोने अहावीश थाय, तेनें पांच इंड्य साथें ग्रणतां (११४०) था य तेने ग्रणतां स्था करतां (११४०) नांगा थाय.

ते दश हेतुमध्यें नय नेलीयें, तेवारें अगीआर हेतु थायः तिहां पण (ए१२०) नंग थाय. एमज कुन्ना नेलतां पण (ए१२०) नंग थाय, तथा वे काय लेखवीयें, तिहां वेकायना िहकतंयोगी पंदर नंग साथें गुणाकार करतां (२२०००) नंग थाय. एम त्रण विल्पें थइ अगीआर हेतुना नांगा (४१०४०) थायः

द्वे पूर्वीक्त दश देतुमध्यें नय अने कुन्ना बे नेलीयें, तेवारें वार देतु याय, ति हां (ए१२०) नंग याय. तथा एक नय अने वे कायनो वथ लड्यें, तेवारें (२२०००) याय. तेमज एक जा अने वे कायनो वध छेतां पण (२२०००) याय, तथा त्रण कायनो वथ लहीयें, तेवारें त्रण कायना त्रिकसंयोगी वीश नंग साथें ग्र णाकार करतां (२०४००) नांगा थाय. ए चार विकल्पें वार देतुना (७५१२०) नांगा थाय.

ह्वे पूर्वोक्त दश हेतुमांहे नय, कुन्ना, नेलीयें अने वे कायनो वथ लड्यें, तेवा रें तेर हेतु थाय. तिहां नांगा (११०००) थाय तथा एक नय अने त्रण काय लहियें तेवारें (३०४००) थाय. तथा एक कुन्ना अने त्रण काय लड्यें, तेवारें (१०४००) थाय. अने मात्र चार कायनोज वध लहीयें, तेवारें (११०००) थाय. ए चार विकल्पें तेर हेतुना (१०६४००) नांगा थाय.

हवे पूर्वीक्त दश मध्यें नय, क्रुहा अने त्रण कायनो वध लहीयें तेवारें चौद हेतु थाय. तिहां (२०४००) नांगा थाय तथा एक नय अने चार काय लहीयें, तेवारें (२२०००) थाय. कुहा अने चार काय लीजें,तेवारें (२२०००) थाय. पांच काय लीधे (ए१२०) थाय. ए चार विकल्पें चौद हेतुना (७५१२०) नांगा थाय. दवे पूर्वो दश थ्यें नय, श्याने काय चार नेलीयें, तेवारें पंदर हेतु थाय, तिहां नांगा (१२०००) थाय. नय अने पांच या लीधे (ए१२०) थाय. कुन्ना अने पांच काय लीधे (ए१२०) थाय. तथा उश्वास लीधे, (१५२०) नांगा थाय. एवं चार विकल्पें पंदर हेतुना (४२५६०) नांगा थाय.

पूर्वीक दशमध्यें नय, ज्ञा ने पांच ाय नेलीयें, तेवारें शोल हेतु षाय. तिहां नांगा (ए१२०) षाय, नय छाने त ाय नेले तेवारें (१५२०) षाय. ज्ञा छाने तकाय नेले, (१५२०) षाय. एम त्रण विकल्पें घइने (१२१६०) नांगा षाय.

हवे । य, एक ईड्य, चार कषाय, युगल बे ंहेलो एक, वेंद्र एक, नय एक, कुन्ना एक, योग एक, ए सत्तर हेतुना नांगा (१५२०) धाय. ए रीतें सा स्वादनग्रणनाणे आन विकल्पें घइने (३०३०४०) नंग धाय.

हवे मिश्रगुणगणे (३०१४००) नांगा होय. ते केवी रीतें ? तोके मिश्रं उ रुष्टा तेंतालीश हेतु कह्या छने जघन्यथी छनंतानुबंधी न होय माटें एक जीवने एक समयें नव, दश, छगीछार, बार, तेर, चौद, पंदर छने उत्रुष्ट शोल हेतु होय. तिहां जघन्यथी काय एक, इंड्य एक, कषाय त्रण, हास्यादियुगल एक, वेद एक छने दश योगमांहेलो एक योग, ए नव हेतु होय. तिहां एक कायना नांगा व, ते पांच इंड्य साथें गुणतां त्रीश थाय. तेने चार कषाय साथें गुणतां (१२०) थाय. ते युगल साथें गुणतां (१४०) थाय. ते त्रण वेद साथें गुणतां (१२०) थाय, तेने दश योग साथें गुणतां (१२००) थाय. ए नव हेतुना नांगा कह्या.

ए पूर्वोक्त नवमध्यें नय जेलतां, दश बंधहेतुना (११००) नांगा थाय. तथा कुछा जेलतां (११००) नांगा थाय. तथा वेकायनो वध जेतां (१००००) थाय. एम त्रण विकल्पें थइ दश हेतुना (३१४००) नांगा थाय.

प्रवीत नवमध्यें कुन्ना अने नय, वे नेक्षेतां अगीआर वंध हेतुना ( ७२०० ) कुछा अने वेकाय सार्थें (१००० ) नय अने वे कायसाथें लीधे (१००० ) त्रण काय क्षेतां (१४०००)एम चार विकल्पें अगीआर हेतुना (६४२००)नांगा धार्य,

पूर्वोक्त नवमध्यें नय, कुन्ना अने वे काय लीधे तेर हेतुना (१०००) न य अने त्रणकाय लीधे (२४०००) कुन्ना अने त्रण काय लीधे (२४०००) तथा चार काय लीधे (१०००) ए चार विकल्पें वार हेतुना (७४०००) नांगा होय.

प्योंक नवमध्यें नव, कुछा ध्रने त्रण काय क्षेतां तेर हेतुना (१४०००)

नय छने चार य लीधे (१००००) छुगुप्सा छने चार काय लीधे (१००००) इ ने पांच यज लीधे (१००००) ए चार वि ल्पें तेर हे ना (६७२००) नांगा. हवे पूर्वोक्त नव ध्यें नय, हा छने चार य नेंक्षे, चौद हेतुना (१००००) नय छने पांच य लीधे (१२००) गुप्सा छने पांच य लीधे (१२००) ए चार वि ल्पें (३३६००) नंग थाय पूर्वोक्त नव ध्यें न्य, कुहां ने पांच य मेलवतां पंदर बंध हे ना नां

पूर्वाक्त नव ध्य नय, कुछा न पाच य मलवता पदर बंध ह ना ना गा (७२००) नय अने ढ य लीधे (१२००) छुगुप्साने य लीधे (१२००) ए ए वि व्ये पंदर हेतुना (ए६००) नंग थाय.

वक्काय, एक इंडिय, त्रण षाय, हास्यादि युगल एक, वेद ए , योग ए , त्र य ए , ज्ञा एक एवं शोल हेतुना (१२००) नांगा थाय ए । ते वि व्पें थ इने मिश्रगुणनाणे (२०२४००) नंग थाय ॥ इति स यार्थः ॥ ५०॥

> सड़मीस कम्म अजए, अविरइ कम्मुरल मीस विक्साए॥ मुतु गुण चत देसे, वीस साहार इ पमते ॥ ५ए॥

थे— ते पूर्वों तेंतालीश हेतु, मिश्रगुणगणे ह्या. तेने ( मीस के०) ए वैक्रियमिश्र, बीजो खोदारिकमिश्र, खने त्रीजो म्मिण, ए ए यो ग सहित रीयें, एटले ए ए योग. खहीं खां होय. जे नणी पर्याप्तावस्थायें पण ए गुणगणुं होय. ते नणी ठेंतालीश बंधहे , ( जए के०) ख विरति गुणगणे खहीं खां डीवें होय खने विशेषादेशें जघन्यथी तो तेमज मिश्रनी पेरें नव बंधहे होय, खहीं खां डत्कृषा शोल बंधहेतु खने बंध स्थानक मिश्रनी परें खात होय.

हवे (अविरइ के०) अविरित्तमध्यें एक त्रसकायनी विरित्त तथा योगमध्यें (म रत्नमीस के०) एक कामिणयोग, बीजो औदारिक मिश्रयोग, एवं बे योग तथा कषाय ध्यें (बिकसाए के०) बीजा अप्रत्याख्यानावरण षाय चार एवं सात हेतु. देशविरित्युणवाणें न होय. माटें ते (चु के०) टालीयें, तेवारें (ग्रुणचनदेसे के०) देशविरित ग्रुणवाणे उगणचालीश बंधहे होय एटले विरित्त गीआर, कषाय सत्तर, योग गीआर एवं उगणचालीश हेतु, उर्वे होय. अने विशेषादेशें जघन्यपदें, पांच ।यना वंधमध्यें ए ।यनो वंध, इंड्यिनी

अविरतिमध्यें एकेंडियनी विरति, ए युगल, ए वेद. ार षायमध्यें एक कषायना बे नेद. अगीआर योगमध्यें ए योग. एवं ाठ दे लाने.

( विश्वासाहार पमने के० ) प्रमन गुणवाणे वीश बंधहे लाने, जे नणी आहारकयोग अने आहारकिमश्र, ए बे योग, त्यां संनवे हे. जेवारें चौद पूर्वधर शरीर करे, तेवारें आरंनती वेलायें आहार मिश्रयोग होय, तेनी ह पर्याप्त प्र री कह्या पही आहारकयोग होय. अहीं आं मिश्रता औदारि सांधें लेवी. अहीं देशविरतिगुणवाणाना उंगणचालीश बंधहेतुसांखें ए आहारकना बे योग ने लीयें, तेवारें एकतालीश बंधहेतु थाय. तेमांधी पंदर बंधहेतु हाही नाखवा, ते आगली गाथायें कहे हे.

हवे ए आ गाथामां अविरित अने देशविरित, ए बे ग्रंणवाणाना बंधहेतु क ह्या, तेना नांगा कहे हे. तिहां प्रथम चोथे ग्रुणवाणे बदा जी (३५१०००) नंग थाय. एग्रुणवाणे जवन्य नव अने उत्कृष्ट शोल बंधहेतु होय.

ए चोंचे गुणवाणे स्त्रीवेदें एक औदारिकिमश्र, बीजो वैशियमिश्र, त्रीजो कार्म ण, ए त्रण योग, प्रायें न होय तथा नपुंसकवेदें औदारिकमिश्र न होय, जे नणी स्रीवेदीने प्रायें अपयोप्तावस्थायें चोषुं गुणवाणुं न होय, परंतु ाह्मी, सुंदरी,महाी नाथ तथा राजीमत्यादिक अनुत्तर विमानधी आव्यां, तेने सम्यक्त पण होय ते नणी प्रार्थे कहां अने नपुंसकवेदी सम्यक्टि जीव, मनुष्य तथा तिर्थेचमांहे न ञावे. तेथी तेने औदारिकमिश्र निश्चें न होय, तेथी तेर योग त्रण वेद साथें गुण तां डीगणचालीश थाय. ते मांहेथो चार रूप काढीयें, तेवारें पांत्रीश रहे, तेने व क्षायना वंध साथें गुणतां (११०) थाय. तेनें पांच इंड्यि साथें गुणतां (१०५०) थाय. तेने गुगलसाथें बमणा करतां ( ११०० ) थाय तेनें चार कपाय साथें गु णतां (७४००) नांगा, नव बंधहेतुना थाय ते मध्यें नय, जुगुप्ता तथा एक काय नो वंध चेलतां दश हेतुयें चंग (२९००) याय. तथा वे कायनो वंध चेलतां श्र गीयार हेतुचें ( ७ ७४ ० ० ) त्रण कायनो वंध नेलतां बार हेतुयें ( ए० ० ० ० ) चार कायनो बंध चेलतां तेर हेतुयें (७०४००) पांच कायनो बंध चेलतां चीद हेतुयें (३७२००) वक्कायनो वंध जेलतां पंदर हेतुयें (११२००) न्य, जुगुप्मा घने वकाय साथें जोल हेतुयें (१४००) थाय. एम सर्व मली चौथे गुणवाणी (३०२०००) चंग थाय.

स्वे पांचमे देशविरतिगुणवाणे (१६३६ ए०) नांगा चपने. केम के एजीव त्रस

ायधी विरम्या हिं पांच ।यना ए ंयोगी नांगा पांच, ि ंयोगी नांगा दश छने हि संयोगी नांगा द त । च ःसंयोगी नांगा पां छने पं संयोगी नांगा पां छने पं संयोगी नांगो ए . हीं ए जीव ।श्री जघ थी । त, नव, दश, छगी ।र, वार, तेर, उत्क । चौद हे होय. ए रीतें सात वि व्प थया. तिहां जघन्यथी काय एक, ईिइय ए , षाय बें, हास्यादि गल, वेद ए , योग छगीछार हें लो ए , ए ।त हेतु होय. तिहां पांच ।यना नांगा पांच होय.

हीं आं पां यिना बंधने पंचेंडिय साँ एतां प शि याय. तेने यु गल सार्थे गुएतां प शा याय, तेने ए वेद सायें एतां दोढशो याय, तेने र बाय साथें गुएतां ढशें याय, तेने गी र योग साथें गुएतां शहशें नंग र हे ना थाय.

तेमध्यें नय तथा गुप्सा तथा बें ायना बंध साथें नव हे रीयें, तेवारें नयथी ढाशहरों ने तेमज प्सा साथें ढा हरों ने वे ायना बंध साथें (१३२००) थाय. एम ए विकल्पें नव बंधहे ना नांगा (१६४००) थाय.

तथा नय, जुगुप्ता लीधे दश बंधहे ना नांगा (६६००) नय, तथा वे ।य वंधें नांगा (१३१००) हा ने बे ।य वंधें नांगा (१३१००) तथा त्रण ।यबंधें पण (१३१००) नांगा ।य. एवं दश हेतुना चार वि हपें थइ (४६१००) नांगा थाय.

एम नय, ज्ञुएसा अने बे कायवंधें अगीआर हे ना नंग (१३२००) नय अ ने त्रण काय लीधे (१३२००) ज्ञा ने ण काय लीधे (१३२००) चार काय ने जे (६६००) ए चार विकल्पें गीआर हेतुना (४६२००) थाय.

नय अने चतुष्कायवंधें बार हेतुयें नांगा ( ६६०० ) ज्ञगुष्सा अने चतुष्काय वंधें नांगा (६६०० ) नय, ज्ञगुष्सा अने त्रण कायवंधें नांगा ( १३२०० ) पांच कायवंधें नांगा (१३२०) एम सर्व मली वार हेतुना चार विकल्पें नांगा ( १९४२० )

पूर्वोक्त आत मध्यें नय, कुन्ना अने चार काय लीधे ( ६६००) नय अर्ने पांच काय लीधे ( १३२० ) कुन्ना अने पांच काय लीधे ( १३२० ) ए त्रण वि कल्पें थइनें तेर हेतुना ( ७२४० ) नांगा थाय.

पूर्वीक्त आतमांहे नय, कुन्ना अने पांच काय लीधे चौद हेतुना (१३२०) नांगा थाय. एम पांचमे गुणताएो ए साते विकल्पें थइने (१६३६००) नांगा थाय ॥५ए॥

अविरइ इगार तिकसा,य व अपमित मीस छग रहिआ॥ च वीस अपुवे पुण, डवीस अवि वि आहारा॥ ६०॥

श्रथ—पांच इंड्य अने बहुं मन, ए अविरित तथा पां थावरनी श्रविरित एवं (अविरइङ्गार के०) अगीआर अविरित तथा (तिकसायव के०) त्रीजा प्रत्याख्यानावरण कषाय चार. एवं पंदर बंध हेतु वर्जवा, तेवारें शेष बवीश बंध हेतु, प्रमत्तगुणवाणे उंधें होय अने विशेषादेशें त्रण वेदमध्यें एक वेद. संज्वलन ना चार कपायमध्यें पहेलो अथवा बीजो एक कषाय, हास्यादिक युगलमध्यें एक युगल. तेर योगमध्यें एक योग. ए पांच हे जधन्यपदें एक जीवने ए समयें होय, अने उत्कष्टा सात होय, तिहां स्त्रविदें आहारक अने आहारकिमश्र, ए वे योग न होय, तेथी त्रण वेद तेर योग साथें ग्रणतां उंगणचालीश थाय, ते मांहेथी वे रूप काढीयें, तेवारें साडत्रीश रहे. तेने युगल साथें ग्रणतां चम्मोतेर थाय तेने चार कपाय साथें ग्रणतां (१ए६) नांगा, ए पांच बंधहेतुना थया तेमध्यें नय जेलतां पण (१ए६) थाय तथा ज्ञा जेलतां पण (१ए६) एवं (एए१) व हेतुना नांगा थाय. अने नय तथा क्रजा, बे जेले सात हेतुना नांगा (१ए६) थाय एम सर्व मली त्रण विकल्पें थइने (११०४) नांगा, प्रमनग्रण वाणे लाजे. वंधस्थानक पांच, व अने सात, ए त्रण होय.

(अपमत्ति के०) अप्रमत्तगुणवाणे (मीसङ्गरिह्आ के०) आहारकिमिश्र अने विकियमिश्र, ए वे योग न होय. जे नणी आहारक तथा विकियशरीर करवा मांमतां तेनी पर्याप्तियें अपर्याप्तानें ए योग होय, तिहां तो लिंह्य प्रयुंजवा नणी प्रमत्त होय. वलतो अप्रमत्तगुणवाणे आवे, तिहां ए वे मिश्रयोग न लाने तेथी कपाय तेर अने योग अगोआर एवं (चडवीत के०) चोवीश वं थहेतु, डीवें होय अने विशेपादेशें एक जीवने एक समयें जघन्यपर्दे संज्वलनो एक कपाय, एक वेट, एक अगल अने अगीआर योगमध्यें एक योग एवंपांच होय त्यां अगीआर योग त्रण वेटसायें गणतां तेत्रीश थाय, तेमांथी स्त्रीवेदें आ हारक न होय. ते नणी एक रूप कहाहिथें. तेवारें वत्रीश रहे, तेने अगल नायं गुणतां चोग्रह थाय. तेने संज्वलन चार कपाय साथें गुणतां वशेनें गणतां नागा पांच वंथ हेतुना थाय, तथा नय नेलतां (१५६) अने खगुप्ता नजनां (१५६) एम (५११) नागा. ठ वंथ हेतुना थाय अने नय तथा

हा, बे नेलवाथी सात हे ना (१५६) याय एम ए बंधहेतुस्थानकें (१०१४) नंग, सा मे अ त्रगुणवाणे थाय

(अपुर्वे के ०) अपूर्वकरणनामें आतमे ग्रणताणे (प्रण कें ०) वली (अविज विआदारा के ०) वित्र य अने आदार , ए बे योग न दोय, जे नणी श्रेणी, औ दारि शरीरी पिडवजे, पण वैत्रिय अने आदार शरीरी पिडवजे नहीं, माटें ए बे हाढी नाखतां शेष संज्वलन चार षाय, वेद त्रण, हास्यादिक तथा योग नव. एवं सर्वे मली (वीस के ०) बावीश बंधहे जीं होय. तिहां पूर्वेली पेरें जयन्य हेतु पांच होय. तेमां हास्यादि ग्रुगलनें त्रण वेदसाधें गणतां व नंग याय, ते चार कषाय साथें गणतां चोवीश थाय. ते नव योग साथें गणतां बशें ने शोल थाय, तेमां नय नाखतां (११६) तथा छुगुप्सा नाखतां पण (११६) थाय. एवं (४३१) व बंधहेतुना नांगा जाणवा. अने नय तथा हा, ए बेसाथें नेलतां सात्र वांचेहे थाय. तिहां नांगा (११६) ए सर्वे मली आवशें ने चोश ह नांगा होय. तिहां बंधहेतुनां स्थानक, त्रण जाणवां ॥ इति स यार्थः ॥ ६०॥

अब हास सोल बायरि, सुहुमे दस वेअ संजलण ति विणा॥ खीणु वसंति अलोचा, सजागि पुबुत्त सग जोगा॥ ६१॥

श्रथ—ते बावीश वंधहेतुमांहेथी (श्रवहास के०) हास्य एट ले हास्यादिक व नोकषाय, बादरसंपरायनामा नवमे ग्रणवाणें न होय. तेथी शेष कपाय सा त श्रने योग नव. एवं (सोल के०) शोल वंधहेतु, (वायि के०) बादरसंप रायनामा नवमे ग्रणवाणे उपें होय, श्रने जघन्यपर्दे एक जीवने वे वे वंध हे तुनां स्थानक होय. संज्वलनो कषाय एक तथा योग एक. एवं वे होय श्रने उत्कृष्ट एक वेद सहित त्रण होय. एम वे वंधस्थानक होय. तिहां कषाय चार ने योग नव साथें ग्रणतां वे वंधहेतुना वित्रीश नंग थाय तथा वली कषाय चार, त्रण वेद साथें ग्रणतां वार नांगा थाय. ते नव योग साथें ग्रणतां (१००) नंग थाय. ए वे विकल्पना मलीने शरवाले एकशोने चुम्मालीश नांगा होय.

(सुहुमे के०) सूक्क्मसंपराय नामा दशमे ग्रणगणो (वैश्रसंजलणतिविणा के०) संज्वलनो क्रोध, मान श्रने माया, तथा त्रण वेद. एवं व वंधस्थानक विना श्रेप संज्वलनो लोन एक श्रने योग नव. एवं (दस के०) दश वंधहेतु, उंधें होय. श्र ने जधन्यपदें तो एक जीवने एक समयें वे वे वंधहेतु होय श्रने उत्कृष्टि पण

एक संज्वलन लोन अने एक योग, एवं बे, बंधहे ज होय. हीं निव योग होय, ते नणी नव नंग थाय. अहीं आं उत्क जयन्यप ं नथी.

(खीणुवसंति के०) ह्वीण वि बारमे गुणवाणे अने जपशांत है गी आरमे गुणवाणे ते पूर्वो दश हे मांहेथी (अज़ोना के०) वीतराग नणी ए क जोन न होय, तेथी नव योगज बंधहेतु उपें होय. अने ए जीवने ए स मयें जयन्यपदें एक योग होय, तेथी नव नव नंग, ब गुणवाणे होय.

अने (सजोगि के०) तेरमें सयोगी गुणवाणे (पुत्रुत्त कें०) पूर्वी एटले पूर्वें कहा। ते प्रमाणे वे मनना, वे वचनना अने त्रण । याना, एवं ( गजोगा के०) सात योगरूप सात वंधहेतु सामान्यें होय ने विशेषादेशें ए जीवने ए स यें एक यो ग होय, ते माटें सात योगना सात जंग होय, एम सर्व गुणवाणे जी वेंतालीश जाख, व्याशी हजार, सातशें ने सीत्तर बंधहेतुना जांगा होय। । इति स०। ६१॥

ए सत्तावन्न बंधहेतुयें करी छात मेनो बंध होय. तेवार पढ़ी ते बांध्या कर्म नो विपाककालें उदय होय. ते उदीरणाकरणें करी उदयावलीमांहे प्रवेशीयें, तेने उदीरणोदय कहीयें छने ते सर्वकर्म, सत्तायें होय ते जणी चौद गुणताणे ज्यां जेटला वंधादिकनां स्थानक संजवे ते, कहे हे. ए वात विस्तारें पंच संग्रहनी टीकामध्यें हे.

अपमत्तंता सत्त, ह म्मीस अपुव बायरा सत्त ॥ बंध इ वस्सुद्धमो ए, ग मुवरिमाऽबंधगा जोगी ॥ इर ॥

अर्थ-(अपमत्ता के॰) अप्रमत्त गुणवाणा लगें एटले एक मिश्रगुणवाणा विना मिय्यालयी मांमीने विष्ठा गुणवाणा पर्यत (सतह के॰) आयुःकमें विषे, तेवारें आव कमेनो वंध होय अने आयु न वांधे, तेवारें सात कमेनो वंध हो य. (मीस के॰) त्रीजं मिश्रगुणवाणं (अपुव के॰) आवमं अपूर्वकरण गुणवाणं (वायरा के॰) नवमं वादरसंपराय गुणवाणं, ए त्रण गुणवाणे आयुवंध न होय तेथी (सत्तवंधइ के॰) सात कमेनो वंध होय. अने (वस्सुहुमो के॰) सूझ्य संपरायनामा दशमे गुणवाणे एक आयु अने वीजं मोहनीय, एवे कमें, अतिविद्य कांध्यवसाय नणी न वंधाय, तेथी शेष व कमें वांधे अने (एगमुविरम के॰) उपन्ता उपशांतमोह, ह्वीणमोह अने सयोगी, ए त्रण गुणवाणे एक वेदनीय कमें विषे. नथा (अवंधगाजोगी के॰) अयोगी गुणवाणे कोइ कमें न वांधे, तेमारें अवंध होय होय ॥ इनि समुच्याथे:॥ इ०॥

हवे गुणगणे जदय अने सत्तानां स्थानक कहे हे.

आसुहुमं संतुदए, अडिव मोह विणु सत्त खीणंति॥ चन चरिम छगे अडिन, संते वसंति संतुदए॥ ६३॥

अर्थ-(आसुदुमं के०) मिष्याल ग्रणगणायी मांमीने दशा सूक्कासंपराय ग्रणगणा लगें (संतुद्व अठि के०) झानावरणीयादिक आठ कमेनी उदय तथा आठ कमेनी सत्ता पण होय, अने (मोहविणुसत्तखीणंति के०) एक मोह नीय विना ह्वीणमोहनामा बारमे ग्रणगणे सात कमेनो उदय तथा सात कमें नी सत्ता होय, तिहां वीतराग हे. ते नणी मोहनीयनो उदय न होय अने सत्ता पण न होय अने (चिरमङ्गे के०) तेरमुं सयोगी अने चौदमुं अयोगी, ए हेझां बे ग्रणगणे (चठ के०) नाम, आयु, गोत्र अने वेदनी, ए चार कमेनो उदय तथा एज चार कमेनी सत्ता पण होय, अने (अठ उसंते उवसंतिसंतुद्व के०) उपशांतमोहनामें आगीआरमे ग्रणगणे मोहनीयकमेनो उदय नथी. तेथी मोह नीय विना सात कमेनो उदय अने सत्ता आठ कमेनी होय, केम के अहीं मोह नीय उपशस्तुं हे, तेथी एनो उदय नथी, परंतु सत्तायें हे. एम ग्रणगणे उदय स्थान तथा सत्तास्थानक कहां॥ इति स यार्थः॥ ६३॥

हवे गुणवाणे चदीरणा स्थानक हे हे.

इरंति पमत्तंता, सगव मीस वेश्र श्रा विणा॥ बग श्रपमत्ताइ तर्र, ब पंच सुदुमो पणु वसंतो॥ ६४॥

थ-(पमतंता के०) मिष्यालगुणवाणाथी मांभीने प्र तगुणवाणा लगें ए मिश्र णवाणां विना शेप पांच णवाणे (सगठवहरंति के०) आव कमेनी वद्दीरणा होय. तेमां बेहेली विलीपें आयुःकमेनी वद्दीरणा न होय, तेवारें शेष सात कमेनी वद्दीरणा होय तथा (मीसठ के०) मिश्रगुणवाणे काल न रे, तेथी आ नी अंत्याविता पण तिहां न होय, तेथी तिहां विकमेनों वद्दीर होय. अहीं आं वद्दीरणास्थान आव 'जाणवुं, अने (अपमत्ताइत के०) अप्रमत्त, अपूर्वकरण, ने अनिवृत्ति, ए त्रण गुणवाणे (वेअआविणा के०) एक वेदनीय अने बीजं आयु, ए बे कमेनी वद्दीरणा न होय. तेविना शेष (वग के०) व कमेनी वद्दीर ए कमेनी वद्दीरणा न होय. तेविना शेष (वग के०)

रणा न होय केवल उदयेंज होय तथा ( पंचसुहुमो के०) सू संपराय दशमें गुणवाणे आवलीमात्र रहे, तिहां लगें पण ए व मेनी उदीरणा होय अने वेहली आवलीयें मोहनीयनी पण उदीरणा टलें, तेवारें विह्नीय विना शेष पांच कमेनी उदीरणा होय, माटें वे उदीरणानां स्थानक होय, ने (पणुवसंतो के०) उपशांतमोहनामा अगीआरमे गुणवाणे विह्नो उदय नथी हें एनी उदीरणा पण न होय. शेप ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, ना , गो अने अंतराय. ए पांच कमेनी उदीरणानुं स्थान होय॥ इति स यार्थः॥ ६४॥

पण दो खीण इ जोगी,ऽणुदीरगु अजोगि घोव वसंता॥ संख गुण खीण सुदुमा, निअहि अपुव सम अहिआ॥ ६५॥

अर्थ-(पणदोखीण के०) एहीज पांच कमेनी उदीरणा, ऋणिमोहनामा वारमा ग्रणवाणानी अंत्याविता । याकता लगें होय,अने बेहली आवलीयें झाना वरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय,ए त्रण मेनी उदीरणा टक्के, तेवारें शेष नामकमे, अने गोत्रकमे, ए वे मेनी उदीरणा होय. एटके वे उदीरणानां स्थानक होय अने (इजोगी के०) एहिज वे कमेनी उदीरणा सयोगीग्रणवाणे पण होय तथा (ऽणुदीरगुअजोगि के०) अयोगी चौदमे ग्रणवाणे कोइ कमेनी उदीरणान होय, जे नणी उदीरणा ते करण हो. ते योगथी थाय. ते योग तिहां नथी ते माटें उदीरणा पण न होय जे नणी योग ते करणवीर्य कहीयें. ते नणी योग करण नहीं तेथी अयोगी अ दीरक कह्या.

हवे चीद गुणवाणे वर्तता जीवमध्यें कया गुणवाणे घणा पामीयें ? अने कया गुणवाणे योडा पामीयें ? तथा कया गुणवाणे सरखा पामीयें ? एम अव्पवहुल कहे हे. ते मध्यें मिण्याल, अविरति, देशविरति, प्रमन्त, अप्रमन्त अने सयों गी. ए ह गुणवाणे वर्तता जीव, लोकमध्यें सर्वदा पामीयें, तथी ए ह गुणवाणें अज्ञ्च्य हे अने श्रेप आह गुणवाणाना जीव, केवारेंक लोकमध्यें पामीयें अने के वारेंक ज्ञ्च्यपणुं पण पामीयें, तथी तेनु अव्यवहुल अनियतपणे होय, ते अपेक्तायें विचाणुं हे. तिहां (थोवनवसंता के०) सर्वधिकी योडा न्यशांतमोह नामे अपित्रायमे गुणवाणे वर्तता जीव होय, जे नणी न्यश्मश्रेणीना आरंनक न्यस्थ परं चोपन्न जीव पामीयें. ते थकी (संखगुणखीण के०) संख्यातगुणा अधिक जीव छीणमोहनामा वारमे गुणवाणे वर्तता पामीयें, जे नणी क्रपकश्रेणी परिव

जः। जीव, ए ो ने । त पामीयें, ते अपेक्सायें उत्क पर्णे खेवा. । विपरी तपणे होय तथा (सुद्धा के०) सूक्ष्मसंपराय ग्रुणवाणुं दशं, (नि हि के०) निवृत्ति बादर गुणवाणुं नवं, (पुत्र के०) पूर्व रण गुणवाणुं । तंए त्रण गुणवाणां निव्हित्त बादर गुणवाणुं नवं, (पुत्र के०) सरखा जाणवा ने क्हीण ो ह गुणवाणायकी (हिआ के०) विशेषाधिक जाणवा. जे जणी हीं ं चो पन उपश श्रेणीना तथा एकशोने । क्हप श्रेणीना. एवं ए । ने । उत्क पर्दे ए ण णवाणे वर्तता जीव पा । वें, । दें क्हीण । दिना ए । ने । वध । विशेषाधि । अने सर्व जीवने श्रेणीयें ए ण गु वा ं हो । दें परस्परें सर ं जाणवां।। इति स यार्थः॥ ६५॥

जोगि अपमत्त इयरे, संखगुणा देस सासणा मीसा॥ अविरइ अजोगि मि ा, असंख च रो वेणंता॥ ६६॥

र्थ-तेथकी (जोगि केण) सयोगी एठाएो वर्त्तता योग हि केवली जीव, संख्यातग्रणा जाणवा. जे नणी होटी धक्त उत्कृत पा विं, हिं सं णा , तेथकी (प त्र के०) प्र ण ता पो वर्ता वि, सं । णा जाणवा जे नणी ए ोटीसह क प्राण लाने, ते ी (इयरे के 0) इतर जे प्रमत्त एवा ं तेने विषे वर्तता जीव, (सं ग्रुणा के०) सं ात णा जा वा.जे नणी अप्र ादकालचीप्र ादनो ।ल संख्यातगुणो हो ते पेक्स्ये केवारें अधिका पण होय, तेथकी (दे के०) दे विरतिग्रणवाणाना वि, ख्यात गुणा होय. जेनणी गर्नेज, पंचेंडि्य, तिर्येचने पण दे विरतिगुणवा ं हो य, ते तो संख्याता हो. ते माटें का तेथा। (सा णा केण) स्वादन एों व ा वि, जो होय तो, जत्क पदें संख्यात एा होय, था केवारें जत पदें पए होय ने जघन्यें केवारें बे, ए ए पए होय, ते ी वली ( तिसा के ) विश्व एवाएो वर्त्तता जीव, सं तिगुणा होय, के साखादनना विल प्रमाण लिथकी मिश्रनो लि अंतर हुर्च है, ते ात णो हो ते हिंक ा तेथ श ( विरइ के ) विरतिनामा ग्रेथा वाणाना जीव, संख्यातगुणा हो, के के सर्वदा ए एवा ंचारे गति ध्यें पा विं, तथा काल पण घणो है. तेमाटें ा. तेथ ी ( जोगी के ) योगी विन, नंतगुणा हे, जेनणी सिद्धना जीव पण योगरहित हे, तेथी तेने पण

कहीयें. ते अनंता हे. माटें अनंतगुणा कह्या ते थकी (मिन्ना के०) मिष्या हिए जीव, अनंतगुणा हे. केम के सिक्यकी निगोदीआ जीव, अनंतगुणा हे, ते सर्वमिष्यात्वी हे. तेमाटें सिक्यकी अनंतगुणा कह्या. अहीं आं देशिय तथी मांमीने (चहरों के०) चार पर्दे (असंख के०) असंख्यातगुणा कहीयें. अने (इवेणंता के०) एक अयोगी अने बीजा मिष्यात्वी, ए बे पर्दे अनंतगुणा कहीयें. एम चौद गुणवाणे दश बोल जीवजेदादिक विचाखा. अहीं आं एक साला दन, वीजं मिश्र, त्रीजं अपूर्वकरण, चोषुं अनिहित, पांच स् संपराय, ह हं उपशांतमोह, सातमुं हीणमोह अने आवमुं अयोगी, ए आव गुणवाणे जीव केवारेंक पांमीयें अने केवारेंक न पामीयें अने केवारेंक एक गुणवाणे पामीयें, केवारेंक पांगवों यें जात जांगा पामीयें, केवारेंक अनेक पामीयें, माटें ए आव गुणवाणे एक साथें आव अने अनेक साथें आव, एवं शोल नांगा तथा दिक संयोगी नांगा अवविश्व, ते गुणवणाना त्रिकसंयोगी नांगा उपान, चतुःसंयोगी नांगा अवविश्व, सप्त संयोगी नांगा आव, अने अष्टसंयोगी नांगा एक, तेना एकत्वप्रयक्तें करी गुण ता शरवाले थइ पांशवशेंने शाव नांगा थाय ॥ इति समुच्चयाथेः ॥ इह ॥

্য	<b>G</b> }	<b>₹</b> Ę
8	२ ঢ ˈ	र र श
ច	បុឝ	<b>ម</b> ខ
- १६	១ ២	११२०
३ १	บัธ	र ७ए२
६ंध	য ত	१ उल इ
र २ ज	Ū	र०२४
ភព <i>៩</i>	<b>~</b> {	១បឝ
		६५६

गुणक	ប	В	६	ષ	ย	₹	হ	?
नाग	एक	दिक	त्रिक	चतु	पंच	पट्क	सप्त	अप्ट
हार	?	হ	₹	ष्क ध	ų	६	9	ប
संयोग नांगा	ัั	ខប	<b>ए</b> ६	90	<b>ध</b> ह	হ ত	ច	?
एक ग्रं अने क	२	ย	ប	१६	∌ १	६४	१ २ ७	१५६

एम गुणुगणे वनता जीवनुं छह्पबहुत्व कहीने हवे कर्मनो छपशम, ह्य उदय छने परिणामादिक, नावजीव एटले नावजीवने गुण दिक संनद् पी नावनानाव नंख्यासिवातिक पण नाम नवमुं हा

## वसम खय मीसोदय, परिणामा छ नव ार इगवीसा॥ तिख्य जेख्य सन्नि वाइख्य, सम्मं चरणं पढम जावे॥ ६९॥

थे- ोह्नीयना चपरामथ है। प्रगटघो एवो जे जीवस्वनाव ते ना र ( इवस के ० ) छोपशिम नाव हीयें ा जे मीना (खय के ० ) ऋय ी एटले मूल उ हेदय ी थयो एवो जे जीवस्वनाव, ते द्वायि हीयें. त । जे ( शिस के 0 ) उदय आव्या मेनो क्या हिया है ने जे उदय नथीं व्या तेना दयें र ने वेदवे तेना अंतराखें प्रगटचो जे जीवस्वनाव, ते क्वायोपश्रम हीयें, एने मिश्र पण हीयें (उदय के ) मेना उदयथी थयो जे जीवनो पर्याय, ते औद्य नाव जाणवो अने (परिणा कि ) औद्य खनावपणे परि णमबुं, ते पारिणामि नाव, एना नु में "सादि अनादि " ( नवनारइगवीसाति नेख के ) बे, नव, ढार, ए वीश ने ए नेद एवा एटले औपश मि नावना बे नेद, क्वायि ना नव नेद, मिश्रनावना खढार नेद, छौद्यि ना वना ए वीश नेद, पारिणामि नावना ए नेद, ए सर्वे जीने मूल पांच नाव ना उत्तरनेद त्रेप जाणवा ने बें, ए, ार नाव ए वा मखे तेने (सिंह वाइ ख के o ) सहि पात हीयें, तेथी थयो जे जीवनो पर्याय, ते बहो साहि पाति नाव जाणवो. इवे ते विवरीने हे हे (सम चरणंपढ नावे के ) नंतानुबं धीआ चार अने दरीन ोहनीय ए, ए सा प्रकृतिनो रस तथा प्रदेश न होय ते श्रीपशमि हीयें तेथकी प्रगटी जे त्वरुचि, े श्रीपशमि सम्यत्व हीयें. ने शेष प शिश मोहप्रकृतिनो उपश धयाधी जे स्थिरतारूप चारि प्रगट थाय. तेने औप मि चारि हीयें. ए य ौपशमिक नावना वे नेद, क ।॥ इति स यार्थः ॥ ६७ ॥

> बीए केवल जुअलं, सम्मं दाणाइ लिघ पण चरणं॥ तइए सेसुव छगा, पणलिबी सम्म विरइ डगं॥ ६०॥

श्रथ—(बीए के॰) हवे बीजो हायिकनाव तेना नव नेद कहे हैं। (केवलज्ञ लं के॰) एक केवलज्ञानावरणीयना ह्रयथी उप ं जे केवलज्ञान ते प्रथम ने द, बीज्ञं केवल दर्शनावरणीयना ह्रयथी उप ं जे केवल दर्शन, ते बीजो नेद, ए केवल गल ह्यायिकनावें जाणवों। जे नणी केवलज्ञानावरणीय ने केवलद द्दीनावरणीय, ए सर्वघातिनी प्रकृति तेनो सर्वधा नाश खवाथी आत्मानो सर्वधु ए प्रगट थाय. ते ए वली केवारें अवराय नहीं, ते नणी ए बे क्षायिकनावें जाणवा तथा अनंतानुबंधीआ षाय चार ने दर्दीन ोहनीय त्रण, एवं सात प्रकृति क्ष्य थइ तेथी जे आत्माने तत्वरुचि ग्रण प्रगट थाय, ते त्रीजो क्षायिक (सम्मं के०) सम्यक्त नामे नेद जाणवो. ए कमे क्ष्यथी होय, तथा (दाणाइ लिइपए के०) दानांतरायादिक पांच प्रकृतिना क्ष्यथी उपनी जे पांच क्षायि क लिइप एटले एक दानलिइध, वीजी लानलिइध, त्रीजी नोगलिइध, चोथी उप नोगलिइध, पांचमी वीर्यलिइध, जेणे करी दानादिक विषयिणी इहा नथी ते दाना दिक पांच लिइध क्षायिकनावें जाणवी। ए पांच नेद साथें प्रवेला ए नेद मेल वतां आठ नेद खया. तथा सर्वजीवने अनयदान देवा समर्थ थया अने पचीश मोहनीयनी प्रकृतिना क्ष्यथी प्रगट थयो जे (चरणं के०) चारित्रगुण, तेने क्षा यिकचारित्र कहीयें। एवं नव नेद, क्षायिकनावना थया.

(तर्एसेसुवर्रगा के०) त्रीने क्योपशमिक नावें शेष एटले एक केवलकान अने वीजं केवलदर्शन, ए वे विना शेप दश उपयोग तथा (पणलिंद्ध केण) दानादिक पांच लिब्ध वदास्थनी लेवी, एवं पंदर तथा (सम्म के०) द्वायोपशमिक सम्य क्ल अने (विरइड्रगं केण) विरति दिक, एट छे सर्वविरति अने देशविरति, एवं अढार नेद द्वायोपश्मिक नावना जाणवा. तिहां मतिक्वानावरणीय अने श्रुतक्वानावरणीय चकुदरीनावरणीय, श्रचकुदरीनावरणीय, ए चारनो जदय, वारमा गुणवाणा लगें दे श्याती इ होय,ते उद्यावलीप्रविष्ट रसने क्यें अप्रविष्टरसने अनुद्यरूप उपशमे अ ने केटला एक स्पर्ककने उद्यें उद्यानुविद हायोपशमिक होय तथा अवधि अने म नःपर्यव, ए वे ज्ञानावरण तथा अचकुददीनावरण अने अवधिददीनावरणना स विवाती रस स्पर्धकने उद्यें केवल औद्यिक नाव होय. अने जे वारें विशुद्धाध्य यसायविज्ञेषे ते देशघातीपणे परिणमावी मंदरस करी जदयावलीप्रविष्ट छंशने क्यें तथा अप्रविष्टने छपशमे अने वर्तमानने छट्यें जे अवधि, मनःपर्यव, चकुढ़ शैनादिक गुण प्रगटे, ते द्वायोपश्मिक जदयानुविद होय. तथा मोहनीयनी प्र कृति जे प्रथमना बार कपाय धने तेरमुं मिष्यात्वमोहनीय, ए तेर प्रकृति सर्व गानिनी है. तेनो रमोदय हतां हायोपशम न होय शहे प्रदेशोदय हतां होय, जे नणी ने प्रदेश वेदतां देशवातीरसमाहे छाणीने वेदे, तेथी ते सर्ववातीया न हो यः जीय मोहप्ररुतिने रसोदय तथा प्रदेशोदय हुते पण देशवातीया नणी

पण औदियकनावें जाणवी. एवं सत्तर नेद थया. तथा (वैद्या के०) वेद त्रण स्त्री, पुरुष, नपुंसकनी अनिलाषारूप नाववेद पण मोहनीय कमेना उदयथी हो य. तथा स्त्री आदिक चिन्हरूप इत्यवेद, ते अंगोपांग ना मेना उदयथी हो य ए इत्य नाव वेहुने पण औदियकनाव i लेवा. एवं वीश थया. (मिंशे के०) मिण्यालमोहनीयना उदयथी विपरीत अद्धानरूप मिण्याल होय. ए पण औदियक नाव जाणवो. ए पूर्वाचार्ये ए वीश औदिय नाव कह्या, ते थी अमें पण कह्या. बीजा पण जे जे में प्रकृतिना उदयथी जे जे जीवना पर्याय उठे, ते ते सर्व औदियकनाव हीयें, तेवा औद्धाय नावना असंख्याता नेद थाय, ए (तुरिए के०) चोथा औदियक नावना नेद ह्या.

हवे पारिणामिक नावना नेद हे हे. जे मुह जावा योग्य जीवस्तनाव ते (नवा के॰) नव्यपणुं ए सहज सिद्ध हे. तेथी प्रथम पारिणामि नाव जाणवो, बीजो मुक्ति जावाने छयोग्य जे पर्याय, ते (छनवन के॰) छनव्यत्व नामे छ नादि छनंत पारिणामिक नाव, बीजो जाणवो. (जिछन के॰) इव्यप्राण त था नावप्राण धारणस्वनाव जे जीवपर्याय, ते त्रीजो जीवत्व कहीयें. ए पण छनादि छनंत सिद्ध हे परंतु कोइनो कस्त्रो नथी. एम ए त्रण नेद जीवना (परिणामे के॰) पारिणामिकनावें जाणवा. ए सर्व थइने त्रेपन छन्तरनाव थया.

तथा नथी जीव एवो जे पर्याय ते अजीवलपारिणामिक अनादि अनंत धर्मास्तिकायादिकने विपे होयः बीजा पण प्रयोगसा, विस्नसा अने मिश्रसा, प्रयोगयी कपडुं, रोटी, विश्रसा ते इंड्धनुप, मिश्रसा ते खीचडी, ए त्रण नेदें मिश्रनावें ज्ञानादिक, पारिणामिकनावें जीवलादिक, औदियकनावें देवगत्यादिक ॥ इति समुञ्जयार्थः ॥ इत् सम् सम् सम् सम् सम् सम्यार्थः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्थः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्थः ॥ इत् सम्यार्थः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्यार्यः ॥ इत् सम्य

हवे ए उपशमादिकनावना नांगा कहे हे.

चन चन गईसु मीसग, परिणामुद्र एहि चनसु खइएहिं॥ नवसम जुएहिं वा चन, केविल परिणामुद्र य खइए॥ १०॥

श्रथे— द्वे ए श्रापशमादिक पांच नावना दिकसंयोगें दश नंग श्रने त्रिक नंयोगें दश नंग तथा चतुःसंयोगें पांच नंग श्रने पंच संयोगें एक नंग, मलीने गांभ नांगा याय, ए ठवीश सान्निपातकना नेंद थाय, ते मांहेला ठाँचेद जीवने विषे सोय, तेमां त्रण नेंद्र तो चारगतिशाश्री तेना चार त्रिक वार नेंद्र थाय. अने त्रण वीला होष. एम मूलनंग व होयः वाकी सन्निपातना वीश नंगनो तो संनव न होय, शेष वनो संनव होय, ते व नंगना वली उत्तर नेद, गतिश्राश्री पंदर थाय, ते कही देखाडे वे

ते माहे एक त्रिकसंयोगी इशमो नंग, तेना (चडगईसु के ) चार गित छा श्री (चड के ) चार नेद थाय. ते कही देखाडे हे. जे नणी महुप्यनी गितमां महुप्यने (मीसग के ) मिश्रनावें ज्ञान, छज्ञान छने दर्शनलिध एक छने (प' रिणासुद्दि के ) पारिणामिकनावें जीवपणुं तथा नव्यपणुं, छने छौद्यि । कनावें महुप्यनी गित, सेक्या, वेद छने कपाय होया ए प्रथमनंग जाणवोः

तेमज देवताने पण मिश्रनावें ज्ञानादिक अने पारिणामिकनावें जीवलादिक तथा औदियकनावें देवगत्यादिक देवप्रायोग्य, ए बीजो नंग जाणवोः

तेमज तिर्थेचमध्यें पण मिश्रनावें ज्ञानादिक छने पारिणामिकनावें जीवला दिक तथा औद्यिकनावें तिर्थेचगत्यादिक, ए त्रीजो नंग जाणवोः

तेमज नरकगतिमध्यें पण मिश्रनावें ज्ञानादिक अने पारिणामिकनावें जीवत्वादि क तथा औद्यिकनावें नरकगत्यादिक,ए चोथो नंग जाणवो. एम त्रण नाव एक जीवने मखे,तेथी ए त्रिकसंयोगीआ नांगा चार सूख, नंग एक दशमो जाणवो.

तथा एहिज (चडमु के॰) चार गितना सित्रया पंचेंडिय जीवने पूर्वोक्त त्र ण नावनी साथें चोथो (खइएहिं के॰) हायिकनाव मेलवीयें, तेवारें चतुःसं योगी नांगो थाय. एटलें हायिक सम्यक्दिए जीवने हायिकनावें हायिकसम्यक्त छने मिश्रनावें ज्ञानादिक तथा छौदियकनावें मनुष्यगत्यादिक छने पारिणामि नावें जीवत्वादिक, ए चार नाव मले, तेथी ए चतुःसंयोगीना चार गितनी छ पेहायें सान्निपातिकना चार नांगा होय.

तेमन वली (वा के॰) अथवा ( उवसमज्जएहिच के॰) उपशम सम्यक्त सहित करीयें, तेवारें औपशमिक सम्यक्टिएने औपशमिकनावें औपशमिकसम्य क्ल अने मिश्रनावें ज्ञानादिक तथा औदियकनावें मनुष्यगत्यादिक तथा पारिणा मिकनावें जीवलादिक, ए चार गतिना जीवनें होय. तेथी एना पण चार नंग थाय.

एम चार गितना नेदें करी त्रण नावना वार नांगा थया तथा (केविनपिर णामुद्यखड्ए के०) केविन तेरमे अने चौदमे गुणवाणे क्वायिकनावें केविन कानादिक नव होय, अने औद्यिकनावें मनुष्यगत्यादिक त्रण होय तथा पारि णामिकनावें एक जीवल होय, एम त्रिकसंयोगी नांगो एक होय, अहीं केविन ने घातियां कमें न होय. तेथी ि श्रनाव तथा श्रीपशमिकनाव, ए बे नाव न हो य. ए त्रिकसंयोगीनो एकज नवमो नांगो होय. श्रहींश्रां केवली मनुष्यज होय, परंतु होप त्रण गतिमध्यें न होय. तेथी एकजनांगो होय. एवं तेर नांगा थया.

हवे दिकसंयोगिविकना नांगा कही देखाडे हे. एक औपश्मिक ने द्वायिक, बीजो औपश्मिक ने मिश्र, त्रीजो औपश्मिक ने औदियक, चोषो औपश्मिक ने पारिणामिक, पांचमो द्वायिक ने मिश्र, हो द्वायक ने औदियक, सातमो द्वायिक ने पारिणामिक, ए नांगो, सिद्धमां होयः आहमो मिश्र ने औदियक, नवमो मिश्र ने पारिणामिक, दशमो औदियक ने पारिणामिक, ए दश दिकसंयोगी पयाः ते मध्यें सात हो नांगो सिद्धनो वसतो जाणवो. शेष नव नंगश्चर्य हे

हवे त्रिकसंयोगी नांगा कहे हे. एक छौपशमिक, क्षायिक ने मिश्र, बीजो छौ पशम, क्षायिक ने छौदियक, त्रीजो उपशम, क्षायिक ने पारिणामिक, चोषो उपशम, मिश्र ने छौदियक, पांचमो छौपशमिक, मिश्र ने पारिणामिक, हो छौपशमिक, श्री दियक ने पारिणामिक. सातमो क्षायिक, मिश्र ने छौदियक. छातमो क्षायिक, मिश्र ने पारिणामिक, नवमो क्षायिक, छौदियक ने पारिणामिक. ए केवलीने होयः दशमो मिश्र, छौदियक ने पारिणामिक, ए नांगो, चार गतिना जीवनें होयः ए त्रिकसंयो गी दश नांगा ययाः तेमध्यें नवमो नांगो, केवलीनो छने दशमो नांगो, चार गतिना जीवनो. ए वे नांगा वसता ते विना शेष छात नंगशून्य हे

हवे चतुःसंयोगी नांगा कहे हे. एक छोपशमिक, क्षायिक, मिश्र ने छोदियक, ए ग्राम्य हे. बीजो छोपशमिक, क्षायिक, मिश्र छने परिणामिक, ए पण शून्य हे. त्रीजो छोपशमिक, क्षायिक, छोदियक छने पारिणामिक, ए पण शून्य हे. चोथो छोपशमिक, मिश्र. छोदियक ने पारिणामिक, ए नंगो चार गतिना छपशम सम्यक्टि जीवने होय. पांचमो क्षायिक, मिश्र, छोदियक छने पारिणामिक, ए नंगो चार गितना क्षायिक सम्यक्दिए जीवने होय.

श्रीपगम. क्षायिक, मिश्र. श्रीदियक अने पारिणामिक, ए पंच संयोगी सान्निपा तिक्ताय. उपग्मश्रणीयं वर्त्तता मनुष्यनें नवमे, दगमे अने अगीश्रारमे, ए त्रण गुणवाणे द्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७० ॥

> खय परिणामे सिद्धा, नराण पण जोगु वसम संहीए॥ इय पनर सन्निवाध्य, नेत्या वीमं यसंनिविणा॥ ११॥

र्थ- दिकसंयोगीत्रा मांहेलो सातमो नांगो, (सिदा कें) सिद्ना जीव नें पामियें. जे नणी सिद्धने ज्ञान, दरीन, सम्यक्ख, (खय केण) ऋायि नावें हे. इ ने जीवत्वपणुं, (परिणामें के ) पारिणामिकनावें हे. ए बे नावनो मेलाप व सिद्भें हे. बीजो कोय न संनवे एवं चौद साहि पातक नाव थाय. तथा उप सम्यकूहि (नराण के ) नुष्य ( चवसमसेढी ए के ) चपशमश्रेणी रे, ते ने उपशमश्रेणीने विषे नवमे, दशमे अने अगीआरमे, ए त्रण गुणवाणे (पण जोग के ) पांच जावनो एक जीवने विषे एक लमयें मेलाप होया जे जणी तेने बाद्रकपायनें उपशमाववे करी श्रीपशमिकनावें चारित्र होय श्रने हा यिकनावें सम्यक्त होय. तथा मिश्रनावें ज्ञान, दरीनादि होय, श्रीद यिकनावें मनुष्यगत्यादिक होय अने पारिणामि नावें जीवलादि ए पंचसंयोगी साहिपातिक होया ए रीतें सर्व मजी ह साहि पातिक होया जे नणी ए व नांगें कोइ पण जीव पामीयें, पण ए व नांगा खाली न होय. ए जंगना वली पंदर नांगा थाय, जे नणी चार गतिमां हे मिश्र, ौद्यि ने पारिणारि , ए एक त्रि संयोगी नंग पामियें. तथा द्वायिक, मिश्र, औदियक ने पारिणारि तथा औपशमिक, मिश्र, औदियक ने पारिणामि , ए बे चतुः संयोगी नांगा पा वियें. ए त्रण नांगा, चार गति साथें गुणीयें, तेवारें बार नांगा याय अने तेरमो केवलीने द्वायिक, औदयिक अने पारिणामिक, ए त्रिकसंयोगी एक नांगो तथा चौदमो सिदने ऋायिक, पारिणामिक ए दिकसंयोगी एक नांगो होय तथा पंदर मो उपशमश्रेणीयें मनुष्यनें ऋायि ,सम्यक्त्वें पंच संयोगी एक नांगो होय, (इ पनरसि वाइख के 0) ए पंदर नेद, साहि पातिकना वसतां होय, शेष दिकसंयोगी नांगा नव, त्रिकसंयोगी नांगा आव, चतुःसंयोगी नांगा त्रण, एवं (ने ावी सं संनविणो के 0) वीश नेद असंनावी एटले शून्य हे. केवल नांगा उपजाव वानें अर्थें देखाडवां पण तिहां कोइ जीवनेद नथीं पा ता ॥ ७१ ॥

ह्वे ए औपश्रमादिक नाव आत कमेने विषे विवरीने देखाडे हे. ोण मैनो उपश्रम, कोण कमेनो क्योपश्रम, कोण कमेनो क्य, कथा मैनो उदय, कोण कमे, पारिणामिकनावें होय? ते कहेहे.

मोहो वसमो मीसो, च घाइसु अ कम्मसु असेसा॥ धम्माइ पारिणामिअ, नावे खंघा दइ एवि॥ १२॥

अर्थ-(मोहोवसमो के॰) मोहनीय मैनो उपश होय. जे राखें ढांक्यो प्रि दीपे नहीं, तेम ज्यां कपायनो उदय न होय, तेने उपश हीयें. अहींआं रसनो तथा प्रदेशनो उदय न होय. तथा (ि। सो के॰) क्रायोपश एट हो जे उदयप्राप्त रस तेने नोगवी, क्रय पमाड्यो अने जे उदय नश्री आव्यो ते अ दयरूप उपशम कस्यो, तेनी वच्चें जे उदयनुं आंतरुं, ते क्रायोपश रसोदयनी पेक्सयें जाणबुं. ते क्योपशम, (चडघाइसु के॰) एक ज्ञानावरणीय, बीखं दर्शनावरणीय, त्रीखं मोहनीय, चोधुं अंतराय. ए चार घातीयां कमे छे. जे नणी ए ज्ञानावरणादिक जे हो, ते जीवना ग्रणप्रत्यें हणे छे. ते नणी एनो क्योपशम नाव होय. तेणे क री ज्ञानादिक ग्रणनुं तरतमपणुं होय.

अने एथी (असेसा के०) शेष रह्या जे त्रण नाव एटले एक क्वायिक, बीजो औदिष क, त्रीजो पारिणामिक, ए त्रण नाव (अफ्कम्मसु के०) सर्व आते कर्मने विषे होय.

एटले मोहनीय कमेने विषे पांचे नाव होय छने झानावरणीय, दर्शनावरणीय छने छंतराय, ए त्रण कमेने विषे एक छौपशमिक विना शेप चार नाव होय तथा नाम, गोत्र. छायु छने वेदनीय, ए चार कमेने विषे एक झायिक, बीजो छौदियक, जीजो पारिणामिक, ए त्रण नाव पामीयें. एम कमेनी छपेकायें नाव कह्या

ह्वे श्रजीवनी श्रपेक्षायें नाव कहे हे. (धम्माइपारिणामिश्रनावे के०) एक धमितिकाय, वीजो श्रधमीतिकाय, त्रीजो श्राकाशातिकाय, चोथो प्रजलातिकाय, पांचमो काल. ए पांच इत्य, श्रनादि पारिणामिकनावें हे. केम के पोत पोताने नावेंज परिणम्या हे. पण ते परनावें परिणमता नथी ते माटें श्रनादि पारिणामिक नावें हो. तेमांहे पण पुजल ६ इणुकादिक (खंधा के०) खंध ते सादिपारि णामिक नावें होय तथा श्रनंतप्रदेशी पुजलस्कंध ते (उद्दृश्वि के०) श्रोदिक नावें पण होय. जे नणी कर्मपुजल खंध. जीव संवंधें पुजलविपाकनी कर्म प्रकृतिने उद्यें श्रोदािकादिक नोकर्मना पुजलनेविषे वर्णादिक होय, माटें श्रनंतप्रदेशी स्कंथ. कर्मवर्गणादिक पुजल, ते सर्व श्राद्विकनावें होय. ग्रद्धपणं ठांमे, घटे. मटे, ते माटें ॥ इति समुज्ञवार्थः ॥ इत्र ॥

ह्ये एक जीवने जे जे गुणवाणे जेटला जेटला नांव होय, तिहां तिहां तेट ला नेटला नांव कहे हे. मूल नावनी ध्येक्संयें मिच्यात्व, साखादन ध्यने मिश्र. ए जाण गुणवाणे मिश्रनांचें खड़ानादिक दश उपयोग होय ध्यने छोदियकनांवें गत्यादिक होया तथा पारिणामि नावें जीवल, न लादि ए हि योगी नां गो औपश्चिम अने क्विय , एवं बे विना होय.

सम्माइ च सु तिग च , नावा च पणु वसा गुवसंते॥ च खीणाऽ पुवे ति, त्रिसेस गुण । एगे गजिए॥ ७३॥

थी—(सम ।इच ग्रुस के । स्यक्वादि चार ग्रुण गणे एट जे चोथे, पां मे, विं ने सातमे, ए चार एगणे (तिगच ग्रावा के । ए थवा ।र ना व होय. एट जे जो क्रायोप शि सम्यक्व होय, तो ए क्रायोप थि नावें सम्यक्व, क्षान, दर्शन ने विरितपणुं होय, बी जुं औदिय नावें गलादि होय, शिं पारिणामि नावें जीवल, नव्यत्व होय, ए त्रिकसंयोगी नांगो ए होय. अने क्षायिकसम्यक्दि ने ए क्षायिकनावें सम्यक्व होय, बीजो क्षायोप ि नावें ज्ञानादिक होय, शिजो औदिय नावें गलादि होय ने गोयो पारि णामिक नावें जीवल, नव्यत्व होय. ए चार नाव होय. ने ते ज औपशिम सम्यक्दि ने पण क्षायि सम्यक्दि हिनी पेरें ण साहि पाति होय ने चोथो गिशमिकसम्यक्त्व होय. ए क्षायोप मि सम्यक्टिने ए नाव होय, त था क्षायि अने औपशि म्यक्टि ने चार चार नाव होय. ने वे जीव । श्रियी तो पांचे नाव होय.

तथा (च उपणुवसाम वसंते के ०) हीं ं ौपशि ते नव ं ने द ं एवाणुं जाण उं. तथा उपशांत ते गी रिमुं गुण वाणुं जाण उं. ए ण ण वाणे एक जीवने उपशम श्रेणी करतां नवमे, दशमे ने अगीआरमे, ए त्रण गुण वाणे च उपण एट जे चार तथा पांच जाव होय, ते विश्वे रितें के, एक हायोपशिमक जावें जातादिक होय, बीजुं औदियक जावें गत्यादिक, त्रीजुं पारिणामिक जावें जीवल, जव्यलादिक अने चोशुं औपशिमक जावें म्यलचारित्र होय. ए चार साहि पातिक जाव होय. तथा जे जीव, हायिक सम्यक्तें औपशम श्रेणी पिडव े, तेने एक हायिक जावें सम्यक्त होय, बीजो औपशिमक जावें चारित्र होय, त्री जो हायोपशिमक जावें जातिक होय, चीथो औदिय जावें गत्यादिक होय, अने पांचमो पारिणामिक जावें जीवल, जव्यलादि होय. ए पांच जाव एक वा होय माटें पंचक संयोगी जांगो होय.

तथा (च च खीणा के ॰ ) ऋपक श्रेणीयें ऋषिमोहनामें वारमे गुणवाणे एक

क्षायिकनावें चारित्र होय, तथा क्षायिकनावें सम्यक्त पण होय, बीजो मिश्र नावें ज्ञानादिक होय, त्रीजो छौदियकनावें गत्यादिक होय, चोषो पारिणामिक नावें जीवल, नव्यलादिक होय. ए चार नाव नेला होय.

तथा (अपुर्वे के॰) अपूर्व रणनामा आतमे ग्रणताणे पण क्वायिकसम्य क्लीने क्वायिकनावें क्वायिक सम्यक्ल होय, बीजो मिश्रनावें ज्ञानादिक अने वि रितपणुं होय, त्रीजो औदियकनावें गत्यादिक होय अने चोथो पारिणामिक ना वें जीवलादिक होय तथा औपश्चामिक सम्यक्लीने एक औपश्चामिकनावें औपश्च मिकसम्यक्ल होय, वीजो मिश्रनावें ज्ञानादिक होय त्रीजो औदियकनावें गत्या दिक होय अने चोथो पारिणामिकनावें जीवलादिक एटले जीवपणुं होय. ए रीतें वे प्रकारें चार नाव कह्या.

तथा (तिन्निसेसगुणटाणगेगजिए के०) तथी शेष रह्या जे पांच गुणगणं तेमध्यें मिय्यात्वादिक त्रण गुणगणे एटले पहेले, बीजे, त्रीजे, ए त्रण गुणगणे तो पूर्वें कह्यों जे त्रिकसंयोगीत्रानों दशमो नांगों एटले एक औदियक, बीजो पारिणा मिक अने त्रीजो हायोपशमिक,ए त्रण नाव होय अने तेरमे तथा चौदमे,ए बे गुणगणे एए एक हायिकनावें सम्यक्तादिक नव होय तथा बीजो औदियकनावें गत्यादिक होय. छ त्रवेंकि त्रिकसंयोगीत्र होय. छ त्रवेंकि त्रिकसंयोगीत्र नवमों नांगों होय. एम एग जिए एटले एक जीवने एक समयें एटला नाव होय.

द्ये श्रीपशमिकनावना उत्तरनेदनी संख्या गुणवाणे कहे हे. तिहां श्रीपश मिक सम्यक्त, चोया गुणवाणाधी मांभीने श्रामिश्रारमा गुणवाणा पर्यंत लाने हे. श्रम नयमे, द्शमे तथा श्रमीश्रारमे, ए त्रण गुणवाणे उपशमचारित्र पण होप, तेथी ए वे श्रीपशमिक नाव, उपर कहेला गुणवाणें होय.

द्यायिकनावना उत्तर जेदनी संख्या गुणुगणे कहे ते. एटले चोथा गुणुगणा यी अगीआरमा लगें क्यिकनावें एक क्यायिकसम्यक्त होय, अने वारमे गुण गणे क्यायिकमम्यक्त तथा क्यायिकचारित्र, ए वे क्यायिकनावें होय. तेरमे अने चारमे गुणुगणे सम्यक्त, चारित्र, केवलज्ञान अने केवलद्दीन, ए चार क्यायिकनावें होय तथा दानादिक पांच लिध्य क्यायिक नावें होय. ए रीतें ए अं तनां च गुणुगणे ए नव क्यायिकनाव लाने, एटले क्यायिकनाव कह्यो.

्रवं छायोपमिक नायना उत्तर नंदनी संख्या गुणुगणा श्राश्री कहे है. मिश्रना यं ब्रा पद्मान नया यह अने श्रवकु, ए वे दर्शन, अने दानादिक पांच मिश्रन बिध, ए दश नाव यमनां बे ग्रुणवाणे होय. त्रीजे ग्रुणवाणे मिश्र । ए, त । द शैन त्रण अने दानादि जिब्ध पांच तथा मिश्रमोहनीय एक, ए बार नाव हो य. तथा ोथे ग्रुणवाणे मिश्रमोहनीय टालीयें, ने ह्वायोपशमिक सम्यक्त नेली यें, तेवारें बार नाव होय. पांचमे ग्रुणवाणे, देशविरति सहित तेर नाव होय. तथा उठे ने सातमे ग्रुणवाणे, नःपर्यवज्ञान सिहत चौद नाव होय. तथा उमे, नवमे ने द मे, ए त्रण णवाणे, ह्वायोपशमिक सम्यक्त न होय, तेथी शेष तेर नाव होय. तथा गीयारमे ने बारमे ग्रुणवाणे, ह्वायोपशमि ।रि न होय तेथी शेष बार नाव मिश्रना होय ने तेरमे तथा चौदमे णवाणे, घाती यां में ह्वयें गयां, ते हों मिश्रनाव नज होय.

हवे गैदिय नावना उत्तर नेंदनी संख्या एठाएों हे हे. तिहां प्रथ मिथ्या ए एगे गित चार, कषाय चार, वेद ए, छेद्या ह, एवं सत्तर था हान ए , सि इत्व ए , खिदित एक छने मिथ्याल,ए एकवीश छौदियक नाव होय- बीजे एठा एो, मिथ्याल विना शेष वीश नाव होय तथा त्रीजे छने चोथे ग्रुणठाएों, ए ान न होय. शेष उंगणीश होय. पांचमे ग्रुणठाएों, नरकगित तथा देवगित, ए बे विना शेष सत्तर छौदियकनाव होय. हे ग्रुणठाएों, तिर्यंचगित तथा संयम, ए बे विना शेष पंदर नेद होय, सातमे ग्रुणठाएों, प्रथमनी त्रण छेद्यायें हीन रीयें, तेवारें बार नेद होय. खाठमे तथा नवमे एठाएों, प ने तेजों छेद्या विना शेष द नेद होय. दशमे ग्रुणठाएों, त्रण वेद छने ए षाय विना शेष वार नेद श्रीदिय नावना होय तथा गीखारमें, बारमे ने तेरमे ए ए ग्रुणठाएों, एक म ष्यगित, बीजो छेद्या, त्रीजो सिदल, ए त्रण औदिय नावना नेद होय तथा चौदमे ग्रुणठाएों ए छेद्या विना छित्वल ने म ष्यगित, ए बे औदिय नावना नेद होय तथा चौदमे ग्रुणठाएों ए छेद्या विना छित्वल ने म ष्यगित, ए बे औदिय नावना नेद होय.

हवे पारिणामि नावना उत्तर नेदनी संख्या, णगणे हे हे तिहां मिथ्या गुणगणे नव्यल, नव्यल ने विल, ए त्रण पारिणामिक नावना नेद हो य. ने साखादनथी मांमीने बारमा गुणगणा सुधी एक अनव्यल विना शेष वे पारिणामिक नावना नेद होय, ने तेरमे तथा चौदमे, ए वे गुणगणें, आ सन्निम्दावस्था नणी तथा घातीयां कमे खपाव्यां, तेनणी तथा बीजा कोइका रणने लीधे पूर्वाचार्ये नव्यलपणुं विवद्द्यं नथी, तेथी एकज जीवलपणुं पारिणा मिकनावें होय. एम जे णगणे जेटला उत्तरनावना नेद होय, तेने संबंधें अ

क्ष्यिकनावें चारित्र होय, तथा क्ष्यिकनावें सम्यक्त पण होय, बीजो मिश्र नावें ज्ञानादिक होय, त्रीजो छौदियकनावें गत्यादि होय, चोषो पारिणामिक नावें जीवल, नव्यत्वादिक होय. ए चार नाव नेला होय.

तथा (अप्रवे के०) अपूर्व रणनामा आतमे ग्रणताणे पण क्वायिकसम्य क्लीने क्वायिकनावें क्वायिक सम्यक्त होय, बीजो मिश्रनावें क्वानादिक अने वि रितपणुं होय, त्रीजो औदियकनावें गत्यादिक होय अने चोथो पारिणामिक ना वें जीवलादिक होय तथा औपश्विमक सम्यक्तीने एक औपश्विमकनावें औपश्विमकसम्यक्त होय, वीजो मिश्रनावें क्वानादिक होय त्रीजो औदियकनावें गत्या दिक होय अने चोथो पारिणामिकनावें जीवलादिक एटले जीवपणुं होय. ए रीतें वे प्रकारें चार नाव कह्या.

तथा (तिन्निसेसगुणटाणगेगजिए के०) तथी शेष रह्या जे पांच गुणटाणं तेमध्यें मिय्यालादिक त्रण गुणटाणे एटले पहेले, बीजे, त्रीजे, ए त्रण गुणटाणे तो पूर्वें कह्यों जे त्रिकसंयोगित्रानों दशमो नांगो एटले एक औदियक, बीजो पारिणा मिक अने त्रीजो हायोपशमिक, ए त्रण नाव होय अने तेरमे तथा चौदमे, ए बे गुणटा एो एक हायिकनावें सम्यक्लादिक नव होय तथा बीजो औदियकनावें गत्यादिक होय. छने त्रीजो पारिणामिकनावें, जीवलादिक होय. ए पूर्वेक त्रिकसंयोगी नवमो नांगो होय. एम एम जिए एटले एक जीवने एक समयें एटला नाव होय.

हवे श्रीपशमिकनावना उत्तरनेदनी संख्या गुणवाणे कहे हे. तिहां श्रीपश मिक सम्यक्त. चोथा गुणवाणाधी मांमीने श्रीशशारमा गुणवाणा पर्यंत लाने हे. श्रन नयमे, द्शमे तथा श्रगीश्रारमे, ए त्रण गुणवाणे उपशमचारित्र पण होय, तथी ए वे श्रीपशमिक नाव. उपर कहेला गुणवाणें होय.

क्षिकनावना उत्तर नेदनी संख्या गुणुवाणे कहे हे. एटले चोथा गुणुवाणा थी श्रमीश्रारमा लगें क्षिकनावें एक क्षिकसम्यक्त होय, श्रने वारमे गुण वाणे क्षिकसम्यक्त तथा क्षिकचारित्र, ए वे क्षिकनावें होय. तेरमें श्रने चारमे गुणुवाण सम्यक्त, चारित्र, केवलज्ञान श्रने केवलद्दीन, ए चार क्षिकनावें होय तथा दानादिक पांच लिध्य क्षिक नावें होय. ए रीतें ए श्रं ननां व गुणुवाणे ए नव क्षिकनाव लाने, एटले क्षिकनाव कह्यो.

्रवे छायोपशमिक नावना उत्तर नेदनी संख्या गुणवाणा आश्री कहे है. मिश्रना यें त्रण श्रहान तथा चकु श्रने श्रचकु, ए वे दश्नेन, श्रने दानादिक पांच मिश्रन बिध, ए दश नाव यमनां बे ग्रुणवाणे होयः त्रीजे ग्रुणवाणे मिश्रक्षान ण, त दि श्रीन त्रण अने दानादि जिब्ध पांच तथा मिश्रमोहनीय एक, ए बार नाव हो यः तथा चोथे ग्रुणवाणे मिश्रमोहनीय टालीयें, अने क्षायोपशमिक सम्यक्त नेली यें, तेवारें बार नाव होय. पांचमे ग्रुणवाणे, देशविरति सहित तेर नाव होयः तथा उठे अने सातमे ग्रुणवाणे, नःपर्यवज्ञान सहित चौद नाव होय. तथा ावमे, नवमे ने दशमे, ए त्रण णवाणे, क्षायोपशमिक सम्यक्त न होय, तेथी शेष तेर नाव होय. तथा अगीयारमे ने बारमे ग्रुणवाणे, क्षायोपशमि चारि न होय तेथी शेष बार नाव मिश्रना होय ने तेरमे तथा चौदमे णवाणे, धाती यां में क्यें गयां, ते ाटें मिश्रनाव नज होय.

हवे गैदिय नावना उत्तर नेदनी संख्या एठाणे हे हे. तिहां प्रथ मिण्या एण णेगित चार, कषाय चार, वेद एण, केद्या ह, एवं सत्तर तथा झान ए , छित दल एक, छिति एक ने मिण्याल, एएक वीदा छौदियक नाव होय. बीजे एठा ऐ, मिण्याल विना दोष वीद्य नाव होय तथा त्रीजे छने चोथे गुएठाणे, ए झान न होय. दोष उंगणीश होय. पांचमे गुएठाणे, नरकगित तथा देवगित, ए बे विना दोष सत्तर छौदियकनाव होय. हो गुएठाणे, तिर्यंचगित तथा संयम, ए बे विना दोष पंदर नेद होय, सातमे गुएठाणे, प्रथमनी त्रण केद्यायें हीन रीयें, तेवारें बार नेद होय. छाठमे तथा नवमे एठाणे, प ने तेजो केद्या विना दोष द नेद होय. दशमे गुएठाणे, त्रण वेद छने ए षाय विना दोष चार नेद प्रीदिय नावना होय. तथा गी रिमे, बारमे ने तेरमे ए ए गुएठाणे, एक मनुष्यगित, बीजो केद्या, त्रीजो सिदल, ए त्रण छौदिय नावना नेद होय तथा चौदमे गुएठाणे ए केद्या विना छित्वल ने म प्यगित, ए वे छौदि नावना नेद होय. नवना नेद होय.

हवे पारिणामि नावना उत्तर नेदनी संख्या, णवाणे हे हे तिहां मिध्या गुणवाणे न ल, नव्य ने जीव , ए त्रण पारिणामिक नावना नेद हो य. ने सास्वादनधी मांमीने बारमा गुणवाणा सुधी एक अनव्यल विना होष वे पारिणामिक नावना नेद होय, अने तेरमे तथा चौदमे, ए वे गुणवाणे, । सन्निद्धावस्था नणी तथा घातीयां कमें खपाव्यां, तेनणी तथा बीजा कोइ । रणने लीधे पूर्वीचार्यें नव्यलप ं विवद्धं नथी, तेथी एकज जीवलप ं पारिणा मिकनावें होय. एम जे णवाणे जेटला उत्तरनावना नेद होय, तेने संबंधें

नेक सान्निपाति नेद यथासंनवें विचारीने कहेवा. ए उत्तरनावनेद, ग्रणवा णे कह्या ॥ इति समुचयार्थः ॥ ७३ ॥

एम सविस्तरपणे नावनुं स्वरूपसंख्याविनागनिरूपण ह्यं. हवे ते श्रौप शिमकादिक नावें वर्त्तता जीव इच्यनुं परिमाण तथा तेउने मांहो मांहे श्रव्यब हुत्वनुं विचार दारिनरूपण, संख्यात, श्रसं ात ने नंताने क्वानें री गम थाय, ते नणी संख्यातादि ना विचारनुंदार दशं कहे हो.

> हवे संख्याता, संख्याता ने छनंताना नेंद हे हे. संखिकोग मसंखं, परित्त जुत्त निच्छ पय जुच्छं तिविहं॥ एव मणंतंपि तिहा, जहन्न मुक्कसा सवे॥ ४॥

अर्थ-( संकिक्केग के० ) संख्यातो । । एकज जाएवो अने ( मसंबं के० ) श्रसंख्यातो काल त्रण नेदें हे. ते कहे हे. एक (परित्त के ) प्रत्येकासंख्यातुं, बीजुं (जुन् के ॰) युक्तासंख्यातुं न्त्रीज्ञं (निश्चपयज्ञञ्जंतिविहं के ॰) पोताना पदसंयुक्त करी यें, तेवारें श्रसंख्यातासंख्यातुं, थाय. ए त्रण चेद थया. (एवं के ) ए रीतें (मणंतिपितिहा के ०) त्रण अनंता पण एहिज नामें जाणवा. तदाया ते कहे हे. एक प्रत्येकानंतुं, वीज्ञं कानंतुं, त्रीज्ञं अनंतानंतुं, एम सर्व थइ सात नेद थया. ते पण वली एकेकना (जहनमङ्ग सासबे के ) एक जघन्य, बीजो मध्यम, त्रीजो उत्कृष्ट, एवा त्रण त्रण नेद होय, तेवारे एकवीश नेद थाय. तेनां नाम कहे हे. एक जघन्यसंख्यातुं, वीखं मध्यमसंख्यातुं, त्रीखं उत्कष्टसंख्यातुं, ए त्रण संख्यातानां नाम कह्या. तेमज एक जघन्यप्रत्येकासंख्यातुं, बी मध्यमप्रत्येका संख्यातुं. त्रीखं उत्क्रप्टप्रस्येकासंख्यातुं, चोधुं जधन्ययुक्तासंख्यातुं, पांचसुं मध्यम युक्तासंख्यातुं, ठर्षुं उत्रुप्युक्तासंख्यातुं, सातम् जघन्यश्चसंख्यातासंख्यातुं, श्राव मुं मध्यमञ्चनंत्वातासंत्वातुं, नवमुं उत्कष्टञ्चसंत्वातासंत्वातुं, ए नव असंत्वा तानां नाम कह्यां. तेमज असंख्यातानी पेरें नव अनंतानां नाम पण कहेवां. एटले एक जयन्यप्रत्येकानंतुं, बीज्ञं मध्यमप्रत्येकानंतुं, त्रीज्ञं उत्क्रप्टप्रत्येकानंतुं, चोधुं जयन्ययुकानंतुं, पांचमुं मध्यमयुकानंतुं. वर्षु वत्रुष्टयुकानंतुं, सातमुं जयन्य यनंतानंतुं. त्यावसुं मध्यमव्यनंतानंतुं, व्यने नवसुं चल्क्र एनंतानंतुं. ए नव श्र नंनानां नाम कत्यां॥ इति नसुच्यार्थः॥ ७४॥

हवे ए एकवीश नेद विवरी देखांडे हे. तिहां प्रथम त्रण संख्याताना नेद, दे खांडे हे. तेमां एकनी संख्या नहिं, जे नणी एक घडो दीहे ए घडो हे. एम कहे वाय, पण आ एटला घडा हे, एम संख्या न होय.

> लहु संखि ं डिझि अनेपरं मिंह मंतु जागुरु ॥ जंब्दीव पमाणय, च प परूवणाइ इमं॥ ७५॥

श्र-ते ाटें ( कि के ) बेथी संख्या ं की यें ते ऐ (त संखि के ) ज्ञान्य संख्यातुं बेने कही यें अने (अर्डपरं के ) ए बेथी पढ़ी उपरांत त्र ण, चार, पांच, ढ, ए (जागुरुश्चं के ०) यावत् छर । संख्याता । एक रूप हीन होय, त्यां लगें ( वि तु के 0) ध्यम संख्यातुं हीयें हवे उत्क संख्या तानी प्ररूपणा कहे है. (जंबूदीवप । एयच उपझपरूव ए। इइमें के ) जंबू दीप प्रमाण चार पालानी प्ररूपणायें रीने उत्क संख्यातुं जाए बुं.तद्यथा ते कहे है. जंबू द्वीप जेवडो एक लाख योजन लांबो, पहोलो अने वाटलो तो त्रण लाख, शोल हजार, बरोंने सत्तावीश योजन, त्रण कोश, एकशो अष्ठावीश धनुष्य, तेर श्रं गुल, ए जव, एक जू, ए लीख, व वालाय, सात त्रसरेणु, पांच पर ाणु, ए टली परिधि जाणवी. ने ए हजार योजन उंमो तथा ाव योजननी जगित ते उपर बे गाउनी वेदि । एवडो उंमो पालो, ते जेम धान ।पवानी पाली हो य, तेवो सरसवें करी नरीयें, ते पालो हीयें. ते पालो सिग सूधो सर्व नरीयें, तेमां एक सरसव मात्र ते चपरें ठेरे नहीं एवो नरीयें. पढ़ी ते पालाने चपाड़ी ते मांहे ला एकेक सरसव एके दीप, स इ दीव मूकतां जइयें, पढ़ी जे दीपें अथवा जे स हैं ते पालो वालो थाय तेवडोज वली बीजो पालों व्यीयें ते नाम अनव स्थित पालो कहीयें जे नणी ए पालो उत्तरोत्तर वर्द ान खनावने नजहो पण एट खुंज नहीं रहे, ते माटें ए पालां नवस्थित एवं ना कहीयें एम छन् में चार पाला होय, तेनां ना हे हे ॥ ७५॥

पत्नाण विश्व सिला, ग पिंड सिलागा महासिलागका॥ जोयण सहसो गाढा, सवेइ अंता सिसह निर्आ॥ १६॥

अर्थ-(पल्लाणविष्य के॰) पहेलो अनवस्थित पालो कहीयें. जेनणी जे दीपें तथा जे समुद्दें ते पालो खाली थाय. तेवडो लांबो, पहोलो अने हजार योजन उंमो, साडा आठ योजन उंचो, कल्पतां, कल्पतां वधतो वधतो जाय तेथी ते अनवस्थि

त पालो प्रथम जाएवो अने ते अनवस्थित पालानी गएतीने र्थें लाख योज न लांबो, पहोलो तथा एक हजार योजन उंमो जगित अने वेदिका उपर तेएो सहित कल्पीयें, ते अनव स्थित गुणवा निमित्तें शलाका एटले सरसव तेनो प्रक्रेप ते णे करी नराय हे तेथी ते बीजा पालानुं नाम पण (सिलाग के ) शलाका पालो क हीयें तथा ते शलाकानी नरतीनी संख्यानिमित्तें वली तेवडोज त्रीजो पालो क व्पीयें ते मध्यें एकेक प्रतिशलाका सूकीयें, ते सूकतां नराय, ते नणी ते त्री जानुं नाम, (पिडिसिलागा के॰) प्रतिशिलाका पाली कहीयें. वली ते प्रतिश्ला कानी संख्या निमित्त, चोथो (महासिलागरका के०) महाशिलाकानामें पालो क ल्पीयें, ए चार पालानां नाम कह्यां. तिहां (जोयणसहसोगाढा के ) एक हजार योजन धरतीमांहे उंमो, एक हजार योजननुं रत्नप्रना प्रथ्वी ं प्रथम सहस्र यो जनप्रमाण रत्नकांम नेदीने वीखं वज्जकांम है तेनुं तलुं जाणवुं तथा ते उपरें, शा व योजन उंची, बार गांच नीची, आत गांच मध्यें, चार गांच उपरें पहोली, ए वी वज्रमयी जगित जाएावी. ते उपर वली बे गाछ उंची, पांचशें धनुष्य पहोली, एवी वेदिका जाणवी. (सवेइअंता के०) ते वेदिका सहित वेदिकाना श्रंत स थी (सित्हनरिश्रा के॰) तिग सूधां सरसवें करी निरयें. जेम ते उपरें एक श लाका मात्र न समाय. तेवी रीतें पहेलो अनस्थित पालो नरियें पढ़ी ते अनवस्थि न पालाना सरसवने गुं करीयें ते छागली गाषायें कहे हे ॥ इति समुचयार्थः ॥ ७६॥

तो दीवु दिहसु इकि, क सरिसवं खिविच्य नििष्ण पढमे॥ पढमं वतदंतंचिच्य, पुण निर्ण तम्मि तह खीणे॥ १५॥

श्रथं—(तो के॰) ते पालाने कोइएक देव श्रथवा दानव उपाडीने पोताना मावा हम्म तल उपर ते प्रथम श्रनविष्यत पालाने स्थापीने ते मांहेथी एकेक मग्सव जमणा हाथयी लेइने (टीबुदहिसुइिक्क के॰) हीप श्रने समुइने विषे एकेको (मिस्सविधियेश्च के॰) सिरसव मूकतो जाय. ते जे हीपें तथा ज समुई (पटमे के॰) पहेजा पालाना सरसव (निहिए के॰) निहे एटले खाली थाय.

(पटमंदतदंनंचित्र के०) वजी जे हीपें. श्रयवा जे समुद्दें, ते प्रथम श्रवव म्यित पातो ठातो थाय तेटलोज लांबो. पदोलो एटले वचमांना हीप श्रवे समुद्द पर्व नेमध्ये समाव एटलो लांबो. पदोलो तेमज एक द्वजार योजन डेमो साहा रशाउ योजन डेचो, बीजो पातो कत्पीने तेने (पुणनिए के०) वजीपण शिखा हिंदि रसवें रीने नरीयें, (तंनि तहखीणे केण) वली ते पालाने पण ते ज पाडीने ोइ देवता ते ज वली गिला एके दीपें खने स हें एकेक सरसव ू तो जाय. ए रतां जे दीपें या जे स हैं ते पालाना सरसव खाली थाय तेवारें रीयें, ते हे हो॥ इति स यार्थः॥ ७७॥

> खिणइ सिलाग पत्ने, ग्र सिरसवो इय सिलाग खिवणेणं॥ पुष्णे बीठ इप्र तठ, पुवंपिव तम्मि इरिए॥ १०॥

थै—तेवारें तेनीसंख्यानि न (खिप्पइसिलागपल्लेग्रसरिसवो के ०) शिला ना । बीजा पालाने विषे नेरो एक सरसव नाखीयें छहीं छां ोइए । चार्य हे छे के ते सरसव नवस्थित पाला । हेथीज लीजीयें ने छन्य ोइ । चार्य वली ए । हे छे के ते सर व बीजो नवो लीजीयें ने शलाका पाला ध्यें नाखीयें परंतु नवस्थित पाला । हेथी न लीजीयें हीं तत्व केवली जाणे छत्रे कोइ हेरों के प्र य जेवारें छनवस्थित पह्य खाली ं तेवारें एक सरसव सला पत्यने विषे केम नाख्युं नहीं? ने छा बीजी वार नवस्थित पह्य खाली थयें थके ए सरसव ला पत्यने विषे नाख्युं हुं ते । रिण्छुं? ह हे छे के छनवस्थित पत्य चरीने वलवीयें तेवारें एक शला । पत्यने विषे स्थापीयें ए छतां तिहां प्रथ पत्यतो जंबू हीप प्रमाण लक्ष् योजन विषे स्थापीयें ए छतां तिहां प्रथ पत्यतो जंबू हीप प्रमाण लक्ष् योजन वि ।र वालो हतो तो तेने नव स्थित न कहीयें के के ते प्रमाण छे तेमाटें तेने वस्थित हीयें छने । जा पत्थने नवस्थित हीयें ते नवस्थित पह्यनी शलाकायें रीने शलाका नामें बीजो पत्थ नरीयें हैयें ते कारणे प्रथम पत्थ व ीने बीजा पत्थ महण । धुं छे.

(इयित्तलागखवणेणंपुम्मोबी डिख्न के॰) ए प्रकारें जिहां ते अनवस्थित पाला ना सरसव जे द्वीप, स इ उपर मूक्या थकां खाली थया ते द्वीप समुइ प्रमाण वली बीजो अनवस्थित पालो कल्पोयें, तेने वली शिखा पर्यंत सरसवें करीने ज रीयें ने पूर्वली पेरें द्वीप मुइ उपर एकेक सरसव मूकीने खाली करीयें तेवारें वली बीजं सरसव ते लाका पत्यमां दे घालीयें.

वली पण जे द्वीप, स इ उपरें पूर्वें सरसवनो छेह आव्योछे ते द्वीप, स इ प्रमाण त्रीजो अनवस्थित पव्य कल्पीयें तेने वली सरसवें करी नरीयें वली ते पालाना सरसव पण तेमज पूर्वेली परें द्वीप, समुइ उपर एकेक मूकतां जेवारें ाली याय तेवारें त्रीं सरसव शलाका पव्यने विषे नाखीयें एम नवा नवा अनव स्थित पट्य नरतां नरतां तथा तेने फरी खाली रतां करतां एकेक सरसव शला का मांहे नाखतां थकां जेवारें शलाका संक्षिक बीजो पट्य शिखा पर्यंत संपूर्ण नराय. (तर्ड के०) तेवार पठी ते शलाकापव्यने पण (प्रवंपिवतिमाडदिए के०) पूर्वली पेरें हस्ततल उपर लेइने कोइ देव, दानव ते पट्य मांहेलो एकेक सरसव जे दीप, समुझें अनवस्थित पट्यनो प्रांत आव्योठे तिहांथी आगला दीप, समु इ उपरें एकेक सरसव मूकतो जाय एम करतां जे दीप समुझें ते शलाका पट्य खाली थाय. तेवारें ग्रं करीयें ? ते कहेठे. ॥ ७०॥

खीणे सिलागि तइए, एवं पढमेहि बीखयं नरसु॥ तेहि छ तइखं तेहिख, तुरिखंजा किरफुडा चनरो॥ ७ए॥

श्रथ—( खीणेसिलांग के॰ ) एम करतां ते शलाका पालो वालो थये (तइए के॰ ) त्रीजा प्रतिश्लाकपाला मांहे अनेरो एक सरसव सूकीयें वली तिहां अन विस्थत कल्पीयें. (एवं के॰ ) एरीतें (पढमेहि के॰) पहेले अनवस्थित पाले करीने (वीश्ययंनरसु के॰ ) वीजो शलाकापालो नरीयें अने (तेहिअतइश्रं के॰ ) ते त्री जा प्रति शलायों करीने त्रीजो प्रति शलाका पालो नरीयें (तेहिअतुरिखं के॰ ) ते त्री जा प्रति शलायों करीने चोथो महाशलाका पालो नरीयें ते चोथो महाशलाका न खा पठी वली पूर्वली पेरें त्रीजो प्रतिशलाका नरीयें, ते प्रतिशलाका नराइ रह्या पठी वली पूर्वली पेरें पहेला अनवस्थित पाले करी बीजो शलाका पालो नरीयें ते गलाका नराइ रह्या पठी ते त्रणे पाला जे हीप समुद्दा अनवस्थित पालों करी नराइ रह्या ये ते हीप समुद्द पर्यंत नूमी खणीने तेटलो वली अनवस्थित पालों करी नराइ रह्या वे ते हीप समुद्द पर्यंत नूमी खणीने तेटलो वली अनवस्थित पालों कल्पीने सरसवं करी नरीयें. (जाकिरफुडाचचरों के॰ ) जे एटले निश्रें चारे पाला फुडा एटले शीखा सहित संपूर्ण नराणा ॥ इत्यद्दरार्थः ॥ ७० ॥

पाला फुडा एटले शिखा सिह्त सपूर्ण नराणा॥ इत्यक्तार्थः॥ ७०॥ विये नावार्थे कहेते. जेवारें ते शलाका पत्य खाती याय. तेवारें तेना नरता गणवा निमित्त (नइए के०) त्रीजा प्रतिशलाक संक्षिक पत्यने विषे श्रितेरा एक सम्मव नावीयें तेवार पत्नी वली ते शलाकापत्य माहेला सरमवनों जे विषे श्रियवा समुद्दें श्रंत श्राच्यों होय ते दीप समुद्द प्रमाण वली श्रमव कियत पत्र्य करवीयें ने सरसवें करी नरीने वजी पूर्वेली पत्नें चपाडी श्रामला एकेक दीप समुद्दें एकेक सरसवनों दाणों मूकतां जइयें ते जेवारें खाली थाय, नेवारें एक सरसव वजी शलाक पत्य माहें नाखीयें. एमज वली पण जे

हीप, समुद्दें ते अनवस्थि पत्य वालो थाय ते हीप समुद्द पर्यंत फरी अनव स्थित पत्य कल्पीयें ते पण पूर्वली पर्वे खाली करीयें तेवारें त्रीजो सरसव बली शला पत्य मांहें नाखीयें, एज रीतें नवा वा प्रमाणे अनवस्थित पत्यने नरवे खाली रवे करीने एकेक सरसव शला । पत्य ध्यें नाखतां थकां ते श ए एका पत्य जेवारें बीजी वार संपूर्ण शिखा सहित नराय तेवारें वली ते शलाका पत्यना सरसवनो एके दाणो एके दीप स दें मूकतां जेवारें ते खाली थाय तेवारें बीजा सरसवनो ए दाणो त्रीजा प्रतिश्वलाका संक्षिक पत्यने विषे नाखीयें.

एज रीतें वली वधतो वधतो पहेलो नवस्थित पालो नरी जरीने तेना सर सव गिले गिले दीप स हैं सूकतां सूक्तां ते अनवस्थितनी संख्या आणवा निमित्तें एके सरसवनो दाणो शेला निमें बीजा पत्यमांहे सूकतां मू तां एवी रीतें ते शलाकानामें बीजो पब्य शिखासिहत नरतां नरतां ते शलाकानी सं ः । श्राणवा निमित्त ते शला ।पब्यनो एकेक सरसव त्रीजा प्रतिशलाका पब्य ने विषे नाखतां यकां जेवारें ते प्रतिशला । पट्य पण संपूर्ण शिखा सहित ज राय, तेवारें ते बीजा शलाका पत्यना सरसव खाली खा हे ते सरसवनो प्रांत जे ६ीप समुईं खाव्यों हे ते यकी वली गाला ६ीप समुइने विषे त्रीजा प्रतिश लाका पत्यने चपाडी तेनो एके सर व एके द्वीप, स हैं नाखीयें एम करतां जेवारें तें प्रतिशला पत्य खाली थाय, तेवारें अनेरो एक सरसव महाशलाक नामें चोथा पत्यने विषे नाखीयें ने ते प्रतिशला पत्यना सरसवनो जिहां प्रांत छा व्यो हे ते ६ीप समुइ प्रमाण वली अनवस्थित पालो कल्पीयें ते वली पूर्वली रीतें जेटली वार नरीने खाली रीयें तेटला सरसव बीजा शलाका पव्य मांहें नाखीयें एम रतां करतां शलाका पत्यने नरीयें ते नराया पढ़ी ते शलाका पत्य जपाड़ी जिहां अनवस्थित पत्यना सरसवनो प्रांत जे ६ीप समुद्दें आव्यो हे तेथी आगला दीप स इ उपरें एकेको सरसव मूकतां जे दीप समुइ उपरें मरसवनो प्रांत आवे शलाका पत्य खाली याय तेवारें एक स्रसव प्रतिशलाकानामा त्रीजा पत्यने विपे नाखीयें. एरीतें फरी पण पूर्वली पेरें पहेला नवस्थित पालायें करी बीजा श लाकापव्यने नरवे खाली करवे करी एकेक सरसव त्रीजा प्रतिशलाकाने विषे प्र हिप करतां धकां जेवारें प्रतिशलाक पव्य पूर्ण नराय, तेवारें ते चपाडीयें अने जिद्दां शलाका पव्यना सरसवनो प्रांत जे दीप समुइने विपे आव्यो ने तेथी आ गला एकेक दीप समुइने विषे तेमांहेलो एकेको सरसव मूकतां जइयें. एम कर

तां जेवारें ते प्रतिशलाका पत्य खाली थाय तेवारें बीजो सरसव चोथा महाशला क पत्यने विपे नाखीयें, एवीज रीतें फरी अनवस्थितें करी शलाका जरीयें अने शलाकायें करी प्रतिशलाका जरी खाली करतां एकेक सरसव, महाशलाका मांहे प्रदेप करतां थकां महाशलाका नामें चोष्ठं पत्य पण संपूर्ण शिखापर्यंत निर्यं व ली पण अनवस्थितनी संख्यायें करी, शिलाका पूर्ण निर्यें, तेम वली शलाकाने वलवी वलवीने एकेंक प्रतिशलाका सरसवें करी प्रतिशलाका पत्थपण पूर्ण निर्यं अने वली पण अनवस्थितनी संख्यायें करी शलाका पूर्ण निर्यं योजन वली पण अनवस्थितनी संख्यायें करी शलाका पूर्ण निर्यं तेवार-पत्नी वली जिहां जेनो वेलो सरसव मूक्यो, ते दीप अथवा समुइ, जेटलो लांबो, प होलो. हजार योजन उंनो, साडा आत योजन उंचो, एवो अनवस्थित पालो पण सरसवें करी निर्यं एम (जाकिरफुडाच उरो के कि) एम चारे पाला सरसवें करी फुडा एटले शिखा पर्यंत संपूर्ण नराय.

हवे आगल कोइ पांचमो पालो नथी कल्प्यो के जे पालामांहे महाशिलाका वजाववानी संख्या अर्थे दाणो मूकीयें, तेथी ते चोथो पालो नखो रह्यो तथा प्रति शिलाकाने वलाववानी संख्याने काजें दाणो मूकाय, ते पण महाशिलाकामध्यें समा वतुं नथी. तेथी ते पण नखो रह्यो एम शिलाकासंख्यानो दाणो पण प्रतिशिला कामांहे न समावे, तेथी ते पण नखो रह्यो तथा अनवस्थितनी संख्या सरसव पण शलाकामध्यें न समावे. तेथी ते पण नखो रह्यो ॥ ७७ ॥

> पढमित पल्लुइरिच्या, दीवुदही पल्ल चन सिरस वाय॥ सबोवि एस रासी, रुवूणो परमसंखिकं॥ ए०॥

श्रथ-हवे (पहमतिपह्नु६िस्त्रा के०) पहेला त्रण पाले करी उद्देशा जे (दी वृदद्दी के०) हीप. ममुइ, तेना सरसव एटले धुरधी सरसव जे हीपें समुद्दें मू क्या है. तेना सरसवनी संख्या ध्रमें (पह्मच हसरसवाय के०) जे चार पाला नहार नहार है. तेमांहेला मरमवनी संख्या एक ही कि जें. (सबीविएसरासी के०) सर्व ए गिरा हे मरमवना ममूह नेमांहेंथी (मनूणों के०) एक रूप काही नाखीयें. एटले एक सम्भव होते करीयें, तेवारें (परमसंखिक्तं के०) इत्रुष्ट संख्यातुं थाय तेमांहेथी प्रमान होते करनां ध्रमें त्रणयी मांनीने, हपरांत मध्यम मंख्यातुं थाय. ध्रमें वेनी संख्या ते जयन्य संख्यातों जाणवो. एम त्रण, संख्याताना चेद कह्या ॥ एणा

हवे नव असंख्याताना नेद हे हे.

रूव जुर्ञ्जंतु परिता, ऽसंखं लहु अस्सरासि अप्नासे ॥ जुत्ता संखिक्नं लहु, आविल्ञा समय परिमाणं॥ ७१॥

थे—पूर्वोक्त चत्क संख्याता ध्यें (ह्रव खंतु के०) एक ह्रप जेलतां (लडु के०) घन्य (परित्ता के०) प्रत्ये (ऽसंखं के०) ख्रसंख्यातुं होय. (स्त के०) ए जघन्य प्रत्ये असंख्याताना जेटलां ह्रप के, ते ए डेलें ामीयें. नीचें तेनो आं ांमीने तेटली वार तेटला ग्रणा रता जइयें, एटले तेने (रासि प्राप्ते के०) राशि न्यास कहीयें जे सद व्पनायें प्रत्ये असंख्याताना ह्रप पांच व्पीयें, ते चपरें पांच ए डा ांमीयें, तेनी हेठल पांच पांचडा मांमीयें, ग्रणतां जइयें। तिहां पांचने पांच साथें णतां प शि थाय. ते वली पांच साथें ग्रणतां एकशों ने प शि थाय. तेने वली चोथा पांचडा साथें ग्रणतां ढशेने प शि थाय. तेने वली पांचमा पांचडा साथें ग्रणतां, ण हजार एकशों ने प शि थाय. एम प्रत्ये असंख्याताना जेटलां ह्रप थाय, तेने वली तेटली वार तेटला

एम प्रत्ये असंख्याताना जेटलां रूप थाय, तेने वर्ली तेटली वार तेटला गुणा करतां ( 'तासंखि 'ल के॰) जघन्य क असंख्यातुं होय एटले प्रत्येक असंख्याताना जेटलां रूप हे तेटला सरसवनो फरी राशि न्यास रीयें,अर्थात् तेटला सरसवने तेटलाज वखत तेटलां सरसवें री गुणीयें, तेवारें चोशुं जघन्य

असंख्यातुं थाय तेऐं (आवित्ञआसमयपरिमाणं के०) ए आवितना स मय प्रमाण थाय एटले ए आवित्कामां एटला असंख्याता समय होय ते ांहेथी वली एक रूप हीन रीयें, तेवारें उत्क प्रत्येक असंख्यातुं त्री थाय तथा वन्य प्रत्ये असंख्याताथी मांमीने एक रूपें हीन उत्कृष्ट प्रत्येक असं ख्याता लगें सर्व मध्यम प्रत्येक संख्याता जाणवा ॥ इति स यार्थः ॥ ए१ ॥

> बित्ति च पंचम गुणणे, कम्मा सग संख पढम च सत्त॥ णंता ते रूवजुङ्या, म रूवूण गुरुपञ्चा ॥ ७२ ॥

अथे-अहीं आं (बि के०) असंख्याताना त्रण नेदनी अपेक्सयें बीछं अने नव नेदनी अपेक्सयें चोछं, एवं जघन्य यु असंख्यातुं तेनो राशि अन्यास कर तां, (सगसंख के०) असंख्याताना नव नेदनी अपेक्सयें सातमुं जघन्य असं ख्यातासंख्यातुं होय। (ति के०) असंख्याताना त्रण नेदनी अपेक्सयें त्रीछं

ज्यन्य असंख्यातासंख्यातुं तेनो वली राशि अन्यास करतां (पर्हम के॰) पहेलुं अनंतुं होय, एटले नव अनंतानी अपेक्तायं प्रथम जयन्य प्रत्येकानंतुं थाय (च के ०) सूलनेदनी अपेक्सयें चां छुं प्रत्येकानंतुं वे तेनो राशि अन्यास करतां नव अनंता मांहे खुं (च छ के ०) चो छुं जयन्य युक्तानंतुं होय (पं चम के॰) सूल नेदनी छपेक्सयें पांचमुं मध्यम युक्तानंतुं वे तेने (गुण्णे के॰) राशि अन्यास् करतां ( सत्तणंता के ) सातमुं ज्यन्य अनंतानंतुं होय. ए रीतें प्र थम पद साथें वी जुं पद (कम्मा के॰) अनुक्रमें लोड बुं. (ते के॰) ते न्यन्य युक्तातंख्याताने वली ( रूवज्रुआ के ए) एकादि रूप नेलीयं, एटले एकादरूपें युक्त करीयें तेवारें (मचा के०) मध्यमयुक्त असंख्यातुं होय अने ( रुवूण के०) एक रूप हीन करीयें, तो तेवारें (ग्ररपना केण) पावलुं प्रत्येकासंख्यातुं वत्रुपुं होय तेम जवन्य असंख्याता असंख्याता मांहे पण एक रूप नेलीयें, तो मध्यम असं खातो असंख्यातो याय तथा एक हप काढीयें, तो उत्कृष्ट युक्तासंख्यातंं हो य एम जवन्य प्रत्येकानंता मांहेथी पण एक रूप काढे घके उत्रुष्ट अतंत्वा ता असंख्यातुं होय अने एक रूप नेलतां मध्यम प्रत्येकानंतुं होय. ए रीतें आ गल पण सर्वत्र नाणवुं ॥ इति समुचयार्थः ॥ ७१ ॥

इय सुतुत्तं अन्ने, विगि अमिकसि चन्नय मसंखं॥ होइ असंखासंखं, लहु रूवजुअं तु तं मशं॥ ए३॥

अर्थ-( श्यसुनु के ० ) ए रीतें स्त्रोक एटले श्री अनुयोग दारादि स्त्रमध्यें नव असंख्यातानां तथा नव अनंतानां सक्ष्य ए रीतें कह्यां हे. एटले सूत्रीक वि धि कहाो. हवे मतांतरें वली ( अन्ने के ) अन्य कोइएक आचार्य बीजी रीतें पण एतं सक्रप कहे हे, ते रीतें कहीयें हैयें. (विग्गिश्रमिक्कतिच वह यमसंखं के 0) जे चो छं जधन्य यक्त असंख्यातुं हे तेनो वर्ग करीयें, वर्ग एटलें तजुणो करीयें, जेम नवनो वर्ग एक्याशी थाय, तेम जवन्य युक्त असंख्यातुं ते जय न्ययुक्त असंख्याता साथें तजुणो करीयें, तेवारें (होइअसंखासंखंलंडु के॰) सातमुं ज्यन्य असंख्याता असंख्यातुं थाय. तेमांहे ( रूव अंतु के । एकादि रूप नेलीयें तेवारें, (तंमचं के ) मध्यम असंख्याता असंख्यातुं आतमुं थाय ॥ ए३ ॥ रूवूण माइमं गुरु, तिविगाने ति विमे दसकेवे॥

लोगागासपएसा, धम्माधम्मेगजिञ्ज देसा ॥ ७४ ॥

अर्थ-(स्वूणमाइमंग्रह के०) वली तेहीज सात । जघन्य असंख्याता संख्या ता दिथी एक रूप काढीयें, तेवारें ढ छुं उत्कृष्ट युक्त असंख्यातुं थाय. तेमांहेथी वली एकादि रूप हीन करतां यावत् एक रूपें अधिक ज्यां सुधी चोष्ठं युक्तासंख्या हं होय, तेने पांचसुं मध्य युक्त असंख्यातुं हीयें हवे ते सात जघन्य असं । ता असंख्यातुं तेनो जे अं तेने (तिविग्गर्ड के०) त्रण वेला वर्ग रीयें, जे वग्डाने त्रण वेला वर्ग करे ढते बज्ञें ने ढप्पन्न थाय. एट बे बे दू चार, ए प्रविग्न चार चो शोल, ए बीजो वर्ग, ने शोल शोलां बे प्यन्नां, ए त्रीजो गी, ए रीतें सातमा संख्यातानो त्रण वेला वर्ग रीयें, पढी (तिह मेद वे के०) तेमांहे इमे एट खे । दश असंख्यातानी राश चेलीयें, तेनां ना हीयें हैयें.

ए (लोगागासपएसा के०) लोका शिना प्रदेश एटले अंग्रंल प्राणा । शिखंम मांदेथी समय मय एकेक प्रदेश अपहरीयें, तो पण संख्याती उत् िर्णणी काल व्यति मे थके, ए अंग्रल प्रमाण काश खंम निर्लेप थाय, तेह वा सर्व लोकाकाशना प्रदेश लेवा. तथा (धम्माधम्मेगिजअदेसा के०) बीजा ते टलाज धर्मास्तिकायना प्रदेश, त्रीजा तेटलाज अधर्मास्ति ।यना प्रदेश, चोथा तेटलाज एक जीवना प्रदेश, ए चार परस्पर तुल्य हे. तिहां प्रदेश एटले जे केवली नी प्राह्म शक्षें री हेदतां जे नागना बीजा नाग ह्याये नहीं. तेने प्रदेश हीयें थवा जेटलुं केत्र एक एजल परमाणुयें रुंध्यं तेने प्रदेश हीयें ए ए चार राशि संख्यातानी सरखी जाणवी. ए चार ते पूर्वी मांहे नेलीयें, तथा व ली बीजी ह राशि नेलीयें, ते ।गली गाथायें कहे हे ॥ इति स यार्थः ॥ प्रधा

टिइबंधश्रवसाया, अणुनागा जोग वेख पिडनागा॥ इण्हय समाण समया, पत्तेख निगोखए खिवसु॥ ७५॥

थे— ( वड्बंधखवसाया के ०) वली तथा पांचमा, मेनी स्थितिबंधनाञ्चथ्य वसायस्थान पण संख्यातां हो. ते केम तो के; मोह्नीय कमेनो जघन्यस्थि तिबंध, अंतर्भुहूर्त्तनो हे ए हेझो संज्वलना लोजनी स्थितिबंधनी पेक्टायें छेवो. ते अंतर्भुहूर्त्तनो ए , बें, त्रण, ए रीतें समय वधारतां अधि करतां यावत् सीत्तेर कोडा ोडी सागरोपमनी जन्कष्टीस्थित पर्यतना जेटला समय हो य, तेटला मोह्नीय कमेना स्थितिस्थानक होय तिहां एकेक स्थित स्थानकें व ली कपायनी तीव्रमंदतादिकत चेदें एवा लोकाकाश प्रमाण असंख्याता अध्यव

साय स्थानक होय. अध्यवसाय एटले कपायोदयने तरतम नेदें जे जीवनो अग्राद्यनाविवोप. ते अध्यवसाय कहीयें. ते असंख्याता होय. जे नणी मोह नीयनी स्थिति कोइ जवन्य, कोइ तीव्र, अध्यवसायें वांधे कोइ तीव्रतर अध्यव सायें तथा मंद, मंदतर अध्यवसायें पण वांधे, तेथी एकक स्थितिस्थानक दीव असंख्यातां अध्यवसायस्थानक होय. ए पांचमी राशि पण तेमध्यें नेजीयें.

तथा वहीं कमेनो (अणुनागा के०) अनुनाग एटले रस्ति नेप जेम गुन प्रक्तिनो मिए, मिएतर अने मिएतम, तथा अगुनप्रकृतिनो कटुक, कटुतर अने कटुकतम, इत्यादिक रसनां स्थानक असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण वे. ते ना वंधना हेतु, असंख्याता अध्यवसाय स्थानक वे.तेपण नेलीयें सातमुं (जो ग के०) मन, वचन अने कायानुं वल करणवीर्थ, तेना (वेअपिडनागा के०) छेद पिलनाग एटले केवलीनी प्रकारूप शस्त्रें करी हेदतां जे वीर्याशनो नाग न देवाय. ते वीर्याशनी वर्गणा स्पर्क्कादिकनो विचार कम्प्रकृतिथी जाणवो. ते वीर्याश विनागनुं जयन्य स्थानक निगोदीआ अपर्याप्ता जीवने उत्पत्तिने प्रथम समयें होय. बीजे समयें बीजं स्थानक होय. एम असंख्याता वीर्याशविन्तेप नणी असंख्याता वीर्य विनागस्थानक होय. ते पण नेलीयें.

आतमां (इएह्यसमाणसमया के०) जत्सिण्णी. अवसिण्णी, ए वेना समान समय, जे एटले वीश कोडाकोडी सागरोपमत्तुं कालचक्र. तेना जेटला समय था या अत्यंत सूक्ष्मजीण वस्त्र, फाडतां जेटलामां एक तंतु तुटे तेटली वारमां अ संख्याता समय व्यतिक्रमि जाय. एवो अथवा एक परमाणु एक आकाश प्रदेश थकी बीजा आकाशप्रदेशें जाय. एटलमां एक समय थाया तेवा एक कालचक्र ना जेटला समय थाया, ते पण चेलीयें.

नवमां (पत्ते छ के ०) प्रत्येक जीवना शरीर एट छे एक छनंतकाय वर्जीने शेष प्रियवी, छप्, तेज, वासु छने नवस्पित तथा त्रस जीव पण छसंख्याता है। ते पण साथें छेवा। ए नव संख्याता घया.

दशमुं (निगोश्रए के०) सूक्ष्म श्रने बादर निगोदनुं एक साधारण शरीर तेवा निगोदीश्रा जीवना, श्रसंख्यातां शरीर हो. ते जे श्रसंख्याते हो ते श्रसंख्यातुं खेंबुं. ए दश बोल श्रसंख्याताना ते पूर्वला राशिमांहे (खिवसु के०) चेलीयें, ते चेल तां जे संख्या थाय,ते संख्याने शुं करीयें? ते कहे हो ॥ इति समु यार्थः ॥ ७५ ॥ पुण तंमि तिवग्गिञ्चए, परित्तणंत लहु तस्स रासीणं॥ अप्रासे लहुजुत्ता, ञ्जणंतं च्यप्नव जिञ्जमाणं॥ ए६॥

अर्थ- (पुण के०) वली (तिम के०) ते राशिने (तिविग्गिअए के०) त्रण वार वर्गीयें, तेवारें (पिरत्तणंतलडु के०) जघन्य प्रत्ये । नंतो होय वली (तस्स रासीणंअपासे कें०) तेनी राशिनो अन्यास करीयें तेवारें चोथो (लडुज्जताअणंत के०) जघन्य युक्तानंतो होय तेटले जघन्य युक्तानंतें (अप्रविज्ञिमाणं के०) अन व्य जीवतुं मान होय ए जघन्य युक्तानंतो चोथो हे तेटला अनव्य जीव होय ते ध्यें ए रूप हीन रीयें, तेवारें चत्कृष्ठ प्रत्येकानंतो शिजो थाय ॥ ए६॥ तव्यो पुण जायइ, णंताणंत लडु तंच तिकुत्तो ॥ व्यगसु तहिव न तं हो, इ णंत खेवे खिवसु ह इमे ॥ ए९॥

अर्थ- हवे (तव्यंगे के०) ते चोथा अनंताना वर्ग करीयें, तेवारें (पुण के०) वली (णंताणंतलडु के०) सातमो जघन्य अनंतानंतो (जायइ के०) थाय. वली (तंचितिकुत्तो के०) ते जघन्य नंतानंतने त्रण वेला (व्यगसु के०) वर्गीयें एटले ए राशिने एज राशि साथें गुणीयें, तेवारें जे राशि आवे, ते ने वली तेज राशिसाथें गुणीयें, ते गुणतां जे राशि आवे, तेने वली तेहीज राशि साथें गुणीयें. एम त्रण वेला वर्ग करीयें, (तह्वि के०) तो पण (न तंहोइ के०) उत्कर्षुं नंतानंतुं न थाय, तेवारें (णंतखेवेखिवसुठइमे के०) तेमांहे आ उ अनं ता चेलीयें, तेनां नाम आगली गाथायें कहे हे ॥ इति स् यार्थः॥ ए७॥

सिद्धा निगोच्प्रजीवा, वणस्सई काल पुरगला चेव ॥ सब मलोग नहं पुण, तिवग्गिठं केवल ङगंमि ॥ ७०॥

अर्थ-(सिद्धा के०) एक सिद्धना जीव, ते अनव्यथी अनंता हे तथा बीजा (निगोअजीवा के०) सूद्धा अने बादरनिगोदना जीव साधारण वनस्पतिना जी व पण अनंत हे ते पण नेजीयें तथा त्रीजा (वणस्सई के०) प्रत्येक साधारणवनस्पतिना जीव पण अनंता हे ते पण नेजीयें, अहींआं वनस्पतिमांहे पण निगोद नेजी जहयें, चोथा (काल के०) अतीतकाल अने अनागतकालना सर्व समय जे अनंते हे ते पण नेजीयें, पांचमुं (पुग्गलाचेव के०) सघला पुजल स्कंधना परमाणु एकेक जीवनी निश्रायें अनंतानंत परमाणु अनिष्ट हे. ते पण

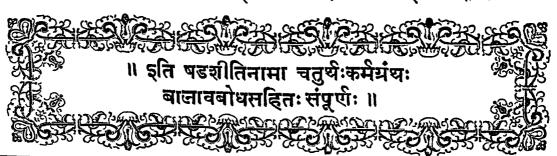
चेलीयें, ढठा (सबमलोगनहं केण) सर्व लोकाकाश छने छलोकाकाशना प्रदेश जे छनंते छे, ते छनंतो पण ए मध्यें चेलीयें, ते सर्वनो एकराशि करीने (पुण केण) वली (तिविग्गड केण तेनो पण ज्ञण वेला वर्ग करीवें, ते वर्ग करीने ते मध्यें (केवलडगं केण) केवलज्ञान. छने केवलद्दीनना छनंता पर्यायठे ते चेलीयें, जे चणी सर्व द्वेयवस्तुना पर्याय छनंता ठे ते विषय पण केवलङ्गाननो ठे ॥ ज्ञान

खिते णंताणंतं, हवेइ जिघ्तु ववहरइ मझं ॥ इय सु हमच विद्यारो, लिहिड देविंद सूरीहिं ॥ ७ए॥ ॥ इति पडशीतिकाख्य चतुर्थकर्मग्रंथः समाप्तः॥

अर्थ- ( खिनेणंताणंतंहवेइ जिंहतु के ० ) ते के पवे पके नवमुं उत्कृष्ट अनंतानंतुं होय, परंतु ए उत्कृष्टें अनंते कोइ वस्तु लोकालोकमां नथी. माटें (ववहरइमधं के ० ) लोकालोकमां जेटला पदार्थ हे. तेनो व्यवहार सर्व मध्यम आहमो अनंतानंतोज प्रवर्ते हे पण उत्कृष्टें अनंते कोइ वस्तु नथी. अहीं आम तांतरें उत्कृष्टानंतो कह्यो ( इयसहमह्यविश्वारो के ० ) ए सूक्तार्थविचार एटले सं तिने अगम्य जे जीवादिक पदार्थ तेनो विचार शब्दानिधेय श्रीपंचसंग्रहादिक जोइने अक्र्रविन्यास कस्त्रो. ( देविंदस्रिहें के ० ) तपागहाधिराज श्री देवेंइस्रिगें ( जिह्नि के ० ) जस्त्रो. ए पडशीतिकानामें चोथो कमीगंथ समाप्त थयो ॥ एए॥

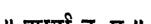
॥ श्रीम ांड्कुलांनोधिविधुः सूरीश्वरो ऽनवत् ॥श्रीमदानंदविमल,वैराग्यामृतपू रितः ॥ १ ॥ तिष्ठिष्यमुख्यसंख्यात, संख्याच्याप्तगुणोत्कराः ॥ श्रीसोमिनमेलनामा नः बनूबुंर्मुनिविश्रुताः ॥ १ ॥ श्रीहर्षसोमतिष्ठिष्य, प्रज्ञाविज्ञाननार्गवाः ॥ श्रीयश् स्सोमना न दिनेयाविशारदाः ॥ ३ ॥ तत्पदांनोजनृंगेण, लेखो दृक्केखनो नृ शं ॥ मुग्धानामवबोधार्थे टबार्थः पट्शीतिकाख्ये ॥ ४ ॥ इति प्रशस्तिः ॥

॥ अथ प्रशस्तिः ॥



श्र

## ॥ ज्ञात नामा पंचम कर्मग्रंथः प्रारप्यते॥



## ॥ आयी व म्॥

ऐंड्श्री रपीडन, विधिति इं, ध्व कमेशलननरं ॥ व्याणिति इ रणं, जैनं ज्यो तिर्जय नित्यं ॥ १ ॥ नव तमधनं शतशो, नला शत खनतांन्हि तप म् ॥ श्री वीरजिनं धीरं, लिखामि शतके टबाधेमहं ॥ १ ॥ ध्रुवबंधोदय सत्ता, ना ते व मेणांशक गवान् ॥ १ पदीमदीदीश ।, सा म ति । पहर ॥ ३ ॥

निम्छ जिणं धुववंधो, दय सत्ता घाइ पुस् परिस्रता॥ सेस्रर च ह विवागा, वुं बंधविह सामीस्र॥ १॥

थै—(निमञ्जिलां के॰) न स्कार रीने जिन प्रत्यें (ध्रुवबंध के॰) ए ध्रुवबंधिनी प्र ति, (उद्य के॰) बीली ध्रुवोदयी प्रकृति, (सत्ता के॰) त्रीली ध्रुवस ता प्रकृति, (घाइ के॰) चोथी घातिनी प्रकृति, (प्रसु के॰) पांच । पुल्यप्रकृति, (परि ता के॰) उद्यी परावर्त्तमान प्रकृति, (से र के॰) वली एना इतर उ नेद लेवा एवं बार दार थयां. (च उद्दिववागा के॰) र नेदें विपाविनी प्रकृति, (वुं के॰) कहेशे. तथा (बंधिवह के॰) चार बंधिविधि (सा शिक्ष के॰) वली चार प्रकारें बंधना स्वामी कहेशे एवं चोवीश दार थयां च एटले वली ॥इत्यक्त्रार्थः॥ र ॥

तिहां यंथकत्ती श्रीदेवेंड्सूरि लघुरातकनामा यथनें ारंजें प्रथम स चिते देवता नमस्कार रूप नाव मंगल निर्विच्न पणे यंथ माप्तिने हेतुयें करे छे. (निम् श्र के ।) नमस्कार करीने कोण प्रत्यें नमस्कार करीने ते कहे छे. जिए एट छे राग देवादिक श्रंतरंग वैरी जेणे जींत्या एवा जे श्रीजिन नगवंत तीर्थंकर ते प्रत्यें सर्व थ श श्रधिक ग्रुणवंत जाणी तेने नमीने श्राटला दारें करी शतकनामा यंथ हे शे.

ह्वे ते ग्रंथना श्रनिधेयनूत ब्रहीश दारनां नाम कहे हो. त्यां प्रथम जे कमें प्रकृति श्रापणा निजहेतु मृद्यां श्रवद्य बंधाय पण तेह्ने स्थानकें बीजी प्रित न बंधाय ते प्रथम ध्रुववंधिनी प्रकृति जाणवी श्रने बीजी जे कमेप्रकृति । पणा बंधहेतु सामग्री ढुंते बते पण केवारेंक वंधाय श्रने केवारेंक तेने स्थानकें तेनी विरोधिनी बीजी प्रकृति बंधाय ते श्रधुववंधिनी प्रकृति जाणवी. त्रीजी जे

प्रकृतिनो उदय विश्वेद काल पर्यंत निरंतर होय, पण तेनो उदय तेनो वि ह्यद थया विना त्रूटे नहीं. ते त्रीजी ध्रुवोदयी प्रकृति जाएवी. चोषी जे प्रकृ तिनो उदय केवारें होय वली केवारेंक न होय वली होय एम आंतरे उदय होय ते चोषी ध्रुवोदयी प्रकृति जाणवी। पांचमी जे प्रकृतिनी सना सर्वजी वने एटले मिथ्यात्वीने पण सर्वेदा पामियें परंतु नव प्रत्ययादिक कारणीक न होय ते पांचमी ध्रुव सत्ता प्रकृति जाणवी तथा वही जे प्रकृतिनी सत्ता नवप्र खयें तथा गुण प्रत्ययेंज होय पण अन्यथा न होय, ते वही अध्रव सचा प्रकृति जाणवी. सातमी जे प्रकृति आपणा ज्ञानादिक घातें करी आत्माना गुणने आवरे, ते सातमी घातिनी प्रकृति जाणवी. आवमी जे प्रकृतिना वर यथी आत्मानो शो पण ग्रेण अवराय नहीं. ते आतमी अघातिनी प्रकृति जाणवी. नवमी जे प्रकृतिनो विद्युद परिणामें उत्कृष्ट मिनो रस बंधाय तथा जेने उद्यें जीव, अ कूल पणे वेदे, ते नवमी पुख्यप्रकृति जाणवी. दशमी जे प्रकृतिनो संक्षेश परिणामे जन्कष्ट कटुक रस वंधाय, ते दशमी पाप प्रकृति जाणवी अगीआरमी जे कमेप्रकृति आपणी विरोधिनी प्रकृतिनो बंध तथा चद्यने निवारीने, पोतानो बंध तथा चद्य देखाडे, ते अगीआरमी परावर्तमा न प्रकृति जाएवी. बारमी जे मैप्रकृतिनों बंध तथा छद्य, अन्य प्रकृति साथें विरोधिनी नहीं तेना कारण उते पण होय ते बारमी अपरावर्त्तमान अविरोधिनी प्रकृति जाएवी. एम ए एक ध्रुवबंधिनी, बीजी घ्रुवोदयी, त्रीजी ध्रुवसत्ता, चोषी घातीनी, पांचमी पुर्य, बही परावर्त्तमान, एथी इतर एटले उपरांती एक अधुववं धिनी, वीजी अधुवोदयी त्रीजी अधुवसत्ता चोथी अघातिनी, पांचमी पाप, वही परावर्त्तमान, एम व नेद साथें मैलवतां बार दार थयां.

तथा चार विपाक एटले उदय कालनां ठाम, तेनां नाम कहे हे. एक देत्रिव पाकिनी, बीजी जवविपाकिनी, त्रीजी जीवविपाकिनी, चोथी पुजलविपाकिनी, एम जे जे कमेशकति, जे जे विपाकिनी होय, ते कही ं एटले शोल दार क

तथा चार बंधविधि, एटले बंधना प्रकार तेमां एक प्रकृतिबंध, बीजो हियति वंध, त्रीजो रसबंध, चोथो प्रदेशबंध, ए चार प्रकारना बंधने जत्कृष्ठ तथा जधन्य नेदें करीनें कहीं. एवं वीश हार थयां.

तथा एक नूयस्कारबंध, बीजो छल्पतरबंध, त्रीजो वस्थितबंध, चोयो अव्यक्तबंध, एं स्वरूप तथा प्रकृति बंधादिक जे उत्कृष्ट जवन्यपर्ऐ तेना स्वामी एटले अधि ारी ए चार वानां कहेज़े. ए चोवीश दार, शत ना । अथनां ह्यां. तथा गायाने अंतें अ ।रहे ते चकारने अर्थेंहे तेचशब्द यकी उपशमश्रेणी, तथा बीजी क्रपकश्रेणी, ए बे श्रेणीं स्वरूप हें. ए बीश दारनाना शत कना । मैंग्रंय ं केवानां कह्यां ॥ १ ॥

तिहां प्रथम दारें सुड ालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति हे हे.

वस् च ते त्र कम्मा, गुरु लहु निमिणो वघाय नय कु ।॥
मिच्च कसाया वरणा, विग्धं धुवबंधि सगचता ॥ ॥॥

वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ए चार प्रकृति ं नाम वर्णचतुष्क कहीयें एक ते जसशरीर, बीजं कामेणशरीर, त्री ं आ रुलघुनामकमें, चोछं निर्माणनामक में, अने पांच ं उपघात नामकमें ए पांच अने पूर्वोक्त वर्ण चतुष्क ए नव ना मकमेनी प्रकृति ध्रुवबंधिनी कहीयें जे नणी चार गतिना जीवने तेजस कामेण शरीर होय, तथा वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श, ते औदारिक अने वित्र यशरीरना बंधें होय, तथा निर्माणनामकमे पण अंगोपांग ।श्रयी होय, वली अग्रुरुलघु तथा उपघात नामकमे पण, शरीरबंधें होय, तथी स्व स्व गति प्रायोग्य ए नामकमे नी नव प्रकृति ।पणा अविरति कषायादिक हेतु उते वंधाय तेथी ए नव प्रकृतिने ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीथें.

नयमोह्नीय ने गुप्तामोह्नीय, ए वे प्रकृतिनी बंधिवरोधिनी प्रकृति नथी, तेथी भ्रुवबंधिनी कहीयें. तथा मिण्यात्वमोह्नीय पण निज हेतु मिण्यात्वोदय सङ्गावें खवस्य बंधाय हे. ते नणी एने पण भ्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें एवं त्रण थइ. तथा खनतानुबंधिया कषायोदय हेतु सङ्गावें खनंतानुवंधी क्रोध, मान, मा

रा ने लोन, ए चार, छवश्य बंधायः तेमज छप्रत्याख्यानोद्यसङ्घावें प्र र नीया चार बंधाय ने प्रत्याख्यानोद्यरूप निज हेतु उते चार प्राख्यानी या ंधाय. संज्वलन षायोद्य रूप निज हेतु उतां संज्वलना चार कपाय वंधाय. एवं ोल षाय बंधाय. ए सर्व ली उंगणीश प्रकृति मोहनीयनी थइः

ा ज्ञानावरणीयनी प्रकृति पांच अने द्दीनवरणीयनी प्रकृति नव, ए चौद आवरण पण सर्व जीवने पोत पोताना बंध विश्वेद स्थानक लगें अवस्य वंधाय. तेने स्थानकें बीजी विरोधिनी प्रकृतिनों वंध न थाय. ते नणी ए पण ध्रुववंधिनी प्रकृति । एवी. ए ंतरायकमेनी पांच प्रकृति पण दशमा ग्रुणगणा लगें सर्व जीवने वर्य वंधाय. तेथी एने पण ध्रुववंधिनी प्रकृति कहीयें. एवं ए सुद्धतालीश कमें प्रति । पणा मिथ्याल, अविरति अने कपायादिक हेतुना सङ्गावें सर्व जीवने वर्य वंधाय. ते नणी एने ध्रुववंधिनी कहीयें. तेमध्यें ज्ञानावरणीयनी पांच, द व्ह्य वंधाय. ते नणी एने ध्रुववंधिनी कहीयें. तेमध्यें ज्ञानावरणीयनी पांच, द व्ह्य वंधाय. ते नणी एने ध्रुववंधिनी कहीयें. तेमध्यें ज्ञानावरणीयनी पांच, द व्ह्य वंधाय. ते नणी एने ध्रुववंधिनी कहीयें. तेमध्यें ज्ञानावरणीयनी पांच, मैनी थड़ने उत्तर प्रकृति सुद्धतालीश थाय ॥

अने वेदनीय तथा गोत्र ए बे कमेनी मूल प्रकृतिनी अपेक्सयें ध्रुवबंधिनी जा एवी. परं उत्तरप्रकृतिनी अपेक्सयें अध्रवबंधिनी जाएवी॥ १॥

हवे अधुववंधिनी प्रकृति कहे हे.

॥ अथा ध्रुवबंधिन्यः॥

तणु वंगा गिञ्ज संघय, ण जाइ गइ खगई पुष्टि जिणुसा सं॥ ने ञ्रायव परघा, तसवीसा गोञ्ज वेयणियं॥३॥

थै—(तण्वंग के०) त त्रि अने उपांगत्रिक, (आगिश्र के०) आरुति ए टले संस्थान ढ, (संघयण के०) संघयण ढ, (जाइ के०) जाति पांच, (गई के०) गतिचार, (खगई के०) विहायोगित बे, (पुवि के०) आ पुर्वीचतुष्क, (जिणुसासं के०) जिननामकर्म अने उद्यासनामकर्म, (जोश्रायव के०) उद्योतनाम तथा ।तपनाम, (परघा के०) पराघातनाम, (तसवीसा के०) त्रस दशक अने स्थावरदशक, ए बे मलीने वीश प्रकृति जाणवी. (गोश्र के०) गोत्र िक, (वेश्रणिश्र के०) वेद्नीयिक, एवं बाशव प्रकृति थइ.

त एटले शरीरनामकर्म, ते मध्यें तैजस ने कामण, ए बे शरीर तो पूर्वे अधुबंधी कह्यां हे अने शेष औदारिक, वैत्रिय ने ।हारक, ए त्रण रीर तथा एज त्रण शरीरनां छंगोपांग, ते ध्यें ष्य या तिर्धेचने छौदारि होय ने देव तथा ना रिक्ष प्रायोग्य वैत्रि य होय, ते ध्रुवबंधिनी प्रकृति हीयें छनें एकति एट छे संस्था न ह हो, ते ह ध्यें ए स यें ए बंधाय. ते नणी एने पण ध्रुवबंधी हीयें तथा संघयण पण ष्य, तिर्धेच प्रयोग्य बांधतां ए यें ए ज बंधाय ने देव ता तथा नारकी प्रायोग्य बांधतां संघयणनो बंध न होय एं छश्रुवबंधिनी ही यें. तथा एकें हिय, बें हिय, तें हिय, चौरिं हिय ने पंचें हिय, ए पांच जाति ध्यें एकें हियादिक स्वस्व प्रायोग्य ए जातिज बंधाय, ते ए ध्रुवबंधिज हीयें. पण ए स यें ए ज देवादि नी गित बंधाय, ते ए पण छश्रुवबंधिनी प्रकृति हीयें तथा छोनिवहायोगित ने छ निवहायोगित, ए बे प्रकृति पण बंधिवरोधिनी हो. तथी निवहायोगित वंधाय, तेवारें निवहायोगित न बंधाय, तेथी ध्रुवबंधिनी हीयें. तथा देवानुपूर्वी, नुष्या पूर्वी, तिर्थचानुपूर्वी छने नरका पूर्वी, ए चार प्रकृति पण बंधिवरोधिनी हे माटें छश्रुवबंधिनी कहीयें. एवं ए तेत्रीश प्रकृति परावर्त्तमान नणी छश्रुवबंधिनी कहीयें.

जिननामकमे सम्यक्त बतां पण कोइएकने बंधाय ने नेइ एकने न बंधा य, ते नणी अधुवबंधिनी हीयें तथा ज्ञ्जासनाम मे पण पर्याप्त प्रायोग्य बां धतां बंधाय. परं अपयोप्त प्रायोग्य बांधतां न बंधाय, तेथी अधुवबंधिनी हीयें तथा छ तिना में पण तिर्वचप्रायोग्य बांधतां ोइ ए ने बंधाय छने बीजानें न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहीयें तथा ।तपना में पण भवीका य एकेंड्य प्रायोग्य बांधतां कोइ एकने बंधाय छानें होइ ए ने न बंधाय, तेथी ध्रुवबंधिनी किह्यें तथा पराघातनामकर्मे पण पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां एकने केवारेंक बंधाय ने कोइ एकने पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां न बंधाय, तेथी अध्रवबंधिनी हीयें तथा त्रसदेशक ने स्थावरदेश एटजे स, बादर, प यप्ति अने प्रत्येकादि , तेमज स्थावर, सू , अपयीप्त ने साधारणादि प्रायो ग्य बांधतां बंधाय, परं तेथी विपरीत बांधतां न बंधाय तेथी ए वीश प्रकृति प ण अध्रवबंधिनी दीयें तथा है गींत्र बांधतां नीचैगींत्र न बंधाय. अने नीचै गींत्र बांधतां जै गींत्र न बंधाय माटें ए बें प्रकृति, बंधिवरोधिनी नणी एने ध्रुव बंधिनी किह्यें तथा शाता, आशातावेदनीय पण परावर्त्तमान बंधाय पण वेंद्र साथं न बंधाय तेथी ए बे प्रकृति पण अधुवबंधिनी कहीयें. एवं उंगणत्रीश प्र कति थइ. तथा तेत्रीश ागलनी मेलवतां बाशव प्रकृति थई ॥ ३॥

हासाइ जुखल इग वे,ख खाउ तेउत्तरी खधुववंधो॥ नंगा खणाइ साई, खणतं संतुत्तरा चठरो॥४॥

श्रथ—(हासाइज्ञ अल के०) हास्य श्रमे रित तथा शोक अने अरित, ए (इग के०) बे युगल (वेश्र के०) त्रण वेद, (श्राव के०) चार श्रायु, (तेवतरी के०) ए तहों तर कमेप्रकृति, (श्रधुवबंधों के०) श्रधुववंधिनी जाणवी. एना (जंगा के०) चार जांगा; (श्रणाइसाईश्रणतं के०) श्रमादि श्रमे सादि ए वे प देने श्रमंत अने (संतुत्तराचवरों के०) सांत ए वे पद, प्रत्येकें श्रागल जोडतां चार जांगा होय एटले श्रमादि श्रमंत, श्रमादि सांत, सादि श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत श्रमंत ए वे जोडतां चार थाय॥ इत्यक्त्रार्थः॥ ४॥

दास्य अने रति, ए युगल बांधतां शोक अने अरित, ए युगल न वंधाय ने शोक अने अरित बांधतां, दास्य अने रित न वंधाय. तेथी ए चार प्रकृतिनो वंध सांतरपर्णे बंधाय, तेथी ए अधुवबंधिनी उद्या गुणनाणा लगें जाणवी अने तेथी आगले निरंतरपर्णे बंधाय माटें पठी धुववंधी कहेवाय एमज अशाता वेदनीय पण जाणी लेवी तथा एमज नीचैगींत्र पण बीजा गुणनाणा लगें अधुवबंधी ने पठी धुवबंधी जाणवो.

िवंद, पुरुषवंद अने नपुंसकवंद, ए त्रण प्रकृतिमध्यें पण एक समयें एकज बंधाय. तेमां नपुंसकवंद मिध्यात्व लगें अने स्त्रीवंद, सास्वादन लगें बंधाय, तेषी आगल निरंतर पुरुषवंद बंधाय तथा एक देवायु, बीजुं नरकायु, त्रीजुं तिर्यवायु, अने चोछुं मनुष्यायु, ए चार आयुमांहेलो एक नवमां एकज वार एक गति ं ए बंधाय माटें अधुवबंधिनी जाणवी. ए रीतें ए तहों तर प्रकृति अधुववंधिनी क हियें. केम के केवारेंक बंधाय, केवारेंक न वंधाय, केवारेंक तेने स्थानकें विरोधिनी बीजी प्रकृति बंधाय, तेथी एनो बंध, निश्चल न होय तेथी एने अधुवबंधिनी कहियें.

हीं i घ्रुवाध्रुवने विषे चार नांगा अवतारियें, अनादि ने सादि, ए बे पद आगल प्रत्येकें अनंत ने सांत, ए बे पद जोडियें, तेवारें एक अनादि नंत, बीजो अनादि सांत, त्रीजो सादि नंत अने चोथो सादि सांत, ए चार नंग थाय जे कमेप्रकृतिनी प्रवाहरूपें बंधनी आदि न पामीयें. एट खे (१) जे ए ाठ कमें नी प्रकृति पूर्वें न हती अनें अमुक दिवसधी नवी थइ, एमकोइ वारें पण न कहें वाय, ते अनादि (१) अने जे प्रकृतिन्तं बंधकपणुं थया पठी वली पहेलां बांधी ते सादि. (३) जे प्रकृतिनो बंधविष्ठेद न होय, त्या लगें अनंत (४) तथा जेवा रें बंधनो अंत रे, तेवारें सांत, ए जे बंध मंगा ा, ते उदय ने उ दीरणायें पण सादि, अनादि, सांत अने अनंत, ए चार नांगा जाणवा॥ ४॥

पढम बिच्या धुव दइसु, धुववंधिसु तइस्र व नंगतिगं॥ मिन्नम्मि तिन्नि नंगा, डहावि स्रधुवा तुरिस्र नंगा॥५॥

अर्थ—(पढ के०) पहेलो अने (बिआ के०) बीलो ए बें नांगा, (धुवन द्रमु के०) धुवोद्यी प्रकृतिने विपे होय अने (धुववंधिसुत्र अव नंगितगं के०) धुववंधी प्रकृतिने विषे त्रीलो नांगो वर्लीने होप ए नांगा होय तथा (मिन्नमिम तिल्लांगा के०) मिण्यालमोहनीयने विषे त्रण नांगा लाने. वली (हाविधुवां के०) बेप रिनी अधुववंधी प्रकृति एटले एक अधुववंधिनी, बीली धुवोद्यी, एबेने विपे (तुरि नंगा के०) एक सादि सांत नामें चोथो नांगो होय॥५॥ तेमांहे पहेलो नादि अनंत तथा बीलो नादि सांत, एबे नांगा एक मिण्याल मोहनीय विना होष ववीश धुवोद्यी प्रकृति अधी लानें. ले नणी अनव्यने निर्माण दि ववीश प्रकृतिना नद्यनी आदि न पा थिं ते आगला एवाणाने अनावें नद्य विश्वेद पण न पामीयें, तेथी अनंत एटले अनादिअनंत नांगो जाणवो, तथा नव्यनी पेक्लायें ए ववीशनी आदि नथी पण बारमे, तेरमे अने चौदमे, गुणवा एो चद्यनो अंत थहो, तेथी सांत माटें अनादि सांत, ए बीलो नांगो पामीयें.

तथा ध्रुववंधिनी वर्णच ष्कादिक सुडतालीश प्रकृतिना बंधनी अपेक्स्यें त्र ए नांगा होय, ते आवी रीतें जे अनव्य जीव नादिकालनो ए, ध्रुववंधिनी प्रकृति सर्वदा बांधे हे. तेथी अनादि तथा आगलां ग्रुणवाणाने अनावें वंधव्यवहेद पण पामशे नहीं, तेथी अनंत. ए अनादि अनंतनामा प्रथम नांगो अनव्य आश्रयी कह्यो तथा नव्य जीव जे अनादि मिण्याली हे, तेने आनादि सांत नांगो जाणवो ने जे नव्य जीव अगीआरमे ग्रुणवाणे ए प्रकृतिनो अबंधक थइने व ली तिहां थकी पडतो वंध आरंने, तिहां सादि, ते वली अवश्य अवंधक थशे, तेथी सांत, ए चोथो सादि सांतनामा नांगो कह्यो. ए रीतें त्रण नंग कह्या.

ह्वे मिण्याल मोह्नीयनो वंध तथा उद्य त्रण नांगे लाने, तिहां अनव्यने मि ण्यालनो वंध तथा उद्य अनादि अनंत नांगो तथा अनादि मिण्याली नव्य नीवने अ नादि सांत नांगो जाणवो. केम के ते सम्यक्ल पामशे तेवारें मिण्यालनो अंत यशे तथा जे सम्यक्त वमीने मिण्यात्वें जाय ते सादि मिण्यात्वी तेनी श्रपेक्षावें ए चोषो सादि सांत जंग जाएवो. ध्यने त्रीजो श्रादिश्रध्रुव जांगो श्र्न्य जाएवो. जे जणी सादि तो जव्यनेंज होय ध्यने ते तो श्रवश्यमेव मुक्तियें जाय. तेवारें ति हां बंध तथा जदयनो श्रंत करे, तेथी सादि श्रध्रुव जांगो खोटो जाएवो.

अहीं आं ध्रुववंधिनी तथा ध्रुवोदयी प्रकृतिमध्यें मिष्यात्वमोह्नीय कहां ने प ण श्रद्धीं ते वेहुषी जूडं एटला वाम्ते कहां ने के, जो पण ध्रुववंधिनी श्रपेहा यें त्रण नांगा कहा, ते वंधें श्रावे पण उद्यें त्रण नांगा न श्रावे श्रने मिष्यात मोहनीयना तो उद्यना पण त्रण नांगा ने ते विशेष जाणवाने श्रथें नित्र कहा.

तथा जे प्रकृति बंधें छने उदयें पण श्रध्रुव ते श्रध्रुव पणा नणीज एक चोषे सादिसांत नांगे कहेवाय परंतु एने विषे ग्रंप त्रण नांगा न होय ॥ ए ॥ ॥ छाथ ध्रुवोदयिन्यः निरूपंते ॥ ह्वे सत्तावीश ध्रुवोदयी प्रकृति कहे हे.

निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह् असुह्ं तेख कम्म च ववना ॥ नाणंतराय दंसण, मिलं धुव वद्य सगवीसा ॥ ६॥

श्रथं—(निमिण के०) निर्माणनामकर्म. (थिर के०) स्थिरनामकर्म, (श्रथर के०) श्रह्यरनामकर्म, (श्रथ्य के०) श्रग्रह्म श्रुवामकर्म, (सुह्रश्रस्त के०) श्रुवामकर्म, (सुह्रश्रस्त के०) श्रुवामकर्म श्रुवे श्रुवानामकर्म, (तेश्र के०) तज्ञसनामकर्म. (कम्म के०) कार्मण नामकर्म, (चवन्ना के०) वर्णादिक चार, (नाणंतराय के०) ङ्गानावरणीय पांच. तथा श्रंतराय पांच, (दंसण के०) दर्शनावरणीय चार, (मिल्लं के०) मिथ्यालमी हनीय, (ध्रुववद्यसगवीसा के०) ए सत्तावीश कर्मप्रकृतिने ध्रुवोदयी कहीयें॥ ६॥ पाक निर्माण कीलं जिल्ला कर्मा श्रुवोदयी कहीयें॥ ६॥

एक निर्माण, बीजुं स्थिर, त्रीजुं अस्थिर, चोथुं अगुरुलघु, पांचमुं छुन, वर्षु न, सातमुं तैजस, आवमुं कामण तथा चार वर्ण, एवं बार नामकर्मनी ध्रुवो दयी प्रकृति. एनो चद्य, चारे गितना जीवने सर्वदा होय. एना चद्यनो व्यवष्ठे द काल, तेरमा गुणवाणाना प्रांतें हो. परंतु तिहां लगें तो सर्व जीवने विषे ए बार प्रकृतिनो चद्य पामियें, ते नणी ध्रुवोदयी कहीयें. ए मांहे थिर, अथिर, त था न ने न, ए चार प्रकृति विरोधिनी कही हो. पण ते वंधनी अपेह्य या न ने न, ए चार प्रकृति विरोधिनी कही हो. पण ते वंधनी अपेह्य यें विरोधिनी जेवी परंतु एनो चद्य विरोधी नथी, जे नणी लोही लाल मूत्रादिक प्रज्ञानो स्थिर वंध अस्थिर कर्मीदयथी होय तथा हाड, दांतादिकनो स्थिर बंध स्थिरकर्मना चद्यथी स्थिर होय. एम चारे प्रकृति चद्य अविरोधिनी हो तेमज छन

नामोदयें मस्तकादिक श्रुन श्रंग होय ने श्रुंन । विशें पादादि श्रंग न होय ए रीतें चदय श्रविरोधी हे ते । दें ध्रवोदयी ही एवं बार प्रकृति शर्

पांच ज्ञानावरणनो उदय पण र । णुठाणा धी निरंतर सर्व जीवने हो य, तेमज दानादिक पांच अंतराय । कित । चकुरादि चार, दर्शनावरणी यकमेनी प्रकृति, एनो उदय पण बार । गुणठाणा लगें होय, तेथी ए चौद प्रकृति पण ध्रुवोदयी कही तथा मिण्याल ोहनीयनो उदयविष्ठेद प्रथ गुणठाणे के, ते नणी प्रथम गुणठाणे वर्त्तता जीवने मिण्याल ोहनीयनो उदय ध्रुव हीयें अने जो पण सास्वादनादिक गुणठाणे मिण्याल ोहनीयनो उदय न लाजे, तो पण ते अध्रुव न जाणवो जे नणी ध्रुवोदयी एज लक्ष्ण के जो । पणा उदय व्यवष्ठेद स्थानक लगें निरंतर जेनो उदय । जे, ते ध्रुवोदयी हेवाय एम सत्तावीश प्रकृति कही ॥ ६॥

हवे एनी विपरीत ध्रुवोदयी प्रकृति हे हे.

थिर सुन अर विणु अरुव, बंधी मि विणु मोह धुवबंधी॥ निद्दोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवुदया ॥ ७॥

श्रथ—(थिर के०) स्थिरनाम मे, (न के०) ननाम मे, (इश्रर के०) एथी इतर ते श्रस्थिरनामकमे श्रने नना मे, (विणु के०) ए चार प्रकृति विना शेष शरीर त्रण, उपांग त्रण, संस्थानढ , संघयणढ ,जाति पांच, गित चार एवं सचावीश तथा खगति दिक, श्रा पूर्वीच ६ . एवं तेत्रीश प्रकृति तथा जिनना म, उङ्खास, उद्योत, श्रातप, पराघात, सचतुष्क, नगचतुष्क, एवं ठेंतालीश स्थावरचतुष्क, दीनिग्यचतुष्क, गोत्र दिक, वेदनीय दि , हास्य श्रने रित तथा शो क श्रने श्ररति, त्रण वेद श्रने श्रायुश्च ष्क. ए उगणोतेर प्रकृति वंधविरोधिनी नणी (श्रधुववंधि के०) श्रधुववंधिनी कहीं एने जेम श्रधुववंधिनी कहीं, ते म उद्यविरोधिनी नणी कोइक श्रधुवोदयी पण जाणवी, केम के जिननामयी परा घातपर्यतिनी पांच प्रकृति हे तेनो उदय कोइएक जीवने होय ते नणी श्रधुवोदयी कहीं जो पण ए श्रविरोधिनी न कहेवी.

तथा शोल कषाय, सत्तरमुं नय, श्रहारमी श्रुएसा, ए श्रहार मोहनीयनी प्र कृति हो ते ध्रुवबंधिनी प्रकृतिमध्यं गणवी केमके ए मध्यें क्रोधादिकने उद्यें मानादिकनो उदय न होय, तथी ए उदयविरोधी हो पण वंधविरोधी नथी, तेणे करी बंधमां तो ध्रुवबंधिनी कही पण उदयमां श्रध्नवोदयी कहीयें, तथा नय श्र ने जुगुप्तानो उदय नांतर ने केमके कोइने कोइ वारें दोय, कोइने कोइ वारें न होय ते नणी ए पण श्रध्नवोदयी कही. तथा (मिद्यविणुमोद्द्युववंधी के॰) मि ध्यात्व ध्रुवबंधी नतुं पण ध्रुवोदयीमध्यें गण्युं, तेथी ते वर्ष्युं, ज्ञेप श्रद्धार प्रकृ ति, श्रध्नवोदयी जाणवी। एम सत्याज्ञी प्रकृति श्रध्नवोदयी जाणवी।

(निद्दोवधायमीसं के०) तथा दर्जनावरणीय कर्ममध्यें पांच निहानो उदय. केवारेंक होय अने केवारेंक न होय. तथा ए पांच निहा पण परस्परं उदयि रोधिनी हे. ते नणी एने पण अधुवोदयी कहीयें तथा उपघातनामनो पण कां इएक जीवने कोइएक वारें उदय होय तेथी अधुवोदयी कहीयें तथा मिश्रमोह नीयमुं उदय पण विरोधी हे. जे नणी मिथ्यात्व तथा सम्यक्त मोहनीयने उदयें एनो उदय न होय. तेम वली (सम्मं के०) सम्यक्त मोहनीयनो उदय पण वेदक सम्यक्टिएने होय ते नणी अधुववंधिनी कहीयें. एम ए जयन्य तो अंतर मुहूर्ण अने उत्कष्टियों तो हाश्वर सागरोपम उपर त्रण पूर्वकोडी अधिक लगें होय पण तेथी वधारें न होय, ते नणी अधुवोदयी जाणवी. तथा जो पण सम्यक्तनी पेरें सादि सांत नांगे मिथ्यात्व पण हे. तो पण ते अधुवोदयी न जाणवुं. जे नणी मिथ्यात्वादय नूमि प्रथम गुणवाणुं हे तिहांतो अवस्य मिथ्यात्वनोज उदय होय ते नणी ए धुवोदयी होय. जो तेनी पोतानी नूमिमध्यें पण केवारेंक एनो उदय न होय, तो अधुवोदयी कही॥ इति समुज्ञयार्थः॥ ७॥

॥ अथ ध्रुवसत्ताप्रकृतिराह ॥ हवे ध्रुव सत्ता प्रकृति कहे हे। तस वस वीस सगते, अ कम्म ध्रुव बंधि सेस वेय तिगं ॥ आगिइ तिग वेअणिअं, इ जुअल सग रल सास चऊ॥ ८॥

अर्थ-(तस के॰) त्रसदशक तथा धावरदशक, एवं वीश प्रकृति तथा (वस्विति के॰) वर्णादिक वीश प्रकृतिनी सत्ता सर्व शरीरधारीने होय, ते ज्ञृणी वर्णादि क वीश प्रकृति पण ध्रुवसत्ता कही तथा (सगते अकम्म के॰) तेजस सप्तक सम्बंध तेजसशरीरनाम, कार्मणशरीरनाम, तेजसंधातन, कार्मणसंघातन, तेज सतेजसबंधन, कार्मणकार्मणबंधन, तेजसकार्मणबंधन, ए सात प्रकृतिनी स्ता, सर्व जीवने होय केम के तेजस अने कार्मण शरीर पण सर्व जीवने होय ते

ाटें तेनी ध्रुवसत्ता जाणवी छने (ध्रुवबंधिसेस के०) ए वर्णचतुंक, तैज़स त या मिण, ए व प्रकृतिने सूकी शेप ध्रुवबंधिनी एकतालीश प्रकृति रही तेनां ना हे वे. शोल पाय, १७ नय,१० गुप्सा,१ए मिण्याल, पांच झानावरणीय, नव दशीनावरणीय, पांच छांतराय, एवं छाडत्रीश ३ए निर्माण, ४० वपघात, ४१ गुरुलघु, ए एकतालीश प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी नणी ध्रुवसत्ता पणे होय एनो वंध, सर्वदा होय तो सत्ता केम न होय? एवं छाडाशी प्रकृति ध्रुवसत्तायें कही.

(वेयतिगं के ) वेद त्रणनो बंध तथा उदय जो पण अधुव कह्यो है, तो पण एनी सत्ता ध्रुव कही है, जे नणी एकेक वेदमध्यें पण त्रण वेदना सं ात दल पामीयें, ते नणी ध्रुवसत्ता हीयें. एवं एकाणु प्रकृति घइ. ( आगिइतिग के । आरुतित्रि , एटले संस्थानथी त्रि लेवुं तिहां "तणुवंगागि" ए गायानी में प्रथम व संस्थान, व संघयण ने जाति पांच. ए सत्तर प्रकृतिनी सत्ता पण पूर्वली पेरें ध्रुव जाणवी. एट खे एक शो ने ाठ थइ अनें (वेखणि अं के ०) वेद नीय दिकनी सत्ता पण परस्पर सं ांतदलीकनी अपेक् ायें ध्रवसत्तायें जाणवी. एवं एकशो दश प्रकृति यइ तथा ( जुअल के०) वे युगल एटले हास्य अने रित तथा शो ने अरति, ए चार प्रकृतिनी सत्ता पण क्रूप श्रेणीयें नवमा गुणस्थानक लगें सर्व जीवने होय तथा (सगजरल के ) श्रौदारि सप्तक एटले श्रौ दारि शरीर, छौदारिक छंगोपांग, छौदारिक संघातन, छौदारिक छौदारिक बंधन, श्रीदारिकतैजसबंधन, श्रीदारि तैजस मिणवंधन अने श्रीदारिककामिणवं धन, ए सात प्रकृतिनी सत्ता पण सर्वदा पामियें जे नणी मनुष्य तिर्थेचने ए ज द्यें होय हे तथा देवता ने नारकीने वंधें होय, ते माटें चारे गतिमांहे ए नी सत्ता,ध्रुव होय तथा (सासच के०) एक ज्ञ्वास, बीछं ज्योत, त्रीछं छातप, चोछुं पराचात, ए ज्ञ्वासच ष्कनी सत्ता, सर्वदा होय ते नणी एने पण ध्रुव सत्ता हीयें. एवं एकशो ने प शिश प्रकृति थइ ॥ इति स च्यार्थः ॥ ७ ॥

खर्गई तिरि इग नीअं, धुवसत्ता (॥ अथाधुवसत्ता निरूप्यंते॥) सम्म मीस मणुअ इगं॥ विठिवकार जिणार्ट, हारस गुज्जा अधुवसत्ता॥ ए॥

थर्थ-(खगई के॰) छनविद्धायोगित अने अछनविद्धायोगितः ए विद्धुंप्रक तिना सत्ता,जीवने सर्वदा होयः तेथी ध्रवसत्ता जाणवीः (तिरिष्ठगृके॰) तिर्वचनी गित छने तिर्धेचानुपूर्वी ए वेहु नाम कमेनी प्ररुतिनी सत्ता पण सर्व जीवने सर्वरा होय जे नणी जीवने घणी स्थित तिर्धेचगितमध्यें होय हो तथा वीजी गितमध्यें पण एनो बंध होय, ते नणी एनी धुवसत्ता जाणवी. (निद्यं के०) नीचेगींत्रनी धुव सत्ता, तिर्धेचगितमध्यें नियमा निचेगींत्रनी उदय होय,तेथी ए एकशो ने त्रीश प्र कितनी सत्ता, मिण्यालगुणस्थानकें वर्त्तता सर्व जीवने होय जो पण धनंतानु वंधियानी सत्तानूमि. सातमा गुणनाणा जगें हे छने तेमध्यें पण विसंयोजना कीचे सत्ता टखे तो पण एनी मिण्यात्वें धुवसत्ता जाणवी. (धुवसत्ता के०) सत्ता एटखे धुवसत्ता प्रकृति एकशो ने त्रीश कही शेप छानवीश प्रकृति रही,ते एषी विपरीत छाधुवसत्तायें हे,ते कहे हे. जे प्रकृति चवेत्ये थके तथा छावंधें मिण्यात्व गुणगणें पण कोइ एक जीवने केवारें एक सत्तायें न लाने छने कोइ एकने लाने एम जजनायें सत्ता होय, तेने छाधुवसत्ता कहीयें. ते कहे हे.

(सम्म के०) एक सम्यक्तमोह्नीय, बीजी (मीस के०) मिश्रमोह्नीय, ए बे प्रकृतिनी सत्ता, अनादि मिथ्यात्वी जीवने होय तथा मिथ्यात्वगुणवाणे सम्य क्ल वमी आव्या होय तेने मिथ्यात्वप्रत्ययें ए वे पुंज उवेली वृद्धीश प्रकृति स तकमी होय तेने न होय बीजा जीवने होय तेथी अध्ववसत्ता प्रकृति कहीयें।

तथा (मणुअडगं के॰) मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी ए वे प्रकृति ते ते चकाय अने वाचकायमध्यें जे घणो काल रहे, तो ते चवेले तेने सत्तायें न होय,

बीजानें होय. एम ए प्रकृति पण अधुव सत्ता वाली कहीयें.

तथा (विग्रविकार के०) एक वैक्रियश्रीर, बीर्ज़ वैक्रियश्रंगोपांग, त्रीर्जं वैक्रियसंघातन, चोश्रं वैक्रियबंधन, पांचमुं वैत्रियतेजस वंधन, वर्डु वैक्रिय कामेणबंधन, सातमुं वैत्रि यतेजस कामेणबंधन, श्रावमी देवा तुपूर्वी, दशमी नरकगति, श्राविश्वारमी नरका पूर्वी, ए श्राविशार प्र तिनी सत्ता, श्राविश्वादिया जीवने न होय, बंधने नावें न होय. तथा ज्वेले पण द ले, तेथी ए गी ।र प्रकृतिनी श्रध्रवसत्ता । वी॰

(जिणार्ड केण) जिननामकर्मनी सत्ता, जे सम्यक्त्रप्रयों जिननामकर्म बां धी वली मिध्यात्व पामे, तेने ंतर हूर्त लगें होय, बीजानें न होय, तेथी धु वसत्ता कही. एमज मनुष्या , देवा , तिर्थेचायु अने नरका , ए चार मध्यें की इ जीवने एकनी सत्ता, कोइ जीवने बेनी सत्ता, एम ए पण ध्रवसत्ता कही.

( ाहारस । व ना के ) एक आहारकशरीर, बी हार गी

पांग, त्रीजं आहारकसंघातन, चोशं आहारकवंधन, पांचमं आहारकतैजस वंधन, उन्नं आहारककामेणवंधन, सातमं आहार कामेण तेजसवंधन, ए आ हारकसप्तक, एनी सत्ता जे अप्रमत्तगुणस्थानकें विग्रुक् चारित्रप्रत्ययें आहार र ग्रारीर वांधी पठी संक्षेत्र विशेषें मिण्यात्वें जाय. तेने सत्तायें होय, परंतु वीजानें न होय माटें अध्रुवसत्ता कहीयें. उज्ञेगेंत्रनी सत्ता पण अध्रुव जे नणी तेज अने वाजमध्यें रहेतो जीव, ज्ञेगेंत्र ज्ञेवेंछे, तेने ज्ञेगेंत्रनी सत्ता टखे बीजानें होय. एम जे प्रकृति मिण्यात्व गुणुगणे वर्त्तता पण कोइ जीवने होय कोइ जी वने न होय, ते अध्रुवसत्तानी प्रकृति हीयें ए अद्यविश प्रकृति कही एटछे स म्यक्त, मिश्र, मनुष्यिक, वैक्रिय एकादश , जिननाम, चार आधं, आहारक सप्तक अने ज्ञेगेंत्र, एवं अद्यविश थइ॥ इति समुच्यार्थः॥ ए॥

हवे गुणगणानी अपेक्षयें प्रकतिनी सत्तातुं ध्रवाध्रवपणुं विचारे हे. पढम तिगुणेसु मिलं, निस्प्रमा खजयाइ ख गे जिलं॥ सासाणे खजु सम्मं, सत्तं मिलाइ दसगवा ॥ १०॥

अथे—(पढमतिग्रणेसु के॰) मिच्याल, सास्वादन अने मिश्र, ए प्रथमनां त्रण गुणवाणाने विपे (मिन्नंनिश्रमा कें॰) मिच्यालमोहनीयनी सत्ता निश्रयपणे एटले श्रुवपणे होय. जे नणी मिच्याल मोहनीयना उदय विना प्रथम गुणवाणुं नज होय. तो ज्यां उदय होय, त्यां सत्ता तो श्रुव होय, अने मिश्रगुणवाणें पण मोहनीयना चोवीश, सत्तावीश अने अद्यावीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय, त्यां पण मिच्यालनी सत्ता सघले स्थानकें होय तेणे श्रुवसत्ता होय.

रोप ( अजयाइ अहगेन कं के ) अजय एट खे अविरित सम्यक् हिए ग्रंण गण यी मां मीने अगी आरमा उपशांत मो ह्यण गण। सुधीना आत गण गणें नजना में होय. जे नणी क्लायोप शिमक सम्यक् हिए में मिण्यात्व मो हनीय उवे खे यके मो हनी यनी त्रेवीश तथा बावीश प्रकृतिनी सत्ता यें वर्तताने मिण्यात्वनी सत्ता न होय तथा क्लायिक ने पण न होय अने जेणे मिष्यात्व उपशमा खुं होय तेने सत्ता हो य, तथी ए आत गण गणे मिष्यात्वमो हनीयनी अध्वयस्ता होय.

तथा (सालाऐखलुसम्मं.के॰) साखादन ग्रणगणें वर्ततो नियमा मोहनीय नुं एकज अन्नवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, परंतु मोहनीयनां वे, त्रण, सत्ता स्थानक न होय. जे नणी उपशमसम्यक्त्वें करी त्रिपुंज करो त्यांथी पडतो सा स्वादन एठाऐ। खावे, त्यां सर्व ोहनीय प्रकृतिनी सत्ता होय तेथी सम्यक्त मोहनीयनी सास्वादनने ध्रुव (सर्च के॰) सत्ता जाएवी।

अने (मि इदसगेवा के०) शेष मिथ्याल, मिश्र, अविरति, देशविरति, प्रम त, अप्र त, निरुत्ति, अनिरुत्ति, सूक्क्षसंपराय अने उपशांतमोह, ए दश ग्रण ऐ सम्यक्ल हिनीयनी सत्तानी न ना जाणवी, जे नणी सम्यक्ल पामी पर्वी मिथ्यात्वें त्युं होय ते ज्यां सुधी म्यक्लपुंज उवेले नहीं, त्यां लगें सम्यक्ल मो हनीयनी ता होय, ने म्यक्लपुं उवेल्या पर्वी तथा नाहि मिथ्यादृष्टि जीवने सम्यक्ल मोहनीयनी ता न होय ते ज त्रीजे मिश्रग्रणवाणे पण जो र म्यक्ल पुंज उवेली त्यो होय तेने सम्यक्लमोहनीयनी सत्ता न होय बी जाने होय तथा विरत्यादि । उ ग्रणवाणे क्षिय सम्यक्ष्टिने सम्यक्ल मोहनीय लपावी तथी तेने सम्यक्ल हिनीयनी सत्ता न होय तथा हा योपशिम ने औपश्वि सम्यक्ल हिनीयनी सत्ता न होय तथा हा योपशिम ने औपश्वि सम्यक्ल हिनीयनी सत्ता न होय तथा हा सम्यक्ल मोहनीयनी भ्रव तथा हा सम्यक्ल मोहनीयनी भ्रव तथा हा सम्यक्ल मोहनीयनी भ्रव तथा हा सम्यक्ल मोहनीयनी भ्रव तथा हा सम्यक्ल मोहनीयनी भ्रव ता ही॥ इति स यार्थः॥ १०॥

सासण मीसेसु धुवं, मीसं मि । इ नवसु नयणाए॥ आइ इग अण नियमा, नइआ मीसाइ नव गम्मि॥ ११॥

अर्थ-(सासण । सिसु के०) साखादन ने मिश्र, ए बे ग्रुणवाणे (मीर्स के०) मिश्रमोह्नीयनी सत्ता, (धुवं के०) धुव जाणवी। केम के साखादने सर्व अग्रुणवाणें मोहप्रकृतिनी सत्ता धुव होय ने मिश्रमोह्नीयना ग्रद्ध विना मिश्रगुणवाणें होयज नहीं, तेथी त्यां पण मिश्रमी ता धुव होय. ए ए बे ण वाणे मिश्रमोह्नीयनी धुवसत्ता जाणवी.

अने मिश्र तथा स्वादन, ए बे एाठाएा विना शेष (मि इनव नय ए के॰) एक मिय्याल, बीं विरित्त, त्रीज़ं देशविरित्त, चोधुं प्र , पांच प्रमत्त, उं निवृत्ति, सातं, अनिवृत्ति, ावं स्व्ह्यासंपराय, नवं उपशांतमो ह, ए नव गुएाउएो मिश्रमोहनीयनी सत्तानी नजना जाएवी, एट के कोइए कने होय अने कोइएकने न होय, जे नएी मिश्रपुंज उवेद्या पढी मिथ्यात्वें मिश्र मोहनीयनी सत्ता न होय ने जेएो मिश्रपुंज उवेद्यो नधी तेने मिश्र मो नीय नी सत्ता होय अथवा अनादि मिथ्यात्वीने तो नज होय.

तथा अविरत्यादिक आव गुणवाणे ऋायिक सम्यक्दृष्टिने ि श्रमोहनीयनी

सत्ता न होय, जे नणी सात प्रकृति खपावीने द्वायि सम्यक्ती घाय तेथी ि श्र ोह्नीयनी सत्ता टले द्वायि सम्यक्त होय तेमाटें था बीजा द्वायोपश्चिक तथा श्रीपश्चिक सम्यक्दृष्टिने मिश्र हिनीयनी सत्ता होय तेथी नजना ही एटले हेड्एकने केवारें होय अने कोइए ने केवारेंक न होय. ए नव गुणुगणे मिश्रमोह्नीयनी अध्रवसत्ता होय.

(आई गञ्जणनिय किं) आदि एट से पहेंसे तथा बीजे, ए बें गुणगणे नंतानुवंधिया क्रोधादि चारे पायनी सत्ता निश्चय होय जे नणी मिण्याल तथा सास्वादन, ए बे गुणगणे नियमा अनंतानुबंधीया बंधाय तथी ध्रुवसत्ता जाणवी.

रोष (नइत्रामीसाइनवगि केण) मिश्र गुणवाणाधी मांमीने उपशांतमो ह लगेंनां नव गुणवाणाने विषे अनंतानुबंधिया षायनी सत्ता संबंधि नजना जाणवी, जे नणी जेणे अनंतानुबंधिया विसंयोज्या तथा ठवेंक्या एटले खपा व्या तेने एनी सत्ता न होय ने बीजाने होय माटें नजना जाणवी. ए स्वमतें कहां तथा कमें प्रकृति अने पंचसंग्रहादिकने मतें तो अनंतानुबंधियानी सत्ता टब्या विना श्रेणी आरंजे नहीं तथी ते कहे हे जे अनंतानुवंधियानी विसंयोजना करी ने, जपशमश्रेणी आरंजे तथी तेने सातमा गुणवाणाधी जपरले गुणवाणे अनंतानु बंधियानी सत्ता न होय तथा मिश्रादि पांच णवाणे तो नेइएकने नंतानु वंधियानी ता होय, ने कोइएकने न होय एम नजना जाणवी माटें अध्वतस त्ता जाणवी, अने मिच्याल तथा सास्तादन ए बे गुणवाणे अनंतानुबंधियानी ध्रुव सत्ता होय एम वेहु मतें अनंता बंधिया कषायनी गुणस्थान नी पेक्रायें ध्रुवा स्वा होय एम वेहु मतें अनंता बंधिया कषायनी गुणस्थान नी पेक्रायें ध्रुवा ध्रुव सत्ता कही॥ इति स खयार्थः॥ ११॥

हवे आहारकसप्तकनी सत्ता कहे हे.

खाहार सत्तमं वा, सब गुणे वि ति गुणे विणा ति ॥ नो नय संते मिन्नो, खंत मुहुत्तं नवे ति ने ॥ १२ ॥

अर्थ-( आहारसत्तगंवासवयुणे के॰) एक आहारक शरीर, बीजं आहारक उपांग, त्रीजं आहारकसंघातन, चोथं आहारकआहारक बंधन, पांचमं आहारकते जसवंधन, ढांठु आहारककामेणवंधन अने सात ं आहारकतेजसकामेणवंधन, ए सात प्रकृति जे जीवें तथाविध विद्युद्धचारित्र प्रत्ययें अप्रमत्तगुणवाणे वांधीने तथाविध संक्षेत्र अध्यवसायें मिष्यात्व गुणवाणा जगें आवे तथा कोइएक वि द्युद्धाध्यवससायें केवलङ्कान पण पामे तेथी सर्व गुणवाणे एनी सत्ता होय अ ने कोइ एक जीव, ए सात प्रकृति बांध्या विनाज सर्वे गुणस्यानक स्पर्शे तेने ए सात प्रकतिनी सत्ता सर्वे ग्रणगणे न होय. ए रीतें नजना जाणवी.

तथा जिननामकर्मनी पण ए रीतेंज नजना जाएवी. जे नणी चोथा गुणग णायी लइने अपूर्वकरणना उठा पाया लगें जिननामनी वंधनूमि वे त्यां वि ग्रुद्धाध्यवसायें जिननाम बांधि पठी संक्षेत्रों मिच्यात्वें जाय तेथी मिच्यात्वें पण एनी सत्ता होय पण (बितिगुणेविणाति हं के ०) बीजे अने त्रीजे गुणगणे ती र्थंकरनामकमेनी सत्तावालों न आवे तेथी ए बे ग्रंणवाणा विना शेप बार ग्रणवा यो जिननामनी सत्ता पामीयें उपरखे गुणवायो पण चढतां जिननामनी स्ता होय अने जे जीव जिननाम बांध्या विना सर्व ग्रणगणां स्पर्शे तेनी अपेक्।यें स वे गुणवाणे जिननामनी सत्ता न होय एटले वीजे, त्रीजे गुणवाणे जिननामनी सत्ता नज होय अने बीजा गुणवाणाउने विषे नजना जाणवी.

( नोनयसंतेमिन्नो के ०) तथा आहारकशरीरादिक सात प्रकृतिनी सत्ता वतां अने जिननामनी सत्ता वतां ए उनयनी सत्ता साथें वतां तेने मिण्याल गुणवाणुं न होय जे नणी नामकमेनुं एकशो त्रणनुं तथा ज्याणुं प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक मिथ्याल गुणवाणे न पामियें, माटें आहारक सप्तक तथा जिननाम, ए बेहुमांहेथी एकनी सत्ता वतां मिथ्यात्व होय तेमध्यें (अंतमुहुत्तं नवेति हे के ) अंतर मुहूर्त लगें जिननामनी सत्ता मिच्यात्वें लहीयें पण अधिक न पामीयें जे नणी कोइएक सम्यक्ष्ष्टि जीवें पूर्वे नरकायु बांध्यं हे अने ते जीव आयु बांध्या पही ऋायोपश् मिक सम्यक्त पामीने तथाविध अध्यवसायें जिननाम बांधे, ते मरण समयें सम्यक्त वमतो नरकें जाय त्यां वजी अंतर्भुहूर्त पढी वजी सम्यक्त पामे तो जिन नामकर्मनी सत्ता होय, अने जो नरकें गया पढ़ी पतित परिणामें रहे तो अंतर्मुह र्त पढ़ी जिननामकमें चवेखे तेथी जिननामकमेनी सत्ता टली जाय. एटखे एक ध्रुव सत्ता अने बी छं अध्वतसत्ता रूप एम पांच मुं अने व छुं ए बे दार साथें कह्या ॥१ १॥ द्वे घातिनी प्रकृति रूप सात मुं दार तथा अघातिनी प्रकृति रूप आवसं दार,

ए बे बार साथें कहे है. हवे सर्वेघातिनी प्रकृति तथा अघातिनी प्रकृति कहे हैं।

॥ अय सर्व घातिन्यः प्रकृतयः॥

केवल जुञ्जला वरणा, पणिनद्दा बारसाइम कसाया॥ मिइंति सब घाई, चठ नाण ति दंसणा वरणा॥ १३॥

र्थ- तिहां जे कमेप्रकति, ार ाना एने ।वरे,ते घातिनीप्रकृति णवी तेमां सर्वे घातिनी प्रकतिना रस स्पर्क तो त्रामपत्रनी पेरें निहिन्न, स्फटिक ग्रहनी पेरें निर्मल, इाक्टानी पेरें सू सार प्रदेशें बहुलरस होय, तेथी ते सर्वधातिनी प्रकृति प्रदेशें व्य होय तो पण वीर्ये अधिक जाणवी हवे ते नां नाम कहे हे. (केवलजुअलावरणा के 0) केवलक्षानावरणीय अने केवलदर्श नावरणीय, ए बे प्रकृति, पोतानो । चार जे ज्ञान, दर्शन, ग्रण, तेने सर्वोशें आ वरे, जेम सूर्यप्रना, मेपें री सर्व विरी कहेवाय तथापि कांइ एक प्रनानों अंश छ विचा विनानो पण रहे हे तेथी री रात्री दिवसनो विनाग जणाय हे तेम जीवनो पण ज्ञानादि गुण सर्वे घातिनी प्र तियें करी सर्वे आवस्रो हे तो पण जेएों करी जह चैतन्यनो विनाग होय, एटलो चैतन्यांश उघाडो रह्योहे (पणनिदा के । ते एो पांच निइायें करी पण जे केवलदरीनावरणीयें अण आव ो एवो जे द्रीनांश ते पण सर्वीशें आवरियें, ए निड्एंच पण सर्व इंड्यिना अवबोधने आवरे माटें सर्वधाति कहीयें. अहीं ां पण मेघरष्टांत नाववों जेमाटें जो निज्ञा मांहे पण शब्दादिक सांचली जागे हे तथापि ए निज्ञा पण सर्वधातिनी जाणवी, तथा केवलज्ञान ने केवल दरीनना विरण पण सर्वथा टाब्या विना केवल क्वान उपजे नहीं माटें सर्वे घाति कहियें एटखे ए सात सर्वे घातिनी प्रकृति कही.

(बारसाइमकसाया के०) ए ज दिना बार कषाय जाएवा तेमां अनंता नुबंधीया क्रोध, मान, माया अने लोन, ए चार तो सम्यक्त गुणने सर्वधा आवरे हे तथा सर्वधाती का ने अप्रा ानावरण तथादिक चार पण देश विरतिगुणने सर्वधा आवरे हे तथा प्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार सर्व विरति गुणने सर्वधा आवरे हे माटें सर्वधाति जाणवा अहीं आं पण मेघनो हष्टांत नला व्यो तथा मिथ्यात्वीने पण तोइ एक तपश्चर्यादिकनी प्रतिपत्ति जिनवचनथी अविरुद्ध होय तथा अविरतिने पण मांसाह्यरादिकनी निवृत्ति होय तथा देशविर तिने पण नावचारित्र होय, एम ए बार कषायनी प्रकृति पण सर्वधातिनी हे.

(मित्तंतिसव्याई के०) मिय्यात्वमोह्नीय पण श्रीजिननापित जीवाजीवा दिक अनंतधमीत्मक तत्वश्रदान रूप सम्यक्त गुणने सर्वथी ह्णे, हे ते नणी ए पण सर्वयाति प्रकृति कहींथें. जो पण एना केटला एक बेहाणीआ तथा एक हाणीआ रसस्पर्दक देशघातीआ हे, तो पण अहींआं ग्रुनाग्रुनं परिणामें वं धनी पेक्सायें नथी लीधा एटखे एक केवलकानावरणीय, एक केवलदरीना वरणीय, पांच निज्ञा, बार कषाय छने ए मिण्यात्वमोहनीय एवं वीश प्रकृति सर्वधातिनी थई

ह्वे प शिश प्रकृति देशघाति कहे हे. तिहां देशघातिनी प्रकृतिना रसस्पर्कि स्यूलिड कहानी पेरें, ध्यमिड कांवलानी पेरें छने सुद्धािड पटवस्ननी पेरें, स्यूल प्रदेश नीरस. खसार, बहुप्रदेश छल्पविध, (चठनाणितदंसणावरणा के०) एक मित्रज्ञानावरणीय, बीजुं श्रुतज्ञानावरणीय, त्रीजुं अवधिज्ञानाव रणीय. चोशुं मनःपर्यवज्ञानावरणीय, ए चार ज्ञानावरणीयनी प्रकृति तथा चहु, अचकु ने खबि, ए त्रण दर्शनावरणीयनी प्रकृति, एवं मात प्रकृति देशघा तिनी जाणवी. जे नणी केवलज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण ए वे प्रकृति यें खण आवं एवं जे ज्ञान अने दर्शननो अनंतमो खंश तेने देशघी हणे, ते नणी देशघातिनी कहीयें जो पण अवधिज्ञानावरणीय अवधिदर्शनावरणीय अने मनःपर्यवज्ञानावरणीयना केटला एक रस स्पर्धक सर्वधातिया पण हे जेणे करी पोताना अवधिज्ञानादिकनो खंश मात्र नधी देखातो तो पण एनो रसोदय क्योपशम विरोधि हे तथी देशघातिनी कही॥ इति समुच्चयार्थः॥ १३॥ संजलाणनोकसाया, विग्धं इख देस घाइख ( अध्य घा

संजलणनोकसाया, विग्धं इच्च देस घाइच्च ( च्यच घा तिन्यः प्रकृतयः ) च्यघाइ ॥ पत्तेच्य तणुहाऊ, तस वीसा गोच्य इग वसा॥ १४॥

अथ-(संजलण केण) संज्वलना तथादिक चार कषाय देशघातिया हे जे नणी ए सर्व विरतिरूप जीवना गुणनें देशधकी हणे हे. केम के एना इदयधी साधुने सातिचार त्रत थाय. बीजा कषायना इदयधी मूलनंगें अतिचार होय माटें एने देशघाती कही हो. (नोकसाया केण) हास्यषट्क तथा त्रण वेद, एनव नोकषायमों हनीय प्रकृति पण देशघातिनी हो जे नणी ए प्रकृति चारित्रने विषे पण अतिचार मात्र उपजावे, पण एकली अनाचार जनक न होय, माटें देश घातिनी कही.

(विग्धं इत्र देसघा इत्र के०) 'तरायक मेनी पांच प्रकृति ए पण देशघातिनी होय जे नणी पुजल इव्यनो अनंतमो नाग दान, लान नोगा दिक ने विषे होय है. जे नणी यहण धारण योग्य जे पुजल हे ते पुजल, इव्यने अनंतमे नागे हे तेमां पण सर्व दान, लान, नोग, ने उपनोगा दिक, करी न शके, केम के अ

कमें नो दि ता आहारादि ंदा, जान नोगादि सर्व जीवने होय ते थी देशघातिनी ही. सर्व जीवने एनो क्र्योपश होयज तथा वीर्यातरायनो पण जो सर्वघाती रस होय तो जीव ंसर्व वीर्य आवरे थके जीव का नी पेरें निश्चे विंत थाय, तथी आहारादिकने ही परिण वि पण न शके ? ते नणी ए प्रकृति पण दे घातिनी जाणवी, तेथी सर्व जीवने वीर्यातराय क्र्योपश तारत म्यं, वीर्यतारतम्य होयज हो. केवली नगवानने वीर्यातरायनो क्र्य होय तेथी तेने अनं वीर्य होय. ए प ि प्रकृति देशघातिनी ही.

ने जो उदयापेक्सयें खेखवीयें, तो मिश्रमोहनीय ने म्यक्त ोहनी य, ए बे प्रकृति पण देशघातिनी गणतां सत्तावीश प्र ति ।यः तेनी साथें पूर्वे। सर्वघातिनी वीश प्रकृति मेखवीयें तेवारें डतालीश ति घातिनी थाय. तेथी शेष र ही जे प गेत्तेर प्रकृति ते ( घाइ के०) घातिनी ही छे. जे प्रकृति जीवना झानादि गुणने तो कांइ पण हणे नहीं तथापि जे चोरनी संगत रतां सा धु पण चोर हेवाय, ते ए प्रकृति पण घातिनी प्रकृति साथें वेदतां घातिनी केहेवाय, ते घातीनी प्र तिनां ना हे छे.

(पत्तेश्वतणुहा के॰) ए पराघात, बीजी चह्नास, त्रीजी तिप, चोथी च ोत, पांचमी रुलघु, उद्दी जिनना , सात । निर्माण, ने ाठमी उपघा त, एं ाठ प्रत्ये प्र ति धातिनी जाणवी ए प्रकृति नेइ त्माना एने न हृणे, त श्र एट खे "तणुवंगागिइ" ए गाथाने नु में ए श्रौदारिक, बी वैद्यान्त्री हिंदा, ए ए श्रीर तथा ए ए श्रीरना ए उपांग तथा एनी सा थें मिए श्रने तैजस मेलवीयें, तेवारें तनुश्र थाय तथा उ संस्थान, उ संघय ए, ति पांच, गित चार, खगति हि , ानुपूर्वी चार, एवं पांत्रीश प्रकृति खेवी तथा ( ाठ के॰) । सुनी चार प्रकृति, एवं उगएचालीश श्रने । उ पूर्वे प्र तथक प्रकृति ही है। एवं डतालीश प्रकृति श्रधातिनी थइ।

तथा (तसवीसा के॰) त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, ज्ञेन, नग, स्वर, दियर, यशःकीर्त्ते, स्थावर, स्र्इ्या, अपयीप्त, साधारण, अथिर, अग्रुन, इर्नग, इःस्वर, अनादेय, अयश, ए वीश प्रकृतिने त्रस्विंशति प्रकृति कहीर्थे. (गोअ इग के॰) गोत्रिहक अने वेदनीयिहक, ए उनय हिकनी चार प्रकृति तथा (वस्मा के॰) वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, एवं सर्व मली पञ्चोत्तेर प्रकृति, अधातिनी कही एटले घातिअधाति हार संपूर्ण थयुं॥ इति समु यार्थः॥ १४॥

हवे एकमे प्र तिनुं घाति, घातिपणुं रसनी छपेक्सयें होय, ते रस, मिष्ठ तथा टुकना नेदें करी बे प्रकारें हो. तिहां जे प्रकृतिनो रस मीने छानंददायक होय ते पुर्यप्रकृति जाणवी, ने जे प्र ति रस हनी पेरें नींबनी पेरें कडवुं इः । दायक होय, ते पापप्रकृति जाणवी, त्यां प्रथम पुर्यप्रकृति, बेंतालीश हे हो.

॥ थ पुष्य कतयः॥

सुर नर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वंग वहर च रंसं ॥ परघासग तिरि च्याक, वस च पणिदि सुनखगइ॥ १५॥

र्थ-ते ध्यें प्रथ (सुरनरतिग्र के०) सुरत्रि एट से देवगति, देवा प्र वीं, अने देवायु, ए त्रण प्रकृति जनावें बंधाय, ते नणी तथा एमां बहुत ध णीज शाता होय, ते नणी पुर्णप्रकति हीयें अने नर एट ले म व्यगति, म व्यातुपू वीं ने मनुष्यायु, ए ष्यहि ए ए जेद पण जनावें करी वंधाय तथा उचैगींत्र पण पूज्यन्णी पूजनीय योग्यता नणी, ए पण पुल्यत्रकृति जाण्वी तथा (सायं के ण) शातावेदनीय पण न ध्यवसायें री बंधाय. कूल पणे वेदे ते माटें ए पुर्व्यप्रकृति जाएवी तथा (तसदस केण) सदश ए नामकर्मनी पुर्व्यप्र कति 'नपरिणामें बंधाय हे. (तणुवंग के ) तणु एट के औदारिकादिक पांच शरी र तथा औदारि , वैत्रिय ने इहारक, ए ए उपांग ए आव प्रकृति पण न जाणवी. (वइर के०) ढ संघयणमध्यें एक वज्नक्षननाराच संघयण ए पण ग्रुन जाणवुं. (चवरंसं के०) व संस्थानमध्यें समच र संस्थान ए पण ग्रन् हे. (परघासग के०) पराघात, ज्यास, ातप, ज्योत, अग्रुरुलघु, जिन् म ने निर्माण, ए पराघातसप्त पण न जाणवुं. (तिरि । के ) तिर्येच आयु, ते पण पुल्पप्र ति हे. जे णी तिये पण जीव वाहे हे. तथा(व स्चित्र के ०) वर्णमध्यें श्वेत, पीत, ने र तथा गंध ध्यें नगंध, रसमध्यें कषायल, ाम्ल अने मिष्ट, तथा स्परीमध्यें लघु, ो ल, ची ट, एरीतें वर्णादिचतुष्क न से (पणिंदि के ) जाति पांच ध्यें ए पांचें िय जाति, शुन परिणामें बंधाय, ते पुल्यप्रकृति जाणवी अने (सुन गई केण) वि हायोगितमध्यें गज तथा इंसनी पेरें जे चाले, ते निवहायोगित जाएवी. ए पण ग्रुन परिणामे बंधाय माटें पुल्यप्रकृति जाणवी. ए बेंताजीश पुल्यप्रकृति जाणवी॥ इति स यार्थः॥ १५॥

॥ अथ पापप्रकतयः ॥ ह्वे ब्याशी पापप्रकृति हे हे. बायाल पुस् पगइ, अपढम सं । ए खगइ संघयणा ॥ तिरिष्ठग असाय नीन, वघाय इग विगल निरय तिगं ॥१६॥

अर्थ—( बायाजप्रस्नुपगइ कें ) बेंताजीश पुल्पप्रकृति ही. जे नणी बंधयो ग्यस्थान ध्यें ए शुनपरिणामें बंधाय तथा संेश परिणामें मंदरत बंधाय अने विश्व द्वपरिणामें तीवरस बंधाय ते नणी ए न उत्तमपुल्पप्रकृति जाणवी. ह्वे पुल्य थकी विरोधी पापप्रकृति च्याशी कहे हे. ए पाप प्रकृतिनो संेश परिणा में तीवरस बंधाय अने वि द्वपरिणामें मंदरस बंधाय, ते नणी पापप्रकृति कहीयें।

(अपढ संवाणखगइसंघयणा के०) प्रथम स च र संस्थान विना शेष पांच संस्थान तथा प्रथ ग्रुनविद्वायोगित विना बीजी अग्रुनविद्वायोगित, अहीं हां लेवी, तथा प्रथ संघयण विना शेष पांच संघयण एमां लेवां. ए अगी रि प्रकृति, प्रथमनां वे ग्रुणुवाणां लगें बंधाय. त्यां संक्षेश परिणामें जत्कृष्ट रस वं धाय अने विग्रुद्धपरिणामें मंदरस बंधाय, ते नणी ए पापप्रकृति हीयें.

(तिरिंड्ग कें ) तिर्यंचनी गित, तथा तिर्यंचा पूर्वी, ए वे प्रकृति अग्रुन हे. जे न णी ए गितमध्यें अनंतो काल पण जीव रहे, ए त्यंतमोहोदय थकी वंधाय, माटें पापप्रकृति जाणवी तथा (असाय के ) तावेदनीय पण उदय आवे, तेवारें जीवने प्रतिकूलपणुं देखाहे, ते नणी पापप्रकृति कहींयं तथा (नीर्ववाय के ) नीचैगों ने उद्यें पण नीच लप्रत्यें पामवे करी जीव हेलनीय होय तेथी एपण अ नपापप्रकृति जाणवी, उपघातनामनें उद्यें पण पडजीनी, चोरदांतादिकें करी इःख पामे, तेथी अ न जाणवी. (इगविगल के ) एकें इियजाति तथा विकल ए टले जेने पूर्ण पंचें इिय नहीं होय, ते विकलें इिय, वें इिय, तें इिय अने चौरिं इय ने कहींयें ए जातिनाम पण मिथ्यात्वें सं गें वंधाय, ते माटें अग्रुन जाणवी (निरयतिगं के ) नरकगित, नर लिपूर्वी ने नर यु, ए त्रण प्रकृति पण मिथ्यात्व विना न वंधाय, ते नणी न पापप्रकृति जाणवी ए त्रेवीश पापप्रकृति कही ॥ १ ६॥

यावर दस वस् च , क घाय पणयाल सिह्छ वासीइ॥ पाव पयिहति दोसुवि, वस्। इगहा सुहा असुहा॥ १९॥

अर्थ-( यावरदस के० ) स्थावरदशकने पण अग्रुनपरिणामें वर्ततो यको

जीव पामे, (वस्मुच वक्क के ) वर्ष ध्यें नीत छाने कहा तथा गंधमध्यें इरिनगं ध तथा रस ध्यें तींखो छाने कडवो तथा स्पर्शमध्यें ग्रुर, खर, जूक्क छाने शीत, ए चारे छाज लेवा. एने संक्षेत्रों बांधे; तेनणी पापप्रकृति कहीयें. एवं साडत्रीश थर्

तथां ( घायपणयाल के ० ) घाती पीस्तालीश प्रकृति एटले ज्ञानावरणीय पां च, दरीनावरणीय नव अने ोहनीयनी ववीश तथा अंतरायनी पांच, ए पीसा लीश घातिनी प्रकृति छार ना ६ ग्रुणने हुए। प्रतिकूलपणुं करे. तेथी ए पी । लीस घातिनी पापप्रकृति तेने छागली सांडत्रीश प्रकृतियें (सिंह्छ केण्) सिंदत रीयें, तेवारें ( सिीइ के०) व्याशी (पावपयिंदित्त के०) पापप्रकृति र्याय. एना विपा जीव प्रतिकूलपणे वेदे, सं शनी वृद्धियें एना रसनी वृद्धि होय, ते नणी एने पापप्रकृति कहीयें. ए बंधनी छपेक्तायें लेवी. अन्यथा तो सम्य क्ल मोहनीय तथा मिश्रमोंहनीय पण होवाय, परंतु ते एटला माटें न लीधी के, तेंनो बंध नथी. खंदींखां शिष्य प्रश्न करे हे के, हे जगवन् ! छात कर्मनी मली बंधापेक्सर्ये, एकशो ने वीश प्रकृति ही है. अने अहीं आं तो प्रत्यप्रकृति बेंताज़ी श तथा पापप्रकृति व्याशी, ए बेहु सेलवतां एकशो ने चोवीश प्रकृति थाय है, ते केस घटे ? छादीं । गुरु उत्तर कहे हे के, हे शिष्य ! एकशो ने विंशोत्तर बंध प्रकतिमध्यें सामान्य पर्णे वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ए चार प्रकति लेखवी वे अने अदीं आं तो मूल चार प्रकतिना द्यना न विनाग करतां खेतादिक ग्रुन् अ गीआर पुर्वप्रकतिमीहे गणी है अने नीलादिक अशुन नव पाप तिमांहे ग णी हे एम (दोसुवि के ) ब स्थानकें (वासाइगहासुहाअसुहा के ) वर्णी दिक चार प्रकृतिने विशेषें छन अने अ न पर्णे जूदी जूदी ग्रहण करी ने तेमा टें एकशो चोवीश थायं हे अने सामान्यें छुना नने एक नामे गणतां एकशो ने वीश बंध प्रकृति थाय. अहीं आं कांइ दोष नथी. एम पुल्यप्रकेंति तथा पापप्रक तिनां दार कह्यां॥ इति पुरवपापदार ॥ इति स वय्येः॥ १७॥

एम पुर्व अने पापने परिणामें करी बंधनुं विरुद्ध पणुं होय तेमाटें पुर्व्यप्र ति तथा पापप्रकृति किहने हवे बंधें तथा ठढ़यें विरोधिनी प्रकृति कहे है. तेमध्यें पण सूची कटाह न्यायें अव्प संख्यांक प्रकृति नणी प्रथम परावर्तमान प्रकृति ं दार कहे है.

॥ अषाऽपरावर्तमानाः प्रकृतयः ॥ हवें परावर्तमान प्रकृतियो कहे है. नाम धुव बंधि नवगं, दंसण पण नाण विग्ध परधायं॥ नेय कुंच मिच सासं, जिणगुण तीसा अपरियत्ता॥ १०॥ अथ-ए वर्ण, बीजो गंध, त्रीजो रस, शियो स्पर्श, पांच हो तैजस, हो का मेण, सात हो नि एए, आहमो उपघात, नव हो अग्रुरुलघु, ए (ना धुवबंधिनव गं केण) ना धुवबंधि नव , ए ना धुवबंधिनी नव प्रकृति सर्वथा बंधा य. एना बंधने स्थानकें कोइ नाग्रुन परिणा विशेषें बीजी प्रकृति बंधाय न हीं. केवल एना रसबंध हे नावनी मंदता रे, ते नणी परावर्त्त ही।

(दंसणपणनाणविग्घपरघाषं के०) चक्कुद्दीनादि चार द्दीनावरणीय तथा मित्झानादिक पां झानावरणीय ए नव प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी चणी परावर्च ।न जाणवी. तथा दानांतरायादिक पांच खंतरायनी प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी जाणवी तथा पराघात नाम में पण, ध्रुवबंधी हे. ए खन्य प्रकृतिनो बंध तथा चद्य रुंध्या वि ना पोतानो बंधोदय दीपावे. एनी विजागनी प्रकृति नथी तेजणी खवरोधिनी हे.

(त्रय हमिह्नसासं के॰) नयमोह्नीय तथा प्लामोह्नीय पण पूर्वली कियें अपरावर्तमान प्रकृति हे तथा मिण्यालमोह्नीय पण ध्रुवबंधि तथा ध्रुवो द्यीपणे नणी बंध उद्यें अपरावर्तमान होय. अने उह्यासनामकर्म पण बंधें तथा उद्यें ोइ प्रकृति साथें विरोधी नथी, तेथी परावर्तमान (जिण्युणतीसाअप रियत्ता के॰) तीर्थंकरनामकर्म पण ते ज बंधें तथा उद्यें विरोधिनी हे ते नणी अपरावर्तमान कहीयें ए सर्व, उगणत्री प्रकृति बंधें तथा उद्यें बीजी प्रकृति साथें विरोधिनी नथी, तेथी अपरावर्तमान प्रकृति कहीयें अहीं आं कोइ पूर्व जे सम्यक्त्वमोह्नीय तथा मिश्रमोह्नीयने उद्यें मिण्याल मोह्नीयनो उद्य न होय, तेथी ए तो उद्यविरोधिनी हे तो अपरावर्त्तमानमांहे केम गणी? अहीं आं उत्तर कहे हे जे, मिण्यालमोह्नीयनी बंधोद्य नूमि प्रथम ग्रुणताणुं हे. तिहां सम्यक्त्वमोह्नीय अने मिश्रमोह्नीय नथी जो ए मिण्यालनी पो तानी नूमिमांहे एनो बंध उद्य रंधीने पोतानो बंध उद्य देखाहत तो विरोधिनी हेवात, परंतु तेम विरोधिनी नथी माटें अपरावर्त्तमान जाणवी. ए प्रकृतिनो बंध

चद्य, अनेरी प्रकृतिनो बंध, चद्य निवारे नहीं, माटें अपरावर्तमान जाण वी॥ इति सण ॥ १ ण॥ हवे एह्यी विपरीत नणी परावर्तमान प्रकृति कहे है.

॥ अथ परावर्त्तमानाः प्रकृतयोनिरूप्यंते ॥

तणु अह वेख्य डजुखल, कसाय विशेख गोय डगनिहा॥ तस वीसान परिता, खित्तविवागा ऽणुपूर्वीवै॥ १ए॥ य, छ तिन, आतप, गो बे, वेदनीय बे, पांच निज्ञा, त्रस विंशति अने चा ए आ , एवं ए । ए प्रकृतिमां ने इंधें ने इ छदयें ने बिहुं तामे परावर्षि एट छे फेरसार होय ते न ।। परावर्ष । ए दुं ना विरोधिनी पणें कहीयें इ ति परावर्ष । नाऽपरावर्तमान दार द्वं संपूर्ण ॥ ए रीतें बार दार संपूर्ण वखाएयां.

ति परावर्त्त ।नाऽपरावर्त्तमान द्वार द्वं संपूर्ण ॥ ए रीतें बार दार संपूर्ण वखाखां. हवे तेर ं दार विवरे के त्यां जे विपा ना रसोदय तेनां असाधारण ।रण यवा स्थान , ते ।र प्र ारें के एक हे , बीजो जीव, त्रीजो नव ने चो यो पुजल, तेमध्यें प्रथ हे विपा नि प्र ति हे के तिहां हे एटले आ। प्रदेश विशेष नी ख्यता पामीने जेनो उदय होय, जो पण सर्वप्रकृति नो उदय, इत्य, हेन्न, ।ल अने नावनी सापेकृतायें होय के पण अहींआं ए नीज ख्यता खेवी जे नणी जीवने दिव हिव श्रेणीयें परनव जातां आनु पूर्वीने उदयें री, जे बलदने नाथ साही फेरवीयें, ते । पूर्वी उदय उत्प ति सन ख करें ते नणी (खित्तविवागाऽणुपुदी के के के हेन्नविपाकिनी प्रकृति चारे आ पूर्वीने कहीयें जो पण व गित विना पण सं मण करणें देवगित,मनुष्यग ति, तिर्यचगित अने नर गित, ए चार ध्यें पोत पोतानी । पूर्वी सं मावी उदय । एो के पण अहींआं केवल । पूर्वीना उदयनी ख्यतानी अपेकृत यें व गितज लीधी ॥ इति स यार्थः ॥ १ ॥ ॥

हवे सर्वे प्र ति पोतानो विपा जीवने दे ाडे हे तो पण केटली एक छेत्र ख्यत्तायें विपाक देखाडे, ते छे विपाबि नी, नवनी ख्यतायें विपाक देखा डे, ते नवविपाकिनी, जे वा श्रार पुजलने विषे पोतानो विपाक देखाडे, ते पु जलविपाकीनी जाणवी ए त्रण निरपेष्ठ जे ात्माने विषे साङ्गात् विपाक दे खाडे, ते जीवविपाकीनी प्रकृति जाणवी. ते जीवविपाकिनी प्रकृति, हवे कहे हे.

घण घाइ इगोञ्ज जिणा,तसिञ्जर तिग सुनग इनग चनुसासं॥ जाइतिग जिञ्ज विवागा, ञाऊ च रो नवविवागा॥ २०॥

श्र-( घण के० ) मेघ ते जेम सूर्यनी प्रनानो ( घाइ के० ) घात करे, छाव रे, तेम जे आत्मानां झान, दर्शन, श्रदान, चारित्र, दानादिक लिच्ध, इत्यादिक ने ावरे, ते नणी घनघातिनी प्रकृति कहीयें. तेनां नाम कहे हे. झानावरणी यनी पांच, दर्शनावरणीयनी नव, मोहनीयनी छान्नवीश छने छंतरायनी पांच. ए सुडतालीश प्रकृति, शरीर पुजलादिक निरपेक् विपाक जीवने देखाडे. माटे ए प्रकृति जीविवपिकिनी कहीयें। ( इगोछ के० ) एक गोत्रिक छने वीछं वेदनी । इक, ए वे सुगल पण पोतानो विपाक जीवने विषे दीपावे। एथी उच्च, नीव त था सुली इःखी, जीव कहेवाय, माटें जीविवपिकिनी कहीयें तथा ( जिणा के० ) तीर्थंकर नाम कमेने उद्यें एक परमऐश्वर्य पूजातिशय, वीजो वचनातिशय, त्रीजो इग्नातिशय छने चोथो छपायापगमातिशय, ए चार छितशय जीवने होय, जे धर्मी जीव, तीर्थंकर परमात्मा कहेवाय, ते चणी ए प्रकृति पण जीविवपाकीनी जाणवी।

(ज्ञितिञ्चरितंग कें।) एक त्रसं, वीजो वादर छने त्रीजो पर्याप्त, ए त्रसंत्रिक छने एवी इतर स्थावर, स्क् छने छपयीप्त ए स्थावरित्रक एने उद्यें जीव, त्र सं, वादर छने पर्याप्त तथा स्थावर स्क् छने छपयीप्त. पण कहेवाय एम ए ना उदयं जीवनो पर्याप फरे, ते जणी एने जीवविषाकिनी प्रकृति कहीं (सुनग कें।) एक सौनाग्य, वीछुं सुसर, त्रीछुं छारेय, छने चोछुं यशःकीं ए चार प्रकृतिने उद्यें जीव सौनागी, सुसरवान् छारेय वचनवालो तथा यश् सी कहेवाय ते जणी ए प्रकृति पण जीवविषाकीनी हे छने (इनगचउसारं कें।) एक दौनींग्य, वीछुं छःसर, त्रीछुं छनारेयवचन, चोछुं छयशःकीर्नि, एनं उद्यें जीव छनींगी, इःसरवान्, छनारेयवचन वालो तथा यशोहीन माहो कहेवाय तेनणी ए प्रकृति पण जीवविषाकीनी हे छने थासोह्यासनामकर्म पण जीवविषाकीनी प्रकृति जो पण ए थासोह्यासपुक्तकर हे, तोपण एनी लिख जीवविषाकीनी प्रकृति जो पण ए थासोह्यासपुक्तकर हे, तोपण एनी लिख जीवविषाकीनी प्रकृति जो विषय एवं शहराह प्रकृति थइ।

(बाइतिग के०) एकेंड्यादिक जाति पांच, द्वादिकनी गति चार, अने खगिति वे, ए अगीआर प्रकृतिमां जाति नामकमेने उद्यें जीव, एकेंड्य, वेंड्य, तेंड्य, चौरंड्य अने पंचेंड्य कहेवाय, गितनामकमेना उद्ययी जीव देवता, मनुष्य, तियंच अने नारकी कहेवाय, खगितनामकमेना उद्ययी जीवनी सुचाल. कुचाल कहेवाय, ते जणी ए जीविवपाकीनी प्रकृति जाणवी, एवं अहोत्तेर प्रकृति (डी अविवागा के०) जीविवपाकीनी कहीं, जो पण सर्वे प्रकृति निश्चें नयथी जी विवपाकीनीज ने जेनणी अजीव घटादिक पदार्थने विषे कोइ प्रकृति पोतानी रा कि देखाडती नथी तोपण व्यवहारनयें चिद्धं प्रकारें विपाक विचारतां ए अहीं कर प्रकृति जीव विपाकीनी कहीं.

हवे ( आजच चरो नव विवागा के ) देवता दिकतो नव पामी ने ते नवता प्रध म समययी मां मीने चरम समय लगें निरंतर पर्हो जे कमी प्रकृति जीवने विषे स्व कि देखावे, ाट ाने हेडनी पेरें रो ही राखे, परनवें जावा न दिये ने जेवा रें ते प्रकृति खपावे, तेवारें परनव ं आयु ठद्य आवे यके पर नवें जीव जाय, एटले बीजी गति ां जाय, ते ाटें ए आयुं ते नवने विषेज उदय आवेढे ते ।रणे नवनी ख्यतायें करी देवायु, ष्या , तियैचा अने नर ायु, ए चार प्र कति, नवविपाकीनी कहेवाय. जो पण चारे गति पण ना मे पणे पोत पो । ने नवें ख्यवृत्तियें वदय आवें हे, यापि ए प्र ति नवविपावि नी हेवायः ारण के चर शरीरी जीव पूर्वबद्ध शेष ण गति । दली ने म ष्यगतिना ए ायु ां सं वि चद्यावली । एशि वेदीने पावें जे नएशि प्रदेशधी भे वे । विना बूटे नहीं, ने । ष्य सं । व्या विना हें जाय तेथी । शुं सं । व्या पढ़ी तेने कोइ । रें परनवा नो उदय न होय, खनवनो उदय होय, तेथी ए चार प्रकृति नवविपाकीनी हीयें ॥ इति स यार्थः ॥ २०॥ ह्वे पुजलविपाकीनी प्र ति हे हे. जे पोतानी शति रीरादिक पुजलने विषे दे खाडे ए प्र तिर्रानो करेलो ग्रुण तथा वग्रुण, इ, जपघात. शरीरादि नोकमेपुजलने विषे होय, तेथी ए पुजलविपा निती प्रकृति हियें. जो पण हीं कं टकादि अ न पुजल पा ।। अ ।ता वेदनीयज पोतानो विपा देखाडे हे तथा फूल चंदन. पूर, स्तुरी प्र ख न पुजल लइने ।तावेदनीयज पोतानो विपाक देखाडे हे तोपण ए शांता तथा शांतावेदनीयने पुजल विपाकीनी प्रकति न ही परं ए प्रकृतिनो ो इ, उपघात. विने होय हों ते हींयें हैयें

नाम धुवोदय च तणु, वघाय साहारणिय जोञ्जितिगं॥ पुरगल विवागि बंधो, पयइ १ इ रस पएसति॥ ११॥

थ-(नामधुवोदय के०) एक निर्माण, बी हिस्सर, त्रीजी स्थिर, चोथी न, पांचमी अ न, ढ़डी तैजस, सातमी कामेण, आठमी वर्ण, नवमी गंध, दशमी रस, अगी रसी स्पर्श अने बारमी गुरुज ए बार प्रकृति नामधु वोदयी कहेवाय. ए बारने अनुक्रमें अंगोपांग नोकमीपुजल ं ठामनुं ठाम जो डवुं, हाड दांत ं कमीपुजलनो स्थिरबंध तथा लोही लालनो स्थिर वंध, तेमज मस्तकादिक ग्रुन, पगप्रमुख अग्रुन, शरीर पुजलनो वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिक पुजलने विषे होय, ते नणी ए बार प्रकृति पुजलविपाकीनी कही, अने (चठतणु के०) तनुच फनी अढार प्रकृति, तेनां नाम कहे हे। एकतो औदारिक, विक्रिय

अने इत्ति, ए ए रीर बीजा एज त्रण रीरनां छपांग ए, त्री जा संघयण अने चोथा संस्थान , एवं च व नी अहार प्र ति पण पुज लियाकीनी है जे नणी ए शरीर । मेना छदयथ ही दिश हिक शरीर पणे पुजल परिणमे है. तथा अंगोपांग पणे था आ ।र पणे तथा हाडसंधि पणे पुजल परिणमे है. ए मेपुजलने विषे पोतानी शित दीपावे है ते नणी पुजलविपा हीनी प्रकृति ही ।

( उवघाय के ० ) पघा । मैने उद्यें जीवने अंग्रुली प्र ख अधिक अं ग होय ते पण पोतानी ति पुजलने विषे दे । डे हे ते नणी तथा (साहारणिय के 0) साधारण ना मेनो चदय पण रीर पर्याहि पूरी । पढ़ी चदय । वे तेथी घणा जीव 'एक साधारण रीर होय,तेथी ए पण पुजलविपा ीनी प्रकृति हे तथा ए थकी इतर प्रत्ये ना में पण शरीराश्रित है, ते ाटें पुजल विपाकिनी प्रक ति हे, अने ( जजोअतिगं के ) छ ति, आतप ने पराधात, ए छ तित्रिक प ण शरीर पुजलने विषे पोतानी कि दीपावे, तेथी री जीवनां शरीर, शीत प्रका शवान् तथा च प्रकाशवान् परने स्सह्नीय होयः ते माटें ए पण पुजल विपाकिनी प्रकृति जाणवी. एवं अत्रीश प्रकृति, (पुग्गलिववागि के 0) पुजल विपावि नी कही. एम अनु में चार प्रकृति के विपादिनी, होतेर जीवविपाकिनी, चार नवविपाकि नी अने बत्रीश पुजलविपाकिनी, ए वे ली एकशो ने बावीश प्रकृति उदयनी अ पेक् यें होय जे नणी विपाकिनी हेतां रसोदय हीयें एम र विपाक दार कह्यां ह्वे (बंधो केण) चार बंधनां द्वार हे हे. त्यां जे स्थित, रस ने प्रदेश वंधनों स दाय ते (पयइ के ) प्रकृतिबंध जा वो, तथा योग प्र यें गृ । ए वां जे कमेपुजल, त्यां ध्यवसाय विशेषें मेपणे रहेवानी स्थित । ान ते बी जो (िह के 0) स्थितिवंध जाणवो तथा जा ज ध्यवसाय विशेषें रीजेमी वो रस ते अ कूलपएं वेदीयें ने डवो रस ते प्रतिकूल पएं वेदीयें तेमध्यें पण वली एकवाणीचे, बेवाणीचे, त्रि णीचे, चववाणीचे तथा घातिचे, घाति डं, एवा विपाकरस बांधवुं, ते त्रीजो (रस केण) रसबंध । वो. ने जे यो गनी उत्कटतायें घणां दल से ने योगनी मंदतायें थोडां दल मसे. एम योग नी तारतम्यें करी कमदल ं तारतम्यप ं होय ते चोथो (पएसित के 0) प्रदेशवंध जाएवो. इति एम विवक्तायें चार बंध ते ए बांधतां चारे बंधाय. लाडवानो हप्रांत पूर्वें का वे तेन वो ॥ इति स यार्थः ॥ ११ ॥

ते ध्यें प्रथ कृतिबंध विचारे हे. तिहां ए , बे, ए इत्यादिक संस्थायें प्रकृतिनुं थिं, तेने कृतिबंधस्थान हियें. ते बंधस्थान मूल प्रकृतिश्चा श्री तथा उत्तर कृतिश्चाश्री, ए बे नेहें होय. ते ध्यें पए व्यसंख्याथी घ ए। संख्याने बंधस्थानकें जाय. ते प्रथ जूयस र बंध एएवो श्रने जे घए। संख्याची थोडी सं ाने बंधस्थानकें वि, ते बीजो श्रव्पतर बंध जाएवो। एकज सं ाने स्थानकें रहेतां त्रीजो विस्थातबंध जाएवो ने बंध थइने फरी प्रथ ए वि प्रकृति बांधे, तिहां चोथो श्रव व्य बंध जाएवो. ए प्रसंग पर्णे चार ध हेवाय. तिहां थ ूल प्रकृतिना बंधस्थान हे थके जूयस्कारादिक सु खें हेवाय. ते जए। ते ूल प्रकृतिनां बंधस्थान , प्र हीयें हैयें. तेमज उत्तर प्र तिने विषे पए बंधस्थान हेवा पूर्व जूयस रादि चार बंध कहेहों।

मूल पयडीण ञ्रह स, त ेग बंधेसु तिन्नि नूगारा ॥ ञ्रपत्तरा तिञ्ज च रो, ञ्जवित्रञ्जा न ु ञ्जवत्तवो ॥ ५५ ॥

थै—(ूलपयडीएखड कें ) मूल प्रकृति ज्ञानावरणादि थी मांमीने छंतराय कर्म पर्यत ए आठ कर्म, जे वारें जीव बांधे, तेवारें एक आठ ं बंधस्थानक कहेवाय, ते अं तर हूर्न धी रहे, जे नणी । मिनो बंध आखा नव मध्यें एक ज वार छंतर मुहू ते सुधी होय ए बंध प्रथम णठाणाथी लड़ने सातमा ग्रणठाणा सुधी पामीयें, तेमां हे पण मि अग्रणठाणे आ न बंधाय, तेथी त्यां (सन्त कें ) सात कर्म नुं बंधस्थानक हो य. ए सात कर्म ं बंधस्थान पण प्रथ ग्रणठाणाथी लेड़ने नवमा ग्रणठाणा सुधी होय. एनो काल जघन्य तो छंतर हूर्त अने उत्कृष्टियीतो पूर्वकोडीने त्रीजे नागें अधिक उमास हीन तेत्रीश सागरोपम लगें जाणवो केमके पूर्व कोडीने त्रीजे नागें वेवायु बांधे, तेनी अपेक्शयें लेवो ए आठनुं तथा सातनुं बे बंधस्थानक थयां.

( ग्रेगबंधेस्नुतिन्निन्गारा कें ) दशमे ग्रुणगणे आग्रु तथा मोहनीय ए वे क में हीन ग्रु कमेनो बंध, ए पण अंतर मुहूर्न सुधी होय अने जपशांत मोहादिक त्र ण ग्रुणगणे एक वेदनीयनो बंध जाणवो. एनो काल जयन्य अंतर मुहूर्न ज्दुरुणे तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण केंवलीनी अपेक्सयें जाणवो. ए चार वंधस्थानक कह्यां. तेने विषे त्रण नूयस्कारबंध कहे हे. तिहां एक बांधी पही ह कमे बांधतां प्रथम तम यें प्रथम नूयस्कार बंध. ए अगीआरमे ग्रुणगणे जपशमश्रेणीयी पहतां होय. तथा दशमे ग्रुणगणे हकमे बांधी नवमे ग्रुणगणे मोह सहित सात कमें बांधतां प्रथम स यें बीजो नूयह र वंध तेने वली आयु सिहत आत कमे बांधतां प्रथम स मयें त्रीजो नूयह र वंध एम त्रण नूयह रवंध कह्या अहीं आं कोइ पूर्व जे उ पशम श्रेणीयें अगी रिमे एताणे आयुक्त्यें मरण पामीने, अनुत्तर विमानें दे वता पणे उपजे, ते थ स यें चोथे गुणवाणे सात में बांधें, तेने प्रथम समयें नूयह र होय, तो ए चोथो नूयहकार केम न कह्यो ? तेनो उत्तर कहे हे के जो पण ए बंधधी सात में वंध रे, तो पण वंधह्यानक सातनुं एकज हे, ते नणी जूदो न लेखव्यो वंधह्यानकनो चेद होय तो जूदो नूयह र लेखवाय.

( प्यत्तराति के०) हवे अल्पतर वंध कहे हे. आयुर्वेध ह्या पही सात में बांधतां प्रथ समयें ल्पतर वंध पहेलो जाणवो तथा नव । गुणवाणाने प्रांतें सात में वंध री दशा एवाणाने प्रथम समयें मोहनीय हीन करी ह में बांधतां, बीजो ल्पतर बंध जाणवो तथा ह कमेंथी उपशांतमोहें तथा हिणानें ए में बंधतां, त्रीजो अल्पतर वंध जाणवो.

एमज (चरो विद्या के ) चार अवस्थित बंध कहे हे. जे नणी मूल प्रकृ तिनां वंधस्थान चार, ते चार में आव्या पही बीजे समयें अवस्थित बंध हेवाय. जेम आह मेना बंधथी सातनो वंध करतां प्रथम समयें अहपतर वंध पही ज्यां सुधी तेज बंधस्थानकें जीव रहे, त्यां सुधी प्रथम अवस्थित बंध कहेवाय. एम सात पही ह बांधतां प्रथ समयें अहपतर वंध अने पही बीजो अवस्थित वंध जाणवो, ने हथी ए वांधतां प्रथम समयें अहपतरवंध, पही त्रीजो अवस्थित वंध जाणवो. सातथी आहनो वंध करतां प्रथम समयें नूयस्कार बंध अने पही चोथो अवस्थित वंध जाणवो. सातथी आहनो वंध करतां प्रथम समयें नूयस्कार बंध अने पही चोथो अवस्थित वंध जाणवो. एम चार अवस्थित वंध कह्या.

(नहुअवत्तवो के॰) मूल प्रकृतिनो अवंध अयोगी गुणवाणे होय अने खांथी पडवुं नथी ने अव्यक्त वंध तो अवंधक यइने वली बांधे, तेने अव्यक्त वंध कहींयें अने अयोगी गुणवाणा पढी कमेवंधपणुं नथी माटें मूल प्रकृतिनो अव्यक्तवंध नथी॥ इति मु यार्थः॥ १२॥

हवे नूयस्करादिक बंधनां लक्त्ए कहे हे.

एगाद्हिगे चूर्र, एगाई ऊण गम्मि अपतरो॥ तम्मतो अविषय , पढमे समए अवत्तवो॥ १३॥

अर्थ-( एगादहिगेनू ड के० ) एक, वं, इत्यादिक पूर्वला वंधयकी आगलें अ

धि ती प्रकृति बांधे ते नूयक् रि बंध जाणवो, एट खे पूर्वे थोडी कृति ांधतो होय, अने पढ़ी ए । दि अधि प्र ति ांधे, ते नूयक् रि बंध प्रय स य जाणवो, अने (एगाइ एगि प्रतरों के०) पूर्वबंध थीए । दि ति उति । । थे, एट खे पूर्वे घ ए। कृति बांधतो होय ने पढ़ी ए । दि ए। प्रकृति । । थे, ते प्रय यें इल्प रबंध जाणवो. (कृते स्वांध्वित्व के०) थ यें जेट लोज बंध हो य, एट खे पूर्वे बांधतो होय तेट लीज प्रकृति ज्यां धी निरंतर बांधे, त्यां धी विस्थित वंध हीयें. अने (पढ़ मेसमए अवचवो के०) सर्वधा अबंध थइने फरी पहेला बंध रे, तेवारें प्रय सं यने विषे वक्तव्य बंध हीयें. ए चार बंधनां लक्क्षण ह्यां॥ इति स यार्थः॥ १३॥

हवे सा ान्यें उत्तर प्रकृतिनां बंधस्थान उगएत्री है, तेनां ना है है. ए , सत्तर, छहार, छोगणीश, वीश, ए वीश, बावीश, हवीश, त्रेप , चोप ,प ।व , हप , सत्तावल्ल, छहाव , उगएशाह, शाह, ए शह, त्रे ह, चो ह, पां ह, हाशह, शहशह, छहार, उगणोत्तर, सीतर, ए नेतर, बहोत्तर, तहोत्तर, ने चम्। तेर, ए उगणत्रीश बंध स्थानक है, खां नूयस र बंध छाहावीश होय, ते कहे है.

उपशांतमोह्युणवाणे एक वेदनीय बांधीने पडतो द मे णवाणे ज्ञान पां च, दर्शन चार, अंतराय पांच. उ गोंत्र अने य : शिंत साथें वेदनीय बांधतां सत्तर प्रकृतिने वंधें प्रथम समयें प्रथम नूयर ार बंध. तिहांथी पडतो नवमे ण वाणे संज्वलना लोनसाथें ढार प्रकृति बांधतां बीजो नूयस्कार. ते ध्यें संज्वलनी माया साथें उंगणीश बांधतां त्रीजो नूयर ार, तेमध्यें संज्वलनामान साथें वीश बांधतां चोथो नूयस्कार, ते संज्वलना ोध साथें एकवीश बांधतां पांच मो नूयस्कार, ते मध्यें पुरुषवेद साथें बावीशनो बंध बांधतां ढांचे नूयस्कार, ते मध्यें हास्य, रित, नय अने अगुण्ता, ए चार प्रकृतिनो अधिक बंध करतां अपू व करणने सातमे नागें ढवीशनो बंध करतां सातमो नूयस्कार, तेमध्यें ाठमाने ढिंचे नागें देवप्रायोग्य नाम कर्मनी अघावीश प्रकृति बांधतां त्रेपननो बंध, अहींआं य शःकीर्त्ते पूर्वें ढवीश प्रकृति मध्यें आवी हे. तेथी देवप्रायोग्य सत्तावीशने वंधें त्रेपन प्रकृति होय. ए आठमो नूयस्कार, तेमध्यें जिननाम बांधतां चोप ना वंधें नवमो नू यस्कार, ते त्रेपन आहारकिक साथें बांधतां पच्चावन्नना वंधें दशमो नूयस्कार, ते प वन्न जिननाम सहित वांधतां उप्यन्नना वंधें अगीआरमो नूयस्कार, अपू विकरणना प्रथ नागें प ने जिनना हीन था निहा, प्र जा सां बांधतां सत्ताव ना बंधें बार हो नूयर हर, ते वली जिनना सहित छा छावनना बंधें ते रमो न्यस्कार, ते देवा थिं प्रमनें उगणशात बांधतां चौदमो नू श्विरति एठाऐ देवप्रायोग्यनी हावीश प्रकृति बांधतां ज्ञान पांच, दर्शन ह, वेदनीय एक, ोह्नीय तेर, देवा ए , ना नी छावीश, गो नीए , तराय नी पांच, एवं शाव प्रकृति बांधतां पंदरमो नूयर रि, ते जिनना सिहत एकश वने बंधें शोलमो नूयर र, हीं आं ोइ प्रारें ए जीवने ए समयें बाशव प्रकृतिनो बंध संजवे नहीं, तेथी तेनो जूयस्कार पण न ो. चोंथ गुणवाणे । युअवंध कालें देव प्रायोग्य नामनी अहावीश प्र ति बाधतां, ज्ञान पां ,दरीन व, वेदनीय एक, मोह्नीय सत्तर, गोत्रनी ए , ना नी छाठावीश, छंतरायनी पांच. ए त्रेशव प्रकृति बांधतां सत्तरमो नूयस्कार, देवायुबंध सिहत चोशव प्रकृति बांध तां अढारमो नूयस्कार, जिनना सिहत पां व बांधतां र्रंगणी मो नूयस्कार, चोषे गुणवाणे देवता होय, तेने ध्य प्रायोग्य शिश प्रकृति बांधतां बाशहना वंधें वीशमो नूयस्कार, मिथ्यात्व एाठाएो ज्ञान पांच, दर्शन नव, वेदनीय ए , मोह्नीय बावींश, आधुनी ए , नामनी त्रेवीश,गोत्रनी एक. अंतरायनी पांच, ए शहशत प्रकृति बांधतां एकवीशमो नूयस्कार, त्यां नाम मेनी प ीश अने । । रहित अडराठ बांधतां. बावीरामो नूयर र, ते ायु सहित छगणोत्तर बांधतां त्रेवीरामो नूयस्कार, ते वली नामकर्मनी बद्वीरा प्रकृति साथें सीतेर बांधतां चोवी शमो नूयस्कार, ते आयु रिहत अने नामकर्मनी हावीश साथें एकोत्तेर बांधतां पचीशमो नूयस्कार, ते र्रगणत्रीश नामकर्मनी साथें बहोत्तरना बंधें उद्यीशमो नू यस्कार, ते आयु सहित तहोत्तेर बांधतां सत्तावीशमो नूयस्कार, ते वसी नाम कमेनी त्रीश बांधतां ज्ञान पांच, दरीन नव, वेदनीय एक, मोहनीय बावीश, । यु एक, नामनी त्रीश, गोत्रनी एक, अंतरायनी पांच. एवं चम्मोत्तेर बांधतां श्रहा वीशमो नूयस्कार, छहीं छां प्रकारांतरें नेक बंधस्थानक संनवे, ते । पणी बु दियी विचारी लेवा. एम अहावीश अल्पत्तर बंध पण विपरीतपणे लेवा अने ड गणत्रीश वंधस्थानक नणी अवस्थित बंध पण उंगणत्रीश खेवा. अहीं आं अव क्तव्यवंध न संनवीयें, जे नणी सर्वत्र उत्तरप्रकृतिनो अवंधक अयोगी गुणवाणे जीव होय. त्यांथी पडवुं नथी माटें अवक्तव्य वंध न होय॥ इति समुचयार्थः॥१३॥

ए रीतें च र प्रकृतिना बंध, सामान्यें ही, हवे विशेषें हे हे. नव चऊदंसे इड, ति इ मोहे इगवीस सत्तरस॥ तेरस नव पण च ति इ, इ हो नव इस इन्नि॥ इ४॥

अर्थ- प्रथ ज्ञानावरणीय में ए ज बंधर ान हे, ते नणी त्यां नू रा रादि न संनवे. ने (नव च दंसे के०) दर्शनावरणीय दि ए नवनो बं ध बीजो नो बंध, अने बिजो चारनो बंध, ए ए बंधस्थान है. ते ध्यें सर्व दर्शनावरणीयनी नवे प्रकृति बांधतां प्रथ नां बे गुणठाणे नव प्र ति बंधस्थान ाणवुं एनी जवन्यस्थिति, श्रंतर हूर्जनी श्रने उत्क तो नव्यनी पेह्नायें नादि नंत श्रने नव्यनी पेह्नायें नादि सां, तथा सादि सांत, ते ांथी थीण दी, निइानिइ। ने प्रचला चला, ए ए प्रकृतिनो बंध वि द थये के वि श्रादि ग्रुणगणे प्रकृतिनो वंध जा वो ते पण जवन्यथी तो अंतर हूर्च ने जिल्ह थी तो ते शिश सागरोप पूर्व ोडी क्त्वें । जेरा एवा ते थि। निक्ष छने चला ए बे प्रकृतिनो पूर्व रणना नागें बंध वि द ये थ के । ाना शेष नागें तथा नवमे ने दशमे एताएो । र प्रतिनो बंध जा णवो ते घन्यतो ए स य श्रेणी ध्यें रण पामे, तेनी पेक्कार्ये । वो अने उत्क पणे अं र हूर्त प्राण होय, हीं र तूयर र तथा ब्पतर ना बंध, (के ०) बे बे होय अने वस्थि बंध, (ति के ०) ए होय तथा व व्यवंध, (के०) बे होय, ते ही देखाडे हे. तिहां उप श्रेणीयी पडतां ाठ । एवा ।ना बीजा नागें ।वतां सुधी दश्नीवरणीयनी चार प्र ति बांधतो वली हीं बंधविन्नेद ो हतो ते फरी विता निज्ञ ने प्रचला, ए वे प्रक तिनो बंध रे, ते तेनी साथें मेलवतां छ प्रकृतिनो बंध रवाना प्रथम समयें नूयस्कार बंध पहेलो जाणवो. तथा नवनो बंध रतां बीजो नूयस्कार बंध जा णवो तथा नवनो बंध करी फरी ह नो बंध रतां प्रथ समयें प्रथम अल्पतर बंध. तथा अपूर्वकरण गुणवाणाना प्रथ नागें व प्रकृतितो वंध करी वली निङ्ग अ ने प्रचलानो बंध विंह्यदी चारनो बंध करतां, प्रथ स यें बीजो अल्पतर बंध जाएवो. ए त्रऐ बंध स्थानकें बीजा समयथी मांमीने ते ते बंधस्थानकना चरम समय लगें त्रण अवस्थितबंध जाणवा तथा अगीआरमे गुणवाणे दरीनावरणी यनो वंधक होय अने तिहांची पहतां दशमे एठाएो दरीनावरणीयनी चार प्र

कृति बांधतां प्रथम यें प्र व व्यबंध तथा जे जीव उपशांतमोह गुणगणे आयुः ह्रयें मरण पा । ने तरिव । ने देव थाय, तिहां व प्रकृति बांधे तेने प्रथ स यें बीजो अवक्तव्य बंध होय, एट छे दर्शनाव वरणीयनां बंधस्थानकें, नूय स्कारबंध, वपतरबंध, विस्थितबंध तथा व व्य बंध ।. हवे । हिनीयनां द बंधस्थान हे, ते हे हे.

(मोहे के o) ोहनीयनी जिवीश प्रकृतिमध्यें सम्यक्त्वमोहनीय तथा मिश्र मोहनीय बांधे नहीं. बा ही उद्यीश प्रकृति बंध योग्य ते । पण त्रण वेदमध्यें एक यें ए ज वेद बांधे, था हास्य अने रित तथा शो अने अरित, ए बे युगज

मध्यें पए ए ज युगल बंधाय. केमके ए प्र ति बंधोदय विरोधिनी हे ते नए। मिथ्यात्व ग्रुणगणे (के) बावीश प्रति बंधस्थान होय. एनी स्थिति नव्यनी अपेक्सयें तो अनादि अनंत ने नव्यनी अपेक्सयें अनादि सांत तथा सादि सांत जाणवी. तेमध्यें पण सास्वादन णवाणे मिच्यात्वमोहनीय न बंधाय, ते वारें (इगवीस के 0) एकवीश प्रकृति ं बंध स्थानक होया खहीं छां तथा ६ग ए बे शब्दने वीश शब्द जोडवो, एनी स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कष्टथी तो ह आवली प्रमाण जाणवी. तेमध्यें वली मिश्र ने अविरति, ए बे गुणहाणे चार अनं तानुवंधीया न बंधाय, तेवारें (सत्तरस केंग्) सत्तर प्रकृतिनुं वंधस्थानक होय. एनी स्थित जवन्यतो अंतरमुहूर्न ने उत्कष्टतो तेत्रीश सागरोपम काल पूर्वको डी प्रथक्त अधिक होय, जे नेणी अ तरवासी देव चवीने ज्यां सुधी विरतिपर्छं न लहे. त्यां सुधी तेने ए बंधस्थानक होय. ते ध्येंची देशविरति गुणुगाणे प्रत्या ख्यानी आ कषाय चार, न बंधाय तेथी (तेरल के०) तेर प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय ए पण जघन्यची तो अंतरमुहूर्त अने जत्कष्टची तो देशोन पूर्वकोडी प्रमा ण जाणवी तेमध्यें वली प्रमत्त अने अप्रमत्त ग्रणवाणे प्र ाख्यानावरण चार क षाय न वंधायः माटें त्यां (नव के०) नव प्रकृतिनो बंध होय. एनो काल जधन्य एक समय जे ज्रापी कोइ एक जीव एक समयें मात्र सर्व विरतिपणु लइ ने बीजे समयें मरण पामे, तेनी अपेक्सयें जाणवुं अन्यथा जवन्य अंतर मुहूर्त अने उ त्रुप्ते तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण जाणवो. तेमध्यें द्यास्य, रति, जय अने ज्रुप्ता, ए चार प्ररुतिनो वंध विजेद यये यके नवमे ग्रुणगणो (पण के ०) पांच प्ररुतिनुं वंधस्थानक होय तेमांहेथी वली पुरुपवेदनो वंधिव होद थये थके (चड के ०) चा रत्तं वंधस्थानक होय तेमांहेथी संज्वलना क्रोधनो वंध विहेद थये थके (तिकेण)

त्रण प्रकृति बंधस्थान होया ते हिथी संज्वलनो ।न विश्वेद थये थके (केण) बे प्र ति बंधस्थान होया, ते ध्येंथी संज्वलनी मायानो बंधविश्वेद थये थके (इतो केण) एक प्रकृति बंधस्थान होया. ए दश्च, बंधस्थान कह्यां. ए श्रेणी ध्येंना बंधस्थान नी जघन्य तो ए स यनी स्थिति अने उत तो अंत र हूर्न स्थित जाणवी के के, तेइ ए जीव ते श्रेणीमध्यें ए बंधस्थान ए स या स्पर्शिने पण रण पामे. तेनी पेक्लायें स य ।न जाणवुं ए दश बंधस्थानकें (नव केण) नव नूयस (रबंध, ( क केण) आव अल्पतरबंध, (दस केण) दश अवस्थितबंध अने ( हि केण) बे व व्य बंध । एवा, ते हे ले.

ते ध्यें प्रय नव नूयस्कारबंध नावियें हैयें. त्यां जे विन, उप श्रेणीयें च ढी, अगीआर ं गुणवा ं अंतर हूर्न ं हे. तिहां अंतर हूर्न रहीने डवा स्थान नथी के के हिनीयनी कति उप हो है तेनी सत्ता टली नथी, ते सत्ता टब्या विना गालां ग्रुणगणां प्राप्त थाय नहीं. ते नणी त्यांथी पडतां दशमे गुणवाणे आवे. तिहां पण ोहनीयनो बंध होय, तिहां यी पडतां न वमा ग्रुणवाणाने पांचमे नागें ए संज्वलनालोननो बंध रतां प्रथ स यें प्र म अव व्य बंध तथा आयुं:क्यें अगीआरमे गुणवाणे रण पामीने तर विमानें सुर थाय. ते प्रथ सत्तर प्रकृतिनो बंध रे, तेने प्रथ स यें बी ो अवक्तव्य बंध. एम बे अव व्य बंध ह्या. तथा नव ाना पांचमा नागशी पडतां चोथे नागें संज्वलनी माया साथें वे प्रकृतिनो बंध रतां तिदां प्रथ थम नूयर र, त्रीजे नागें संज्वलनी ाया थिं ए प्र ति बांधतां प्रथ स यें बीजो नूयस्कार, बीजे नागें संज्वलना ोध साथें चार प्रकृति बांधतां िजो नूयस्कार, प्रथमनार्गे पुरुषवेद सहित पांच प्रकृति बांधतां, चोथो नूयस्कार, तिहांची आतमाने वेहले नागें हास्य, रति, नय अने गुप्सा, सहित नव प्रक ति बांधतां पांचमो नूयस्कार, तिहांथी देशविरति ग्रणवाणे प्रत्याख्यानावरण षाय चार सिहत तेर प्रकृति बांधतां बहा नूयस्कार, तिद्दांथी चोथे ग्रणवाएो छा प्रत्याख्यानावरण षाय चार सहित सत्तर प्रकृति बांधतां सातमो नूयस्कार, ते वली अनंता बंधीया चार कषाय सहित एकवीश प्रकृति बांधतां आठमो जूय स्कार, ते वली मिष्याल मोहनीय सहित बावीश प्रकृति मिष्यालगुणवाणे बांध तां नवमो नूयस्कार. एनव नूयस्कार क ा हवे आत अल्पत्र कहीयें वैयें.

तिहां मिच्यात्व गुण पो बावीशनो बंध करी चोथे गुणवाणे सत्तर प्रकृतिनो

बंध करतां, प्रथ स यें प्रथम अल्पतर जाणवो. वली सत्तरथी तेरनो बंध कर तां, बीजो ल्पतर ए विपरीत पणे लेवा पण एटलुं विशेष जे ए वी ना बंध एक अल्पतर न होय, जे नणी मिण्यालयी सास्वादनें न वि, त्यां सास्वाद न गुणवाणुं तो सन्यक्लयी पडतांज होय, ते माटें बावीशना बंधयी ए वीशना बंधें न वि, एम आव अल्पतर बंध होय ने दश बंध स्थानकें बीजा समय थी मांमीने र चर स य लगें दश विस्थत बंध होय. ए विस्तिय में ना जूयस शादि बंधस्थान ह्यां॥ इति स यार्थः॥ १४॥ हवे नामकमेने विषे जूयस्कारादि हेवाने अर्थे थ बंधस्थान हे हे.

ति पण अ नवहिया, वीसा तीसे गतीस इग नामे॥ बस्सग अ तिबंधो, सेसेसु । ए मिबि कं॥ १५॥

श्रथ—हवे ना मेनी जेटली प्रकृति ए समयें जे प्रायोग्य बंधाय, तेवा बंधस्था नक श्राव हे, ते कहे हे. (तिपणह इनविह्यावीसा के०) ण, पांच, ह, हि, नव, श्रिषक वीश एटले वीश शब्द, प्रत्येकनी साथें जोडीयें, तेवारें एक त्रेवी श्रमो वंध, बीजो प शिश्मो, त्रीजो हवीश्मो, चोथो श्रम्वावी नो, पांचमो र्डग णत्रीश्मो, (तीसेगतीसइगनामे के०) हो त्रीश्मो, सातमो एकत्रीश्मो, ने श्राहमो एकनो बंधस्थानक.

ए आतमध्यें मिष्याली जीव, म ष्य, तियंच, मिष्याल गुणताणे अपयीता ए केंड्य प्रायोग्य एक वर्ण, बीजो गंध, त्रीजो रस, चोषो स्पर्श, पांचमो तैजस, विघो कामेण, सातमो अग्ररुलघु, ातमो निर्माण, नवमो उपघात, दशमी तिर्यं चगित, अगीआरमी तिर्यंचानुपूर्वी, बारमी एकेंड्यजाति, तेर ं औदारिक रीर, चौदमुं ढुंमसंस्थान, पंदर ं स्थावरनाम, शोल ं बादरनाम, अथवा स्त्र न , स त्रमुं अपयीत्रनाम, अढारमुं प्रत्येकनाम, अथवा साधारणनाम, चेगणीश ं स्थिरनाम, वीश ं अ ननाम, एकवीश ं दौनीग्यनाम, बावीश ं अनादेयनाम, त्रेवीशमुं अयशनाम, ए त्रेवीशने वंधें अहींआं प्रत्येक साधारण साथें अने स्र क्षवादर साथें नांगा चार थाय, ए प्रथम नामकमेनुं बंध स्थानक कह्यं.

तेमध्यें प्राघात अने चह्नास, ए वे प्रकृति वधारीयें अने अपर्याप्ताने स्थानकें पर्याप्त नाम कमें कहीयें, तेवारें पत्तीश प्रकृति, पर्याप्त एकेंड्य प्रायोग्य मिथ्याली देव, यनुष्य तथा तिर्यंच वांधे. अहींआं नांगा वीश थाय ते सत्तरीना टबायी जा णवा. ए बीज़ं स्थानक, ते पञ्चीश प्रकृतिने आतप अथवा उद्योत सिहत करीयें तेवारें विवीश प्रकृतिनो बंध, ए पण पयीप्ता एकेंडिय प्रायोग्य त्रण गतिना मि प्यात्वी जीव बांधे, अदींआं नांगा शोल पाय, ए त्रीज़ं बंध स्थानक.

तथा देविहक, पंचेंडियजाति, वैत्रिय शरीर, वैत्रियांगोपाग, समचतुरस्त्रसंस्थान, पराधात, ज्ञ्चास, नखगित, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर अथवा अस्थिर, श्रुन अथवा अश्रुन, यश अथवा अयश, सुनग, सुस्वर, आदेय, वर्णचतुष्क, ते जस, ।मेण, अग्रुरुत्यु, निर्माण, उपधात, ए अ वीश प्रकृति, देवगित प्रायोग्य मिण्यात्वी तथा सम्यक्दि मनुष्य अने तिर्यच बांधे. तिद्दां स्थिरास्थिरादिक सा वें नांगा आत थाय तथा ते ज नरकगित प्रायोग्य पण हावीश प्रकृति वंधा य पण एटलुं विशेष जे, देविहकने स्थानकें नर दिक तथा समचतुरस्तसंस्थान ने स्थान हुं मसंस्थान अने अपरावर्त्तमान प्रकृति अ न लेवी. द्रींआं अहा वीशनो नांगो एकज लेवाय, ए अहावीश प्रकृति वंधस्थान चोशुं.

तथा सम्यक्हिर जीव, जिननाम सहित देवप्रायोग्य श्र वीश बांधतां डंगण त्रीश प्रकृतिनो वंध. श्रहीं नांगो ए जे नणी ए श्रेनल वंधाय तथा मनुष्यिक, पंचेंडिय जाति, श्रोदारिकि , व संययणमांदेलुं ए संययण, व संस्थान मांहे लुं एक संस्थान, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्ये , स्थिर श्रथवा श्रस्थिर, श्रुन श्रथ वा श्र न, सौनाग्य श्रथवा दौनांग्य, सुसर श्रथवा ःस्वर, श्रादेय श्रथवा श्रना देय, यश यवा श्रयश, श्रुनखगित श्रथवा श्रग्राचात, पराघात, व्रह्वास, व एचतुष्क, तैलस, ।मेण, श्रग्रक्तानुं, निर्माण, उपघात, ए मनुष्य प्रयोग्य डंग एत्रीश प्रकृतिना वंधस्थानकना नांगा, वेतालीश शें ने श्राव थाय, तेमल पंचेंडिय तियंच प्रायोग्य डंगणत्रीश बंध प्रकृतिना पण नांगा एटलाल लाणवा. ए पांच वंधस्थानक तथा देवगतिप्रायोग्य श्रवावीश प्रकृति ते श्राह्मास साधुने होय. श्रहींश्रां नांगो एक थाय तथा मनुष्य प्रयोग्य डंगणत्रीश बंध प्रकृतिने जिननाम सहित बांधतां सम्यक्हि देवताने त्रीशनो वंध. ए वर्षुं वंधस्थानक. तथा जिन नाम सहित देवप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां एक श्राय, ए सातमुं वंधस्थानक. तथा जिन नाम सहित देवप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां, एकत्रीश प्रकृति श्रप्रमत्त श्रपूर्व करण ग्रणवाणावाला साधु बांधे. श्रहींश्रां पण नांगो एक थाय, ए सातमुं वंधस्थानक.

तथा आतमा ग्रेणताणाने उंहे नागें नामकमेनी त्रीश प्रकृतिनों वंध विहेद क री आगले एक यशःकीर्ति बांधे, त्यां आतमुं नामकमेनुं वंधस्थानक जाणवुं. एम श्रात बंधस्थानकें एकेंडिय, वि लेंडिय, देवता, नुष्य, तिर्थेच, नारकी, प्रा योग्य बंधनेदें री तेर हजार नवरों ने पी ाली नांगा थाय ते सत्तरीना टबा मांहे सविस्तर ही . तिहांथी जोइ लेवा

ए आठ बंधस्थानने विषे नूयस्कारबंध (ठ केण) ठ ठे, तेनावें ठे. त्रेवीशनो बंध क री तथाविध वि दें प ि बांधतां प्रथम मयें प्रथ नूयस्कार मिण्यात्वीने होय. ते पचीश तप अथवा उद्योत सहित ठवीशने बंधें बीजो नूयस रार थवा विश्व दें तथा सं हों देवप्रायोग्य थवा नर प्रायोग्य ठावीश बांधतां त्री ो नूयस्कार ते देवप्रायोग्य ठावीशने जिनना सहित उगण शिश बांधतां चोथो नूयस्कार, ते वजी त्रीश प्रकृति थ प्रायोग्य थवा देवप्रायोग्य बांधतां, पांच ो नूयस्कार. ते देवप्रायोग्य शि ने जिननाम सहित ए त्रीश बांधतां, ठठो नूयस्कार. एमज एक प्रकृति बांधी वजी श्रेणीधी पडतो । था एक त्रीश बांधे खरो पण ते बंध स्थानक चेद नहीं, तेथी ते जूदो नूयस र न सेखववो ए ठ नूयस्कार

हवे (स्तग के०) ति उपतर हे हे. पूर्व रणें देवगित प्रायोग्य श्राच्या निश्च, जीश ने एकत्रीश, बांधीने श्रेणी चढतां जे बंधने व्युष्ठेदी एक यशःकी त्तिं बांधे, ते प्रथम उपतर बंधे, तथा को इएक म ष्य श्राहारक दिक श्राचे जिननाम सहित देवप्रायोग्य एकत्रीश प्रकृति बांधतो मरीने देवलोकें जाय, त्यां प्रथम समयें म ष्यप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधे. त्यां बीजो उपतर बंधे, तेहज देवलोक थकी चवी मनुष्य थयो थको जिननाम सहित देवगितप्रायोग्य जेगणत्रीश बांधे, तेने श्राद्यसमयें त्रीजो उपतर, ने जेवारें को इमनुष्य देवगित प्रायोग्य जेगणत्रीश बांधे, तेने श्राद्यसमयें त्रीजो उपतर, ने जेवारें को इमनुष्य देवगित प्रायोग्य जीश बांधे, तेवारें श्राद्य समयें चोषो श्रव्यतर, ते वीश बांधतो संिह प्रपरिणामने वशें एकें इियप्रायोग्य विश्वा बांधे, तिहां पांचमो उपतर, तेहिज विश्वा वालो प शिश बांधे, तेवारें विश्व वालो त्रीश वालो हो श्रव्यतर, ते पञ्चीश वालो त्रेवीश वांधे, तेवारें सातमो श्रव्यतर बंध जाणवो,

तथा छाते बधस्थानकें बीजा समयथी मांमीने चरम समय लगें (छड़ के॰) छात छवस्थितवंध दोय.

तथा (तिबंधो के॰) त्रण अव्यक्त बंध कहे हे. श्रेणीथी पडतां नामकर्मनों सर्वया अवंधक थइने फरी यशःकीर्त्तं नामकर्म बांधे, तिहां प्रथमसमयें पहेलों अव्यक्त बंध, तथा उपशांतमोहगुणहाणे मरण पामी काल करीने अनुत्तर विमा नें देवता थाय, तिहां धुर समयथी मनुष्य प्रायोग्य उगणत्रीश प्रकृति बांधे. ते

बीजो श्रव्य बंध या ति हां ोइ ए जि । हि त्रीश ति बांघे, ते वारें तेनी अपेक्षायें य स यें बिजो व्यक्तबंध जाएवो. ए ए अव्यक्तबंध ।. ए ना मेनी उत्तर प्रकृतिनां बंधस्थानक, नूय रबंध, श्रव्पतरबंध, विस्थतबंध, ने व्य बंध ए चारे ।

(सेसेसु एए विं के०) हवे शेष ए ज्ञानावरणी, विं वेदनीय, त्रीं आयु, चोथुं गोत्र, ने पांचं अं राय, ए पांच में ए ए बंध स्थान हो य. के के ज्ञा वरणीय ने अंतराय, ए बे में ध्रुवबंधी हो. ते ाटें दशा गुण्हाणा धी एनी सर्व पांचे कित नेली बंधाय. त्यां नूयस र ने ल्पतर बंध न होय अने ए अवस्थित बंध दाय होयः ने शेष वेदनी, ायुने गो ए त्रण मेनी प्रकृति बंधविरोधिनी हे तेथी ते ए स यें ए ज बंधाय तेथी तेनुं बंधस्थानक पण एकज होयः हीं ं नूयस र । ल्पतरबंध न होय ने वेदनीय तो तेरमा गुण्हाणा धी बंधाय हो, ाटें ते विना शेष चार मेनो अव्य क्तबंध एक होय केम के अगीआरमे गुण्हाणो अवंध होइने फरी बांधतां प्रथम समयें व्यक्त बंध अने तेवार पढ़ी दितीयादि स यें अवस्थित बंध जाण वो। एटले सविस्तर प्रकृति बंध ो.

श्रहीं ं सूलप्रकृतिनों तो जघन्य ए , जटक !ो । तनो बंध के ने जत्तर प्रकृतिनों जघन्य एक, जटक हो चम्मोतेरनों बंध के, श्रहीं ं नादि, सादि, श्रनंत ने सां त, ए चार जांगा पोतानी मितयें विचारी हेवा. तिहां मूल प्रकृतिना बंधस्थानकें, ठियें सादि सांत जांगों होय. जे जणी जवजवने विषे ए वार श्रायु बांधे, ति हां । तनों बंध ने शेंष कार्लें सात प्रकृति ं बंधस्थान होय. तथा जत्तर प्रकृतिमध्यें ज्ञानावरणीय तथा दश्नीवरणीय ं एके बंधस्थानक, श्रने वेदनी यनो एकनों बंध, तथा मोहनीयनों बावीशनों बंध, गों नो एकनों बंध, श्रंतरायनों पांचनों बंध, एटलें बंधें श्रज्ञ्यनी श्रपेक्शयें श्रनादि श्रनंत श्रने ज्ञ्यनी श्रपेक्शयें श्रनादि सांत तथा सादि सांत. ए त्रण जांगा होय, श्रने शेष वंधस्थानकें सादिसांत जांगो एकज होय. ए सादि सांतपणुं ते स्थित मान जाणवुं. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १५॥

एम नूयस्कारादिक प्रकारें करी कमेप्रकतिनो वंध कह्योः हवे मूल प्रकृति त या उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध स्वामित्व दारें करी सविस्तर पर्ण कहे हे.

## वीसयर कोडि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥ तीसयर च सु दही, निरय सुराउमि तित्तीसा ॥ १६॥

ये—( वीसयर के॰ ) संख्याये वीश अने यर एट छे तरी श ।य नहीं, ते माटें ए अतर हेतां सागर तेनी जपमायें री ुं जे । लमान, तेने सागरोप म कहीयें, तिहां पत्यनी जप ।यें पत्योपम हीयें. ते योजन प्र । एों कूवो सं ख्यवालायें नरी । शो वर्षें एके शखंम । हाडतां कूप निर्लेप थाय, तेनो का ल, तेने अक्षापत्योपम हीयें तेवा दश ोडा हो कूप ।न के ते । गरोपम तेने निर्लेपनो काल, तेने कासागरोप हीयें. ते कासागरोप नी (हिको डी के॰) वीश कोडाकोडी (नामेगोएय के॰) नामकमे ने गो कर्मनी जत्कृष्टी स्थित होय, एट छे बांधे छुं कर्मदल विणशे नहीं तो एट लो । ल रहे तथा परि ए। मिश्रोषें स्थितिघात करतो पवर्चन रएों री स्थित घटावतां घटी पण जाय, तेम उहर्चनाकर एों री स्थितिचे वधारे पण खरी अने जो निकाचित्त बंध कखो होय, तो बंधें घटे नहीं. एनो अबाधाकाल, बे हजार वर्षनो जाएवो.

तथा (सत्तरीमोहे के०) मोहनीयकर्मनो उत्कृष्ट स्थितिबंध सीतेर कोडाको डी सागरोपम प्रमाण कह्यो छे. ए बंध उत्कृष्ट सं जो मिष्याल गुणगणे होय अने बाधा काल सात हजार वर्ष हीन कर्मदलनो निषेक कहेतां ए कर्मनो रसो दय काल जाणवो. एट हो त्रण कर्म कह्यां अने एथकी इतर एट हो अन्य जे चा र कर्म, एट हो एक झानावरणीय, बीजुं दर्शनावरणीय, त्रीजुं वेदनीय अने चोशुं अं तराय, (च उसु के०) ए चार कर्मनी उत्कृष्टी स्थित (तीसयर के०) त्रीश कोडा कोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट संक्षेत्रों मिष्याल गुणगणे होय. ए चार कर्मनो अबा धाकाल त्रण हजार वर्षनो, ते त्रण हजार वर्ष हीन त्रीश कोडा कोडी सागरोपम रसोदय काल जाणवो.

( उदही के० ) समुड एटले परमांधें सागरोपम जाणवुं. तेवा (तिनीसा के०) तेत्रीश सागरोपम कालनी स्थित .ा गुःकमेनी (निरयसुरार्डीम के०) नारकी ने देवायुनी छपेक् यें कहीयें. एटले छत्यंत संक्षिष्ट परिणामें मिण्यात्वीने नरकायुनो वंध तेत्रीश सागरोपमकाल प्रमाण होय छने छत्यंत विग्रुद्ध परिणामें प्रमत्त तथा छप्रमत्तने तेत्रीश सागरोपम सुरायुनो वंध होय. छहीं छां छवाधाकाल उत्कष्ट तो पूर्व कोडीनो त्रीजो नाग छने जयन्यधी तो छंतर मुहूर्तकाल होय. छहीं छां उत्कष्ट

आयु बंधें नियत उर ो श्रबाधा जि न होय, ते नणी नि जेखब्यो. एनो र सोदय जि, तेत्रीश सागरोपम जाणवो, परं पूर्व ोडीने त्रीजे नागें हीन न जा णवो. श्रहींश्रां श्रायुकर्मनी मूल प्रकृतिनो उत्क स्थितिबंध हेवाने वसरें नर कायु तथा देवायु ए बे उत्तर प्रकृतिनो उत्क स्थितिबंध जि ह्यो, ते गंथगौरव टा जवा नणी ह्यो थवा ए बे नुं किंचित् श्रनेदप जणाववाने यें हो ॥१६॥ हवे जिप्रकृतिनो जधन्य स्थितिबंध हे हे.

मुत्तू अकसाय ६ इ, बार मुहुता जहन्न वेयणिए॥ अ नाम गोए, सु सेसएसु मुुतं तो॥ १॥

श्रथ— ( तूश्रकसाय के॰) श्र षाय एट ले षायोदय रहित एवं गी श्रारं, बारं श्रने तेरं, ए त्रण ग्रुणवाणां मू तिने शेष सरागी ग्रुणस्थानकें (वेयिणिए के॰) वेदनीय कमेनो श्रन्यंत (जह के॰) जघन्य (िह्र के॰) स्थितिबंध, (बारमुहुत्ता के॰) बारमुहूर्त्ते प्राण होय, तथा ंथांतरें एक मुहूर्त्तं पण कह्यं हे. श्रहीं श्रां एट हुं विशेष जे षायोदय रहित जे गीश्रारं, बारं, श्रमे तेरं ग्रुणवाणुं हे तिहां षायने श्रनावें स्थितिबंध, तथा रसबंध न हो य. परंतु केवल योग प्रत्यइंड प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंध होय, ते प्रथ समयें बांधे तथा बीजे स यें वेदे श्रमें त्रीजे स यें विणशे पण षाय त्यिय स्थि तिबंध न होय. ते नणी ते ग्रुणवाणां श्रहीं श्रां विणशे पण षाय त्यिय स्थि तिबंध न होय. ते नणी ते ग्रुणवाणां श्रहीं श्रां विणशे पण षाय त्यि हिय तिबंध न होय. ते नणी ते ग्रुणवाणां श्रहीं श्रां विणशे पण पाय त्यि। हीन शेष रसोदय । ल समजवो श्रमे एक । विना शेष सात मैनो जघन्य स्थि तिबंधका खें श्रुबाधाकाल पण जघन्य जाणवो.

(अइन्हनामगोएसु के ०) ने नामकर्म तथा गोत्र में, ए बे मैनो जघन्य स्थितिबंधकाल अव्यंत वि ६पणे सूक्ष्म संपरायने प्रांतें आत सुदूर्त प्रमाण हो यः तिहां अबाधाकाल, अंतरसहूर्तनो होय, ए त्रण मेनो स्थितिबंध कह्यो.

(सेसएसुमुद्धनंतो के०) तेथी शेष रह्यां जे ए ज्ञानावरणीय, बीजुं द्रीना वरणीय अने त्रीजुं अतराय, ए त्रण कमेनो सुक्षासंपराय नामा दशमा ग्रणवाणाने प्रांतें अने एक मोह्नीयकमें बादर संपरायनामा नवमा ग्रणवाणाने प्रांते तथा आ युःकमेनुं प्रथमनां वे ग्रणवाणे अंतरमुहूर्न प्रमाण ज्ञाय स्थितिबंध होय ॥२॥ ए रीतें सामान्यप्रकारें मूलकृतिनो उत्कृष्टस्थितिबंध तथा ज्ञाय स्थितिबंध हीने, ह्वे विशेष प्र ारें ए ो ने वीश उत्तर प्र तिनो उत्क स्थितिबंध क हीयें हैयें. तथा बांधेलुं में ज्यां लगें पोतानो विपाक देखाडे नहीं, तेने बा धा हीयें. तथा खबाधा ।ल पही कमेने वेदवाने प्रथम समयें बहु ने ते थी वली हितीय समयें हीन, तीय स यें घणुं हीन ए कमेदल वेदवा सन ख जे दलरचना विशेष तेने निषे कहीयें. एनी स्थापना कहेशें.

विग्घा वरण असाए, तीसं अ ।र सुहुम विगल तिगे॥ पढमा गिइ संघयणे, दस इसु चरिमेसु इग वुडूी॥ २०॥

अर्थ-(विग्वा के०) ए दानांतराय, बीजो लानांतराय, विजो नोगांतराय, चोयो उपनोगातंराय, पांच ो वीर्योतराय. ए पांच अंतराय मेनी प्रकृति तथा (व रण के०) एक मित्रज्ञानावरणीय, बीजो श्रुतज्ञानावरणीय, विजो ख्रवधिज्ञानावरणीय, चोयो मनःपर्यवज्ञानावरणीय, पांचमो केवलज्ञानावरणीय, ए पांच ज्ञाना वरणीय कमेनी प्रकृति तथा ए चुद्रश्नीनावरणीय, बीजुं ख्रचकुद्रश्नीनावरणीय, त्रीजुं ख्रवधिद्रश्नीनावरणीय, चोथुं के वलज्ञानावरणीय, ख्रने पांच निज्ञा तथा ( ख्रसाए के०) ज्ञातावेदनीय, एवं वीश उत्तर प्रकृतिनुं ( तीसं के०) त्रीश कोडा कोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट स्थितबंध, मिध्यात्वीने होय तिहां ख्रबाधा ए ह जार वर्षनी जाणवी. त्रण हजार वर्ष हीन कमेस्थितनो रसोदयकाल जाणवो.

अने (अहारसु मिवगलितों के ) अहार कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थितिबंधकाल, एक सुक्का, बीजो पर्याप्त, त्रीजो साधारण, ए सूक्कात्रिक तथा विकलित्रक, एटले वेंडियजाति, तेंडिय जाति अने चौरिंडिय जाति. एवं व प्रकृति नो श्रहार कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिकाल जाणवो. श्रहीं ं श्रहार वेंचनो श्रवाधाकाल जाणवो. एवं विवीश प्रकृति थइ.

तथा (पढमागिइसंघयणे के०) प्रथमारुति एटजे पहेजुं समच रस्नसंस्थान तथा प्रथम वज्रक्षचनाराचसंघयण, ए बे प्ररुतिनी उत्रुष्टस्थित (दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी. अहीं आं एक हजार वर्ष अवाधा काज जाणवी अने (इसुचिरमेसुइगडुिक के०) आगला एकेक संस्थानें तथा एकेक संघयणे एम बे वे प्ररुतिने विषे अनुक्रमें वे वे कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितवंधमां वृद्धि करीयें, एट जे ए नाव जे न्ययोधसंस्थानें तथा क्पननाराचसंघयणे बार कोडाकोडी सागरो पमनी स्थित अने बारशें वर्ष अवाधा काज तथा सादि संस्थान ने नाराच सं

घयणे चौद ोडा ोडीनी स्थित अने चौदर्शे वर्ष बाधा ालें द्दीन निषे ाल जाएवो. या वा नसंस्थानें तांतरें कु संस्थाने अने अर्द्ध नाराच संघयणे शो ल ोडाकोडी सागरोप स्थित तथा शोलशें वर्ष अवाधा ालें द्दीन निषे ाल तथा ब्ल संस्थानें तांतरें वा संस्थानें ने जील संघयणें ढार को डा गेडी सागरोप नी स्थित ने ढारशें वर्षनी अवाधायें द्दीन निषे ाल तथा ढुंमसंस्थान ने बेव संघयणे वीश गेडा गेडी सागरोप नी उत्क स्थित ने वें दलार वर्ष आवाधा ालें द्दीन वीश गेडा गेडी सागरोप र गेद याल जाएवो. ए संघयण तथा ं ाननो उत् स्थित ाल गे. एवं ाड शि प्रकृतिनो स्थितवंध हो ॥ इति स यार्थः ॥ २०॥ चालीस कसाएस. मि लढ़ निरुष्ट सरिंह सिय महरे ॥

चालीस कसाएसु, मि जिंदु निष्ठुण्ह सुरिह सिय महुरे॥ दसदे। सङ्घ समिहया, तेहाजिहं विलाईणं॥ १ए॥

अर्थ-(चालीस साएसु के०) नंतानुबंधीआ चार, अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार, संज्वलना चार, ए शोल षायनो, बंध चालीश कोडाको डी सागरोपमनी उत्क स्थित बंध उत्क सं शें मिण्याल गुणठाणे संनिष्ठा मिण्यालीने होय, अने चार हजार वर्ष बाधा हों हीन निपेककाल जाण वो. एटहे चोप प्रकृति ही तथा एक (मिठ के०) मृष्ठ एटहे सु माल स्पर्श, बीजो (ल के०) लघुस्पर्श, त्रीजो (निकुएह के०) स्निग्ध एटहे चीकटस्पर्श, अने चोथो उ स्पर्श, पांचमो (सुरहि के०) सुरनिगंध, उठो (सिय के०) श्वेत एटहे उज्ज्वल वर्ण, सातमो (महुरे के०) मधुर रस ए सात नाम कमेनी प्र कतिनी उत्कृष्ठ स्थित, (दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी. तेनो अ बाधाकाल एक हजार वर्ष एटहे कार्जे हीन कमेदल निषेक रसोदय काल जाणवो.

तेवार पढी नामकर्मनी प्रकृतिना एकेका वर्ण तथा एकेका रसें प्रत्येक (दो समृत्समिह्या के०) ढी कोडा ोडी सागरोपमनी स्थित वधारीयें (तेहालिइं बिलाईणं के०) ते केम हालिइवर्ण अने आम्ल रस, ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थित साडा बार कोडाकोडी सागरोपमनी ते साडा बारकों वर्ष अवाधा का खें हीणी स्थित रसोदय काल जाणवो. तथा रक्तवर्ण अने कपायेलो रस ए वे ना मकर्मनी प्रकृतिनी पंदर कोडाकोडी सागरोपम जत्कृष्ट स्थित ते पंदरकों वर्ष अवाधा का धाकाखें हीणी कमेदलनी स्थितनो रसोदय काल जाणवो. तथा प्रीतवर्ण अने कट्टक

रस, ए वे नाम मेनी प्र तिनी साडासत्तर ोडा ोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थि ति अने साडा सत्तरशें वर्ष श्रवाधा कार्डे दीन स्थिति कमेदिल नो निषेक काल जाणवो स्यामवर्ण ने तीक्षण रस ए वे नामकमेनी प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थिति वंध, वीश कोडाकोडी सागरोपम वे दजार वर्ष श्रवाधाकार्डे दीन में स्थितिकमें निषेक जि जाणवो ॥ इति समुचयार्थः ॥ १ए ॥

> दस सुह विहगइ हो, सुर इग थिर पुरिस रइ हासे॥ मिन्ने सत्तरि मणु इग, इन्नी साएसु पस्ररस ॥ ३०॥

थे-(द के०) द ोडाकोडी सागरोप नो चर स्थितिबंध, एटली प्र कितनो होय, तेनां नाम हे हे. (सुह्विह्गई के०) एक निवहायोगित, (च के०) बीजी चे गों ने (र ग के०) त्रीजी देवगित, चोथी देवा पूर्वी तथा (थिरह के०) ए स्थिरना, बीजी ननाम, शिजी सौनाग्य ना, चोथी सुसरनाम, पांचमी हियनाम, हिं यशःकी निना, एवं दश प्रकृति थई तथा खगी। रमी (पुरिस के०) पुरुषवेद मोहनीयनी प्रकृति, बारमी (रई के०) र तिमोहनीय, तेरमी (हासे के०) हास्यमोहनीय, ए तेर प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थित होय. तिहां बाधाकाल ए ह र वर्षनो होय तेटला वर्षे हीन द कोडाकोडी सागर ए तेर प्रकृति कमेदल निषेक काल छ हनेना पवर्त्तनाविना स्वानाविक वेदनकाल जाणवोः तेमध्यें अपवर्त्तनायें घटे छ हनेनोयें तथा सं मणादिकें करी अधिक स्थित पण होय. एवं व्याशी प्रकृतिनी स्थित हो कालमान कही.

ने (मिन्नेसत्तरि के०) मिण्यालमोह्नीयनी उत्कर्षी स्थिति सीतर कोडाको डी सागरोपम सात इजार वर्ष, बाधाकालें हीन उत्कष्ठस्थिति कमे निषेककाल जाणवो अने सम्यक्त मोह्नीयनो स्थितिबंध नथी, तेथी स्थितिबंध तथा छवाधा काल न कह्यो. ने उदयकाल ग्राज्ञ सागरोपम पूर्वकोडी प्रथक्तें छिषक एए वुं. तथा मिश्रमोह्नीयनो निषेक छंतर ' तेनो, एटले प ।शी प्रकृति थर् तथा (मणुड्ग के०) मनुष्याति, मनुष्यानुपूर्वी, (इडीसाएसु के०) विद ने शातावेदनीय, ए चार प्रकृति उत्कष्ठी स्थित (पस्तरस्त के०) पंदर कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण पंदरज्ञों वर्ष छवाधाकाल ते पंदरज्ञों वर्ष हीन कमेस्थिति कमेनि पेक काल जाणवो छहीं छां जो पण म ष्यानु पूर्वीनो उदय तो व गतियें वे त्रण समय लगें होय, तो एटलो निपेक काल केम संनवीयें? तथापि एनो उदय म

ष्यगित ध्यें सं ए करऐं करी सं वि। नोगवे, तेथी देलिक रचना विशेष नि षे ाल जाएवो. एवं नेव्याशी प्र ति कदी ॥ इति स यार्थः ॥ ३०॥ नय कुन्च अरइ सोए, वि वि तिरि तरल निरय इगनीए॥ तेअपण अथिर बक्के, तसच थावर इग पिएंदि ॥ ३१॥

अर्थ-( नय के 0 ) नयमोहनीय, ( ह के 0 ) छे गुप्सा होहनीय, ( रइसो ए के 0 ) अरित मोहनीय, शोक बिहनीय, (विचित्र के 0 ) वैत्रि यशरीर, वैत्रिय अंगोपांग तथा तांतरें वैत्रि यसंघातन वैत्रि यवैत्रि यबंधन, वैक्रियतैजसबंधन, वैक्रियकामेणबंधन, वैत्रि यतैजसकामेण बंधन, ए वैत्रिय सप्त दीयें. जे न णी वैत्रिय हारीर बांधतां ए साते जेली बंधायः एवं अगी ार थइ तथा मी (तिरि के ) तिर्यचगित, तेरमी तिर्यचा पूर्वी, ए तिर्यचिक ( उरल के ) चौदमुं ख्रौदारिक शरीर, पंदरमुं ख्रौदारि ख्रंगोपांग, ए ख्रौदारिकदिक तथा तांतरें खोदारिकसंघातन, खोदारि खोदारि बंधन, खोदारिकतेजसबंघन, खोदा रिक मिणबंधन, औदारिकतैजसकामिणबंधन, ए औदारिक सप्तक लीजें केम के ए औदारि शरीर बांधतां साते साथेंबंधाय. एवं वीश प्रकृति थइ. (निरयहुग केण) नरक दिक, (नीए के०) नीचैगींत्र (तेअपण के०) एक तैजल, बीजुं कार्मण, त्रीजुं अगुरुलघु, चोथुं निर्माण अने पांचमुं उपघात, ए तैजस पंचक, मतांतरें तैजस संघातन, कार्मणसंघातन, तैजसतैजसबंधन, कार्मणकार्मणबंधन, तैजसकार्म ण बंधन. ए जेलतां तैजस दशक थाय एवं तेत्रीश प्रकृति थइ तथा (अथिरत के के 0 ) थिरनाम, अ ननाम, दौर्नाग्यनाम, :स्वरनाम, अनादेयनाम अ ने अयश कीर्निनाम, ए अधिरषट्क. एवं उंगणचालीश प्रकृति थइ. (तसच इ केण) त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अने प्रत्येकनाम ए त्रसचतुष्क. एवं त्रेता जीश प्रकृति थइ. ( थावर के 0) स्थावरनाम, ( इग के 0 ) एकें इियजाति, ( प णिंदि के । पंचें डियजाति, ए जेंतालीश प्रकृति आ गायामां कही ॥ इति ॥ ३ १॥

नपु कुखगइ सासचछ, गुरु करकड रुक्त सीय डग्गंघे॥ वीसं कोडा कोडी, एवइआ बाह वास सया ॥ ३५॥

अर्थ-(नपु के०) नपुंसकवेद मोह्नीय, (कुखगइ के०) अग्रुनविहायो गति, (सासच्छ के०) बह्वासनाम, जपघातनाम, आतुपनाम अने पराघातना

, ए उहुासचतुष्क, (ग्रुरु के०) ग्रुरुस्पदीना , (क्रक्कड के०) कतोर स्परीना म, (हरके के०) रूह्मस्परीनाम, (सीय के०) शीतस्परीनाम, ( गांधे के०) इ र्गधनाम. एवं छार्गीछार प्रकृति छाने पूर्वेली गायामध्यें हेतालीश प्रकृति कही है. एम सर्व मली सत्तावन प्रकृतिनो उत्क स्थितिबंध काल (वीसंकोडाकोडी केण) वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण जाणवो ए उत्कृष्ट संक्वेशें वर्त्ततो मिथ्याली जीव, बांधे, तेमध्यें पांच प्रकृति मोह्नीयनी एक गोत्रनी अने शेष एकावन प्र कृति नामकमेनी जाणवी. तिहां बाधा ाल बे हजार वर्षनो होय. लगें तेकमे रसयी तथा प्रदेशयी उदय न आवे अने जो संक्रम करणे करी तुखप्र कृति समजातिय मध्यें संक्रमावी चद्य । एो, तो एक वंधावितका वीजी संक्रमा विलका व्यतित थये थके उदय छावे. जेम छनंतानुबंधी छानी विसंयोजना क री उपशांत मोह्यी अदाक्ष्ये पडे तो कोइ एक प्रथम ग्रुणवाणे आवे. त्यां मिण्या त्व प्रत्ययें अनंतानुबंधीआ चार बांधे तेनी बंधावली गये श्रके अप्रत्याख्यानादिक जे पूर्वेबांदे हे तेमां हे संक्रमावी, वेदे तथा अपवर्त्तनादिक कर ऐं करी, अल्पकालकरी पण वेदे, तथा अबाधा अतिक्रमे चके गायना पूठनी पेरें प्रथम बहु विस्तीर्णदल् रचना, बीजे समयें विशेष हीन एम समय समय विशेष हीन हीन करतां ए रीतें अर्धमात्रस्थिति, प्रांतें अर्धदल होयः ए रीतें जे उदयावितकानुं रचवुं, ते निषेक कहीयें. तेनो काल ते निषेक काल जाएवो. ते जे कमेनी जेटली स्थित, ते म ध्यें थी अवाधाकाल काढतां ज्ञेप रहे, ते निषेककाल कही यें ( एवइ आबाह्वासस या के 0 ) जे कमेर्न। जेटला कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, एटला शहकडा व र्प, ते कमेनी अवाधा जाएवी. ते जघन्य अवाधाकालनी स्थित ंतर मुहूर्तनी वे ति हां कंमक एटले अंग्रलीनो असंख्यातमो नाग तेना जेटला आकाश प्रदेश तेटला समय प्रमाण जे कमेस्थिति विशेष, तेटली स्थितिविशेष अति मे थके प्रथ म जे उत्कृष्ट अबाधाकालनुं स्थानक हतुं, ते अबाधा कालना स्थानक मांहेथी एक समय हीन आबाधा काल बी स्थानक थाय एम वली पण कंमक मा त्र हीन कमेस्थिति होय थके समय हीन बाधा कालनुं त्रीजुं स्थानक थाय एम कंमक कंमक मात्र स्थितिनी हाणीयें समय समय हीन अवाधाकाल उं पण स्थानक थाय. एम अवधाकालनी उत्कष्ट स्थिति थकी उत्तरतां जघन्य स्थिति पर्यंत कंमकसंख्या अने अबाधा कालनां स्थ क यावत् तुख्य याय जे मूलप्रकृतिनी तथा उत्तर प्रकृतिनी जेटली कोडाकोडी सागरोपमनी

स्थित होय ते प्रकृतिने तेटला श वर्षनो ख्रवाधा ल होय एटले ाध्या प ही पण एटला ल लगें ते कम उदय न वि, तेने बाधाकाल हीयें. त या पोत पोताने ख्रवाधाकालें हीन जे मेस्थिति, ते मेनो निषेक हेतां नो ग्याल होय निषेक ते कम उदय लों प्रथ प्रदेशाय सा टो उदय खावे ख्रने पही समय समय हीन हीनतर थाय यावत् कमेनी स्थिति ते हेहले स यें ख्रत्यंतम उदय होय एने निषेक हीयें ए सत्तावन प्रकृति तथा ख्रागल नेव्याशी प्रकृतिनुं उत्कृ स्थितिबंध कह्युं ने देवायु तथा नरकायु ए बे प्रकृति नुं उत्कृ स्थितिबंध कह्युं ने देवायु तथा नरकायु ए बे प्रकृति नुं उत्कृ स्थितिबंध कह्युं ने ख्रालीश प्रकृति मध्यें कह्युं तेहीज खाहींपण लेवुं एम सर्व मली एकशोने ख्रहतालीश प्रकृतिनुं उत्कृष्ठ स्थिति बंध ह्युं॥ इति नावार्थः॥ ३१॥

गुरु कोडि कोडि छंतो, तिचाहाराण निन्नमुह बाहा॥ ॥ छाद्य जघन्य स्थितिबंधः॥ लहु ठिइ संख गुणूणा,नर तिरियाणा पद्धितिगं॥ ३३॥

थै—( गुरुकोडिकोडिखंतो के० ) उत्कृष्ट स्थितिवंध खतःकोडा ोडी सागरो प कालनो ( तिडाहाराण के० ) तीर्थंकर ना कम तथा खाहारकशरीर, खाहारकखंगोपांग, खाहारकसंघातन, खाहार ाहारकबंधन, खाहारकतेजस बधन, खाहारककामेण बंधन खने खाहारक तेजसकामेण बंधन ए खाहारक सप्तक एवं नामकमेनी खाठ प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थित कोडाकोडी सागरोपम मांहे होय खहीं खां शिष्य पूछे छे के, हे नगवन ! ोडाकोडी सागरोपम जिननामनो काल कह्यो एटलो काल तो, जीव तिर्थंचगितमां गया विना न रहे. खने तिर्थंचगितना जीवमध्यें तो जिननामनी सत्ता पण निपेध छे, तो एटलो काल क्यां पूर्ण करे ? तथा तीर्थंकर नामकमे तीर्थंकरनय थकी खर्वाक त्रीजे नवे बांधे छे एम पण क ह्यं छे, ते पण केम घटे ? खहीं खां गुरु उत्तर कहे छे के " जं मिह्नकाइख ति हं, निरय जवे तिनसेहिखं संतं ॥ इयरंमि निडहोसो. उवटणा वटणाम ॥१॥" ए गाथानो खर्थ कहे छे के, तिर्थंच मध्येंजे जिननामनी सत्ता निपेध तथा त्रीजे नवें बंधाय, तेतो निकाचित जिननामनी खर्पेहायें जाणवो. तीर्थंकरनय पहेलो. त्री जा नवें निकाचे, ते कमें सकल करणने खसाध्य होय खने जे निकाचित न हो या, ते कमेनी तो खपवर्त्तना कहेतां स्थितरसद्धं घटाववुं छने उहर्तना एटले

स्थितिरत ं वधार वुं तथा संक्रम एट छे पर प्रकृति मां हे सं माव बुं, प्रत्या उवे खुं इत्यादिक करण साध्य होय ते जिनना घणा नव पहेलो पण बंधाय त था अंतः को डा को डी सागरोपम स्थित पण अपवर्तनायें घटावे, तथा पर प्रकृति मां हे संक्रमावतां कां इ दूपण नथी तथा ए आठ कमें प्रकृतिनो (नि ह बाहा के ०) अबाधाकाल अंतर मु ते छे ते नणी जिनना जेणे बाध्यं होय, तेने अंतर मुहूर्त पठी जिनादिकनो प्रदेशोदय थाय, तेथी करी तेनो अन्यजीव नी अपेक्शयें महीमा विशेष होय पूजा हलनी छिद होय एम एक शोने छप इ प्रकृतिनी उत्कृष्टि स्थित ही.

ह्वे ग्रंथगौरव टालवा नणी ए छात प्रकतिनी जघन्य स्थित छंहीं हो हे ते. जि ननाम ने छाहारक सप्तक, एवं छात प्रकतिनी (लहुतिइसंखगुणूणा के०) लघु एटले जघन्य स्थित उत्कृष्ट स्थितिथकी संख्यात ग्रणी हीणी जाणवी जे नणी छंतर मुहूर्त्तनी पेरें छतःकोडाकोडीना पण संख्याता चेद होय, जे नणी संक्षीया पंचें डिय पर्याप्तानी स्थितिबंधथी छिधक उत्कृष्टी स्थिति साधु वंध लगें जेटला स्थि तिवंध, ते सर्व छंतःकोडा कोडी सागरोपम प्रमाण कहीयें,

हवे शेप वे आयुनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहे हे. (नरितिश्वाणाउपद्वितिगं केण) एक मनुष्यनं आयु अने बी ं तिर्थेच ं आयु, ए बेनो उत्कृष्ठ स्थितिबंध, त्रण पत्योपम जाणवो. जे नणी प्रथम आरे तथा देव रू अने उत्तर रुना मनुष्यनं त्रण पत्योपमायु हे. तेनो अबाधाकाल उत्कृष्ट थी तो पूर्वकोडीना त्रीजा नाग प्रमाण. जे नणी संख्यातावपीर्धना मनुष्य विना अन्य गतिथी चवी युगलीयुं मनुष्य न याय ते नणी तेत्रीशलाख, तेत्रीश हजार, त्रणशें ने तेत्रीश, पूर्व अने ए क पूर्वनो त्रीजो नाग उपर एटलो उत्कृष्ट अबाधाकाल, ते त्रण पत्योपमधी अधिक अबाधाकाल जाणवो. ए एकशो अडावन प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितबंध कद्यो अने आव प्रकृतिनो जवन्य स्थितवंध काल क ॥ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥ हवे लाधवें आयुर्वध एकेंड्यादिक ं कहे हे.

इग विगल पुत्र कोडी, पलियाऽ संखंसच्चा च च्यमणा॥ निरुवक्कमण वमासो, खबाह सेसाण जवंतंसो॥ ३४॥

अर्थ-( इगविगलपुवकोडी के० ) एकेंडिय जीवने तथा विकलेंडिय कहेता वें डिय, तेडिय, चौरींडिय, जोवने परनवायु उत्कृष्ट पूर्वकोडी प्रमाण वंधाय पण पत्योप म सागरोपम ान ा न बांधे, के के एकेंडियादि जीव जे हो, ते देव नारकी मध्यें तथा संख्यातवर्षायु वाला ष्य तिर्यचनी गति ध्ये पण अवतरे न हीं, तेथी तत्त्रायोग्य आयु न बांधे तथा (पित्याऽसंखंसआउच्चअ णा के०) पि व्योपमना संख्यात । नाग प्र ।ण देवा , तिर्यगायु, नर ।यु ने मनुष्यायु, ए चार आ ष्य असंज्ञीआ पंचेंडिय तिर्यच बांधे के के असंज्ञीआ पंचेंडिय तिर्यच चारे गति ।हें वतरे तो खरा तथापि देवो मध्यें तो ज्ञवनपति था व्यंतर मध्येंज जाय, परंतु ज्योतषी था वैमानि ध्येंन जाय ने नर गति ध्यें पण प्रथ नरकना ए पाथडा लगें जाय परंतु ।गर्जे न जाय तेमाटें पत्योपम ना संख्या थी अधि आ न बांधे तेथी तेने अबाधा ।ल पूर्वकोडी हि नाग उत्कृ हो जाएवो तेटलाकालें हीन पत्थासंख्यांश प्र ।ए निषेक ।ल जाएवो

तथा (निरुव मण ढ ।सो के०) निरुप मायुना धणी एवा देव, नार ही तथा गलीया म ष्य ने तिर्थ जे हुं । यु ध्यवसाय प्रमुख आविलयें करी घटे नहीं तेवा । युना धणी जे देवतादि हे, ते परनवायुनो बंध निजनवायु हम्मास हते बांधे तेथी तेने परनवायुनो ह हीना बाधा ।त जाणवो तथा । तांतरें युगितिया पण पत्योप नो असं ।तमो नाग शेष निजनवायु थकें परनवायु बांधे तथी तेने पत्यासंख्याश काल माण बाधा ।त जाणवो तथा नगवतीनी हित्त ध्यें नार ही अंतर हूत्तीयु शेष परनवा बांधे एम ह्यं हे ते विधी नारकीने घन्य । धाज होयः

हवे निरुप । ना धणी नुष्य ने तिर्थेच मुकीने ते विना (अबाह्से साण्नवंतंसो के॰) शेष पाकतां जे सोप मा ना धणी म ष्य तथा तिर्थेच ते परनवा बंध पोताना नवना आयुनो त्रीजो नाग शेष हुंते तथा त्रीजा ना गनो त्रीजो नाग शेषहुंते एटले स्वनवा ने नवमें नागें अथवा तेने पण त्रीजे नागें एटले एक्याशीमें नागें परनवा बांधे तेथी तेनी अबाधा पण तेटलीज होया एम उत्रुष्ट अबाधा सहित उत्तरप्रकृतिनी उत्रुष्ठ स्थित कही ॥ इति ॥ ३४ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिनो जघन्यस्थितिवंध कहे हे.

लहु हि इ बंधो संजलण, लोह पण विग्ध नाण दंसेसु॥ निन्न सुहुतं तेच्य ६, जसुचे वारसय साए ॥ ३५॥ अर्थ—(लडुविइबंधो के०) लघु एट खें जघन्य स्थितबंध ते (संजलणलोह के०) एक संज्वलनलोन जुं नवमा ग्रुणलाणाने पांचमें नागें चरमवंधें होग, तथा (पणविग्ध के०) पांच अंतरायकर्मनी प्रकृति अने (नाण के०) पांचकाताल एपियनी प्रकृति तथा (दंसेसु के०) चार दर्जीनावरणीयनी प्रकृति एवं चौद प्रकृति लं वंध स्वस्थानंपराय ग्रुणलाणाने प्रांत समयें होय. जे नणी ए पंर प्रकृतिना वंधकमां हे एहिज अत्यंतिवग्रुद्धि हे अने ए पंदरनी अतिविग्रुद्धपणे ज धन्यस्थिति बंधाय तेनणी (जिन्नसुद्धुनंते के०) चरम वंध अंतर सुदूर्वनो होये अने एनो अवाधाकाल पण अंतरसुदूर्वनो जाणवो जेनणी अंतरसुदूर्व स्थितवंध कालनो अंतरसुदूर्वथी संख्यातग्रुण हीन एवी अंतरसुदूर्वनं अवाधाकाल होये (अक के०) आव अंतर सुदूर्व प्रमाण जघन्यस्थितिवंध ते (जसुचे के०) एक य शःकीर्चिनाम अने बीजो उच्चेगींत्र, ए वे प्रकृतिनो पण जघन्य स्थितवंध ग्राम् सुदूर्व प्रमाण ते स्वस्थानंपराय नामे दशमां ग्रुणलाणाने प्रांतें एनो चरमवंध हो य एनो ज्वाधाकाल पण जघन्य जाणवो.

अने (बारताएं के हैं) सात्वेदनी । या सिदांत सध्यें एक सुदूर्चनो पण कहेलो हे. सञ्चि ह्यितिवंध बार सहूर्चनो व जाएवो अने एसातानो नथा है गेंत्रिनो छदय चौदमा गुणकाल अंतर सहूर्चनी गोंत्रनो छदय चौदमा गुणकाल अंतर सहूर्चनी

दो इग मासो पको, संजलण तिगे पुमठ विसाणि सेसाणु कोसाठ, मिचत िहए जलई ॥ ३६॥

अर्थ—( दोइगमासोपको के०) वे मास, एक मास अने पक्तनो जध वंध, अनुक्रमें ( संजलणित के०) संज्वलनित्रकनो जाणवो एटले हें वित क्रोधनो जघन्य स्थितिवंध, नवमा ग्रणगणाने बीजे नागें चरम वंधें वेम वित ए होय तथा संज्वलना माननो एक मासनो जघन्य वंध नवमां ग्रणगणा नागें चरम वंधें होय. तथा संज्वलनी मायानो जघन्यस्थितिवंध, एक परन्ती नवमा ग्रणगणाने चोथें नागें चरम वंधें होय एने पोतपोताना वंधवित हिज अतिविग्रिक्तं अध्यवसाय स्थानक हे ते नणी. तथा एनी अवाधा वित समुद्धित प्रमाण हे ते अवाधायें हीन जघन्यस्थितिनो निषेक काल जाल रितें संज्वलना क्रोध मान, माया, ए त्रणनी जघन्यस्थित क्रमें कर्ता

अने (पुमठवरिसाणि के॰) पुरुषवेदनो जघन्य स्थितिबंध नव । गुणवाणा ने प्रथमनागें चर बंध आव वर्षनो होय, एना बंधकमांहे एहिज अतिविद्युद्धि है। एनी जघन्य अवाधा अंतर हूर्न एन प्रमाण है। ए बावीश प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कह्यो, तथा आयु चार, वैक्रिय षट्क, जिननाम, अने आहार किक, ए तेर प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध, स्वामीत्व प्रस्तावे जूदो कहेशे। एवं पां त्रीश प्रकृति विना शेष पञ्चाशी प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कहेवानें रण हेहे। पञ्चाशी प्रकृतिनी जघन्य स्थित एकेंड्य जीवने विषे प्राप्यमाणहे ते कहे हे

(सेलाणु ोसार्य के०) शेष प्रकृतिर्यं ने उत्कृष्ट स्थितिबंध नेते (मिन्नचिए लड़ं के०) मिच्याल मोह्नीयनी उत्कृष्ट स्थिति साथें वेंचता जे लाने,ते जघन्य स्थिति कहेवी एटले ज्ञानावरणीयादिकनी उत्कृष्टी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनीने ते मिच्याल मोह्नीयनी उत्कृष्टी स्थिति सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनीने तेणो नाग हेतां, पूर्ण सागरोपम नावे तेथी एक सागरोपमना सातनाग करीयें, तेवारें त्रीश कोडाकोडी सागरोपमना बशे ने दश सातिश्रा नाग थाय. ते शितेर कोडाकोडी साथें वेंचतां त्रण नाग आवे अने वीश कोडाकोडीना सातिश्रा एकशो चालीश नाग थाय तेने सीतेर कोडाकोडी साथें वेंचता सातिश्रा वें नाग आवे एटले ए केंड्य ने ज्ञानावरण पांच, दशनावरण नव, अंतराय पांच,अने अशातावेदनीय एक एवं वीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, सागरोपमना सातइश्रा त्रण नाग जा णवा तथा शोल कषायना सातइश्रा चार नाग, अने मिच्याल मोहनीयनो एक साग रोपम संपूर्ण जाणवो. एवं साडत्रीश प्रकृति थइ.

तथा त्रसचतुष्क, अस्थिर षट् , औदारिकिक, तिर्यचिकिक, एकेंडियजा ति, पंचेंडियजाति, कुखगित, निर्माण, तिप, उद्योत, स्थावर, तैजस, कार्मण, अग्रुरुलघु, उपघात, उद्यास, ढुंमसंस्थान, ठेवछुं संघयण, रुसवर्ण, तीइणरस, अग्रुनस्पर्श च ष्क, गेंध, अरित, शोक, नय, जु प्सा, पराघात, अने नपुंसकवेद ए एकतालीश प्रकृतिनी उत्क स्थिति वीश कोडाकोडीनी हे तेने मिण्याल्वनी स्थिति साथें वेंचता सातइआ बे नागनो वंध होय, एवं अद्योतेर प्रकृति थइ, स्कात्रिक तथा विकृतजाति त्रिक, ए ह प्रकृतिनी उत्क स्थित अहारकोडा

सूच्यत्रिक तथा विकलजाति त्रिक, ए व प्रकृतिनी जत्क स्थिति अढारकोडा होडी सागरोपमनी वे तेने मिथ्यात्व स्थिति साथें वेंचतां एक सागरोपमना पां ीश जाग करीयें. एवा नव नागनो बंध होय एवं चोराशी प्रकृतिथइ

विद, मनुष्यिदक, शातावेदनीय, ए चार प्रकृतिनो बंध एक सागरना चौद

जाग रीयें, एवा त्रण जाग अथवा ।तइओ दोढ जाग एवं अहासी प्रकृति थई.

हियर, ज, जग, पुंवेद, सुस्वर, ।देय, यशःकीर्ति, हास्य, रित, ग्रुजस्वगित, प्रथम संघयण, प्रथ संस्थान, सुगंध, वर्ण, िर रस, जस्परी च र , ए ओ गणीश प्र तिनी दश कोडा गेडी सागरोप नी स्थिति हे ते वि थ्यात्व ।दिनीयें वेंचतां बंध सातइ ए जाग होय पीतवर्ण, आम्लरस, ए वे प्रकृतिनो बंध, अहावीशी । पांच जाग, तेवार पही एके । वर्णे अने एके । रसें, अहावीशी एके जाग व धारतां जवुं, एट से र वर्ण ने पायला रसें हावीशीआ ह जाग एम शेष वर्ण तथा शेष रसनें विषे न में कहेवो एवं ११५।

तथा बीजे संघयऐ। अने बीजे संस्थाने पां शिशा व नाग, तथा त्रीजे संघ यऐ। अने त्रीजे संस्थाने, पांत्रीशी। सात नाग, तथा चोथे संघयऐ। ने चोथे संस्थाने, पांत्रीशीआ आठ नाग, तथा पांचमेसंघयऐ। ने पांचमे संस्थानें, पांत्री शीआ नव नाग, ए एकेंडियने उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्टिस्थितिबंध सामान्यें। ते केम के एकेंडियने एकशोने नव प्रकृतिनो बंध, वे ते ध्यें नरामुं तथा तियेगामु नो उत्कृष्टिस्थित बंध, पूर्व कोडीनुं ने शेष एकशोने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध आदीं कह्यो. ए एकशोने सात प्रकृति मध्यें पण पूर्वे बावीश प्रकृतिनो ज्ञान्य स्थितिबंध सामान्य पर्णे कह्यं वे, अने शेष प शि प्रकृतिनो ज्ञान्य स्थितिबंध सामान्य पर्णे कह्यं वे, अने शेष प शि प्रकृतिनो ज्ञान्य स्थितिबंध कहे वे. एवं ए शो ने त्रेवीश प्रकृति थइ.

अहीं आं वर्णीदिक सविस्तर वीश प्रकृतिनो बंध ो, तेथी एकशो ने त्रवी श प्रकृति थई परंतु ए वर्णीदिक सामान्यें चार छेतां एकशो ने सात प्रकृति था यः तेमां हेजी झानावरणीय पांच, दशैनावरणीय चार, अंतराय पांच, संज्वजना चा र, पुंवेद एक, शातावेदनीय, जै गेंं , ने यशः ीर्ति, ए बावीश प्र तिनो जयन्य स्थिति बंध, मूकीने तेथी शेंष रही जे पाशी प्रकृति तेनो जयन्य स्थिति बंध, मूकीने तेथी शेंष रही जे पाशी प्रकृति विषे उत्कृ स्थिति बंध जे कहा मी एकें हिय है। ते पाशी प्रकृतिनो एकें हियने विषे उत्कृति विषे जयन्य स्थिति विषे थाय ते कहे है. निहापांच, तथा अशाता, वेदनीय ए ह प्रकृतिनो जयन्य स्थिति वंध साती । बे नाग, पत्थोपमने सं ानमें नागें ही । जा एवा तथा मिथ्यात्वमोहनीयनो एक कोडाकोडी सागरोपम पद्योपमने संख्या तमें नागें हीन जाएवो एम जे कमें प्रकृतिनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थित है, तेनी जयन्य स्थित, साती आ बे नाग जेनी दश कोडाकोडी नी उत्कृष्टी

स्थित तेनी जघन्यस्थित साती छो ए नाग छने जेनी पंदर कोडा ोडी सागरोपमनी जिल्ह स्थित तेनी जघन्यस्थित चौदी छा त्रण नाग ते सर्व पह्योपमने छसंख्यातमें नागे ए। जाणवा तेमज जेनी छढ़ार कोडाकोडी सागरोपमनी जल्क छीस्थित, तेने सागरोपमना पांत्रीशी छा नव नाग पत्योपमना छसंख्यातमें नागें ए। जाणवा ए रीतें पच्चाशी प्रकृतिनो एकेंड्यने विषे जघन्यस्थित बंध जाणवो ॥ इति॥ इद ॥ छ्य मकोसो गिंदिस. पित्याऽ संखंस हीए। लह बंधो ॥

अय मुक्कोसो गिंदिसु, पिंतयाऽ संखंस हीण लहु बंधो॥ कमसो पणवीसाए, पन्ना सय सहस संग्रणित ॥ ३७॥

अर्थ-(अयमु ोसोगिंदिसु के ०) ए अनंतरोक्त एकेंड्यिन ए शो ने सात प्रकृतिनो चत्कृष्ट स्थितिवंध, ते (पिलयाऽसंखंसदीणलद्भुबंधो केण) पत्योपमने असंख्यातमे नार्गे ही एो रतां एकें इियने एक शो सात प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध थाय. हवे प्रसंगागत एकें ड्यिना स्थितिबंध कह्या। पढी ए विकलेंड्यि तथा असंक्षिपंचें डियने उत्क तथा जवन्य स्थितिबंध, कहे हो. (कमसो के०) अनुक्रमें (पण वीसाए के॰ ) पचवीश गुणों बेंडियने एटसे एकेंडियने जे एकशोने सात प्रकृतिनो चत्कृष्ट स्थितिबंध कह्यो, तेथी प शिरागुणो बेंड्यिने चत्कृष्ट स्थितिबंध होय, एट खे, ज्ञानावरणीयादिक वीश प्रकतिनो सागरोपमना सातइआ पञ्चोत्तरनागः एम द शसागरोपस्थितवाला कमेना सातइश्चा पचीश नाग, एम शोल कपायना सातइश्चा शो नाग, मिच्यात्वमोहनीयनो वंध प शि सागरोपम, एम जेनी उत्कृष्ठ स्थिति वीरा कोडाकोडी सागरोपमनी तेने सात सागरोपमने सातइ एक नाग उपर, जे नी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी जत्कज्छी स्थिति तेने सागरोपमना चौदिया प ोतेर नाग एटले पांच सागरोपमने चोदिश्या पांच नाग उपर, जे कमेनी श्रदार ोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना पांत्रीशीया बशेने पचीश नाग एटले व सागरोपमने पांत्रीशी । पंदर नाग उपर जाणवा ए रीतें वेंडियनें एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कष्टिस्थितवंध जाएवो.

हवे तेंडियनो उत्क्रष्ट स्थितिवंध कहे हे जेटलो एकेंडियनें एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्क्रष्ट स्थितिवंध कह्यो, तेथी (पन्ना केण) पञ्चाशगुणो अने वेंडिय नास्थितिवंध थकी बमणो जाणवो एटले झानवरणादिक वीश प्रकृतिनो उत्कृष्ठ स्थितिवंध एकवीशसागरोपमने सातइआ त्रण नाग उपर, तथा मिथ्यात्व मोहनीय नो प श सागरोपम एम सर्व प्रकृति उने विषे तेंडियनो उत्कृष्ठस्थितिवंध जाणवो. हवे चौरिं डियनो उत्क स्थित बं ते जेटलो एकेंडियने ए शोने सात तिनो स्थितिबंध ह्यो ते थ ी (सय कें ) ो एो ने बेंडियना हि तिबंध थकी चार गुणो तथा तेंडियना स्थितिबंध की एो जाएवो एटले मिध्यालमोह नीयनो ए ो सागरोप , तथा झानावरणादि वीश प्रकृतिनो बेतालीश सागरो पमने सातइआ जाग उपर, शोल षायना सत्तावन सागरोप ने साताइ एक जाग, ए जे मैनी वीश कोडा ोडी सगरोप नी स्थित होय ते अध्विश सागरोप ने सातइआ ार जाग उपर स्थितिबंध होय एम सर्व लेंडुं.

अने अस । । पंचेंडियनो उत्क यतिबंध एकेंडियना बंध यकी (सहस सं णिउं के०) हजार णो जाणवो ने चौरिंडियना बंध य ी दशग्रणो जाण वो एटले ि ध्यात्व बित्नीयना हजार सागरोपम, शोलकषायना सागरोपमना सा तइआ चार हजार नाग एटले पांचशे एकोत्तेर सागरोपमने सातइआ त्रण नाग उपर, तथा झानावरणादिक वीश प्रकृतिना सातइआ त्रण हजार नाग तेना चार शें छावीश सागरोपमने सातइआ चार नाग उपर, एम जे मैनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थित तेना बे हजार नाग एटले बशे प शि सागरोपमने सातइ

ा पांच नाग उपर जाणवा. जे प्रकृतिनी दश कोडाकोडी । गरोपमनी स्थिति तेना इजार नाग एट ए शो बेंतालीश सागरोपमने सातइश्रा उ नाग उपर, तथा जे कमेनी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना बशें चौद सागरोपमने सा तइ । बे नाग उपर जाणवा. एम उत्कृ स्थिति सन्नी उंचेंड्य बांधे. वैत्रिय शरीर, वैक्रिय श्रांगोपांग, देवगित, देवा पूर्वी, नर गित, नर । पूर्वी. एवं उपकृति एनी जयन्यस्थितिबंधनो स्वामी पण अस । उंचेंड्य जा वो. जेनणी एकेंड्य तथा विकलेंड्यने एनो बंध नथी तथी देविकनो बंध मूल दश को कोडी सा गरोपमनो छे. ते मिच्यालनी स्थितयें वेंचतां सातइ उक्त नाग । वो, तेने ह जार गुणो करतां सातइश्रा हजार नाग थाय. तेना एकशो बेंतालीश सागरोपम उपर सातइश्रा उ नाग श्रावे, तेमज वैक्रियिक अने नरकिकना सातइ । बें हजार नाग थाय तेना बशें प ।शी सागरोपमने सातइश्रा पंचनाग उपर स्थिति जाणवी तेवली पल्योपमने श्रसं । तमें नागें उणी करीयें तेवारें ए उप्र ति नो जघन्यस्थितवंध होय अने चार श्रायुनो पल्योपमना श्रसंख्यातमां नाग प्रमा ण वंध जाणवो एटले एकशो ने शोल प्रकृतिनो जघन्य स्थितबंध क हो.॥ ३४॥

हवे वि हें हिय या असं ा पंचें हियनो जघन्य हि विंध हे हे.

विगत असि सु जि ते, किण छ पत्नऽसंख नागुणो।।

सुर निरया समादस, सहरस सेसा खुम्नु नवं॥ ३०॥

थ-(विगल सि सुजिनो के०) वि हें हिय ने संज्ञी पंचें हि तो जे

उत हियतिबंध हे ते ति ( णिन्छ कें०) घन्य हियति बंध (पद्मऽं ना

गुणो कें०) पत्योप ने संख्यां मे नागें णोए । यु वर्जीने शेष प्र तिनो ंध

जाणवो एटले बें हियने ज्ञानावरणादि वीश प्रकृतिना सातइ । प तिर नाग हे ते

मांधी पत्योप ने असंख्यातमें नागे णो जघन्य हियतिबंध जाणवो तें हियने साती

हा दोढ़शो नागहे ते पत्योपमने असंख्यातमे नागे णो रतां जघन्य हियतिबंध

थाय चौरिं हियने साति आ त्रणशो नागहे ते छि। पत्योप ने संख्यातमें नागें

उणो जघन्य हिथतिबंध जाणवो ए जे प्रकृतिनो जेटलो उत्क हिथतिबंध

धु ह्योहे तेथी पत्योप ने संख्यातमे नागें णो जघन्य हिथतिबंध । एवो.

हवे । नो जघन्य स्थितिबंध हे छे ते ध्यें (सुरिनरयान्नस । इससहस्स के०) देवा तथा नरकायु, ए बे । युनो जघन्य स्थितिबंध समान छे केमके देवता तथा नार है दश हजार वर्ष पर्यंत रण नपामें । टे दश हजारवर्ष जाणवुं तथा दशहजार वर्ष थकी समय समय अधि रतां यावत् ते शिश सागरोपम एक सय हीन ग्रुधीनाजे स्थितिनां स्थानक ते ध्यमा जाणवो ते मध्ये पर । यु एके । स्थित स्थानकें असंख्यात देवायु होय, एम नारकीने विषे पण जाणवो परंतु एटजुं विशेष जे नेवुं हजार वर्षथी यावत् द जाख वर्ष एटजी स्थिति ते नरकायु नथी बीजा सर्व स्थानक वस्तां छे. ए बे । युथी (सेसानखुम्भूनवं के०) शेष थाकतां रह्यां जे म ष्या तथा तिर्यगायुं, ए बे आयुनो जघन्य स्थितिबंध खुझकनव एटजे सर्वनी अपेक्तां न्हानो जव ते बशेने छपन्न आवितका प्रमाण होया अहीं आं आगम मध्यें म ष्य तिर्यवनुं जघन्यायु अंतर हूर्त्त प्रमाण कद्युं छे. पण जाणीयें हैयें जे ए अंतर मुहूर्त्त कुझक जव प्रमाण जेवो, जे नणी अंतर हूर्त्वना पण अ संख्या जेदहे तेमाटे. ॥ इति समु यार्थः ॥ ३०॥

हवे सर्व प्रकृतिना जयन्य स्थितिवंधें जयन्य अवाधाकाल कहे हे. सवाणिव लहु बंधे, जिल्ल सुहु अवाह आन जिहेवि॥ केइ सुरा समजिण, मंत सुहु विंति आहारं॥ ३ए॥ थे—(सद्याणविलदुबंधे के०) स्व तें सर्व बंधयोग्य एकशो ने वीश प्रकृति ना जघन्य स्थितबंधने विषे (अबाद के०) जघन्य अबाधा ।ल (निन्न दु के०) अंतर दूर्ननो जाणवो, एट जे जघन्य स्थितयें बांध्युं जे में, ते अंतर मुदूर्न सुधी पोतानो विपाक देखाडे नहीं, ते अबाधा । जें दीन निषेक काल क हीयें. हवे अहीं आं जे विशेष हे ते देखाडे हे. (आग्रजिकेवि के०) ग्रत्कष्ट आयु नी स्थितिने विषे जघन्य अबाधा काल पण होय अने जघन्यस्थितिना आयु मां ग्रत्कष्ट अबाधाकाल पण होय. तथा ग्रत्क आयुखें ग्रत्क अबाधाकाल होय, तथा जघन्य आयुष्यें जघन्य बाधाकाल होय. एम आयुःकमेने विषे अबाधाकालनी चग्रनंगी थाय, केम के अंतर मुदूर्न शेष आयुथें पण मनुष्य तथा तिर्थेच परचवायु, तेत्रीश सागरोपमनुं बांधे हे. अने पूर्व कोडीना त्रीजानाग शेष यायुथें पण परचवायु जघन्य बांधे हे. तथा पूर्व कोडीना त्रीजानाग शेष एक पण तेत्रीश सागरोपमायु बांधेहे तथा अंतर दूर्न शेषें खुलक नवायु पण बांधे. एम स्वमतें सर्व प्रकृतिनो जघन्य स्थितबंध कह्यों

हवे मतांतरें कहे हो. (केइ राज्यमिलिए के०) कोइ एक । चार्य जिनना म कमेनो जघन्य स्थितिबंध जघन्य देवायु जेटलो होय एम कहे हो. एटले द्र हजार वर्षनो जघन्यस्थितिबंध आहमा ग्रणताणाना हका जागने प्रांतें चरमबंध ए टलो होय तथा दश हजार वर्ष नरकायु जोगवी पण जिन थाय, तेनी अपेक्ष यें पण ए जघन्यबंध माने हो. अहींआं तत्व केविलगम्यहे तथा (मंतमुहुविति आहारं के०) आहारक शरीर ने । हारक अंगोपांग, ए वे प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध आहमा ग्रणताणाने प्रांतें चरमबंधें अंतर हुर्न प्रमाण होय. ए म माने हो. ते जाणीयें. हैयें के आगमिक मतें अप्रमत्त ग्रणताणे अंतर हुर्जनो वंध पंचाशक मध्यें प्रायित्विधि पंचाशकनी बेतातिशमी गाथायें कहां हो, ते अपेक्षायें केता हशे, पण तेचने उत्कष्ट बंधमान पण हशे॥ इति स०॥३ए॥ हवे कुछकजव ं मान कहीयें हैयें.

सत्तरस समिहिन्जा किर, इ गाणु पाणं मिहुंति खुमु ज्ञवा॥ सगतीस सय तिहुत्तर, पाणू पुण इग्ग मुहुत्तंमि॥ ४०॥ अर्थ-(सत्तरससमिहिश्राकिर के०) सत्तर जव जाजेरा तेरशें पंचाणु श्रंश, अदारमां जावना अधिक निश्चें (इगाणुपाणंमिहुंतिखुम् ज्ञवा के०) एक श्वासोह्या स ांहे होय ुझ नव एटले निगोिंद आना न्हाना नव जाणवा एवा (सगती ससयति हुनर के०) साडित्री शहोने तहों नेर (पाणू के०) श्वासो ह्वास (पुण के०) वली (इग्ग नंिस के०) ए हूर्नां होय, जे नणी रोग रहित बलि निश्चित एवा तहण पुरुषना सात श्वासो ह्वासें ए श्रोव श्वाय. एवा सात श्रोवें ए लव एटले छेगण प शा श्वासो ह्वासें ए लव श्वाय. एवा सत्तो तेर लवें एक हूर्न थायतेने छेगण प शा शुणा रतां त्रण हजार सात श्रोने तहों तर श्वासो ह्वास अंतर हूर्न थाय. विश्व आवार्य नाडीना छलालाने पण श्वासो ह्वास कहे छे. अने ब शे छप आवार्य पाण ए हम नव होय. एवा पांशव हजार पांचशे ने छ हीश हुझ नवें ए अंतर हूर्न थाय, तेथी बशे छप ने पांशव हजार पांचशे ने छ हीश हुझ नवें ए अंतर हूर्न थाय, तेथी बशे छप ने पांशव हजार पांचशे ने छहीश थाय, तेने साडित्री शशें ने तहीं नेर श्वासो ह्यासें वहेंची थें, तेवारें चुम्माली शशेंने छेताली श आवली एक श्वासो ह्वास मांहे होय अने शेष बे हजा र चारशेने अहावन विश्व रहे, तेने साडित्री शशेंने तहों नेरनो नाग नावे, ते माटें एक विश्वास साडित्री शशेंने तहों तेर नाग नावे, ते माटें एक विश्वास साडित्री शशेंने सहताली शमी आवलीना छपरला ने

एटें ए श्वासोब्वासना कुझ नव सत्तर ते एके । ुझक नवनी बड़ों उप न्न आवलीने सत्तर गुणा रतां तेंताली शड़ोंने बाव श्वायः ड्रोंष चोराणुं आव ली पूर्ण अने प । णुमी आवलीना साडत्री शड़ों तहोतेरी आ चोवी शड़ोने अठाव न नाग उपर एटलो अढारमा नवनो कालगये श्वके एकश्वास पूर्णश्वायः॥ ४०॥

पण सिंह सहस पण सय, बतीसा इग मुहुत खुद्ग नवा ॥ आवितयाणंदोसय, बणना एग खुद्ग नवे ॥ ४१॥

अर्थ—हवे (पणसिं हिसद्दसपणसयं जिले) पांशव ह्लार, पांचशें ने व त्रीश, एटला (इगसुदुत्तखुमूनवा केले) एक दूर्तना हुझक नव थाय, तेने सा डत्रीशशें ने तहों तेर श्वासञ्चासें वहेंचीयें, तेवारें एक श्वासोञ्चासमां सत्तर नव पूर्ण ने उपर साडत्रीशशें तहों तेरिआ तेरशेंने पञ्चाणु नाग वधे, अने अढारमां नवमां (३४४३) नाग पूर्ण होय तेवारें नव पूर्ण थाय माटें शेप अढा रमा नवमां (१३४०) आगला श्वासोञ्चासना अंश मांहे आवे तेवारें नवपूरो थाय अने वे श्वासोञ्चासमांहे चोत्रीश नव पूर्ण थाय अने पांत्रीशमां नवना (३४४३) तेरी ( ( १९ए० ) छंश पां ि ं नवना वधे था ए श्वासो ह्वास ं बावन नव पूरा थाय, ने त्रेपन ं नव ं ( ३९७३ ) तेरीया रिशेन बार ं पूराय छथवा वे श्वा विश्वास ं पां विश्व नव ग विं, विश्वास (ए०३) ंश घटे ए सम तें विश्वारी हेवा. ए निगो दिले जीव ए श्वासो ह्वास ंहे सत्तर नव जिरा रे तथाए थोव ंहे ए शोने ए वीश इहा नव ने एक नवना पांचरों ने छोगए चालीश छंश रियें, एवा ( ३१७ ) ंश (१२२ ) ंनवना होय, तथा एक जव ध्यें ावशो ए विन कुहा नव पूर्ण होय ने उपर वली बावन मांनवना सत्तो तेरी छा नव नाग होय. ए जवनी विली बे लाख, तर ह जार, छावरों ने पश्वाशी. ते उपर वली ए विलीना सत्तो तेरी छा एको तेर नाग. तथा एक थोव मांहे छावली एक त्रीश हजार, ए ो ने बिशेश उपर वली एक जवना पांचरो जेगए चालीश नाग करी यें, तेवा एशेंने बे नाग छावे. ॥४१॥ हवे उत्तर प्रकृति । श्रियीने उत्क हिथति बंधना स्वामि हे हे.

अविरय सम्मो तिञ्चं, आहार इगा मरा अपमत्तो॥ मिचा दिहीबंधइ, जिह हिइ सेस पयडीएं॥ ४२॥

थे—( अविरयसम्मोति के के के कि विरित्त सम्यक्टि ष्य पूर्वे मिथ्याल प्र खयें नरकायु बांध्युं ने जेणे एवो म ष्य क्रायोपशमिक समक्त जहीने, तेणे करी तीर्थंकरनामकर्म बांधी पन्नी ते नरकगितमां हे जातो सम्यक्त वमतो ते सम्य क्लवमताने ने हे ले समयें जिननामनी उत्कृष्ट स्थिति बांधे जे नणी ए जिननाम ना वंधक मांहे एहिज तिसं हि एपणुं ने ति सं शें उत्कृष्ट स्थितिबंध थाय ने तथा ( आहारङगामराच ,पमनो के के ) आहारकि ने मरा एट ले देवा युं, ए त्रण प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थितिबंधनो खामी, अप्रमन्त साधु जाणवो जे नणी आहारकश्रीर तथा हि कि विशेषनो खामी, अप्रमन्त साधु जाणवो जे नणी आहारकश्रीर तथा हि का विशेषनो खामी, अप्रमन्त साधु जाणवो जे नणी आहारकश्रीर तथा हि का अति संहि ह ने तथा देवताना हिनो उत्कृष्ट स्थितवंध प्रमन्तगुणगणने चरम वंधे बांधे एना वंधकमांहे एहिज अति संहि ह ने तथा देवताना हिनो उत्कृष्ट स्थितवंध खामी अप्रमन्तगुणस्थानक वर्षिताधु जाणवो पण एट हुं विशेष जे प्रम् च गुणस्थानके आयुवंध आरंगीने प्रमन्ते चढतो साधु बांधे, आयुवंध स्थानकमांहे एहिज अतिविद्युद्रयानक ने केमके नायुनोवंध उत्कृष्टि दियें करी होयने ए चार प्रकृतिथी (सेसपयहीणं के के ) शेष थाकती जे एकशो ने शोल प्रकृतिथी (सेसपयहीणं के के ) शेष थाकती जे एकशो ने शोल प्रकृति

ति तेनो (जिन्निहि के ०) उत् ष्ट स्थितिबंधनो स्वा। (मि ।दिहीबंधइ के ०) िष्याद !। जीव जाणवो एटले संज्ञी पंचेंडिय सर्व पर्याहियें करी पर्याप्तो हिच्या हि जीव बांधे जे नए। ए एकशोने शोल प्रकृति ध्यें नुष्यायु अने तिर्यगायु ए बे आयु विना शेष ए शोने चौद प्रकृति ं उत्क स्थितिबंध उत्क संेश प परिणामे याय तेनणी मिय्यालयी अधि ोइ अन्य सं श स्थान नथी. ं हीं । पण असंख्याता अध्यवसाय स्थान है, पण तेमध्यें स्वस्व बंध प्रायोग्य सं शस्थान खेवा तथा ते । पण मनुष्यायुतो वि दियें उत स्थिति बंधाय अ ने तेना बंध ंहे अतिवि दियें अविरति सम्यक्टि देवता होय, एट से स म्यक्रुहृष्टी देवता तिवि दियें ष्यगतिनो बंधक होय, पण ते देवता त्रएय पत्योप । न बांधे के के देव तथा नारकी दिथी आवेला जीव संख्याता व षी वाला नुष्य, तिर्थेच थाय पण असंख्याता वषीयुवाला नुष्य तिर्थेच न थाय तथा मिय्यात्व एगएानी अपेक्सयें साखादन वि ६ हे, केम के जे जीवें सा दिन गुणवाणुं स्परंपुं ते निय । नव्य होय ने अर्दपुजलपरावर्त दि मोक्स जाय तथापि सम्यक्लव ता साखादन होय, तेथी संि छ जाएवो तेथी तिहां म ष्या अने तियैचायुनो बंध संब्लि परिणामें जाणवुं ॥ इति स यार्थः ॥ ध ३॥ ए गुणस्थानकें स्वामित्व हीने, वे जीवनेहें हे हे.

विगल सुहुमा ग तिगं, तिरिमणुयासुर वि वि निरयङ्गं॥ एगिदि धावरा यव, आईसाणा सुरु सं॥ ४३॥

थ-(विगलसु के०) वि ल जाति तथा सू , अपयीप्ता अने सा धारण, ए सू त्रिक ता ( । गितिंगं के०) नरकार्य, तिर्थेचायु अने नुष्यायु, ए त्रण त्रि नी नव प्र ति तथा ( र के०) देवि एट ले देवगतिने देवानु पू वि तथा (वि वि के०) वैत्रि यि । (निरयष्टगं के०) नरकि एट ले न रकाति ने नर । नुपूर्वी एवं पंदर प्रकृति ं उत्कृष्ट स्थित वंधनास्वामी (तिरि मणुया के०) पूर्व कोडी ध्यवां आयुष्यवाला मिध्यादृष्टि संज्ञीआं गर्भज मनुष्य तथा तिर्थच पंचें हिय होय जे नणी ए पंदर मांहेथी मनुष्यायु तिर्थचायुविना शेष तर प्रकृतिनो बंध नव प्र यें देवता नारकीने नथी तथा विकलित्र अने सू स्मित्रकनो बंध, एकें हिय वें हियादिकने होय पण तेने उत्कृष्ट स्थितियें न बंधाय तथा मनुष्या अने तिर्थचायु पण देवता तथा नारकी वांधेने तो पण ते त्रण

पल्योपमनी उत्कृष्टीस्थितवालो आयु न बांधे के के देवता तथा नारकी चवी ने पूर्वकोटी वर्षथी अधि आयुष्यवाला नुष्य तथा तिर्यंच दि नवप्रत्ययें अश्र वतरे नहीं तेमाटें पूर्व ोटी आयुना धणीज नुष्य तथा तिर्यंच पूर्व कोटीना त्रीजा नागना प्रथम समयें परनवायु पूर्व ोटी त्रिनागाधिक त्रएय पल्योपमनुं उत्कृष्ट स्थितिक मनुष्यायु तथा तिर्यचायु बांधें,तेथी ते मिथ्यात्वीज ए बे स्थितिना उत्कृष्ट बंधाधिकारी जाणवा अने सास्वादन गुणनाणे पडतां नणी तेवी वि किन हो य,तेथी ते सास्वादनी पण एनो बंधाधिकारी नथी आई।आं स्वस्ववंधयोग सं श खेवों

(एगिंदियावरायव के०) एकेंडियजाति, स्थावरना , आतपनाम, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, वीश कोडाकोडी सागरोपमरूप तेना बंधाधिकारी (आईसाणासुरु ोसं के०) नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ए त्रण तथा सौधमें अ ने ईशान, ए आदिना बे देवलोक एटला स्थानकना मिण्यात्वी देवता एषवी प्र अने वनस्पति ए त्रण मांदे शुनस्थानमध्यें अवतरे, तेथी तेने तत्प्रायोग्य ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध बंधाय अने ष्य तथा तिर्यंच ए वे तो संक्षेत्रों करी अढार कोडाकोडीनी स्थित बांधें, तेथी ए एना अधिकारीन कह्या अने सनत मा रादिक देवलोकना उपरलावेमानिक देवताने एथवी। यादि मध्यें अवतरवुं नथी तथी ते ए त्रण प्रकृति न बांधे तथा एकेंडिय अने विकलेंडिय, ए त्रण प्रकृति बांधे खरा, परं तेउने उत्कृत स्थितिबंध नथी अने संख्यातावषीयुवाला मुख्य तथा तिर्यंच ए त्रण प्रकृति न बांधें जे नणी तेने देवता विना त्य स्थानकें अवतर नथी। ॥ इति स यार्थः ॥ ध३॥

तिरि रल इगु ोञ्जं, बिव सुर निरय सेस च ग इञ्जा ॥ अथ जघन्य स्थितिबंध स्वामीनाह ॥ आहा र जिणमपुद्यो, नियद्दि संजलण पुरिसलहू ॥ ४४॥

अर्थ-(तिरि उरल इगुक्तों अं के ) तिर्यंचगित, तिर्यंचा पूर्वी तथा औदारिक श्रिश्च अने श्रीदारिक श्रिश्म गित्र प्रचित्र प्रचित्र प्रचित्र प्रचित्र प्रचेत्र प्र

क्षि होय तो नरक प्रायोग्य प्रकृतिनो बंध करे अने देवता नार शने तो नर ।
योग्य बांधवुंज नथी, ते माटें ते अति संक्षिष्टें ए उ प्रकृतिनो उत्क स्थितिबंध ।
रे, ते मध्यें पण औदारि अंगोपांग अने ठेवछुं संघयण, ए व प्रकृतिनो उत्क ।
स्थितिबंध चोथा, पांचमा, उठा, सातमा अने आउमा देवलोकना देवताने होय पण नीचला देवताने न होय जे नणी नीचेना देवता तो अतिसंक्षेशें एकेंड्य प्रायोग्य बांधे ठे तथी तेने ए बे प्रकृतिनो अढार शेडाकोडी सागरोपमनो बंध होय, एम चोवीश प्रकृतिना उत्कृष्टी स्थितिबंध खामी कह्या तथा आहारकिक ने देवा युनो उत्कृष्ट स्थितबंधसामी अप्रमन्त साधु ह्यो अने जिननाम कमनो उत्कृष्टस्थि तिबंध खामी नरकानिमुख सम्यक्त वमतो म ध्य कह्यो ए अठावीश प्रकृति थइ.

तेथी (सेसचग्रञ्जा केण) शेष झानावरणीय पांच, दर्शनावरणीयनी नव, अंतरायनी पांच, शोझ कषाय. एवं पांत्रीश तथा नय, ग्रुप्सा, वर्णच ह , ते जस, कामेण, अग्रुरुलघु, उपघात, निर्माण, मिथ्याल. ए सुडतालीश प्रकृति ध्रुवबं धिनी तथा अशाता, रित, शोक, नपुंसकवेद, पंचेंड्यजाति, ढुंमसंस्थान, पराघा त, ज्ञ्लास, कुखगित, त्रसचतुष्क, अथिरढ, नीचैगींत्र, ए वीश अध्रुवबंधिनी प्रकृति, एवं शडशव प्रकृतिना उत्कृत स्थितवंध स्वामी अतिशं शें वर्नता चतुर्ग तिक मिथ्याली जीव जाणवा. तथा शाता, द्वास्य, रित, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नरक दिक. आदिनां पांच संस्थान, तथा आद्य संघयणपंचक, श्रुनखगित, स्थिरषट् क, उगांत्र, ए प शि प्रकृति ध्रुवबंधिनी तेना उत्कृष्ट स्थितबंधक स्वस्वबंध प्रायोग्य अति सं शें वर्नता एवा चा गीति मिथ्याली जीव होयः ए रीतें बाणुं प्रकृतिना उत्कृष्ट स्थितबंध स्वामी मिथ्याली जीव कह्याः

हवे सर्व प्रकृतिना जवन्य स्थितिबंध स्वामी कहे हो. ( आहार के॰ ) आहार कर श्रीर, अने आहारक अंगोपांग, ए आहारकिकनी जवन्यस्थित अंतःको डाकोडी अथवा अंतर मुहूर्न प्रमाण ने ( जिए के॰) जिननाम कमेनी जवन्य स्थित अंतःकोटीकोटी अथवा दश सह वर्ष प्रमाण तेना बंधक ऋपकश्रेणी यें चढतां ( मणुद्दो के॰ ) अपूर्वकरण नामा आवमुं ग्रणवाणुं तेना हिंचा नागने चरमवंधें वर्ततां एवा मनुष्य होय, जे नणी ए त्रण प्रकृतिना वंधकमांहे एहि ज अतिविग्रद्धता हे एथी अधिक विग्रद्ध बीजे स्थानकें नथी अने लघु स्थिति पण त्रण आगु विना शेप एकशो सत्तर प्रकृतिनी मननी विग्रद्धियेंज होय हो.

(नियहिसंजलणपुरिसलहू के०) अनिवृत्ति करणनामा नवमा गुणस्थानकें

क्ष्प श्रेणीयें चढतां ए खापणा बंध व्यवहिदने चर स यें पुरुषवेदनो । व वर्षनो, संज्वलना होधनो ब मासनो, संज्वलनमाननो एक । सनो, संज्वलन मायानो छिद्धमासनो, संज्वलन लोजनो छंतर मुदूर्चनो, जधन्य स्थितबंध व इ में पहेला, बीजा, त्रीजा, चोथा ने पांच । नागने प्रांतें बांधे. ए पांच प्र तिना बंधस्थानकमांहे एहिज छित विद्युद्धि हो जो पण उपश श्रेणीयें नवमा एस्था नकें पांचमा नागने प्रांतें स्वस्वबंध व्यवहेद संज्ञवे तथाि ते क्ष्पकथी छित विद्युद्ध निर्मा जागने प्रांतें स्वस्वबंध व्यवहेद संज्ञवे तथाि ते क्ष्पकथी छित विद्यु

साय जसु । वरणा, विग्धं सुहुमो वि वि असित्र ॥ सत्रीवि आ बायर, पे गिंदी सेसाणं ॥ ४५ ॥

अर्थ-(साय के०) शातावेदनीय, (जसु विरणा के०) यशःकीर्त्तेनाम, उ है गींत्र, तथा विरण एटले पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, एवं बार तथा (विर्णं के०) पांच अंतराय, ए सत्तर प्रकृतिनो ज्ञान्यस्थितिबंध स्वामी (सुद्धुमो के०) सूक्ष्मसंपरायनामा दशमा एस्थानकना चर समयवर्त्ति जीव होय जे नणी ए सत्तर प्रकृतिना बंधमांहे एहिज वि कि वे जो पण शातावेदनीयनो बंध एथी वि शुक् बारमे गुणवाणे वे पण ते एक सामायिक योगप्रत्ययी हिथ्यतिबंधवे पण क षाय प्रत्ययी हिथ्यतिबंध नथी, तथी ते विवद्यो नथी. ए प िश प्रकृति थ्रा

(विज्वित के०) वैत्रिय शरीर, वैत्रिय अंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, नर कगित अने नरका पूर्वी, ए वैत्रियषट्क, ए त प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध सा मी (असित्र के०) असंज्ञी पंचेंड्य तिर्यंच होय. केम के एकेंड्य अने विक लेंड्यिन तो देव तथा नरकगित मांहे अवतर वं नथी, तेथी तेने तत्प्रायोग्य ए त प्रकृतिनो बंध न होय अने सि आने तो जत्कष्ट स्थितिबंध वीरा कोडाकोडी सागरोपमनो होय तेमज स शिआने ए त प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध पण अंतः कोडाकोडी सागरोपमनो होय, तेथी ते अहींआं न लीधा, केम के एत प्रकृति,नाम कमेनी ते. ते नणी मिण्याल साथें नाग देतां सागरोपमना सात आ ब नाग आवे, तेनो हजार गुणो असि आ पंचेंड्यिनो बंध ते नणी वैत्रियिहक, नरक दिक, ए चार प्रकृतिनो वंध तो सात इआ ब हजार नागना बरों ने प शि साग रोपम अने जपर सात इआ पांच नाग जाणवा तथा देविहकना सात इआ हजा र नागना एकशो वेंतालीश सागरोपम जपर सात इआ त नाग ते वली पह्योपम

ने असंख्यातमे नागें दीन एटलो ए प्रकृतिनो असन्निआ पंचेंडिय तिर्यंच सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने जघन्य स्थितिबंध स्वामीलपणुं होय.

(स | विके०) संज्ञी पंचें िय गर्नेज, तिर्यंच छने मनुष्यने तथा छिपश द्यकी छसंज्ञी पण लेवा ते माटें संज्ञी यवा छसंज्ञी ए (छाउ के०) चा रे प्रकारनुं जबन्य स्थितिक छायु बांधें ते मध्यें एक मनुष्यायु, बीजुं तिर्यंचायु, ए वे छायुना जधन्य स्थितिवंध स्वा शि एकें िइयादि थी मांमीने पंचें िइय पर्यंत सर्व जीव होय छने चारे छायुना घन्य स्थितिबंध स्वामी सि छा छने छ सि छा ए वे होय एवं पांत्रीश प्रकृति थई

(सेसाणं के०) तेथी शेष रही जे निर्णंच , षाय बार, स्त्रीवेद, नपुं स वेद, हास्यषट्क, मिथ्याल मोहनीय, मनुष्यिहिक, तिर्धेचिहिक, जाति पंच क, श्रौदारिकिहक, तैजस, कामेण, श्रातप, ज्योत, जपवात, श्रशातावेदनीय, श्र र लघु, निर्माण, संस्थानढ , संघयणढ , वर्णच ष्क, त्रसनवक, स्थावरद्श , परावात, ज्रुह्मस,खगतिहिक,नीचैगीं , ए प ।शी प्रकृतिनो जवन्य स्थितिबंध स्वामी (बायरप गिदीज के०) लिब्धपर्याप्तो बादर एकेंड्यपर्याप्तो स्वस्त्र प्रायोग्य वि हिस्थानकें वर्नतो मिथ्याली जीव होय, जे नणी दशमा तथा नवमा गुणस्थान वर्षित साधु पण जवन्यवंधनो श्रिधकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो वंध नथी तेथी ते बीजी प्रकृतिना श्रिकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो वंध नथी तेथी ते बीजी प्रकृतिना श्रीकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो श्रीकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो श्रीकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो श्रीकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो श्रीकारी होयछे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो श्रीकारी होयछे साटें बाधि श्रीका वादर पर्या प्रकृतिनो ज्ञान्य वंध स्वामील जाणवो ए तथाविध विद्युहि माटें बाधि श्रीका स्वर्णके होय तो तेवी विद्युहि श्रीकी बांधे ते माटें ते न लेवा. एथी बीजा स वैवंध श्रिक हो एम ज्ञान्यस्थितवंध स्वामी कह्या॥ इति समुज्ज्यार्थः॥ ४ ए॥ हवें ज्ञाहि स्थित वंधने विषेज चार जांगा स्थितवंधना कहे हो.

कोस जह सीयर, नंगासाइ अणाइ धुव अधुवा ॥ चन्हा सग अजहना, सेसितगे आन चन्सु डहा ॥ ४६॥

श्रधे-( च ोसजहस्वियरनंगा के०) एक जत्रुष्ट स्थितबंध बीजो जघन्यस्थि तिबंध, ए वे थकी इतर एटले वीजा विरोधिनांगा बे कहे हे ए अनुत्रुष्ट बीजो अजघन्य स्थितवंध, एवं चार नंग थया। ए चार मांहें सर्व स्थितबंध संयद्या ति हां जे सर्व प्रकृतिनो आपआपणा स्थितबंधमांहे अधिक स्थितबंध ते जत्रु

हियतिबंध जाणवो. जे ज्ञानावरणीय कमेनो त्री ोडाकोडी सागरोपमनो संपू र्ण बंध, ते उत्क हियतिबंध द्वीयें अने ते थकी ए समय द्वीन, बे समय द्वीन करतां करतां यावत् अंतर मुदूर्त हियतिवंगें जेटला हियतिबंधनां स्थानक बंधा य, ते सर्व अनुत्कृष्ट हियतिबंधनां स्थान जाणवां. ते स्थानक असंख्यातां होय एटले एक उत्कृष्ट थकी जि ते सर्व त्कृष्ट हियतिबंधनां स्थान संग्रां तथा जे हियतिबंध स्थान कथी उंडुं बीं होइ हियतिबंधं स्थान न द्वीय ते जघन्य हियतिबंध स्थान कथी उंडुं बीं होइ हियतिबंधं स्थान न द्वीय ते जघन्य हियतिबंध स्थानक जाण अने तेथी समयाधि स याधि स्थानक लेतां यावत् उत्कृष्ट हियति पर्यंत जे असंख्यातां स्थान थायः ते सर्व अजवन्य हियतिबंधनां स्थानक जा एवां. एम ए बे बंधमांदे पण सर्व हियति बंधनां स्थान संग्रह्मां, ए रीतें जेवा रें उत्कृष्ट हियति जिल्ल विवक्षीयें, तेवारें तेथी बीजां सर्व अजुत्कृष्ट बंध स्थानक होय ने जेवारें जघन्य स्थितिबंध एक जि लेखवीयें तेवारें तेथी बीजा सर्व अज्ञचन्य हियतिबंधनां स्थान होय. ए रीतें ए चार बंध ा.

हवे तिहां वली सादि अनादि प्रकारें चार नांगा हे हे जे बंधव्यवहेद य या पढ़ी फरी बंधाय, ते प्रथ (साइ के 0) सादिबंध अने जे बंधना प्रवाहनी आदि न पामीयें, ते बीजो (अणाइ के 0) अनादि बंध अने जे बंधनो प्रवाह केवारें पण विहेद नहीं पामरों, ते त्रीजो (ध्रुव के 0) ध्रुवबंध एट छे अनंत ए अन व्यनी अपेक्सयें जाणवो तथा जे प्रकृतिनो बंध प्रवाह विहेद पामरो ते (अध्र वा के 0) अध्रुव एट छे सांत ते नव्यनी पेक्सयें जाणवो एम ए चार नांगा ते जधन्य अजधन्यादिक स्थितिबंधने विषे विचारे हे.

(च इहासग जह । के०) त्यां एक आयु विना बीजा सात मेना अजध नय स्थितिबंध चार नांगे होय, ते कहे हे. एक मोहनीय कमें जधन्य नवमा ग्रुणवाणानें चरम समयें होय, तथा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, नाम कमें, गोत्रकमें, अने अंतराय, ए ह कमेनो जधन्यबंध दशमा ग्रुणवाणाने हेह बे समयें होय, माटें ते स्थानक जे जीवें जधुं नथी तेने सघला अजधन्य स्थितबंध जाणवा जे नणी तेणे जधन्य स्थितबंध जहां नथी तेथी तेने अजधन्य अनादि नां गो पहेलो जाणवो. अने जे जीवें उपशम श्रेणीयें ते स्थानकें जधन्य स्थितबंध करी अथवा अवंधक थइने पढ़ी फरी अजधन्य स्थितवंध करे ते सादि नामें बीजो नांगो जाणवो अने जे नव्य हरों ते वहय मोहें जारो, तेवारें ते क्ष्पकश्रेणीयें

जधन्य बंध रहो, तिहां अजधन्य स्थितिबंध सांतपणुं थहो ते सांत नामा त्री जो नांगो जाणवो तथा अनव्य केवारें पण श्रेणी करहो नहीं ते माटें ते जधन्य स्थितिबंध करहोज नहीं तेथी तेने अजधन्य स्थितिबंध अनंत नामे चोथे नांगे जाणवो ए सात कमेनो अजधन्य स्थितिबंध, चार नेहें कह्यो.

तथा ए सात कर्मना जघन्यबंधयी (सेसतिगे के ) शेष रह्या जे जघन्य. उत्क अने नुत्क ए त्रण बंध तथा ( । उच उसु के ० ) । युः मेना चार बंध तिहां सादि अने सांत, ए ( हा के०) बे बे नांगा होय, ते कहे हे. ते म ध्यें सात मेनो उत्कृष्ट बंध तो ति संब्रि रिध्यादृष्टि संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्तानें होय, ते उत्क बंध सादि जाएवो तथा ते उत बंध तो बे समय लगें होय अने त्रीजे समयें ते उत्क बंधयकी स यादि हीन अनुत्क बंध करे ते नणी उत्कष्ट बंध सांत जाणवो ने वली अनुत्कष्टबंधयकी समयादिक दीन बंध करतां अनुत्क बंधनी सादि अने वली पण अनुत्क बंध रे तथा अबंधक होय तेवारें अनु त्रुष्टबंधनुं सांतप ं तथा जघन्यबंध एक समयमात्रनो ते नवमा, दशमा गुणवाणाने प्रांत समयें होय, ते एक समय मा जणी सादि सांत जाणवो एम सात कमेना ण स्थितिबंधें सादि छने सांत ए बे नांगा कह्या तथा आयुःकर्मनव मध्यें एकवार वंधाय, तेथी तेना जल्फ , ख्र ल्रुष्ट, जघन्य खने खजघन्य ए चारे स्थितिबंध सा दि अने सांत, ए बे नांगे होय. के के ायु बांधवा मांमे, तेवारें सादि अने अं तर मूहूर्ने बांधी रह्या पढ़ी सांत ए बे नांगा होय ॥ इति समुचयार्थः ॥ ४६ ॥ एम मूल प्रकतिना चार स्थितिबंधना सादि, बीजो अनादि, सांत अने अनं त ए चार नांगा विचारीने हवे ते चार नांगा उत्तर प्रकृतिने विषे विचारियें वैथें.

> च ने छजहनो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं॥ सेस तिगिसाइ छधुवो, तह च हा सेस पयडीणं॥ ४५॥

श्रथि— (संजलण के॰) संज्वलनो क्रोध, संज्वलनो मान, संज्वलनी माया श्रमे संज्वलनो लोन ए चार कषायनो जघन्य स्थितिवंध, बे मास, एक मास, श्रम्भित श्रमे श्रंतरमुदूर्त्तरूप श्रमुक्तमें जाणवो. ते नवमा गुणवाणे स्व स्ववंध विश्वेदने प्रथम समयें होय, तथा (श्रावरणनवगविग्धाणं के॰) पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, पांच श्रंतराय, ए चौद प्रकृतिनो जघन्यस्थितिवंध, श्रंतरमुदूर्त्त मान दशमा गुणवाणाने चरमवंधें होय ते विना वीजा सर्व स्थितिवंध श्रजधन्य जा एवा ए श्रहार प्रकृतिनो (चन्नेनेश्रजह । के०) श्रजधन्य स्थितिबंध चार नेरें होय, ते कहे हे. के जे जीवें नव ं श्रने दश ं ग्रणनाणुं जहां नथी, तो तेणे ज धन्य स्थितिबंध नथी क ो. तेने श्रजधन्य बंध श्रनादि जाणवो ए प्रथम नंग तथा जेणे जधन्यबंध करी वली श्रेणीयी पहतां समयाधि स्थितिबंध जधन्य करे, तिहां सादि. ए बीजो नंग जाणवो. तथा जे नव्य हशे ते श्रवश्यश्रेणी क रशे, तेवारें तेने श्रजधन्यस्थितिबंधनुं सांत पणुं थशे ए त्रीजो नंग जाणवो श्रने श्र नव्य जीव ए श्रहार प्रकृतिनो जधन्यस्थितिबंध केवारें पण नहीं करशे, तेथी ते ने ए श्रहार प्रकृतिनो श्रजधन्य स्थितिबंध श्रनंत, ए चोथो नंग जाणवो एम ए श्रहार प्रकृतिनो श्रजधन्य स्थितिबंध चार नांगे होय.

(सेसितिंग केंं) ए अढार प्रकतिना शेष उत्कृष्ट, नुत्क अने जघन्य ए त्रण स्थितिबंध (साइअध्रवो कें) सादि अने अध्रव एटले सांत ए वे नांगे होया जे नणी ए अढार प्रकृतिमां चार प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितबंध चालीश कोडाकोडी सागरोपमनो वे अने चौद प्रकृतिनो त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट बंधवे. ए सर्व संक्षिष्ट पंचेंड्य पर्याप्तो जीव बांधे. ए ए समय बे समयलगें बांधे वलतो समयादिक हीन स्थिति बांधे, ते अनुत्कृष्ट जाणवो वली अ त्कृष्ट्यी उत्कृष्ट करे तथी ए वे बंधें सादि अने सांत, ए वे नांगा जाणवा तथा जघन्यबंध पण एनो नवमे अने दशमे, गुणवाणे एक समय मात्र होय ते नणी सादि सांत होय.

(तह के ०) तेमज (सेसपयडीणं के ०) ए छाढार प्रकृतियकी शेष रही जे एक शो ने वे प्रकृति तेना (च उहा के ०) जधन्यादिक चार प्रकारना स्थितवंध तेपण सादि छाने सांत, ए वे नांगे चारे वंध होय तेमध्यें निडापंचक, प्रथम कषाय वा र, मिण्यात्व, नय, छुगुप्सा, तैजस, कामण, वर्णचतुष्क, छागुरुलघु, उपधात, निर्माण, ए उगणत्रीश प्रकृतिनो जधन्यस्थितवंध, स्वप्रायोग्यवि दियें करी ए केंड्य पर्याप्तानें होय. ते वली कथंचित् हीनाध्यवसायें समयादिक छिधक छाज धन्य वंध करे, वली विद्युद्धिं जधन्य वंध करे तथी जधन्य छाने छाजधन्यपणे वेहु स्वस्व प्रकृतिना स्थितवंध सादि छाने सांत पणे जाणवा.

तथा एहिज उंगणत्रीश प्रकतिना चक्रत्छ बंध संझी पंचेंड्यपयीमा मिष्यात्वीने संक्षिप्ट परिणामें होय ते वे समय जगें होय तेवार पढ़ी अध्यवसाय परावर्तियें स मयादिक हीन अनुत्कृष्ठ वंध करे, एम जन्कृष्ठ अने अनुत्कृष्ठ वंध संक्षेश तथा विद्यक्ति। परावार्तियें होय तेथी सादि अने सांत ए बे नांगा होयर

अने ए उंगणत्रीश प्रकृतियी शेष रही जे तहों तेर अधुवबंधिनी प्रकृति तेनों बंध केवारेंक होय, अने केवारेंक न होय तेथी तेना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य अने अजघन्य ए चारे स्थितबंधें सादि अने सांत, ए बे नांगा होय. केम के जे वारें बंध होय तेवारें सादि अने जेवारें वंध न होय तेवारें सांत, एम बे नांगा होय एम उत्तर प्रकृतिना चार स्थितबंधने विषे सादि, अनाद्यादि नांगा विचास्या ॥४ ९॥ हवे ग्रुणवाणा आश्रयीने उत्कृतिया जघन्य स्थितबंध विचारे हो.

साणाइ अपुवंतो, अयरंतो कोडि कोडिने निह्गो।। बंधो नहु हीणो नय, मिन्ने निवयर सिन्निम ॥ ४०॥

थे- थ नि 'थिने अंतः ोटा ोटी सागरोपमधी अधिको स्थितिबंध न होय, ते हे हे. ( साणाइअपुर्वतो के० ) साखादन गुणवाणाची मांमीने अपू वे रणनामा आव । णवाणा सुधी ( यरंतोकोडिकोडिन के०) अंतःकोडा ोडी सागरोपम प्रमाण स्थितिबंध संक्षी पंचेंडिय पर्याप्ताने होय पण तेथकी (निह्मोबंधो के०) अधि बंध न होय ते ज अंतःकोडाकोडी सागरोपमधी हीन एट खे डी बंध पण (न के ) न होय अहीं आं कोइ पूर्व जे सास्वादनथी ातमा णताणा सुधी जो बंधनुं हीनाधिकपणुं नथी, तो जिहां स्थितिबंध ं अल्प त्व कहेशे, तिहां साधुनी उत्क स्थितिबंधथी देशविरतिनो जवन्य स्थितिबंध संख्यात गुणो होय ते यकी देश विरितनो जत्कष्ट स्थितिवं ध संख्यात गुणो होय ते थकी अविरति सम्यक्दृष्टि पर्याप्ता अपर्याप्ताना जघ न्य उत्कष्ट स्थितिबंध असंख्यात गुणा होय. तो ए अल्प बहुत्वपणु हीनाधि कने अनावें केम घटे ? अहींआं रु उत्तर कहे हे के, जेम अंतर मुहूर्त नव स मयथी मांमीने एक समय ए मुहूर्त पर्यंत होय है, तेना असंख्याता नेद याय तेम साधुना जत्कृष्ट स्थितिबंधथी लड्ने अपर्याप्त संज्ञी पंचेंड्यिना जत्कृष्ट स्यितिबंध पर्येत समयाधिक समयाधि करतां वचलां असंख्यातां स्थितिवंध स्थानक जे होय, ते सर्वे अंतःकोडाकोडी प्रमाण स्थितिबंध कहीयें एने अंतः कोडाकोडी सागर एवी संज्ञा कहीयें. एम असंख्याता चेद अंतःकोडाकोडीमां होय, तेथी संख्यातगुणा तथा संख्यातगुणा कहेतां थकां कांइ विघटे नहीं. एम ममरुक मणिन्यायें करी हो. (हिणोनयमि है के । तेमज हीनो बंध एटले अंतःकोडाकोडी सागरोपमधी उंडो वंध मिण्यालीनें पण न होय. तथा सिदांतने मतें जेएो यंथिनेद कीधो होय अने ते वली सम्यक्ल व

मीने मिच्चात्वें जाय तोपण छंतः गेडाकोडी सागरोपमधी स्थितवंध वोखे नहीं तथी तेने छपूर्व वंधक कहीचें छने कमें अथनें तें ग्रंथिनेंद का पढ़ी पण मिच्यात्वें सीत्तेर कोडाकोडी सागरोप नो उत्क स्थितवंध करे पण एट दुं विशेष जे ते स्थितवंध, तीवरसें न बांधें ए (निवयरसिनें मिके०) नव्य संझी पंचें दिय नी छपेक्सायें खेतुं. बीजुं तो एकें दियने मिच्यात्वगुणठाणे मिच्यात्वमोहनीय ए क सागरोपम, बेंदियने प शि सागरोप, तेंदियने प शि सागरोपम, चौरिंदि यने शो सागरोपम, छने छसंझीया पंचेंदियने हजार सागरोपमनी स्थित हो, एम साखादने पण छपयीप्ता एकेंदियादि नो उत् ष्टियतिबंध सरखो खेवो. ए न व्य, छनव्य, सिन् छा पंचेंदियने स्थितबंध हो। ॥ ४ ए ॥

हवे एकेंडियादिकने विषे हीना धिक स्थितिबंध ं ल्प त्व हे हे.

जइ लहु बंधो बायर, प असंख गुण सुहुम प हिगो॥ एसि अप ।ण लहू, सुहुमे अरअप प गुरु॥ ४ए॥

अर्थ-(जंइ के०) (१) यति एट से साधुनो (त बंधो के०) सर्वथकी हीन स्थि तिबंध सूच्यासंपराय नामा दशमे ग्रणवाणे वर्त्तता साधुनो होय, जे नणी झाना वरणादिक व कमेनो विद्युद्धिपणे अंतर हूर्न प्रमाण जघन्य स्थितिबंध चरम समयें होय, तेथी हीणो स्थितिबंध कोइ जीवनें नथी. जो पण आगले ग्रणवा णे एक समयिक बंध हो, तो पण अकषायी नणी तिहां स्थितिबंध विवद्दयो नहीं.

- (१) साधुनो जघन्य स्थितिबंध अंतर मुहूर्त प्रमाण अने बादर पर्याप्ता एकेंडिय नो जघन्य स्थितिबंध, सागरोपमनो सातइ एक नाग पत्योपमने असंख्यातमे नागें होय ते मध्यें तो असंख्याता अंतर हूर्त थाय, तेथी साधुना जघन्य स्थि तिबंधथी (बायरप संखगुण के०) बादर एकेंडिय पर्याप्तानो जघन्य स्थिति बंध पण असंख्यात गुणो जाणवो
- (३) बादर पर्याप्ता एकेंड्यियकी सूक्षा पर्याप्ता एकेंड्यनां योगस्थानक मंद है, तेथी अध्यवसाय स्थानक पण थोडां होय. तेथी स्थित स्थानक पण बादरनी अपेक्तायें थोडां होय तेणे जधन्यस्थिति बादरनी जधन्य स्थितिथकी उत्रुष्टी ई होय तो स्थितिविशेष पण डहा होय आतरुं थोडुं ते नणी बादर पर्याप्ता एकेंड्यना जधन्य स्थितिबंध थकी (सुद्धमप हिगो के०) सुक्षा एकेंड्य पर्याप्ता जधन्य स्थितिबंध थकी (सुद्धमप हिगो के०) सुक्षा एकेंड्य पर्याप्ता जधन्य स्थितिबंध विशेपाधिक कह्या। एट हो कांइक जानेरा जाणवा।

ध (एलिख्रप एएल्रहू के०) तेय है ए बे खपर्याप्तानो लघु एटले जघन्य स्थितंबंध खावी रीतें होय, ते कहे हे सक्का एकेंड्य पर्याप्ताना जघन्य योगधी बादर एकेंड्य अपर्याप्ताना योग स्थान थोडां होय तेथी अध्यवसाय स्थानक तथा स्थितस्थानक पण थोडां होय के के जघन्य खने उत्छ्र स्थितिनी व चालें खांतरुं थोडुं तेथी स् एकेंड्य पर्याप्ताना, जघन्य स्थितंबंधथकी बादर एकेंड्य पर्याप्तानो जघन्य स्थितंबंध विशेषाधिक जाणवो (५) तेथकी स् स्म एकेंड्य अपर्याप्तानो जघन्य स्थितंबंध विशेषाधि होय जे नणी बादर एकेंड्य अपर्याप्तानो स्थितिविशेषथी सक्का अपर्याप्तानी स्थिति विशेष थोडी हे. (६) (स मे र प के०)स् अपर्याप्ताना जघन्य स्थितंबंधथकी उत्छ स्थि तिबंध विशेषाधि होय (७) ते थकी इतर ते बादरअपर्याप्तानो उत्छ स्थि तिबंध विशेषाधि होय (७) ते थकी इतर ते बादरअपर्याप्तानो उत्छ स्थि तिबंध विशेषाधि जाणवो जेनणी बादर पर्याप्तानी जघन्य स्थिति सागरोपमनो सातइउ ए नाग पत्योपमने असंख्यातमा नागें णो होय ते थकी समयाधि क स याधि पत्योपमना असंख्यातमा नागें णो होय ते थकी समयाधि क स याधि पत्योपमना असंख्यातमा नागें हिथति विशेष तेहने गर्भें सक्का अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेहने गर्भें सक्का अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेहने गर्भें बादर अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेसर्व स्था

ते नणी सूक्ष पर्याप्ताना उत्क स्थितिबंधथकी बादर अपर्याप्तानो उत्क स्थि तिबंध विशेषाधिक. (७) तेथकी (प गुरु के ०) सूक्ष पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध वि शेषाधि होय. (७) तेथकी बादर पर्याप्तानो उत्क स्थितिबंध विशेषाधिक. ॥४ए॥

ल ु बिख्य प अप ो, अपिं अर बिख्य गुरु छिहिगो एवं॥ ति च असिन्नसु नवरं, संखगुणा बिख्य छमणप े॥ ५०॥

अर्थ—(१०) बादर एकेंड्य पर्याप्ताने मिच्यात्व मोहनीयनो उत्कृष्ठ स्थिति बंध सागरोपम प्रमाण हे ते थकी (बिख्य प के०) बेंड्य पर्याप्तानो (लहु के०) जधन्य स्थितिबंध पुरुष वेदादिकनो पण सातइ्या पञ्चीश नाग एटले त्रण साग रोपम उपर सातइ्या चार नाग पत्थोपमने असंख्यातमे नागें णा होय ते माटें संख्यात णो जाणवो. जे नणी एकथी त्रिगुणो जाजेरो थयो.

(११) बेंड्य पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध थकी (अप ो के०) बेंड्य अपयीप्ता नो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होया जे नणी बेंड्य पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध विशेष पढ्योपमना संख्यातनागना समय जेटला असंख्याता स्थिति विशेष तेने ग<sup>\*</sup> बेंडि्य पर्या ाना स्थिति विशेष ो हो तेेेेेे जघ स्थिति उत्ह स्थितिनो बंध आंतरं ो होय, एटले गीआर स्थान थयां.

११ ( छपि बिछगुरुछि होगे के० ) ते घ ही बेंडिय छपिया नो उत स्थि तिबंध विशेषाधिक होया १३ ते घकी ( इयर के० ) इतर एट छे । । जा जे बेंडिय पर्याप्ता जीव हो तेनो उत्क स्थितिबंध विशेषाधि एट छे । इएक जाजेरुं होया

१४ (एवंतिच उन्नसि के०) ए तेंडिय, ौिरंडिय ने असंज्ञी पंचेंडिय ने विषे पण चार चार बोल हेवा परं ए ं (नवरं के०) एट छुं विशेष हे जे (बिन्न के०) बेंडिय पर्याप्ताने विषे ने ( एप के०) संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्ताने विषे पहेंछे बोलें (संख्युणो के०) ं त्रियुणो बंध हेवो. एट ले बेंडिय पर्या नो उत्स्व स्थित बंध पं िश सागरोप प्र एए हे ते की तेंडिय पर्या प्रानो जवन्य स्थित बंध विशेषाधि होय जे जणी बेंडेडिय छी ब एो बंध तेंडियने हे अने जो त्रियुणो होय तो संख्यात एो हीयें. परं तेथी हीन हे, माटें विशेषाधिक कहां अहीं ं जो पण तेंडियने पुरुष वेदादि नो जवन्य स्थित बंध सागरोप मना सात इत्या प श्वा जाग पर योप ने सं तिमे नागें एए हे ते बंध बेंडियना मिण्याल मोहनीयना बंध छी हीन पण होय, तथा पि ते हीं आं विवस्यो नहीं परं अहीं ं तो सस्य प्रकृतिनी ऐक्यों उत्कृ ी तथा जवन्य स्थित होवी एट ले प्रत्येक एकेकी प्रकृतिनी स्थित ं एक बी । जीवोना बंधने विषे उत्कृ श तथा धन्य

स्थित सेवी तेणे करीने स्थित बंधं हपब त्व एण बुं एवं चौद स्थानक क ं. १५ तेंड्य पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध थकी तेंड्य पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबं ध विशेषाधिक होय जे जणी तेंड्यिना जघन्य जत्क स्थिति विशेषने गर्ण पर्या

ना सर्व स्थितिविशेष हो, १६ तेथ ही तेंडिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिवंध विशेषाधिक. १७ तेथकी वली तेंडिय पर्याप्तानो उत्कृष्टस्थितिवंध विशेषाधिक हो। १० ते थकी चौरिंडिय पर्याप्तानो घन्यवंध विशेषाधिक बमणा हो। ते

नणी. १ए ते थकी चौरिंड्य पर्याप्तानो घन्य स्थितबंध ांइएक धिक है। १० ते थकी चौरिंड्य अपर्याप्तानो उत बंध विशेषाधिक. ११ ते थकी चौरिंड्य पर्याप्तानो उत्रुष्ट स्थितबंध विशेषाधिक. हीं विशेषाधिकने सानकें कोई एक स्थि संख्यात नागादिक लेवा. कोई एक स्थिलें असंख्याता नागाधि लेवा. ११ तेथकी चौरिड्य पर्याप्तानो उत्रुष्ट स्थितबंध एकशो सागरोपमनो विशेषाधिक है.ते थकी (असिन के०) असिन आ पंचेंड्य पर्याप्तानो जघन्य स्थितबंध संख्यात णो

जे नणी चौरिंड्यियी एनो दश गुणो बंध ो हे ते हिं. १३ ते य ी असि है। पंचेंड्य पर्या नो जघन्य स्थितिबंध, विशेषाधिक एट छे संख्यात नाग अधि हे जे नणी हजार सागरोप नी स्थितिना पण संख्याता पत्योप होय, ते पण वली पत्योप ने संख्यातमे नागें णो जघन्य बंध हे. तो पण संख्या र मे नागें अधि होय. १४ ते य ी वली असिन् आ अपयीप्तानो उत् स्थि तिबंध विशेषाधि हे एट छे संख्यात नागाधिक हे. १५ ते यकी असि आ पंचें डिय पर्याप्तानो उत्क स्थितिबंध संख्यात नागाधि होय॥ इति समु यार्थः॥ ५०॥

तो जइ जिहो बंधो, संखगुणो देस विरय हस्सि अरो॥ सम्म च सन्नि च छरो, हिइ बंधाऽणु कम संखगुणा॥ ५१॥

र्थ-१६ (तो के०) ते अस ीआ पर्याप्ताना जत्कष्ठ स्थितिबंधय ही (जइ के 0 ) यति एट खे प्रमत्तसंयत एट खे साधु स्वप्रायोग्य संक्षेश परिणामें वर्ततो तेनो (जिन्नोवंधो के०) ज्ञत्कृष्ट स्थितिबंध (संखग्रुणो के०) संख्यातग्रुणो जाणवोः जे नणी अस विश्वाने क्वानावरणनो स्थितिबंध, चारशें श्रष्ठावीश सागरोपम च पर साती आ चार नाग प्रमाण हे, अने प्रमत्तने अंतःकोडाकोडी सागरोपम प्र ए हे ते माटे संख्यातगुणो अधिको स्थितिबंध होय. १७ ते साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंधथकी (देसविरय के०) देशविरितनो (हस्स के०) हूस्य एट छे जघन्य स्थितबंध संख्यातग्रणो जाणवो. १७ (इअरो केण) तेथकी इतर एटले देशविरतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो जाणवो. देशविरति जीवने पर्याप्तावस्थायेंज बंध होय. पण अपर्याप्तावस्थायें देशविरतिपणुं न होय, तेमाटें अपर्याप्तावस्थानो बंध न कह्यो. १ए तेथकी (सम्म केण) अविरति सम्यक्दष्टि पर्याप्तानो जघन्य स्थितवंध, संख्यातगुणो. ३० तेथकी अविरति अपयीप्तानो जघन्य स्थितवंध सं ख्यातग्रणो. ३१ तेथकी अविरति अपयोप्तानो उत्कृष्ट स्थितवंध संख्यातग्रणो. ३१ तेथकी अविरति पर्याप्तानो उत्रुष्ट स्थितिवंध संख्यातगुणो केम के सम्यक्टिएएएं अपर्याप्तावस्थायें पण होय है, तेथी एना (चड के०) चार वंध कह्या. तेमज ( सन्निच उरो के ०) सन्नी आ पंचें डिय मिथ्यालीना पण चार बंध जाणवा, एटले तेयकी ३३ सन्नीया पंचेंडिय पर्याप्ता मिण्यात्वीनो जघन्य स्थितिवंध संख्यातग्रणो. ३४ तेथकी सन्नीया पंचेंडिय अपयीमानो जघन्य स्थितिबंध सख्यातग्रणो. ३५ ते यकी सन्नीया पंचेंडिय अपयोप्तानो उत्कष्टिस्थितिबंध संस्थातगुणो ३६ तेथकी स

तिया पंचें िय पर्याप्ता मिण्यात्वीनो उत्क स्थितिबंध, संख्यातगुणो ( िह्इबंधा ऽणुकमसंखगुणा के॰) इहां साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंध थकी जेइने नव बंधना स्थानकपर्यंत खनु में संख्यातगुणा रतां पण कोडाकोडी सागरोप मांहे होय. तेथी ए सर्व बंध खंताकोडीना हीयें. ए परिनाषा जाणवी.

ए सिन्न प्राप्ता मिण्यात्वीनो उत्कृष्ट स्थितिबंध अंतःकोडा ोडी सागरो पमयी अधिक होय एम साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंधयी लेइ सिन्न पांचें दिय पर्याप्ता मिण्यात्वीना स्थितिबंध लगें सघला स्थितिबंध संख्यात ग्रणा लेवा ए स्थितिबंधनां अल्पबहुत्व कहेवे करी उत्कृतिकंधना ज्ञान्य स्थितिबंधना स्वामी पण कह्या ॥५१॥

हवे कोइ एक कहेशे के स्थितबंध छने रसबंध तो कषाय प्रत्यिय छने, तेथी छन प्रकृतिनो रस, कषायनी मंदतायें जिल्ह होय छने कषायनी तीव्रतायें जध नय होय तथा छन प्रकृतिनो रस कषायनी तीव्रतायें जिल्ह होय छने कपाय नी मंदतायें जधन्य होय, तेवीज रीतें छन प्रकृतिनी स्थित पण कषायनीमं द तायें जिल्ह होय ने कषायनी तीव्रतायें मंद होय तथा छछन प्रकृतिनी स्थित पण षायनी मंदतायें जल्ह ही होय छने षायनी तीव्रतायें मंद होय. एम न कहे छुं जोइयें, माटें हीं i जे विशेष फेर हो, ते कहे हो।

सवाणिव जिठिहर, असुहा जं साइ संकिलेसेणं॥ इअरा विसोहिडे पुण, मुत्तं नर अमर तिरि आ॥ ॥ ५२॥

अथ-(सवाणविजिन्निहिं के०) सर्व कमें प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थित स्वसंध प्रायोग्य संक्षेत्र परिणामें वंधाय, ते नणी ( सुद्दा के०) अग्रुन एटले मेलें परिणामें वंधाय. (जंसाइसंकिलेसेणं के०) जे कारणें उत्कृष्टिस्थित अतिसंक्षेत्रों तीव्रकषायो दयें वंधाय हे तेमाटें ग्रुन तथा अग्रुन प्रकृतिनी जे उत्कृष्टिस्थित वंधाय. ते सर्व अग्रुन जाणवी. जे नणी स्थितवंध, सर्व प्रकृतिनो संक्षित्रनी दृिस्यें विधाय हे अने जेम जेम विग्रुह्ति होय, तेम तेम स्थितवंध हीन थातो जाय, पण रस्त वंधनी पेरें स्थितवंध श्रुनाग्रुन न लेवो जे उत्कृष्ट स्थितवंध हो ते संक्षेत्रानुं कार्य हे, ते माटें एकशो ने सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितवंध, पोतपोताना वंधाध्य वसायस्थानकमध्यें मलीन अध्यवसाय स्थानकें वंधाय, तेथी ए एकशोने सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितवंध, ते अग्रुन कद्दीयें अने ए उत्कृष्टि स्थितथिकी (इअ रा के०) इतर एटले बीजो जे जवन्य स्थितवंध हे ते (विसोहिंड के०) विग्रुह्यं रा के०) इतर एटले बीजो जे जवन्य स्थितवंध हे ते (विसोहिंड के०) विग्रुह्यं

कार्य हो, एट छो जो ज ज ज ज ज ज परिणा नी हि खाय, ते ते हीन हीन स्थित बंधाय, तेथी पोताना बंधस्थान दे जे अत्यंत वि ६ बंधाध्य वसायस्थान होय. तिहां ज घन्य स्थित बंध होय तेथी एने ग्रुन हीयें। (पुण के०) वली (नर के०) पायु था (अ र के०) देवायु अने (तिर हि के०) तिर्थ चायु, ए त्रण आयुने ( नं के०) मूकीने शेष ए एक शो सत्तर प्रकृतिनी अपेक्षायें ए छो छुं।

हवे शेष त्रण आयुनी स्थितबंधनो विशेष है है ज्यायु, देवायु अने तिर्थगा यु, ए त्रण आयुनी उत्क स्थित आपणा बंधाध्यवसाय स्थानकमध्ये विद्युद्धाध्य वसायें वंधाय अने मलीन परिणामें जवन्य स्थित बंधाय ए विशेष जाणवुं॥ ५२॥

ह्रवे बंधनुं विषमतापणुं योगनी विषमतापणे याय हे. तेथी योगस्यान निरूपवाने योगनो अर्थ कहेवाने, अंतर गाया जखीयें हैयें. " परिणामा लं बण गद्द,ण साद्षणं तेण लद्दनामितगं ॥ कष्कद्रसाञ्चन्नसा,प्पवे सवि समीकयपए सं ॥१॥ " ह्वे ए गायानो अर्थ हे हे. जे वीर्यविज्ञेषें री औदारिकादिक पुजल यहण करे तथा तेने श्वासोन्नासादिकपणे परिणमावीने निःसर्ग एटखे स्वानावि क हेतुक शक्ति विशेषनी सिद्धिने अर्थे अवलंबे, जेम कोइ एक आजारी माणस, नगरमां नमवा निमिनें लाकडी जालीने चते पढी जेवारें सामर्थ्य थाय, तेवारें लाकडीने मूकी आपे. तेम जीव पण जाषादि पुजल अवलंबी त न्य करणवीर्य थये यकें तेने मूकी आपे तेथी परिणाम अवलंबन ग्रहण हेतु जे वीर्य, तेने यो ग कहीयें ते योगना मन, वचन अने कायाने जेदें करी त्रण ना होय हे ति हां योग, बल, वीर्य, उत्साह, शति, चेष्टा करण ए सर्व एना पर्याय नाम जाणवां, छने ते जीवने वीयंतिरायने क्योपशमें करी सर्व प्रदेशें सरखं हे पण जे प्रदेश, कार्यने दूकडा होय तिहां घणुं वीर्य जणाय अने बीजा प्रदेशें थोडुं जणाय जेम हाथे करें। घडो उपाडतां हाथ मात्रना प्रदेश दूकडा हे तिहां घणुं चलाचलपणुं होय अने खंनाने प्रदेशें तेथी थोडुं होय अने पादादिकने प्रदेशें तो वली घणुं ज थोडुं होय तेथी वीर्यनुं विषम पणुं होय. संसारी जीवने वीर्यातराय देश घा तीने विचित्र क्योपशमें करीने अनेक नातनुं क्यायोपशमिक वीर्थ, वद्मस्यनुं होयने तेमध्यें मन चिंतना पूर्वक आहार विहारादिक जे करण व्यापार ते अनिसंधिज वीर्य कहीयें छने जे मन चिंतना विना केवल वचन छने कायाना व्यापार एकेंडि यादिकने हे तथा पंचें इयने पण छक्त आहार हुं धर हुं धातु मल पणे परिणमाव हुं.

ते निन्संधिज वीर्ध हीयें तथा क्षािय नावें जे रणवीर्थ केवली ते पण बे नेदें हे ए सखेंदय वीर्थते सयोगी हण परिण न वलंबन रूप ते त्रण योगना नेदें त्रिविधें हे तथा बी अयोगी छेद्य वीर्थ एण हुं तथा ह स्थ हं ग्रुन छेद्रया वंतने वि दियें वीर्थ वधे अने न छे वंतने सं हों वीर्थ वधे ह न्यथा दता होय, ए रीतें योगनी उत्क मंदता होय.

तिहां जघन्यवीर्य जे जीवनो प्रदे तेवली केवलीना तीइए। दिरूप शें करी वेदतां जे वीयींश निरंश होय नहीं एट के जे वीयींशनो खं केवती पण कल्पी न शके तेवीर्यविचाग तथा नावाणु पण तेने हीयें. तेवा लोका शिथी संख्या त गुणा जे वीर्याणु, तेणे करी सहित जे प्रदेश, तेनो स दाय एटले जीव प्रदेश नी श्रेणी, ते प्रथमवर्गणाः तेथी एक वीर्य विनागें धिक एवी जे जीव प्रदेशनी श्रेणी ते बीजी वर्गणा. बे वीर्यविनागें अधिक वीर्य एवी जे वि प्रदेशनी श्रेणी, ते त्रीजी वर्गणा. एम एकेक वीर्य विनागें छाधिक वीर्यवंत जे जीव प्रदेशनी श्रेणी, ते घनीरुत लोकनी एक प्रादेशिक सूची श्रेणीने संख्यातमे नागें जेटला खाका श प्रदेश होय, तेटली वर्गणायें एक स्पर्कक होय ते प्रथम स्पर्ककनी उत्कृष्ट वी र्योश वर्गणायी एटले हेली वर्गणायी एक, बे यवा संख्याते वीर्यविनागें अधिका कोइ जीव प्रदेश नथी परंतु संख्य लोकाकाश प्रमाण वीयीशें अधिक जे जीव प्रदेशनी श्रेणी,ते बीजा स्पर्वकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. वली तेथी एक एक वी र्थ विनागें चढता चढता जीव प्रदेशनी श्रेणीनी वर्गणायें करी बीजो स्पर्धक थाय, तेथी वली असंख्यलोकाकाश प्रदेश नाग प्रमाण वीयोंशें धिक वीर्यवंत जीव प्रदेशनी श्रेणी ते त्रीजा स्पर्ककनी प्रथम वर्गणा. एणी पेरें श्रेणी प्रदेश असंख्येय नाग प्रमाण स्पर्वकें पहेलुं जवन्य योगस्थानक होय,ते थकी छंगुलना छसंख्या तमा नागना आकाशप्रदेश प्रमाण स्पर्दकें वधतुं बीखं योगस्थानक होय, तेथी वली तेटलेज स्पर्दकें वधतुं वली त्रीजं योगस्यानक होय. एम अंगुलने असंख्या त नाग प्रदेश प्रमाण स्पर्कक वधतां वधतां एवा घनीकृत लोकनी सूची श्रेणीना असंख्यात नाग प्रदेश प्रमाण योग स्थानक गये थके, हेत्नुं जे योग स्थानक आवे, तेवारें प्रथम योग स्थानकथी बमणा स्पर्धक होय, तेथी वली तेटला योगस्था नक गये थके तथी वली बमणा स्पर्धक होय. एम बमणा बमणा स्पर्धक हो य ते पण योगस्थानक स्त्रम अदापल्पोपमने असंख्यातमे नागें जेटला समय होय तेटला बमणा स्पर्कक वालां पण योग स्थानक होया प्रथम योग स्थानक

घणा व्यविधि प्रदेशें होय बीज़ं योग स्थान तेथी थोहे अव्यविधि प्रदेशें हो य. ए स्पर्क बंधें हो ए चार्य हे हे जघन्य योग जीवधी जें वीर्याधि क जीव तें बीं योगस्थान , एम वीर्य वधतां वधतां योग स्थान नीपजे ते । ध्यें जघन्य योग स्थानकें जीव,चार समय सुधी रहे, ध्य योगस्था कें जीव, आत समय सुधी रहे अने उत्क योगस्थानकें जीव, बे स य धी रहे, इ दि । घन्य ध्यम प्ररूपण सर्व में प्रकृतिथी जाणवी॥ इति हवे योगस्थान ना स्वा । हे हे.

सुद्रुम निगोञ्जाइ खण, पजोग बायरप विगल स्प्रमण णा॥ स्प्रप लद्रु पढम इ गुरु, पजहस्सि स्ररो स्रसंख गुणो॥ ५३॥

अर्थ-योग ते वीर्यस्थान व्यापार परा हीयें. वीर्यातरायना व्यापारथी प जे ।यादिक 'परिस्पंद ते योग हीयें. (सुदुमनिगोञ्चाइखणप्पजोग के ०) १ स् निगोदिखा, लब्धि खपर्याप्ताने ।दिक्त्णे एटले नव प्रथम समयें खल्प जघन्य योगते स्तोक. १ तेथकी (बायरप केण) बादर निगोदिन लब्धि अपर्याप्तो तेने नव प्रथम समयें जे योग ते असंख्यात गुणो जाणवो. (३) तेथकी (विगल के०) बेंडिय, तेंडिय, अने चौरिंडिय एटले अनु में बेंडिय अपयीप्ताने नव प्रथम स यें योग असंख्यात ग्रणो जाणवो (४) तेथकी तेंडिय अपयीप्तानो जघन्य योग, असंख्यात गुणो जाणवोः ( ५ ) तेथकी लब्धि अपर्याप्ता चोरिं इिय जीवने नव प्रथम समयें जघन्ययोग असंख्यात ग्रुणो. (६) तेथकी (अमण केण) जेने न नची एवा असन्नीआ पंचेंडिय लब्धि अपयोप्ताने नव प्रथम समयें जघन्य योग, संख्यात ग्रुणो. (७) तेथ ी (णा के०) मनःपर्याप्तिना आरंनक एवा सन्नीया पंचेंड्य लब्ध अपयीताने नव प्रथम समयें जघन्य योग असंख्यात ग्रणो, ए सात ( अप के ०) लब्ध अपर्याप्ताना नव प्रथम समयें ( लहु के ०) जघन्ययोग लेवा तेथकी (पढमइ के०) प्रथमना वे एटले अपयीप्ता, सूझा अने बादर निगोदीआनो (गुरु कें 0) उत्कृष्ट योग कहेवो एटखे (0) सुझानिगोदीआ हिध अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यातगुणो. (ए) तेथकी बादर निगोदीआ एकें िच जिंच अपर्याप्तानो चत्रुप्रयोग. असंख्यात गुणोः (पजहस्तिअरो केण) ते थकी एज वे पर्याप्तानो न्हस्व एट छे जवन्य योग छेवो एट छे (१०) तेथकी सुद्धानि निगोदीया पर्याप्तानो जघन्य योग छसंख्यात गुणो. (११) तेथकी वादर एकें

ड्य पंगीप्तानो जघन्ययोग सं ात गुणो. तेथकी इतर एट छे एज वे सूक्क्य पंगीप्तानो उत्कर योग केवो एट छे (११) सूक्क्य निगोदिश्या पंगीप्तानो उत्कर योग असंख्यात गुणो (१३) तेथ ही बादर पर्या । एकेंडियनो उत्कर योग असंख्यातगुणो एट छे ए तेर योग स्थान ं. ते ध्यें एकेंडियना नेद चार के,ते जघन्य तथा उत्कर नेदें री । व नेद थया तथा वि छेंडियना त्रण अने असन्नीआ तथा ि । अपर्या । एवं पांचना जघन्य योग क । एवं तेर योगस्थानक ं अव्य ब त्व में (संख णो के०) असंख्यातगुणुं जा ण जुं. दींआं सघ छे गुणा । र, स्व के पत्थोपमना असंख्यातमा नागें वर्तता समय प्रमाण जाणवो एम । ग छे योगस्थानक र एण एहिज गुणाकार छेवो॥ एव।

असमत्त तमु ोसो, पक्त जहन्निअर एव टिइ ाणा॥ अपजेयर संखगुणा, परमऽपज बिए असंख गुणा॥ ५४॥

अर्थ-( असमत्ततमु ोसो के ) समाप्त एटले अपयीप्ता ते पांच त्रस लेवा एट से विकर्नेडिय त्रण तथा अस शिखा, स शिखा, ए पांच आयीमा एटसे जेणे ारंनी पर्याप्ती पूरी नथी करी, ते जीव पर्याप्ता जाणवा. ते पांचेना उत्कृष्ट योग, अनुक्रमें असंख्यात गुणा है ते कहे है. (१४) ते यकी बेंडिय अपयीप्तानो जत्रुष्टयोग असं ख्यातग्रणो. (१५) तेथकी तेंडिय अपयीप्तानो जन्छ योग असंख्यातग्रणो. (१६) तेयकी चौरिंडिय अपर्याप्तानो जत्कृष्ट योग असंख्यात णो (१९) तेथकी असन्नीया पंचें डिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग संख्यातग्रणो. (१०) तेथकी स न्नीआ पंचेंड्य अपर्याप्तानो उत्क योग संख्यातग्रणो. एम वली (प ए पांच पर्याप्तानो (जहन्निअर के०) जघ योग स्थानक में होवां. एट हो (१ए) तेयकी बेंडिय पर्याप्तानो जवन्य योग संख्यात गुणो. (२०) तेयकी तें डिय पर्याप्तानो जवन्य योग छासंख्यात एो. ( २१) तेयकी चौरिं डिय पर्याप्ता नो जघन्य योग असंख्यातग्रणो. ( ११ ) तेथकी असन्नीआ पंचेंड्य पर्याप्तानो जवन्ययोग असंख्यातगुणो (१३) तेयकी सन्नीआ पंचेंडिय पर्याप्तानो जवन्य योग असंख्यातगुणो हवे ए यकी ( इअर के० ) इतर एटले ए पांचे पर्याताना उ त्कृष्ट योग अनुक्रमें कहेवा. (१४) तेथकी बेंडिय पयीमानो जत्कृष्ट योग असंख्या त्युणो. (१५) तेथकी तेंडिय पर्याप्तानो उत्कष्ट योग्रुं असंख्यात ग्रुणो. (१६) ते यी विश्वेरिहिय पर्याप्तानो उत्रुष्ट योग, असंख्यात गुणौ. (२१४) तेथकी असनी

आ पंचेंडिय पर्याप्तानो चरू योग, असंख्यातगुणों (१०) ते यकी सन्नीया पं चेंडिय पर्याप्तानो चत्कृष्ट्योग असंख्यातगुणों (१०) ते यकी अनुत्तरसुरनो चत्कृष्ट योग असंख्यातगुणों.(३०) तेथकी यैवेयक सुरनो चत्कृष्ट्योग असंख्यातगु णों. (३१) तेथकी युगिलयानो चत्कृष्ट्योग असंख्यातगुणों (३१) तथकी आहारक शरीरनो चत्कृष्ट्योग असंख्यातगुणों तथकी शेषदेव,नारक, तिर्यंच अने मनुष्यनो यथोत्तर चत्कृ योग असंख्यातगुणों जाणवों एम योगस्थानक कह्यां.

(एव के ॰) एमज ए सात पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना नेर्दे करी चौद जातिना जीव, तेना कमेवंधना जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिना वचमाना अंतरें जेटला स मय तेटला (विइवाणा के ॰) स्थितिवंधनां स्थानक, तेनुं अल्पबहुत्व कहे हे

( अपजेयरसंखगुणा के ० ) (१) तिहां सूच्चा एकेंडिय अपर्याप्तानुं स्थितस्था स्तोक. (१) ते थकी बादर एकेंड्य अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यात गुणां. (३) ते थकी सूक्षा एकेंडि्य पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (४) तेथकी बादर एकेंड्य पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातग्रणां. (५) ते थ ी वेंडिय अपयोप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यातगुणां जे नणी बेंडियनी जत्कष्ट स्थितिथी पत्योपमने संख्यातमे नागें णी जघन्यस्थिति होय, तेथी पट्योपमना संख्यातमा नागना जेटला समय एटला बेंडिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक होय अने चार एकेंडियनां स्थितिस्थानक पब्योपमना असंख्यातमा नागना समयमा त्र हे. असंख्या एट से पब्योपम असंख्यांशें एक पब्योपमना संख्यातांश होय ते माटें बादर एकेंडिय पर्याप्ताना उत्कृष्ट स्थितिस्थानकथी बेंडिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यात गुणां जाणवां. (६) ते थकी वली तेहीज वेंडिय पर्याप्तानां जन्छष्ट स्थिति स्थानक संख्यात ग्रुणां जाणवा. ( ७ ) ते थकी तें िइय अपर्याप्ताना स्थित स्थानक संख्यातग्रुणां ( ७ ) ते थकी तेंडिय पर्याप्ताना स्थि तिस्थानक संख्यातग्रुणां. (७) ते यकी चौरिड्य अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (१०) ते थकी चौरिंड्य पर्याप्तानां स्थितस्थानक संख्यातगु णां. (११) ते थकी असन्नीया अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यात गुणां. (११ ते यकी असन्नीआ पर्याप्तानां स्थिति स्थानक संख्यातग्रणां. (१३) ते थकी सन्नी आ पंचें डिय अपयी प्राना स्थितिस्थानक संख्यात गुणां (१४) ते यकी सन्नी आ पंचें दिय पर्याप्तानां स्थितस्थानक संख्यातगुणां. अहीं आं सीनर कोडाकोडी सागरोपममध्यें पण पह्योपमना संख्यातांश संख्याता होय, तेथी

संख्यातग्रणा कहीयें. ए सर्व पदने विषे संख्यातग्रणा कहेवा. किंवा कोइक पदने विषे विशेष है, ते कहे है. (परमपजिविष्यसंखग्रणा के०) परं केवलं अपर्याप्त हीं इिय पदने विषे असंख्यातग्रणां स्थित स्थानक कहेवा ॥ इति समुच्यायीः ५४ हवे जेटली अपर्याप्ता वस्थायें योग दृष्टि होय, ते कहे है

पइखिण मसंखगुण विरि, य अपक िइ असंख लोग समा॥ अश्वसाया अहिया, सत्तसु आ सु असंखगुणा॥ ५५॥

अथ-(पइलिएं के॰) प्रतिक्षण एट ले समय समय प्रत्यें अपयोप्तावस्यायें जे योगस्यानक होय, तेथी बीजे समयें (असंखग्रणविश्य के॰) असंख्यात ग्रण विद्य शेगस्यानक होय, तेथी त्रीजे समय वली असंख्यात ग्रणविद्य योग स्थानक होय. एम (अप के॰) अपयोप्ताने चरमसमय लगें असंख्यातग्रण विद्य योगस्थानकनी होय, अने पर्याप्ति पूर्ण कथा पढी पर्याप्ताने संख्यातग्रण विद्य, असंख्यातग्रणविद्य, संख्यातग्रण हीन, असंख्यातग्रण हीन, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण होय. एम अनियमें होय, तो कोइ जीव वधते, कोइ घटते, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण वर्ने पण निर्दार न होय. "सहो विख्य तो, पइखण मसंखग्रणए जोगनुड़ीए " इति बृहज्ञतकचूणों. एम योगनुदियें करी कर्मना प्र देशनी तथा ( िइइ के॰) स्थितिनी वृद्धि होय.

द्वे जीवने प्रत्येकें एकेक स्थितस्थानक विशेषें अध्यवसायस्थानकें बंधाय, ते कहे हे. स्थिति. स्थानक स्थानक प्रत्यें तीव्र, तीव्रतर. मंद, मंदतर. मंदतमादिक. अ संख्याते अध्यवसाय स्थानकें वंधाय तिहां जघन्यस्थित (असंख्वांगसमा केंग्) असंख्यांकाकाशप्रदेशप्रमाणे काषायिक अध्यवसाय स्थानकें वंधाय. ते यकी वली समयाधिक स्थित वंधाय, ते वली विशेषाधिक अध्यवसाय स्थानकें वंधाय. एम हिसमयाधिक विशेषाधिक स्थितस्थानकें विशेषाधिक विशेषाधिक स्थितिस्थानकें विशेषाधिक विशेषाधिक स्थितिस्थानक वधारतां, वधारतां एक पत्थोपमनी असंख्यात नाग मात्र स्थिति स्थानक अतिक्रमे थके, जघन्य स्थितिना अध्यवसाय स्थानकथी वमणां अध्यव सायस्थानक थाय. एम वली पण तेटलांज स्थितस्थानक अतिक्रमे थके. व मणां वमणां अध्यवसाय स्थानक थाय, ते पण एक पत्थोपम मात्र स्थिति दे दियें असंख्याता हिंगुण वृद्धिनां स्थितस्थानक पण थाय. एम एक आयुःकमें विना ग्रंप (सत्तसु केंग्) सात कर्मनां जघन्य स्थितस्थानक थकी मांनीने (अ

ः वसाया अहिया के ०) विशेषाधिक, विशेषाधि , अध्यवसाय र । न वधतां होयः

( आ उसु के ० ) आयुःकमिनी जघन्यस्थितियें जे सर्वस्तोक अध्यसा स्थानक होय तेथी दितीयस्थितियें (असंखगुणा के ०) असंख्यातगुणां होय तृनीयस्थित असंख्यातगुणा अध्यवसाय स्थानकें होय ए असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्था नकें रीने समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां उत्कृष्टिस्थिति सुधी जइयें

एम कषायोदयनेदें करी छात्मानो जे ६ स्वनाविवशेष, ते छध्यवसा यस्यानक जाणवां. ते छध्यवसायस्थान , रस विशेषना हेतु जाणवां. इव्य, क्रे, काल, नाव, प्रतिबंध, रस, विपाक, नियामक, ते सात कर्मनी जघन्य स्थितियें छसंख्याता छध्यवसाय, ते थकी समयाधिक समयाधिक स्थितियें विशेषाधिक विशेषा धिक छध्यवसायस्थानक वधतां होय. ते उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत विशेषाधिक, विशेष

ने नामकमे तथा गोत्रकमेना संख्यातां तथा असंख्यातां पण स्थितिस्थान होय, तोपण आयुःकमेनी जघन्य स्थिति अव्प हे माटें अध्यवसाय स्थान क घोडां होय ते माटें आयुष्यना अध्यवसाय स्थानकथी नामकमे अने गोत्र कमेनां स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक, असंख्यातग्रणां जाणवां

तेथकी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय, ए चार कर्मनां स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक, असंख्यातग्रणां जाणवां. जे नणी नामकर्म अने गोत्र कर्मयकी दश कोडा कोडी सागरोपमनी स्थिति एनी अधिक हे अने पद्योपम ना असंख्यांश मात्र स्थित वृद्धियें अध्यवसाय स्थानक, बमणां वधे इन दश कोडा कोडी सागरोपममध्यें तो असंख्याता पत्योपमना असंख्यां हो हो हो असंख्यातगर्में अध्यवसायस्थानकनी दिग्रण वृद्धि मेथकी ए चार कर्मनां असंख्यातग्रणां अध्यवसाय स्थानक ह

तेथकी वली चारित्र मोहनीयनी स्थितनां गुणां जाणवां, जे जणी ज्ञानावरणीयनी स्थितिः स्थिति, दश कोडाकोडी सागरोपमनी वथती है. द संख्याती दिगुण वृद्धि होय, ते माटें असंख्यान हुइ ते थकी दर्शन मोहनीयनां असंख्यान हुइ ह धना हेतु जाणवा जे नणी चारित्र मोहनीयनी स्थितियकी त्रीश ोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, दश्नेनमोहनीयनी वधती है तेमाटें तेना पण पूर्वीक यु कियें करी असंख्यातगुणां अध्यवसायस्थानक होय. ए रीतें आह मैनां स्थि तिना अध्यवसाय स्थानकनां अल्पबहुत्व पण प्रसंगें ं.

तथा एकेक अध्यवसाय स्थानकें वर्त्तता स जीव, जघन्यपदें ए, बे, त्रण अने उत्कृष्टा तो आवलीना असंख्यांश स य प्रमाण जाणवा अने स्थावर जीव अनंता जाणवा. तथा त्रसजीव क निरंतरपणे जघन्यपदें बे अध्यवसाय स्थानक अने उत्कृष्टपदें आवलीना असंख्याता समय त्र प्रमाण होय तेथी उपरांत अवस्य ग्रून्य होय. उक्ष्यपदें असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण होय, अने स्थावर ग्रून्य अध्यवसायस्थानक न होय, जे जणी अनंतानंतिनगोदीआ जीव, ते सहु स्थावर हो. एम अध्यवसायस्थानकें जीव प्ररूपणा कही.

तथा जघन्यस्थितिने जघन्य अध्यवसायस्थानकें अनंता रसविनाग जाणवा ते यकी वली एज प्रथम स्थितिने उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें अनंतग्रणा रस विनाग जाणवा, तेथकी वली दितीयस्थितिने जघन्य अध्यवसाय स्थानकें अनंतग्रणो रस जाणवो. तेथकी तेज दितीयस्थितिना उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें वली अनं तग्रणो रस जाणवो एम स्थितिविशेषें जघन्य उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें अनंतग्रणो अनंतग्रणो रस वधारतां उत्कृष्टस्थितिना उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें लगें कहेवुं ए रीतें प्रसंगें अध्यवसायस्थानकें रस पण विचास्थो ॥ इति सण ॥ प्रा हवे उत्तर प्रकृति न वंधाय, तो केटलो काल न बंधाय? तेनो अबाधाकाल कहे हे. ति हां सर्व प्रकृतिनां जघन्यथीतो एक समय अवाधाकाल होय अने उत्कृष्ट पणे मिष्या ल तथा साखादन गुणवाणे वंधविष्ठेद पामेली एकतालीश प्रकृतिनो पंचें इियने विषे अवाधाकाल कहे हे. प्रथम ते एकतालीश प्रकृतिनां नाम कहे हे नरकत्रिक, जातिच तुष्क. स्थावरचतुष्क हुंमसंस्थान, हेवकुं, संघयण, आतप, मिष्याल, नपुंसक, ए शोल प्रकृति, मिष्याल व्यविश्व वंध अने पच्चीश प्रकृति साखादन व्यविश्ववंध एवं एकतालीश प्रकृतिनो उत्कृप्ट वंधांतर कहे हे.

अयोत्कृष्ट स्थित्यंतरवंधमाह ॥ तिरि निरय ति जोयाणं, नरनवजुः सच उपत्न तेसहं॥ यावर च इगविगला, यवेसु पणसीइ सवमयरा॥ ५६॥

अर्थ-( तिरिनिरयति के० ) तिर्यचगित, तिर्यचानुपूर्वी अने तिर्यचासु, ए तिर्यच त्रि तथा नरकगति, नर । नुपूर्वी अने नर । यु, ए नरकत्रि , सातमुं. (जोया एं के ) उद्योतना में, ए सात प्रकृतिनो बंध पंचें इिय जीवने जो न होय, तो केटला काल लगें न होय? ते हे हे. (नरचव अ के०) मनुष्यना पूर्व को डी आयुना सांत नव, (सं केण) सहित (च उपल केण) चार पब्योपम अने (तेस के के ) एक शो त्रेशव सागरोप होय, एनी विशेष नावना है के ोइ ए व त्राप्य पद्योपमायुवालो युगली जन्त्रांतें सम्यक्त लहीने ए पह्योपमायु वालो देव थाय. हवे तिहां युगली आना नवप्रत्यें ए सात प्रकृतिनो बंध नथी. केम के, युगली तो देवता योग्य नाम मेनी प्रकृति बांघे पण बीजी प्रकृति न बांधे अने देवता थया पढ़ी ते देवताना नवें सम्यक्त प्रत्ययें तिर्थग् प्रायोग्य नामकमेनी प्रकृति न वांधे. पढ़ी ते देवता सम्यक्त्व सिह्तज संख्यात वषिषुष्क मनुष्य घयो तिहां पण सम्यक्ल प्रनावें ए सात प्रकृति न बांधी अने अंतें चा रित्र लइ नवमे प्रैवेयकें देव थयो. तिहां कदापि मिथ्याली पण थयो तो पण न वप्रत्ययें एकत्रीश सागरोपम लगें ए सात प्रकृति न बांधे, जे नणी आतमा दे वलोकची उपरला देवलोकना देवता तिर्यचमां हे न छावे ते वली प्रांत समयें सम्यक्त लहीने संख्यातायुष्य वाला ध्यमां सम्यकृष्टिष्रणे आवी उपजे. वली ते मनुष्य चारित्र पाली तेत्रीश सागरोपमायु अनुत्तर विमाने विजयादिकने विषे देव थाय. वली मनुष्यनव पामीने वली बीजी वार तेत्रीश सागरोपमायु वालो सुर थाय. एम वे वार विजयादिक गमनें करी ढाशह सागरोपम सम्यक्त काल पूरी, वली अंतर मुहूर्न मिश्र गुणवाणे जइ, फरी सम्यक्ल जही, त्रण वेला बावीश सागरोपमायुष्कं अच्युतदेवलोकमां गमन करी, वीजी वार पण ढाशह सागरोपम सम्यक्त काल स्पेशें। एम एकशो ने वत्रीश सागरोपम पूर्व कोटी सप्तक अधिक स म्यक्ल अने मिश्र प्रत्ययें ए सात प्रकृति न वांधे, अने एकत्रीश सागरोपम यैवे यकना तथा चार पल्योपम युगलीया तथा देवायुना मली एकशो त्रेशघ सागरो पम चार पट्पोपम अने पूर्व कोडी सप्तक सुधी, ए सात प्रकृतिनो पंचेंड्यिने वि पे अवाधा काल होय.

( यावरच छ के ० ) स्थावर, सूद्या. अपर्याप्त अने साधारण, ए स्थावर चतु एक अने (इगविगल के ०) एकें डि्य जाति तथा बेंडि्य अने तेंडि्य, चौरिंडि्य, ए विक लजाति त्रिक अने ( आयवेसु के ० ) आतपनामकर्म, ए नव प्रकृतिना वंधने वि षे पंचेंडियपणे बतां जो उत्कृष्ट बंध न होय तो (पण्सीइसयं के०) एकशो ने पञ्चाशी (अयरा के०) सागरोप तथा चार पख्योपम अने पूर्व कोटी प्रथक्तें अधिक बंधांतर होया एनी विशेष जावना हे है।

कोइ एक जीव, उठी नरक प्रथिवीयें बावीश सागरोप । यु नोगवी, तिहां नव प्रत्ययें एनव प्रकृति न बांधे, तिहां श्रंतसमयें सम्यक्त सहित चवीने मनुष्य ययोः ते तिहां देशिवरित लहीने त्रण पत्योपमायुयें युगलीक थइ तिहांषी एक पत्योपमायु वालो सुर थाय, तिहांषी पण सम्यक्त सहित चवी संख्याता वर्षायु मनुष्यमां उपजे, तिहांथी संयम लइ एकत्रीश सागरोपमायुयें श्रेवेयकमां देवपणे उपजे. तिहां मिण्यात्व लही, जेल्ले सम्यक्त पामी मनुष्य थइ वली विशेष संयम पाली विजयादिक विमानें तेत्रीश सागरोपमायुयें देव थायः वली मनुष्य नवने श्रांतरें बीजी वार विजयादिक विमानें श्रवतरी, जाश्रघ सागर सम्यत्वकाल पूरों करी, मिश्रें श्रावी पूर्वोक्त रीतें त्रण वार श्रच्युतें जायः एम एकशो त्रेशघ सागरोप माधिकमांहे बावीश सागर नरकायु जेलतां एकशो पञ्चाशी सागरोपम चार प व्यने पूर्वकोडी प्रथकत्व एटला काल सुधी ए नव प्रकृतिनी स्थितनो श्रवंधकाल होयः कहोयः किहांएक सम्यक्त प्रत्ययें, किहां एक जवप्रत्ययें, श्रवंधकाल होयः, एटले वंधनुं श्रांतरुं होय ॥ इति समुचयार्थः ॥ एह ॥

अपरम संघयणा गिइ, खगई अण मिन्न इनग धीणतिगं॥ निअ नपु इन्नि इतीसं, पणिदि सुअवंधि ३६ परमा॥ ५९॥

अर्थ-(अपहमसंघयणागिइ के०) पहेला संघयण विना ज्ञेष पांच संघयण अने आरुति एटले प्रथमसंस्थान विना ज्ञेष पांच संस्थान, एवं दश अने (स गई के०) अग्रुनविहायोगित (अण के०) अनंतानुबंधी क्रोधादिक चार, (मिन्न के०) मिण्यालमोहनीय, (इनग के०) दौनींग्य, इःस्वर, आनादेय, ए दौनींग्यत्रिक, (यी णितगं के०) योणदीत्रीक, (निख्य के०) नीचैगींत्र, (नपु के०) नपुंसकवेद, (इिंच के०) स्त्रोवेद, ए पच्चीश प्ररुतिनो अवंधकाल (इतीसं के०) एकशो ने बत्रीश सागरोपममनुष्यनव सप्तक सहित होय, तेनी नावना कहे हो. कोइएक जीव, हायोपश्चिक सम्यक्ल प्रत्ययें ए पच्चीश प्ररुति मध्यें हुंमसंस्थान, हेव हुं संघय ण. मिष्यालमोहनीय अने नपुंसकवेद, ए चार प्ररुति, मिष्यालोदय विना न वं धाय अने श्रेप एकवीश प्ररुति अनंतानुवंधिया कपायोदय विना न वंधाय, अ

ए स यबंध पण होय. एम तहों तेर प्रकृतिनो जघन्य सतत बंध ही, हवे चत्क नागें निरंतर बंध हे हे.

(पह्नितगंसुरवि चि वे के के के देवगित, देवानुपूर्वी तथा वै वि यश्रीर अने वै वि य अं गोपांग, ए चार प्र तिनो सतत बंध जवन्य ए स यनो होय जे नणी न परिणामें ए स य, ए चार प्र ति देव प्रायोग्य बांधीने परिणा ने हें स यांतरें वली मनुष्या दि प्रायोग्य बांधतां जाणवो ने एनो चताो निरंतर बंध त्रण पख्योप । युना धणी गलीयाने नव प्रथ स यथी देवप्रायोग्य ना कर्मनी अंधावीश प्र ति बांधतां जाणवो. के के, तेने नवप्र यें नरक, तिर्धेच अने म ष्य, ए ण गित प्रायोग्य ना मेनो बंध नथी तेथी परिणा ने हें पण अन्य एनी विरोधि प्रकृतिनो एने बंधें नथी, ते । दें नव प्रथ स थी लड़ने ण पल्योप ना च र समय लगें ए चार प्रकृतिनो सतत बंध होय. एट जे एक, बे, त्रण, संस्थाता, असंस्थाता समय लगें निरंतरपणें एचार प्रकृतिनो बंध होय ॥ इतिस ०॥ ए०॥

समया दसंख कालं, तिरि इग नीएसु आ अंतमुहू॥ रिल असंख परा, साय िष्ड पुत्र कोडूणा॥ ५ए॥

अज-(तिरि ग के॰) तीर्यंचिह्क, (नीएसु के॰) नीचैगोंत्र, ए त्रण तिनो तिर्यंच प्रायोग्य बंधाध्यवसायें समय मात्र रहीने वली तथाविध सं श वि शेषें नरक प्रायोग्य पण बांधे, अने विद्युद्धि विशेषें देव, मनुष्य प्रायोग्य पण वांधे, तेनी अपेक्सायें जयन्यथी एक समय बंध होय, अने उत्कष्ट पदें तो तेज, वाज मांहे असंख्यातो काल रहे तो थको तिहां ए त्रण प्रकृतिनी विरोधिनी बीजी प्रकृति न बांधे, केमके? तेज अने वासु मांहेथी एक तिर्यंचगतिमांहेंज अवतरे पण बीजी त्रण गतिमां अवतरे नहीं तथा तिहां जच्चैगोंत्र पण न वांधे, तेथी (समयादसंखकालं के॰) असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण समय लगें ए त्र ण प्रकृतिनो निरंतर बंध लाने, ए व्यवहार राशि जीवनी अपेक्सयें लेखवयो बी जा आश्रयी तो अनंत काल पण संनवे.

(आठअंतमुद्ध के॰) चार आयुनो वंध जधन्य तथा उत्रुष्टधी अंतर्भुद्धर्चनो होय. अहींआं परिणामनेदें पण एक समिवक वंध न होय, जे नणी आयुनो तो आखा नवमध्यें एकज वार बंध होय. अहींआं जधन्यधी उत्रुष्टोअधिक जाणवो (उरिल्असंखपरटा के॰) ओदारिक शरीरनामकर्मनो निरंतर पणे वंध उ क्ष्टो तो आवितना आसंख्यात । नागना स य प्रमाण आसंख्याता पुजल पराव ने जेटलुं जाणवुं, अने जघन्यतो ए स यनो जाणवोः जे नणी एक समय ौ दारिक शरीर बांधी वली समयांतरें परिणामे नेदें तिहरोधिनी वैत्रि यादिकने बांध तो होय, अने उत्क थी तो व्यवहारराशियें विलो गिव, जो धावर व पणे रहेतो उत्कष्टो आवलीने आसंख्यातमे नागें जेटला स य धाय, तेटला पुजल परा वर्ष सुधी धावरपणुं नोगवे, तिहां निरंतरपणे औदारि रीर नाम मैनो वंध क रे, तेने वैक्रियादिक विरोधि प्र तिनो बंध नथी. ते नणी तिहां सततबंध कह्योः

(सायि इपुत्रको हूणा के ०) एक शातावेदनीयनो सतत बंध, घन्यथी तो एक समय लगें होय. के के वली समयांतरें परिणामने हें शाता पण बांधे, ते अपे हायें कहे हुं. तथा उत्क्षप्रपो निरंतर बंधतो ाठ वर्षे णी पूर्वको ही जाणवी. केमके को इक पूर्वको ही आयुवालो जीव, ाठ वर्ष उपरांत सर्व विरित पणुं लई ने, केपकश्रेणी पिडवजे. केवल ज्ञान पासे, तेने प्रमत्त गुणठाणा उपरांत एनी वि रोधिनी अशातावेदनीय प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी तिहां निरंतर पणे एटला का ल लगें एक ज शातावेदनीय बांधे. ते अपेक् सें जाण हुं अन्यथा शाता अशातानो वंध तो अंतर सुहूर्ने परावर्त होय ॥ इति स यार्थः ॥ एए ॥

जलिह सयं पणसीयं, परघुरसासे पणिदि तस च गे॥ वत्तीसं सुहु विहगइ, पुम सुनगतिगुचच रंसे ॥ ६०॥

श्रथ-(संपणसीयं के०) एम उकशोने प शि (जलिह के०) सागरोपम उपर चार पत्योपम धूर्वकोडी प्रथक्तवें श्रियक, (परंघुस्तासेपणिंदितसंचगों के०) पराधातनाम, जन्नासनाम, पंचें वियंजाति, तथा त्रसनाम, बादरनाम, प्रथितनाम श्रने प्रत्वेकनाम. ए त्रस चतुष्क. एवं सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट निरंतर वं धकाल जाणवो. जे नणी जातिचतुष्क तथा स्थावरचतुष्क ए ाव एनी विरोधिनी प्रकृति हे ते एटला काल पर्यत न बंधाय. ते वारें ए प्रकृति बंधाय, ते श्रावी रितें के कोइ एक जीव हिंदी नरक प्रथवीना वावीश सागरोपमायु नोगवी, अंतें सम्यक्त लही, मनुष्य चवें देशविरित लही, त्रण पत्योपम युगलीयानुं तथा तिहांची एक पत्थोपम देवायु नोगवी फरी, मनुष्यपणे संयम लड़ने यैवेयकें मि व्यात्वीपणे एकत्रीश सागरोपम देवायु नोगवी श्रंत समयें सम्यक्त लही, फरी मनुष्यचनें चारित्र लही, विजयादिक विमानें वे वखत तेत्रीश तेत्रीश सागरोप

आहारक शरीर अने आहार iगोपांग, ए । हार हि · ( निरयुजोय गं के º ) नरकगति, नरकानुपूर्वी, ए नर ६ तथा उद्योतना ने ।तपना ए उद्योत दिक ए सर्व एकवीरा प्रकृतिनो सततबंध, अंतर मुहूर्त लगें विष्याल अने साखाद न गुणवाणे होय. अहीं आं आहारकि नो बंध मिण्याल तथा साखादन, ए वे गुण वाणे न जाणवो तथा (थिर केण) ए 'स्थिर, बीजी (सुन केण) न, त्रीजी (जस के॰ ) यशःकीर्त्ते, ( थावरदस के॰) स्थावर दशको, ए तेर प्रकृति पण सप्रतिपह मिच्यात्वें बंधाय, तेथी एनो अंतर हूर्न लगें उत्कष्टो सततबंध जाणवोः तथा (नपुर ही के ) नपुंसकवेद अने स्त्रीवेद, ए वे मोहनीयनी प्रकृति पण अंतर हूर्न अं तर मुहूर्त परावर्तें मिथ्यात्वें बंधाय. एवं व शिश प्रकृति थइ तथा ( जुअल के॰) हास्य अने रित तथा शोक ने अरित, ए बे युगलनी प्रकृति पण बंधिवरोधिनी नणी बहा णवाणा लगें परावर्तें अंतर मुहूर्न प्रमाण बांधे, हो पण सात्मे अने आवमे गुणवाणे निःप्रतिपक्ष्पणे हास्य अने रति ए ए गुगल बंधाय है. तो पण ए बे गुणवाणानो । ल अंतर मुहूर्त्तनो होय. तथा ( सायं के०) अ शातावेदनीय पण शातावेद शियने परावर्ते अंतर मुहूर्न प्रमाण, उठा सुधी बंधाय. ए एकतालीश प्रकृतिनो एक समयधी मांमीने उत्कृते अंतर हू र्न लगें सततवंध होय. जे नणी ए अध्रुववंधिनी परावर्त्त मान प्रकृतिने ते बीजी पोतानी विरोधिनी प्रकृतिना बंधसामग्रीने सङ्गावें खंतर दूर्न परावर्ते बंधाय.

एमां स्थिर, ग्रुन अने यश, ए त्रणनी विरोधिनी अस्थिर, अ न अने अय श, ए त्रणनो वंध वहा ग्रुण णा सुधी होय. तिहां लगें परावर्ते अंतरमुहूर्त पर्यंत सततवंध जाणवो आगले ग्रुणगणे जो पण ए विरोधिनी प्रकृतिनो बंध न थी, तो पण दशमा ग्रुणगणा लगें केवल यशःकीर्तिनो वंध हे ते पण अंतर हूर्न लगें जाणवो. तेथी सर्व ग्रुणगणे एकज अंतर मुहूर्न पर्यंत बंध होय ॥६१॥

समया दंत सुहुत्तं,मणु इग जिए। वइर ठरेलुवंगेसु॥ तित्ती सय रा परमो, अंत मुहूलहुवि आठ जिए।।। इति स्थितिबंधः॥

अर्थ- ए पूर्वोक्त एकतालीश प्रकृतिनो (समयादंतमुदूत्तं के०) एक समयणी लड्ने अंतर मुदूर्त्त लगें सततवंध द्योय. तेमज (मणुड्ग के०) मनुष्यिद्धक, (जिण के०) जिननाम, (वड्र के०) वज्यक्पननाराचसंघयण, ( वर्लुवंगेसु के०) छोदारिकांगोपांग, ए पांच प्रकृतिनो (तित्तीसयरापरमो के०) तेत्रीश सागरोप

े त्रु सत बंध होय, । (अं मुहूलहुवि के०) अं र हूर्न प्रमाण जघन्यची पण त बंध (आजिज । के०) चार । : मेनी प्रकृति अने पां ं जिनना में पण होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ६२॥

ए पूर्वोक्त, ए तालीश प्रकृतिनो ए स यथी ांभीने अंतर हूर्न लगें नि रंतरबंध होय जे जणी ध्रुवबंधिनी हे ते ाटें ते पही अवस्य परावर्न थाय.

नुष्यगति, ष्या पूर्वी, जिनना मे, वज्रक्षननाराचसंघयण ने छौदारि ंगोपांग, ए पांच प्रकृतिनो निरंतरपणे बंध होय तो **उत्कृ** धी तेत्री श सागरोपम पर्य होय, जे नए। कोइ अनुत्तर सुरने ष्य प्रायोग्य प्रकृति नो बंध हो, तेथी ते सदा । ल चोथे ग्रणवाणे होय. ते नणी तेहने नव प्रथ स यथी मांमीने तेत्रीश सागरोपमना ढेझा स य लगें एनी विरोधिनी नर ि , तिर्यचिह्न, देविह्न, वैत्रियिह, ने पांच न, संघयणादि नो नव प्र येंज बंध न होय तथा जिननामनी विरोधिनी प्रकृति ोइ नथी. तेथी ते पण सम्यक्प्रत्ययें करी, तेत्रीश सागरोप लगें निरंतर पणे बंधाय. अहीं आं पण एक जिननाम विना शेष चार प्रकृतिनो जघन्य बंध स य मात्र है. उपरांत परिणाम चेदें विरोधिनी प्रकृति बांधे, ते पेक्सायें खेवो तथा पूर्वें चार ायुनो निरंतर वंध कह्यो हे. ते मतें चार आर्युनो तथा जिननामनो जघन्यपदे पण अंतर मुहूर्त्तमात्र सतत वंध होय, पण ते उत्कष्टनी अपेक्सयें तो जयन्यवंध मुहूर्त विशेष हीन पणे जाणवो. जे नणी अंतर हूर्तना असंख्याता नेद हे. माटे जिननामनो जघन्य स तत वंध अदाक्यें उपराम श्रेणीयी पहतां आतमा गुण णाने उपांत्य नागें आ वतो जिननाम वंध करतो आवमुं, सातमुं गुणवाणुं स्पर्शी वली श्रेणी चढतां आ वमाने अंत्यनागें जिननामनो अवंधक याय तेनी वचमानो अंतर मुहूर्न बंधक होय. ए रीतें उत्कृष्ट तथा जघन्यथी मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध छने ए स्थितिबंधना स्वामी तथा सादि अनाद्यादिक चार नेद, चौद जीवनेंदें स्थि तिस्थानकनुं अल्पबहुत्व, योगस्थानकनुं अल्पबहुत्व, स्थितवंधनुं जघन्य अने च त्रुष्ट आंतरं तथा अध्ववंधिनी प्रकृतिना जघन्य उत्कृष्ट सत्ततवंध कह्या ॥६१॥ ह्वे अनुनाग एटले रसवंध कहेवानो अवसर हे, ते माटे तेनी व्याख्या करे छे. तिह्रां प्रथम अनुनागनुं स्वरूप कहे छे. तिहां सर्व जयन्य कर्म वर्गणाने विषे पण सर्वे जीवथी अनंत गुणा परमाणु होय. वली एकेका परमाणुआने विपे प

ण जघन्य पदें सर्व जीवधी अनंत गुणा रसविनाग पिल हेट होय जे रसनो ना

ग केवलीनी बुदिरूप शस्त्रें करी पण याय नहीं, एटखे केवली पण जे रसनी विनाग कल्पी न शके, ते अविनाग पत्नी बेद एने नावाणु हीयें. तिहां एक इव्य परमाणु सर्व जीवधी अनंत गुणा रसाविनागें युक्त तेना सरखाज जे बीजा पर माणु तेनो समुदाय ते समान जातिय माटें प्रथम एक वर्गणा कहीयें ते थकी वली एक रसाविनागें अधिक परमाणुनो समुदाय तेनी ्रीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेका रसाविचागें चढता चढता परमाणु तेना स दाय समुदायनी एकेकी वर्गणा करता जर्दें, ते अजव्य जीवधी .नंत युणी अने सिद्जीवना अनंतमा नाग परिमाण निरंतर वर्गणानो सम्रदाय ते प्रथमस्पर्दक होय. जे नणी प्रथम स्पर्दकनी उत्कृष्टी वर्गणायें जे रसाविनाग हे. ते थकी एक वें त्रण संख्याता त था असंख्याता अविनाग पली हेद वधतां परमाणु न पामीयें परं सर्व जीव थकी अनंतग्रुणे रसाविनागें वधता परमाणु तेनो स दाय ते बीजा स्पर्वक नी प्रथम वर्गणा जाणवी. वली तेथी एक रसाविनागें वधती बीजी वर्गणा एम् वली एकेका रसाविनागें वधती वधती जेवारें अनव्य जीवधी अनंत ग्रणी वगें णानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्कक होय. ते बीजा स्पर्क नी उत्कृष्ट व र्गणायी वली सर्व जीवयकी अनंतग्रणा रसाविनागें वधता परमाणुनो स मुदाय ते त्रीजा स्पर्धकनी प्रथम वर्गणा. ते थकी वली एक रसाविनागें वधता परमाणुना समुदायनी बीजी वर्गणा. एम वली पण अनव्य जीवथकी अनंत ग्र णी वर्भणानो समुदाय थाय, तेवारें त्रीजो स्पर्धक थाय, एवा अनव्य जीव थ की अनंतग्रणा स्पर्दकें एक अनुनाग एटले रसनुं स्थानक होय. अंहीं सधला स्पर्धकने आंतरे सर्वजीवधी अनंतगुणी शून्य वर्गणा उते.

ते द्वे स्का अमिकायना जीवयी तेनो कायस्थित काल असंख्यातगुणो हे. ते यकी पण असंख्यात गुणां अनुनाग स्थानक थायः तिद्धां एक कंमक मात्र अनंतनाग वृद्धि स्थानक (१) पही बीजो वली असंख्यात नाग वृद्धिस्थानक (१) एम कंमक मात्र स्थानकने आंतरें, आंतरें, एकेक असंख्यात नाग वृद्धिस्थानक लेतां कंमक वर्ग प्रमाण स्थानकें संख्यात नाग वृद्धिस्थानक (१) कंमक धन प्रमा ण स्थानकें संख्यात गुणवृद्धिस्थानक (४) कंमकवर्ग वर्ग प्रमाण स्थानकें अ मंख्यात गुणवृद्धिस्थानक (५) कंमक धन प्रमाण स्थानकें अनंतगुण वृद्धि स्थानक (६) तेवे कंमकें पट्स्थान वृद्धिपणे होयः अद्दीआं सूदमितने समजा ववा नणी कल्पनायें सर्व जीवयी अनंत गुणाने एकशो लेखवीयें, ते एकाहि कें वधती अनव्यथकी अनंत गुणाने पांच, जेखवीयें, एट जे एक शो उपर एका दियी पांच पर्यंत प्रथम स्पर्धक, पढ़ी बरों उपर एका दियी पांच पर्यंत बी जो स्पर्धक, त्रणशें उपर एका दियी पांच पर्यंत त्री जो स्पर्धक, चारशें उपर एका दि यी पांच पर्यंत चो थो स्पर्धक, एनी स्थापना सविस्तर में पयडी यी जाणवी

अहीं आं रागादि ने वश यको जीव, सिन्दने नंतमे नागें अने अनव्य थ की अनंतग्रणा एटला परमाणुयें निष्यन्न मेस्कंधना दलिया जूदा जूदा स य, स य हण रे हो. ते दलीयाने विषे परमाणु दीव षाय विशेषयकी सर्व जीवय ही अनंत णा अ नाग एटले रस विनागना पिलक्षेद होय. तेनी सक्षे प व्याख्या री. हवे आगल सुत्रें हे हो.

> तिवो च्यसुह सुहाणं, संकेस विसोहिड विव यर्।। मंद्रसो गिरि महिरय, जलरेहा सरिस कसाएहिं॥६३॥

अधी-( असुह के 0) ग्रुन जे पाप प्रकृति तेनो माठो कडवो रस लींबडादिकनो रस जेम सहेजनो एक वाणीर्र ते कटुक रस होय, ते अधि उपरें काढतां शेरनो अर्द्धशेर रहे, ते कटुकतर बेंगाणीत र जाणवो, अने शेरनो त्रीजो नाग रहे, ते त्रिवाणीर्छ रस, कटुकतम जाणवो अने शेरनो पाशेर रहे, ते (तिवो के०) तीवरस चोगाणीर्च अति कटुकतम होयः तेमज (सुहाणं केण) ग्रुन जे पुल्य प्रकृति तेनो रस, ज्ञेलडीनी पेरें मधुर. जेम ज्ञेलडीनो एकवाणी रस सहेजनो मिष्ट, वेवाणी ड मिएतर, त्रिवाणीर्च मिष्रतम, चोवाणीर्च अत्यंत मिष्रतमः वली तेहीज मीवा रस मांहे एक चलु पाणी घालतां मंद थाय. पशली नर पाणी घालतां मंदतर थाय. करवो, मोरी मात्र पाणी घालतां मंदतम थायः घडो पाणी जेलतां अत्यंत मंद्रतम थाय एम कडवामां पण कडुक पणुं मंद्र, मंद्रतर, मंद्रतम, तथा अत्यंत मद होय. एम अनेक चेद रसने वंधे तथा उद्यें होय. ए रसनुं तरतम पणुं कपा यने तारतम्यपणे होय जेनणी मंद कषायें पाप प्रकृति मंदरस पणे वांधी होय. तेने वली कपायनी तीव्रतायें, तीव्ररस पर्णे अग्रुन अध्यवसायें करी नोगवे. तेमल वली ग्रुन अध्यवसायें करी नोगवे तो जे प्रकृति तीवरसपणे वांधी होय, तेने पण मंदरसें करी नोगवे, एटले व्याशी पाप प्रकृतिनो उत्कृष्ट कटुकरस चोठा णीर्र ते ( संकेस केण) अत्यंत संक्षेत्रों तीत्र कपायोदयें करी अत्यंत कट्क चोता णीर्र रस वंधाय अने ग्रन वेंतालीश पुर्णप्रकतिनो रस, कपायोदय मंदतारूप

(विसोहित के०) अतिवि हाध्यवसायें री चोगणीत रस ति ति वि बं य, अने (विव यत्र के०) एथी विपरीत पणे एट हो सं शनी मंदतायें अने विश्विहित्ती वृद्धियें ह्याशी पाप प्रकृतिनो (मंदरसो के०) मंद, ंदतर, मंदतम, ने अतिमंदतमरस बंधाय अने विश्विद्धाध्यवसायनी हाणीयें लिनपरिणामनी वृद्धियें वेंतालीश पुल्यप्रकृतिनो रस, मंद, मंदतर, मंदतम बंधाय तथा तेमज न प्रकृतिनी उद्देना पण वि द्धाध्यवसायें होय ने शुनप्रकृतिनी उद्देना सं शाध्यवसायें होय ने शुनप्रकृतिनी उद्देना सं शाध्यवसायें होय तेम नप्र तिनी रसापवर्त्तना शुनपरिणामें होय ने अ न प्रकृतिनी रसापवर्त्तना नपरिणामें होय.

(गिर के॰) पर्वतनी राय सरखो अनंतानुबंधी होध, ते नंता बंधी आ मानादिक पण खेवा. तेना हद्यें अतिसंद्वि मिलन परिणामी जीव, पाप प्रकृतिनो अतिकटुक चो णीड रस बांधे तो पण बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो बेगणी छ रस बांधे. जे नणी शुन प्रकृतिनो ए ठाणीड रस बंधाय नहीं, माटें बेगणी ड कह्यो, अने हद्यमां एक णीड पण होय. ते वारें अतिसं शें री बेगणीड रस, तेने एकठाणीड करी हद्दीरे वेदे.

तथा (मिह के०) तलाव ध्यें पाणी ग्रकाणा पठी ाटीनी राय ते सरी खो अप्रत्याखनी कोध जाणवो तेमज अप्रत्याखनी आ ाना दिक त्रण पण खेवा. तेना उद्यें संक्षेशपरिणामें ज तथा अग्रुन प्रकृतिनो रस त्रिवाणी बंधा य पण एट खुं विशेष जे, चढते परिणामें ग्रुन प्रकृतिनो रस बंधाय, अने पडते परिणामे अग्रुन प्रकृतिनो रस बंधाय. एक स्थानकमध्यें पण चढतां पडतां रसस्थानक असंख्यातां असंख्यातां हो.

तथा (रय के॰) रज एटले धूलमांहेली रेखा ते सरखो प्रत्याख्यानीर्ड क्रोध जाणवो. तेमज प्रत्याख्यानीया मानादिक त्रण पण लेवा तेना उदयथी पाप प्रकृतिनो वेठाणीर्ड खने पुण्यप्रकृतिनो चोठाणीर्ड रस बंधाय, तेमध्यें मंद्रस बांधे

प्रकातना वेगाणां छन पुर्लप्रकृतिना चीगणीं रस वंधाय, तेमध्ये मंद्रस वाध-तथा (जलरेहासिरस के०) पाणीनी रेखा सरखो संज्वलन ोध तेमज मा नादिक पण लेवा. एना उद्धें पुर्लप्रकृतिनो तीव्र चोगणीं रस बंधाय छने पा पप्रकृतिनो एकगणीं रस बंधाय. ए रीतें अग्रुच प्रकृतिनुं अनतानुवंधीये अप त्याख्यानीए, प्रत्याख्यानीए तथा संज्वलनें (कसाएहिं के०) कपायें करी अनुक्र मं चोगाणीं , त्रिगणीं , वेगणीं , एकगणीं , रसबंध थाय. तथा ग्रुच प्रकृतिनो संक्वलनं प्रत्याख्यानीए. अप्रत्याख्यानीए. अनतानुवंधीए, करी चोनाणीआदिक अनुक्रमं रस वंधाय, ते कहे ने ॥ इति समुचयार्थः ॥ ६३ ॥

> चे गणाई असुदो, सुद्वहा विग्घ देस आवरणा॥ पुम संजलिणिग इति चेन, गण रसा सेस ङगमाई॥ ६४॥

अथे—(चवनणाईअसुहो केण) गिरिरेखा समान अनंतानुवंधीआ कपायें करीने असन प्रकृतिनो रस चोनणीवंधाय, प्रथविरेखा समान अप्रखाख्यानीया कपायें करी असन प्रकृतिनो रस, त्रिनणीवं वंधाय, रलरेखा समान प्रत्याख्यानीया कपायें करी असन प्रकृतिनो रस वेनणीवं वंधाय, जलरेखा समान संन्वलन कपायें करीने असन्प्रकृतिनो रस एक नणीवं वंधाय, अने (सहस्रहा केण) सन प्रकृतिनो रस, एथी अन्यया कहेवो, एटखे जलरेखा अने रलोरेखा समान संन्वलन तथा प्रत्याख्यानीआ कपायें करीने समान चानणीवं वंधाय, प्रथविरेखा समान अप्रखाख्यानीआ कपायें करीने स्थाप प्रकृतिनो रस चानणीवं वंधाय, प्रथविरेखा समान अप्रखाख्यानीआ कपायें करीने स्थाप प्रकृतिनो रस त्रिनणीवं वंधाय, गिरिराय समान अनंतानुवंधीया कपायें करीने समान अन्यक्तिनो रस वेनणीवं वंधाय. अने एकनणीवं रसतो सम प्रकृतिनो नल वंधाय. हवे ने प्रकृतिनो जेटले प्रकृति रस वंधाय, ते कहे हे.

(विग्य केंग्) पांच झंतराय, (देसञ्चावरणा केंग्) केवलिक वर्जीने शेष चार ज्ञानावरणीय तथा त्रण दर्शनावरणीय, एवं सात. (पुम केंग्) पुरुषवेद, (संजलण केंग्) चार संज्वलना कपाय, एवं सत्तर प्रकृतिनो रस (इग केंग्) ए कठाणीर्ड, (इ केंग्) वेठाणीर्ड, (ति कंग्) त्रिठाणीर्ड, (चठठाणरसा कंग्) चार ठाणीर्ड रस पण वंथाय. एटले एसत्तर प्रकृतिनो रस, चार प्रकारें वंथाय. तेमध्यें एनो एकठाणीर्ड रस तो नवमा गुणठाणाना संख्याता नाग गया पठी वंथाय छने तथी नीचेना गुणठाणे वेठाणीञ्चा, त्रिठाणीञ्चा, छने चोठाणीञ्चा रस वंथाय छने तथी नीचेना गुणठाणे वेठाणीञ्चा, त्रिठाणीञ्चा, छने चोठाणीञ्चा रस वंथाय छने प सत्तर प्रकृतिथी (संसङ्गमाई केंग्) शेप रही जे एकशो त्रण प्रकृति, तेनो वेठाणीञ्चादिक रस वंथाय पण एकठाणीर्ड रस, न वंथाय जे नणी तमध्यं छञ्च पा प प्रकृति पांश्रठ हो. ते तो नवमे गुणठाणे वंथातीज नथी, तथी तेनो एकठाणीर्ड रस न होप एमांची जो पण केवल झानावरणीय तथा केवल दशेनावरणीय एवं प्रकृतिनो रस, एकठाणीर्ड न होप छने वेतालीश पुष्य प्रकृतिनो रस तो एकठाणीर्ड नज वंथाय. जे

नणी असंख्याता लोकाका प्रदेश प्र एण सं शनां स्थान ने तेथकी कांइ एक जा जेरां विद्युद्धिनां स्थान ने ए बे यद्यपि व्य ने तथापि तेमांहे वि द्वि स्थानक कां इक अधिक ने जे माटें उपश श्रेणीयें वि द्वि स्थानक ं चहे ने अने पहतो पण ते टलेंज संक्षेश स्थानक ं पाने उत्तरे ने एटले तुख्य ने चहवानां जेटलां विद्युद्धि स्थान क, तेटलांज उतरतां सं शस्थान होय, जेम प्रासाद उपर चहवानां जेटलां पगथी आं तेटलांज उतरवानां पण पगथीआं होय पण क्ष्पकश्रेणीना जे विद्युद्धिना अध्यवसाय स्थानकें चहे ने, ते पाने उतरतो नथी तथी संक्षेशस्थान तेटलां उंग होय, अने विद्युद्धिस्थान अधि ने तिहां अतिवि दिस्थानकें ग्रुप्प पर्वेतां होय, अने नरकप्रायोग्य बांधतां त्यंत संक्षेशस्थानकें ज प्रकृतिनो वंध न होय, अने नरकप्रायोग्य बांधतां त्यंत सं शें वैत्रिय, तैजस ने भिणादि क जे ग्रुप्प प्रकृति वंधाय ने ते पण तथा स्वनावें बेगणीआरसें बंधाय, पण ए कगणीआ रसें न बंधाय, तथा पूर्वे संज्वलन कषायोद्यें करी पाप प्रकृतिनो एकगणी रस बंधाय. एम कहां ते पण स्थुलनयें कहां. जे नणी संज्वलने उद्यें पाप प्रकृतिनो बेगणी उपण रसबंध होय. ए रीतें स्थानक, प्रत्यय, प्रकृपणा कही॥ इथा हवे नाग्रुप्प रस स्वरूप कहे ने.

निवु इन्जरसो सहजो, इ ति चन नाग कि इक नागं तो ॥ इग नाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥ ६॥॥

अर्थ—(निबुइनुरसोसहजो केण) जींबडानो रस सहेजें कडवो होय अने रहें एटले ग्रेलडीनो रस, सहेजें कवाणी होय तेम पापप्रकृतिनो रस सहेजें क डवो अति उदेगहेतु होय, ते एकवाणी कहीयें अने बेंतालीश पुल्य प्रकृतिनो रस सहेजें इष्ट आनंदहेतु होय ते एकवाणी कहियें. तिहां हृष्टांत कहे हें (इतिच उनागक दिइक नागंतो केण) वे नागनो रस काढी उकालीने एक नागनो राखीयें तेने वे वाणी कहियें, त्रण नागनो काढी उकालीने एक नागनो राखीयें तेने विवाणी कहियें अने चार नागनो काढी उकालीने एक नागनो राखियें, तेने विवाणी कहियें अने चार नागनो काढी उकालीने एक नागनो राखियें, तेने वोवाणी कहियें अने चार नागनो काढी उकालीने एक नागनो राखियें, तेने वोवाणी कहियें एटले लींवडाना सहेजना एक ग्रेर रसने अग्नि उपर का ढतां अर्थग्र रहे ते पणो कडवो होय. तेम व्याशी पापप्रकृतिनो वे वाणी रस करुकतर अनिएतर होय, ग्रेलडीनो रस काढतां एकवाणी अर्थ हेग्रेर मात्र रहे ते मिएतर इएतर,होय. ते वे वाणी रस जाणवो तथा जे काढतां शेरनो त्रीजो

नाग त्र रहे ते त्रिवाणी उस होय ते ब्या । पाप कतिनो रस टु तम, अनि त होय बेंताजी अप्य प्रकृतिनो रस ि त ६ चित्त प्रसन्नतानो हेतु होय. ते त्रिवाणी उस जाणवो तथा जे रस काढतां थ ं शेरनो पा शेंर मात्र रहे ते चोवाणी उस होय, ते पुष्य प्रकृतिनो तो ग्रुन अत्यंत मिष्टतम, अत्यंत ६ त , आनंदहेतु होय अने पाप तिनो अत्यंत कटुकतम, अत्यंत अति तम, हाउदेग हेतु चोवाणी आ रसनो उदय होय ए मूढमितने समजाव वा हेतुयें दृष्टांत । अन्यथा कमेदलने विषे तो अनंत रसनेद होय हे

(इग्डाणाईश्रमुहो के ) ए रीतें श्रमु प्रकतिनो रस, एकवाणीश्रादिक ते (श्रमु हाण के ) श्र न पणे वधतो लेवो श्रने (सुहोसुहाणंतु के ) न प्रकतिनो रस, ग्रन मीवो वधतो जाय माटें ग्रनपणे वधतो लेवो श्रहींश्रां तु शब्दें विशेषण कहे हे.

पुरुषवेदादिक सत्तर प्रकृतिना एक वाणीया रस स्पर्धक संख्याता है. तेमध्यें जवन्य रस स्पर्धक पण असंख्याता है. तेह सहज जवन्य रस स्पर्धक ते लीं बडाना रस समान जाणवा. तेथकी बीजो रस स्पर्धक अनंतग्रण रसाविनागें अधिक जा एवो. एम अनंतग्रण रसाविनागें वधतां वधतां असंख्याता रस स्पर्धक एक वाणीया रसना होय. ते थकी अनंतग्रणवीय वाला बे वाणी आ रसना असंख्याता स्पर्धक होय, तेथकी अनंतग्रणवीय वाला त्रिवाणी आ रसना असंख्याता रस स्पर्धक हो य, तेथकी अनंतग्रणवीय वाला चोवाणी आ रसना असंख्याता रस स्पर्धक हो य, तेथकी अनंतग्रणवीय वाला चोवाणी आ रसना असंख्याता रसस्पर्धक हो य.

केवलङ्गानावरणीय प्रमुख सर्व घातिनी वीश प्रकृतिना रस स्पर्धक, एकवाणी आ न होय अने देशघातिनी प्रकृतिना चग्राणीआ तथा त्रिवाणिआ रसवाला ते सर्वधातिआ रसस्पर्धक जाणवा. ने बेवाणीआ रसवाला पण केटलाएक ग्रन्कष्ट रसवाला ते सर्व धातिआ जाणवा. तथा मंद रसवाला ते देशघातिआ रस स्पर्धक जाणवा तथा एकवाणीआ रसवाला जे स्पर्धक होय, ते देशघाति ज जाणवा ते स्पर्धक स्वरूपें कडानी पेरें स्थूल विड्वंत होय अने कोइएक कं बलना विवरनी पेरें मध्य विड्वंत होय अने कोइएक, स्रक्षवस्त्रनी पेरें विड्वंत लूखा मलीन होय अने जे सर्वधातीआ रस स्पर्धक होय, ते त्रांवाना पत्रानी पेरें निश्विड्वंत घृतनी पेरें चीकणा होय. ते अवरखनी परें निर्मल एवा जे जा नादिक आत्माना गुण आवरवा योग्य हो. ते सर्व आवरे

अने बेंतालीश पुर्ण्यप्रकृतिनो रस जवन्य पर्णे एक वाणीर्र न होय माटें वे वाणीर्र सहेजें शेलडीना रस सरखो जवन्य रसस्पर्कक होय तेथी। अनंतगुण वृ दिगत रसें बीजो स्पर्क एम नंते अनंत एविद्यें बेवाणीए रस स्पर्क सं ख्यात स्थानक पूर्ण थाय तेथ ही वली अनंतगुणवीर्य वधतां वधतां असं ख्याता रस स्पर्क त्रिवाणीआना जाणवा तेथकी अनंतगुण वीर्य वृद्धिगत चववाणीआ रसस्पर्क, तेपण असंख्याता जाणवा. ए सौ घातिआ जाणवा. ए घाति तथा अघाति ए ए स्थान दिक रसनी अपेक् यें होय ॥ इति ॥ इति ॥ दि ॥ योत्क एरसबंधना स्वामी देखाडे हें

तिव मिग घावरायव, सुर मिन्ना विगल सुद्धम निरय तिगं ॥ तिरि मणु च्या तिरिनरा, तिरिङ्ग बेव सुर निरया॥ ६६॥

र्थ-(मिगयावरायव के०) एकेंड्य ति, स्यावरना ने आतपनाम, ए प्रण प्रकृतिनो (तिव के०) तीव्र एटले चोगाणी उत्क रसबंध (सुरमिन्ना के०) ईशान देवलोक पर्यंतना मिण्याली देवताने होय, ते मध्यें आतपनामकर्म, पुष्प प्रकृति हे. अने तेनो वंध मिण्यात्वेंज हे था तेनुं संक्षेशपणुं अने विद्युक्षणुं ए वेहु मिण्यात्वेंज हे. जे नणी पनो तीव्ररस बंध, मिण्याली देवताने तत्प्रा योग्य विद्युक्षियें लेवो. बीजी तिना बंध ति संक्षिष्ट लेवा, जे नणी एवा संक्षेत्रों वर्त्तता जो म ष्य तथा तिर्यंच होय तो ते नरक प्रायोग्य बांधे, तेथी ते न लीधा तथा नारकी अने सनत्कुमारादिक देवलोकना देवता तो जब प्रत्ययेंज एकें ड्रिय प्रायोग्य ए प्रकृति नथी बांधता, तेथी ते पण एना अधिकारी नथी. अने सौधर्म. ईशानना सम्यक्ष्टि देवता तो मनुष्य प्रायोग्य बांधे हे. तेथी ते पण एना बंधाधिकारी नहीं अने जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी. सौधर्म अने ईशान देव लोकना मिण्याली देवता, आतपनी लघुस्थिति बांधतां एकेंड्यजाति तथा स्था वरनाम कर्मनी उत्कृष्ट स्थित बांधतां तीव्ररसें बांधे.

(विगल के०) विकलित्रिक (सुहुम के०) सुद्धा, अपर्याप्त अने साधारण, ए सूद्धात्रिक, (निरयितगं के०) नरकित्रक अने (तिरिमणुआ के०) तिर्यवायु छने मनुष्यायु, ए अगीआर प्रकृतिना उत्कृष्टरस वंधना अधिकारी सिन्नआ पं चंडिय पर्याप्ता मिण्यादृष्टि संख्याता वर्पायुवाला तत्प्रायोग्य संक्षेत्रों वर्तता एवा (तिरिनग के०) मनुष्य अने तिर्यच होय जे नणी ए मांहेली पहेली नव प्रकृतिनो वंध देवता नारकीने तो नव प्रत्ययेंज नथी, अने मनुष्य तिर्यचायुनो जो पण देवता नारकीने वंध वे, तो पण एनी उत्कृष्टी हियित, त्रण पत्थोपम प्र

ण वांधतां चत्क रस बंधाय. तेवो बंध तो देव या ार ीने युगली ाना नो बंध यी ते ॥ न बंधाय अने सास्वादन ग्रणगणे पण घोलना परिणामे ए वही स्थित न बंधाय, तेथी ते सास्वादन विना मिथ्यात्वीज चत्क रसना बंधाधि ारी लीधा या गलीआ पण चत्क ण पत्योप थायु न बांधे, ाटें ते पण न लीधा अने मिश्रादि ग्रणगणे व्य तथा तिर्थेच संख्याता वर्षा वा लाने पण ए बे आ नो बंध नथी ते । दें मिथ्यात्वीज लीधा तथा अति संहि

ायुःकमे न बांधे, तेथी तत्प्रायोग्य सं हों वर्षताज हण एट बे चौद प्रकृतिना उत्क रस, बंधाधिकारी । छहीं। नर दि नो उत्कृष्टरस सर्व सं क्षिष्ट ष्य तिर्येच मिण्यात्वी बांधे, ते ति संिह एपणुं उत्कृष्ट बे स य जमें र हे, ने होष उ तिना बंध तत्प्रायोग्य संिह परिणा शि बेवा, जे नणी छति संिह जीव, नर प्रायोग्य बांधे हे, तथा नरका युपण छति संक्षेहों वंधाय हे.

(तिरिंड्य के॰) तिर्यचगित, तिर्यचानुपूर्वी, ए तिर्यचिद ने (ग्रेवच के॰) ग्रेवचुं संघयण, ए ण प्रकृतिनो उत्कृष्ट रसवंध तो तिसंक्षिष्टें मिध्याली (सुर के॰) देवताने होय, जे नणी एवा संक्षिप्ट परिणामें वर्तता म ष्य, तिर्यच तो नर प्रायोग्य बांधे ने देवताने नव प्रत्ययें नरक प्रायोग्यनो बंध नथी, तेथी ते ग्रेणे एतिर्यच गित प्रायोग्य बांधे, तेथी मिध्याली देवता तथा मिध्याली (निर्या के॰) नारकी एना बंधाधिकारी लीधा. तेमध्यें पण ग्रेवचा संघयणना उत्कृ

रसंबंधना स्वामी सनत्कुमारादिकथी मांमीने सह ारांत देवता होय जे नणी छ वनपति, व्यंतर, ज्योतिषी छने सौधमे, ईशान देवलोकना देवता, मिण्यात्वें एवे संक्षित्रों वर्त्तता एकेंड्य प्रायोग्य नामकमेनी प्रकृति बांधे, परंतु ते छेवहा संघय एना छातुत्कृष्ट रसवंधक होय, तेथी ते न लीधा. तथा सम्यक्ष्हृष्टि देवने ए त्रण प्रकृतिनो बंध नथी, तेनणी ते पण न लीधा ॥ इति स च्यार्थः ॥ ६६ ॥

> विनुवि सुरा हारग इग, सुख गइ वन्न चन तेय जिए सायं॥ सम च परघा तस दस, पणिंदि सासुच खव गान ॥ ६७॥

अर्थ-(विज्ञवि के॰) वैक्रियश्ररीर. वैक्रियश्रंगोपांग, ए वैक्रियिक तथा (सु राह्रारगड्डग के॰) देवगति, देवानुपूर्वी. ए सुरिह्क अने आहारकिहक तथा (सु खगई के॰) शुनखगति, (वन्नचं के॰) शुन वर्ण चतुष्क, (तेय के॰) तैज स, कामेण, अग्रुरुलघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क, (जिण के॰) जिननामक मी, (सायं के 0) शातावेदनीय, (समचन के 0) स चतुर संस्थान, (परघा के 0) पराघात, (तसदस के०) त्रसदशक, (पिएंदि के०) पंचेंड्यिजाति, (सासुच के०) श्वासोब्वास, जैगीत्र, ए बत्रीश पुर्ण्यप्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंधक (खवगाउ के 0 ) क्रपक एट छे क्रपकश्रेणीयें चढतो मनुष्य तेने क्रपक कहीयें. जेम राज्य योग कुंवरने राजा कहीयें, तेम चारित्र मोहनीय क्रपणी क्रपकश्रेणी जेणे आ रंनी, तेने क्षक कहीयें, ते मध्यें पण शातावेदनीय, उज्जैगींत्र अने त्रसद शक मांदेली यशःकीर्ति, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंधक सूद्धा संपरायने च रम नाग वर्क्ति क्रुपक होय. जे नणी ए त्रण प्रकृतिना बंधकमांहे एहिज अति विग्रुद्धि हे अने पुल्यप्रकतिनो जल्कष्ट रस बंध अतिविग्रुद्धियें होयः जेवारें आ पणा रस वंधस्थानक अनंत गुणविद्युद्धियें होय, तेवारें ए प्रकृति बंधाय तेनणी कही. तथा ए त्रण प्रकृतिविना शेष रही जे उंगणत्रीश पुर्वप्रकृति, तेना उत्कृष्ट रसबंध अपूर्व करणना सात नागमध्यें बहे नागें त्रीश प्रकतिनो बंध विह्नेद याय वे. तेमध्ये एक उपघात विना शेष उगणत्रीश प्रकतिने चरम बंधे ऋपकने अति विग्रुदि नणी चोगणिर्न रस बंधाय ए रंगणत्रीश प्रकृतिना वंधक मांहे एहज अति विद्युद्ध हे तेथी क्षपक मनुष्य, एना उत्कृष्ट रसबंधना स्वामी जाएवा. जे नणी देवता, नारकी तथा तिर्धेचने आवमुं ग्रणवाणुं न होय, तेथी ते एना अ धिकारी न कह्या. अने जो पण उपशमश्रेणीयें अपूर्वकरण तथा सूझासंपराय, ए वे ग्रणगणां होय हे अने तिहां ए प्रकृतिनो बंधे विशेद पण संनवे तथापि क्ष्पकश्रेणीना अध्यवसायस्थानकथकी कषायनी सत्ता सहित उपशमश्रेणीना अ ध्यवसाय स्थानक विद्युद्धिनी अपेक्सयें अनंतग्रणांहीन होय अने ग्रुन प्रकृति नो सर्वोत्रुप्ट रस वंधतो अतिविद्यु दियें बंधाय है. तेथी क्ष्पकश्रेणीना मनुष्य ज एना जल्कप्ट रसना बंधाधिकारी कह्या. एवं (४ए) प्रकृतिना जल्कप्ट रस वंधस्वामी कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६ ९ ॥

तमतमगा उक्कोयं, सम्मसुरा मणुय उरल इग वइरं॥ अपमतो अमराउ, चठ गइ मिलाउ सेसाणं॥ ६८॥

श्रथे-(तमतमगा के॰) तमतमा एवे गोंत्रें श्रने माघवती नामें सातमी नर क एथवी. तेना नारकी तथाविध श्रकाम निर्क्तरायें करी, कमें खपावतां थकां विग्रह परिणामें करी सम्यक्त पामवाने श्रथं यथा प्रवृत्तिकरण करें तिहां ध्रपूर्व वरणें करी अनंत गुणिव दियें हुल में खपाव i थिनेंदे अने अनिवृत्ति रणें री ि ध्यालनी स्थितिना बे नाग रे, ते अंतर रणथी प्रथम स्थिति, ने चरम समयें जेथ है आगले समयें सम्यक्त लेशे ते मिध्याल स्थितिने चर समयें (उ होयं के०) उद्योतना मेनो उत्कर रस बंध करे, तथा बीजा देव ता नार है तो एवी वि दियें वर्तता ध्य प्रायोग्य बांधे तथा तिर्यचतो जुष्य अने देवता प्रायोग्य बांधे अने सात है नरकना नारकीने तो नव प्रत्ययें देव तथा जुष्य प्रायोग्यनो बंध नथी, ते स्थानकें ए उद्योतनामनी पुष्य प्रकृति ति यैचगित सहचारी बांधे. एना बंधकमांहे एहज अत्यंत विद्युद्धि है.

(सम्मसुरा के॰) सम्यक्तवृष्टि देवता तो (मणुय उरल ग के॰) मनुष्यिक् क तथा औदारिकिक अने (वइरं के॰) वज्रक्षणनाराच संघयण, ए पांच पुष्यप्रकृति नुष्यगित प्रायोग्य अति विद्युद्ध सम्यकृष्टिष्ठ देवता, उत्कृष्टरसें बां घे, तेथी ते एना स्वामी जाणवा. जे नणी तिर्येच तथा मनुष्य एवी वि दियें वर्ततो देव योग्यज बांघे अने देवता एवी विद्युद्धि मनुष्य प्रायोग्यज बांघे तथी देवताज एना बंधाधिकारी लीधा अने मिथ्यालीने पण एवी विद्युद्धि न हो य तथी सम्यकृष्टिष्ठ देवताने नंदीश्यरें चैत्यवंदन, जिन ब्याणक महोत्सवादिक, जिनव्याख्यान श्रवणादिक अने सम्यक्तव उज्ज्वलतानां कारण होय अने नारकी सम्यकृष्टि ने पण एवा ।रणने नावें ए पांच प्रकृतिनो उत्क रस बंध न हो य, तथी ते एना उत्क रसबंधाधिकारी न कह्या. परंतु देवताज कह्या

( पमत्तो के०) अप्रमत्त ग्रुणस्थानकें वर्ततो साधु प्रमत्त ग्रुणगणाथी ( अ मराज के०) देवायु बंध करतो अप्रमत्तें चढे ते अतिविद्यक्षियें देवायुनी जल्क ष्टिस्थित तेत्रीश सागरोपमनी बांधतो जल्कष्टरस पणे बांधे देवायुनी जल्कष्टी स्थित अने जल्कष्टरस ए बेहु अतिविद्यक्षणो बंधाय, देवायुना बंधकमांहे एहि ज अति विद्यक्षंधस्थानक ने एम वेंतालीश पुष्य प्रकृति अने चौद पाप प्रकृ ति मली न्यान प्रकृतिना जल्कष्ट रस्तबंधस्वामी कह्या.

(चडगइमिन्नाडसेसाणं के०) ते थकी शेप ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, कपाय शोल, मिण्यालमोहनीय, नोकषाय नव, प्रथम संघयण विना शेष पांच संघयण, प्रथम संस्थान विना शेष पांच संस्थान, अग्रुनवर्णचतुष्क, अस्थिर पट्क, उपघात, कुखगित, नीचैगींत्र, पांच छंतराय. एवं छहशत प्रकृतिना उत्कृष्ट रसवंधस्वामी चार गितना पंचेंड्य पर्याप्ता मिण्यादृष्टि जीव जाण

वा, ते ांहे पण वचला संघयण चार श्रने वचला संस्थान चार, विद, पुरुष वेद, दास्य, रित, ए बार कित विना शेष उप्प प्रकृतिना उत्क बंधाध्यवसा य स्थान मांहे जे श्रत्यंत जिन संहि ध्यवसायस्थान होय, तिहां उत्क रस बंध रे ने हास्य तथा रितनो उत्क रस ध्य संक्षेत्रों बंधाय जे चणी उत् क्षेत्रों तो वेद ध्यें नपुंसकवेद श्रने हास्यादि ध्यें शोक तथा श्ररित बांधे छे. संस्थानमध्यें हुंमसंस्थान श्रने संघयण ध्यें छेवफुं संघयण ए उत्क रसें बंधाय, तेथी ए बार प्रकृतिनो रसबंध ध्यम संक्षेत्रों होय तेथी ए बार प्रकृतिना उत्क रसबंधाधिकारी ध्य सं श्री च गीत जीव जाणवा. एम श्रह्मतना उत्क रस बंधाधिकारी ह्या श्रने उप्प प्रकृतिना पूर्वें कह्या. एवं सर्व जी एक हो ने चोवी प्रकृति ध्वः तेना उत्क रस बंधाधिकारी कह्या. ते ध्यें वेताजीश पुष्य प्र ति ने ब्याशी पापप्रकृति जाणवी ॥ इति । ॥ इति

हवे ए एकशो ने चोवीश प्रकृतिना जघन्यरस बंधाधिकारी है है. जे नणी उत्कृष्टरस तथा जघन्य रस केवाथ है वचलां सर्व ध्यम रसस्थानक सुर्षे जाए्यां जाय, ते नणी जघन्यरस बंधना स्वामी है है ॥

> थीण तिगं अण मित्रं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिन्नो॥ बिय तिय कसाय अविरय, देस पमतो अरइ सोए॥ ६ए॥

अर्थ-( थीणतिगं के० ) थीण दीत्रिक, ( अण के० ) अनंता बंधी आ ीधा दिक चार, ( मिन्नं के० ) मिथ्याल मोहनीय, ए आठ प्रकृतिनो ( मंदरसं के० ) मंद एटले अत्यंत जयन्यरसना वंधाधिकारी ( संजमुम हो के० ) जे मनुष्य चारि त्रने सन्मुख थयलो एटले जे मनुष्य आगले समयें संयम सिहत सम्यक्ल पाम शे एवो अनिवृत्ति करणना चरम समयवित्तें ( मिन्नो के० ) मिथ्याली मनुष्य जा एवो. जे नणी ए आठ प्रकृतिना बंधकमांहे एवी विद्युद्धि बीजा स्थानकें न पा मियें, जो पण मिथ्यालीथी सास्वादनीना अध्यवसाय उन्नवल हे, तथापि सास्वादन गुणवाणुं तो पहतां होय हे. ते अपेक्षायें संक्षिष्ठ कहीयें, तेणे श्रीण की विद्युद्ध के अने अनंतानु बंधी आ चारनो वंध, सास्वादने मध्यमरसें वंधाय पण मंदरसें ति हां न वंधाय. ए आठ पाप प्रकृति हे. तेनणी एनो जयन्यरस विद्युद्धिं वंधाय ते विद्युद्धाध्यवसाय तो यंधिनेद करतां होय तेमांहे पण वली चान्त्रि सहित सम्यक्ल पिंचजनारनी विद्युद्ध अधिक होय हे. तेथी तेनेज लीधा अने सम्यक्ल पर्वा

पढ़ी तो ए छात प्रकृतिनो वंध नज होय, ते ाटें सम्यक्त प्राप्तियी पूर्वेजो सम य कह्यो तथा चारित्र सहित सम्यक्त छंगीकार करवाना छिधकारी मनुष्यज होय, तेथी मनुष्यज जीधा पण देवादि न जीधा.

(बिय के ०) बीजा अप्रत्याख्यानावरण कषायमोहनीयनी चो डीना ज घन्यरस बंधाधिकारी जे आगले स यें संय पडिवजरो, एवा (अविरय के ०) अविरति ग्रुणस्थान नें चर स यविंचे प्य जाणवा एना बंधकमांहे ए थ की धिक विद्युद्धिस्थान बीजुं ोई नथी अहींआं ोई ए देशविरति सं ने सन ख थयेलो जीव पण हे हे तथापि देशविरति संयमने सन खनी वि द्युद्धियकी वे विरति संयमने सन खनी विद्युद्धि अधिकी होय एम ब श्रुतें विचारनुं, तत्व केवलीगम्य एनो मंदरस, तिवि दियें बंधाय हे.

तथा (तिय साय के॰) त्रीजा षायनी चोकडी एट खे प्रत्याख्यानावरण चा र षाय मोहनीयनो मंदरसबंध, संयमने सन ख थयेलो जे आग खें स यें चारित्र छावस्य पामरो, एवो (देसे के॰) देशविरति मनुष्य जाणवो जे नणी ए ना बंधक मांहे एहिज अत्यंत विद्युद्धि हे छहीं छां संयम सन्मुख कह्यो माटें ति येंच न होय, तथा प्रमत्तादिक ग्रणवाणे प्रत्याख्यानी छानो वंध नथी, ते नणी देशविरति कह्यो तथा छाप्रत्याख्यानी छानो वंध छाविरतिने होय, ते नणी ते न जीधा संयमसन्मुख छाविरति सम्यक्ष्टिष्यी पण संयमसन्मुख देशविरति सम्यक्ष्यास्थानी छाना मंद्रस्यथी प्रस्यास्थानी छानो मंद्रस्य हीन होथ.

(पमनो कें।) प्रमन ग्रंणस्थानक वर्ति साधु जे आगले समयें अप्रमन था हो एवो साधु, प्रमन ग्रंणगणाना चरम समयें एक (अरइ कें।) अरितमोह नीय, बीजी (सोए कें।) शोकमोहनीय, ए वे प्रकृतिनो जघन्यरस बंधाधिकारी होय जे नणी ए वे प्रकृतिना बंधक मांहे एहिज अति विग्रुद्धि होय. एवी बीजे स्थानकें विग्रुद्धि न होय, अप्रमनादिकने विषे ए वे प्रकृतिनो वंध नथी, माटें प्र मत्तज क ो। एवं अढार प्रकृति यह ॥ इति समुज्ञ्यार्थः॥ ६ए॥

> अपमाइ हारग डगं, डिनेह असुवन्न हासरइ कुला॥ नयमुवघाय मपुद्यो, अनियही पुरिस संजलणे॥ उ०॥

अर्थ-( अपमाइ के॰ ) अप्रमादि साधु अप्रमत्त गुणवाणा यकी प्रमत्तं आव

तो होय, एट ले आग ले स यें प्र त अवश्य थरो एवो अप्रमत्त साधु, संक्षिष्ट थरो (हारगड़गं के०) आहार शरीर अने आहार गिपांग, ए वे नामकर्मनी प्रकृति नो जघन्यरसर्वंध करे. जे नणी ए वे पुण्य प्रकृति हे, हि एनो दरस संक्षेत्रों वंधा य. आहारकना वंधकमां हे एवो संक्षेत्र बीजे कोइ स्थानकें नथी, ते माटें. तथा मिण्यालादिक प्रमत्तांत ग्रुणवाणे तो ए हारक दि नो वंधज नथी, ने सा तमे तथा आवमे ग्रुणवाणे एनो वंध हे ते एवाणां तो एथी वि द हे. केम के प्रमत्तथी अप्र तें चढतो पण वि द हे. एवं वीश प्रकृति थइ.

( इनिद्द के ०) एक निज्ञा, बीजी प्रचला, ए निज्ञादिकः ( असुव के ०) अग्रुन वर्ण, अग्रुनगंध, अ नरस अने अ नस्पर्श, ( हासरइक्कु के 0) हास्य, रित अने ज्रयुप्ता तथा ( नयमुवघाय के ॰ ) नय ।ोह्नीय अने उपघात, ए अगीया र प्रकृति थइ. तेमां नव प्रकृतिनो मंदरस तो (मपुद्यो केण) अपूर्वकरणना मा आवमुं गुणवाणुं तेना सात नाग हे, ते दिला हहा नागने प्रांतें चर म समयें जवन्यरस बांधे अने निड़ा तथा प्रचला ए वे निड़ानो जवन्यरस अपू वैकरणना प्रथमनागें आपणा बंधना प्रबंधव्यवहिदयी प्रथम समयेंज जघन्यरस वांधे. ए अगीआर पाप प्रकृति हे. ते नणी अति विद्युहें मंदरसें बंधाय एना बंध कमां एहिज छति विशुद्धि हे केम के एथी छतिविशुद्धि छागले गुणवाएो हे खरी, पण तिहांतो ए अगीआर प्रकृतिनो बंधज नथी तथा अहीं आं पारमां कह्यों न थी तथापि ए अपूर्वकरण क्षपकश्रेणीनो छोवो केस के उपशम श्रेणीना अपूर्वकर ण यकी क्ष्यक श्रेणीनुं अपूर्वकरण अनंतग्रणुं विद्युद्ध ने अहीं आं कोइएक कहे ने के, एम कहेशो तो एना अजघन्य बंधने सादिसांत पणुं न संनवे ? केम के क्षक श्रेणीयी पडवुं नथी अने ते तो जघन्य वंधथी पडतो जेवारें अजघन्य रस बांधे, ते वारें अजघन्यनी सादि होय अने ऋपक श्रेणीयें तो जघन्यरस बांधीने वलतो छ वंधक थाय ते नए। ए वात विचारवा योग्य हे. एवं एकत्रीश प्रकृति थइ.

(श्रिनियद्दीपुरिससंजलणे केण) अनिवृत्तिकरण एवे नामे नवमुं ग्रुणवाणुं हे. जीव चारित्र मोहनीय खपाववाने पण त्रण करण करे. तिहां अप्रमत्त ग्रुणवाणुं यथा प्रवृत्तिकरण अने आवमुं ग्रुणवाणुं अपूर्वकरण तथा नवमुं ग्रुणवाणुं अनिवृत्ति करण, ते नवमा ग्रुणवाणाना पांच नाग करीयें, तिहां एकेका नागें अनुक्रमें पुरु प्रवृद्ध. संज्वलन कोध, संज्वलनमान, संज्वलनी माया अने संज्वलनो लोन, ए पांच माहनीयनी प्रकृतिनो वंध व्यववेद करे, तिहां पोतपोताना वंधने हेहले वंधं, मं

दरस वंध होय. एपांच पाप प्र तिनो विद्यु दियें मंदरस बंधाय हे. एपांचना बंध इ ांहे एहिज अतिविद्युद्धता हे. एवं हत्रीश कृति खड़॥ इति स चयार्थः ॥७०॥

विग्वावरणे सुहुमो, मणुतिरिच्या सु म विगल तिगच्या ॥ वे वि बक्क ममरा, निरया ोय रल इगं॥ ११॥

श्रथ—(विग्वावरणे के०) दानांतरायादि पांच श्रंतरायनी प्रकृति, तथा श्रा वरण एटले पांच ज्ञानावरणीय श्रने चार दर्शनावरणीय, ए चौद प्रकृतिनो जवन्य रसबंध स्वामी, (सुदुमो के०) सूक्ष्मसंपराय ग्रणस्थान वर्षि कृप श्रेणीवालो पो ताना बंधने चरम वंधें होय ए चौद प्रकृतिना जवन्यरस बंधमां हे एथी श्रिध वि ग्रुद्धि, बीजे कोइ स्थानकें नथी. ए पापप्रकृति है, माटें विग्रुद्धियें मंदरस बांधे.

(सुद्भम के ) सूद्धा, अपर्याप्त अने साधारण, ए सू त्रिक तथा (विगलति ग के 0 ) विकलजातित्रिक, ( आज के 0 ) चार गतिनां आयु, एवं दश प्रकृति त था (वेंचिव्वत के ) वैक्रियश्रीर, वैत्रिय अंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, न रकगित, नरकानुपूर्वी, ए वैत्रिय पट्क हीयें. ए शोल प्रकृतिना मंदरस बंध स्वामी (मणुतिरिद्या के॰) मनुष्यं ने तिर्यंच होय. ए शोल प्रकृतिमां देवत्रि क, वैक्रियिक, मनुप्यायु अने तिर्थगायु, ए सात पुख्यप्रकति हे, ते चणी एनो मंद्रस पोताना वंधाध्यवसायस्थानकमांहे जे मलीनाध्यवसाय स्थानक हे तेेेेेे करी पोताना बंधकमांहे जे अतिसंक्षिष्ट होय ते बांधे अने नरकत्रिक, सूच्यत्रिक तथा विकलजातित्रिक, ए नव पाप प्रकृति है ते नणी एना मंदरस बंधस्वामी पोताना वं धाध्यवसाय स्थानक मध्यें जेने घणुं वि दिपणुं होय ते एनो जघन्यरस वंध स्वामी होय, ए शोले प्रकतिना मंदरस बंधाधिकारी मनुष्य छने तिर्येच तत्प्रायो ग्य विज्ञिद्ध तथा संक्षेशें वर्तता होय जे नणी ए शोल प्रकृतिमध्यें मनुष्यायु श्र ने तिर्यगायु, ए वे छायु विना शेप चौद प्रकृतिनो वंध तो नव प्रत्ययेंज देवता तथा नारकीने न होय, तेथी ते, एना वंधाधिकारी नथी, तथा मनुष्यायु अने तिर्थगायुनो पण जघन्य स्थितिबंध करतां मंदरस वंधाय ते जघन्यस्थित तो कु झकनवरूप हो तेनो बंध देवता तथा नारकीने न होय, तेथी तेने मंद्रस न बंधाय.

( उक्कोय के० ) उद्योतनामकमे अने (उरलडगं के०) औदारिक शरीर अने औ दारिक अंगोपांग, ए त्रण प्रकृतिना जघन्यरस बंधाधिकारी ( ममरा के० ) मिच्या त्वी देवता तथा ( निरया के० ) नारकी होया जे नणी एना बंधाध्यवसायस्था नक मध्यें संक्षेश स्थानकें वर्तता तिर्यग्गति प्रायोग्य बांधता थ । एवा जीव होय, तेमांहे पण औदारि श्रंगोपांगना मंदरस बंध त्रीजा देवलोकथी मांमीने सह स्त्रारांत लगेंना देवता होय, जे नणी नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधमे श्रने ई ज्ञान, देवलोकना देवता तो एवे संक्षेशें वर्तता एकेंड्यप्रायोग्य बांधे, ते मध्यें श्रोदारिक श्रंगोपांगनो तो जघन्यरसबंध नथी, ते जणी ते एना श्रधकारी नहीं जाणवा तथा पर्याप्ता पंचेंड्य, मनुष्य, तिर्यच पण एवे संक्षेशें वर्तता नरकप्रा योग्य नामकमे बांधे, ते मध्यें ए त्रण प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी ते पण एना श्रधकारी न कह्या, श्रने मिथ्यात्वी देव श्रधकारी कह्या एवं ( ६ए ) थइ ॥४१॥

तिरि ङग नियं तमतमा, जिए मविरय निरय विणिगया वरयं॥ च्यासुढु मायव सम्मो,वसायियर सुह जसा सियरा॥५१॥

थे—(तिरिष्डण के०) तिर्थेचगित अने तिर्थेचानुपूर्वी, ए तिर्थेचिदिक. (निर्थ के०) नीचैगीत्र, ए त्रण प्रकृतिना जघन्यरसबंध स्वामी, (तमतमा के०) सा तमी नरक प्रथवीना नारकी सम्यक्त्वानि ख एवा मिय्यात्वने चरम समयें वर्न ता दोय, जे नणी एवी विद्युद्धियें वर्त्तता बीजा देवता तथा नारकी होय तो ते मनुष्य प्रायोग्य वांधे. अने सातमी नरकना नारकीने तो मिय्यात्व धकां नवप्रत्य येंज मनुष्य प्रायोग्यनो तथा उ गोंत्रनो बंध नथी तो ते स्थानकें ए त्रण प्रकृतिनो बंध करे, ए त्रणे पापप्रकृति हो. ते नणी विद्युद्धियें मंदरस बंधाय. एना वंधकमांहे एहिज अति विद्युद्धि हो, ते नणी ए एना अधिकारी कह्या.

(जिएमविरय के॰) जिननामकर्मना जघन्य रसबंधना स्वामी छविरति स म्यक्टिष्टि मनुष्य, जेएो नरकायु बांध्या पत्नी द्वायोपश्चिक सम्यक्त्व पामी, कथं चित् वली नरकें जातो सम्यक्त्व वमे ते सम्यक्त्व वमतां हेह्ने समयें जिननाम कर्मनो मंद्रस बांधे. एना बंधक पणामांहे एहिज छित संक्षिष्ट होय.

(निरयविण के०) एक नरकगित विना शेप त्रण गितना जीव, मिण्याली मध्यमपिरणामें वर्चता त्रस वांधी स्थावर बांधतां पंचेंडियजाित बांधीने (इग यावरपं के०) एकेंडियजाित नामकमें बांधतां तथा थावरनाम बांधतां घोलना परिणामी होय. जे नणी अवस्थित परिणामें रहेतां तेवी विद्यदि न होय, ते नणी परावर्चमान जीधा, तथा नारकी तो नव प्रत्ययेंज एकेंडियजाित अने स्था

वर मैनो वंध नथी रता, तेथी ते एना छिध रि। थी, ए वे प्रकृति, मि थ्यात्व प्रत्यि ही हो, ते नणी नारकी विना होप त्रण गतिना मिथ्यात्वी जीव, ए केंड्यजाति तथा स्थावरना कमैना ज्यन्यरस बंधाधि रि। कह्या.

(आसुद्ध के०) आ एटले मर्यादायें एटले सौधर्म लगेंना देवता जाणवा. अहींआं समश्रेणीयें बेद्ध देवलोक हे. ते नणी ईशान देवलोक पण लेवो एटले नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशानना देव देवी मिण्यादृष्टि अति संक्षिप्ट थका एकेंड्य प्रायोग्य बांधतां (आयव के०) आतप नामकर्मनो मंदर स बांधे, जे नणी मनुष्य तथा तिर्थेच, एवे संक्षेशें वर्नता नरक प्रायोग्य बांधे. तेथी ते एना अधिकारी नहीं अने सनत्कुमारादिक देवोने तो एकेंड्य प्रायोग्यनो वंधन नथी, तेथी ते पण न लीधा.

(सम्मोव के०) सम्यक्दृष्टि छयवा मिथ्यादृष्टि पंचेंडिय जीव, छंतरमुहूर्त छंतर हूर्नने फेरसारें (साय के०) शातावेदनीय, (धर के०) स्थर, (सह के०) ग्रुन, (जसा के०) यश, एचार प्रकृतिने (सइयरा के०) इतर सहित क रीयें एट खे शाता, छिस्थर, छ न छने अयश एम ए चारे एनी विरोधिनी परावर्तमान प्रकृतियें सहित रीयें तेवारें छाठ प्रकृति थाय. ते छंतरमुहूर्न शाता, छंतर मुहूर्न अशाता, ए रीतें घोलना परिणामें वांधतो ए छाठ प्रकृतिनो मं दरस बांधे, ते प्रमन गुणठाणा लगें बांधे, ने उपरक्षे गुणठाणे छध्यवसाय स्था नकें अवस्थित पणे रहेतो एक शाताज बंधाय, तेथी मिथ्यात्वादिक उ गुणठाणा लगें ए छाठ प्रकृतिना जघन्य रस बंध स्वामी होय. एवं चोराशी प्रकृति थइ.

श्रहींश्रां नावना कहे हैं जीवने मिष्यात्वें श्रितसंक्षेत्रों श्रशातानी त्रीश कोडा कोडी सागरोपम अने श्रह्यर, श्रग्रन तथा श्रयशःकीर्त्तनी वीश कोडाकोडी साग रोपमनी उत्कृष्टी स्थित श्रवस्थित पणे वंधाय, तिहां एनी विरोधिनी चार प्रकृतिनो वंध नथी, तेथी एकादिक समयनी स्थित हीन करतां यावत् पंदर कोडाकोडी तथा त्रण प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थितवंधना हेतु श्रथ्यव सायस्थानक लगें तो ए चार पाप प्रकृतिनो निरंतरपणे वंध पडे, ते माटें ति हां मंदरस न होय तथा जेवारें पंदर कोडाकोडी सागरोपम वेदनीयनो श्रने द श कोडाकोडी सागरोपम नामकमेनो जे श्रध्यवसाय स्थानकें वंध पडे, तेवारें ति हांथी पठी शाता श्रशातानो तथा स्थिर श्रह्यरनो तथा ग्रन, श्रग्रननो श्रने यश श्रयशनो परावर्त्ते श्रंतरसुहूर्त्त श्रंतरसुहूर्त्त लगें फेरसारें वंध करे, एमज प्र

यम गुणनाएं अंतः गेडा गेडी प्र एण स्थित लगें पण घोलना परिणामें अंतर मुहूर्त्तने ांतरे ए आन प्रकृतिनो बंध रतो मंदरस बांधे, जे नणी अप्र मत्तादिक आगला गुणनाएं वि दि नणी शातादिक चार प्रकृति अविरोधिनी प ऐज बांधे. तथा एकेंडियादि एनी लघुस्थित बांधे पण मंदरस न बांधे ॥ १ १॥

> तस वन्न तेच्य चनु मणु,खगइ इग पणिदि सास परघुर्च ॥ संघयणा गिइ नपु छी, सुनगि च्यरति मिच्च गइच्या ॥ ७३॥

अर्थ-(तस के 0) त्रस अने बादर, पर्याप्त अने प्रत्ये , ए सचतुष्क. (वन्न के 0) ग्रुनवर्ण, नगंध, ग्रुनरस अने ग्रुनस्पर्श, ए वर्णचतुष्क. (तेअच व के 0) तैनस, कामेण, अगुरुलघु अने निर्माण, ए तैनसचतुष्क, ए ए चतुष्क. (म णु के । मनुष्यिदक, (खगइड्डग के ।) खगतिदिक, (पणिंदि के ।) पंचेंदिय जाति, (सास के॰) उङ्घासनाम, (परघुचं के॰) पराघातनाम, उैगॉंत्र, (सं घयणागिइ के०) व संघ्यण तथा व संस्थान, (नपु के०) नपुंसकवेद, (थी के । स्त्रीवेद, (सुनगिञ्चरति के । सुनग, सुस्वर छने । देय, ए ग्रुनगत्रिक तथा एना इतर इनीग्य, इःस्वर, अनादेय, ए दौनीग्यत्रिक ए चालीश प्रकृतिनो मंदरस, (मिन्नच गर्या के ०) चारे गतिना मिच्यात्वी जीव, बांधे. तिहां त्रस, वादर, पर्याप्त. प्रत्येक, ग्रुनवर्ण, गंध, रस, स्पर्श, तैजस, ।मेण, अग्ररुलघु, निर्माण, पंचें इियजाति, पराघात, ज्ञ्वास, ए पंदर प्रकृतिना तिर्यचमनुष्य, मि ण्यात्वी तत्प्रायोग्य संक्षेत्रें नरक प्रायोग्य नामकर्मनी अहावीश प्रकृति वांधतां, मंदरस वांधे. एना वंधकमां हे संक्षिष्टपणुं होय, ए पुल्य प्रकति हो, एनो संक्षिपें मं दरस वांधे, तथा नारकी अने सनत्कुमारादिकथी सहस्रारांत लगेंना मिण्याली दे वता संक्षेत्रें तिर्वेचगति प्रायोग्य नाम कमेनी राणत्रीश प्रकृति बांधतां, पण ए पंदर प्रकृतिना मंदरस खामी होय, तथा ए पंदर मांहेथी पंचें इियजाति अने प्र सनाम विना ज्ञेप तेर प्रकतिना मंदरस स्वामी, नवनपति, व्यंतर, ज्योतिपी, सीध में अने ईशानना, देवदेवी, मिच्यात्वी, एकेंडिय प्रायोग्य बांधता एनो मंदरस बां थे तथा त्रस नाम छने पंचेंडिय जाति, ए वे प्रकृति तो कांइ एक तेथी पण विद्युदा ध्यवसायं पंचें िय प्रायोग्य वांधतां. मंद्रसें बांधे एम पंदर प्रकृतिना मंद्रस स्वा मी, चतुर्गनिक मिय्याली जीव कह्या. तथा स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद, ए वे मोह नीयनी प्रकृतिना मंदरस बंध स्व । चतुर्गतिक जीव मिष्यात्वी विद्युद्ध यका स न्यक्तानि ख ष । होय. ए बे पाप प्रकृतिनणी विद्युद्धियें मंदरस धि.

मनुष्यगति, नुष्यानुपूर्वी, ग्रुनखगति, अग्रुनखगति, व संघयण, व संस्थान, सुनग, सुस्वर, दिय, दौनीग्य, स्वर, अनादेय अने उच्चैगीत्र, ए त्रेवीश प्रकृतिना मंदरस स्वामी मिथ्यात्वी जीव घोलना परिणामी परावर्तें एनी विरोधिनी प्रकृति बांधतां एवा च गीत जीव जाएवा जे नए। सम्यक् हि देवता तथा नार ष्य प्रायोग्य बांधतां तिर्यंचगत्यादि प्रायोग्य विरोधिनी प्रकृति बांधे न हीं तथा ऋषजनाराचादि संघयण पण न बांधे तथा सम्यक्दृष्टि मनुष्य तिथैच तो देवता प्रायोग्य बांधता स चतुर संस्थान बांधे शेप पांच संस्थान न वांधे, ते ार्टे सम्यक्दृष्टिने विरोधिनी प्रकृति साथें परावर्तें बंध नथी तेथी ते मंद्रस वंधना अधिकारी नथी तथा मिण्यात्वी पण अतिसंहि ष्टें वीश कोडाकोडी सागरोपम प्र माण स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानकें वर्तता तिर्यग्दिक, नरकिक, द्वंमसंस्थान, वेवर्ं संघयण, अ जलगति, अने नपुंसकवेदादिक प्रकृतिनो निरंतर पणे जत्कृष्ट र स बांधे. तिहां यी वली अढार कोडाकोडी सागरोपमस्यित बंधाध्यवसाय स्थानकें होय, तेवारें कुब्जसंस्थान, शिलकासंघयण, परावर्तें द्वंम संस्थान, अने बेवहा सं घयणनो वंध रे, तिहां मंदरस वांधे अने पंदर कोडाकोडी सागरोपम स्थितिवं धाध्यवसायस्थान थी तिर्थग्दिकनो मनुष्यदिक साधें परावर्षि बंध करे, तेम नपुंस वेदनो विद साथं परावर्त्ति वंध करे, छने दश कोडाकोडी सागरोपम स्थितिवंधाध्यवसाय स्थानक पठी दौनींग्यत्रिकनो सौनाग्यत्रिकसाथें परावर्त्ति बंध करे. तिहांची कोडाकोडी सागरोपम किंचिन्न्यून लगें परावर्त्त वंधाय, तेथी हीन हिय तिवंध अध्यवसाय स्थानकें केवल म ष्यिदिक, वज्रक्षननाराच संघयण, समच तुर संस्थान, शुनविहायोगति, सौनाग्यत्रिक, पुरुषवेद, ए प्रकृति निरंतर परो बांधे, परंतु तिहां मंदरस न बांधे जे नणी विरोधिनी प्रकृति साथें परावर्त्ते बांध तांज मंदरस वांधे. एम एकशोने चोवीश प्रकृतिना जघन्य रसबंध स्वामी कह्या ॥ १३॥

हवे घन्य, अनंघन्य, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, ए चार प्रकारना रस वंधने विषे सादि, अनादि, सांत अने अनंत, ए चार नांगा विचारे हो.

जे थकी दीन कोइ रसवंध न पामीयें, ते जघन्य रसवंध जाणवो छने ते वि ना वीजा सर्व छजधन्य रसवंध जाणवा ए रीतें ए वेहु जेदमां सर्व रसवंध यह ए कस्रा तथा उत्कृष्टनी छपेदायें लेतां जे थकी छिधक तीव रसवंध बीजो को इ नथी ते उत्कृष्ट रसबंध जाणवो छने ते थकी ए दि रसाविनागें हीन एवा स वे रसबंध ते छानुत्कृष्ट रस बंध कहीयें। एम पण ए बे नेद ंहे सर्व रसबंध यह ए कहा तिहां मूल प्रकृति छात छने उत्तर प्रकृति एकशोने चोवीश ए बेहुना एना चारे रसबंधे सादि छनाद्यादिक नांगा यंथ लाघव करवाने साथेंज हे है।

च तेच्य वन्न वेच्यणि, च्यनाम णुकोस सेस धुवबंधी॥ घाईणं च्यनहन्नो, गोएडविहो इमो च हा॥ घ४॥

अर्थ-(च उते अ के ०) तैजस, ामेण, रुलघु ने नि णि, ए तैजसच कर (वन्न के ०) ग्रुनवणीदि चार, ए आठ ना मेनी उत्तर रुतिना त्रु रसवं धें, सादि, अनादिसांत अने अनंत, ए चारे नांगा होय, जे नणी ए ाठ प्रकृतिनो उत्रुष्ट रसवंध, अपूर्वकरणना । ाठमा ग्रुणठाणाना ठा नागने प्रांतें पोताना च रम बंधें एक उत्रुष्ट रस स्थानक होय ने ते विना सर्व अ त्रु रस स्थानक जा एवां. जे नणी ए स्थानक, जेणे पाम्युं नथी. तेने सदा अनुत्रुष्ट रसबंध स्थानक जाणवां, ते अनादि जाणवां तथा जे जीव, उपग्रमश्रेणीयें उत्रुष्ट रस बंधी, परितहांथी पडतो हीन रस वांधे, तिहां अनुत्रुष्ट रस बंधनी सादि जाणवी, तथा अनव्यने ते स्थानक पामवुंज नथी अने उत्रुष्ट रस बंधनी सादि जाणवी, तथा अनव्यने ते स्थानक पामवुंज नथी अने उत्रुष्ट रस बंधनी सादि जाणवी, तथा अनुत्रुष्ट रसबंध अनंत नागें जाणवो. अने नव्य जीव हशे. ते श्रेणी पामी उत्रुष्ट रस बंधशे तिहां अनुत्रुष्ट रसवंध कहां। सात्र चे अनुत्रुष्ट रसवंध कहां।

तथा (वेश्रणिश्रनामणुक्कोस के ) वेदनीयकर्म अने नामकर्म, ए वे सूल प्रकृतिना अनुत्रुष्ट रसवंधने विषे चार जंग कहे हो. ए वे कर्ममांहेली एक शाता, बीजी यशःकीर्त्ति. ए वे शुनप्रकृतिनो तो उत्रुष्ट रस वंध क्ष्पकने दशमा गुणुगणाना श्रंत समयें पामीयें. माटें ते स्थानक जे नथी पान्या तेने अनुत्रुष्ट्रपति। अनादिः तथा जे ए स्थानक पामीने पाता पड्या तेने फरी बांधती वखतें सादि तथा अनव्यने श्रं नंत अने नव्यने उत्रुप्टरस वंध करहो, माटें अनुत्रुष्ट रसवंधनं सांत पणुं जाणुं तथा ए श्राठ प्रकृतिना जघन्य, अज्ञघन्य अने उत्रुष्ट, ए त्रण वंधने विषे सा

दि अने सांत ए वे नांगा होय. तिहां ए आठ प्रकतिनो उत्कष्ट रस बंध क्ष्पक ने श्रपूर्व करणें होय. ते प्रथम वांधवा मांम्यो ते माटें सादि, ते बंध, एक स मयंज होय. पण आगल न होय, माटें सांत वीजो नांगो तथा ए आठ श्रुन प्रकृति है माटें एनो जघन्यरस सर्वेतिकृष्ट संक्षेत्रों वर्ततो मिण्याली जीव, संज्ञी पर्या सो बांधे ते एक समय तथा बे समय लगें बांधे, ते पही अजघन्यबंध बांधे, ते बार पही बली कालांतरें सर्वेतिकृष्ट संक्षेत्र पामीने जघन्य रस बांधे, एम जघन्य, अजघन्यने विषे फरता जीवने सादि अने सांत, ए बे नांगा होय.

हवे तैजसचतुष्क विना (सेस के०) शेष रही जे ज्ञानावरणीय पांच, दर्शना वरणीय नव, कषाय शोल, एक मिध्यालमोहनीय, पांच श्रंतराय, नय, जुगु प्सा, उपघात अने अग्रुनवर्णचतुष्क, ए तेंतालीश प्रकृति (धुवबंधी के०) ध्रुवबं धिनी हे तेनो श्रज्ञघन्य रसवंध सादि, श्रनादि, सांत अने श्रनंत एम चार नेहें होय, जे नणी एश्रग्रुन प्रकृतिनो ज्ञवन्यरस, विग्रुदियें करी पोताना चरमवंधें होय, श्रने ते स्थानक जे नथी पाम्या, तेने श्रज्ञघन्यरस बंधनी श्रनादि श्रने जे श्रेणीधी पडी फरी बंध करे, तेने सादि तथा श्रनव्य ज्ञघन्यरस नहींज बांधे, तेथी तेने श्रज घन्यरसबंध श्रनंत श्रने नव्य जीव सम्यक्ल पामशे, तेवारें ते स्थानक लइ ज्ञघन्य रस बंध करशें, तिहां श्रज्ञघन्य रस वंधनुं सांतपणुं जाणवुं एम चार नांगा कह्या.

(घाईणंश्रजहन्नो के॰) ज्ञानावरणीय, द्रीनावरणीय, मोहनीय श्रने श्रंत राय, ए चार मूल प्रकृति, घातिनी हे. एना श्रजघन्यरस बंधने विषे चार नांगा होय, केम के ए चार पापप्रकृति नणी विद्युद्धियें मोहनीयनो नवमा ग्रणहाणा ने प्रांतें श्रने श्रेप त्रण कमेनो दृशमा ग्रणहाणाने प्रांतें जघन्य रस बंधाय, श्रेष सर्वस्थानकें श्रजघन्य रस बंधाय, तेने विषे पण चार नंग जाणवा. ते श्रावी री तें के जेणे जघन्यरसबंध नथी लह्यो, तेने श्रजघन्य रसबंध श्रनादि, जे जघन्यरस बांधी वली श्रेणीयी पहतां श्रजघन्य रस बांधे तिहां सादि, श्रनव्यने श्रजघन्य रसबंध श्रनंत जाणवो, श्रने नव्यने श्रजघन्यरसबंध सांतपणे जाणवो. ए चार क मेना श्रजघन्यबंध विना शेष त्रण बंधने विषे सादि श्रने सांत, ए वे नांगा लाने.

(गोएडिविहो के॰) गोत्रकर्मनो अनुत्रुष्ट तथा अजधन्य ए बे रसवंधने वि पे (इमोच उहा के॰) एमज चार नंग होया ते कहे हो. तेमध्यें नीचिगीं त्रनो जधन्य रसवंध सातमी नरक प्रथवीना नारकी यंथिनेद करी मिण्यालने हेहले समयें वां धे, ते स्थानक जे नथी पाम्या तेने अनादिनो अजधन्य रस वंधहे, अने जेणे एक स मयमां जधन्यरस वंध करी फरी अजधन्य रस वांधे तेने सादि, अनव्य जीव ते स्थानक क्यारें पण नहीं ज पामशे, तेथी तेने अनंत. तथा नव्य जीव जधन्य रस वंध करशे. तथा रस वंध विवेद पण करशे तेथी तेने सांत. तेमज उन्नेगांत्रनो विद्युद्धिं उत्कृष्ट रसबंध, दृशमा ग्रुणवाणाने प्रांतें होयः ते विना बीजा सर्व अनुत्कृष्ट रसबंध जाणवा. तिहां जेणे श्रेणी नथी करी, तेणे उत्कृष्ट रस बंध नथी कर्यो. तेने अनुत्कृष्ट रसबंध अनादि अने श्रेणीथी पढतां उत्कृष्ट रस बांधी फरी अनुत्कृष्ट रस वांधें. तिहां सादि, अनव्यने अनुत्कृष्टरसबंध अनंत अने नव्य ने अनुत्कृष्टनो सांत, एम चार जेद जाणवा अने शेष जघन्य तथा उत्कृष्ट ए वे, एक समयना माटें एने विषे सादि अने सांत ए वे नांगा होयः एम सुड तालीश ध्रुववंधिनी प्रकृति तेम वर्णादिक चार सुनासुन गणतां एकावन्न उत्तर प्रकृतिनो जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट अने अनुत्क , एम चार प्रकारना बंधना सादि, अनादि, सांत अने अनंत. एमांना नांगा जिद्दां जे संनवे, तिहां ते कह्या ॥ ४४ ॥

सेसंमि इहा॥ अनुनागबंधो सम्मतो ॥ अथ प्रदेशबंधे आदावौ दारिकादिवर्गणामाह ॥ इग इग, णुगाइ जा अनवणंत गुणि आणू ॥ खंधा ठरलो चि अव, ग्गणाठ तहअगहणं तिरिया॥७५॥

अर्थ-( सेसंमिड्हा के०) एथी शेष रही जे औदारिक. वैक्रिय अने आहार क, ए त्रण शरीर तथा एज त्रण शरीरनां अंगोपांग त्रण, संस्थान उक्क, संघयण उक्क, पांच जाति, गित चार, खगितिहिक, आनुपूर्वी चतुष्क, जिननाम, उक्कास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसदशक, तथा स्थावरदशक, ए नामकर्मनी प्रकृति अघावन तथा वेदनीयिहक, गोत्रिहक. त्रण वेद, हास्यादि युगलहिक अने आयु चार. एवं तहों तरे अधुववंधिनी प्रकृतिना उत्कृष्ट. अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजधन्य, ए चारे वंध सादि अने सांत, ए वे नांगें होय केम के, ए प्रकृतिनो बंध केवारें क होय अने केवारेंक न होय, जेवारें होय तेवारें सादि, अने न होय, तेवारें सांत,

एम सिवस्तरपणे रसवंध वखात्योः हवे अनुक्रमागत प्रदेश वंध कहेवाने अवसरें उपोद्घात संगतें करी प्रथम औदारिकादिक वर्गणानुं स्वरूप निरूपण कमे वर्गणा आणवा निमिनें कहे हो.

्रेंजेम क्रचीकर्ण शेवने गाय मेलववानुं व्यसन, तेथी तेणे घणी गायो मेलवीः एकवी कीशी पढ़ी तेनी गणती आणवाने अधें वर्णादिकें सम्बी एवी गायोनां टोजां वांध्यां तेवी रीतें अनंता पुजलस्कंधने लूढ़ा लेखवी, तेना जेद पाडवाने अधें कानीयें परमाणुसंख्यायें सरखा सरखा पुजलस्कंधनां टोलां वांध्यां. तेतं नामवर्गणा कहीयें. जेम जगत्मांहें के एकला तूटा परमाणुआ वे. तेनुं टोलुं

ते प्रथ वर्गणा, ते ज वे पर ाणुआ ए ठा जवा थकी जे स्कंध होयः तेने ह्यणु हीयें. ते ंटोलुं. ते बीजी वर्गणा तथा त्रण परमाणुयें निष्प जे संध, तेने ज्यणु कहीयें. तेनुं टोलुं ते तिजी वर्गणा एम एके परमाणुयें वध ता वधता स्कंधनां सरखां सरखां टोलां तेनी वर्गणा वधती वधती जाय. (१) ए वधती वधती अनव्य जीवधी नंत गुणा अने सिक्ता जीवने अनंतमा नाग प्रमाण परमाणुयें करी निष्पन्न जे स्कंध ते स्कंध औदारिक शरीर निपजाववा योग्य हो वेधी ते स्कंध औदारि शरीरने महण रवा योग्य होय ते माटे ते औदारि , महण योग्य जयन्यवर्गणा होय. ए थकी ए परमाणुयें हीन स्कंधवर्गणा लगें सर्व अमहण योग्यवर्गणा कहीयें जे नणी तेहवे स्कंधें शरीर नीपजे नहीं, हवे ते जय न्य औदारिक शरीर आरंनकस्कंध वर्गणा तथी एकेक परमाणुयें वधता स्कंधनी एवी वीजी, त्रीजी, चोधी, पांचमी, एम वधती वधती अनंतवर्गणा औदारिक शरीर महण योग्य जयन्य वर्गणा स्थ को अनंतमे नागें वधती औदारिक शरीर महण योग्य जयन्य वर्गणा होय, ते नंतमो नाग पण अनंता परमाणुरूप जाणवी ते माटें औदारिक शरीरने महणयोग्य पण अनंती वर्गणा जाणवी.

र ते श्रौदारिक शरीरनी उत्ह वर्गणा थकी एके परमाणुयें श्रधिकी स्कंधनी वर्गणा ते श्रौदारिकनी अपेक्षायें वहु प्रदेशोपिचत तथा स्वद्मपरिणाम परिणत तथी श्रौदारिकने श्रयहण योग्य श्रने वैक्रिय शरीर श्रारंनकरकंधनी श्रपेक्षायें श्रव्यप्रदेशोपिचत तथा बादर परिणत ते माटें वैक्रिय शरीरने पण श्रयहणयो ग्य एम एकेक प्रदेशें वधता रकंध श्रनंतनी श्रम्वयथी श्रनंतगुणी श्रमे तिक्षा श्रनंतमा नाग प्रमाण एटली वर्गणा ते वैक्रिय शरीरने श्रयहण योग्य वर्गणा जाणवी. (४) ते थकी एक प्रदेशें श्रिधका रकंधनी वर्गणा ते वैक्रिय शरीर श्रारंन कर तां जघन्य यहण योग्य वर्गणा जाणवी. एम वली एकेक प्रदेशें वधता रकंधनी श्रमंती वर्गणा वैक्रिय शरीर निष्पादक होय ते पण जघन्य वैक्रिय शहण योग्य वर्गणाथी पोताना श्रमंतमा नाग प्रमाण वधती वैक्रिय शरीरने यहण योग्य उत्कष्ट वर्गणा होय, तेथी ते पण श्रमंती वर्गणा जाणवी.

५ ते वेकिय यहणयोग्य उत्क्रप्ट वर्गणा यकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा ते वैकियदलनी अपेक्सयें वहु प्रदेश निष्पन्न तथा स्ट्यपरिणत होय. अने आ हारक शरीर प्रायोग्य दलनी अपेक्सयें अन्पप्रदेशिक तथा वादर. परिणत होय. ते माटें वैकिय तथा आहारक, ए वेहु शरीरने काममां न आवे. ते नणी ते अयहण यो ग्यवर्गणा जाणवी. ते पण एकक प्रदेशें वथता वथता स्कंथनी अनव्यथी अनंत शणी अने तिक्ता जीवोना अनंतमा नाग प्रमाण अनंती वर्गणा जाणवी. एअनंती अयहण योग्य प्रदेश वर्गणा होय. (६) पढ़ी तेथकी एक प्रदेश अधिक स्कंथ नी वर्गणा तेणे करी ते आहारक शरीर नीपजे. तथी ते आहारक प्रायोग्य क घन्यवर्गणा होय. ते वजी एकादि प्रदेशें वथता अनंता स्कंथनी अनंती वर्गणा थाय, ते जयन्य वर्गणाना अनंतमा नाग प्रदेश प्रमाण प्रदेशें वथती एवी उत्कृष्टी आहारकशरीरने यहण करवा योग्य वर्गणा अनंती होय.

ष ते आहारक प्रहणयोग उत्कृष्ट वर्गणा थकी एक प्रदेशें वधता स्कंधनी वर्गणा ते आहारकनी अपेक्तायें वहु प्रदेशिक तथा सुद्धा अने तैजलनी अपेक्तयें अञ्पप्रदेशिक वादर परिणत ते नणी वेहु शरीरने अयहणयोग्य एवी जग्न्य वर्गणा तेयकी एकादिक प्रदेशें वधती यावत् अनव्यथी अनंतग्रणी वर्गणा, ए वे शरीरने अयहण योग्य होय. माटें ते अयहण योग्यवर्गणा. (ए) ते उत्कृष्ट अ प्रहणयोग्य वर्गणादलयकी, एक प्रदेशें अधिक स्कंथनी वर्गणा ते तैजत शरीर प्रायोग्य जयन्य वर्गणा जाणवी. पही ते घकी एकेक प्रदेशें वधता वधता रकंय नी एवी यावत् जवन्य तैजत शरीर वर्गणाने अनंतनागं जे अनंता परमाणु तेणे करी अधिकी एवी उत्ऋष तैजस शरीरने यहण योग्य वर्गणा अनंती जाणवी ए ते तैजस शरीर यहण योग्य उत्छष्टवर्गणाना स्कंयची एक प्रदेशें अधिक रकं ध ते तैजतनी अपेक्तायें वहु प्रदेशिक स्का अने नापादलनी अपेक्तायें अवप प्र देशिक वादर होय. तेथी एवंदु शरीरने काम न आवे, माटें यहण करवाने अयोग्य एवी जयन्य वर्गणा जाणवी एम एरेन प्रदेश वथता स्कंथनी अनव्यथी अनंतगुणी अने तिक्ना अनंतमा नाग प्रनाण एटली वर्गणा अग्रहण योग्य होय. (१०) ते व त्रुष्ट अमहणयोग्य वर्गणायकी एक प्रदेशें अधिक स्कंय ते नापाना दलने काम आ वे, ते नणी ते जवन्य नापा यहण योग्यवर्गणा होय, ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वयती वयती यावत् जवन्यनापा वर्गणानं अनंतमे नागं जे अनंता पर माणु. तिहां लगें वधता स्कंथनी एवी अनंती वर्गणा नापान यहणयोग्य होय.

११ ते नापाने यहणयोग्य उत्कृष्ट वर्गणायी एकादिक प्रदेशें वयता वथता यावत् धनव्यथी धनंतगुण प्रदेश पर्यंत वथतानी धनंती वर्गणा ते तर्व नापा शरीरनी धपेक्षयें वहुप्रदेशिक सूच्य धनं श्वासोब्वातनी धपेक्षयें वादर

श्राहित ंध. ते नणी ते वर्ग । ए बे रीरने हण योग्य एवी वर्गणा श्रानंती । एवी. (११) वाली ते ी ए प्रदे श्रिध स्कंधनी वर्ग । , तेणे री श्रासो वाली निप, जेतेथी ते ंधनो दाय, ते श्रासो ह्यास हण योग्य ज्ञाचन्य वर्गणा एवी. ए घी एकादि प्रदेशें वधता वधता यावत् ज्ञाचन्य वर्गणाना नंत । नागमां जेटला प्रदे तत्प्रमाण तेटला प्रदेशें वधती जे वर्गणा ते श्रासो ह्यास श्रह योग्य जल्क ।। वर्गणा जाणवी.

१३ ते थकी ए प्रदेशें अधिक संधनी अ हण योग्य वर्गणा पूर्वेली पेरें श्वासो ब्वासने तथा मनने पण अ हण योग्य, तेवी ए दि प्रदेशें वधती वध ती यावत् व्यथी अनंतगुणी वर्गणा हण योग्य जाणवी (१४) ए रीतें वली ते वर्गणाय ही ए दि प्रदेशें वधता स्कंध तेणे री इच्य, न, नीपजे, ते नणी ते जवन्य नोइव्ययहण योग्यवर्गणा जाणवी. तेथी एकादिक प्रदेशें वधता वधता स्कंध ते यावत् निज च वर्गणा स्कंधने नंतमे नागें जे प्रदेशें श्वासन, तेटले प्रदेशें वधती उत्कृशी नोयहण प्रायोग्य वर्गणा होय.

१५ ते थ ी एक प्रदेशाधि पुजल 'धनी वर्गणा ते नोइव्यनी पेक्स्यें बहु हेि सूक्ष जाणवी, ने मेदलनी पेक्स्यें ल्पप्रदेशिक बादर जाणवी. ते जणी बेंद्र शरीरने अग्रहणयोग्य एवी जव्यथी अनंतग्रणी वर्गणाजाणवी. (१६) वली ते थकी एक प्रदेशें वधता पुजलस्कंधनी वर्गणा ते मेदल ग्रहणयोग्य हो य, ते जणी ते कमे प्रायोग्य जघन्य वर्गणा जाणवी ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् आपणी जघन्य वर्गणाना अनंतमा नाग प्रदेश प्रमाण प्रदेशें वधती ते उत्कृष्टी कमे ग्रहण योग्य पुजलनी वर्गणा जाणवी. तेणे करी कमेदलें कमे प्रकृति वंधाय. एक कमेनी जघन्य अने उत्कृष्टनी वचालें अनंती वर्गणा होय. तेवा दलें करी कमेप्रकृति वंधाय, ते नणी ए कमे ग्रहण योग्य वर्गणा कहीयें. ए शोलमी वर्गणा थइ. ए स्वमतें कहां, तथा बृहह्वतक वृत्तिमध्यें अग्रहण योग्य वर्गणा नथी कही, तेने मतें तो आवज वर्गणा कही हे,

एह्वी वर्गणा ते जीवने यह्वा योग्य पुजल होय, जीवाश्रित होय, तेथी उ पचारें एने सचित्तवर्गणा कहीयें. अने ए यकी एकादिक प्रदेशें अधिक पुजलस्कं ध जे जीवने यहण योग्य नहीं. तेथी तेने अचित्त वर्गणा कहीयें. ते अचित्त व र्गणा पण सर्व जीवयी अनंत गुणी हे. ए वर्गणानुं सक्ष्य मूहमितने समजाववा अने चित्तमां आणवाने अर्थें विष्ठ कल्पनायें करी देखाड गुंहे. जेम एकादिकथी मां मी द प' पा निष्प यहण रेग्य वर्गणा एवी. ते थकी गी हार, ार ने तेर, ा नि ते ौदारि ह योग्य वर्गणा जा वी ते श वली चौद,पंदर, गोल, सत्तर, खढार, उंगणी ने वी विंड्रहर यद णयोग वर्ग । एवी. ते शिए वी , वि ने त्रेवी , विं रूप वर्गणा, ते वैत्रिय रीरने योग्य वर्गणा । एवी. एम ञ्चाव वर्गणा हण योग्य जा णवी ने श्रांतरे ांतरें ाठ वर्गणा हण योग्य है, बे लीने होल व र्गणा इ. ए ोल वर्गणा सचित्त वी. जे नणी ए i ात वर्गणाना पुजल जीवने हण यो होय, ते हो ते उपचारें जी श्रित हेवाय तेमाटें एने स चित्त इीयें ने तरालनी वर्गणाना पुजल जीवने हणयोग्य हे,तो प ण ते वर्गणा ह योग्य वर्गणाने ांतरे हे, ते नणी एने सचित्त वर्गणा कहीयें. र ए पूर्वीक उत्क कमेवरीणा थ ी एकादि प्रदेशें व । वधता स्कंधनी सर्व जीवधी अनंती वर्गणा, ते निरंतर पणे सदाकाल पामीयें. पण तेह्वा स्कंधनी वर्गणा जीवने यहवा योग्य न होय, ते नणी तेने ध्रुवाचित्त जघन्य वर्गणा कहीयें. ते जघन्य वर्गणायकी जन्छ वर्गणाना प्रदेश नंत गुणा होय तेने जन्छ ध्रुवा चित्त वर्गणा कहीयें. (१) ते थकी वली एकादि देशें धिक रंधनी वर्गणा नंती सर्व जीव थकी नंत णी. एवा पुजल स्कंध, केवारेंक निरंतर पणे होय ने केवा रेंक सांतर परो परा होय, ते नए। अध्रुवाचित्त वर्गणा हीयें.(३) ते शकी एका दिक प्रदेशें वधता पुजल स्कंधनी वर्गणा न पामीयें, पण गाली वर्गणा स्कंध मह त्वपणुं देखाडवाने चें प्ररूपीयें, तेवी पण नंती ग्रून्य वर्गणा होय. ते जधन्य वर्गणाना प्रदेशने देत्र पय्योपमना सं ।तमा नाग प्रमाण प्रदेशनी राशियें करी गुणाकार करीयें,तेवारें जत्रुष्ट वर्गणा होय.(४) तेथकी एक प्रदेशाधिकस्कंध,ते साधा रण नहीं पण प्रत्येक जीवना औदारिकादिक पांच शरीरना प्रदेश, ते माहेलो एक प्रदेश सर्व जीवधी अनंतगुणे विश्रसा परिणत सुद्धापुजल स्कंध आश्रित ते स्कंधतुं नाम, प्रत्येक वर्गणा कहीयें. तेपण जघन्य वर्गणा पकी उत्क्रष्ठ वर्गणा हेन्र पट्योप मना असंख्यातमा नाग रूप असंख्याता प्रदेशें गुणाकार करतां थाय, ते पण अनंती वर्गणा जाणवी. (५) तेथकी वली अनंती ग्रून्य वर्गणा प्रदेशोत्तर कल्पीयें, तेपण जघन्य वर्गणा यकी मांमीने उत्रुष्टवर्गणा पर्यंत अनंती वर्गणा जाणवी (६) तेथकी वली एकादिक प्रदेशें वथता पुजलनी वर्गणा ते बादर निगोदी आ जीवना त्रण शरीर प्रदेशने आश्रित अनंता पुजलस्कंध विश्रमा होय तेनी पण एकादिक प्रदे

शें वधती नंती वर्गणा जाणवी ते पण जघन्य वर्गणा थ ी उत्कृति वर्गणा प्रेदेशसंख्यायें असंख्यात गुणी होय. (७) ते थकी वली असर व्पनायें अनंती ग्रू न्य वर्गणा पूर्वलीपेरें जाणवी. (७) तेथकी प्रदेशाधि स्कंधनी वर्गणा ते सुद्धा नि गोद शरीर प्रदेशाश्रित अनंत पुजलस्कंध विश्रसा परिण तेनी नंती वर्गणा जा णवी, ते पण जघन्य वर्गणायकी विलीना असंख्यातमा नाग यनी राशियें जघन वर्गणाने गुणतां जन्कृष्टी वर्गणा थायः (ए) ते थकी वली एका दि प्रदेशें वधती एवी सर ल्पनायें नंती श्रून्य वर्गणा हो .(१०) तेथ श व ली प्रदेशाधि मिश्रस्कंध जे सू पणा थ ी बादर पणुं प वाने अनिमुख ते मिश्ररं धनी वर्गणा अनंती । एवी (११) तेथ ही अचित्त हास्कंध जे पर्वत कू टादिकने विश्रसा परिणामें ।श्रित नंत प्रदेशात्मक प्रजल ध जे विश्रसा प रिणामें १ मंम, १ पाट, ३ मंथ, तर पूर्णीद करतो केवल समुद्धा तनी पेरें आत स नो जीव स द्यात होय. तिहां चोथे समयें सर्वे होक प्र माण स्कंध होय, अजितादि जिनने वारें त्रस जीव घणा होय, तेवारें ते स्कं थ थोडा होय अने जेवारें त्रस जीव थोडा होय तेवारें ते स्कंध घणा होय. ए लोकस्थिति तेनी वर्गणा पण अनंती जाणवी. (१२) एथी पण अधिक प्रदेशस्कंथ श्री प वणामध्यें ह्या वे ए श्रद्धावीश वर्गणा म्मपयडीने श्रवुसारें वखाणी, परंतु अहीं आं मैवर्गणा हेवानो अवसर हे. अने बीजी औदारि कमेदलनी प्रदेश संख्या तथा सुद्यावगाह देत्र जाएवाने अर्थे उपोद्घातसंगतें क ही देखाडी तथा छागली बीजी वर्गणाउँ प्रसंग संगतें ही देखाडी तिहां छौ दारिक वर्गणा अनुक्रमें एकघी बीजा प्रदेशें वधती वधती जाय अने अवगाहना यें हीन हीन थती जाय, औदारिक वर्गणाने अवगाहनानुं देत्र श्रंग्रजनो असं ख्यातमो नाग जाएवो. ते थकी वली खयहए योग्य वर्गणानुं देन्न, असंख्यांश हीन जाणवुं. तेथकी वली वैक्रिय वर्गणा क्रेत्र असंख्यांश हीन जाणवुं. एम स घछे असंख्यांश दीन अवगाहनाहेत्र घतुं जाय. हवे गायानो अक्रार्थ लखीयें तैयें.

(इगड्डगणुगाइ के०) एक, दिक. अणुकादिक, अहीं अणुशब्दने प्रत्येकें संबंध के. अणु एटले परमाणु जाणवोः तिहां एकाणुकादिक, ६ शणुकादिक, एटले एक आद्यमां के, तिहां एकाणुकादिक कहेतुं वे आद्यमां के, माटें ६ शणुकादिक कहेतुं अर्थात् एक परमाणुनी दि परमाणुनी वर्गणा आदि शब्द थकी त्रण परमाणुनी, चार परमाणुनी, पांच परमाणुनी, एम वधतां वधतां (जा के०) यावत्

क्यां सुधी कहे बुं, ते कहे बें. (अजवणंतग्रणिआणूखंधा कें) अजव्यथी नंत गुणा परमाणुयें वधती उपलक्ष्णथकी सिद्धना जीवने अनंतमे नागें परमाणुयें वधता स्कंधनी (वग्गणाउ कें) वर्गणा ते प्रथम (उरल कें) औदारिक शरीरने यहण रवाने (उचिअ कें) उचित एटले योग्य होय. एवी अनंती वर्गणा जाणवी. (तह कें) तेथकी ए दि परमाणुयें वधती एवी नंती वर्गणा ते (गहणंतिरिया कें) औदारि शरीरने, अयहण प्रातोग्य होय, अयहणं तरिता एटले हण वर्गणा वर्गणंतिर होय ॥ इत्यक्रार्थः ॥ ७५ ॥

> एमेव वि बाहा, र तेञ्ज जासाणु पाण मण कम्मे ॥ सुदुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुल ज्यसंखंसो ॥ ६॥

थे—(एमेव के०) एणी पेरें बीजी (विज्ञ के०) वैति रीरने यहण योग्य वर्गणा, तिजी ( हार के०) हार हणयोग्य वर्गणा, चोथी (ते अ के०) तैजसग्रहण योग्य वर्गणा, पांचमी (जासाणुपाण के०) जाषा प्रायोग्य वर्गणा, ती श्वासोञ्चास ग्रहणयोग्य वर्गणा, सातमी (मण के०) नोग्रहणयोग्य वर्गणा, आतमी (ममे के०) कामण ग्रहणयोग्य वर्गणा, ए आत वर्गणा जाणवी. ए ति वर्गणा (कमावगाहो के०) मे व श हेन्त्र ते एकेक यकी (सुहुमा के०) सुक्का, सुक्का होय एटले हीन हीन होय. एटले औदारिक महण्योग्य वर्गणाना वगाहनाहेन्त्रथकी, औदारि हणयोग्य, वर्गणा वगाहना हेन्त्र, सु ते थकी वली वित्र यग्रहणयोग्य वर्गणा अवगाहना हेन्त्र सुक्का एम सर्व वर्गणानुं अवगाहनाहेन, अनुक्रमें एके थकी (ज एएण के०) एं होय,

अने (अंग्रुलअसंखंसों के०) ए आते ं वगाह्ना हे , अंग्रुलने असंख्या तमे नागें होय, अने अ कमें एकेकथी एकेकनी वगाह्ना एी। एी एट लें न्हानी न्हानी होय. केम के पुक्त इच्यने विषे जेम घणा पुक्त परि णुनो स सुदाय मले, तेम सुद्धा परिणाम थाय. ते माटें औदारि हणयोग्य वर्गणानों अवगाहना हेत्र अंग्रुलने असं तमे नागें होय, ते थकी तेनी ग्रहणयोग्य वर्गणानी अवगाहना न्हानी होय, ते थकी वली वैडि ग्रहणयोग्य अव गाह्ना न्हानी होय. एम अनुक्रमें सर्व वर्गणानी अवगाहना, एकेकथकी न्हानी कहेवी. अने ते वर्गणाना परमाणु, एकेकथकी धिक होय॥ इत्यक्त्रार्थः॥ विष्

इिकक हिया सिदा, णंतंसो अंतरेसु अग्गहणा॥ सब्ब जहब्रुचिया, नियणंतंसाहिस्रा जिठा॥ १५॥

अर्थ-( इि क्क हिया के ० ) एके पर । एयें अध अग्रहण योग्य वर्गणा होय ते केटली होय? तोके (सिद्धाणंतंसो के ० ) सिद्धोनो अनंतो अंश एटले सिद्धना अनंतमा नाग प्रमाण हणयोग्य वर्गणाने (अंतरेसु के ० ) आग्रहणा के ० ) अग्रहणयोग्यवर्गणा अनंती होय तथा (स्वज्ञ जहसूचिया के ० ) सघले वामें ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा स्वकी (निय के ० ) स्वकीय जघन्य वर्गणाना (अणंतंसा के ० ) अनंतां एटले अनंतमे नागें (अहिया के ० ) अधिक (जिद्या के ० ) रुपे एटले उर्हे इत्या होय॥ इत्यक्तरार्थः॥ अ॥।

एक परमाणुषी मांमीने एके पमाणुयें वधते स्कंधें वर्गणा अनंती होय तिहां प्रथम अयहण योग्य जवन्य वर्गणायकी अयहण योग्य उत्कृष्टी वर्गणा अनंतग्रणी होय, जे नणी जघन्य हण योग्य वर्गणा एक परमाणुनी हे, ते थी उत्रुष्ट अग्रहण योग्य वर्गणा सिद्धना जीवने अनंतमे नागें अने उपलक्षण थी अनव्यानंतग्रुण निष्पन्न स्कंधनी वर्गणा होय, ते नणी प्रदेशें अनंतग्रुणी हो य. ते थकी वली औदारिक यहण योग्य जघन्य वर्गणा स्कंध रूपाधिक होय ते थकी औदारिक यहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणास्कंध अनंतनागाधिक जाणवी. तेथ की वली ते खौदारिक अने वैक्रिय वर्गणाना खंतरने विषे अग्रहणयोग्य जघन्य वर्गणास्कंध रूपाधिक होय तेथकी वली अयहण योग्य जत्रुष्ट वर्गणा स्कंध विज्ञो पाधिक जाणवी. जे नणी एनी जघन्य वर्गणा स्कंध सिदानंतनागाधिक अनव्या नंत ग्रुण परमाणुष्ठा मात्र हे. तेमांहे वली अनव्यानंत ग्रुण सिदानंतनाग मात्र परमाणुत्रा नेलीयें, तेवारें श्रनंतनाग न्यूनधी घणा परमाणुत्रा याच माटें श्रनं तनागाधिक कही. तेथकी रूपाधिक वैक्रिय यहण योग्य जघन्य वर्गणास्कंध प्रदेश जाणवा. तेथकी वैक्रिय यहण योग्य वर्गणाना उत्रुष्टरकंध प्रदेश अनंतनागाधि क जाएवा. एम कामेण वर्गणा पर्यंत समस्त यहण योग्य वर्गणायें पोताना जघन्य वर्गणास्कंधथकी पोत पोताना उत्कृष्ट वर्गणा स्कंध अनंतनागाधिक लेवा अने अमहणयोग्य जवन्य वर्गणास्कंधयकी उत्कष्ट वर्गणास्कंध विज्ञेपाधिक लेवा.

तथा ध्रुवाचित्तवर्गणायें जघन्य वर्गणास्कंथयी उत्रुष्ट वर्गणास्कंथ. अनंत गुणा जेवा तथा एनी शुन्यवर्गणायकी आगली वर्गणायें पोत पोतानी जघन्य व

अथ याहरा कमेदलिक जीवागृह्णाति तदाह ॥ हवे जेवा कमेद लिक जीव हण करे हे, ते कहे हे.

अंतिम चन फास इगं,ध पंच वन्नरस कम्म खंध दलं॥ सब जियणंत गुण रस, अणुजुत्त मणंतय पएसं॥ ४०॥

अर्थ- कमेदल ते अगुरुलघु इव्य हे, ते नणी अरूपी इव्य तथा पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस अने चार स्पर्श, एम शोल ग्रणवंत पुजल ते पण अग्र रुलघु कहीचें. दवे अहींआं कोइ केशे के कमेदल मूर्तिमंत हे अने जीवतो अ रूपी हे, तो ते जीवने कमेदलनो करेलो अनुअह, उपघात, केम होय? तेनो उत्तर कहे हे के, जेम मूर्तिमंत मिदरापान हे. तेणे करी अमूर्तिवंत ज्ञाननो उ प्यात याय हे. तथा मूर्तिमंत सारस्वत चूर्णादिकें करी अमूर्तिवंत ज्ञाननो ग्रण प्राप्त याय हे. तथा अमूर्ति वियानो मूर्त इव्य साथें संवंध थाय हे. तथा घटादिक मूर्तिमंत इव्यनो अमूर्त्त इव्य जे आकाशादिक तेनी साथें संवंध थायहे तेम अग्रुरुलघु पुजल इव्य कमेदलनो अग्रुरुलघु आत्महव्य साथें संवंध होय हे तथा तेणे करी आत्महव्यना ज्ञानादिक ग्रुणने उपघात थायहे तथा जिनना म कमिदिकें करी पूजा महत्व ऐथ्वपीदिक अनुअह पण होय हे ते नणी कमेने अग्रुरुलघुइव्य थापवा निमित्तें वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी संख्या कहे हे. ति वां औदारिक वर्गणा, वैक्षियवर्गणा, आहारकवर्गणा, ए त्रण वर्गणाना पुजलस्कं रसाणु एट ले केवलीनी बुदिरूप स्त्रें री ल्प्या जे रसना निरंश अंश, ते ना वाणु कहीयें. श्रहीं श्रां रसाणु हेतां जीवने ाषायिक श्रध्यवसाय जनित श्रा नंद विषाद हेतु ग्रुनाग्रुन कर्मनो विपाक ६ अनिष्ठपणे करी मिष्ट अने कट्रक रस एवो व्यवदार करीयें. ते रस जाएवो. पए अहीं आं पांच रस मांहेला कोऽ रसनी विवक्ता न करवी. अहीं आं ए नाव रस लेवा, एवा सर्व जीवधी अनंत गु णा रसाविनागें युक्त जे जीव कर्मना दल यहतो जेम गाय, तृणखलां चरती य की तृणादिकने विषे ग्धादिक मिष्ट रस उपजावती यहण करे. तथा सर्प, इग्धा दिकतुं पान करतो यको पण दूधने विषे गरलरूप कटुकरस उपजावतो ग्रहण करे तेम कमेदलने विषे (मणंतयपएसं केण) अनंत प्रदेशीआ स्कंध तेना प्र देश प्रदेश प्रत्यें अनंता रसाणुयें ( जुत्त के ० ) युक्तने कर्मपणे जीव यहण करें। अहीं रस शब्दें नाग कहीयें तेना अणुआ एट के अंश जाणवा एट के सर्वे जीवानंत ग्रुण रसाणुत्रा तेणें करी युक्त. अत्र हाई एम हे के सर्व जघन्यरसें यु क्त जे पुजल तेनो रस केवलीनी प्रक्तायें वेद्यमान सर्व जीवधी अनंतग्रणा रसावि नागोनें आपे हे ते जाग ति सू तायें री परनागना अनावधी निरंश अंश छणु कहीयें. रसाणुया र विनागा रसपित हेदा नाव परमाणुया ए सर्व एना पर्याय जाएवा ते रसाणुया प्रतिस्कंध सर्व परमाणुने विषे सर्व जीवोधी अनंत गुणा वर्त्ते हे. एवा रसाणुयें यु परिगत कमेस्कंध दलिक प्रत्यें जीव यहे हे. जेम निंव इक्करसादिकने अधिश्रयणें करी तंडलोने विपे प्रत्येकें यथा रस विशेष तन डूप प्रत्यें जाएं वे तथा अनुनाग बंधाध्यवसायें करी सर्व खंद्रोने विषे अनव्यानें त्रुण प्रदेश निष्पन्नने विषे प्रति परमाणुयें सर्व जीवोधी अनंतग्रण रसाविनाग पिन हो प्रत्यें जीव जणे हे तथा अणंतपएसंति एट छे अनव्यानंतगुण सि-६ अ नंत नाग प्रमाण परमाणु निष्पन्न एकेक कर्मस्कंध प्रत्यें जीव यहे हे तेवा स्कं ध पण प्रति समयें अनव्यथी अनंतगुणा सिद्धानंत नाग वर्त्ति प्रत्यें यहे हे ॥ १०॥ हवे कमेदलनुं अवगाहना हेत्र कहे हे.

> एग पएसा गाढं, निज्य सब पएसडे गहेइ जिडे॥ योवो च्याड तदंसो, नामे गोए समो चहिडे॥ १ए॥

अर्थ-(एगपएसागाढं के०) एक एटले अनिन्न पर्णे जे आकाश प्रदेश नीवें, अवगाह्यों है. तेहीन आकाश प्रदेशें अवगाह्यों जे कमेदल, तेने एक प्रदेशावगा

ढ हीयें, पण ए ज आ । श प्रदेशें अवगाद्यां एम भे न रवो, जे नणी मेस्कंध पण असंख्यात प्रदेशावगाढ ंग्रल असंख्यां प्रमाण के अवगाढ लीये हो. पण एक प्रदेशावगाढ दल न लीये, ते जे आ ।श प्रदेशने विषे जीव अवगाढ हे ते आकाश प्रदेशने विषे कर्म पुजलइच्य अवगाढ हे ते रागादिक स्ने ह गुणयोगथी ात्मप्रदेशने विषे लागे हे पण अनंतर परंपर प्रदेशस्य कमे पुजल इव्यने गृह्यमाण नथी. हवे जेम तीव्र अग्निने संयोगें पाणी वकालीयें तेवारें तला नुं पाणीं उपर आवे अने उपरनुं पाणी तलीये जाय, तेम रागादिक स्नेह गुण योगें कंरी आत्माना असंख्याता प्रदेश एट छे आत मध्य प्रदेश विना बीजा सर्व प्रदेश ए पूर्वोक्त पाणीनी रीतें आवर्त्त जीयें तिहां आत्म प्रदेशें काषायिक अध्य वसाय रूप चीक्रणता है. ते ची णतायें करी कमीरूप रज सहित क्षेत्रने विषेज आवर्त करतां जेम चीकऐं शरीरें लोटतां शरीरने विषे रज वलगी जाय वंधाइ जाय, तेम ( निश्रसवपएसर्चगहेइजिर्च केण) पोताना श्रात्माना सर्व प्रदेश ते श्र नंतानंत मेदलें बंधाय पण एक प्रदेशें अथवा वे प्रदेशें करी यहे बंधाय न हीं केमके, जीव प्रदे सर्वने शृंखलावयवनी पेठें परस्पर संबंध विशेषनो नाव है माटें आत्मानो एक प्रदेश कमेदल यहण रवाने व्यापारतां सर्वे प्रदेश व्या पारे. जेम हस्तादिकें री घटादिक जपाडतां सर्व शरीरें जोर पहेंचे जेम कोइए वस्तु खेवाने अर्थे अंग्रुलि प्रवर्ते तेवारें करतल, मिणबंध, छना, खनो, ए सर्वे परंपरायें वल करे पण एटलो विशेष के जे अवयव, कार्यने ढुकडा होय ते अवयवोने विषे घणुं जोर पहोंचे, अने जे अवयव कार्यने वेगला वेगला हो य, तेने जोर हीन हीनतर पहोचे, तेम कमे इल बहुतां छात्म प्रदेशने विषे प ण हीनाधिक वीर्य जाणवुं.

हवे ए आव कर्मना दलनी नागविज्ञजना कहे हैं. जेवारें जीव आयुःकर्म वां धे, तेवारें अंतरमुहूर्त्त पर्यंत समय समय जे कर्मदल यहण करे, तेना आव ना ग करी आव कर्मने वहेंची दीये, अने जेवारें आयुःकर्म न वांधे तेवारें जे कर्मद ल यहण करे, ते आयु विना शेष सात कर्म वांधतो होय, तेने वहंची आपे अने जेवारें दशमे गुणवाणे एक आयु अने वीजुं मोहनीय, ए वे कर्म न वांध. अने शेष ह कर्म वांधतो होय, तेवारें ह नागें वहंची आपे अने जेवारें जीव एकज कर्मनो वंधक होय तेवारें तेने नाग पण एकज होय. तेमध्यें ( थोवोआइतदंसो के० ) आयुःकर्मना नागनो अंश थोडो जाणवां.

जे नणी बी । मैनी अपेक्स्यें । युः मैनी स्थित थोडी है. तेथी तेनां दल पण थोडां होय, थोडे कार्ले नोगवी खपावे, ते । दें अने तेथकी वली (नामे गोएसमोछिह है के०) नामकमें अने गो में, ए बे मैनो नाग विशेषाधिक जाणवो. जो पण आयुःकमैनी तेत्रीश सागरोपम स्थित थकी ना अने गोत्र, ए बे कमैनी स्थित वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण हे ते । युःकमैनी स्थित थकी संख्यातगुणी है ते अपेक्सयें संख्यातगुणो नाग लाने हे तथा म ध्य तिर्थेचना जय स्थ खंतरमुहू नीदिकाथुनी अपेक्सयें असंख्यातगुणो नाग लाने हे, पण आयुःकमै आखा नव मध्यें एकज वार बंधाय, ते अंतर हूर्न पर्यंत बांधे ने बीजां कमें तो जीव सर्वदा निरंतर पणे बांधे हे. ते माटें थोडा कालमां आयुनां दल घणा में लववां पड़े, ते कारणथी नाम अने गोत्रकमेंनो नाग विशेषाधिक कह्यो अने ए बेहुनो नाग, परस्पर तुत्य स्थित नणी समो एटले सरखा जाणवो॥ इति०॥ उणा

विग्घावरणे मोहे, सबोवरि वेञ्जणीइ जेणणे ॥ तस्स फुडतं न हवइ, िई विसेसेण सेसाणं ॥ ७० ॥

अर्थ- नामकर्म अने गोत्रकर्मना दलयकी (विग्व के ) अंतराय कर्म, अ ने (आवरणे के ) ज्ञानावरणीयकर्म अने दर्शनावरणीय कर्म, ए त्रण कर्मनी उत्कष्टी स्थित त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी हे. ते नणी वीश कोडाकोडी थ की विशेपाधिक होय, माटें ए त्रणनो नाग, विशेषाधिक जाणवो अने ए त्र णने मांहो मांहे तुब्धस्थित नणी तुब्य नाग एटले सरखे नागें आवे तथा ए त्रण कर्मयकी वली (मोहे के ) मोह्नीय कर्मनो नाग विशेषाधिक जाणवो ले नणी मोह्नीयनी स्थित त्रीश कोडाकोडी सागरोपमथी बमणी जालेरी हे अ ने त्रिग्रणीयी हीन हे माटें संख्यातग्रणी कहीयें. ए मध्ये पण दर्शनमोह्नीयनी सीने र कोडाकोडीनी स्थितहे अने चारित्रमोह्नीयनी चालीश कोडाकोडी सागरोपम नी स्थित हे, तेणे स्थित विशेषें करी दलनागन्नं पण विशेषाधिकपणुं लेनुं. ए उक्तमात्रहे परमार्थथीतो श्रीजनवचन प्रमाण करनुं तथा एक समय एक अथ्यवसायें यहीत प्रजल आहे कर्म पणे परिणमे हे आहीं जीवनी शक्ति अचिंत्यहे अने प्रजननो परिणाम विचित्र हे ते माटें एमां आश्चर्य न समजनुं.

(सर्वोवरिवेद्यणीइ के॰) सर्वोपिर सर्व थकी द्यधिक वेदनीयकर्मनो नाग हो य, एटले मोहनीयना नागथकी पण वेदनीय कर्मनो नाग विशेपाधिक होय, जे नणी जो पण मोहनीयनी स्थितिथकी ए कमेनी स्थिति विशेष हीन है, तो पण मोहनीयना दल उत्कृष्टरसें है, अने वेदनीयना दलनो रस अघाती है है ते नणी मंदरस होय, जेम घेंश, राब प्रमुखनो रस इच्य घणो होय, तोज कुधा उपशमे अने दूध, दहीं, शिखरणी, खांम तथा घृतादिक अहपइच्चें पण कुधा उपशमे, तथा पापाणादिक घणे इच्य संबंधे मरण नीपजे, अने विषादिक अहप इच्य संबंधे पण मरणादिक कार्य नीपजे ते मोहनीयादिक कमेना तीव रस दल है ते थोडा होय, तो पण पोतानुं कार्य आत्मग्रण घातवा रूप करे, अने वे दनीय मेनां दल मंदरस नणी घणां महो, तोज ते पोतानुं कार्य पौजलिक सु ख खानुनव रूप प्रकट री शके पण थोडे दहों स्वकार्य प्रगट करी न शके.

(जेण्णे के॰) जेमारें वेदनीयनो नाग छहप होय तो (तस्तफुडतंनहवइ के॰) ते वेदनीयनुं स्फूटपणुं एटले सुख ःखादिकनो छनुनव स्पष्ट न हो य. ए स्वनावेंज वेदनीयना पुजल घणा मले, तेवारें स्वकार्य करवाने समर्थ थाय पण थोडे दलें वेदनीय प्रगट न होयः तेमाटें वेदनीयनी थोडी स्थित ठतां पण दलनो नाग होटो जाणवो, छने (िहईविसेसेणसेसाणं के॰) ग्रोप बीजा सात कर्मना प्रदेशना नागनुं हीनाधिकपणुं स्थितिविग्रेपें होय एटले स्थितिनी छपे हायें होय, जे कर्मनी स्थित छिषक ते कर्मनो प्रदेश नाग पण छिषक छने जे क मैनी स्थित हीन ते कर्मनो प्रदेश नाग पण हीन होय॥ इति समुज्ञयार्थः॥ ए॥ एम मूलप्रकृति नाग रचना कही. हवे उत्तर प्रकृतिनेविषे नाग रचना कहे हेः

> निच्य जाइ लक्ष दलिच्या, एांतंसो होइ सबघाईएां॥ वशंतीए विजक्कइ, सेसं सेसाए पइ समयं॥ त्रु॥

अर्थ-तिहां घातिनी प्रकृति मध्यें (निश्चनाइ के०) पोतपोतानी जातिनी प्रकृति मध्यें जे नाग (जद के०) लाधो, ते (दिल्झ के०) दलमांहेलो रसद लनो (अणंतसोहोइसव्वधाईणं के०) अनंतमो नाग सर्वधातीनी प्रकृतिने द्यापी अने शेप रसदल नाग जे रहे, ते ते समय (वद्यंतीणविनक्षइ के०) बंधाती एवी जे देशघातिनी प्रकृति तेने वहेंची आपीयें, ते रीत देखाडे हे.

प्रथम ज्ञानावरणीय कमेनो मूलनांग लाधो. तेनो अनंतमो नांग केवलक्ञाना वरणपणे परिणमे, जे नणी कमे दल मध्यें अत्यंत सरस स्निग्ध दल योढा हो य, ते दल सर्वे घातिनी प्रकृति लहे, अने शेप दल जे रहे, ते मितज्ञानावरणा दिक चार प्रकृति देशघातिनी है. तेने परिणमे तथा दर्शनावरणीयनो जे मूलना ग लाधो, तेनो अनंतमो नाग अत्यंत सरसदल पांच निष्ठा तथा हकुं केवलदर्श नावरणीय, ए ह प्रकृति सर्वघातिनी हे तेने ह नागें वहेंची आपीयें अने शेष रह्यों जे नीरस नाग, ते चकुदर्शनावरणादिक त्रण प्रकृति जे देशघातिनी हे, तेनें वहेंची आपीयें. तथा शाता अशाता, ए बे प्रकृति बंध विरोधिनी हे, ते नणी एक सम यें एकज प्रकृति बंधाय, तेथी एने नाग वहेंचवो नथी.

तथा मोहनीयनो मूलनाग जे लाने, तेनो नंत ो सरस दल नाग, ते बे नागें वहेंचीयें तेमध्यें ए दर्शन ोहनीयनें ने ए चारित्र ोहनीयनें छ नि यें, वलता चारि ोहनीयना वली बार नाग रीयें ते बंधाता नंता वंधी या चार तथा प्रत्याख्यानी आ चार ने प्रत्या ानी । चार, एवं बार प्रकृति ने वहेंची आपीयें अने शेष रह्या जे देशघाती आ रसवंत दल तेना बे ना ग करी, कषाय तथा नोकषाय मोहनीयने वहेंची आपीयें तैमध्यें कषायनो नाग संज्वलना चारे प्रकृतिने आपीयें, अने नोकषायनो नाग एक वेद, एक युग ल, नय अने जुगुप्ता, ए पांच प्रकृतिने वहेंची आपीयें, तथा आयुःकम एक ज गतिआश्रयी वंधाय, तेथी एनो नाग न वहेंचायर

नासक्रमिनो मूलनाग जे आवे, ते उंगणत्रीश नागें वहेंचीयें, तेनां नाम कहें हो. १ गित, १ जाति, ३ तमुं ४ उपांग, ए बंधन, ६ संघयण, ७ संस्थान, ए आनु पूर्वीं, ११ वर्ण चतुष्क, १३ अग्ररुलघु,१४ उपघात, १५ ठ छ्वास, १६ ति माण, १७ जिननाम, १० आतप, १० ग्रुना न विहायोगित, १० त्रस ६ शक, अथवा स्थावरदशक, ए उंगणत्रीश मध्यें जेटली बंधाती होय, तेटले नागें वहेंचीयें, तेमध्यें पण त एटले शरीर नामकर्मनी प्रकृतिना त्रण अथवा चार नाग करीयें तिहां वैक्रिय, आहारक, तैजस ने कामण बांधतां चार नाग करीयें तथा औदारिक, तैजस अने कामण अथवा वैक्रिय, तेजस अने कामण बांधतां त्रण त्रण नाग करीयें तथा वंधनना सात नाग तथा अगीआर नाग करीयें, ति हां मनुष्य अने तियेच प्रायोग्य बांधतां, ौदारिकना बंधन चार, अने तैजस कामणना वंधन त्रण एवं सात बंध , तेवारें सात नागें वहेंचीयें तथा देवपा योग्य नामकर्मनी एकत्रीश प्रकृति वांधतां वैक्रियना' वंधन चार, तथा आहार कना बंधन चार, अने तैजस कामणना वंधन चार, अने तैजस कामणना वंधन चार, अने तेजस कामणना वंधन चार, अने तेजस कामणना वंधन चार, अने तेजस कामणना वंधन चार, अने तेजस कामणना वंधन चार, अने तेजस कामणना वंधन चार, अने तेजस कामणना वंधन चार, विह्याय तेवा रें अगीआरनागं वहेंचीयें तथा वर्ण नामना पांच नाग, गंधनामना वे नाग,

रसनामना पांच नाग, स्पर्शनामना छाव नाग, एवं वीश नाग थाय छने हो प प्रकृतिना नाग छत्र होई थाय नहीं, जे नणी ते प्रकृतिबंध विरोधिनी हे, एक बांधतां बीजी न बंधाय, जेम ए गित बांधतां होष त्रण गित न बंधाय, ए मज जाति, संघयण तथा संस्थानादि पण एकज बंधाय तथा त्रसादिक दश क बांधतां स्थावरादिक दशकनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय गोत्रकमेनो पण ना गीड कोइ नथी। एक समयें उंच, नीच, ए बे मांहेलुं एकज गोत्र वंधाय, तथा छंतराय मेनो मूलनाग जे छावे, ते तेनी उत्तर प्रकृति पांचने नागें वहेंचीयें ए उत्तर प्रकृतिनी दलविजंजना ही.

(बंबंतीणविनस् कें ) जे प्रकृति वंधाती होय, ते पोत पोतानो प्रदेशद लिक नाग पामे अने बंध विहेदे तेनो नाग जे बीजी सजातीय प्र ति बंधाती होय ते पामे अने सजातीय न बंधाती होय तो विजातीयने पण नाग आवे, जेम थीण की त्रिकने बंधविहेदें तेनो नाग निष्ण अने प्रचलाने आवे अने निष्ण प्रचलाने वंधविहेदें वक्तुदर्शनावरणादिकने आवे, तथा दर्शनावरणने बंध विहेदें तेनो नाग विजातीय प्रकृति वेदनी छे, तेज तिहां ते ग्रणवाणे बंधाय छे. माटें तेनें लाचे तथा मिथ्याल मोहनीयने बंध विहेदें एनी सजातीय दर्शन मोहनीयनी प्रकृतिनो पण बंध नथी, ते नणी विजातीय चारित्र मोहनीयनी प्रकृतिने एनो नाग आ वे, तेमध्यें पण सरस दल सर्वधाती प्रकृतिने योग्य छे. ते नणी सर्वधातीआ बार कपाय प्रकृतिने ए नाग दल आवे, ए उत्तर प्रकृतिने छे एदें तथा ज धन्यपर्दे एकेकथी प्रदेशना अल्पबहुल पणानो विचार जाणवाने अर्थे नीचें यंत्र स्थापना करी छे एम कमे प्रकृतिनी टीकाथकी सर्व उत्तर प्रकृतिना प्रदेशनो उत्कृत्य एपरें अल्प बहुल विचार समजी, ग्रकृ सुलथी निर्णय करी सविक्तर पणे वखाणवो.

#### ॥ अध यंत्रस्थापना ॥

॥ तत्र उत्तर प्रकृतिषु उत्कृष्टपदे कमेदिलिकनागादपवहुत्वमुच्यते ॥

॥ श्रथ ज्ञानावरणीयेषु प्रदेशाल्प ॥ ॥ बहुत्वं ॥

केवज ज्ञानावरणस्य उत्रुष्टपदे
 सर्वस्तोकः कमेद्र लिकनागः ॥

१ ततो मनःपर्यवज्ञानावरणस्य द्य नंतग्रणः॥

३ ततोऽवधिज्ञानावरणस्य विजेपा०॥

<sup>ध</sup> ततःश्रुतज्ञानावरणस्यविशेपाधिकः

<ul> <li>प ततोमतिङ्गानावरणस्यविशेषाधि०</li> </ul>	₹ 8
॥ अथ दर्शनावरणीयेषु॥	१८
॥ प्रदेशाल्पबद्धत्वं ॥	₹ 8
१ दद्गीनावरणे प्रचलायाः सर्वस्तोकः॥ १ ततोनिङ्या विशेषाधिकः॥	१ए
र ततःप्रचलाप्रचलायाविशेषाधिकः॥ ध ततो निहा निहायाविशेषाधिकः॥	হ ং
प ततो स्त्यान द्याविशेषाधिकः ॥ ६ ततोकेवलदरीनावरणस्यविशेण॥ ७ ततोऽवधिदरीनावरणस्याऽनंण॥ ण ततोऽचक्चदरीनावरणस्यविशेण॥ ए ततोचक्चदरीनावरणस्य विशेण॥	2
॥ श्रय वेदनीयेषु प्रदे ॥ ॥ शाल्प बहुत्वं ॥	8
र वेदनीयेऽशातस्य नागः सर्वस्तोकः॥ श ततोवेदनीयशातस्य विशेषाधिकः॥	
॥ अथ मोह्नीयेषु प्रदेशा ॥ ॥ ल्प बहुत्वं ॥	
१ अप्रत्याख्यानमानस्य सर्वस्तोकः॥	1
२ ततोऽप्रत्याख्यानकोधस्य विशेष ॥	-
३ ततोऽप्रत्याख्यानमायायाविद्योग॥ ४ ततोऽप्रत्याख्यानलोनस्यविद्योग॥	- 8
ण एवं प्रत्याख्यानावरणचतुष्कस्यापि यथोत्तरं विशेषाधिकः॥	L
१२ एवं श्रनंतानुवंधिचतुष्कस्यापि य योत्तरं विशेषाधिकः॥	
१३ ततो मिच्यात्वस्य विशेषाधिकः॥	-
	-

<sup>ध</sup> ततो जुगुप्ताया अनंत ग्रणः॥ ५ ततो नयस्य विज्ञेषाधिकः॥ ततोह्यास्यशोकयोरपि विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुखः॥ **ए ततोरत्यरत्योर्विज्ञेषाधिकः परस्परं** स्वस्थाने तुखः॥ ततो स्त्रीनपुंसकवेदयोविंदोषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुद्यः ॥ ततः संज्वलन क्रोधस्य विशेषाण॥ ततः संज्वलनमानस्य विशेषाण॥ ततः पुंवेदस्य विशेषाधिकः ॥ ततःसंज्वलनमायाया विशेषाण॥ ततःसंज्वलनलोनस्य संख्यातग्रणः <sup>ध</sup> चतुर्णामायुषामपि स्वस्थाने तुर्व्यः ॥ अथ नामोत्तरप्रकृतेः प्रदेशा ॥ ॥ ल्पबद्धत्वं ॥ नामकमेणि देवनरकगत्योःसर्वस्तो कः परस्परं स्वस्थाने तुव्यः॥ ततो मनुष्यगतेर्विशेषाधिकः ॥ ततो तिर्यग्गतेर्विज्ञेषाधिकः॥ ॥ जातिपंचकेषु स्वल्पबद्धत्वं ॥ जातिष्ठदींड्यादिजातिचतुष्के <sup>स</sup> र्वस्तोकः स्वस्थाने समः॥ ए तत एकेंड्यि जातिविशेपाधिकः॥ ॥ शरीरनामकमेणि छ ॥ ॥ ल्पबद्धत्वं ॥ शरीरेष्ठ आहारकस्य सर्वस्तोकः।

المستخدم المستخدم المستخدم المستخدم المراسية المستخدم المراسية المستخدم المراسية المستخدم المستخدم المراسية المستخدم المراسية المستخدم المراسية المستخدم المراسية الم
श तोवैशिय रीरस्य विशेषाण॥
<b>३ ततश्रीदारि रीरस्य वि</b> ेण॥
ध तो तै स शरीर विशेषाधि :॥
५ : ार्मण शरीरस्य विशेषाण॥
५ एवं संघातन पं स्यापिः
॥ छपांगे स्वल्पब त्वं ॥
१ उपांगे ह्यार नेपांग हो ।॥
२ ततो वैत्रि योपांगस्य विशेषाधि :॥
३ तत श्रौदारिकोपांगस्यविशेषाण॥
॥ बंधने स्वब्पब त्वं ॥
र हार हारकवंधनस्य सर्वस्तोणा
१ तत । द्वारक तेजस बंधनस्य वि
ज्ञेषाधि : ॥
३ तत ।हारक ।मेणबंधनस्य विण॥
ध तत छाहार तैजसकामेणबंधन
स्य विशेषाधिकः ॥
५ ततो वैत्रि य वैति य बंधनस्य वि०॥
६ ततो वैत्रिय तैजस बंधनस्य विण ॥
<ul> <li>ततो वैक्रिय कामेणवंधनस्य विण्॥</li> </ul>
<ul> <li>ततो वैहिय तैजस ।मेण वंधन</li> </ul>
स्य विज्ञोपाधिकः ॥
ए तत औदारिक औदारिक बंधन
स्य विशेषाधिकः ॥
१० तत् श्रौदारिक तैजम वंधनस्य
विशेपाधिकः ॥
११ तत् श्रोदारिककामेणवंधनस्य वि
ज्ञेपाविकः ॥

गौदारि ैजस भिण वं १श धनस्य विशेषाधि :॥ सबं नस्य विणा ₹ ? तै स ।मेण बंधनस्य विणा B 5 ः मिण मिणबंधनस्य विण॥ १५ ॥ संस्थाने स्वल्प हुत्वं॥ ध्य र ।नचतुष्के स **ं**स्थाने वे स्तो :परस्परं स्वस्थाने तुद्धः ॥ तःस च रस्रस्य विशेषाधि :॥ ततो द्वंम स्य विशेषाधि :॥ ंघयणे स्वल्प बहुत्वं॥ पंत्रने आ पंच स्य तुत्यःस्तो । तः सेवार्त्तस्य विशेषाधिकः ॥ ॥ वर्णे स्वल्प बहुत्वं ॥ वर्णेषु कृष्णस्य सर्वस्तो :॥ ततो नीलस्य विशेषाधिकः ॥ ततो लोहितस्य विशेपाधिकः॥ ततो हारिदस्य विशेषाधिकः॥ प ततः ग्रुक्कस्य विशेषाधिकः ॥ ॥ गंधेषु स्वःपवद्गुत्वं ॥ १ गंधयोर्मध्ये सुरनेः सर्वस्तोकः॥ ततो इरनिगंधस्य विशेषाधिकः॥ ॥ रसेषु स्वब्पबहुत्वं ॥ रसेषु तिक्तरसस्य सर्वस्तोक नागः॥ ततः कटुकस्य विज्ञेपाधिकः ॥

३ ततः कषायस्य विशेषाधिकः॥ तत आम्लस्यनागो विशेषाधिकः॥ ए ततोमधुरस्य नागो विशेषाधिकः॥ ॥ स्पर्शेषु स्वल्प बहुत्वं ॥ २ स्पर्शेषु कर्कशगुरुस्परीयोःसर्वस्तो । ततो मुङ्जघुस्पश्चियोर्विशेषाधि ः॥ ततो रूक्शीतयोविशेषाधिकः॥ ततः स्निग्धोक्षयोर्विशेषाधि : अ त्र सर्वत्र युग्मेषु परस्परस्तुब्यः॥ ॥ ञानुपूर्वीषु स्वल्पबहुत्वं ॥ २ ञानुपूर्वीषुदेवनारक्यानुपूर्वीषु सर्व स्तोकः पस्परं तुख्यः ॥ ततो मनुष्यानुपूर्वे विशेषाधिकः॥ ततो तिर्यगानु पूर्विविशेषा ।। खगति इये प्रशस्त खगतेः स्तोकः॥ ततोऽप्रस्थखगतेर्विशेपाधिकः॥ ॥ त्रसविंशतिकेषु स्वब्पबहुत्वं ॥ त्रसविंशतितोत्रसनामः सर्वस्तोकः॥ ततः स्यावरनागोविशेषाधिकः ॥ एवं बादरस्य नागः स्तोकः ॥ ततःसूक्त्रस्य विशेपाधिकः ॥ एवं पर्याप्तादप्यपर्याप्तो विशेष ॥ एवं प्रत्येकेपि ६यो ६यो आतपद्योत योः समं समं वाज्यः परस्परं तुख्यः॥ निर्माणो १ ह्वास २ परावातो ३ पघात ४ अगुरुलघु ५ जिननाम ६ श्रद्भवद्वत्वं नास्ति परस्परं सजा

तीय प्रतिपद्धापेद्धानावात्॥ ॥ गोत्रकमेणि स्वल्प बद्धत्वं ॥ १ गोत्रयोनींचैगींत्रस्यनागः सर्वस्तोण १ तत च ैर्गीत्रस्यनागो विशेषाधिणा ॥ अंतरायकमेणि खब्पबद्धत्वं ॥ श्चंतरायेषु दानांतरायस्य सर्वस्तोकः॥ ततो लानांतरायस्य विशेषाधिकः॥ ततो नोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥ ततोपनोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥ ए ततोवीर्यातरायस्य नागोविशेण॥ ॥ इति उत्तरप्रकृतिषूत्कृष्टपदे कमें दितकनागाल्प बहुत्व यंत्रकं क्रेयं॥ ॥ अथ जघन्यपदे उत्तर प्रकृतिषु॥ ॥ कमेदलिकनागाल्पबहुत्वमुच्यते ॥ १ तत्र केवलक्षानावरणस्यः जधन्य पदे कमदिलिक नागः सर्वस्तोकः॥ १ ततोमनःपर्यवज्ञानावरणस्यानंत प ३ ततोऽवधिकानावरणस्य विण्॥ ततःश्रुतक्वानावरणस्य विशेपाण ॥ ततो मतिक्ञानावरणस्य वि०॥ ॥ दर्शनावरणेषु स्वल्पहुत्वं ॥ १ दर्शनावरणे निङ्गायाः सर्वस्तोकः॥ ततःप्रचलायानागोविज्ञेषाधिकः॥ ततो निड्ानिड्याः नागोविशेण॥

ततः प्रचला प्रचलाया विशेषाण ॥

ततः स्त्यान द्यीविशेपाधिकः॥

- तःकेवल दर्शनावरणस्य विशेण॥ ततोऽवधिशैनावरणस्य अनंतण्॥ तत अचकुद्दीनावरणस्य विशेणा ए ततश्रकुद्दीनावरणस्य विशेष ॥ ॥ वेदनीये स्वल्प बहुत्वं ॥ १ वेदनीयेऽशातस्य नागः स्तोकः ॥ २ ततःशातस्य नागोविशेषाधि :॥ ॥ मोह्नीये स्वल्पबहुत्वं ॥ अप्रत्याख्यान ।नस्य सर्वस्तोकः॥ ततोऽप्रस्याख्यान ोधस्य विशेण॥ ततोऽप्रत्याख्यान ।यायाविशे ।। ततोऽप्रत्याख्यान लोनस्य विण्॥ एवं मेण प्रत्याख्यानावरणाऽनं तानुबंधि चतुष्कयोरिप विशेष ॥ १३ ततोमिच्यालस्य जघन्य नागो वि० ततो ज्रुगुप्ताया जागोऽनंतग्रुणः ॥ १ ५ ततो नयस्य विशेषाधिकः॥ ततोह्रास्यशोकयोर्विशेषाधिकः स्व स्थाने परस्परं तुब्यः ॥ १ ए ततो रत्यरत्योर्विशेषाधिकः परस्प रं स्वस्थाने तुखः॥ ११ त्र्यन्यतरस्य वेदस्य नागो विशेष॥ १६ ततः क्रोधादिचतुर्णा संज्वलनानां यथोक्तं विशेषाधिकत्वं ॥ ॥ ञ्रायुपि स्वल्प वहुत्वं ॥ १ त्रायुपि तिर्यग्नरायुपोःसर्वस्तोकः॥ ४ ततो देवनरकायुपोऽसंख्येयग्रणः॥
- ॥ ना कमिणि स्वल्प बहुत्वं ॥
- र तर र्यग्गतेः सर्वस्तो : ॥
- २ ततो मनुष्यगतेर्विशेपाधिकः॥
- इ ततो देवगतेरसंख्येयगुणः॥
- ध तो नरकगतेरसंख्येयग्रणः॥

## ॥ जातिषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- ध जातिषु दींडियादिजातिचतुष्के सर्वस्तो : परस्परं तुब्यः ॥
- ५ तत एकेंड्यजातेर्विज्ञेषाधकः॥

#### ॥ शरीरेषु स्वल्प बहुतवं ॥

- शरीरेष्ठ औदारिक श्रारीरे सर्वस्तोकः॥
- १ ततस्तैजसशरीरस्य विशेषाधिकः॥
- ३ ततःकामेण शरीरस्य विशेषाधिकः॥
- ४ ततोवैक्रियशरीरस्यासंख्येयग्रण॥
- ५ ततोऽऽहारकस्यासंख्येयग्रणः॥
- २० एवं संघातनेषु बंधनेषु स्विप वाच्यं.

### ॥ अंगोपांगेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- श्रंगोपांगेषुस्वादारिकोपांगस्यस्तोकः
- १ ततोवैक्रियोपांगस्य छसंख्येय ।।
- ३ ततोऽऽहारकोपांगस्यासंख्येयगु०॥

# ॥ ञानुपूर्वीषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- श ञातुपूर्वीषु नरकदेवगत्यानुपूर्व्याः सर्वस्तोकःपरस्परं स्वस्थाने तुव्यः ॥
- ३ ततो मनुष्यानुपूर्व्या विशेषाधिकः॥
- ध ततस्तिर्यग्गत्यानुपूर्व्या विश्वापा ॥

	॥ त्रसविंशति स्वल्प ब त्वं ॥
?	त्रस विंशतस्त्रसनाम्नः सर्वे ॥ :॥
	ततः स्थावरनाम्नः विशेषाधि ।।
ס פ	एवं बादर स्त्र योः पर्याप्ताऽपर्या
	प्रत्ये साधारणयोश्च हे ।।।
ध्र इ	खवशि हि लारिंशत प्रकृतीनां
	जघन्याल्पबहुत्वं चत्क वत् केयं
	॥ गोत्रे स्वल्प बहुत्वं ॥

१ गोत्रे निवैग्रीत्रस्य नागः होकः ॥
१ तत च गेर्ग स्य विशेषाधिकः ॥
॥ अंतराये स्वल्प त्वं ॥
१ अंतराये दानांतरायस्य सर्व किः
१ ततो जानांतरायस्य विशेषाधिकः॥
१ ततो नोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥
१ तत चपनोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥
१ ततो वीयींतरायस्य विशेषाधिकः॥
१ ततो वीयींतरायस्य विशेषाधिकः॥

हवे कमेना प्रदेश वे । विना वश्य नि रान याय यद्यपि हि ति तथा रस ए वे तो वे । विना पण ज ध्यवसायें री तथा तप संयमें री हियतिघात तथा रसघात करी कमें नि रे, पण प्रदेश सर्व वेदे, तेवारेंज तेनी नि रा याय माटें ते प्रदेश वेदवाने जीव, स्यक्तार्दिक ऐं री । वे । छें घ । प्रदेश नि रवाने श्र थें वे मान दलने विषे उपरेना दल य सं य संख्यात ए। । रें सं मावे, ते जिए शेए। हीयें. ते ए श्रे । गीआर हे, ते हे हे.

॥ य नागलब्धं दलि गुणश्रेणी र नयैव क्षिप्यते ॥ सम्म देस सब विर्रष्ट, अण विसंजोख्य दंस खवगेख्य॥ मोहसम संत खवगे, खीण सजोगीख्यर गुण सेढी ॥ ७५॥

श्रथं एक (सम्म के०) सम्यक्त प्र यिकी, बीजी (देस के०) देशविरित प्रत्यियिकी, त्रीजी (सविरई के०) सर्वविरित प्रत्यियिकी, चोषी ( एविसंजो श्र के०) श्रनंतानु वंधिनी विसंयोजनायें ग्रुपश्रेणी करे पांचमी (दंसलवगेश्र के०) दर्शनमोहनीय खपावतां ग्रुपश्रेणी करे, उन्नी (मोहसम के०) चारित्र मोहनीय उपश्रमावतां ग्रुपश्रेणी करे, सातमी (संत के०) उपशांत मोहनीय ग्रुपश्रेणी, श्रावमी (खवगे के०) क्ष्पक श्रेणीयें ग्रुपश्रेणी करे, नवमी (खीण के०) क्षिणमोह ग्रुपश्रेणी, दशमी (सजोगीश्रर के०) सयोगी केवली ग्रुपश्रेणी श्रने श्रुपश्रिणी, दशमी (सजोगीश्रर के०) सयोगी केवली ग्रुपश्रेणी श्रुपश्रेणी ज्ञां श्रुपश्रिणी हिंचली ग्रुपश्रेणी श्रुपश्रेणी श्रुपश्रेणी श्रुपश्रेणी हिंचली ग्रुपश्रेणी श्रुपश्रेणी श्रुपश्रेणी केवलीनी ग्रुपश्रेणी, ए श्रुगीश्रार (ग्रुणसेही के०) ग्रुपश्रेणी जाणवी॥ इत्यक्तरार्थः॥ उश्री

१ य सम्य त निम्तें यंथिनेद रतां या बीजो पूर्व रण रतां स्थिति घात, रसघात, एश्रेणी पूर्वबंधन, ए चार वानां रतां, ति समयें असंख्यात गु । नि रा वधारतो जाय, ते पूर्वनिवृत्ति रणें पण जाणवोः अने स म्यक्त पाम्या पढी पण सम्यक्त प्र यें री अंतर हूर्त प्रमाण शेष मेद ज खपाववाने गोपु । रिं दल र ना रे, ते प्रथ सम्यक्त गुणश्रेणी जा णवी. ए न्य श्रेणीनी पेक्लायें सम्यक्त प्रत्यिकी दिन दिनणी दीर्घ अंतरमुदूर्त्ते वेदवा योग्य ने अल्प प्रदेशि एवी गुणश्रेणी रे

शते यकी देशविरति निमित्त अपूर्व रण रतो पहेली ग्रणश्रेणीना अंतर हूर्नथी संख्यात ए दीन एवा तरमुहूर्ते वेदवा योग्य अने पूर्वली श्रेणीथी संख्यात ग्रुण दि प्रदेशि दलर नायें, दे विरति ग्रुण प्रत्ययि है श्रेणी, ते प्रथ ग्रुणश्रेणिनी निर्क्कराथ है संख्यातग्रुणी निर्क्करावंत एवी बीज़ी ग्रुणश्रेणी करे.

इ ते देशविरित गुणधा नंतग्रण विद्युद्धि बांधतो सर्वविरित लिब्धि नि मित्त छपूर्व रण रतो सर्वविरित गुणप्रत्यिकी देशविरित गुणश्रेणीना छंत र हूर्तथी संख्यातग्रणहीन एवी छंतर हूर्ते वेदवा योग्य छसंख्यातग्रण वृद्धि प्रदेशात्मक छसंख्यातग्रण नि राहे एवी सर्वविरित रूप त्रीजी गुणश्रेणी करे.

ध ते घकी अनंतग्रणिव दियें नंता बंधीया षाय विसंयोजतो घको सर्वविरति ग्रणश्रेणीना अंतर मुहूर्निषकी संख्यातग्रणहीन अंतर हूर्नें वेदवा यो ग्य असंख्यातग्रण वृद्ध दलिक एवी चोषी ग्रणश्रेणी करे

प तेषकी पण त्यंत विद्युद्ध परिणामें पूर्वली ग्रणश्रेणीना अंतर मुहूर्न यकी संख्यातग्रण हीन अंतर हूर्ने वेदवा योग्य असंख्यातग्रण वृद्धहालक त्रण द्रीनमोहनीयने खपाववा निमित्त, ग्रणश्रेणी करे ते द्वायिक सम्यक्त प्रत्ययिकी असंख्यातग्रण निर्क्तराह्मप पांचमी ग्रणश्रेणी जाणवी.

द तेथकी पण संख्यातग्रणहीन एवी अंतर मुहूर्ते वेदवा योग्य असंख्यात ग्रणवृद्ध दिलक असंख्यातग्रणी निर्क्तराहेतु चारित्रमोहनीय उपश्मावतो श्रपूर्व करण निवृत्तिकरण ग्रणवाणे ग्रणश्रेणी करे, ते वही गुणश्रेणी जाणवी.

अतेथकी अनंतग्रणविग्रिक्षिं उपशांतमोह प्रत्यिकी संख्यातग्रण हीन मु हूर्ते वेदवा योग्य असंख्यातग्रण वृद्धि दिलक उपशांतमोह ग्रणश्रेणी सातमी.

ें ए तेथकी अनंतग्रणविश्विद्यें संख्यातग्रण हीन मुहूर्ने वेदवा योग्य असंख्या त ग्रणवृद्धि दलिक असंख्यातग्रण निर्क्तरायें वधती चारित्र मोहनीय खपावतां आवमे, नवमे अने दशमे गुणवाणे दित रचना करे. ते आवमी गुणश्रेणी.
ए तेथकी अत्यंतिव ६ संख्यात एदीन अतरमुदूर्ने वेदवा योग्य असंख्या

१० तेथकी संख्यातगुणहीन खंतर हैं वेदवा योग्य ख्रसंख्यातगुणवृदि दितक स्योगी केवलीने ख्रसंख्यात णी नि राहेतु दित रचना रे, ते दशमी.

११ ते थकी इतर अयोगी गुणवाणें में खपाववा निश्चित, सयोगी गुणश्रेणी ना अंतरमुहूचे थकी संख्यात गुणहीन अंत हूँ वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्ध दिनक कमेदल रचना रे, ते गीआरमी योगीकेवली गुणश्रेणी होय एम अगिआरगुणश्रेणीनी रचनायें री ब काल वेदवा योग्य में ते व्य कालें निर्क्तरे ॥ इ थैः ॥ ए२ ॥

हवे गुणश्रेणी ं स्वरूप कहे हो.

गुणसेढी दल रयणा, णुसमय मुदया दसंख गुणणाए॥ एच्यगुणा पुण कमसो, च्यसंख गुण निराजीवा॥ ए३॥

अर्थ-(गुणसेढी के॰) गुणश्रेणी ते (दलरयणा के॰) कमदलनी नोगवी वेदीने निर्क्तरा निमित्त, रचना स्थापनाः ( णुसमयमुद्यादसंखगुणणाए के॰) जदय समयथी मांमीने समय समय सं तिगुणाकारें वधता दलनुं संक्रमा वतुं (एअगुणापुणकमसो के॰) ए गुणश्रेणीना वली नु में एकेकथी चढता (असंखगुणिन राजीवा के॰) असंख्यातगुण नि रावंत जीव होयः पहेली गुणश्रेणीयी वीजीना, बीजी गुणश्रेणीयी त्रीजी गुणश्रेणीना जीव चढतां चढतां वधती वधती निर्क्तरावंत होयः एम सर्व समज्ञुं ॥ इत्यक्तराथः॥ ७३॥

यथता वधता निक्तरवित हाय. एम सर्व समज्ञु ॥ इत्यक्राथेंः ॥ उर् ॥

ग्रणाकारें कमेदल वेदीने नि रा निमित्त कमेदलनुं व्यवस्थायें स्थापनुं उप
रली स्थितिथकी उतारी उतारी उद्यावितनी स्थितिना समय समय स्थिति
ने विपे असंख्यातग्रण वधतुं सं मावतां जे दलश्रेणी, ते ग्रणश्रेणी कहीयें. एम
थोडे कालें घणां कमेदल निक्तरे, तेना सुखावबोध निमित्त थापना करी देखाडी है।
तिहां प्रथम ग्रणश्रेणीनो काल अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति करण कालथकी किंचि
दिश्यक अंतर सुहूर्तमान जाणवोः ते वेद्यमान अंतर सुहूर्त्तथी उपरली स्थितिना द
निक उतारी, उतारी, वेद्यमान स्थितिना उद्यथी प्रतिसमयें असंख्यातग्रणो असंख्यातग्रणो वधतो चरम समय लगें संक्रमावे, एटले उपरली स्थितनुं उतार्खुं जे

दल, ते ध्यं प्रथम स यें स्तो सं मावे तेथी बीजे स यें ंख्यातग्रणो सं मावे. तेथी वली त्रीजे स यें असंख्यातग्रणो सं वि ए स यें, स यें, अ संख्यात ग्रणा हैं वधारतो, वधारतो अंतर हूर्चने चर यें सर्वेत्क संक वि, जोगवीने खपावे पण ग्रणश्रेणिनो हल वधारे नहीं एरीतें सर्व एश्रेणी नुं सक्ष्य जाणवुं पण एके थी श्रेणी अंतर हूर्च संख्यात गुणहीन हीन हल पूर्वली श्रेणीनी अपेक्स्यें होय, ने मेदल असंख्यातगुणां वधतां होय.

तिहां दे विरित छने सर्वविरितिषणुं पा तो बे रण रे, पण है। अ
निवृत्तिकरण न रे, तथा देशविरित छने सर्वविरितियी होंगें पड्यो ने
वली जे देशविरत्यादि पडीवजे, तेवारें पण ते बे रण रे, छने जे छना नोंगें पड्यो
ते रण हिना चढे, ए बे रण करी दें विरित सर्वविर हि ग्रण लहे
तो जीव व वधते पिर हों होंग तिहां वधते पिरणामें केंवारें ए सं
स्थात नागाधि ने केंवारें ए संस्थातना गाधिक, केंवारें एक संस्थात णाधि
छने केंवारें ए छसंस्थातगुणाधि दिल रचना रे. तिहां हींगमानपिरणामें
ए चारे हींगमान दिल रचना रे, अने स्थारिणामें स्थ दिलक रचना
करे, पण पोत पोतानी ग्रणश्रेणी छंतर हूर्न सरखुं होंग तथा छनंता छुं
धीयानी विसंयोजना देवता, नुष्य छने नारकी पर्योप्ता छविरित सम्यक् हिए देश
विरित छने सर्वविरित, ए सर्व ण रणें री रे. तिहां छपूर्वकरण छनित्तिक
रण कालें ग्रणश्रेणी करे. ए ध्यें प्रथम त्रण ग्रणश्रेणी सम्यक्त देशविरित छने
सर्वविरितयी सहसात्कारें पडतां केंटलोएक ल मिध्यात्व ग्रणगणे पामीयें. ए ग्रण
श्रेणीनी सविस्तर वक्तव्यता कमें प्रकृति तथा पंचसंग्रहनी वृह दिश्वा थकी जाणवी.

तथा ए अगीआर गुणश्रेणीना जीव अ कमें एकेकथी असंख्यातगुणी नि रा वंत होय एटले मिण्यालयकी सम्यक्त गुणश्रेणीयें अनंतगुण निर्क्तरा होय, जे म कोइएक वृद्ध इवेल रोगाक्रांत चित्तचिंतातुर पुरुष होय ते जेनी धारा न होय एवा बूंता काटें नरेला कूहाडायें करी बावलीआ तथा खेरनां काष्ट वेढा ने काप तो घणो इःखी याय तोपण घणे काले योडांक कापी शके, अने कोइ एक तरुण नीरोगी निश्चिंत दृढ संघयणी पुरुष, तीक्षण एवा सार लोह फरशीयें करी, सूकी एरंम तथा आकडानी लाकडी थोडाकालमां पण घणी कापी नाखे तेम मि ण्यात्वी जीव वीर्यें हीन यको पोताना अलंत चीकणां कमें तेने अझानोपहत एवा वा लतपश्चरणादिक बूंग शस्त्रं प्रायें करी घणा कालें पण अल्प कमें निर्क्तरे, अने सम्यक् हिए जीव ज्ञानादिक गुणें बिल होय ाटे तेहना ग्रुनपरिणा वृद्धियें रसघात स्थितियातें करी नीरस निःसार एरंम जेवा घयला कमीने ते पूर्वकरणादिक तीहण शक्षें करी अव्य कालें पण घणा वेदी नाखे, तेमाटें गुणश्रेणी गुणश्रेणी प्रत्यें यथो तर वीर्य वृद्धियें कमे निःसार होय. तेने ग्रुणनिमेलतारूप शक्षें करी असंख्यग्रणी असंख्यग्रणी निर्क्षरा वधे, तिहां सवीत्कृष्ट कमे निर्क्षरा अथोगी केवलीने होथ॥ हिणा गुण विद्युद्धियें निर्क्षरा वधे ते नणी ग्रुणवाणानो अंतरकाल कहे वे.

पिटिं संखंसमुहू, सासण इच्चर गुण अंतरं हरसं॥ गुरु मिडि बे बसठी, इयरगुणे पुग्गलइंतो ॥ ८४॥

अर्थ-(सासण केण) साखादन गुणवाणानुं (पित्र आसंखंस केण) पद्योपम नो असंख्यातमो नाग जघन्यथी आंतरं जाणवुं, जे नणी साखादन गुणवाणुं एकवा र स्पर्शी, वलीबीजी वेलायें स्पर्शे. एने वचमानो काल तेने साखादन नुं आंतरं कही यें, ते जघन्यथी तो पत्योपमासंख्येय नाग प्रमाण होय, जे नणी कोइ एक जीव मोह नीयनी वर्वीश प्रकृतिनी सत्तायेंथको औपशमिक सम्यक्त जही, त्रिपुंज करी अष्टाविं शति सत्कर्मा थाय, तेवारें पडतां सास्वादनपणुं पामे. तिहांथी वली मिथ्यालें जाय, तिहां मिष्यात्वप्रत्ययें सम्यक्तमोहनीय मिश्रमोहनीयने समय समय ठ्वेल तां, चवेलतां, पत्योपमासंख्येय नाग काल प्रमाण ते मोहनीयनी बे प्रकृतिने च वेली रहे ते वारें मिश्र तथा सम्यक्तिनी सत्ता रहित थयो थको. वहीश सत्कर्मा थाय वली पण कोइ एक जीव औपशमिक सम्यक्त पामी, तिहांथी सास्वादनपण पामे तेणे एथी हीन आंतरं न कहां तथा जे जीव, उपशम श्रेणीथी पडतो सास्वाद न पणुं पामी वली अंतरम्हरूर्तने आंतरें बीजी वेला उपशमश्रेणी पहिवजे, ते वली तिहां यी पडतो लास्वादन गुणवाणे आवे. ए अपेक्सचें अंतर मुहूर्तनुं पण यांतरं होय, यंतर मुहूर्तना असंख्याता नेद हे, तथा ए गुणहाणानों काल पण अंतर मुहूर्तनो ने अने सर्व गुणनाणां पण अंतर मुहूर्तमांहे स्पर्शे, अहीं आं विरो थ कोड़ नथी. ए रीतें अंतर मुदूर्चनुं आंतरुं पण सास्वादननुं लाने, परंतु ते मनु प्यमध्यंज कोइ एकने होय पण देवादिकने न होय ते माटें अहप नणी अहीं छां विवद्ययुं नहीं, तथा वीजे कहा कारणे विवद्युं नहीं.

तथा ए सास्वादन थकी ( इञ्चरगुण के ॰ ) इतर एटजे वीजा मिथ्यात्वादिक । यी उपशांत मोद पर्यतना दश गुणवाणानुं ( श्रंतरंहस्सं के ॰ ) जयन्यथकी श्रां तरं (मुहू के०) श्रंतरमुहूर्न श्रंतर मुहूर्ननुं जाणवुं. जे नणी कोइ ए जीव, जिष्णमञ्जूषीयी पडतो मिथ्यात्व ग्रुणवाणे श्रावी वली बीजी वखत चडतो सर्वे गुणवाणां स्पर्शे, तेवारें श्रंतरमुहूर्ननुं श्रांतरं नाववुं तथा बीजे प्रकारें पण जे मतें एक नवें एकज श्रेणी करे,तिहां चडतां तथा पडतां पण एज श्रांतरं नाववुं.

अने द्वीणमोद, तयोगी तथा अयोगी, ए त्रण गुणगणाथी पडवुं नथी, ए गुणगणां एकज वार आवे, माटें एनुं जवन्य तथा उत्कृष्ट आंतरुं नथी.

ह्वे ए गुणवाणानुं (गुरु के०) ज्रुट्ट आंतरं कहे हे. तिहां (मिन्न के०) मिच्यालगुणवाणानुं (बेहसची के०) वे वखत हाश्च सागरोपम पूर्वकोटी प्रथ करवें अधिक एटलुं ज्रुट्ट आंतरं जाणवुं, जे नणी को एक पूर्व कोट्यायु मनु प्य गुद्ध संयम पाली विजय विमानें तेत्रीश सागरोपमायु नोगवी सम्यक्त सहित मनुष्यनव पामी वली मनुष्य नवधी विजय विमानें जाय. एम हाश्च सागरोप म सम्यक्त्वें रही वली अंतर मुहूर्च मिश्चें आवी फरी सम्यक्त लही त्रण वेला अच्युतगमनें मनुष्य नवांतरें हाश्च सागरोपम पूरे, एम एकशोने वत्रीश सागरो पम पूर्व कोटी प्रथक्त्वें अधिक मिच्याल गुणवाणानुं आंतरं ज्रुट्ड जाणवुं.

अने ए मिय्यात विना (इयरगुणे के०) इतर जे बीजा सास्वादनयी उपशां तमोह पर्यंत दश गुणवाणां हो, तेनुं उत्कृष्ट आंतरं (पुग्गत इतो के०) सूक्षा क्त्र पुजल परावर्तनुं अई कांइ एक कणेरं होय, जे नणी उत्कृष्टो किचिंदून अई पुजल परावर्त्त प्रमाण शेप संसार हुंते थके जीव, यंथिनेद करे, तेवार प ही ए दश गुणवाणां स्पर्शे. तेणे उत्सूत्र नाषणादिक अत्यंत अशातनायें करी अ नंत संसार वधारे तो पण जेणे सम्यक्त लहां ते जीव अई पुजल परावर्त्त मांहे सीजे, तेवारें वजी सर्व गुणवाणां स्पर्शे, ए अपेक्षायें नावनुं उपरांत संसारमां न रहे॥ ए४॥

त्पलांगें १३ ए जत्पल, चोराशी लक्ष् जत्पलें १४ ए प ांग, चोराशी लक्ष् प iगें १५ ए प , ोरा श लक्ष प<sup>ें</sup> १६ ए लिनांग, चोराशीलक् निलनां में १९ ए नलिन, गेराशी लक्द निनें १० एक श्रक्तिन रांग, चोराशीलक् छहिन रांगें १ए ए हिन र, चोराशी लक्क किन रें १० एक अयुतांग ग, चोराशी लक्क युतांगें ११ ए युत चोराशी लक्क अयुतें ११ एक नयुतां ग, चोराशीलक् नयुतांगें २३ एक नयुत, चोराशी लक्त् नयुतें २४ एक प्रयुतांग, चोराशी लक् प्र तांगें १५ एक प्रयुत, चोराशी लक्क प्रयुतें १६ एक चूलिकांग, चोराशी लक्क चूलि ांगें २७ ए चूलि ।, चोराशी लक्क चूलिकायें २० एक शी र्षप्रहेलि गंग, चौराशी लक्क् शीर्षप्रहेलि गंगें १ए एक शीर्षप्रहेलिका, अंहीं सुधी सं ातो । त गएयो आवे. ए शीर्ष प्रहेतिकायें आटला आंक आवे ते अंक iनीयें वैयें.(৪५७२६३२५२०७३१०२४११५७ए७३५६एए७५६ए६४०६२१ oweeda oooo १ ए३ २ ए हो ए चोपन आं आगल एक ोने चालीश शून्य मांमीयें तेवारें, ए ोने चोरा ं छं ।य. त्यां धी संख्याता वर्ष जाएवा. उपरांत गणतां नावे ते । दें पाला तथा स इादि नी उपमायें करी समजाव्युं जाय पण गणतां पार न वि, तेने सं ाता हीयें ते असंख्याता वर्ष प्रमाण पब्योप सागरोप जाणबुं तेनुं स्वरूप समजाववाने गाथा हे हे ॥ ७४ ॥ ॥ अय पद्योपमस्बरूपमाह ॥

> दार अद खितं, पिलय तिहा समय वाससय समए॥ केसव हारो दीवो, दिह आ तसाय परिमाणं॥ उण्॥

श्रथ-धान्य पत्यवत् पत्योपम, तथा वली सागरवत् सागरोपम जाणवुं. तेना प्रत्येकें त्रण त्रण जेद हे. तत्र वालाय अथवा वालाय खंमोनो प्रति समयें (छदार के०) छद्धाण करवो, तेहे प्राधान्य जिद्धां तेने प्रथम छद्धार पह्योपम कहीयें श्रवे (अद के०) अद्धा एटले काल ते प्रस्तावथकी वालायोने अथवा वाला योना खंमोने अपदारें प्रत्येकें वर्ष अत लक्षण प्राधान्य हे जिद्धां ते बीजो अद्धा पत्योपम कहीयें तथा ( खिनं के०) केत्र जे आकाश प्रदेशरूप तेनुं प्राधान्य हे जिद्धां ते त्रीजो केत्र पत्योपम कहीयें. ए (तिद्धा के०) त्रणे प्रकारना ( पलिय के०) पत्योपम तेने प्रत्येकें सूक्षा अने बाद्र एम वे वे नेदं करतां ह नेद याय तेनुं मान कांइ एक विस्तारथी लखीयें हैयें. अनंत परमाणुवें एक व्यावद्धारि

रीयें, ते एकेको खंम समय समय कहाडतां असंख्याता समय लागे, अर्थात् संख्याता वर्षनी कोटीयें करी ते कूप खाली थाय तेने सूझ्य उदार पद्योपम कही यें. तेवा दश कोडाकोडी पद्योपमें एक सूझ्य उदार सागरोपम थाय तेवा अढी सागरोपमना समय प्रमाण (दीवोदिह के०) असंख्याता दीप समुइ हे. ए सूझ्य उदार पद्योपम कहां.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पत्य बादर वालाग्नें जस्यो, तेमध्येंधी (वाससय के०) शो शो वर्षें एकेक केशखंम काहाडतां, ते पत्य संख्याता वर्षनी कोडी प्र माण कार्जे निर्जेप थाय, तेवारें बादर अदा पत्योपम संख्याता वर्ष प्रमाण थाय.

वली तेहिज खंमना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंम कल्पी ते कल्पना खंम शो वां एकेक कहाडतां जेवारें ते पर्लय निर्लेष थाय तेवारें सूच्य अक्षण खोपम असंख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण थाय तेवा दश कोडाकोडी सूच्य अक्षण एखोपमें एक सूच्म अक्षा सागरोपम थाय तेवा वली दश कोडाकोडी सागरोपमें एक अवसां पणी काल थाय वली तेवा दश कोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सां पणी काल थाय ए अवसां पणी तथा उत्सां पणीना बेहु काल मली वीश को डाकोडी सागरोपमें एक कालचक थाय. ए सूच्म अक्षापत्थोपम अने सागरोपमें करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्थेचनुं (आउ के०) आयुनुं मान तथा कमें स्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा नवस्थितिनुं कालमानादिक मवीयें, ए चोष्ठं सूच्य अक्षापत्थोपम कह्यं, एटले ए सूच्य अक्षासागरोपमना अनंता प्रजल परावर्तें अतीत अक्षा तथा अनंता प्रजल परावर्तें अतीत अक्षा तथा अनंता प्रजलपरावर्तें अनागत अक्षा एटले अनागत अक्षानी अनंतता है अने अतीत अक्षानी तथी, तथी बेहुने समानप एं हे. अन्य आचार्य वली एम कहें हे, के अतीत अक्षाथकी अनागत अक्षा मंत्र एं हे. अन्य आचार्य वली एम कहें हे, के अतीत अक्षाथकी अनागत अक्षा हो नंत गुणा हे. तेनी चावना एम हे के जो पण समयादिकें करी अनागत अक्षा हीयमान है, तो पण अनागत अक्षा ह्या नथी थतो ते माटें अतीत अक्षा

सांप्रत वे प्रकारना देत्र पह्योपमनुं निरूपण करीयें तैयें. ते पूर्वोक्त वालाय खंमें करी नखो जे पह्य ते मध्यें कहपना करेला वालायें स्पर्धा जे आकाश प्र देश ते मांद्यो एकेक आकाश प्रदेश (समए के०) समय समय काहाडतां जे वारें मवे वालाय स्पष्ट आकाश निर्लेप थाय, तेवारें असंख्याती उत्सार्पणी अने अवसांपणी कालप्रमाण एक वादर देश पह्योपम थाय.

यको खनागत खदा खनंत ग्रणी हे.

ते पत्यना स्हम एकेकावालायने स्पश्यी आकाश प्रदेश तथा अएस्पर्यी एवा समस्त आकाश प्रदेशने समय समय कादाडतां जे वारें ते पत्य निर्तेष थाय, तेवारें पूर्वोक्त बादरहेत्र पत्योपमना कालमानथकी असंख्यातगुणो असंख्याती उत्सर्ण्य ए। अने अवसर्ण्या प्रमाण स्काहेत्र पत्योपमनुं कालमान थाय तेवा दश को डाकोडी सहम हेत्र पत्योपमें एक सहम हेत्र सागरोपम थाय, एऐ। करी (त सायपरिमाणं के०) त्रसादिक जीवनुं परिमाण करवुं, एटले दृष्टिवादने विपे इ व्य प्रमाण चिंतवीयं तथा प्रथिव्यादिक एकेंडिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीयं तेने विषे एनुं प्रयोजन हे॰ अहीं शिष्य पूहे हे के, जो स्पष्ट, अस्पष्ट, ननःप्रदेश अहीं सहमहेत्र पत्योपमें करीने यहण रीयें हैयें, तो वालायोनुं हुं प्रयोजन हे ? यथोक्त पत्यांतरगत ननःप्रदेशापदारमात्रथीज सामान्य पणे कहेनुं उचित हो. तत्र ग्रुरु कहे हे के ए सत्य हे. किंतु सहमहेत्र पत्थोपमें करी दृष्टिवादने विषे इव्य मवीयें हैयें ते केटला एक यथोक्त वालाय स्पष्ट ननःप्रदेशें करी मवीयें हैयें, अने केटला एक अस्पष्ट ननःप्रदेशें री मवीयें हैयें, माटें दृष्टिवादोक्त इ व्यमानोपयोगीपणा यकी वालाय प्रह्मणा प्रयोजनवाली हे॰

एम त्रण सूद्रम पत्योपम शास्त्रने विषे उपयोगी होय अने त्रण बादर पत्यो पम कहा ते सूद्रमपत्योपमना सुखावबोध खवा माटें कहा. अहीं आं प्रायें घणुंतो सूक्ष अहापत्योपमनुं प्रयोजन हे, ते अहापत्योपमें करी वीश कोडाकोडी साग रोपमनुं काल चक्र थाय, तेवा अनंतें कालचक्रें एक प्रजलपरावर्त थाय, एवा अनंत प्रजलपरावर्त अतीत अहा अतिक्रम्या ते नणी एनेविषे प्रजल परावर्त्त एवी संङा करीयें जो पण प्रजल परावर्त्त एवी संङा सुख्य पणे इच्य परावर्त्तने विषे होय. केम के ओदारिकादिक प्रजलनी परावर्त्त एवी संङा होय, हे ते सुख्य कहेवाय तथापि आकाश प्रदेश समय अने अध्यवसाय परावर्त्त हेत्र, काल अने नाव परा वर्त्तादिकनं विषे पण जे प्रजल परावर्त्त एवी संङ्गा करवी. ते गौणपणे जाणवी. त था आशांबरमतें नवपरावर्त्त पण मान्युं हे. पण ते अहीयां न लीधुं ॥ ए॥ ॥

हवे पुजलपरावर्तना आत नेदनुं स्वरूप त्रण गाथायें करी कहे ते.

द्वे खित्ते काले, नावे च छह् इह वायरो सुहुमो ॥ होइ अणंतुरसप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परद्वे॥ ए६॥

अर्थ-( दवे के० )इव्य पुजन परावर्त. ( खित्ते के० ) देत्र पुजल परावर्त. ( का

ले के०) कालपुजलपरावर्त्त, (नावे के०) नाव पुजल परावर्त्त, ए (च वह के०) नार नेदें पुजल परावर्त्त है ते वली एकेको (बायरो के०) बादर ने (सुहुमो के०) सूक्षाना नेदें करी (इह के०) बे बे प्रकारें (होइ के०) होय. (अणंतुस्सिपणि परिमाणो के०) अनंती उत्सिष्णिणी अने अवसिष्णिणीकाल प्र ।ए (पुगणल परहो के०) पुजल परावर्त्त लमान जाणवुं॥ इ क्रायः॥ ए६॥

एक बादर इव्यप्रजलपरावर्त, बीजो स्रक्ष इव्य प्रजलपरावर्त, त्रीजो बादर देत्रप्र जलपरावर्त्त, चोथो स्रक्ष देत्र प्रजलपरावर्त्त, पांच ो बादर ाल प्रजलपरावर्त्त, व हो स्रक्ष कालप्रजल परावर्त्त, सात ो बादर नावप्रजलपरावर्त्त, व्यावमो स्रक्ष नाव प्रजलपरावर्त्त. अहिंयां ोइए नवप्रजलपरावर्त्त स्रक्ष तथा बादर एम पण माने वे. ते मतें दश नेद कहे वे. पण स्वमतें तो आव नेदज । वे.

तिहां पूर्णगलन स्वनाव तेने पुजल कहीयें, ते अणुने लवे तथा विघटवे री जे स्कं धनो नेद ते पुजलस्कंध कहीयें ते सर्व जीवयंकी अनंत एा हो. सर्व लोकाकाश प्रदेश अनंतानंत पुजलस्कंधं नखो हो. ते जेटले कालें जीव, सर्व एप्रसंध औदारिकादिक शरीर पणे यहीने मूके, तेटले कालें बादरङ्क्य पुजलपरावर्त एवी सामान्य संझा हो य. ए आह जातिना पुजल परावर्त कह्या हो. ते मध्यें पण चार जातिना बादर पुजल परावर्त्त जे कह्या हे ते सूक्यपुजलपरावर्त्तना सुखावबोधने थें कह्या हो. जे मूहमित, सूक्य पुजलपरावर्त्तनुं सुकर्प न समजे, तेने बादरनुं सुकर्प समजावीयें, ते बादरना खुक्पनी समजणमां मित नेदाय तो पही सूक्यपुजलपरावर्त्तनुं सुक्ष्प पण सुखें समजी जाय, ते नणी बादर कह्या हे. बीजुं जिहां पुजल परावर्त्त का ल शास्त्रें कह्यो हे. तिहांतो सर्व सूक्यपुजलपरावर्त्त लेवा, केंमके तेहिज शास्त्रमां उपयोगी हे. जे सम्यक्त पाम्या पही किंचिन्न्यून के पुजलपरावर्त्त मात्र सं सार मध्यें रहे, एम कह्यं हे, ते पण सूक्य केंत्रपुजलपरावर्त्तनं छुक्र जाणवुं ते चा रे जातिना सूक्य पुजल परावर्त्त मांहेलो एके केटले कालें होय, तेनुं मान कहे हे उत्सार्पणी कहेतां जिहां नरत ऐरवतना मनुष्यने चढतुं शरीरमान, एउ त या सुख वधतुं जाय. तेने उत्सार्पणी ल जाणवो. तिहां प्रथम इःखमां इ

त्रीजो इःखमा सुखमा श्रारो एक कोडाकोडीसागरोपम वेंतालीश हजार वर्षे न्यू ननो, चोथो सुखमा इःखमां श्रारो वे कोडाकोडीसागरोपमनो, पांचमो सुखमां श्रारो त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो श्रने ठठो सुखमा सुखमा श्रारो चार कोडा

खमा श्रारो एकवीश हजार वर्षनो, वीजो इःखमा श्रारो एकवीश हजार वर्षनो

कोडी सागरोपमनोः एम जिहां चढतो चढतो । ज ते जन्सिपणि काल हीयें, अने जिहां प्रथम सुखमासुखमा आरो होय, अने उठो : खमा : खमा आरो होय, ते अवसिपणी पडतो । ज जाणवो. तेह्वी अनंती जन्सिपणी अने अवसिपणी एटले अनंता कालचक्त प्रमाण एकेक प्रजलपरावर्त्त ते अनंतानंतनेदें हे. तेथी ए मध्यें पण कालनुं अवपवहुत्व कह्युं हे. ते विरुद्ध नथी, जे नणी इच्य प्रजल परावर्त्तकालस्तोक, तथी अनंतगुणो हेन्त्र प्रजलपरावर्त्तकाल जाणवो, तेथी काल प्रजलपरावर्त्तनो काल अनंतगुणो जाणवो, तेथकी नावपुजल परावर्त्तनो काल अनंतगुणो जाणवो, तेथकी नावपुजल परावर्त्तनो काल अनंतगुणो जाणवो, तेथी अनंतगुणो कालपुजल परावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां कालपुजल परावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां कालपुजल परावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां इव्यपुजल परावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां इव्यपुजल परावर्त्त थयां। इति स यार्थः॥ उद्द ॥

हवे प्रथम इव्यथी बादर तथा सूक्ष्म पुजलपरावर्त्तनुं सक्रप कहे हे.

रलाइ सत्त गेणं, एग जिडे मुख्यइ फ़िसय सब खणू ॥ जित्तिख्य कालि स घूलो, दबे सुढुमो सगऽन्नयरा॥ ए७॥

अर्थ—( उरलाइसत्तगेणं के० ) औदारिकादिक वर्गणाना पुजल सात प्रकारें करीने ( एगिजिर्ड के० ) एक जीव, ( फ़ुसिअ के० ) स्पर्शोंने ( मुअइ के० ) सूके, ( सबअणू के० ) लोकमांहेला सर्व परमाणुआने ( जितिश्रकालि के० ) जेटले कालें स्पर्शोंने मूके, ( स के० ) ते कालनुं मान, ( यूलो के० ) स्यूल एटले वादर, ( देवे के० ) इव्ययकी पुजलपरावर्त जाणनुं, अने इव्ययकी ( सुदुमोसगऽ न्नयरा के० ) सुद्दम पुजलपरावर्त्त एथी अन्यतरें करीने याय ॥ इव्यक्तरार्थः ॥ ए ॥ श्री दारिक, वैक्रिय, तैजस, नापा, श्वासोन्नास, मन अने कार्मण, ए सात प्रकारें सर्व लोकमांहेला परमाणुनेद संवातें तथा वादर सुक्क परिणमने करी स्वस्व वर्गणा योग्य परिणतस्कंथ औदारिकादिक नोकर्म पणे तथा कार्मण पणे जेटले कार्ले एक जीव अनंत नव अमण करतो परिणमावी यही स्पर्शों मूकं, तेने वादर इव्य पुजलपरावर्त्त कहीयें तिहां जे एक वेला यहाा, एवा जे पुजन तेने फरी वीजी वेला यहण करे, ते यहीतयहणादार तथा पूर्वे केऽ यहण कर्या केइ अयहण कथा एवा पुजलने यहे. ते मिश्रयहणादार, तथा जे पूर्वे अयहण करेला यहे, ते अयहीत यहणादार. तिहां गृहीन यहणादार तथा मिश्र यहणादार अतिक्रमीने जे अग्रहीत यहणादार. तिहां गृहीन यहण करे. ते लेले लेखना

एटले लेखा ं गणवा एम ए औदारि पणे बीजो वैत्रि यपणे वीजो तैजस पणे, चोथो नाषा पणे, पांच ो श्वासोङ्घासपणे ढ हो नपणे, अने सातमो कामण पणे, ए सात परिणा , एकेक अणुना थाय ए सर्वलो वर्षि पुजल इव्यना सात परिणमन एक जीव पूर्ण रे, तेवारें बादर इव्यपुजल परावर्ष पूर्ण थाय. अहीं ं आदार शरीर तो संसार ंहे वसतो जीव, चार वेला करे, तेवारें तेणे करी सर्व पुजलनी परावर्षि न होय, तेथी ते न लीधो

तथा जेवारें सर्वजो वार्त णुने औदारिकादिक पर्णे परिणमावे, पण एट छुं विशेष जे औदारिकपर्णे परिण वितां वचले नवें जे जे वैत्रि यादि पुजल यह ण करें, तें होइ खेखामां नावे. एम अनंते नवें री सर्वलो ना अणु औदारि कपणे परिणमावी यही स्पर्शी मूके, तेवारें प्रथम औदारिक सूक्ता इव्य पुजल परावर्त थाय. वलतुं एज रीतें सर्वाणु वैत्रियपणे परिण वि। यहीने सूके, तेवारें बीज़ं वैक्रिय पुजल परावर्त थाय. एमज तैजल शरीर पर्णे परिण मावी यहीने मूके, तेवारें त्रीजं तैजस पुजलपरावर्त थाय. एमज नाषादल पणे सर्वाणु परिणमावी यहीने सूके, तेवारें चोथं नाषापुजलपरावर्त थायः एमज पा चसुं श्वासो हु। त छुं मन छने सात कामेण पुजलपरावर्त पण जाण छं. तिहां सर्व थकी कामेणपुजलपरावर्तकाल अनंतो हे परंतु बीजानी पेक्तायें स्तोक. तेथकी तैजस पुजलपरावर्तकाल अनंतग्रणो,तेथकी औदारिक पुजलपरावर्त ।ल नंतग्रणो, तेथकी श्वासोह्वास प्रजलपरावर्त काल अनंतग्रणो, तेथकी मनःप्रजलपरावर्त काल् अनंतग्रणो, तेथकी नापापुजलपरावर्तकाल अनंतग्रणो, तेथकी वैहि यपुजलपरावर्त काल अनंतगुणो जाणवो. कामेण पुजलपरावर्त सर्व नवें ग्रहण करे, तेथी तरत पूराय अने ते कामेणदलथकी तैजस अनंतग्रणो हीन पुजल है, ते नणी अनंत गुण कार्जे पूराय, एम पोतानी मतियें विचारीने कहेवुं. अतीतकार्जे एक जीवने अनंता वैकिय पुजल परावर्त थयां, तेथकी अनंतग्रुणां नाषा पुजलपरावर्त थयां, तेथकी अनंतग्रणां मनःपुजलपरावर्त थयां, तेथकी अनंतग्रणां थासोह्यास पुजल परावर्त् थयां, तेथकी अनंतग्रणां औदारिक पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंत गुणां तैजसपुज्ज परावर्त थयां, तेथकी छनंतगुणां कामेण पुज्ज परावर्त थयां। एम अनीतकालें अतिकस्या. अहीयां कोइएक याचार्य एम कहे वे के औदारिक वैकिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीरपणे सर्वजीकवर्ति परमाणु जे यहे, ते तेना छेखामांहे गणाय एम करी सर्व परमाणु चार शरीरपणे परिणमावी ग्रही

## शतकनामा पंचम कर्मग्रंथ.

ने सूके, ते बादर इव्य पुजल परावर्त ने अनु में एक शरीर पर्णे परिणमावे ते लेखामां रहे गणाय एवी रीतें सर्वाणु ए शरीरपर्णे जेवारें परिणमावी रहे, तेवा र पत्नी विज्ञा शरीरपर्णे परिणमावे, पण औदारिक परावर्त्तमध्यें वैि वादि क प्रजल लीये, ते लेखा हि गणाय नहीं, एम अनु में चारे प्र ारें सर्वाणु परिणमावतां सूद्रमपुजल परावर्त्त थाय ॥ इत्यर्थः ॥ ए ॥

हवे बादर तथा सुद्धा देत्रादि त्रण प्रजल परावर्तनं स्वरूप हे हे.

लोग पएसो सिपिणि, समया अणु नाग बंध । णाय ॥ जह तह कम मरणेणं, पुघा खित्ताइ घूलियरा ॥ उउ ॥

अर्थ-( लोगपएसो के० ) चौदराज लोकना आकाश प्रदेश ( सप्पिणिसमया के० ) उत्सिंपणी अने अवसिंपणीना समय अने ( अणुनागवंध हाणाय के० ) अनुनाग वंधनां स्थानक, ते रसवंधना देनु असंख्यातां अध्यवसाय स्थानक जाण वां. ए त्रणे ( जहतह के० ) जेम तेम आधा पाता (मरणेणं के०) क्रमोत म म रणें करीने ( पुन्न के० ) फरसी रहे, तेवारें ( कम के० ) अनुक्रमें ( खिनाइ के० ) होत्रादिक एटले हेन्त्रथी, कालधी अने नावधी ( यूल के० ) स्यूल एटले वादर पुजल परावर्त्त थाय अने ( इयरा के० ) ए यकी इतर एटले ए त्रणे अनुक्रमें ज मरण वेलायें फरसे, तेवारें ए त्रणे सूक्ष्म पुजल परावर्त्त थाय ॥ इत्यक्ष्णा ए ।।

सर्वलोकना आकाशप्रदेश एटले जे अंग्रलघन आकाश खंमना प्रदेशापहार स मय समय प्रत्यें करतां पण असंख्यातां कालचक्र व्यतिक्रमी जाय, एवा सुद्धा ननः प्रदेश हे. ते सर्व लोकना आकाश प्रदेशने जेवारें एक जीव, अनेक नवें करी स्प शं, एटले सर्व आकाशप्रदेशें मरण पामे, तेमांहे जे आकाश प्रदेशें एक वेला मरण पाम्यो, तेज आकाश प्रदेशें वली बीजी वेला मरण पामे, ते लेखामां न ग णाय, परंतु जे अस्पश्ची प्रदेशने स्पर्शी मरण पामे ते प्रदेश, तेना लेखामां गणाय. एम करतां सर्वलोकाकाश प्रदेशने मरणें करी स्पर्शे. अहींआं जो पण जीव अ संख्याता आकाश प्रदेश अवगाहीने रह्यों हे तो पण मरणवेलायं एक प्रदेशनी मुख्यता लेवी। एने वादर केंत्र पुजलपरावर्ष कहीयें.

श्रने जेवारें श्रनुक्रमें एटले जे श्राकाशप्रदेशें जीव एकवार मरण पाम्यो. ते ज श्राकाश प्रदेशनी श्रेणीयें जेवारें वली तेनी जोडना वीजा प्रदेशें वीजी वेला मरण पामे. ते लेखामां गणाय, परंतु वीजे स्थानकें वीजे नवें तेनी वचमां श्र संख्य लोका । त्र प्रदेशें संख्य वेला रण पामे, ते वचला रणना प्रदेश ले खामांहे नावे एम अनुक्रमें श्रेणीब ६ तर बद प्रदेश रणें री स्परीतो थ को सर्व लोकाकाश प्रदेश स्पर्शे, तेवारें सूक्ष्म केत्र पुजल परावर्त थाय तेमध्यें नं ता कालचक्र प्रमाण बादर पुजलपरावर्त्तथकी नंतग्रणो । ल नीपजे

हवे कालयकी पुजल परावर्तनुं ान कहे हो. वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमा ए कालचक्र हो. तेना सर्व समय, मरएों करी जीव स्पर्शे, एट हो पहेला समय एकी मांमीने हेहला समय सुधी सर्व समयें मरए करे, परं जे समयें एक का लच मांहे मरए पाम्यो, तेहीज समयें बीजा घएा कालच मांहे मरए पामे. ते समय लेखामांहे गएाय नहीं. पए अनेरे समयें मरए पामे, ते लेखामां गएा य. एम कालच ना सर्व समय रए वेलायें करी जेवारें एक जीव स्पर्शी रहे, ते वारें कालयकी बादरपुजलपरावर्त्त थाय.

धने जेवारें ए कालच ने पहेले धुरले स यें रण जही वली जेवारें केवा रेंक कोइ कालच ने बीजे समयें रण पामे, ते लेखामां गणाय. तेमज कोइ कालच ने त्रीजे समयें जीव मरण पामे, ते लेखामां गणाय. परंतु वचला आगल पाउलना समयें अनेक मरण करे, ते लेखामां गणाय नहीं. एम वली जेवारें कोइ ए क कालच ने चोधे समय मरण जहे, पांचमे समय मरण जहे, यावत् कालचक्रना लेखला समय पर्यंत अनुक्रमें सर्व समय मरणें करी स्पर्धे. अहीं आं कोइक कालच क दीठ एक समय लेखामां आवे अने वचालें संख्याता, असंख्याता, यावत् अनंत कालचक्रनां मरण पण लेखामां न आवे, परंतु जेवारें आगल जे समयें मरण पाम्यो होय, तेने आगले समयेंज जेवारें मरण पामे, तेवारें तेज लेखामां आवे. एम असंख्याते मरणें पण अनंतां कालच व्यतीत थइ जाय. तावत् कालप माण सुक्रा काल पुजलपरावर्त्त थाय.

हवे नावधी स्काबादरपुजलपरावर्त कहे हो. रसबंध हेतु कापायिक अध्य वसायस्थानक मंद्र. मंदतर, मंदतमना नेदें असंख्यात लोकाकाश प्रमाण हे जे न णी सीत्तर कोडाकोडी सागरोपमना समय प्रमाण स्थितस्थानके असंख्याता र सबंधहेतु अध्यवसाय स्थानक हो. ते सर्व अध्यवसाय स्थानक मरणें करी अड कमें स्पर्श एटले ते रसवंधनां स्थानक केवारेंक मंद्र, मंदतम, मंदतर, तीव्र, तीव्र तम, तीव्रतर, एवं स्थानकें मरण पामतो जेवारें एक जीव, सर्व स्थानक फरसी रहे तेवारें नावथकी वादरपुजलपरावर्त्त थाय. ने जेवारें य जघन्य ध्यवसायें रण पामीने वली जेवारें नेइएक कालां तरें तेथकी चढते बीजे अध्यवसायस्थानकें मरण पामे ते लेखामांहे गणाय, तेवार पढी वली नेइक लांतरें तेथकी चढते त्रीजे अध्यवसायस्थानकें वर्चतो मरण पामे ते लेखामांहे गणाय, परंतु बीजा आघा पाढा अध्यवसायें मरण पामे ते लेखामां न गणाय, एम अनु में निरंतर पणे जघन्यथी उत्क अध्यवसाय स्थानक पर्यंत सर्व कमेना संख्याता रसवंधनां अध्यवसाय स्थानक छे. ते अनु में मरणें करी स्पर्शें तेनी वचालें जे तेज अध्यवसाय तथा सांतर अध्यवसाय स्थानकें अनंता मरण रे, ते पण लेखामां न आवे परंतु जे पूर्वलो अध्यव साय होय, तथा चढते अध्यवसायें मरण पामे तोज ते लेखामां आवे, एम अनुक्रमें सर्व नुनागं बंधस्थानक, जन्म अथवा मरणें करी स्पर्शे, तेवारें नाव यी सूच्चापुजलपरावर्त्त थाय. ए रीतें आठ प्रजल परावर्त्त कह्यां.

तथा यंथांतरें नवपरावर्त्त कहां हो. ते ोइ एक जीव नरकादिकगितने विषे दश सह वर्ष जघन्यायुथी समयाधि समयाधिक स्थित वधारतां नेतुं हजार वर्षनी स्थित पर्यंत तथा दश लक् वर्ष स्थितिथकी समयाधिक समयाधिक तेत्रीश सा गरोपम स्थितिने आठखे सर्व नरकायु स्थितना स्थानकें नारकीना नवें करी तथा देवगित मध्यें दश हजार वर्षायुथी लइ समयाधिक समयाधिक एकत्रीश सागरोपम लगें सर्वदेवायुस्थितनां स्थानकें देवनवें करी तेमन मनुष्य तिर्यचगित मध्यें जघन्य कुल्लक नवधी छेइने समयाधिक समयाधिक मनुष्य तिर्यक्ती यावत् त्र ए पञ्योपमायुस्थिति लगेंनां स्थानकें मनुष्य तिर्यचना नवें करी एम सर्वायुस्थानकें अनुक्रमें स्पर्शतो बादरनव पुजल परावर्त्त थाय, अने समयाधिक समयाधिक स्थिति अनुक्रमें एकेक गतिना क्रमें क्रमें करी आयुनां सर्वस्थानक स्पर्शतो चारे गतिना सर्वायुस्थानक जीव स्पर्शे, तेवारें सूच्य नव पुजल परावर्त्त थाय,ए आशांवर मतें मान्यो हो, ते अंहीं प्रसंगें जाएवा निमित्त लख्युं हो, ए रीतें उपोद्धात संग तें तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा पुजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां तें तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा प्रजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां तें तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा प्रजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां त्रें तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा प्रजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां त्रें तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा प्रजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा प्रजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां तथा प्रसंगसंगतें पत्थोपम, सागरोपम तथा प्रजन परावर्ता हिकनां सक्ष्प कह्यां स्वर्ध कर्यां स्वर्ध कर्यां स्वर्ध कर्यां स्वर्ध कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य कर्यां सक्ष्य क्रियं सक्ष्य कर्यां सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्यां सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्य स्वर्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्यां कर्य सक्य क्रियं सक्ष्य क्रियं सक्य क्रियं सक्य क्रियं सक्य क्रियं सक्य क्रियं सक्य क्व

प्रकारांतरें वली पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस, आत स्पर्श, अने अगुरुलघु, ए बावीश नेदें करीने सर्वेलोकवार्न पुजन परमाणुआ फरशी मूके, तवारं नाव यी बादर पुजन परावर्त्त याय, अने ए बावीशमांदेथी एकेका पणे अनुक्रमें सर्व पुजल फरशीने रहे, तेवारें नावयी सूक्ष पुजनपरावर्त याय ॥इति समुज्ञयायीः॥ ए ए॥ हवे जे प्रदेश वंधनो अधिकार कहेतां यकां ते मध्यें जे प्रकारं जीव, उत्कृष्ट

प्रदेश बंध करे, ने जेहवो श्रको जे प्रकारें जीव, जघन्य प्रदे बंध करे, ते प्र कार कहे हो. जे जणी प्रदेशबंधतो योग प्रत्यवियो हो तेथी योगहिंद्धयें प्रदेश ह दि होय अने सर्व जीवनेद मध्यें स िआ पंचेंडिय पर्याप्ता ं उत्क योगस्थानक होय, बीजा जीवजेद सर्व एथी हीनयोगी हे. ए स्वरूप जणाववाने गाथा कहे हे.

॥ अयोत्क जघन्यप्रदेशबंधस्वरूप । ह ॥ अपयर पयिं बंधी, ड जोगीअ सिं पज्जतो ॥

कुणइ पए सुकोसं, जहन्नयं तस्स व ।से ॥ ७ए॥

अर्थ-(अप्पयरपयिडबंधी के०) अल्पतर एटले घणी घोडी प्रकृति बां धतो होय एटले प्ररुति घोडी बंधाती होय तिहां अबंधांती सजातीय प्ररू तिना दलनाग, ते बंधाती प्रकृतिनें नागें घणा लाने, तेथी तेने प्रदेशनी वृदि होय, तथा ते पण ( च डजोगी ख के ० ) चत्क योगी एट ले चत्क ष्ट योगस्या नकें वर्ततो उत्क जीवव्यापारें री घणा कमेप्रदेशनुं ग्रहण करे, जेम जोरा वर प्ररुप, तृणादिक संयद करतो बीजा निर्वेल प्ररुपनी पेक्सयें घणा तृणा दिकनो संयह करी शके, तेम मंद योगी जीवनी अपेक्स्यें उत्क योगी जीव, घणां कमेदल यहण करे, तेथी ते लीधो. ते पण (सन्नि के०) संज्ञी पंचेंडिय जीव होय, जे नणी जे जीव, मन सहित होय ते मन लगावीने जे कार्य करे, ते कार्य करतां बीज़ं अनानोगें जे कार्य करे, तेनी अपेक्सयें आनोगें जे कार्य करे, तेनी उत्रुप्ट चेप्टा होय. अने तिहां प्रदेशबंध अधिक होय ते मध्यें पण वली (पक्क त्तो के॰ ) पर्याप्तियें करी पूर्ण होय, तेवारें तेने योग प्रवलतायें प्रदेश पण घणा लेवराय एने अपर्याप्तावस्थायें पण अंतरमुहूर्त सुधी समय समय प्रत्यें असंख्या तगुणवर्षे योग वधे, एटले संज्ञीत पंचेंडिय पर्याप्ती, जत्कृष्ट योगस्यानकें वर्ततो पोताना वंधयोग्य स्थानकमांहे अल्पसंख्यायें प्रकृति वंधस्थानकें वर्ततो एवो जीव ( कुण ५ प एसुक्को सं के ० ) जत्रु एप प्रदेश बंध करे.

श्यने (जहन्नयं के॰ ) जवन्य प्रदेशवंधतो (तस्स के॰ ) ते उत्कृष्ट प्रदेशवंध स्वामिनी प्रदेशवंध सामग्रीने (वचासे के०) विपर्वासें विपरीतपणे एटले मन्नीयाथी विपरीत असन्नीयो लेवो तथा पर्याप्ताने स्थानकें खपर्याप्तो लेवो य ने उत्कृष्ट योगीने स्थानकें मंदयोगी लेवो, एटले असन्नीओ लेवो, तेमांहे पण अपर्यातो लेवो, ते पण वली प्रथम समयें घणो मंदयोगी होय, तेथी योग मंद

तार्थे री तथा नोयोगने अनावें री मेदल थोडां यहण रे, तेपण पोता ना बंधस्थान ध्यें बहु संख्येय प्रकृति बंध स्थानकें वर्ततो होय ते लेवो. एटले घणी प्रकृति बांधतां थोडुं दल घणी प्रकृतिना नागें वहेंचतां अल्प दल नाग आवे, तेथी ते जीव, जघन्य प्रदेशबंध रे॥ इति स यार्थः॥ एए॥

एम सामान्यपणे कमेप्रकृतिनो उत्क प्रदेशवंध तथा जघन्य प्रदेशवंधनो उ पाय ही, हवे मूलोत्तर प्रकृतिनो उत्क प्रदेशवंध, जे गुणुगणे जीवने होय ते कहे के तेमध्यें पण मूलप्रकृति आत अने उत्तर प्रकृति एकशोने वीशना उत्कृष्ट प्रदेशवंध खामी हेवाने वसरें सूची कटाह न्यायें अहुप वक्तव्यता नणी प्रथम आयुः मेनी मूलोत्तर प्रकृतिना बांधनार गुण स्थानकनी अपेक्टायें हे के, एटले कया या गुणुगणे । युः मेना उत्क प्रदेशवंध खामी होय? ते कहे के. तेमध्यें मिश्रगुणुगणे तो आयुनो बंध न होयः अने साखादने पडतां घो लना योगीने होय खरो, तो पण तेणें तिहां उत्कृष्ट योगने अनावें तथा अहुप काल नावी पणे अथवा बीजे कोइ कारणें यंथकारें उत्कृष्ट प्रदेशवंध निषेथ्यो के नणी कोइएक आचार्यने मतें साखादनगुणुगणे पण उत्कृष्ट प्रदेश बंध मान्यो के. ते मत अहीं उवेखवो मिश्र तथा साखादन, ए वे गुणुगणां मू कीने शेष गुणुगणें आयुःकर्मना उत्कृष्ट प्रदेशवंधक, गाथायें करी कहे के.

> ॥ अय मूलोत्तरप्रकृतीनामुत्कष्ठप्रदेशवंधस्वामीनाह ॥ मिल्ल स्प्रजय च स्था , बिति ग्रण विणु मोहि सत्त मिलाइ॥ बण्हं सतरस सुदुमो, स्प्रजया देसा विति कसाए ॥ ए०॥

अर्थ-(मिन्न के॰) एक मिथ्याल्युणवाणुं अने बीजा (अजयचन के॰) अविरत्यादिक चार गुणवाणां, एटले बीजुं अविरति, त्रीजुं देशविरति, चोथुं प्रमन्त अने पांचमुं अप्रमन्त, ए पांच गुणवाणों वर्ततो संङ्गी पंचेंडिय जीव, जिल्ह्ययो गस्यानकें वर्ततो (आन के॰) आयुःकर्मनो जिल्ह्य प्रदेशवंथ करे, जे नणी अपूर्वकरणादिक सात गुणवाणां तथा मिश्रगुणवाणुं, ए आव गुणवाणे आयुनो वंधज नथी अने साखादने जिल्ह्ययोगने अनावें जिल्ह्य प्रदेश वंध न होय, तथा (वितिगुणविणु के॰) बीजुं सास्वादन, त्रीजुं मिश्र, ए वे गुणवाणा विना ज्ञेष (मिन्नाइ के॰) र मिथ्याल, ॰ अविरति, ३ देशविरति, ४ प्रमन्त, ए अप्रमन्त, ६ निन्नि, ७ अनिन्नि, ए (सन्त के॰) सात गुणवाण सात कमें वांथतो एवो सं

ही पंचेंडिय जीव सर्व पर्याप्तियें री पर्याप्तो, (ोहि के०) मोहनीय कर्मनो उत्कटप्रदेश वंध करे, अहीं आं सास्वादन तथा मिश्रगुणवाणे उत्कृष्ट योग न लाजे, तेथी उत्कृष्टदल संचय करी न शके ते नणी निषेष्या; जे नणी मोहनीय नी सत्तर प्रकृति मिश्रें तथा अविरति गुणवाणे वंधाय हे, अने जो मिश्रें उत्कृष्ट योगस्यानक होत तो चोथानी पेरें त्रीजे गुणवाणे पण प्रत्याख्यानीआ कपाय नो उत्कृष्ट प्रदेशबंध कहेत पण ते न कह्यो, तेथी जाणीयें हैयें. जे मिश्रगुण वाणे उत्कृष्ट प्रदेशबंध कहेत पण ते न कह्यो, तेथी जाणीयें हैयें. जे मिश्रगुण वाणे उत्कृष्ट योगी एवो संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्तो जीव, उत्कृष्ट प्रदेशबंध करें, एम मूलप्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी कही, हवे उत्तर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशवंध स्वामी कहे हे. ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, एक शातावेदनीय, एक उच्चेगीत्र अने एक यशःकीर्ति, ए (सत्तरस के०) सच्चात्तवर्ति मनुष्य उक्तृष्ट योगी होय, जे नणी आयु अने मोहनीयना दलनो नाग पण व कमेने आवे, तथा पांच निडानो नाग चार दर्शनावरणीयने आवे तथा नामकमेनी सर्व प्रकृतिनो जाग, एक यशःकीर्तिने आवे, तथी प्रदेशबहुलता थाय.

(अजया के॰) अविरित सम्यक्दृष्टि ग्रणगणे वर्ततो जत्कृष्ट्योगी पर्याप्तो संक्षी पंचेंड्य जीव, (बि के॰) वीजी अप्रत्याख्यानावरणीय कपायनी चोकडीनो जत्कृष्ट प्रदेशवंध करे जेनणी एना वंधकमांहे एहिज अल्पप्रकृति वंधक पणुं हे तेथी अनंतानुवंधीआ चार अने मिण्यात्व मोहनीय, ए पांचना प्रदेश एने अधिक आवे,

नतानुविधाओं चार अने मिध्याल मोह्नाय, ए पविना प्रदेश एन आवेक आप, तथा (देसा के०) देशविरतिग्रणाताणे वर्ततो मनुष्य, तिर्धेच उत्क्रप्रयोगी सात मूल प्रकृति बांधतो (तिकसाए के०) त्रीजी प्रत्याख्यानावरण कपायनी चो कहीनो उत्कृष्ट बंधक होय, एना बंधकमांहे एहिज अहप प्रकृति वंधकपणुं हे तेथी शेप श्राव कपायना दल नाग एने आवे तथा आगु अने मिध्यालनो पण अंश श्रिधक श्रावे॥ इति समुच्चयार्थः॥ ए०॥

> पण अनि अही सुख गइ, नरा सुर सुनग तिग विछ वि छगं॥ सम चछरंस मसायं, वहरं मिलोव सम्मोवा॥ ए१॥

त्रयी पुरुपवेद श्रने संज्वलना कपायनी चोकडी, ए (पण के ०) पांच मोहनीय क मनी उत्तर प्रकृतिनो (श्रिज्ञिश्रही के ०) श्रनिवृत्तिनामा नवमा ग्रणवाणाना पांचे १ ए ग्रुनखगित, १ ७ त्रस, १० बादर, ११ पर्याप्त, ११ प्रत्येक, १३ तिम्मीण, १४ तीनाग्य,१५ सुस्वर, १६ छादेय, १७ स्थिर अधवा छिस्थर, १० ग्रुन अधवा छग्रुन, १७ यशःकीर्त्त छथवा छयशःकीर्त्ते, ए मनुष्य प्रायोग्य बांधतो सम्यक्ष्ष्यि तथा मिण्यादृष्टि जीव दोय तथा तिर्थेच प्रायोग्य छोगणत्रीश बांध तो तिहां मनुष्य दिकने स्थानकें तिर्यचिक कहेवुं तथा मनुष्य प्रायोग्य बांधतां मिण्यादृष्टि जीव पण लेवो छने सास्वादने उत्क योग न होय, तेनणी ते न लीधो तथा त्रेवीश, पञ्चीशादिकना बंधस्थानकें प्रथम संघयणनो बंध न थी छने त्रीश, एकत्रीशना बंधस्थानकें प्रकृति नाग घणो होय, तेथी उत्कृष्ट प्रदेशबंध न होय. तथा शाता वेदनीयनो उत्कृष्ठ प्रदेश बंध सम्यक्ष्य तथा मिण्यात्वी सात कमेनो बंधक होय, जोपण दशमे ग्रुणगणे उत्कृष्ठ योग हे तो पण तिहां उत्कृष्टिस्थित बंध न होय तथी प्रदेशबंध पण विवद्यो नहीं. एम तें तालीश प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कह्या॥ इति समुच्चयर्थः॥ ए१॥

निद्दा पयला इ जुअल, जयकु हाति ह संमगो सुजई॥ आहार इगं सेसा, उक्कोस पएसगा मिहो॥ ए२॥

अर्थ-(निद्दापयला के o) निद्दा अने प्रचला, (इज्ज अल के o) हास्य अने रित तथा शोक अने अरित, ए बे युगल एवं उ प्रकृति (जयकुष्ठा के o) सातमी जय, आतमी जुगुप्सा, (तिष्ठ के o) नवमुं तीर्थंकर नामकमे, ए नव प्रकृतिनों उत्कृष्ठ प्रदेशवंधस्वामी (संमगों के o) सम्यक्ष्ट्रष्ट्यादिक अपूर्वकरणांत पांच गुणस्थानकवर्तों जीव सात कमेवांधतो आग्रु दलनो जाग अधिको लाजे, ते जिला तथा निद्दा प्रचलाने चोथे गुणगणे थीणकि विकता दलनो जाग अधिक होय. तथा मिश्रगुणगणे पण थीणकि विकतनो वंध नथी पण ते उत्कृष्ट योगी न होय. तेजणी ते न कह्यो. तथा हास्यादिक वे युगल, जय अने जुगुप्सा, ए ठ प्रकृतिनो पण मोहनीयनी तेर प्रकृतिने वंधें तथा नव प्रकृतिने वंधें अहपप्रकृति जणी जाग थणो आवे. तेजणी लेवो तथा जिननामकमेनो उत्कृष्ट प्रदेश वंधसामी मन्यक्ष्य मनुष्य देवगित प्रायोग्य जिननाम सहित उगण्जीश प्रकृति वांधतो होय ते लेवो. जे जणी त्रेवीशादिक प्रकृतिनां वंध स्थानकें तो जिननाम कमेनो वंधज नथी. अने त्रीश प्रकृति मनुष्य प्रायोग्य वांधतां तथा एकत्रीश देवगित प्रायोग्य वांथतां प्रकृति वांथा. तथा निवास क्रित वांथतां विवास वांथतां प्रकृति वांथा. तथा होयां तथा एकत्रीश देवगित प्रायोग्य वांथतां तथा एकत्रीश देवगित प्रायोग्य वांथतां तथा एकत्रीश देवगित

(सुजई के०) सुयित सुसाधु एटले प्राद रिहत साधु अप्र त ने पूर्व करण, ए बे णगणे वर्ततो उत्रुष्ट योगी देव प्रायोग्य त्रीश प्ररुति (आहार हुगं के०) हार िह सिहत बांधतो बे समय सुधी उत्रु प्रदेश ध रे, शेष गुणगणे हार िह नो बंध नथी, तेथी ते न लीधा तथा उत्रुष्ट योग स्थानकें जीव बे समय पर्यतज रहे पत्री योगस्थान फरे, तेथी सर्वत्र उत्रुष्ट योगी बे समय सुधीज होय तथा एकत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकें प्रकृतिनागनी बहुलतायें अल्पदल लाने, ए चोप प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वा ि ह्या.

तेथकी (सेसा के०) होष रही जे बाशक प्रकृति तेना (चा पएसगा के०) चत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी (मिन्नो के०) मिण्यात्वी जीव पंचेंड्य पर्याप्ती चत्क योगी सात कम बांधतो बे समय जमें होय जेनणी ह नरकित्रक, ए जाति चार, ११ स्थावरचतुष्क, ११ हुंमसंस्थान, १३ वेवहुं संघयण, १४ खातप, १५ नपुंस वेद, १६ मिण्यात्व, २० खनंतानुबंधीआ कषाय चार, १४ मध्यसंघयण चार, १० मध्यसंस्थान चार, ३१ दोनोग्यित्रक, ३४ थीण दीत्रिक, ३७ तिर्यचित्र , ३० स्विवेद, ३० च तेर्यचित्र , ३० स्विवेद, ३० च तेर्यचित्र , ३० स्विवेद, ३० च तेर्यचित्र , ३० स्विवेद, ३० च तेत्र ४२ नीचैगींत्र ए एकताजीश प्रकृति ध्यें शोज प्रकृतिनो बंध मिण्यात्व प्रत्यिचे छने प शि प्रकृतिनो बंध खनंता बंधी प्रत्यिचे हो, ते मिश्रादिक णवाणे न बंधाय खने सास्वादन ग्रणवाणे चत्कृष्ट यो गने खनावें चत्क प्रदेश बंध न होय, तेनणी एनो स्वामी मिण्यात्वीज कह्यो.

तथा शेष पञ्चीश प्रकृतिनो बंध, जोपण सम्यक्तादिक ग्रणगणे हे. तो पण १ श्रीदारिक, १ तेजस, ३ कामण, ७ वर्णचतुष्क, ७ श्रग्रहलघु, ए उपघात, १० बादर, ११ प्रत्येक, १२ स्थिर, १३ श्रग्रुचन, १४ श्रयश, १५ निर्माण. ए पंद र प्रकृतिनो उत्कृष्ठ प्रदेशबंध श्रपयीप्ता एकेंड्य प्रायोग्य नामकर्मनी त्रेवीश प्रकृति बांधतो थको मिण्यात्वी जीव करे, जे चणी ४ स्थावरचतुष्क, ५ एकेंड्य जाति, ६ ढुंम संस्थान, ७ तिर्थेचिहक श्रने पूर्वेली पंदर, एवं त्रेवीश बांधता हो य, ते करे तथा पञ्चीशादिकने बंधें नाग बादुत्य श्रावे माटें श्रव्य दल लाचे.

तथा मनुष्यिहक, पंचेंड्यजाति, औदारिक उपांग, पराघात, उह्यास,त्रस, अप यीप्त, स्थिर अने ग्रुन, ए दश प्रकृतिनो मिण्यात्वें पञ्चीश नामकर्मनी प्रकृति अपयीप्त त्रस प्रायोग्य बांधतो उत्कृष्ट प्रदेश बंध करे, तेथी ए ढाशह प्रकृतिना उत्कृष्ट प्र देशबंध स्वामी मिण्यात्वी कह्या. एम उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कह्या॥ इति ॥ एश॥ हवे जयन्य प्रदेशवंध स्वामी कह्या थकी वचला सर्व मध्यम प्रदेशवंध स्वामी े सुखें त जाय ते नणी एकशोने वीश प्रकृतिना जघन्य देशबंध स्वामी कहे हे.
।। अथ जघन्य प्रदेशबंधस्वामीनाह ॥

सुमुणी डिन्न असन्नी, नरय तिग सुरा सुर वि वि डगं॥ सम्मो जिणो जहन्नं, सुहुम निगो आइखिण सेसा॥ ए३॥

अर्थ-तिहां असन्नी अपयोशों । पणी प्रकृतिना बंध मांहे घणी प्रकृति बांधतो जघन्य योगें वर्ततो चार स य जगें रहे एट छे जघन्य योगें उत्कृष्टो तो चार समय पर्यंत जीव रहे ते चणी सामान्यपणे ए जघन्य प्रदेश बंध स्वामी कह्यों हे

(सुमुणी के०) अप्रमत्त साधु घोलना योगी देवगति प्रायोग्य एकत्रीश प्रकृति बांधतो आहारक शरीर तथा आहारकोपांग, ए (इक्ति के०) बे प्रकृतिनो ज घन्यप्रदेश बंध करे, जे नणी एना बंधकमांहे एज जघन्य प्रकृतिनो बंधक होय

घन्यप्रदेश वंध करें, जे नणी एना बंधकमांहे एज जघन्य प्रकृतिनों बंधक हांय (नरयितग के०) नरकगित, नरकानुपूर्वी अने नरकायु, ए नरकित्रक तथा चोंथुं (सुराठ के०) देवायु, ए चार प्रकृतिनों जघन्य प्रदेशबंध स्वामी (अस ी के०) अ सन्नीठ पंचेंड्य पर्याप्तों जीव, आठ कमें बांधतों घोलना योगी जे एक योग यकी बी जे योगें संचार करतों होय ते घोलना योगी कहीयें. ते जघन्ययी तो एक समय लगें अने उत्कृष्ट तो चार समय लगें जघन्य प्रदेशबंध स्वामी होय. जे नणी जघन्य योगें जीव, चार समय उपरांत न रहे अने सन्नीआना जघन्य योग यकी असन्नीआनो उत्कृष्ट योग पण असंख्यातगुण हीन होय, तो वली जधन्य योग घणोज हीन होय, एमां ग्रं कहेवानुं हे ? ते नणी असन्नीठं लीधो तथा असन्नीआ अपर्यापप्ताने तो ए प्रकृतिनों बंधज नथी ते नणी अपर्याप्तों न लीधो, अने एकेंडिया दिकने पण ए प्रकृतिनों वंध नथी तेनणी पंचेंडियज लीधो तथा आठ कर्म बां धती वखतें घणा नागें कर्म दल थोडुं आवे, तेमाटें आठ कर्मनों वंधक लीधो.

(सर के०) देवगति अने देवानुपूर्वी, ए देविहक तथा (विज्ञविष्ठगं के०) वैकि य गरीर अने वैकिय अंगोपांग, ए विक्रयिहक अने (जिएों के०) जिननाम कमे, ए पांच प्रकृतिनों (जह जं के०) ज्ञयन्य प्रदेश वंध स्वामी (सम्मों के०) सम्यक्दिए जीव नव प्रथम समय वर्ततो होय, तेमध्ये पए। अनुत्तर विमान वाती देव पोताना नव प्रथम समयें स्वप्रायोग्य ज्ञयन्य वीर्यवंत थको जिननाम सित मनुत्य प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृति बांधतो जिननामसिहत त्रीश बांधे, ते वारं जिननामनो ज्ञयन्य प्रदेशवंधस्वामी होय, जे नए। मनुष्य तो देव प्रायोग्य

श्राविश, श्रोगणत्रीश बांधे हे पण जिनना सहित िश न बांधे, वली तिहां प्रकृति श्रव्य होय ते नणी नुष्य न ह्यो, ने नार ही तो तर देवय ही उत्कृत्योगी होय, तेथी ते घणा प्रदेश बांधे हिं ते पण न लीधो तया चारिहियाने श्राहार हि हित श्रने जिनना सहित देव प्रायोग्य ए शिशनो बंध होय तिहां जो पण प्रकृतिनी जता होय, होपण ते नव प्रथम स यना एवा पर्या तर सुर्थ ही उत्योगी होय, तेथी ते पण न लीधों तेमाटें सम्य क्रृष्टि श्रपर्याप्ता श्र तरसुर जिनना नो जघन्य प्रदेशबंध रे, तथा शेष विश्व यि ने देविह्क, ए चार प्रकृतिनो जघन्य प्रदेश बंध, सम्यक्रहि मनुष्यनव प्र ये वर्ततो रे, जे नणी शेष ण गितना जीवने ए श्रोगणत्रीश प्रकृति बंध स्थान होय परं त्रीश श्रमे एकत्रीश प्रकृतिनो बंध तो पर्याप्तावस्था यें होय तिहां जघन्य योग न होय, तेथी हप प्रदेश बंध न री शके, तेथी ए पर्याप्तावस्थायें प्यज एना स्वामी कह्या.

तथा (सुदुमिनगोश्राइखिणसेसा के०) एथी शेष रिह जे एकशो ने नव प्र
कित तेनो जघन्य प्रदेशबंध स्वामी सूक्ष्म निगोदियो लिब्ध पर्याप्तो जीव श्रा
दि क्र्णें एटखे नव प्रथम समयें वर्ततो होय, जे नणी पूर्वें श्रगीश्रार प्रकृति जे
ही, तेनो वंध निगीदि ।ने नथी, तेथी तेना स्वामी नि ह्या. श्रने (१०७)
प्र तिनो बंध एने तेथी एनो जघन्य बंध स्वामी निगोदीश्रो क हो, केम के
एथी धिक घन्य योग कोइ बी । जीवने नथी ते मध्यें पण नव प्रथम सम
यें वर्ततो घणोज जघन्ययोगी होय, तेणे करी हप प्रदेश वंध करे तथा तेमां प
ण म ष्यायु श्रने तिर्थेचायु, ए बे प्रकृतिना श्रह्म प्रदेश वंध करे तथा तेमां प
समयवर्त्ति होव न होय जे नणी त्रण पर्यापित पूर्ण कस्मा विना कोइ परनवायु
बांधेज नहीं, तेमाटें ए बे प्रकृतिना जघन्य बंधकमध्यें श्रपयीप्तो मात्र खेवो पण नव
प्रथमसमय वर्त्ति न खेवो. एम सर्व प्रकृतिना जघन्य प्रदेश वंध स्वामि कह्या ॥ ए३ ॥
हवे प्रदेश बंधने विषे सादि नाद्यादिक नांगा विचारे हे.

दंसण बग नय कुडा, बि ति तुरिश्च कसाय विग्घ नाणा णं॥ मूल बगेऽणुक्कोसो, च ह डहा सेसि सवडं॥ ए४॥

र्थ-चक्नुदर्शनावरणादिक चार, दर्शनावरण तथा निष्ठा अने प्रचला, ए (दंस णढग के॰) दर्शनावरणपट्क, ( नयकुत्वा के॰) नय अने जुगुप्सा, तथा ( वि तितुरिञ्जकसाय के •) बीजा ञ्चप्रत्याख्यानावरण ोधादिक चार, त्रीजा प्रत्याख्या नावरण क्रोधादिक चार, चोथा संज्वलना क्रोधादिक चार, (विग्ध के०) पांच श्रं तराय, (नाणाणं के०) पांच ज्ञानावरणीय, एवं त्रीश उत्तर प्रकृतिनो तथा (मू लढगे के 0) एक ज्ञानावरणीय, बीजी दर्शनावरणीय, त्रीजी वेदनीय, चोथी नाम. पांचमी गोत्र अने वही अंतराय, ए व मूलप्रकृतिनो (अणुव ोसो के॰) अनु त्रुष्ट प्रदेशवंध (च व के ०) चार नांगे होय. तिहां ह मूल प्रकृतिनो तथा पांच झानावरण, चार दरीनावरण अने पांच अंतराय, एवं चौद **उत्तर प्रकृतिनो** उ त्रुष्ट प्रदेशवंध सूक्ष्म संपरायग्रणवाणे होय तथा संज्वलना चार कषायनो उत्रु प्ट प्रदेशवंध, नवमे गुणवाणे होय तथा निहा अने प्रचला, ए बे प्रकृतिनो उ त्कृष्ट प्रदेशबंध आतमा गुणताणाने प्रथम नागें होय, तथा नय अने जुगुप्ता मोहनीयनो उत्कष्ठ प्रदेशबंध, ञावमा गुणवाणाने सातमे नागें होय तथा प्रसा ख्यानावरण कषाय चारना उत्कृष्ट प्रदेशबंध, पांचमे गुणवाणे होय तथा अप त्याख्यानावरण कषाय चारनो जत्कष्ट प्रदेशबंध, चोथे गुणवाणे होय माटें जे अनादि मिण्याली जीव ते उत्कृष्ट प्रदेशबंधनां स्थानक एवां गुणगणां नथी पाम्यो, तेने सर्वदा ए त्रीश प्रकतिनो अनुत्कष्ट प्रदेशबंध अनादि जाएवो. जे नणी ते जीव, केवारें पण अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध यकी जत्कृष्ट प्रदेशबंधें नधी आव्या, तेथी तेने अनुत्रुएनी अनादि हे ए प्रथम नंग जाएवो. अने जेएों गं थिनेद करी सम्यक्त पामी ए प्रकृतिना चत्कष्ट प्रदेशबंध स्थानकें वे समय ज गें उत्कृष्ट योगस्यानकें रहि तिहां उत्कृष्ट प्रदेश वंध करी वली योगस्थान परा वर्ने तथा अध्यवसाय पडतां अनुःकष्ट प्रदेशवंध करे, तिहां सादि नामें बीजो नांगो जाणवो, तथा जिन अने नव्यने सांत नांगे होय, जे नणी ते जीव गुण वाणे चडतो उत्कृष्ट प्रदेश वंध करहो, तथा ते उत्कृष्ट प्रदेश वंधनो श्रंत पण कर ग़े ते नणी तिहां अनुत्रुष्ट प्रदेश वंधनुं सांतपणुं जाणवुं. ए त्रीजो नांगो कह्यो. तथा अनव्य जीवने उपरला गुणवाणां पामवांज नथी तेथी तेने उत्कृष प्रदेश वंध पण करवो नयी तथा वंधांत पण करवो नथी तेने अनुत्कृष्ट प्रदेशवंधनो श्रनंत नामे चोथो नांगो जाएवो. एम ए त्रीश उत्तरप्रकृतिनो तथा मूज व प्र कृतिनो अनुत्कृष्ट प्रदेश वंध चार नांगे कह्यो.

श्रमे (मेनिसवर्ष के॰) शेप सर्व त्रणे प्रकारना वंध, ते (इहा के॰) वे नाग होय. निहां उत्कृष्ट प्रदेशवंध वे समय लगें होय, तेथी सादि श्रमें सांत ए बे नांगा होय तथा जघन्य योग चार समय लगें रहे. तिहां जघन्य प्रदेश बंध मिण्यात्वें पामीयें. फरी अजघन्य बंध रे तिहां सादि अने सांत, ए बे नांगा बेहु बंधने विषे होय. एम ए त्रण बंध बें नांगें होय, ए पूर्वोक्त त्रीश प्रकृति विना शेष नेवुं प्रकृति रही. तेमध्यें तहोंनेर प्रकृति अध्रुव बंधनी हो. ते केवारेंक बंधाय अने कवारेंक न वंधाय, ते नणी एने विषे सादिसांत नांगो होय तथा एक मिण्यात्व, थीण हीत्र , नंता बधीचतुष्क, ए आव प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध सात कमें बांधतां संझी मिष्यात्वीने उत्कृष्ट योगें बे समय लगें होय, तेमाटें सा दिसांत नांगा जाणवा तथा सूच्य निगोदियाने नव प्रथ स यें जघन्य प्रदेश बंध होय अने बीजा जीवने अजधन्य प्रदेश बंध होय, ए ए चारे बंध ाव प्रकृतिना मिष्यात्वगुण वाणे पामीयें माटें सादि, सांत, ए बे नांगा जाणवा.

तथा नाम ध्रुवबंधिनी नव प्रकृतिनो अपयोप्त एकेंडिय प्रायोग्य त्रेवी प्रकृति ने बंधें उत्कृष्ट प्रदेशबंध, मिण्यात्वीने होय अने जघन्य प्रदेशबंध सूक्ता निगोदि आने नव प्रथम समयें होय, तेणे सादि, सांत, ए बे नांगा जाणवा, एम उत्कृष्ट अ वुत्क अने जघन्य प्रदेशबंधें सादि अने सांत, ए बे नांगा कह्या. ते प्रायें व्यव हारीया जीवने संनवियें वैयें। अन्यया उत्कृ प्रदेशबंध सि आ जीवने होय अने अनादि निगोदिआ जीवें तो संज्ञीपणुं पाम्युंज नथी, तो तेउत्कृष्ट प्रदेशबंध क्यां करें? तेथी तेने अ तक प्रदेशबंध पण चार नांगे संनवे, ते अहींआं न कह्यों। एम योगवृद्धियें प्रदेश वृद्ध होय ते नणी हवे योगस्थानकनुं स्वरूप कहे हे।

अथ योगस्यानान्याह हवे योगस्यान नी संख्या हे हे.

सेढि असंखि ंसे, जोगहाणाणि पयडि विइ नेआ॥ विइ वंधन्नवसाया, अणुनाग । ए असंख गुणा॥ ए८॥

अर्थ-( सेिड असंखि ंसे के०) श्रेणीने असंख्यातमें नागें जेटला आकाश प्रदेश होय, ते घनीरुतलोकनी एक प्रदेशिक श्रेणी तेने सूची श्रेणी सातराज प्रमाण नी कहीयें तेने असंख्यातमे नागें जेटला आकाश प्रदेश हे तेटला (जोगहाणाणि के०) योग स्थानक होय, ते नावीयें हैयें. सर्वथी अहपवीयवान नव प्रयम समयें वर्ततो एवो सूक्त्यानगोदिन लिट्ध अपर्याप्तो जीव. तेना असंख्याता जीव प्रदेश हे तेमध्यें पण जे सर्व जघन्य वीर्य प्रदेश एटले जे प्रदेशमां सर्वथी जघन्य वीर्य हो य, तेना वीर्यना अंश केवलीनी प्रकारूप शक्तें करी हेदतां एटले केवलीयें क

व्पयो जे वीर्यविनाग अर्थात् जे वीर्योशनो अंश केवली पण व्पी न शके तेने नावाणु पण कहीयें तेह्वा लोकने असंख्यातमे नागें वर्तता जे असंख्याता प्रत र, तेना प्रदेश प्रमाण वीर्योशें करी सहित ते पण असंख्याता थया, परंतु ते अ संख्याताने असत्कल्पनायें दश कल्पीयें तेवा दश वीर्याश हित एवा जे जीवना प्रदेश असंख्येय प्रतर प्रमाणनो स दाय परं असत हपनायें तेने त्रण मांभीयें ते नी प्रथम जवन्य वर्गणा जाणवी, तेथकी वली ए वीर्योशें प्रदेशनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी, तेथ ही वली एक वीयोंशें अधिक जीव प्रदेशना स दायनी त्रीजी वर्गणा जाणवी. ए एके वीर्योशें अधिक अधि क जीव प्रदेशनी समान जातिरूप वर्गणा तेवी घनीकृत जो नी एक प्रदेशिक श्रे णी तेना असंख्यनाग प्रदेश प्रमाण वर्गणा जेवारें श्राय, तेवारें असत्कब्पनायें तेने ह वर्गणा थापीयें तेने प्रथम स्यर्६ कहीयें जे जणी एकोत्तर वीर्यविजाग विधि करीने परस्परें स्पर्धा करे एवी वर्गणाने स्पर्धक हीयें ए प्रथम स्पर्धक नी चरम उत्कृष्ट वर्गणाने विषे जेटला वीर्य विनाग है. ते थकी एक, वे यावत् संख्याते वीर्योशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेश न पामीयें परंतु तेथकी असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण वीर्योशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेश पामीयें तेवा समा न वीर्य विनागें युक्त जीव प्रदेशना स दायनी वर्गणा ते बीजा स्पर्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. तेथकी वली एक वीर्योशें अधि वीर्यवंत जीव प्रदेशनो समु दाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेक वीयाँशें वधते जीव प्रदेशना समुदा यनी वर्गणा, ते जेवारें लोकाकाशनी श्रेणीना असंख्येय नाग वर्त्ति प्रदेश राशि प्रमाण वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्कक थाय, ते पढी बीजा स्पर्क कनी चरम वर्गणायकी वली असंख्यलोकाकाश प्रदेश तुल्य वीर्यविनागें अधिक वीर्वविचागवाला प्रदेशोनो राशि ते त्रीजा स्पर्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. तेमज वली तेवाज अनुक्रमें त्रीजो स्पर्धक करवो फरी एवाज अनुक्रमें चोथो स्पर्धक, एम पांचमो स्पर्धक, ए रीतें लोकाकाश प्रदेशनी श्रेणिना असंख्येय नाग प्रदेश राशि प्रमाण स्पर्ककना समुदायें एक योग्य स्थानक थाय. तेथकी अन्य किंचि त् श्रिधिक वीर्ववंत जंतुनुं पण एवाज अनुक्रमे वीज्ञं योगस्थानक उपजे, तेथकी श्रन्य जीवनुं वली तेवाज श्रनुक्रमें त्रीजुं योगस्थानक उपजे, तेथकी श्रन्य जीव रुं वली तेवाज अनुक्रमें चोंखुं योगस्थानक उपजे, ए प्रकारें करीने नाना जीवो ना श्रयवा कालनेंदें करीने एक जीवना लोकाकाशनी श्रेणीने श्रसंख्येय नाग व

ति ननः प्रदेश राशि प्रमाण योगस्थानक होय. हवे ते पूर्वीक जघन्य एक योग स्थानकें वर्तता एवा त्रस जीव असंख्याता तथा स्थावर जीवतो अनंता पामी यें. तथा अपयीप्ता सूच्या निगोदीआ जीव, नव प्रथम स यें सघला एकज यो गस्थानकें रहे अने बीजे समयें असंख्यात ग्रण दृष्टि वाला योगस्थानकें जाय में पर्याप्ता जीव जघन्य योगस्थानकें चार समय पर्यंत रहे, तथा मध्य योग स्थानकें वर्ततो चार, पांच, ब. सात, आत, सात, ब, पांच, चार, त्रण समय रहे. था उत्क योगस्थानकें बे स य पर्यंत रहे. एम संख्यात योग स्था न हे, पण संक्रेपें मनना चार, वचनना चार ने कायाना सात, रूप सहकार । रण नेदिववक्रायें पंदर योग कह्या.

ते योगस्थानकना चेद थकी वली (पयिंड के०) ज्ञानावरणादिक मूल में प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिना चेद, असंख्यात गुणा है। जे नणी एकेक योगस्था नकें वर्चता, अनेक जीव है तथा कालचेदें ए जीव, सर्व प्रकृति बांधे है। तथा क्षेत्रादि संबंधें करीने ज्ञानावरणादिकना क्योपशम विचित्रें करीने बंधना वि चित्र पणायकी एटले मूल प्रकृति आत है अने उत्तर प्रकृति एकशोने अज्ञावन्न है, ते क्षेत्रना तारतम्यें क्योपशमचेदें करी बंधने विचित्र पणे करी तथा उदयनुं तारतम्य विचित्रपणुं असंख्य चेदें होय, तथी प्रकृतिचेद पण असंख्याता जाणवा.

ते प्रकृतिचेद यकी वली (विद्वेद्या के ) स्थितिबंधना चेद असंख्यातगुणा दोय, जेनणी जघन्यस्थित थकी एक समयाधिक, दिसमयाधिक, त्रिसमयाधिक कर तां, करतां एम जत्कृष्ट स्थितस्थानक पर्यंत एकेकी प्रकृति असंख्यात चेदें बंधा य, तेनणी प्रकृति चेद्यकी स्थित चेद्, असंख्यात गुणा हे.

ते स्थितिनेद थकी (विइवंधववसाया केण) स्थितिबंधना अध्यवसायना नेद असंख्यातगुणा हो, जे नणी एकेको स्थितिबंध असंख्याते अध्यवसाय स्था नकें तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर, एणी पेरें कषायोदय कत जीवनो अग्रुद्ध परिण तिनेद ते अध्यवसाय कहीयें। ते अध्यवसाय स्थानक कोइ पण कमेना एक सुहूर्तमात्र स्थितिबंधना हेतुनूत रहे, ते माटें स्थितिनेद थकी असंख्यात गुणा अध्यवसाय होय। जे नणी जवन्य स्थितिबंध पण असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसाय स्थानकें होय हो। तेथकी वली समयाधिक समयाधिक स्थिति तो विशेषाधिक विशेषाधिक अध्यवसाय स्थानकें होय, एम पत्योपमना असंख्या तमा नाग मात्र स्थितिनेद अतिकस्या पठी जे स्थितिनेद होय, तिहां सुधी वम

णां श्रध्यवसायस्थानक थाय एम दिग्रणवृद्धि स्थानक पण असंख्यातां होय, तेमाटें स्थितिचेदथकी असंख्यातगुणां अध्यवसायनां स्थानक होय. अहीं आं के मेनुं जे अवस्थान एटले रहेवुं, तेने स्थिति कहीयें, तेनो जे बंध, तेने स्थितिबंध कहीयें तथा कपायजनित जीव परिणामने अध्यवसाय कहीयें ते अध्ययवसायने विषे जीव वसे, तेने स्थान कहीयें ते अध्यवसाय जीवने वसवानां स्थान हे, माटें एउनें अध्यवसायस्थान कहीयें तिहां स्थितिबंधनां कारणजूत जे अध्यवसाय स्थानक, तेने स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानक कहीयें.

तेथकी ( अणुनागठाणअसंखग्रणा के० ) अनुनाग एट छे रसबंध, हेतुनां अ ध्यवसायस्थानक. असंख्यातग्रणां हे तिहां अनु एट छे पश्चात् बंधोत्तर का छें अ नुनवीयें ते अनुनाग शब्दें रस कहीयें ते असंख्याता हे जे नणी अंतरमीहूर्निक स्थितवंधाध्यवसायस्थानक होय ते नगर सरखा तथा ते मध्यें एक, बे, त्रण, चार, पांच, ह, सात अने उत्कृष्ट जे आह सामियक रसबंधाध्यवसाय स्थानक होय, ते घर सरखा नाना जीवनी अपेक्हायें असंख्याता होय तथा एक जीवनी अपेक्हायें तो हे श, काल, क्रेत्र, नाव चेदें जधन्य स्थितवंध पण असंख्यातलोकाकाशप्रदेश प्रमाण रसबंधाध्यवसायस्थानकें पामीयें, ते थकी समयाधिक स्थितविशेषें वली अधिक अधिकतर रसवंधनां अध्यवसाय स्थानक पामीयें, एम सर्व स्थितवंधाध्यवसाय स्थानने विषे रसवंधाध्यवसायस्थानकनी नावना करवी. ए कारणधी सर्वस्थित वंधाध्यवसायथी रसवंधाध्यवसाय स्थान, असंख्यगुणां जाणवां ॥ इति समुन॥ ए॥

तत्तो कम्म पएसा, अणंत गुणिया तर्र सरहेया ॥ जोगा पयिंड पएसं, विङ् अणु नाग कसायार्र ॥ ए६॥

शर्थ-(तत्तो के०) ते कमेना रसवंधहेतु श्रध्यवसाय यकी (कम्मपएसा क०) कमेना प्रदेश एटले दल (अणंतगुणिया के०) अनंतगुणा जाणवा. जे नणी रमवंधहेनु श्रध्यवसाय स्थानक तो असंख्याता है. अने कमेवगेणा ते पण अनं ती है. ते वली एकेक वर्गणावें श्रनंता परमाणुश्रा है. तेवी अनंती वर्गणा मिण्या व्वाहिक हेनु यें एक ममयने विषे जीव. यहण करे है. श्रने रसवंधनां श्रध्यवसा य स्थानक तो एक उत्कृष्ट श्राव समय पर्वत रहे है, तमाटें श्रनंता जाणवा.

( नर्रमरत्या के० ) ग्वीर नींव रमाना अविश्रयण समान अनुनाग बंध अ भयवनाय स्थानकें करी नंदृल समान कर्मपुत्रतोने विषे रम जणीयें तयं. माटें ते कमदलयकी कमदलना रसाविनाग अनंतग्रणा जाणवा. जे नणी सर्व जवन्य रसाणुने विषे पण सर्व जीवयी अनंतग्रणा रसाविनाग रसाणु होय, जे रसना नाग कल्पतां, कल्पतां केवलीनी प्रक्तारूप शं करी बेदतां, बेदतां जे निरंश अंश रहे, एटले केवली पण जे अंशनो बीजो अंश कल्पी न शके, ते रसाणुनुं ना , अविनाग पली हेद कहीयें ते एकेक कम्मीणुने विषे पण सर्व जीवयी अनंतग्र णा रसाणु जयन्य परें होय, तेवारें उत्रुष्टपदनुं तो कहेवुंज शुं ? अने कम्मीणुतो अ नव्यथी अनंतग्रणा अने सिक्ने अनंतमे नागें होय ते अनव्यथी सिक् अनंत ग्र णा हो, ते सिक्ष यकी वली सर्व जीव अनंतग्रणा हो तेयकी पण कमदलना रसाणु अनंतग्रणा हो माटें. एम सविस्तरपणे प्रदेश बंध कह्यों.

हवे ए प्रक्रत्यादिक चार बंधने विषे विशेषहेतु कहे हो. तिहां (जोगा के 0) मन, व चन अने कायानी चेष्टायें करीने (पयि के 0) एक तो ज्ञानावरणादिकस्वनाव, एटले ज्ञानादिकने आवरवानो हो स्वनाव जेने विषे एवो प्रकृतिवंध करे अने बी जो (पएसं के 0) प्रदेश बंध एटले कर्मनो दल संचय, ए वे वंध करे, केम के क रणवीर्ष जे मनो वचन कायादिकनो योग, तेनी उत्कटतायें जो घणुं वीर्य होय, तो तेथी घणां दल मेलवे अने मध्यमयोगें मध्यमदल मेलवे, तथा योगनी मंद तायें अल्प दल मेलवे, केम के मिध्यात्वादिक हेतु विना पण केवल योगें करीज बा रमे अने तेरमे गुणवाणे शातावेदनीयनो प्रकृतिबंध तथा प्रदेशवंध करे, अने यो गने अनावें चौदमे गुणवाणे प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध न करे, तेणे अन्वय व्यतिरेकें करी प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंधना हेतु योग कहीयें.

तथा ( िह्र के० ) एक स्थितिबंध अने बीजो ( अणुनागकसाया के० ) अनुनागबंध ए वे बंध, कपायने तारतस्यपणे होय केमके उत्कृष्ट कपाय संक्षेपें स्थित पण उत्कृष्टी बंधाय तथा अग्रुन प्रकृतिनो रस, उत्कृष्ट वंधाय अने ग्रुन प्रकृतिनो रस मंद वंधाय, तेमज मध्यम संक्षेपें मध्यम रस वंधाय. एम कपाय नी अगुन्तियों बंध होय तथा कपाय पण दशमा ग्रुणनाणा पर्यंत होय अने क में प्रकृतिनो स्थितिवंध पण तिहां लगेंज होय, तेमाटें ए वे वंधनुं असाधारण कारण कपाय जाणवो. एम चार वंधना स्वामी तथा हेतु, ए उत्कृष्ट जयन्य पणे विस्तार सहित कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए६ ॥

द्वे योगस्थानादिकने विषे लोकाकाशनी श्रेणीनुं असंख्यातनागादिक मान क

णां अध्यवसायस्थानक थाय एम दिग्रणवृद्धि स्थानक पण असंख्यातां होय, तेमाटें स्थितिचेदथकी असंख्यातगुणां अध्यवसायनां स्थानक होय. अहीं आं के मेनुं जे अवस्थान एटले रहेवुं, तेने स्थिति कहीयें, तेनो जे बंध, तेने स्थितिबंध कहीयें तथा कपायजनित जीव परिणामने अध्यवसाय कहीयें. ते अध्ययवसायने विषे जीव वसे, तेने स्थान कहीयें. ते अध्यवसाय जीवने वसवानां स्थान है, माटें एउनें अध्यवसायस्थान कहीयें. तिहां स्थितिबंधनां कारणजूत जे अध्यवसाय स्थानक, तेने स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानक कहीयें.

तेयकी ( अणुनागवाणअसंखगुणा के ० ) अनुनाग एटले रसबंध, हेतुनां अध्यवसायस्थानक. असंख्यातगुणां हे. तिहां अनु एटले पश्चात् बंधोत्तर कालें अनुनवीयें ते अनुनाग शब्दें रस कहीयें ते असंख्याता हे. जे नणी अंतरमौहूर्तिक स्थितिवंधाध्यवसायस्थानक होय ते नगर सरखा तथा ते मध्यें एक, बे, त्रण, चार, पांच, ह, सात अने उत्कृष्ट जे आह सामियक रसबंधाध्यवसाय स्थानक होय, ते घर सरखा नाना जीवनी अपेक्षायें असंख्याता होय तथा एक जीवनी अपेक्षायें तो हे श, काल, केत्र. नाव नेहें जधन्य स्थितिवंध पण असंख्यातलोकाकाशप्रदेश प्रमाण रसवंधाध्यवसायस्थानकें पामीयें, ते यकी समयाधिक स्थितिवंशिष्टें वली अधिक अधिकतर रसवंधनां अध्यवसाय स्थानक पामीयें, एम सर्व स्थितिवंधाध्यवसाय स्थानने विषे रसवंधाध्यवसायस्थानकनी नावना करवी. ए कारण्यी सर्वस्थित वंधाध्यवसाय स्थानने विषे रसवंधाध्यवसाय स्थान, असंख्यगुणां जाणवां॥ इति समुणाए।॥

तत्तो कम्म पएसा, छणंत गुणिया तर्र सरहेया ॥ जोगा पयंडि पएसं, 6िइ छणु नाग कसायार्र ॥ ए६॥

अर्थ-(तत्तो के०) ते कमेना रसवंधहेतु अध्यवसाय यकी (कम्मपएसा क०) कमेना प्रदेश एटले दल (अणंतगुणिया के०) अनंतगुणा जाणवा. जे नणी रसवंधहेतु अध्यवसाय स्थानक तो असंख्याता हे. अने कमेवगेणा ते पण अनं ती हे. ते वली एकेक वर्गणायें अनंता परमाणुआ हे. तेवी अनंती वर्गणा मिण्या व्यक्तिहेतुचें एक समयने विषे जीव. यहण करे हे. अने रसवंधनां अध्यवसा य स्थानक नो एक उन्कृष्ट आह समय पर्यंत रहे हे, तमाटें अनंता जाणवा.

( नर्डमरत्रेया के॰ ) ग्वीर नींव रसाना अविश्वयण समान अनुनाग बंध अ 'ययसाय स्थानकें करी नंदृल समान कर्मपुत्रताने विषे रस जणीयें तेयें. माटें ते मैदलयकी कमैदलना रसाविनाग अनंतगुणा जाणवा. जे नणी सर्व जघन्य रसाणुने विषे पण सर्व जीवयी अनंतगुणा रसाविनाग रसाणु होय, जे रसना नाग कल्पतां, कल्पतां केवलीनी प्रझारूप शस्त्रें करी बेदतां, बेदतां जे निरंश अंश रहे, एटले केवली पण जे अंशनो बीजो अंश कल्पी न शके, ते रसाणुनुं नाम, अविनाग पली हेद कहीयें ते एकेक कम्मीणुने विषे पण सर्व जीवयी अनंतगुणा रसाणु जघन्य पर्दें होय, तेवारें उत्रुष्टपदनुं तो कहे हुंज छुं? अने कम्मीणुतो अ नव्यथी अनंतगुणा अने सिद्धने अनंतग्रे नागें होय ते अनव्यथी सिद्ध अनंत गुणा बे, ते सिद्ध यकी वली सर्व जीव अनंतग्रणा बे तेयकी पण कमेदलना रसाणु अनंतग्रणा बे माटें. एम सविस्तरपणे प्रदेश बंध कह्यों

ह्वे ए प्रक्रत्यादिक चार बंधने विषे विशेषहेतु कहे हो. तिहां (जोगा के 0) मन, व चन अने कायानी चेष्टायें करीने (पयि के 0) एक तो ज्ञानावरणादिकस्वनाव, एटले ज्ञानादिकने आवरवानों हो स्वनाव जेने विषे एवो प्रकृतिबंध करे अने बी जो (पएसं के 0) प्रदेश बंध एटले कर्मनों दल संचय, ए बे वंध करे, केम के क रणवीर्य जे मनो वचन कायादिकनो योग, तेनी उत्कटतायें जो घणुं वीर्य होय, तो तथी घणां दल मेलवे अने मध्यमयोगें मध्यमदल मेलवे, तथा योगनी मंद तायें अल्प दल मेलवे, केम के मिध्यात्वादिक हेतु विना पण केवल योगें करीज बा रमे अने तरमे गुणवाणे शातावेदनीयनो प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध करे, अने यो गने अनावें चौदमे गुणवाणे प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध न करे, तेणे अन्वय व्यतिरेकें करी प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंधना हेतु योग कहीयें.

तथा ( िह्र के० ) एक हियतिबंध छने बीजो ( छणुनागकसाया है के० ) छनुनागवंध ए वे बंध, कपायने तारतस्यपणे होय केमके जन्छए कपाय संक्षेपें हियति पण जन्छए। बंधाय तथा छछन प्रकृतिनो रस, जन्छए वंधाय छने छन प्रकृतिनो रस मंद वंधाय, तेमज मध्यम संक्षेपें मध्यम रस बंधाय. एम कपाय नी छनुनुत्तियें बंध होय तथा कपाय पण दशमा ग्रणगणा पर्यत होय छने क मैं प्रकृतिनो हियतिवंध पण तिहां लगेंज होय, तेमाटें ए वे वंधनुं छसाधारण कारण कपाय जाणवो. एम चार वंधना स्वामी तथा हेनु, ए जन्छए जयन्य पणे विस्तार सहित कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए५ ॥

ह्वे योगस्यानादिकने विषे लोकाकाशनी श्रेणीनुं असंख्यातनागादिक मान क

ह्यं, ते जो श्रेणीनुं मान जाणीयें, तो सुखें समजी शकीयें, ते माटें श्रेणी प्रतर , घनादिकतुं मान कहे हे. श्रथ श्रेणीप्रतरस्वरूपमाह.

च उद्स रक्कू लोगो, बुधिक उसत रक्कु माण घणो॥ तदीहरा पएसा, सेढी पयरो इप्र तबरगो ॥ एउ ॥

अर्थ-सुप्रतिष्ठित संस्थानें सर्व लोक हे. जेम एक शरावद्धं अधोसुख रा खीयं, ते उपर वली एक शरावलुं समुं राखीयें, ते उपर वली एक शरावलुं अ धोमुख राखीयें, ए रीतें नीचो सातमी नरकें सातराज लांबो पहोलो है अने त्रिगुणी जाजेरी परिधि हो. तिहां यकी एकेक प्रदेशें हीन करतां करतां रत्नप्र ना प्रयवीयें एक राज्य लांबो पहोलो होय. तिहांथी वली एकेक प्रदेश विधि हो ती होती पांचमे देवलोकें पांच राज्य पहोलो होयः तिहांची वली एकेक प्रदेशें हीन करतां, करतां लोकाय एक राज्य पहोलो होय. ए आकारें ( च उदसरक् लोगो के ) चौदराज्य लोक हे. तेमध्यें एक राज्य लांबी, पहोली अने चहद रा ज्य उंची त्रसनाडी हे ते त्रस जीवें करी सहवर्तमान है। उपरांत स्थावरजीवो हे ते लोकनो (बुदिकर्रसत्तरद्धमाणघणों के ) बुदियें कल्पनायें करी घन करतां सात राज्य लांबो, पहोलों अने सात राज्य उंचो च उरस घन कव्पीयें, ते कल्पनानो प्रकार देखाडे हे.

जे श्राकारें श्रधोलोक हे, तेनो एक पाशानो खंम, ते जिहां सातमीना तलने नागें त्रण राज्य पहोलो हे तिहांथी एकेक प्रदेश हीण थातो जिहां एक प्रदेश मात्रर हे, ते प्रदेश हुं पा छुं जिहां सातमी नरकनो चार राजनो खंम वाकी रह्यो है. ते दिशा यें राखीयें अने त्रण राज्य पहोत्नुं पाग्नुं ते एक राज्य जिहां रत्नप्रना पृ ध्वी पहोली वे ते दिशायें राखीयें, तेवारें चार राज्य पहोलपणे छने दीर्घपणे याय धने मात राज्य जाजेरुं उंचपणे एवो लोकनो छईखंम थाय छथवा त्रसन्। ही यकी दक्षणदिशिना अधोलोकनो खंम, ते नीचें त्रण राज्य पहोलो हे अन पती प्रदेशें प्रदेशें घटतो उपरें एक प्रदेश सांकड़ो है. अने उंचो सात राज्य जाजेरो है. नने चपाडीने त्रस नाडीने चत्तर दिशियें विपरीतपणे जोडीयें, एटले हेवलवुं प होत पएं ते उपर छाणीयें छने उपर सांकड़ों है, ते नीचें लाबी मूकीयें, एटले घर्यालांक मान राज्य जाजेरी उंची छने चार राज्य पहाल पर्हो सर्वेत्र सरखो याय-

द्ये कथीतोक कथी मामलने छाकारें हे. तिहां त्रसनाडियी बाहेर हुं एक

पाशा ं अर्द, वचेंथी होदीने जे पाशायें ध्य ए राज्य पहोलुं हो, ते पाशें एक प्रादेशिक तिहीं जाग उंचा, नीचा जोडीयें, तेवारें प्रए राज्य लांबो, पहोलो अने किंचिन्न्यून सात राज उंचो एवो ध्वेलोकनो घन थाय, एटले ध्वेलोकें त्रस नाडी थकी दक्कणिदिशनो खंम वे राज्य पहोलो अने किंचिन्न्यून सात राज उंचो तेमांहे ब्रह्म देवलोकना मध्यथकी हेवलो अने उपरलो खंम करीने प्रस नाडीने उत्तर पासें विपरीत पर्णे थापीयें एटले पहोलपणुं हेवल करीयें, अने सांकडापणुं वचें ह्म देवलोकें आणीने थापीयें एम जेवारे नीचें उपर थापीयें, ते वारें कध्वेलोक त्रण राज्य पहोलो अने किंचिन्न्यून सात राज्य उंचो, सर्वत्र थाय. एवो क्वेलोकनो घन थाय. ते किहां एक थोडुं अधिकुं उंबुं होय, तेने पो तानी बिट्यें अधिकं उंबं मांहे जेलीने सरखं करीयें.

तानी बुदियें अधिकुं उंबुं मांहे जेलीने सरखुं करीयें। तेवार पढ़ी लोकनुं उपरखुं अद्दे उपाड़ीने अधोलोकने संवर्धिने दक्षणपा हैं जोड़ीयें एटखे सात राज पहोलो, सात राज लांबो अने सात राज उंचो, एम स मचतुरस्र घन लो थाया अंहींआं अधोलोकना सातराज जाजेरा है। तेम क

कूंलोकना सात राज मातेरा हे, ते मेलवतां पूर्ण थायः

एना ए राज्य लांबा, पहोला, तथा ए राज्य उंचा, एवा खांकुआ करीयें, तेवारें एशें ने तेंतालीश खंकु याय ए सर्व स्थूल व्यवहारनयें कहां, जे नणी लोकतो वृताकारें हे अने ए घन तो समचतुरस्त्र थयुं माटें एने वृताकारें करवाने अर्थें त्रणशें तेंतालीश खंकुंकने ओगणीशगुणा करीने बावीश नागें हरी यें, तेवारें वृताकारें लांबो, पहोलो थाय, पण ए नय कांइएक णाने पण पूण कहे हे, तेमाटें व्यवहार थकी सर्व वेकाणे सात राजनोज घन कह्यो हे, तेथी खां फुआ न थाय तो पण न गणवो. अहीं एक राज्य ते स्वयंग्ररमण समुइनी पूर्व हिश्चिनी वेदिका थकी पश्चिमदिश्चिनी वेदिका पर्यंत तथा उत्तरहिश्चनी वेदिका थ की दिक्कणदिश्चिनी वेदिका पर्यंत असंख्याता कोडाकोडी योजन प्रमाण जाणवुं. ए घनवृत लोकना घनवृत चतुरस्त्र खंकुक (१०७) थाय.

(तद्दीहेगपएसा के०) ते घनीकृत सात राज लोकनी एक प्रादेशिक श्रेणी मो तीनी लड़नी पेरें (००००००) सात राज लांबी एकेका आकाश प्रदेशनी पंक्ति तेने (सेढी के०) श्रेणी कहीयें, एटले श्रेणी असंख्यांश जे वेकाणे कहां होय, तिहां ए श्रेणीनुं असंख्यांश लेवुं अने (पयरोअतवग्गो के०) ते श्रेणीनो वर्ग करीयें, ऐटले ते श्रेणीमांहे जेटला प्रदेश होय, तेने तेटला साथं गुणीवें तेने प्रतर कहीयें. एटले सात राज लांबो, पहोलो, एक प्रदेशदलें मांमानी पेरें चतुरस्न, ते प्रतर कहीयें माटें जिहां प्रतर कहां होय, तिहां एक श्रेणीना वर्ग प्रमाण प्रदेश लेवा तथा ते प्रतरना प्रदेश ते वली श्रेणीना प्रदेश साथें ग्रणीयें, तेने यन कहीयें यथा असत्कल्पनायें श्रेणीना पांच प्रदेश हो, ते सूची कहीयें। अने तेने पांच ग्रणा करतां पञ्चीश थाय, तेने प्रतर कहीयें, तेने वली तेहीज श्रेणीना पांच प्रदेशें गणीयें, तेवारें एकशो पञ्चीश थाय. तेने घन कहीयें. अहीं सात राज लांबो. सातराज पोहोलो अने जाड पणे एक प्रदेशनो प्रतर जाणवो एम सप्रसंग सविस्तर प्रदेशवंध कह्यो॥ इति समुज्ञवार्थः॥ ए७॥ इति पएसवंधो सम्मन्तो॥

दवे चशक्तें संस्वित उपशमश्रेणी तथा क्ष्पकश्रेणीनुं खरूप कहे है। तेमध्यें पण प्रथम अनंतानुवंधियाना उपशमनो विधि कहे है।

यथोपशमश्रेणीमादः द्वे उपशमश्रेणीनुं स्वरूप, अनुक्रमें कहे हे

अण दंस नपुंसि ही, वेअ हकं च पुरिस वेअं च॥ दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं ठवसमेइ॥ ए०॥

अर्थ- तिहां एक अविरित सम्यक्दृष्टि, बीजुं देशविरित, त्रीजुं प्रमन, चोषुं अप्रमन, ए चार ग्रुणवाणे वर्नतो जीव झानोपयोगी व लेक्या माहेली ग्रुन त्रण लेक्याना परिणामें ग्रुनाध्यवसायें करी प्रुष्यप्रकृतिना वेवाणीआ रसने स्थानकें चोवाणीआ रसने निपजावतो अने अग्रुन प्रकृतिना चोवाणीआ रसने स्थानकें वेवाणीच रस करतो तिहां वंधिवरोधिनी प्रकृतिमध्यें त्रसादिक ग्रुन प्रकृतिनो वं ध करतो श्रंतर मुदूर्न, यथाप्रवृत्तिकरणें वर्नतो पूर्वला पूर्वला स्थितवंथ यकी श्रागलो श्रागलो स्थितवंथ पत्योपमासंख्येय नागें हीन करतो श्रंतर मुदूर्न यथा प्रवृत्तिकरणे रही पत्री अपूर्वकरणे श्रनंतग्रुण विग्रुद्धियं वधतो चहे, तिहां भुरं यी स्थितियात. रसवात. ग्रुणश्रेणी ग्रुणसंक्रम अने अपूर्ववंथ, ए पांच वानां प्रवृत्ति तिहां सर्व कर्मनी जेटली स्थिति ज्ञेप रही ने तेना उपरला नागथी सागरोपम एथ क्व प्रमाण स्थित खंमी जवन्यतो पत्रोपमा संख्येयनाग प्रमाण स्थित खंमी ने तेना दलीया उद्यक्तालनी स्थितथी उपरली उपरली स्थितने विषे यथोक श्रमंत्र्यान गुणाकारें वथना दितक संक्रमावतो जाय. एम श्रंतः स्थित सर्वेत्त्रष्ट यन गंकमाय तथा एकक श्रंतर मुदूर्न स्थित खंम करतो श्रमंक सहस्र खंम करतेथी प्रथम जे रस होते. तेना श्रमंक करतो श्रमंक सहस्र खंम करतेथी प्रथम जे रस होते. तेना श्रमंत्रमां नाग रस जेप रह्मो बीजो सर्व

खपाव्यो एम दीन रस थया. एवां कमेदल तें जीर्ण । ने जेम श्राः सुखें बाली शके. तेम एना कमें पण सुखें नि राय तेणे असंख्यातग्रणी नि रा वधे ए ग्र णश्रेणी अपूर्वकरणें चढतां जीव विद्युद्धि स्थानक विचि पणे सित्रकोण केत्र हंधे तथा त्रीष्ठं अनिवृत्तिकरण मोतीनी लडनी पेरें हे एने विषे सर्व जीव ए ज विद्युद्धियें चढे, जे नणी तिद्धां पण स्थितवात, रसघात, ग्रंणश्रेणी, ग्रणसं म, ए चार वा नां अपूर्वकरणनी पेरें प्रवर्त्ते, पण एटलुं विशेष जे अनिवृत्तिकरणने संख्यातमें नांगें गये थके ए प्रथम स्थित, बीजो अंतर करण, ए बेहु नवी बंधस्थितिने अंत रसुदूर्त्त प्रमाण नीपजावे तिद्धां अंतर करणों अंतरस्थितिनां दल लेइ लेइने केटलाएक प्रथ स्थितिमध्यें अने केटलाए उपरली स्थितिमध्यें सं मावे, एम सं ।व तां बे ।वली शेष प्रथमस्थिति रहे, तेवारें ग्रुणश्रेणी निवर्त्ते तथा बीजी स्थिति ना दलनी उदीरणा ते आगलें कदीयें, तेपण निवर्ते ने एकावित्रका शेष प्रथम स्थिति रहे, तेवारें रसघात, स्थितिघात अने उदीरणा, ए त्रण निवर्ते ए प्रथ सम्यक्ल उपजावे तिद्धां उपशमविधि कह्यो अहीं श्रां अनिवृत्तिकरणें ग्रण सं मे अनंतानुबंधीआनुं दिलक लही प्रत्याख्यानीआ कषायादिक पणे संक्रमावतो चरम समयें सर्व संक्रम करे. एम (अण के०) अनंतानुबंधीआ उपशमावे.

तेवार पढी मिच्याल मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्लमोहनीय, ए त्र ए (दंस के०) दर्शन मोहनीयने पए साथें उपशमावे तेवारें उपशम सम्यक् दृष्टि थाया अहींआं जोपए वेदक सम्यक्दृष्टिने अनंतानुवंधीआ कषाय चार त था मिच्याल मोहनीयादिकनो रसोदय नथी तोपए प्रदेशोदयनो विधि जाएवो

ते पढ़ी जेणे स्त्रीवेदें उपशमश्रेणी आरंनी होय, तो (नपुंस के o) प्रथम नपुंस कवेद खपावे पढ़ी (पुरिसवेद्यंच के o) पुरुषवेद खपावे अने पढ़ी (ढकं के o) हास्यादिक पट्क, ते पढ़ी (इिंचेअ के o) स्त्रीवेद उपशमावे अने जो पुरुपवेदें श्रेणी आरंनी होय तो प्रथम नपुंसकवेद पढ़ी स्त्रीवेद, पढ़ी हास्यादि पट्क अने प ढी पुरुपवेद उपशमावे. तथा नपुंसकवेदें श्रेणी आरंनी होय तो प्रथम स्त्रीवेद, प ढी पुरुषवेद, पढ़ी हास्यादिषट्क अने पढ़ी नपुंसकवेद उपशमावे.

ते पढ़ी (दोदोएगंतिरिएसरिसंस्रिसं उवसमेइ के ) अप्रत्याख्यानावरण कोध अने प्रत्याख्यानावरण कोध, ए बेंद्र उपशमावे, ते पढ़ी संन्वलन कोध उपशमावे, ते पढ़ी अप्रत्याख्यानावरणमान अने प्रत्याख्यानावरणमान, ए वेंद्र उपशमावे, ते पढ़ी संन्व लनमान उपशमावे, ते पढ़ी अप्रत्याख्यानावरणमाया अने प्रत्याख्यानावरण माया. ए वेहु उपशमावे, ते पढी संज्वलनमाया उपशमावे, ते पढी अप्रख्यानावरणलो न अने प्रत्याख्यानावरणलोन उपशमावे, एटले बादर संपरायनामा नवसुं ग्रण स्थानक पूर्ण थाय. पढी दशमा सूक्ष्य संपरायनामा गुणस्थानकें रह्यो, सूक्ष्य सं ज्वजन जोनने स्तिबुक संक्रम प्रकारें उपरामावीने उपराातमोही थाय, तिहांथी न वक्षें पडतो अनुत्तर सुर थाय, जे नणी अबदायु तथा बद सुरायु वालो उप शमश्रेणी करे हे. तेमध्यें अब दायुवालो तो मरण पामे नहीं, अने बदायु वालो जो मरे, तो अनुत्तर देव थाय, तिहां अगीआरमाथी चोथे गुणनाणे आवे, ति हां सर्व करण समकालें प्रवत्ति अने कालक्ष्यें पडे तो जिहां चढतां जे बंधादिक नो विजेद की धो हतो, तिहां तिहां वली ते बंधादिक प्रगट करतो जाय तथा क्षकश्रणीयी उपरामश्रणीनी मंद विद्युद्धि हे ते नणी अपूर्व बंध बमणो वम णो करे, सुद्धा संपरायना चरम समयें नाम तथा गोत्र कर्मना शोल मुहूर्ननो वंध करे, वेदनीयनो चोवीश सुहूर्तनो वंधकरे, अने ज्ञानावरणादिकनो वे बे सुहूर्त नो वंध करे. एम चढतां तथा उतरतां सर्व स्थानें बमणो बमणो वंध करे. एम उ पशमनाविधि तथा विसंयोजनाविधि, सर्वे सत्तरीनामा वहा कमेंग्रंथना बालावबोध थकी जाएवो तथा कमेप्रकृतिनी टीकायी सविस्तर जाएवो॥ इति सण॥ एण॥ ॥ अय क्पक्षेणीमाह ॥ हवे क्पक्षेणीनो विधि कहे हे.

अणिमित्र मीस सम्मं, तिआठ इग विगल घीण तिगुनोखं॥ तिरि निरय यावर इगं, साहारायव अड नपुंसि ही॥ एए॥

यर्थ- तिहां क्ष्पकश्रेणी ग्रांचक संख्यातावपी युवालों कमे चूमिजात मनुष्य प्रथम संवयणी यहंत विद्युद्धमान परिणामी, श्रविरति, देशिवरिति, प्रमच यन अप्रमचादिक ग्रणनाणे वर्चतों जो पूर्वधर होय. तो द्युक्षध्याने वर्चतों होय यन वीजों होय तो विद्युद्ध धर्मध्याने वर्चतों प्रथम (श्रण के०) चार श्रमंता चुवंधीया कपायनी क्ष्पणा आरंचे, तेने त्रण करणें करी खपावतां, खपावतां, जे वाचे श्रनंतमों चाग होप रहे. तेवारें ते चाग (मिन्न कें०) मिष्यालमोहनीय मांहे पात्रीने खपावे जेम श्रव्रियें श्र्व्ह बलेलों इंधण त्रीजुं इंधण पामी वेहु बले. एम क्ष्मण पण तीव परिणामें करी ते दल श्रव्य प्रकृतिमांहे संक्रमावी, वेहुने खपावे. चली मित्र्यात्वतुं जेप दल रहे ते (मील के०) मिश्रमोहनीयमां घाली खपावे श्रमं मिश्रमोहनीयमुं जेप दल रहे. ते सम्यक्त मोहनीयमां घाली खपावे. (मन्मं

केण) सम्यक्लमोहनीयनो छेलो खंम छकेरीने क्एककृत करणादायें वर्ततो जो पूर्वबदायु तिहां रण पामे, तो अपितत परिणामें देवगित पामे ने पिततपरि णामें चारे गितमांहे अवतरे. तिहां ते गितमध्यें सम्यक्लमोहनीय खपावी तेना चर यासें एक समय वेदक सम्यक्ल जहीने, सर्व सम्यक्ल मोहनीयने खपावी क्षाय सम्यक्ल जहें. एम दर्शन ोहनीय क्ष्पणानो आरंग ष्य, क्षपणानी पूर्णता तो चारे गितमध्यें रे, ते हिं क्षायिकसम्यक्लनो जान, चारे गित ध्यें संनवे तथा बदायु वाजाने ए सात प्रकृति खपावीर ए पृत्ती जो आयु शेष रहे, तो तिहां चारित्र हिनीयने क्ष्पणा रनारी श्रेणी न रे अने बदायु तो चारित्रमोहनीयनी संपूर्ण क्षपणा रीने केवजङ्गान पामे. चारि मोहनीयनी क्षपणा हिनोयनी क्षपणा आरं चेते अपेक्षायें क्षपणा कही, शेष एक मनुष्यायुज चदय तथा सत्तायें वर्ते हे.

तेवार पढ़ी अपूर्वकरणनामा आठ ' गुणुं क्ष्पणाने अर्थे करी नवमा आवित्त गुणुं गुणुं गुणुं क्ष्पणाने अर्थे करी नवमा आवित्त गुणुं ग

बग पुम संजलणा दो, निहा विग्घावरण खए नाणी॥ देविंद सूरी लिहि छं, सयगमिणं छाय सरणहा॥ १००॥

अर्थ-पठी ( ठग के ० ) हास्यादिक ठ प्रकृति खपावे पठी ( पुम के ० ) पुरु

पवेद खपावे, तिहां जो स्त्रीवेदें क्षप श्रेणी आरंजे तो प्रथ नपुंस वेद खपावे, पठी पुरुषवेद खपावे, पठी हास्यादिक ठ प्ररुति खपावे अने ते पठी विद खपावे, अने जो नपुंसक वेदें श्रेणी आरंजे तो पहेलुं अनुदीरण पण विद खपावे, पठी पुरुपवेद खपावे, पठी हास्यादि ठ प्ररुति खपावे, ते पठी नपुंसकवेद खपावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंजे, तो प्रथम नपुंस वेद खपावे, पठी विदे खपावे, पठी हास्यादिक ठ प्ररुति खपावे, ते पठी पुरुषवेद खपावे.

हमणां जे पुरुषवेदें श्रेणी आरंजे, ते स्त्रीवेदक्य साथें पुरुष वेद तथा हास्यादिक व प्रकृतिनों बंध व्यव हेद रे, तिहां नोकषायनां दल बे आवली शेष हुंते वेद पतद्यह न थाय तेथी संज्वलनकोध मांहे सं मावे, एम जे अंतर मुहूर्तें हास्यादि षद्क क्षीण थाय, ते समयें पुंवेदनों बंध, चद्य अने चद्रीरणा विहेद थाय, अ हींआं वे आवली बांध्युं जे पुरुषवेददल, ते विना बीजं सर्व क्षीण थयं वे

हवे अवेदक थको ोध वेदतो स्थित अदाना त्रण नाग करे, एक अथकर णादा, बीजो कीटीकरणादा, त्रीजो वेदनोदा तिहां प्रथमादायें वर्ततो पुरुष वेद पण समयोन वे आवितकालें गुण संक्रमे, संक्रमावतो, संक्रमावतो, वेहले समयें सर्व संक्रमे, संक्रमावे. छहीं छां पुंवेद झीण धयो छने छश्वकरणाडा पूर्ण थयो. ते पढ़ी बीजा कीटीकरणादायें प्रवेश करे, तिहां एकेका कषायनी अने ती कीटी एटले खंम करे ते अनंती पण असत्कल्पनायें चार कल्पीयें, तोपण (संज लणा के •) संज्वलना चार कपाय मध्यें जो क्रोधोद्यें पडिवजतां शोल छने मानोद्यें पिवजतां वार तथा मायोदयें पिवजतां आत अने लोनोद्यें पिडवजतां चार कीटी होय, ते मांहेलुं एकेक कीटी नुं दल गुण संक्रमे संक्रमावतो एक चरमकीटी रहे तिहां संज्वलनकोधनो वंध उदय छने उदीरणा विचेद थाय, परंतु सत्तायें हेहेलुं वांधेलुं वे श्रावली मात्र रह्यं वे तेने पण माननी प्रथम स्थिति कीटी दलमां क्रोधना दल ने आकर्पाने तिहां ग्रण संक्रमे, संक्रमावे, चरम समयें सब संक्रमें संक्रमावे तेवारें ति हां कोध क्रीण ययो. ए रीतें संज्वलना माननी कीटी पण उपरली स्थिति मांहेथी नीची स्थिति मांहे उतारी वेदतो गुण संक्रमे संक्रमावतो, संक्रमावतो, जेवारें च रम एटले वेहली कीटी रहे, तेवारें तेने मायामांहे संक्रमावी खपावे तेम मायानी पण चरम कीटी, संज्वलना लोननी प्रथम कीटीमांहे संक्रमावी खपावे संज्वलन की टीनुं वस प्रयम स्थितिगत करी वेदे, ते वेदतो छागली कीटीनुं दल तेनी सुकास्या र्तारी करे, तेपण त्यां लगें करे के, ज्यां लगें संज्वलन लोननी बीजी कीटी समया

धि विक्ति रहे, तिहां संज्वलन लोजनो वंध व्यवहेद था ने र दर षायनो उदय अने उदीरणा पण व्यव द थाय निवृत्तिग्र स्था नो हाल पण व्यवहेद थाय ए ण थिं व्यवहेद थाय.

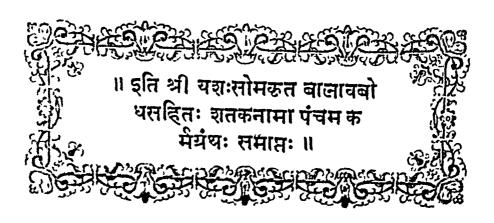
ते ही सूक्ष्मसंपराय हिटीदल य स्थितिंग री वेदे तेथी तेने सूक्ष्म संपराय ग्रुणवां हीयें. तेना संख्या हिंगा है हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा हिंगा है। हिंगा हिंगा हिंगा हिंग

तिहां जे ोइए तारु पुरुष, होटो स इ तरतो था वचां हीप विश्रा छेइ वली गिल तरवा मांमे तथा कोइए यो डो पुरुष, हासं। करतो श्रा हुने हणतो हणतो थाके, तेवारें वली विश्रा छेइ समूलगो शेष त्रु जींतवा ने स थाय ते ए जीव पण सबल जय शत्रु जे हामोह तेने पितो सं या करतो रतो थाको तेमाटें ते यथाख्यात चारित्र इप विश्राम स्थान प विली श्रु ध्यानना बीजा पादें प्रव ईमान वीर्यवंत थयो था श्रंतर हूर्चना छेहला बे स य ध्यें प्रथ समयें (निहा के०) निइा ने प्रचला, ए वे प्रकृति पावे ने छेहले यें (विग्धावरण ए के०) पांच श्रंतराय, पांच झानावरण, चार द श्रीनावरण, ए चौद प्रकृति पावी, निश्चय नयें बारमा ग्रुणलाणाने छेहले समयें (नाणी के०) केवलझानी थाय अने व्यवहार नयने मतें तेरमा ग्रुण णाने प्रथ समयें केवलझानी थाय एम त्रेशन प्रकृतिनो क्ष्णणविध कह्यो। ए क्ष्प श्रेणीने संकृषें ही एनो वि ार उठा कमेग्रंथना बालावबोधमां लख्यो छे ते टें श्रहीं । थोडा बोर्ले घ जाणवुं.

ए लघुशत एवे नामें पांचमो कमेशंय जे नए। महोटो श श्री शिवश म्मे स्रिरुत ोइने तथा पंच संग्रह, कम्मे ति प्र ख शास्त्र तथा चृिषका प्र ख घणा श्रंथ जोइने परमग्रह गन्नाधिराज तपाबिरुद प्रवर्त्तक, महावैरागिकशि रोमणि, जद्वारक श्री जगचंड्स्रीश्वर चरणकमलयोरालंबायमान सर्वागिमकच ऋवित्त बिरुद्धारक नेक विद्यानंद धम्मेकीित प्रमुख बहुश्रुत परिवार परिवृता श्राद्धदिनकृत्य स्त्रत्वृत्ति वैत्यवंदनादि नाष्यत्रितय संघाचारादि तर्भेति लघुउप मिति नवप्रपंचाद्यनेक यथ स्त्रेण स्त्रधारायमान तपागञ्चाधिराज नद्दारक श्री (देविंदस्रिलिह्यं के०) देवेंड्स्रिशियरें लख्यो. (सयगि एं के०) शतक एवं नामें यथ ,ते (आयसरण का के०) पोताना आत्माने संनारवा निम्तें लख्यो. ते सर्व संघने सुखदायक थाजो॥ इति स यार्थः॥ १००॥

## ॥ अध प्रशस्तिः॥

॥ श्रीवीरपट्टेश्वरमोलिमोलिः, कलालयोऽङ्गानत विनाशी ॥ जूनपाखातिष्ठे कामुदीनूत् स्रिर्क्कगं इ इति प्रसिद्धः ॥ १ ॥ तत्पट्टपुष्करिवनासनराजहंसो, हयोऽ नवयवचनस्यतराजहंसः ॥ देवेंइस्रिरनवज्ञवतापनेदी, वेदीव दीव्यतिपरानुनव स्य यजीः ॥ २ ॥ यद्ङ्गानादिवियुक्तेष्ठ, प्रियमेलकता गात् ॥ श्रीमद्देवेंइस्रिशणां, वच स्तीर्थे पुनातु वः ॥३॥ श्रीमद्देवेंइग्ररो,मेलयगिरिग्ररोगिरां ग्रुरुत्व हो ॥ आप्तानुन्नयि श्रवातु वः ॥३॥ श्रीमद्देवेंइग्ररो,मेलयगिरिग्ररोगिरां ग्रुरुत्व हो ॥ आप्तानुन्नयि शिवः, स्वज्ञमनाप्तांस्तु पातयि ॥ ४ ॥ सुवर्णा सत्पदन्याः, सालकारा सुरेंइगीः ॥ श्रवतेऽर्थपयोधारां, मंददोधाऽपि नोदिता ॥५॥ इति शतकटबार्थ प्रार्थनां प्राप्य किं चि, दिलखिमहमदोषामयजस्यार्थसारं ॥ ६ शिश्व घन मितेऽद्ये निर्दिशे निर्दिशेयं, यदिह नवि इष्टं तद्वुधाः शोधयंतु ॥६ ॥ विबुधग्रुरुविणतयश्च, स्तोमयशस्तोमग्रुरुविणातुः ॥ जयसोमोऽलिखदेनां, नाषामात्मर तौ शतके ॥ ४ ॥ इति प्रशस्तिः ॥ स्विप्याणुः ॥ जयसोमोऽलिखदेनां, नाषामात्मर तौ शतके ॥ ४ ॥ इति प्रशस्तिः ॥



## ॥ थ॥

॥ श्रीचं इमहत्तराचार्यप्रणीत सप्ततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समारत्यते॥

॥ तत्र प्रथमं ॥ ॥ वालाववोध ारकत मंगणाचरणम् ॥ ॥ ।योवृत्तम् ॥

॥ प्रणिपत्य पार्श्वदेवं, स्मृत्वा स्वगुरुं गिरं च नागवतीं ॥ सप्ततिकायाव्याख्यां कुर्वे ऽहं बालबोधार्थम् ॥ १ ॥ मनोपि मंदमतयो, न जानते येहि चूर्णिटीको शः ॥ तहोधानुग्रह्थी, विषयोय ः ग्रुनोयंतत् ॥ १ ॥ केचित्परात्मसंवि, ६ ला वि ः लाः लौ खलायंते ॥ तेन्योन पि नीतिः, संतः संतोपनाजश्रेत् ॥ ३ ॥ श्रीह् पंसोमविबुधान्, सुयशः सोमानिधानकविश्रेष्ठान् ॥ नत्वा सप्ततिकाया, लिखामि जन नापया व्याख्याम् ॥४॥ अर्थे—प्रथम श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वरने नमस्कार करीने पोता ना दी ्।ग्रुरु अने विद्याग्रुरु, तेनां पद मलने नमीने, महारा थ श जे तुन्नबुदिना धणी जेने टीका अने चूर्णीयं करी अर्थ समजवामां न आवे, तेवा प्ररुपोना हि तने अर्थे सत्तरी नामा ढना कमेग्रंथनो वालावबोध लखुं बुं

## ॥ मूल गाया॥

सिद्ध पएहिं महत्तं, वंधोदय संत पयि । णाणं॥ वुत्तं सुण संखेवं, नीसंदं दिधि वायस्स ॥ १॥

अर्थ-(सिक् के०) अचल एटलें कोइथी खोटा करीन शकाय, एवा (पएहिं के०) पद है जेने विपे, एवा कर्मपाइडा कर्मप्रकति, अने कम्मपयडी प्रमुख जे मंथ जे न णी तेनां पद सर्वेज्ञ नापित है ते कोइथी पण खंमी शकाय नहीं त्यां (महं के०) महोटा अर्थ एटले घणा अर्थ हे जेने विपे तिहांथी (वंधोदयसंतपयिड जाणाणं के०) वंध, जदय अने सत्तापणे परिणमी जे कर्मनी प्रकृति, तेना स्थानकनो (संखेवं के०) संहेपें एटले थोडे अहरें घणो अर्थ समजाय अथवा विस्तारवंत अर्थ साथें थोडा मांहे आणीने एवी रीतें वचन रचना प्रकारें करी (बुहं के०) कहे हों. तेनणी हे शिष्य! हुं (सुण के०) सावधान थइने सांनल, पण ते संहेप के हेवो हे? तोके (दिविवायस्त के०) दृष्टिवाद एटले समस्त जिनागमकृष समृह, ते हुं (नीसंदं के०) जरणुं हे जे नणी वारमुं अंग दृष्टिवाद हे तेना एक परिकर्म,

बीजं सूत्र, त्रीजो पूर्वानुयोग, चोथो पूर्वगत, अने पांचमी चूलिका, ए पांच अधिकार है. तेमांहें चोथो पूर्वगतनामा अधिकार है तेने विषे चौद पूर्व है. तेमांहें जुं अग्रायणी नामा पूर्व, तेमध्यें चौद वस्तुपरिमाण है ते मांहेलां पांचमा वस्तु परिमाणमां वीश पाहुडा है. पाहुडा एटले अधिकार विशेष जाणवो. ते वीश पाहुडा मांहेलो चोथो कमेप्रकृतिनामा जे पाहुडो है, ते चोवीश अनुयोगदार सहित है, ते पाहुडा थकी वंधोदयसना पणे परणमी जे कमेनी प्रकृति, तेनां स्थानक नो संवेध एटले विचार ते संहेपथकी हुं कहीश, एटले ए शास्त्रपरंपरायें सर्वक नापित है तेनणी सहुने प्रमाण होय.

श्यवा बीजे श्रथें (सिक् के॰) स्वसमय प्रसिक् ले (पद के॰) चौद जीवस्था नक, चौद गुणताणां इत्यादिक पद ते श्राश्रयी बंध, उदय श्रने सत्तायें प्रकृतिस्था नक सङ्गाव श्राश्री संद्रेप बोलीश तथा संवेध एटले विचार श्रयवा संवेध एटले परस्परें वंध, उदय, सत्तानुं जोडवुं, (हिष्टवाद के॰) दादशांगीनुं रहस्य श्रयवा हिष्टवादनी श्रपेद्रायें ए सत्तरी प्रकरण विंडशा समान है, ते हेशिष्य! तुं. सांनलन

तिहां आत्मप्रदेशने कमे परमाणुनी साथं अग्निलोहनी पेरें सर्वोशें मलवुं, तेने वंध कहीयें. ते कमे परमाणुना ग्रुनाग्रुन रसनुं नोगववुं तेने उद्य कहीयें. तेहवा वांध्या तथा संक्रम्या जे परमाणु, ते जिहां लगें निर्क्तरे नहीं, तिहां लगें तेनो जे सज्ञाव, तेने सत्ता कहीयें, अने प्रकृति स्थानक एटले समुदाय जेम के वे, त्रण, चार, पांच, इत्यादिक प्रकृतिना थोकडा ते ज्यां लगें जेटला होय. त्यां लगें तेटला प्रकृतिना स्थानक जाणवां ए सर्वनो विचार, तेनो संक्ष्म एटले थोडे अक्ष्रें घणो अर्थ समजाय तेवी रीतें कहीग्रं, पण ते संक्ष्म कहवा है तोके (मह् कृष्णो अर्थ समजाय तेवी रीतें कहीग्रं, पण ते संक्ष्म कहवा है तोके (मह कृष्णो अर्थ हो जेमां एवो हे. अहीं आं वंधोदय सत्ताप्रकृतिस्थान कहेग्रं ते अत्विषय जाणवुं, अने अनिधायक शास्त्र तेने वाच्यवाचक नाव, ए संवंध जाणवो तथा ए अंथें अथिकारी कमेनी वंधोदय प्रकृति स्थाननी विवेचनाथी महा अधिका नी मोक्षार्था जीव जाणवा अने ते कमेविचारनुं जे समजवुं ते अवांतर प्रयोजन जाणवुं तथा महा प्रयोजन अथवा परंपराप्रयोजन तो मोक्ष् जाणवुं. एम अनिधेय, संवंध, अधिकारी अने प्रयोजन, ए चार वानां यंथने आरंगें कहेवां ॥ १ ॥

कड वंधंतो विच्यड, कड कड वा संत पयडि ठाणाणि॥ मजुतर पगईसु, नंग विगणा मुणेच्यवा॥ ए॥ र्थ- एवं ाचार्ये हे थके, ह्वे शिष्य पूछे हे के हे नगवन्! ( इवंधंतावें अइ के 0 ) केटली प्र ति ांधता था निव केटली प्रकृति वेदे, एटले जुनवे (वा के 0) थवा ( इ इ के 0 ) केटली केटली कृटली प्रकृति वंदे । था (संतपयिड वाणाणि के 0) केटली केटली प्रकृति जं नास्थान होय एवो शिष्यें प्रश्न ीधे थके ूलोत्तर प्रकृतिने विषे प्रत्ये बंधोद्य सत्तानो संवेध कहेवो, ते आश्रयी र जाणीने ह्वे आचार्य सामान्यें प्रत्युत्तर हे हे (मूलुत्तर पर्मृत्तु के 0 ) मूलप्रकृति ज्ञानावरणीयादि आत अने उत्तर प्रकृति ए शोने चावन्न, तिहां वंधोद्य सत्तायें प्रकृतिनो संवेध विचारतां (नंगविगण्या के 0 ) नांगाना विकल्प नेक उपजे हे, ते आ प्रकरणने विषे लेशथी आगल देखाड हो. तिहांथी (मुणे अवा के 0 ) जाणवा तेमच्यें प्रथम मूलप्रकृति आत वी जो बंधोद्यसत्तायें प्र ति स्थाननी संख्या, त्रीजो तेनो परस्पर संवेध, ए त्रण अधि ए चौद जीवस्थानक तथा चौद गुणवाणे विवरीने कहेवा तिहां प्रथम उपें मूलप्रकृति । तनां नाम, व्युत्पत्ति, तथा स्वरूप टीकाकार देखाडे हे.

प्रथम झानावरणीय कमें कहे हैं जे थकी घटादि अर्थ जाणीयें, तेने झान क हीयें, अथवा जे एण्डुं, ते झान हीयें तथा सा न्य विशेषात्मक उनयरूप ए वह हे ते मांहे विशेषांश यहणात्म जे अवबोधक प्रकाश, ते झान कहीयें। तेना आवरण आहाद जे कमेवर्गणाना पुजल मांहे झान आवरवानो स्वनाव हैं केनी पेरें? तोके जेम लोचनने तेज हुं आवरण वस्त्रादिक है ते जेम जेम सघ न होय, तेम तेम ख़िनुं तेज मंद, मंदतर थाय तेवी रीतें जेम जेम झानावरणनी सघनता होय, तेम तेम हि प्रकाश ढंकाय, ते प्रथम झानावरणीय कमे जाण हुं.

बीजं दर्शनावरणीयकर्म, ते ग्रं कहीयें.? तोके देखीयें जेणे करी अथवा देखें तेने दर्शन कहीयें सामान्यविशेषोत्त्रयात्मक वस्तु विषइ्छं जे जाति ग्रण किया दिक संयोजना हीन केवल धर्म मात्र ग्राहक जे सामान्यांशावबोध, ते दर्शन कहीयें, तेने आवरवानो स्वनाव जे कम्प्रेणजनो हे, तेने दर्शनावरणीयकर्म क हीयें जेम पोलीडे दूर याय तो राजानुं दर्शनमात्र थाय तथा जे राजानुं दर्शन अनिलापतो प्ररूप पण ज्यां सुधी पोलीआने अनिप्रेत न होय तो तेने वहें रा जाने मलवानी इन्ना हतां पण राजाने मलवा न दिये, तेम पोलीआ समान जे दर्शनावरणीय अने ज्ञानावरणीय कमे तेणे करी खरड्या एवा जे घटादि पदार्थ तेनुं दर्शन जीव रूप राजाने न होय. अहीआं ग्रंथनी साख लखीयें ठैयें. " दंसणती

से जीवे, दंसणघाय रेइ जे कम्मं ॥ तं पिहहारस । एं, दंसणावरणं नवे बीयं ॥ १ ॥ जह र ो पिहहारो, अणिनपेश्चस्स सोच लोगस्स ॥ र ोतह दिसावं, न देइ दंहुपि कामस्स ॥ २॥ जह रायाणा जीवो, पिहहारस दंसणावरणं ॥ ते णिहव बंधगेणं, न पिछए सो घडाइश्चं ॥ ३॥

त्रीज़ं वेदनीयकमें ते ग्रं कहीयें? जेने प्रथ विषादरूपें नु नवीयें, जेम मधुयें खरडी तरवारनी धारनुं चाटनुं ते प्रथ चाटतां छाव्हाद था य छने पठी जीन देदाय तेवारें विषाद थाय ते शातावेदनीयने प्रांतें छशाता वेदनीय होय एवो जे कम पुजलनो स्वनाव ते त्रीज़ं वेदनीय में जाएनुं.

चोथुं मोहनीयकर्म ते ग्रुं कहीयें ? जे मोहें मुंजाय तेथी हिताहित न जाएं जेमके घाटलुं नूंमूं, घाटलुं रूडुं, एम नजाएं इत्यादिक विवेक रहित घात्माने करें जेम मिहराइच्यें करी जीवने घेला पएं प्राप्त थाय तेथी हिताहित विचार ग्रून्य करें एवं जे कर्मपुजलनो स्वनाव, ते चोथुं मोहनीयकर्म जाए बुं.

पांचमुं आयुःकमे ते ग्रुं कहीयें ? तोके जे हेडनी पेरें प्रकृति बंध थाय, देवादिक नी गित बांधी त्यां जावा वांत्रतो होय तो पण ज्यां लगे इह जवायु जोगववुं होय, त्यां लगें न जइ शके. एवो जे कमे पुजलनो स्वजाव हो, तेने पांचमुं आयुःकमे कहीयें.

ठ हुं नामकर्म, ते छं कहीथें? के जे परमात्म रूपी जीवने पण देव नरकादिक तथा एकेंडिय, वेंडिय, तेंडियादिक जातिपणे हीन विशेष करी बोलावीयें, नमा वियें. जेम चितारो अनेक वानें करी हाथी, घोडा, माणस इत्यादिकना रूप आले खे तेम नामकर्म पण निन्न निन्न प्रकारें देव, नारकादिक स्वरूपें जीवना पर्याय करावे, एवो जे कर्मपुजननो स्वनाव हो, तेने हुं नामकर्म कहीथें.

सातमुं गोत्रकर्म ते गुं कहीयें? तोके जे थकी जातिकुलादिक जञ्चतायें करी गु णनुं स्थानक होय पूजा पामे श्रने जातिकुलादिक हीनतायें करी लोक मांहे नि दा पामे, पूजा न पामे, एवो जे कर्म पुजननो खनाव हे, ते सातमुं गोत्रकर्म जाणतुं. जेम कुंनकार चला घडा करे, तो लोकमांहे तंदूल, फूल, कुंकुमें करी पू जा पामे त्रने मिहरानां स्थानक चूंनला, घडा; करे तो ते लोक मध्यें निंदा पामे तेम जीव ग्रांगांत्रने ग्रवं ग्रनम जातिकृतने प्रनावें रूप बुध्यादिकें हीन थको पण मान महत्व पामे श्रने दीन जात्यादिक श्रवगुणं करी जोपण खरूप सुबुद्धिमान होप नो पण लोकमांहे हेलनीय होय.

प्राठमें प्रंतराय कर्म. ते छं कहीयें ? के जें छे करी जीवें दान, लान, नोग,

उपनोग, वीर्यादि नी लिब्ध ह्णीयें निवारीयें, जे राजा, धन, धा नो धणी हतो पण नंमारीना दीधा विना वस्तुनां दान, लान, नोग री के, ते जीव रूप राजा पण नंमारी रूप ंतराय मेना विवर ल ा वि दानादि लिब्ध पामे, ते नणी जे, मेपुजलनी दानादि लिब्ध ने हणवानो स्वनाव हे, तेने ात अंतराय में हीयें एटखे ाव मेना मूलना तथा स्वरूप ने लक्कण ां

हवे बंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिनां स्थान हे हे तिहां मूल ाहप्र तिना बंधनी अपेक्सयें ाह, सात, ह ने ए, एवं चार तिस्थान होय ने उदयापेक्सयें ाह, सात ने चार, ए एप प्रतिस्थान होय ने ता नी पेक्सयें पए आह, सात ने चार, ए प्रतिस्थान हो .

तिहां जेवारें विन, सर्व कमे बांधे, तेवारें वि ति बंधर वि होय, ते ज्ञान्य ता उत्क अंतर हूर्न रहे, के के विष्ठ विवास विवास विवास होय ने आ नो बंध कि तो निरंतर पणे ज्ञान्य था उत के ति हिस्त होय, तेथी ए बंधरथान नो कि पण तर हूर्ननो जाणवो.

हवे ते दिथी जेवारें जीव, ायु न बांधे, तेवारें ात प्रकृतिना बंधस्थान कें होय, ते । लमान पण जघन्यथा तो अंतर हूर्न प्र । ए जाए बुं. । रण के ोइए अंतर हूर्नाधुवालो जीव, पोताना आयुष्यनो त्रीजो नाग था तो रहे, तेवारें परनवायुनों बंध रे, ाटें तिहां आठ प्रकृतिनो बंध री वली सात प्रकृतिना बंध स्थानकें आव्यो, तिहां वली ंश्ए न्यून अंतर हूर्तना ीजा नाग पर्यंत सात प्रकृतिनो बंध रतो, सात प्रकृतिना बंधस्थानके रही, वली रण पामी अंतर मुहूर्ता पणे अवत है, तिहां पण ते आयुना वे नाग पर्यंत सात प्रकृतिनो बंध रै, पढ़ी शिजा नागने धुरें आयु बांधे, तेवारें आउ प्रकृति ना बंधस्थानकें वि ए अंतर हूर्तनो जधन्य । ल ह्यो अने उत्करो तो तेत्रीश सागरोपम बम्मासे णा ते वली अंतरमुहूर्नोन पूर्वकोटी वर्षना त्रीजा ना में धिक एटलो ाल होय, ते ावी रीतें- कोइए जीव, पूर्वकोटी आ वालो पोताना आयुष्यनो त्रीजो नाग थाकते अंतर हूर्न पर्यंत तेत्रीश सागरोपम देवा युनो बंध करे. तिहां आत प्रकृतिना बंधस्यानें रही, वलतो पूर्वकोडीनो त्रीजो नाग, श्रंतर मुहूर्ने कणो रहे, त्यां लगे सात प्रकृतिना वंधस्थानकें रही, तिहांथी चवी, देवता याय तिहां पण तेत्रीश सागरोपम हम्मासें णा एटला काल पर्यंत तो सात प्रकृतिनो वंध करे.शेप वम्मास आयु विशेष रहे,तेवारें वली परनवायु वांधे.

तिहां आत प्रकृतिना बंधस्थानकें आवे, ते नणी उत्क थी एटजो । ज संनवे हे. अने जेवारें मोहनीय अने आधु विना बाकी ह प्रकृतिनों बंध सुक्कासंपराय नामा दशमे गुणताणे करे, तेवारें ते बंध जधन्यतो ए समय लगें होय. ते के म के कोइएक जीव, उपशमश्रेणी करी दश ं गुणताणुं एक समय लगें स्पर्शी, तिहां नवक्ष्यें दशमे गुणताणेज मरण पामीने अनुत्तर देव थाय, तिहां वली अ

विरित सम्यक्टिएपऐ सात प्रकृतिनो बंधक होय, ते अपेक्सयें जवन्य एक सम य अने जन्कष्ट तो अंतरमुहूर्त काल प्रमाण होय, ते केमके दशमा गुणवाणातुं जन्कष्ट एटजुंज कालमान हे. तिहां ह प्रकृतिनोज बंध होय, ते अपेक्सयें लेवुं.

तथा एक वेदनीयकर्मनो वंध, अगीआरमे, बारमे अने तेरमे ग्रणवाणे होय, अहीं आं पण जघन्य तो पूर्वली परें एक समय लगें होय. अहीं अगीआरमुं ग्रणवाणं एक समयलगें स्पर्शी, नवक्त्यें मरण पामे तेनी अपेक्सयें एक समय लेवुं. अने उत्कृष्ट तो देशें कणी पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण, एक वेदनीयनो वंध होय, केमके को इएक जीव पूर्वकोटी आयुष्यनो धणी सात महीना माताना उदर मांहे रहीने शी घ जन्मे; जन्मथकी आठ वर्षने अंतें चारित्र लेइ, क्ष्पकश्रेणीयें चढी, केवलकान पामे. तिहां एकज वेदनीय कमेनी प्रकृतिना वंधस्थानकें देशें कणी पूर्वकोटी वर्ष पर्यंत रहे ते अपेक्सयें लेवुं.

हवे कयुं कमें वांधतां कयां कयां वंधस्थानक होय ? ते कहे हे. अहीं यां नाप्यती गाया लखीयें ठयें " आडिम ह माहे ह, सत्त एक सग थवा तहए॥ व यतयंमि वयंति, सेसएसु ह सत्त ह ॥१॥' आयुःकमें वांधतां एक आह कमें हुं वंध स्थानक होय अने मोहनीय कमें वांधतां एक आहतुं, बीजुं साततुं, ए वे वंधस्थान क होय. त्रीजुं वेदनीय कमें वांधतां आह, सात, ह अने एक, ए चार वंधस्थानक होय. ग्रेप झानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र अने अंतराय, ए पांच कमें ना वंधें आह, सात अने ह, ए त्रण वंधस्थानक होय.

ह्वे उदयस्थानक त्रण कहे हे. आह, सात अने चार, ए त्रण उदय स्थान क हे. तिहां नवे आहे कमेने उदये पहेलुं आहतुं उदय स्थानक होय ए अनव्यनी अपेक्षयें अनादि सांत नांगे लें अपेक्षयें अनादि सांत नांगे लें हैं। नथा कोइएक जीव, उपगमश्रेणीयें चही तिहां मोहनीय विना सात कमें हैं व्यन्यानक स्पर्शे, वली तिहांथी पडनो आहतुं उदयस्थानक स्पर्शे, तेनी अपे क्षाये मादि सांत नांगे लेंहें। ए जबन्य तो अंतर मुहने काल प्रमाण जाणवो.

हवे इ प्रकृतिने उद्यें केटलां उद्य स्थान लाने? ते हे हे मोहनीय मेने उद्यें ए ज ाव प्रकृति ं उद्यस्थान लाने तथा झानावरणीय, द्री नावरणीय अने अंतराय, ए ण कमेने उद्यें तो आव ं अने सातनुं, ए वे उद्यस्थान लाने, अने बाकीना चार मेने उद्यें तो दशमा णवाणा लगें आवनुं उद्य स्थानक होय, तथा गी रिमे अने बारमे गुणवाणे सात ं उद्यस्थानक होय, ने तेरमे तथा चौदमे गुणवाणे रि कमें उद्यस्थान होय. एवं ण उद्यस्थान चार कमेने उद्यें होय.

द्वे ाठ, सात ने चार, ए त्रण सत्ता स्थानक कहे हे। तिद्दां श्राठ कमेनी सत्ता स्थानक, गीश्रारमा एठाए। लगें होय, ए श्रनव्यनी श्रपेक्षयें श्रना दि, श्रनंत ने नव्यनी पेक्षयें श्रनादि सांत नागें होय। तथा मोहनीय क्य कथा पढ़ी सात में सत्तास्थानक, बारमे ग्रणठाणे श्रंतर मुहूर्त लगें होय. तथा चार घातीयां कमेने क्यें चार कमेनुं सत्तास्थानक, तेरमे तथा चौदमे ग्रणठाणे होय। ते जघन्यथी तो श्रंतर मुहूर्त पर्यंत श्रंतगढ केवलीनी श्रपेक्षयें जाएवो श्रने उत्कृष्टथी तो देशें एी पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण जाएवो.

हवे कइ कइ प्रकृतिनी सत्तायें कयां कयां सत्तास्थानक होय? ते कहे हे. एक मोहनीयनी सत्तायें छात कमेनुं सत्तास्थानक होय,मोहनीयविना बीजां घाती छां त्रण कर्मनी सत्तायें आवं तथा सातनुं, ए बे सत्ता स्थान होय अने चार अ घातीआंनी सत्तायें आव, सात अने चार, ए त्रणे सत्तास्थानक होय ॥ इति॥ १॥ हवे मूल आव कर्मनो बंध, उदय, सत्ता स्थान नो परस्पर संवेध कहे हे.

> छ विह सत ब्वं, धएसु छठे व दय संतंसा॥ एग विहे ति विगणा, एग विगणा छवंधंमि॥ ३॥

अर्थ-( अरुविह्सत्तवटवंधएसु के० ) अष्टविध बंधक, सप्तविध बंधक अने पड्विध वंधक, ए त्रण वधकने विषे प्रत्येकें (अहेव उदयसंतंसा केण) आते कमे प्र रुति उद्य अने सत्तायें पामीयें. अहीं त्रण नंग थया. ते देखाडे हे. प्रथम आहनो वंध, ञातनो उदय, ञने ञातनी सत्ता, ए नांगो ञायुर्वेध कालें अंतरमुहूर्त प्रमाण मिष्यात्वधी मांमीने अप्रमन्युणवाणा लगें जाणवो. तथा सातनो वंध,आवनो उदय श्चने ञावनी सत्ता, ए वीजो नांगो, श्रायुर्वेधने श्रनावें जघन्य श्रंतरमुहूर्न श्रने उत्कृष्टो तमासें कणो तेत्रीश सागरोपम पूर्वकोडी त्रिनागें अधिक काल प्रमाण मिच्यात्वयी मांमीने नवमा ग्रणगणा लगें जाणवो. तथा पड्डिध बंध छाउनो उद्य छने छ नी सत्ता, ए त्रीजो नांगो, सूक्षा संपरायग्रणवाणे जवन्य एक स् मय छने उत्रुष्टो छंतर मुहूर्न प्रमाण जाणवोः तिहां मोहनीयनो बंध नथी, ते मार्टे कह्यो तथा(एगविहेतिविगप्पा के०)एकविध बंधकें वेदनीय बांधे, तिहां त्रण नांगा होय, ते कहे हे. एकनो वंध, सातनो चदय अने आवनी सत्ता, ए नांगो उप शांतमोह गुणवाणे जवन्य एक समय अने उत्कष्टो अंतरमुहूर्त लगें पामीयें, के म के छहीं मोहनो उदय नथी, परंतु सत्ता है. तेमाटें. तथा एकनो बंध, सातनो चद्य अने सातनी सत्ता, ए वीजो नांगो ऋीणमोह गुणवाणे अंतर मुहूर्न लगें पामीयं, केम के तिहां मोहनीयनी सत्ता पण नथी ते माटें. तथा एकनो बंध, चारनो चदय धने चारनी सत्ता, ए त्रीजो नांगो सयोगी केवलीने विषे पामीयें. ते घाती कर्म ना श्रनावधी जवन्य श्रंतरमुहूर्न श्रने उत्रुष्टी देशूषी पूर्वकोडी वर्ष समें होय-

तथा (एगियण्याद्यवंथंमि के॰) बंधकपणाने द्यनावें चारनो उद्य द्यते चा रनी सत्ता, ए एक नांगो द्ययोगी ग्रणवाणे पामीयें, द्यहींद्यां योगने द्यनावें वंथ न दोष माटें द्यवंथक कथा. एवं सर्व मलीने मूल प्रकृतिना सात नंग थया ॥३॥ हवे ए । जंग, चौद जीव र । कें ही दे । हे हे. सत्त बंध च्युद, यसंत तेरस सुजीव । ऐसु॥ एगंमि पंच जंगा, दो जंगा ुंति के लिएो॥॥

र्थ-(तेरस विवाणेसु के०) ए संज्ञी पंचेंडि प ा विवा ने शेष तेर जीव र ान ने विषे बे नांगा होय, ते दे । डे हे (स हबंधअहुदय ंत के ०) सा नो बंध ावनो चदय ने ावनी सत्ता, ए प्रथ नांगो । युर्वेध काल विना दा होय, तथा विध बंध, ावनो चदय ने आवनी सत्ता, ए बी ने जांगो । वैध । छें अंतर के लगें होय. अने (एगंमि के०) ए संज्ञी पंचें इिय प र्या ाना जीवस्थानकें (पंचनंगा के०) धुरता पांच नांगा होय, तिहां वे नांगा तो पहेलानी पेरें जाएवा. एटले एक आयुर्वेध ालें ाठनो बंध, आठनो उदय ने ावनी सत्ता बीजो । बैंध । ल विना सातनो बंध, । वनो छदय ने । वनी सत्ता, त्रीजो दरामे ग्रंणवाणे विह अने आयु विना बनो बंध, विनो उदय ने ावनी सत्ता, चोथों गीआरमें एवाएो ए वेदनीयनो वंध अने मोह विना सा तनो चद्य ने ावनी सत्ता होयः पांचमो बारमे ग्रणवाणे एकनो बंध सातनो वदय ने सातनी सत्ता, ए पांच नांगा संज्ञी पंचें दिय पर्याप्ताने गुणवाणाने नेदें होय. था (दोनंगां तिकेवलिएो कें । बे नांगा केवलीने होय, ते केम के तेरमे एउएो ए वेदनीयनो बंध, चारनो उदय अने चारनी सत्ता, सयोगी केव लीने होय. ए प्रथ जंग तथा चौदमे एठाएो योगी केवलीने वंधशून्य होय ने चारनो चदय तथा चारनी सत्ता होय, ए बीजो नंग जाएवो. ए वे नंग के वलीने होय. हीं ए नाव जे मनना नावधी केवलीने सन्नीया पंचेंडिय थी नि ह्या, एटले केवलीने इव्यमन होय पण नावमन न होय, माटें सं क्वी पण नहीं, संज्ञी पण नहीं परंतु संज्ञासंज्ञी कहीयें, तेथी एना नांगा पण जूदा क ।. एवं सात नांगा चौद जीव स्थानकें कह्या ॥ ४ ॥

ह्वे एहिज चौद नांगा ग्रणगणे विवरीने कहे हे. इप्रद्मु एग विगणो, हस्मु विगुण सन्निएसु इ विगणा ॥

पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदयं संत कम्माणं ॥ ८ ॥

र्थ- एक मिश्रगुराणुं अने आतमायी मांमीने चौदमा सुधीना सात गुणता णां, एवं (अइसु के॰) आत गुणताणाने विषे (एगविगप्यो के॰) एकेक नांगो होय. ते केम ? तोके त्रीज्ञं तथा आवसं अने नवसं, ए त्रण ग्रणहाणे आयु न वांधे, माटं तातना वंध आवनो उदय अने आवनी सत्ता, ए एके नांगो होय, जे नणी ए त्रण ग्रणवाणे आयुवंध योग्य अध्यवनाय रवान क नयी तेथी आवनो वंध न होय तथा मुक्कासंपराय ग्रणवाणे आयु अने मोह विना वनो वंध, आवनो उद्ध अने आवनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. ध्रणीआरमे ग्रणवाणे एकनो वंध, मोह विना सातनो उद्ध अने आवनी सत्ता ए एकजांगो होय तथा वारमे ग्रणवाणे एकनो वंध सातनो उद्ध अने तातनी मा, ए एकज नांगो होय. तरमे ग्रणवाणे एकनो वंध, चारनो उद्ध अने तातनी मा, ए एकज नांगो होय. तरमे ग्रणवाणे एकनो वंध, चारनो उद्ध अने वार नी सत्ता, ए एकज नांगो होय. वीदमे ग्रणवाणे वंध ग्रन्य माटं चारनो उद्ध अने नार नी सत्ता, ए एकज नांगो होय. वीदमे ग्रणवाणे वंध ग्रन्य माटं चारनो उद्ध अने चारनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. एवं आव ग्रणवाणे एकक नांगो होय.

तथा (त्रस्तुविगुणसन्निएस के०) मिळाल, सास्वादन. श्रविरित, देशिवरित, प्रमन अने अप्रमन, ए त गुणताणाने विषे एवी संज्ञा ( इविगप्पा क०) तेन विषे वे वे विकल्प पामीयें केम के ए त गुणताणे आयुर्वेथ योग्य अध्यवसाय स्वानक ने तेथी आयुर्वेथ कालें आतनो वंथ. आतनो उदय, अने आतनी तना ए नांगो होय अने आयुर्वेथ विना सातनो वंथ, आतनो उदय अने आतनी सना. ए बीजो नांगो होय एम ए त गुणताणे वे वे नांगा होय, एम ( पत्तेयंपत्तेयं के०) प्रस्येकें प्रत्येकें, (वंथोदयसंतकम्माणं के०) वंथ, उदय अने सत्ताना नांगा अनुक्रमें गुणताणे होय, एटले मृत प्रकृति आश्रयी वंथोदय सत्ता संवेथ स्वामी कहा। ॥ए।

हवे उत्तर प्रकृति छोश्रयो वंथ, उदय छने तताप्रकृति स्थानक, संवंध कहीं । देयें. तिहां प्रयम छात् कर्ममांह जे कर्मनी जटली उत्तर प्रकृति हे, ते कहें हैं.

॥ घयोत्तर प्रकृतिराश्रित्य संवेधसामित्वं चाह् ॥

पंच नव इसि अघा, वीसा चठरों तहेव वायाला॥ इसिय पंच य प्रणिया, पयडीत आणुप्वीए॥ ह॥

धर्ये- हानावरणीयनी उत्तर प्रकृति. (पंच के०) पांच, इज्ञीनावरणीयनी उत्तर प्रकृति. (नव के०) नव. वेद्नीयनी उत्तर प्रकृति. (इस्मि के०) वे. मोह । नीयनी उत्तर प्रकृति. (घ्ठावीना के०) घ्रष्टावीग्र. घ्रायुनी उत्तर प्रकृति. (च्या के०) चार. (नदेव के०) नया वली नेमज नामनी उत्तर प्रकृति. (वाया हा के०) वेदानीग्र. गोंघनी उत्तर प्रकृति, (इस्मिय के०) वेद्यन द्यंतरायनी उत्तर प्रकृति.

तिना (पंचय के०) पां जेंद, (निषया के०) । हे. (पयडी । णुपुत्रीए के०) ए रीतें । ति मूल प्रकृतिना उत्तर जेद, नु में । एवा तिहां ना मैनी बेंता लीश प्रकृति ध्यें चौद पिंम प्रकृतिना जेद रतां पांशव थाय. ते ध्यें त्रसद , स्थावरदश त । आव प्रत्ये प्र ति मेलव । त्र्याणुं थाय. ते । अयी विशेष विवरो पहेला मैं थना । जाव । ध्यी जाएवो. ए उत्तर ति ही ॥ ६॥ हवे उत्तर कृतिनो बंध द अने सत्तानोसंवेध हे हे.

बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच॥ बंधो चरमे विदय, संतंसा हुंति पंचेव॥॥॥

अर्थ- (बंधोदयसंतंसा के॰) बंध, उदय अने सत्ताना ंश ते (नाणावरणंत राइएपंच के॰) ज्ञानावरणीय अने अंतराय, ए बे मेना पांच पांच प्रकृतिरूप सरखा है, ते नणी बंधादि स्थान नी प्ररूपणा पण बेनी साथेंज रे हे ज्ञानाव रणीयें तथा अंतरायें प्रत्येकें बंध, उदयअने सत्तारूप अंश स नागें पांच प्रकृति होय, एट हो ज्ञानावरणीय ं पांच प्रकृति ं ए ज वंध स्थान होय, ए पांचे ध्रु वबंधिनी प्र ति हो, ाटें पांचेनो ध्रुवबंध एणवो तथा उदय पण पांचनो ध्रुव जाणवो अने सत्तास्थान पण पांचनुं ध्रुव जाणवुं ए ज अंतरायनी पांच प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी ध्रुवोदिवनी तथा ध्रुवसत्तायें ही हे हवे ए बे कर्मे संवेध कहे हे. ज्ञानावरणीय बंध हों पांचनो बंध पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता ए ए जांगो, एमज अंतरायनो पण ए ए ज नांगो ते दश ए गुणहाणा लगें हो य तथा (बंधोचरमेवि कें॰) आगल ज्ञानावरणीय अने अंतरायना बंधने अ नावें पण ( उदयसंतंसाढुंतिपंचेव के॰) पांचनो उदय ने पांचनी सत्ता रूप बीजो नांगो गीआरमे अने बारमे गुणहाणो जाणवो ॥ ७ ॥

हवे दरीनावरणीय कमेने विषे उत्तर प्रकृति आश्रयी बंधादि स्थानकनी प्रकृपवाने कहे हो. अथोत्तर प्रकृतिराश्रित्य बंधस्थान प्रकृपणार्थमाह ॥

वंधस्सय संतरसय, पगइ । णाइ तिन्नि तुद्धाई॥ दय ठाणाइ इवे, च पणग दंसणावरणे॥ ।।।

अर्थ-दर्शनावरणीय कमेने विषे (बंधस्तयसंतस्तयपगइहाणाइ के॰) वंध प्र कृतिनां स्थानक तथा सत्ताप्रकृतिनां स्थानक पण (तिन्नि के॰) त्रण त्रण (तुल्ला

ई के •) तुख हे,एट से वंधनां स्थानक पण त्रण हे अने सत्तानां स्थानक पण त्रण वे माटें तुख वे ते कहे वे. एक नव प्रकृतिनुं स्थानक बीजुं थीए दीत्रिक हीन करतां ठ प्रकृतिनुं स्थानक,त्रीजुं निङ्ग अने प्रचला हीन करतां चार प्रकृतिनुं स्था नक, एरीतें त्रण स्थानक जाणवां. तिहां नव प्रकृतिनुं वंध स्थानक पहेले तथा वीजे गुणवाणे लाने,ते अनव्यने पहेले गुणवाणे अनादि अनंत होय अने नव्यने छनादि सांत होय तथा सम्यक्ली जीव मिच्यात्वें जाय तेनी छपेकायें सादि सांत पण होय ते जयन्यतो अंतरमुहूर्न अने उत्कृष्टो तो देशोन अर्६ पुजनपरावर्न काल पर्यंत जाणवो. तथा वी छं व प्रकृतिनुं वंध स्थानक, मिश्रगुणनाणाथी श्र पूर्वकरणना प्रथम नाग लगें होय ते जघन्य तो अंतर हूर्न अने जल्छ होतो ए कशो वत्रीश सागरोपम जाजेरा लगें रहे, जे जणी सम्यक्तवें ढाशह सागरोपम र ही पठी अंतर मुहूर्न मिश्रगुणवाणे आवी वली ठाशह सागरोप सम्यक्त्वें रही, ते पठी कोइएक जीव मिच्याल पडीवजे, तेवारें नवने वंध स्थानकें जाय अथवा क्षपकश्रेणी पडिवजे, तो ते चारने वंध स्थानकें जाय तथा चार प्रकृतितुं वंध स्यानक निड्रा प्रचलानो वंधविन्नेद करी आतमा ग्रुणताणाना बीजा नागथी मां मी दशमा गुणवाणा लगें होय ते जघन्यथी तो एकसमय होय जे नणी कोई एक जीव छातमा गुणताणाने बीजे नागें चार प्रकृतिनो वंध करी मरण पामी देवता याय. तिहां ठ प्रकृतिनो वंध करें. ए अपेक्सयें खेवुं तथा जत्कृषों तो अंत र मुहूर्न काल जाणवो. एम त्रण वंधस्यानक कह्यां.

हवे त्रण सत्तास्यानक कहे है. तिहां नवतुं सत्तास्यानक, अनव्यनी अपेहायें अनाहि अनंत अने नव्यनी अपेहायें अनाहि सांत. ए स्थानक उपशमें अणीनी अपेहायें पहेला ग्रणवाणायी मांभी अगीआरमा ग्रणवाणा लगें होय अने कृषक ने जिपीनी अपेहायें तो प्रथम ग्रणवाणायी मांभी नवमा ग्रणवाणाना नव नागमांहेला प्रथम नाग लगें होय. तिहां वली घीण ही त्रिकनो कृष करे तेथी तेनी सत्ता द्या पत्री व प्रकृतिनी सत्ता नवमा ग्रणवाणाना बीजा नागथी बारमा ग्रणवाणाना हि चरम नमय लगें होय. एनो काल अंतरमुहूर्चनो जाणवो तथा बारमा ग्रणवाणाने वेहने समयें निज्ञ प्रचलाने क्यें चारना सत्ता स्थानक एक समय लगें होय.

नथा ( नद्यहाणाइ के० ) नदय स्थानक ( चनपण्य के० ) चारनं तथा पां चनं ए ( हवं क० ) वे, ( दंसणावरणे क० ) ददीनावरणीय कमेने विषे होय ति दां चकु, अचकु, अविध अने केवलददीनावरणीय, ए चार प्रकृति ध्रुवोदयी है। ते नणी ए चारनो उदय, सदा होय, माटें ए चारनुं उदयस्थानक मिध्यालयी मांमीने क्षीणमोहना नेहडा जगें होय अने ए चार साथें जेवारें पांचमी एक नि इानो उदय होय, तेवारें पांचनुं उदयस्थान बीजं जाणवुं. जे नणी पांच निझा अधुवोदयी ने ते माटें उदय विरोधी ने, तेथी ए पांच निझामांथी ए । हों एक नि झाने उदयें बीजी निझानो उदय न होय, तेमाटें जेवारें निझानो उदय न होय तेवारें चकुदर्शनावरणादि चारनोज उदय होय ने जेवारें निझानो उदय होय तेवारें पांचेनो उदय साथें होय, माटें पांच ं ने चार ं, ए बे उदयस्थान ं ं. ए बीजा दर्शनावरणीय मैना बंधोदयसत्तार । । । इति॥ ए॥ हवे ए दर्शनावरणीयना बंधस्थानकादि नो संवेध, णठाणे कहे ने.

बीयावरणे नव बं, धएसु च पंच दय नव संता॥ बच्च व बंघे चेवं, च बंधुदए लंसाय॥ए॥

अर्थ—(बीयावरणे केण) बीजा दर्शनावणीयने विषे (नवबंधएसु केण) नवनुं बं धस्थानक, मिण्याल अने सास्वादन, ए वे णगणाने विषे होया तिहां (चगणंच व्य केण) चारनुं अने पांच ं,ए वे ग्रद्यनां स्थान होय, तेमांहे चकुद्रीनावरणादि क चारने ग्रद्यें चारनुं ग्रद्य स्थानक होय अने पांच निष्णामंहेली एककालें एक निष्णाने ग्रद्यें पांच प्रकृति ं ग्रद्य स्थानक होय अने ए वे नांगे (नवसंता केण) सत्तानुं स्थान तो नव प्र तिनुंज होया, एटले नवनी बंधा, चारनी ग्रद्य अने नवनी सत्ता, ए एक नांगो तथा नवनो बंधा, पांचनो ग्रद्य अने नवनी सत्ता, ए बीजो नांगो. ए वे नांगा पहेले तथा बीजे ग्रुणगणे लाचे. ए बीजा नांगामां एककालें पांच निष्णामंहेली एकेकी निष्णाने ग्रद्य होय ते एकेकी निष्णानुं नाम लक्ष्में क हीयें, तेवारें एक नांगामां पांच नांगा थाया.

एमज ( व उबंधेचेवं के ० ) निश्चेंथी वने बंधें तथा चारने बंधें पण वे वे नां गा होय, ते कहे वे ितहां वनो वंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता ए प्रथमनांगो, तथा वनो वंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो नांगो एवं वे नांगा त्री जो, चोथो, पांचमो, वहो, सातमो अने आवमा गुणवाणाना प्रथम नाग लगें हो य, जे नणी त्रीजा गुणवाणा थकी थीणिक्षित्रक टालीने वाकी व प्रकृतिनो वंश होय तथा उदय तो चारनो ध्रव होय अथवा जेवारें निहानो उदय होय. तेवारें पांच प्रकृतिनो उदय पूर्वली पेरें होय अने सत्ता तो नवनीज होय हुएक साधुने आवमाना

प्रयम नागें वनो वंध, चारनो चर्य अने वनी सत्ता, ए एकज नांगो पामीयें, जे नणी ते ने अतिविग्रह पणे करी कोइपण निझानो चर्य न होयः यहकं सत्कर्मश्रंथे '' निहाइगस्त चर्च, खीणखवगे परिवद्यए " ए वचनधी पांचनो चर्य न होय त या कोइएक आचार्य, बारमा गुणवाणा लगें निझानो चर्य मानीने क्ष्पकने पण निझानो चर्य कहे हे. पण ते कम्मपयडीनी साथें विरुद्ध हे तेथी अंहीं विवक्ष्योनथीः

एमज चारने वंधें पण वे नांगा जाणवा, एटले पांच निड़ा विना चारनो वंध, चारनो वदय अने नवनी सत्ता तथा जेवारें निड़ा अथवा प्रचला, ए वे मांहेली एकनो उदय होय तेवारें चारनो वंध,पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए वे नांगा आतमाना बीजा नागथी मांमीने अगीआरमा गुणवाणां लगें उपशमश्रेणीयें होय अने क्षपकने तो निड़ाना अनाव नणी पूर्वली पेरें एक नांगोज जाणवो

तथा (च व वं धुर ए उतं साय के ) चारे ने वंधें नवमा गुण गणाना बीजा नाग यी यीण दित्रिक नवमाना प्रथम नागें हे पवे तेवारें उनी सत्ता होय, अहीं आं ग्रंश शब्दें सत्ता कहीयें. " अंसइति संतंकम्मं नन्न ?" एम चूर्णीवचनथी जाण वुं. तेवारें चारनो वंध, चारनो उदय अने उनी सत्ता होय, ए नांगो दशमा ग्रंण ण गणाना ठेला समय लगें ह्रपकने होय. एम चारने वंधें त्रण नांगा यथा ॥ए॥

उवरय वंधे चउपण, नवंस चउरुद्य ढ चऊसंता॥ वेयणियाउ छा गोए, विज्ञक मोहं परं वुहं॥ १०॥

श्रमी—हवे ( श्वरयबंधे कें ) बंध विरमे थके श्रमीश्रारमे ग्रणवाणे (चरण णनवंस के ) चारनो उदय श्रने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय श्रने नवनी सत्ता.ए वे जांगा पामीयें जे जांगी उपशांतमोहने निहानो उदय संजवे है; तेथी पांचनो उदय पण लाजे. श्रहींश्रां पण नवंस शब्दें नवनी सत्ता जाणवी. तथा वारमे ग्रणवाणे हेहला समयना श्रागला समय लगें ( चरुहदयहच्छत्तंता के ) चारनो उदय श्रने उनी सत्ता, ए जांगो होय श्रने हेहले समयें तो चारनो उद य तथा चारनी सत्ता, ए जांगो होय. केमके हिचरमसमयें निहा श्रने प्रचलानो उत्य श्रने तथी चारनी सत्ता होय. एम श्रमीश्रार जांगा दर्शनावरणीय कर्मना होय श्रने हपक हीणमोहने विषे जे निहानो उदय माने हे, तेने मतें चारनो वं गः पांचनो उदय श्रने उनी सत्ता ए जांगो नवमे श्रने दशमे ग्रणवाणे ह्रपकने श्रोप श्रने श्रनो श्रना वे पांचनो उदय श्रने श्रना वे पांचनो उदय श्रने श्रना वे पांचनो उदय श्रने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रनावें पांचनो उदय ह्राने श्रामोहें ह्रिचरम

देव थाजो, तेने देवार्श्वनो बंध, तिर्यगायुनो उदय ने देवायु तथा तिर्यगायु ए बे नी सत्ता ए जांगो एक, मिश्र एवाएा विना देशविरति ग्रुणवाणा लगें चार ग्रुणवाणे पा गियें. तथा जे तिर्येच रीने नरकें ाज्ञे तेने नर ायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय ने तिर्यगायु त । नर । यु ए े । सता, ए जांगो रि ध्याव्वीने होय. ए चार जांगा आर्युं बंधकालावस्थायें तिर्य ने होय. हवे आयुर्वेध करी रह्या पठी पा ली उत्तरावस्थायें बंधग्रूत्य ।र जांगा होय,ते देखाडे हे. ए तिर्यगायुनो उदय अने बे तिर्यगा नी सत्ता, बी । तिर्यगा नो उदय ने तिर्यगायु तथा मनुष्यायु ए बेनी सत्ता, शिजो तिर्यगा नो उदय ने तिर्यगायु, देवायु ए बेनी सत्ता, चोथो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु, नरकायु, ए बेनी सत्ता, ए चार जांगा होय, तेम ध्यें जेणे । युर्वेध । लावस्थायें जे गतिनुं आयु बांध्युं होय, तेने उत्तरावस्थायें बंधग्रूत्य जांगो जाणवो. एटखे नव जांगा तिर्यचनी गतिथी उपजे.

तेम मनुष्यने पण नव नांगा जाणवा, परं एटलुं विशेष जे परानवायुवंधाव स्थाकालें जे मनुष्य ष्यायु बांधे, तेने मनुष्यायुवंध, मनुष्यायूदय अने बे मनु ष्यायुनी सत्ता तेमां एक मनुष्यायु तो नोगवे हे ते अने बीजो बांधे ते, एम बेहुनी सत्ता होय तथा जे मनुष्य तिर्यगायु बांधे तेने तिर्यगायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने तिर्यचायु तथा नुष्यायु, ए बे नी सत्ता ए नांगों होय. ए बे नांगा मिथ्याल त था । स्वादन ए वे गुणताएो लाने जे नए। म प्य तथा तिर्यंच सम्यक्ली थका देवायु बांधे पण बीज्ञं ायु न बांधे तेमाटें चोथे ग्रणवाणे ए नांगा न होय. त था जे म प्य देवायु बांधे तेने देवायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्य तथा देवायु ए बेनी सत्ता ए नांगो एक मिश्र णाताणा विना अप्रमत्त गुणताणां विगे व गुणवाणे पामीयें,तथा जे मनुष्य, नरकायु बांधे तेने नरकायुनो वंध म्नुष्यायुनो उद य तथा मनुष्य अने नरकायु ए बेनी सत्ता,ए नांगो मिष्याल गुणवाणे लाने. ए चार आर्युवंध कालावस्थाना नांगा जाएवा. हवे आर्युवंध काल पढ़ी आगले यथानु कमें उत्तरावस्थायें ए चार नांगा बंधशून्य कहेवा, ते कहे हे. एक मनुष्यायुनो उदय. तथा वे मनुष्यायुनी सत्ता,बीजो मनुष्यायुनो चद्य अने मनुष्य तिर्यगायुनी सत्ता.त्री जो मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायु तथा नरकायुनी सत्ता, ए त्रण नांगा मिष्याल थी अप्रमत्तरणवाणा पर्वत लाने. चोथो मनुष्यायुनो उद्य अने देव तथा मनुष्या युनी सना, ए नांगो अगीआरमा गुणवाणा पर्यंत लाने केमके देवाय वांध्या पठी वली श्रेणी पण आरंनी होय पण वीजा त्रण आयु वांध्या पठी श्रेणी आरंने

प्रथम नागें तनो वंध, चारनो उदय अने तनी सत्ता, ए एकज नांगो पामीयें, जे नणी ते ने अतिविद्युद्ध पणे करी कोइपण निइानो उदय न होय यहकं सत्कमें ये " निद्दाह्यस्स उद्दे, खीणखवगे परिवचए " ए वचनधी पांचनो उदय न होय त या कोइएक आचार्य, बारमा गुणवाणा लगें निइानो उदय मानीने क्षपकने पण निइानो उदय कहे ते. पण ते कम्मपयडीनी साथें विरुद्ध ते तेथी अंहीं विवक्ष्योनधी.

एमज चारने वंधें पण वे नांगा जाणवा, एटले पांच निड़ा विना चारनो वंध, चारनो चदय अने नवनी सत्ता तथा जेवारें निड़ा अथवा प्रचला, ए वे मांदेली एकनो उदय होय तेवारें चारनो वंध,पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए वे नांगा आतमाना बीजा नागथी मांभीने अगीआरमा गुणवाणां लगें उपशमश्रेणीयें होय अने क्षपकने तो निड़ाना अनाव नणी पूर्वली पेरें एक नांगोज जाणवो

तथा (च व वंधु द ए व व ले कि ) चार ने वंधें नवमा ग्रण वाणाना बीजा नाग थी थीण दित्रिक नवमाना प्रथम नागें हे पवे तेवारें बनी सत्ता होय, अहीं अं ग्रंश शब्दें सत्ता कहीं थें. "अंसइति संतंकम्मं नन्न ?" एम चूर्णीवचनथी जाण वुं. तेवारें चार नो वंध, चार नो वदय अने बनी सत्ता होय, ए नांगो दशमा ग्रण ण वाणाना वेद्या समय लगें हू पकने होय. एम चार ने बंधें त्रण नांगा यया ॥ए॥

उवरय वंधे चउपण, नवंस चउरुद्य व चऊसंता॥ वेयणियाउ च्य गोए, विजक्ष मोहं परं वुहं॥१०॥

श्रिन्द्रवे ( जवरयवंधे के० ) वंध विरमे थके श्रगीश्रारमे ग्रणवाणे ( चल्लप स्वांस के० ) चारतो उदय श्रने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय श्रने नवनी सत्ता.ए वे जांगा पामीयें जे जाि उपशांतमोहने निहानो उदय संजवे हे; तेथी पांचनो उदय पण लाने. श्रहींश्रां पण नवंस शब्दें नवनी सत्ता जाणवी. तथा वारमे ग्रणवाणे हेहला समयना श्रागला समय लगें ( चल्लह्यहज्जतंता के०) चारनो उदय श्रने हनी सत्ता, ए जांगो होय श्रने हेहले समयें तो चारनो उद य नथा चारनी सत्ता, ए जांगो होय. केमके हिचरमसमयें निहा श्रने प्रचलानो क्य करे तथी चारनी मत्ता होय. एम श्रगीश्रार जांगा द्रीनावरणीय कर्मना होय श्रने हणक हीणमोदने विषे जे निहानो उदय माने हो, तेने मतें चारनो वं यः पांचनो उदय श्रने हणी मत्ता ए जांगो नवमे श्रने द्रामे ग्रणवाणे ह्रपकन होय श्रने श्रना वं पांचनो उदय श्रने श्रना वं पांचनो उदय श्रने श्रनावें पांचनो उदय श्रने श्रनावें पांचनो उदय, हनी सत्ता. ए जांगो ह्रीणमोहें हिचरम

देव थाज्ञो, तेने देवार्श्वनो बंध, तिर्यगायुनो उदय अने देवायु था तिर्यगायु ए बे नी सत्ता ए नांगो एक, मिश्र एउएए। विना देशिवरित ग्रु ठाए। लगें चार ग्रुएठा एो पा थिं. तथा जे तिर्थेच रीने रकें जो तेने नर युनो बंध, तिर्थगायुनो उदय ने तिर्थगा तथा नर यु ए े। ा, ए नांगो ि ध्यात्वीने होय. ए चार नांगा आर्युबंधकालावस्थायें तिर्थ ने होय. हवे युवंध री रह्या पठी पा जी उत्तरावस्थायें बंधग्रून्य ।र नांगा होय,ते देखाडे हे. ए तिर्थगायुनो उदय अने बे तिर्थगा नी स ा, बी हिर्यगा नो उदय ने तिर्थगायु तथा म ध्यायु ए बेनी सत्ता, िजो तिर्थगायुनो उदय ने तिर्थगायु, देवायु ए बेनी सत्ता, चोथो तिर्थगायुनो उदय ने तिर्थगायु, नरकायु, ए बेनी सत्ता, ए ।र नांगा होय, तेम ध्यें जेएो युवंध ।लावस्थायें जे गतिनुं आयु बांध्युं होय, तेने उत्तरावस्थायें बंधग्रून्य नांगो जाएवो. एटसे नव नांगा तिर्थचनी गतिथी उपजे.

तेम म ष्यने पण नव नांगा जाणवा, परं एटलुं विशेष जे परानवायुवंधाव स्थाकालें जे म ष्य ष्यायु बांधे, तेने मनुष्यायुबंध, मनुष्यायूदय अने बे मनु ष्यायुनी सत्ता तेमां एक वृष्यायु तो नोगवे हे ते अने बीजो बांधे ते, एम बेहुनी सत्ता होय तथा जे मनुष्य तियगायु बांधे तेने तियगायुनो बंध मनुष्यायुनो चदय अने तियंचायु तथा वृष्यायु, ए बे नी सत्ता ए नांगो होय. ए बे नांगा मिष्याल त था सास्वादन ए वे गुणवाणे लाने जे नणी प्य तथा तिर्थंच सम्यक्ली थका देवायु बांधे पण बीज्ञं ायु न बांधे तेमाटें चोथे ग्रणवाणे ए नांग! न होय. त था जे म ष्य देवायु बांधे तेने देवायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्य तथा देवायु ए बेनी सत्ता ए नांगो एक मिश्र णवाणा विना अप्रमत्त गुणवाणां त्गे व गुणवाणे पामीयें,तथा जे मनुष्य, नरकायु बांधे तेने नरकायुनो वंध मनुष्यायुनो उद य तथा मनुष्य अने नरकायु ए बेनी सत्ता,ए नांगो मिष्याल गुणनाएों लाने. ए चार आर्युबंध कालावस्थाना नांगा जाएवा. द्वे आर्युबंध काल पढी आगले यथानु क्रमें उत्तरावस्थायें ए चार नांगा बंधशून्य कहेवा, ते कहे हे. एक मनुष्यायुनो चद्य, तथा वे मनुष्यायुनी सत्ता,बीजो मनुष्यायुनो उदय छने मनुष्य तिर्थगायुनी सत्ता.त्री जो मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायु तथा नरकायुनी सत्ता, ए त्रण नांगा मिण्यात्व थी अप्रमत्तरुणवाणा पर्वत लाने. चोथो मनुष्यायुनो उदय अने देव तथा मनुष्या युनी सत्ता, ए नांगो अगीआरमा गुणवाणा पर्यंत लाने केमके देवायु वांध्या पठी वली शेणी पण आरंनी होय पण वीजा त्रण आयु वांध्या पठी शेणी आरंने

नहीं तेमाटें बीजा त्रण नांगा, अप्रमन्तगुणराणा त्रंगें कह्या तथा मनुष्यने विषे परनवायु वंधयकी पूर्वें मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए नांगो प्रथ म तिर्थेचना नांगानी साथें कहेलो है. एवं नव नांगा मनुष्यगतिने विषे आयुना कह्या, शरवाले अहावीश नांगा आयुःकमेने संवेधें थाय.

द्वे गोत्रकम्मेने विषे सामान्यें एकनो बंध तथा एकनो उदय होय, जे नणी उद्यगित्र तथा नीचेगीत्र, ए वेद्ध प्ररुति उदय तथा बंधें विरोधिनी है। तेनणी वेद्धनो उदय तथा बंध साथें न होय एकेकीनो जूदो जूदो बंध तथा उदय होय, तथा एकज प्ररुतिनुं वंधस्थानक तथा एकज प्ररुतिनुं उदयस्थानक होय अने स चास्थानक तो एक प्ररुतिनुं तथा बे प्ररुतिनुं एवं वेद्ध होय, ते कहे है। जेवारें ते उधने वाउकायमांहे रहेतो थको जीव उद्यगीत्र उवेतीने सत्ताथी टाले, तेवारें ते उधने वाउमध्यें तथा तिहांथी मरी बीजा अवतारमां आवीने जिहां लगें फरी उद्यगीत्र न वांथे, तिहां लगें एक नीचर्गीत्रनी सत्ता जाएवी तथा बीजुं अयोगीगुण्ताणाना चरमसमयें एक उद्यगीत्रनुं सत्तास्थानक होय एम वे प्रकारनुं एकेक प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक पहेलुं जाएवुं अने बीजुं तो वे प्रकृतिनी स्ताहरूप सत्तास्थानक जाएवं स्थानक पहेलुं जाएवुं अने बीजुं तो वे प्रकृतिनी स्ताहरूप सत्तास्थानक जाएवं

स्थानक पहेलु जाणवु. अन बाज ता ब प्रकातना स्नारूप सनास्थानक जाणवु हवे गोत्रकमेने विषे संवेध कहीयें हैयें. एक नीचैगेंत्रिनो बंध, नीचैगेंत्रिनो व व्य अने नीचैगेंत्रिनी सना, ए नांगो तेवकाय अने वायुकाय मध्यें वचैगेंत्रि वरे व्या पठी होय. तथा नीचैगेंत्रिनो बंध नीचैगेंत्रिनो वव्य अने वच्च तथा नीचिगोंत्रिनो स्वा, ए एक नंग तथा नीचैगेंत्रिनो बंध वचैगेंत्रिनो वव्य अने वच्च तथा नीच ए वेहुनी सना, ए वे नांगा मिण्याल तथा साखादन ए वे गुणवाणे होय, कंमके आगले गुणवाणे नीचैगेंत्रिनो वंध नथी तेन्छी तिहां न होय, तथा वचैगेंत्रिनो वंध नथी तेन्छी तिहां न होय, तथा वचैगेंत्रिनो वेश्व नीचैगोंत्रिनो वव्य अने वेहु गोत्रिनी सता, ए नांगो मिण्यालयी मांनीवे वेश्विरित गुणवाणा लगें होय केमके आगले गुणवाणे नीचैगेंत्रिनो वव्य नथी नेनणी न त्रोय तथा वचनो वंध वचैगेंत्रिनो वव्य अने वेहुनी सत्ता ए नांगो द अमा गुणवाणा लगें दोय. आगले गुणवाणो गोत्रवंधना अनावथी ए नांगो न हो य नथा वचेगेंत्रिनो चव्य अने वच्चेगेंत्रिनो सता ए चेहिंगेंत्रिनो स्वान गोंगो अगीआगमा गुणवाणायी मांनीने चीवमा गुणवाणाना हिचरम समय लगें होय नथा वचेगेंत्रिनो उत्य अने वचेगेंत्रिनी सता. ए नांगो अयोगी गुणवाणाना नेहिंगे साम विषे होय. ए नीने वेहनीय, आ यु अने गोत्रकर्मने विषे संवेध कहीने पठी (मोहंपरंवु हं कें।) मोहनीय मैना वंधादि स्थानक आगले ही हां॥ इति स चयार्थः॥ १०॥ हवे ए त्रण कर्मना नांगा गाथायें री कहे हे.

गोछिम्मि सत्त नंगा, छिठय नंगा हवंति वेयणिए॥ पण नव नव पण नंगा, छा च केवि कमसो ॥ ११॥

श्रियं (गोश्रम् सत्तनंगा के०) गोत्र मेने विषे सात नांगा जाणवा. श्रने (वेयणिए के०) वेदनीयकर्मने विषे (श्रष्ठयनंगाहवंति के०) श्राठ नांगा होय तथा (पण के०) पांच, (नव के०) नव, वली (नव के०) नव, (पण के०) पांच, ए चार प्रकारें मलीने हावीश (नंगा के०) नांगा ते (श्राठचठके वि के०) नरकादिचारश्रायुखाने विषे (मसोठ के०) श्राठ में होय॥ ११॥ हवे मोहनीयकर्मना बंधादि स्थानक कहे हे।

बावीस इंकवीसा, सत्तरसं तेरसे व नव पंच॥ च तिग डगचं इकं, बंध डाणाणि मोहरस॥ १२॥

अथ-ए बावीशनुं बंधस्थानक, बीजुं ए वीशनुं बंधस्थानक, त्रीजुं सत्तरनुं बंधस्थानक, चोशुं तेरनुं बंधस्थानक, पांच ं नव ं बंधस्थानक, ठाठुं पांचनुं बंध स्थानक, सातमुं चारनुं बंधस्थानक, आतमुं त्रण ं बंधस्थानक, नवमुं बे प्रकृतिनुं बंधस्थानक अने दश ं (इ ं के०) एक प्रकृति ं बंधस्थान , ए ( बंध हाणाणि मोहस्स के०) प्रकृतिबंधरूपदश बंधनां स्थानक मोहनीयकमेनां जाणवां

तिहां प्रथम बावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक केम होय? ते कहीयें वैयें. मोहनी यनी अठावीश प्रकृति ने, तेमांह सम्यक्त अने मिश्र, ए वे मोहनीय वंध योग्य नथी तेमाटें बाकी न्वीश बंधयोग्य रही. तेमांथी पण त्रण वेद मध्यें एक सम यें एकज वेदनो वंध होय ए विरोधिनी प्रकृति नणी वीजा बे वेदनो वंध न हैं होय तेमाटें बाकी चोवीश रही तेमांथी पण हास्य अने रितनो जेवारें वंध होय. ते वारें एनी विरोधिनी शोक अने अरितनो बंध न होय अने जेवारें शोक अने अरित वंधाय तेवारें हास्य अने रित, ए वे प्रकृति न वंधाय तेथी ए चार प्रकृति सध्यें एक समयें बेज बंधाय बाकीनी वे बीजी न बंधाय तेमाटें ए व क हाडतां शेष मोहनीयनी एक समयें उत्कृष्टी तो बावीश प्रकृति वंधाय पण अधि

क न वंधाय ए वावीश प्रकृतिना बंधनुं स्थान , मिष्यात्व गुणा होय, ते अन व्यनी अपेक्तयें अनादि अनंत नांगे होय तथा नव्यनी अपेक्तयें अनादि सांत तथा सादि सांत ए बे नांगे होय. तथा ए बावीश प्रकृतिमाहें थी जेवारें मिष्या त्व मोहनीय न बंधाय तेवारें बीजं एकवीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक साखादन गुण वाणे जयन्यतो एक समय अने उत्कृष्ट थी तो व आवितका प्रमाण होय. अहीं आं यद्यपि नपुंसकवेदनो पण बंध नथी तथापि ते स्थानकें स्त्रीवेद अथवा पुरूप वेदनो वंध वे तेथी वेदशून्य न होय.

तथा ते बावीश प्रकृति । हेथी अनंता बंधीआ । विधिक चार तथा मिथा ल मोहनीय ए पांच प्रकृति जेवारें न बंधाय, तेवारें मिश्र तथा अविरति गुणग एो सत्तर प्रकृति वंधस्थानक जघन्य अंतर मुहूर्त अने जटक थी तेत्रीश सागरो पम जाजेरा लगें होय जे नए। अनुत्तर सुर चवीने देशविरति अथवा सर्वविरति एएं ज्यां लगें न पिडवजे, तिहां लगें तेने सत्तर प्रकृतिनोज बंध होय.

ते सत्तर माहेची जेवारें अप्रत्याख्यानावरण चार न वांधे, तेवारें देशविरति गुणवाणे तेर प्रकृतिनुं वंधस्थानक जाणवुं. तेमांहेथकी वली प्रत्याख्यानाव रणीय चार न बांधे तेवारें प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण गुणवाणा लगें न्य प्रकृतिनुं वंध स्थानक जाणवुं. अहीं आं जोपण सातमे तथा आवमे गुणवाणे शोक अने अरितनो वंध नधी तोपण ते स्थानकें हास्य अने रितनो वंध है। ते नणी संज्वलन चार, हास्य, रित, नय, जुगुप्सा अने पुरुपवेद, ए नव प्रकृतियुं वंधस्थानक होय. तेरनुं तथा नवनुं, ए वे बंधस्थानक जवन्यतो छंतरमुहूने पर्यंत होय अने जल्कष्टांतो देशे कणी पूर्वकोडी लगें होय तेमांहेथी हास्य, रति. नय अने जुगुप्ता, ए चार प्रकृतिनो अपूर्वकरणना हेह्हे नागें वंध विधेद थया पठी अनिवृत्ति गुणवाणाना पांच नाग मध्यें पहेले नागेंपांच प्रकृतिनुं वंधस्था नक होय. तेमांहेथी पुरुपवेदनो वंधहेद करी बीजे नागें चारतुं वंधस्थानक होय तमाहेयी संज्वलनकोधनो वंध होदे तेवारें त्रीजे नागें त्रणतुं वंधस्थानक होयः तमांथी संज्वलन माननो वंध छेदे तेवारें चोथे जागें बेनुं वंधर्थानक रहे, तेमांथी संज्यानमायानो वंध छेदं तेवारें पांचमे नागें एक संज्वलना लोनहं वंधस्थान क दोव. ह्यई। ह्या ए गुणवाणे पांच वंधस्थानक थाय तेनो काल जयन्य एक स मय अने उत्रुष्ट तो अंतरमुहूर्न प्रमाण जाणवो ए मोह्नीय कर्मनां दश वंध म्यानक क्त्यां ॥ इति समुज्ञयार्थः ॥ १०॥

द्वे मोहनीयकर्मनां नव, जदयस्थानक हे हे.

एगं च दोव चनरो, एतो एगाहिस्या दसु ोसा॥ नहेण मोहणि , नदए ।णाणि नव हुंति॥ १३॥

अर्थ- (उहेणमोहणिक्ते के०) उघें एटले सामान्यें मोहनीय कमेने विषे ( उद एगणि विद्वार के०) उदयनां स्थानक नव होय, ते कहे हें ( एगंच के०) एक प्रकृति ं उदयस्थानक, (दोव के०) वे प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (चउरो के०) चार प्रकृति ं उदयस्थान , ( एनोएगाहिआदसु ोसा के०) अहींआंथी आगल एकेक प्रकृति अधिक उत्कृत दश लगें रीयें एटले पांचनुं उदयस्थानक, ह उदयस्थानक, सातनुं उदयस्थानक, आवनुं उदयस्थानक, नवनुं उदयस्थानक, ने दश ं उदयस्थान , ए नव उदयस्थान , पश्चानुपूर्वीयें देखाडीयें हैयें.

तिहां संज्वलननी चोकडीमध्यें ए ने उद्यें प्रथम ए नुं उद्यस्यान , एक पुरुपवेद अने चार संज्वलन कषायमांहेलो ोइएक कषाय, ए वे प्रकृतिने उद्यें बीजुं बेनुं उद्यस्थानक, पुंवेद अने संज्वलनो एक कषाय तथा हास्य अने रित, ए चार प्रकृतिने उद्यें त्रीजुं चार उद्यस्थानक. ए चारनी साथें नयमो ह्नीय लेतां पांच प्रकृतिने उद्यें चोणुं, पांचनुं उद्यस्थानक, ते मध्यें ज्ञुप्सानो उद्य वधारीयें, तेवारें व प्रकृतिने उद्यें पांचमुं बनुं उद्यस्थानक, ते मध्यें ज्ञुप्सानो चार प्रत्याख्यानीआ कषाय माहेलो गमे ते एक कषाय क्रेपवीयं, तेवारें सात प्रकृतिने उद्यें बर्जुं उद्यस्थानक, तेमाहे वली चार प्रत्याख्यानीआ कषाय माहेलो गमे ते एक कषाय क्रेपवीयं, तेवारें सात प्रकृतिने उद्यें बर्जुं उद्यस्थानक, तेमाहे वली अप्रत्याख्यानीआ कोधादि चार माहेथी एकनो उद्य क्यानक, तेमाहे वली अप्रत्याख्यानीआ कोधादि चद्यस्थानक. तेमाहे वली अप्रतानुबंधीआ चार कषायमाहेलो एक कपाय क्रेपवी विये, तेवारें नव प्रकृतिने उद्यें आवमुं नवनुं उद्यस्थानक, तेमाहे वली मिण्याल मोहनीयनो उद्य वधारीयें, तेवारें दश प्रकृतिने उद्यें नवमुं दशनुं उद्यस्थानक जाणाचुं. एटले सामान्य पणे उद्य स्थानकन्नुं विवेचन कसुं, विशेषधी सूत्रकार पो तेंज आगल कहेनो, तेथी अहींआं विशेष लख्युं नथी॥ इति समुच्चयार्थः॥ १ ३॥

हवे मोहनीय कमेना पंदर, सत्तानां स्थानक कहे वे.

अठय सत्तय ब इत, तिग इग एगाहि आ नवे वीसा॥ तेरस वारिकारस, इतो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥ श्रिम श्राव, सात, व, चार, त्रण, बे श्रने एक, ए सर्वने (एहिश्रान्वेवीसा के॰) वीशें श्रिधक करवा, तेवारें श्राविश, सत्तावीश, ववीश, चोवीश, त्रेवीश, वावीश, एकवीश, श्रने (तेरसबारि रस के॰) तेर, बार, श्रगीश्रार, (इत्तोपंचा इएगूणा के॰) श्रहींयांथी श्रागले पांच मांमीने तेमांथी एके णो करीयें एट ले पांच, चार, त्रण, बें श्रने एक, ए रीतें मोहनीयकमेने विषे सर्वे ली पंदर सत्तास्थानक होय. ते विवरीने लखीयें हैंथें.

सर्व मोह्नीय प्रकृतिनी सत्तायें छाहावीशनुं सत्तास्थानक, ते सम्यक्ख पामी ने पड्या होय, तेने होय, तेमांहेथी सम्यक्त मोहनीय चवेल्या पढी सत्तावीशतुं सत्तास्थानक, ते मांहेथी वली मिश्रमोहनीय उवेले उबीशनुं सत्तास्थानक, तथा अनादि मिच्यात्वीने पण एज स्थानक होय. वली ते पूर्वोक्त अंदावीशनी सत्तावाली जेवारें चार अनंतानुबंधीआ खपावे, तेवारें तेने चोवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते मांहेथी मिय्यात्व खपावे, तेवारें त्रेवीशनुं सत्तास्थानक, तेमांथी मिश्रमी ह्नीय खपावे, तेवारें बावीशनुं सत्तास्थानक, ते मांहेथी सन्यक्लमोह्नीय खपावे, तेवारें एकवीशनुं सत्तास्थानक, ए एकवीशनुं स्थानक ऋायिक सम्यक्टिएने होय. हवे ए आगलां स्थानक ऋपकने होय, ते कहे हे. तेमांहेथी अप्रत्याख्यानीआ चार छने प्रत्याख्यानी आ चार, एवं आत प्रकृति खपावे धके अनिवृत्तिकरण गुण गणाने त्रीन नागें तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, तेमांहेथी नपुंसकवेदने क्यें चोथे नागें वारनुं सत्तास्थानक, तेमाथी स्त्रीवेदने क्वयें पांचमें नागें छगीछारनुं सत्तास्यानक. तेमांथी हास्यादिक व प्रकृतिने क्यें वहे नागें पांचतुं सत्तास्थानक होय. तमांयी पुरुपवेदने क्यें सातमे नागें चारतं सत्तास्थानक, तेमांथी संज्वल न कोधने क्यें शावमे नागें त्रणतुं सत्तास्यानक, तेमांथी संज्वलनना मानने क्यें नवमे नागं वेतुं सत्तास्थानक, तेमांथी संज्वलनी मायाने क्यें सूक्षा संपराय एक संज्वलन लोननुं सत्तास्थानक जाणनुं॥ इति समुच्यार्थः॥ १४॥

संतरस पयडिठाणा, णि ताणि मोहरस हुंति पन्नरस ॥ वंधोदय संते पुण, नंग विगणे वहू जाण ॥ १५॥

श्रंषे-( नंतरमपयिद्वाणाणिताणि के० ) ए सत्तानी प्रकृतिनां स्थानक ते ( मोद्रम्म के० ) मोद्रनीयकर्मनी प्रकृतिनां ( हुंनिपन्नग्स के० ) पंद्र द्येय (पुण के०) वर्जा ( वंथोदयसंते के० ) ए वंथ, उदय श्रने मना स्थानकने विषे प्रत्येकें

संवेधें रीने (नंगविगप्पेबहूजाण के०) हिनी मेना नांगाना नेद घणा नि पजे, ते घणा नांगा हुं हुं हुं ते ने केतां थां सम्यकूप्र ारें जाण. ए शिष्य प्रत्यें । ए रीने गुरु हे हे के हे विष्य! तुं निल हिता १५॥

थ ोहनीयबंधस्थाने यथासंनवत्वेन नंगानाह ॥ तिहां हवे प्रथम ोह् नीय मेना बंधस्थान ने विषे यथासंनवपणे नांगा पजे, ते हे हे.

> व विसे च इग, वीसे सत्तरस तेरसे दोदो ॥ नवबंधगे वि इणिन, इबि अन परं नंगा ॥ १६॥

थे—( बब्बावीसे के 0) ावी प्रकृतिने 'धं नांगा छपजे,ते ावी रीतें के ए मिध्याल, शोल षाय, ए वेद ांदेलो ए वेद, हास्य अने रित थवा शो अने अरित ए बे युगल मांदेलुं ए युगल था नय ने छ प्ता, ए बावी है वंधें व नांगा थाय, ते देखाडे हे. ए हास्य ने रित बांधतां बावी नो बंध रे, ए प्रथ नांगो, बीजो ते ज हास्य ने रितने स्थानकें शो ने अरित बांधे, तेवारें बीजो नांगो. ए बे नांगा थया. ते बे नांगा प्ररुपवेद बंध साथें गणवा. वली ते ज विद्बंध साथें पण बे नांगा तेज लेवाय तथा तेमज नपुंसकवेद बंध साथें पण एज बे नांगा लड़्यें. ए ए वेदने बे बे ग्रुणा रतां ह नांगा थाय.

तथा (चन्नविसं केंग्) एकवीश प्रकृतिने बंधें चार नांगा होय, ते कहे हो. ते प्रवेक्ति बावीशना बंधमांहेथी एक मिण्यालनो बंध हीन करीयें, तेवारें एकवीश नो बंध थाय पण एटलुं विशेष जे हीं आं नपुंसकवेद टालीने बाकीना वे वेद मांहेलो एकेक वेदनो बंध कहेवो. ए एकवीशनो बंध, बीजे गुणगणे होय. तिहां पुरुषवेदें हास्य रित साथें एक नांगो तथा शोक रित साथें बीजो नांगो, वली ते हीज बे नांगा विदें पण बांधें माटें सर्व मली चार नांगा थाय. अहीं मिण्या लने नावें नपुंसकवेदनो बंध नथी तेथी तेना बे नांगा न होय.

(सत्तरसतेरसेदोदो के ) सत्तर छने तेर प्रकृतिना बंधे वे वे नांगा होय, ते कहे छे. पूर्वीक्त एकवीशमांथी छनंतानुवंधी छा चार कपायना बंधिवि छे दें सत्तरनो बंध ज्ञीने छने चोषे गुणवाणे होय. तेमांथी पण प्रत्याख्यानिछा चारनो बंधिवि छे दे, तेवारें देशिवरित गुणवाणे तेरनो बंध होय. तिहां प्रत्येकें वे वे नांगा होय, केमके मिश्रगुणवाणायी मांमीने छागले गुणवाणे स्त्रीवेदनो पण बंध नधी जेनणी नं तानुवंधिया कपायना चद्यने यानां स्त्रीवेद न बंधाय तेमाटें स्त्रीवेदना बंधयी चपना जे वे नांगा ते पण टखे बाकी मात्र पुरुषवेदें बांधवाना बे वे नांगा होय.

तथा (नववंधगेविष्ठणिर्त के०) नव प्रकृतिने बंधस्थानकें पण वे नांगा होयः तिहां संज्वलनना कपाय चार, हास्य अने रित, नय, जुगुप्ता अने पुरुषवेदें एक नांगो अथवा हास्य रितने स्थानकें शोक अने अरित ए युगल लक्ष्यें, तेवारें बीजो

नांगो छयवा हास्य रितने स्थानके शोक छने छरित ए युगल लड्यें, तेवारे बीजी नांगो ए वे नांगा प्रमत्त गुणवाणे होय एथी आगल शोक छने छरित, ए युगल नो वंध नथी परंतु हास्य छने रितनोज बंध हे तेमाटें अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण ए वे गुणवाणे नव प्रकृतिने वंधे एकज नांगो होय परंतु बीजो नांगो न होय

तथा (इक्किक्क अर्डपरंजंगा केंग) एथी उपर पंचादिक पांच बंधस्थानकने विषे पण अपूर्व करणनी पेरें एकेको जांगो होय. ए सर्व मली मोहनीय कर्मना दश वंध स्थानकें थइने एकवीश जांगा थाय ॥ इति समुज्ञ्यार्थः ॥ १६॥

छिषपामेव वंधस्थानानां मध्ये कियंत्युद्यस्थानानीत्याद् ॥ द्वे एज वंध स्था नकमां कयां कथां वंधस्थानकें केटलां केटलां चद्यस्थानक होय, ते कहे हे

दस वावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ नदय कम्मंसा॥ वाइअ नव सत्तरसे, तेरं पंचाइं अठेव ॥ १७॥

दय होय ने संज्वलन क्रोधने छद्यें एकनोज छद्य होय, तेमाटें अहीं अ प्रत्याख्यानीआ होधने छद्यें पो क्रोधनो छद्य होय. ते मानने छद्यें पण त्रणे माननो छद्य होय अने मायाने छद्यें पण त्रणे मायानो छद्य होय अने लो नने छद्यें पण त्रणे लोननो छद्य जाणवो ए क्रोध, मान, माया, अने लोन ना चार नांगा स्त्रीवेदना छद्य साथें गणवा बली स्त्रीवेदने स्थानकें पुरुपवेदनो छद्य होय, तेवारें ए चार नांगा पुरुप वेदने विपे पण पामीयें अने ए चार नांगा नपुंसक वेदने छद्यें एप पामीयें. एम सर्व मली वार नांगा हास्य अने तिने छद्यें जाणवा. तेमज वली हास्य अने रितने स्थानकें शोक अने अरितने छद्यें पण वार नांगा गणीयें. तेवारें चोवीश नांगा थाय.

श्रयवा एक मिथ्याल सातने उद्यें जहीयें तथा हास्यादिक एक श्रगज साथें पुरुपवेदें एक नांगो तथा शोकादि श्रगज साथें एक नांगो, एम वे नांगा पुरुपवेदें थाय. तेमज स्वीवेद साथें पण वे नांगा थाय श्रने नपुंसकवेद साथें पण वे नां गा थाय. एवं व नांगा क्रोधें थया श्रने क्रोधने स्थानकें मान जहीयें, तेवारें पण व नांगा थाय. तेमज माया साथें व नांगा तथा जोन साथें व नांगा,एम व चोक चोवीश नांगा थाय. ए सातने उद्यें मिथ्याल जहीयें,तेवारें नांगानी चोवीशी थइ.

तथा ए सातना उदय मध्यें नय, जुगुप्सा अथवा अनंतानुबंधीआ चार क पाय मांहेलो एक पाय, ए ए प्रकृति देथी एकेक प्रकृतिनो उदय क्षेपीयें, तेवारें आत प्रकृतिनो उदय थाय अहीं त्रण चोवीशी नांगानी थाय ते केम के ए सातना उदय मांहें नयनो उदय क्षेपी आतना उदय सहित गुणीयें तेवारें नांगानी एक चोवीशी थाय तथा ते सातना उदय मध्यें जुगुप्सानो उदय क्षेपी आतना उदय सहित गुणीयें, तेवारें नागांनी बीजी चोवीशी थाय अने ते सात ना उदयमांहे अनंतानुवंधीआनो उदय वधारीयें,तेवारें आतनो उदय थाय तिहां पण पूर्वली पेरें नांगानी त्रीजी चोवीशी थाय.

तथा मिथ्यात्वें अनंतानुवंधीआनो उदय तो अवस्य होय, तो सातनो उदय तथा नय, जुगुप्सा अने अनंतानुवंधीआ सहित आठनो उदय शा कारणे कह्यो ? तेने उत्तर, जे कोइएक जीव, सम्यक्दिए छतां अनंतानुवंधीआ चारने विसंयोज्या एटल ख पाव्या, ते खपाव्या छतां पण कालांतरें कोइएक वीजनूत मिथ्यात्वनी सत्तायें करी यली पण वंधाय तेने विसंयोज्या कहीयें अने जे खपाव्या कह्या होय, ते तो फरी वंधायज नहीं ए विसंयोज्या अने खपव्यानुं विशेष जाणवुं, हवे तेवी सामग्रीने अनावें कोइ

दय होय ने संज्वलन क्रोधने उद्यें एकनोज उद्य होय, ते हें अहीं आ प्रत्याख्यानीआ होधने उद्यें प्रण त्रणे हिया होय. ते मानने उद्यें पण त्रणे मानने उद्यें पण त्रणे मानने उद्यें पण त्रणे मानने उद्यें पण त्रणे मायाने उद्य होय अने लो नने उद्यें पण त्रणे लोननो उद्य जाणवो ए क्रोध, मान, माया, अने लोन ना चार नांगा स्त्रीवेदना उद्य साथें गणवा वली स्त्रीवेदने स्थानकें पुरुपवेदनो उद्य होय, तेवारें ए चार नांगा पुरुप वेदने विपे पण पामीयें अने ए चार नांगा नपुंसक वेदने उद्यें णप पामीयें. एम सर्व मली बार नांगा हास्य अने तिने उद्यें जाणवा. तेमज वली हास्य अने रितने स्थानकें शोक अने अरितने उद्यें पण वार नांगा गणीयें. तेवारें चोवीश नांगा थाय.

श्रयवा एक मिथ्याल सातने उद्यें जहीयें तथा हास्यादिक एक श्रगज साथें पुरुषवेदें एक नांगो तथा शोकादि श्रगज साथें एक नांगो, एम बे नांगा पुरुषवेदें थाय. तेमज स्त्रीवेद साथें पण बे नांगा थाय श्रमे नपुंसकवेद साथें पण बे नांगा थाय श्रमे नपुंसकवेद साथें पण बे नांगा थाय. एवं ह नांगा क्रोधें थया श्रमे क्रोधने स्थानकें मान जहीयें, तेवारें पण ह नांगा थाय. ते ज माया साथें ह नांगा तथा जोन साथें ह नांगा,एम ह चोक चोवीश नांगा थाय. ए सातने उद्यें मिथ्याल जहीयें,तेवारें नांगानी चोवीशी थइ.

तथा ए सातना उदय मध्यें नय, गुप्ता अथवा अनंतानुवंधीआ चार क पाय मांहेलो एक षाय, ए ए प्रकृति देशी एकेक प्रकृतिनो उदय हिपीयें, तेवारें आत प्रकृतिनो उदय थाय अहीं त्रण चोवीशी नांगानी थाय ते केम के ए सातना उदय मांहें नयनो उदय हेपी आतना उदय सहित गुणीयें तेवारें नांगानी एक चोवीशी थाय तथा ते सातना उदय मध्यें जुगुप्सानो उदय हिपी आतना उदय सहित गुणीयें, तेवारें नागांनी बीजी चोवीशी थाय अने ते सात ना उदयमांहे अनंतानुवंधीआनो उदय वधारीयें,तेवारें आतनो उदय थाय तिहां पण पूर्वली पेरें नांगानी त्रीजी चोवीशी थाय.

तथा मिथ्यात्वें अनंतानुवंधीआनो उदय तो अवश्य होय, तो सातनो उदय तथा नय, ज्ञुगुप्ता अने अनंतानुवंधीआ सिंहत आठनो उदय शा कारणे कह्यो ? तेने उ तरः जे कोइएक जीव, सम्यक्दिए ठतां अनंतानुवंधीआ चारने विसंयोज्या एट ले ख पाच्या, ते खपाच्या ठतां पण कालांतरें कोइएक वीजनूत मिथ्यात्वनी सत्तायें करी वली पण वंधाय तेने विसंयोज्या कहीयें अने जे खपाच्या कह्या होय, ते तो फरी वंधायज नहीं ए विसंयोज्या अने खपच्यानुं विशेष जाणनुं हवे तेवी सामग्रीने अनावें कोइ एक जीवें मिण्यालादिकने खपाव्यानो उद्यम न कस्रो ते जीव, कालांतरें मिण्या त्वें गयो तिहां मिण्यात्व प्रत्ययिया नणी मिण्यात्वें करी वली अनंतानुवंधीया चार कपाय बांधे, तेवारें बंधावितका लगें ते अनंतानुबंधी ानो उदय न होय अहीं आं कोइ कहेज़े के बंधकालनी आवितका पढीज ते प्रकृतिनो उदय होय,ते केम घटे, जे नणी ए अनंतानुवंधीआनो अबाधाकाल जघन्य तो अंतर मुहूर्तनो अ ने उत्कृष्टो तो चार हजार वर्षनो कह्यो है, तो अबाधाकाल नोगव्या विना केम वंधा वितका पठी एनो उदय होय ? तेनो उत्तर कहे हे. जे बंधसमयथी पण अनंतानु वंधीञ्चानी सत्ता लेखवायः बंधसत्ता जेवारें होय, तेवारें अनंतानुबंधीञ्चा पत्रवह थाय पतज्ञ एटले ते बंधाती प्रकृति मध्यें बीजी सजातीय प्रकृतिनां दल तथा रसनो संक्रम, तेनुं वाम जाणवुं. एटले जे प्रकृति, बंधन प्ररिणामें परिणम्यो जीव, ते प्रकृतिमध्यें बीजी सजातीय प्रकृतिनां दलीयां देपवीने बांधी प्रकृतिरूप पणे तेने परिणमावबुं, तेने संक्रम कहीयें. तेनुं स्थानक तेने पतजह कहीयें. ते माटें बंधाता अनंतानुवंधीआ मध्यें पण अणबंधाता एवा जे अप्रत्याख्यानावर णादिक वीजा कपाय, तेना दलीया संक्रमे, ते अनंतानुवंधीआपणे परिणमे एटले जेमांहे संक्रमे तेपणे परिणमें तेनो उदय, सं मावलिका थया पढ़ी उदयावलिका यें आवे तेमाटें अनंतानुवंधीनो बंधावितका पठी उदय कदीयें. अहीं आं कर्ं विरुद् नथी. ए वातआश्री विशेष कम्मपयडीयकी जाणवुं तेमाटें मिथ्याल य णगणे पण वंधसंक्रमावितका लगें तो अप्रत्याख्यानादिक त्रण कषायनोज उ दय होय, केमके एक वेदातें जेटलानो जे ग्रुणगणे जदय होय तेटला सर्व समा न जातीय माटें तिहां वेदाताज कहीयें जेमाटें कोधादिक चार, परस्परें विरुध वे माटें ते मांहेलो एकनोज समकालें जदय होय परंतु तिहां एक अनंतानुवंधीक्रोध वेदतां सजातीयपणा माटें अप्रत्याख्यानादिक वीजा त्रणे क्रोध समकालें साथेंज वेदाय प्रंतु तेनी साथें ते समयें वीजा मानादिक न वेदाय तेमाटें पूर्वीक प्रकारें मिष्यात्वें पण वंधसंक्रमावितका पढी अनंतानुवंधिआनो चद्य होये.

हवे ए सात प्रकृतिना उदय मध्यें नय अने जुगुप्सा, ए वे प्रकृतिनो उदय वधारीयें, तेवारें नवनो उदय याय. अहीं पण पूर्वली पेरें नांगानी एक चोवीशी याय तथा ते सातमध्यें नय अने अनंतानुवंधीआनो उदय मेलवीयें, तेवारें पण नवनो उदय याय. अहीं आं नांगानी वीजी चोवीशी याय तथा ते सातमध्यें छ गुप्ता अने अनंतानुवंधी, ए वे प्रकृति मेलवतां पण नवनो उदय याय. तिहां

नांगानी त्रीजी चोवीशी थाय ए नवने उद्यें सर्व जी नांगानी ए चोवीशी थाय तथा ए मिथ्याल, बीजुं नय, त्रीजी जुगुप्ता, चोछुं हास्य, पांचमुं रित, अथवा एने स्थानकें शो अने रित पण जइयें उद्यो ए वेद हिलो एक वेद,तथा अनंतानुबंधीआदिक चारे षाय, एवं दशनुं उद्यस्थान जेवारें होय, तेवारें पण पूर्वजी पेरें नांगानी ए चोवीशी थाय एम बावीशना बंधें सातनुं, आठ ं, नवनुं, दश ं,ए चार उदय स्थानकें सर्व संख्यायें आठ चोवीशी नांगानी थाय.

तथा (नवइगवीसेसत्ताइ के०) "एकविंशतिवंधे सप्तादीनि नव पर्यतानि त्रीणि उदयस्थानानि नवंति." एटले ए वीश प्रकृतिने वंधें सात ादें देइने नव लगें त्रण उदय स्थान होय. तिहां प्रथम ए युगल, त्रण वेद ांहेलो ए वेद,चा ए षाय ांहेला होधादि ए षायना चार नेद, एम सात प्रकृतिने उदयें पूर्वेली पेरें नांगानी ए चोवीशी थाय. ए सातना उदयने नयना उदय सहित कर तां खातनो उदय थाय. तिहां पण नांगानी एक चोवीशी थाय तथा जुगुप्सानो उदय मेलवतां पण खातनो उदय थाय. तिहां पण नांगानी एक चोवीशी थाय. तथा नय खने जुगुप्सा, ए वे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवतां नवनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वेली पेरें नांगानी एक चोवीशी थाय. एम एकवीश प्रकृतिने वंधं सा स्वादन ग्रणवाणाने विषे त्रण उदय स्थानकें थइ नांगानी चोवीशी चार थाय.

श्रहीं सास्वादनना बे जे दर्ने एक उपश्रम श्रेणिगत, बीजो श्रश्रेणीगत, तिहां श्र श्रेणीगतने विषे तो ए त्रण उदयस्थान होय ने श्रेणीगतने विषे बे श्राचा यंना आदेश जाणवा, ते कहे हे. एक जे नंता बंधीश्राने उपश्रमावीने श्रेणी करे श्रेन श्रेणीथी पडतो सास्वादन ग्रणवाणुं स्पर्शे, तेने मतें तो ए पूर्वें कह्यां ते हीज त्रण उदयस्थानक जाणवां. श्रेने जे श्राचार्य श्रनंतानुवंधीश्रा चारनी वि संयोजनायें श्रेणीनो प्रारंन माने हे, तेने मतें श्रेणीथी पडतां श्रनंतानुवंधीश्रानी सत्ताने श्राचांवें श्रानी प्रारंन माने हे, तेने मतें श्रेणीथी पडतां श्रनंतानुवंधीश्रानी सत्ताने श्रानांवें श्रानां जानुवंधीश्राना उदय रहित सास्वादन पणुं न घटे जे नणी "श्रम्स सासणनावोन नवइ,, एम चूर्णिकारनुं वचन हे माटे. श्रने जो सम्यक्वधी पड्यो ते ज्यां सुधी मिथ्याल नूमीने विषे नथी पहोतो तेना वचला कालमां श्रनं तानुबंधीश्राना उदय विना पण सास्वादन ग्रेणवाणुं पामीयें, एम कहियें तो तिहां ह प्रकृतिनो उदय मान्यो जोइयें, तेवारें एकवीशने वंधें हथी मांमीने नव लगेंना चार उदयस्थानक मान्यां जोइयें, तेवारें तो तिहां नांगानी चोवीशीपण श्रा हमानवी, जोइयें ते छहीं सूत्रकारें कोइ कारणे मानी नणी ते जणी एने तें श्रेणीयी प

हवे (ठाइअनवसत्तरसे कें) "सप्तद्शबंधस्थानके षडादीनि नव पर्यतानि च लारि उदयस्थानानि नवंति" एट से सत्तर प्रकृतिने बंधें हिं देइने नव लगें चार उदयनां स्थानक होय. अहीं आं सत्तरनों बंध त्रीजे तथा चोथे गुणवाणे होय, ति हां जे मिश्र गुणवाणे सत्तरनों बंध होय, तेने विषे सात, ाव ने नव, ए त्रण उ दय स्थानक होय एट से ए हि श्राहिनीय, बे युगल मां हे खुं ए युगल, त्रण वेद मां हे लो एक वेद अने अनंता नुबंधी आ विना शेष ए षायनो एक तो नेद, ए सा त प्रकृतिनो उदय, मिश्रगुणवाणे होय. इहां पूर्वली पेरें नांगानी चोवीशी एक याय तथा ए सातनी साथें नय मेलवतां । वने उद्यें पण नांगानी चोवीशी एक याय तथा पसातनी साथें नय मेलवतां । वने उद्यें पण आवने उद्यें नांगानी एक चोवीशी थाय तथा नय अने छ प्सा बे सामटी मेलवतां नवने उद्यें पण नांगानी चोवीशी थाय तथा नय अने छ प्सा बे सामटी मेलवतां नवने उद्यें पण नांगानी चोवीशी थाय. एवं मिश्रगुणवाणे सत्तर बंधें नांगानी चार चोवीशी थाय.

तथा चोथे गुणुगणे सत्तरना बंधें ह, सात, आव अने नव, ए चार उद्यनां स्थानक, हाथिक सम्यक्दृष्टिने होय. तिहां मिश्रने जे सातनो उदय कह्यो, तेमध्यें थी मिश्रमोहनीय विना चोथे गुणुगणे हनो उदय छेखवतां नांगानी चोवीशी ए क थाय, ते ह प्रकृतिना उदय मध्यें नय, जुगुप्ता तथा सम्यक्त्व मोहनीय ए ए केकनो उदय मेलवतां त्रण प्रकारें सातनो उदय थाय. तिहां एकेका नेदें एकेकी नांगानी चोवीशी थाय, तेवारें सातने उद्यें त्रण चोवीशी नांगानी थाय.

तया ते वना उदयमां हे नय अने छंगुप्ता अथवा नय अने वेदकसम्यक्त मो हनीय अथवा छगुप्ता अने वेदक सम्यक्त्वमोह्नीय ए रीतें वे वे प्रकृति सामरी नेलीयं. तेवारें त्रण प्रकारें आठछुं उदय स्थानक थाय तिहां पण प्रत्येकें नांगानी एकेकी चोवीशी गणतां त्रण चोवीशी नांगानी थाय. अहीं सम्यक्त्वमोह्नीयना जे नांगा, ते वेदकसम्यक्दृष्टिने जाणवा ने क्षायिक तथा उपशमसम्यक्षृष्टिने सम्यक्त्वमोह्नीयनो उदय नथी, तेनणी तेने न जाणवा तथा ते वना उदय मध्यें नय. छगुप्ता अने वेदकसम्यक्त्वमोह्नीय, ए त्रणे प्रकृतिनो उदय सामरो मेल वियें. तेवारें नव प्रकृतिनो उदय थाय.तिहां पण एक चोवीशी नांगानी थाय.एम सर्व मली चोये गुणवाणे आठ चोवीशी नांगानी थाय. ते मध्यें चार क्षायिक तथा उपशमसम्यक्ष्टिने लेवी तथा चार क्षायोपशमिक सम्यक्ष्टिने मिश्रनी पेरें लेवी.

प्रमत्त, अप्र त अने अपूर्व रण, ए त्रण ग्रणगणो नव प्रकृतिना बंधस्थानकें चारनो उदय आदें देइने उत्क्रष्टुंतो सात ं उदयस्थान होय ए नाव. तिहां संज्वलना क्रोधादिक मांहेलो एक षाय, ए वेद ांहेलो ए वेंद, हास्यगुण ल अथवा शोकगुगल, एवं चारनो उदय क्रायि तथा उपश सम्यक्रृहिने ध्रुव होय ते माटें अहीं आं नांगानी चोवीशी ए थाय. ते चार मध्यें नय, ग्रुष्ता तथा सम्यक्ल ोह्नीय, ए त्रण प्र ति दिली एके नेलतां ए प्रकारें पांचनो उदय थाय. तिहां नांगानी चोवीशी त्रण थाय. ते चार ध्यें नय ने अग्रप्ता ए बे, अथवा नय अने सम्यक्ल ोह्नीय ए बे, अ वा ग्रुप्ता ने सम्यक्लमोह्नीय ए बे, ए वे वें प्रकृतिनो उदय मेलवीयें, तेवारें त्रण प्रकारें वनो उदय थाय. तिहां पण नांगानी चोवीशी त्रण थाय तथा ते चार मांहे नय, ज्रुप्ता ने सम्यक्ल ोह्नीय, ए त्रणे प्रकृतिनो उदय सा टो मेलवीयें, तेवारें सात प्रकृतिनुं उदयस्थान थाय, तिहां नांगानी चोवीशी ए थाय एवं नवने वंधें चार उदय स्थानकें थइने आठ चोवीशी नांगानी थइ, तेमांहेली चार चोवीशी क्रायिक अने औपश्मिक सम्यक्रहिने होय तथा चार चोवीशी वेदक सम्यक्रहिनें होय ए उठे सातमे अने आठमे ग्रुणवाणे होय.

तथा (पंचिवहबंधगेपुण के०) वली पांच प्रकृतिना बंधने विषे ( उद्वे इएहं मुणेश्रवो के०) बे प्रकृतिनुं एकज उद्यस्थानक जाणवुं. ते श्रावी रीतें के चार संज्वलनमांहेलो एक तेध श्रथवा मान श्रथवा माया श्रथवा लोन होय; श्रने त्रण वेद मांहेलो एक वेद, ए रीतें बें प्रकृतिनुं उद्यस्थान क होय. श्रहींश्रां नांगा बार थाय जे नणी श्रहींश्रां हास्यादिकनो उद्य नथी मा दें नांगानी चोवीशी न थाय. मात्र चार कपायने त्रण वेद साथें गणतां बार नांगा थाय. ए बार नांगा नवमा गुणवाणाना पांच नाग मांहेला पहेले नांगें होय॥ १ ए॥ हवे श्रागले वंधस्थानकें उद्य स्थानक कहे हो.

इतो च वंधाइ, इक्किकुद्या हवंति सब्नेवि॥ वंधो चरमेवि तहा, दया नावे विवा हु ॥ १ए॥

श्रिये ( इत्तो के ) श्रहीं श्रां पांचना वंधस्थानकथकी श्रागल हवे ( चडबं धाइ के ० ) चतुर्विधादिक एटले चारनो वंध, त्रणनो वंध, वेनो वंध श्राने एकनो वंध, ए चार वंधस्थानकं ( इिक्क इयाहवंतिसबेवि के ० ) एकेक प्रकृतिनुंज उद्य

स्थान सर्व वंधस्थान ने विषे होय. ते के के पुरुष वेदनो वंध टखे पठी चार संज्वल नोज वंध होय पुरुष वेदना वंध साथें चदय पण टखे ते हों तिहां चतु विध वंधें एकोदयें चार जांगा होय जे जणी हिं संज्वलना पाय मांहेलो होए ने संज्वलना होथनोज चद्य होय. होए ने संज्वलना माननोज चद्य होय, होए ने संज्वलना होयानोज चद्य होय छने कोइएकने संज्वलना लो जनोज चद्य होय. एम चार जांगा, चद्यना छनिवृत्तिकरणने बीजे जांगें होय. छ हीं छां कोइए छाचार्य, चतुर्विध बंधने सं कालें ए वेद होता ए वेद होता ए वेद होता ए वेद साथें गुणतां बार जांगा हि होद्यना छहीं छां पण थाय तथा पंच विध बंधें पण हि होदयना बार जांगा थाय. एम हिकोद्यना चोवीहा जांगा प्रथ म कालें होय. ते पठी चतुर्विध वंधे एकोदयना चार जांगा होय.

तेवार पठी संज्वलना तथिने उन्नेदें अतिवृत्तिने त्रीजे नागें त्रिविध बंध होय. तिहां एकनो उदय होय, तेना नांगा त्रण उपजे, तेवार पठी चोथे नांगे बेने वं धें संज्वलन माया तथा लोन, ए बे मांहेला ए ने उद्यें बे नांगा होय तथा एक संज्वलन लोनने एक बंधस्थानकें एक संज्वलन लोननो उदय होय तेनो एक नांगो नवमा गुणवाणाना पांचमा नागें होय.

हवे वंध विना मात्र उदयनोज एक नांगो थाय, ते कहे हे. (बंधोचरमेवितहा के o) मोहनीयना बंधने अनावें पण सुद्धा संपरायग्रणवाणे एक संज्वलनालोन इं उदयस्थानक होय. तिहां एक नांगो जाणवो एम चारने बंधस्थानकें नांगा चार, त्रणने बंधस्थानकें नांगा त्रण, बेने बंधस्थानकें नांगा बे, एकने वंधस्थानकें नांगो एक, तथा बंध सून्य करतां नांगो एक, एवं अगीआर नांगा एकने उद्यें घया। अहीं आं जोपण संज्वलना कोधादिकना उदयमांहे विशेष नथी तो पण बंध स्थानकें विशेषें करी विशेष जाण वुं

पढी ( उद्यानावेविवाहुका के ) उदयने छनावें पण उपशांतमोहें उपशांत कपायनी छपेक्सयें मोहनीयनी सत्ता होय. ते पण एक नांगो प्रसंगें कह्यो परंतु छहींछां वंध छने उदयना संवेध मांहे सत्तानो नांगो कहेवो. ते निष्कारण हे तेथी न कह्यो छने हीणमोहें तो सत्ता पण न होय॥ इति॥ १ए॥

श्रय दशादिषूदयस्थानेषु यावंतोनंगाः स्युस्तानाहः हवे दशादिक पश्रातुषू वींयें एक पर्यंत उदय स्थानकने विपे जेटला नांगा होय, ते कहे हे.

इक्कग कि रस, दस सत्त च इक्कगंचेव ॥ एए च वीस गया, बार इगि म्मि इक्कारा ॥ तथा मंतांतरे, च विशेष इगिक्कमिकारा॥ २०॥

अर्थ-अहीं आं उदयने स्थानकें यथा में संख्या जोडवी. तिहां दशने उदयें (इक्सम के ) एक चोवीशी, नवने उद्यें (व के ) व चोवीशी, आवने उद्यें (इकारस के ) अगीआर चोवीशी, सातने उद्यें (दस के ) दश चोवीशी, उने चद्यें (सत्त केण) सात चोवीशी, पांचने चद्यें (चच केण) चार चोवीशी, चा रने उद्यें (६ गंचेव के०) निश्चें ए चोवीशी नांगा होया (एएच उवीसगया के॰ ) ए सर्व मलीने चालीश चोवीशी नांगा थाय. ए नांगा उपजाववानी नाव ना पूर्वें कही है, तेम जाएवी था (बारड़ग के ) बेने उद्यें बार नां गा होय छने (इ म्मिइ रा कें) एकने उद्यें गी र जांगा होय, ते केम? जे चारने बंधें चार, त्रणने बंधें ए, बेने बंधें बे अने ए ने बंधे एक, तथा अवंधें एक, एवं अगीआर नांगा याय. तथा अन्य ।चार्यने तें (चववीसङ्ग के 0) बेने उदयें एक चोवीशी नांगा उपजे एट छे । र नांगा पांचने बंधें अने बे ने उद्यें तथा वार नांगा चारने बंधे अने बेंने उद्यें, एम चोवीश नांगा उपजे अने (इक्कमिकारा के º) एकने बंधें अगीआर नांगा उपजे, ए तांतर कहां. १ º

एतेपामेव जंगानां विशिष्टसंख्यां पदसंख्यां च स्वमतेन । इवे एज नांगानी विशिष्टपणे संख्या अने तेना पदनी संख्या पोताने मतें कहे है.

नव तेसीइ सएहिं, दय विगणेहि मोहिच्या जीवा ॥ च्य णुत्तरि सीञाला,पयविंद सएहिं विन्नेचा ॥२१॥ च्रथवा मतांतरेण नंग संख्या पदसंख्यामाह ॥ नव पंचाण सए, दय विगणेहि मोहि च्या जीवा ॥ च्यत्रणत्तरि एग्रत्तरि,पयविंद सएहिं विन्नेच्या ॥ १२ ॥

अथ-अहीं आं दश,नव, आव, सात, व, पांच अने चार, ए सात जदयस्यानके पड़ने चालीश चोवीशी नांगानी लाधी. ते चालीशने चोवीश गुणा करीयें, तेवारें (ए६०) याय. तेमध्यें 6िकोदयना वार अने एकोदयना अगीआर, एवं त्रेवीश नां गा मेलवीयं, तेवारें (नवतेसीइसएहिं के ०) नवज़ेंने ज्याशी जांगा थाय. ए मोहनीय

मेना ( उद्यविगणे हि । हि आजीवा के ० ) उदयने विषे नव वि हपें रीने स्व मतें ( ए० ३ ) नांगा थया, तेने विषे सर्व संसारी जीव हिया ं एए। पड्या छे. ह्वे पद्संख्यांक हे छे. ए ( ए० ३ ) नांगाने विषे ( अजणुत्तरिसीआलापयिं दसएहिंवि आ के ० ) ( ६ ए४ ७ ) एटला पदना वृंद एटले समूह जाएवा. एट ले एके ती प्रकृतिनुं ना ते एके ं पद हीयें. ते दश प्रकृतिने उद्यें एकेका नांगा हि दश दश पद होय, नवने उद्यें एकेका नांगा हि नव नव पद होय. एम यावत ए ने उद्यें एके । नांगा हि एकज पद होय तेमाटें दशोदयना नांगा दश ए। रीयें अने नवोदयना नांगा नव गुणा रीयें एम सर्वने गुणा रि ते ं ऐक्य ति यके ( ६ ए४ ७ ) पद, स्व तें कह्या एटले जिहां वे प्रकृतिनें उद्यें बार नांगा क । छे, ते स्व तें जाणवा.

श्रने मतांतरें बेने चद्यें चोवीश नांगा ह्या है। तेने तें एकतालीश चोवीशीना (एए४) तथा एक प्रकृतिना चद्यना गीश्रार नांगा मेलवतां (एए५) थाय. एटला हिनीयकर्मना विकल्पें रीने सर्व संसारी जीव संसारने विषे मुं इ रह्या है. हवे एना (६ए९१) पदवृंद प्रकृतिसंख्या थ, ते करी देखाडे हे.

दशने उद्यें एक चोवीशी नांगानी है, तेने दश ग्रणा करतां दश चोवीशी थाय, तथा नवने उद्यें ह चोवीशीनी चोपन थाय, तथा खाहने उद्यें खगीआर चो वीशीनी अहाशी थाय, था सातने उद्यें दश चोवीशीनी सीचेर थाय, तथा हने उद्यें सात चोवीशीनी बेंतालीश थाय,तथा पांचने उद्यें चार चोवीशीनी वीश था य, तथा चारने उद्यें एक चोवशीनी चार थाय,तथा बेने उद्यें एक चोवीशीनी वे थाय, एम (१ए०) चोवीशी सरवाले नांगानी थाय तेने चोवीश ग्रणा करतां (६ए६०) थाय तेमध्यें एकोदयना अगीआर नेलीयें, तेवारें (६ए९१) पदवृंद संख्या थाय. तेने विषे सर्व संसारी जीव मोद्या मुंगाणा है.

ए सर्व उद्यने नांगे जघन्यथी तो एक समय काल अने उत्कृष्टो तो अंतर सु हूर्न प्रमाण काल होय, जे नणी वेद तथा हास्य युगलमांहेलो एक अंतर सुहू र्न पठी फरे, ते पंचसंग्रहनां मूल तथा टीकामांहे कह्यो ठे, माटें अंतरसहूर्न उपरांत नांगो अवञ्य फरे अने एक समयतो वंधस्थानक फरवानी तथा स्वरूपें उद्यांतर करवानी अपेक्षायें जाणवो एटले वंधस्थानकना नेद्धी अथवा गुणवा णाना नेद्धी अथवा स्वरूपथकी अवश्य अन्य उद्यें अन्य नागांतरं जीव जाय. ॥ इतिगाथा ह्यार्थः ॥ ११ ॥ ११ ॥ एम वंधस्थानकें उद्य स्थानकनो संवेध कह्यो. ॥ अथ नास्थानैः ह संवेध हि ॥ हवे स । स्था है वेध हे वे. तिन्नेवय बावीसे, इगवीसे च्य वीस सत्तरसे ॥ च्रेव तेर नव बं, धएसु पंचेव ह्याणि॥ २३॥

अर्थ- (ति वयबावीसे के०) ावीशने बंधे अहावी, सत्तावीश ने वही श, ए त्रण सत्तास्थानक होय. जे नणी बावीश प्रकृतिनो बंध, मिण्यालीने होय तिहां ७-ए-ए-१०-ए चार उदय स्थानक होय ते ध्यें सातने उदयें तो एकज अहावीशनुं सत्तास्थान होय, जे नणी सातनो उदय तो नंना बंधीआने अनावें होय अने ते तो जेणे सम्यक्र्दृष्टि वतां अनंतानुबंधिआ उवेद्या होय ते जे वारें मिण्यात्वें जाय, तेवारें वली मिण्यात्वप्रत्यिक अनंतानुबंधिआ चार बांधवा मांसे, ते मिण्यात्वीने बंधावितका तथा संक्रमावितका लगें नंतानुबंधिआना उदय रहित सातनो उदय पामीयें, तिहांतो तेने निश्चें अहावीशनीज सत्ता होय.

तथा आत प्रकितना उदयस्थानकें आहावीश, सत्तावीश ने विशेश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे नंतानुबंधीआ रिहत ाननो उदय होय तिहां तो प्रवेंक्त यि कियें एक अहावीशनुं सत्तास्थान होय अने अनंता बंधी । सिहत जे आतनो उदय होय तेने विषे त्रण सत्तास्थानक होय तेमध्यें जिहां जों सम्यक्त मोहनीय उवेव्युं नथी तिहां जों आहावीशं सत्तास्थान जाणवुं ने सम्यक्त उवेद्या पठी सत्तावीशनुं सत्तास्थानक तथा मिश्रमोहनीय उवेद्या पठी विश्वीशनुं सत्तास्थानक अथवा अनादि मिथ्यात्वीने पण विश्वीशनुं सत्तास्थानक होय. एमज नवने उदयें पण एहिज त्रण सत्तास्थानक कहेवां ने दशनो उदय तो अनंता नुवंधीआ सहितज होय तो तिहां पण ए त्रण सत्तास्थानक कहेवां.

(इगवीसेश्राह्मीस के॰) एकवीशने बंधें सात, श्राह अने नव, ए त्रण उद्य स्थानकें पण एक अञ्चावीशनुं सत्तास्थानक होय जे नणी ए एकवीश प्रकृति नो वंध सास्यादन ग्रणवाणे होय अने सास्यादनपणुं तो श्रीपशमिक सम्यक्त व मतां होय तेणे उपशम सम्यक्त्वें करी मिष्यात्वना दिनकनो एक सम्यक्त्व, बीजो मिश्र अने त्रीजो मिष्यात्व, एवा त्रण पुंज कह्या तेमाटें त्रणे द्रीन मोहनीयनी सत्ता, सास्यादने पामीयें तेथी श्रष्टावीशनुं एक सत्तास्थानक एकवीशने बंधें होय.

(सत्तरसेठचेव के॰) सत्तरने वंधें ठ सत्तानां स्थानक होयः ते छाविश, सत्ता वीग. चोवीश. त्रवीश, वावीश छने एकवीश, ए ठ सत्तास्थानक होयः तिहां ए सत्तर प्रकतिन्नुं वंधस्थानक त्रीजे छने चोयें ग्रुणवाणे होय तिहां ह, सात, छाव, छने नव, ए चार चद्य स्थानक सम्यक्द िने होय तिहां ह ं चद्य स्थानक क्षायिक तथा छोपशिम सम्यक्द िने होय. तिहां क्षायिक सम्यक्द िने एकवीश प्रकतिनुं सत्तास्थान होय जे नणी छनंतानुवंधी चार तथा दर्शन ोहनीय ए, ए सात प्रकृतिने क्यें क्षायि सम्यक्त होय हे तेमाटें. तथा छोपशिमक सम्यक् दृष्टिने प्रथ यंथि नेदी छोपशिम पामतां तथा चपशमश्रेणियें पण जेणे छनं तानुवंधी छा चपशमाच्या होय तेने छावीशनुं सत्तास्थानक होय छने जे छनंता बंधी । विसंयोजीने श्रेणि छारंने तेने चोवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थान होय. एम वे सत्तानां स्थान , उपशमसम्यक्द िने होयः एट हो सत्तरने वंधे छ ने च चद्यें सर्व मली १०-१४-११ ए त्रण सत्तास्थानक ध्यां.

मिश्रदृष्टिने सात, श्राव श्रने नव ए त्रण उद्यें श्राविश, सत्तावीश, श्रने चो वीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे श्राविशनी सत्तावालो मिश्रगुणवाणुं पिडवजे तेने श्राविशनी सत्ता होय श्रने जेणे मिश्याली थकां सम्यक्ल उवेखुं श्रने मिश्रपणुं हजी उवेजवा मांमधुं नथी ते सम्यक्लज उवेजीने मिश्यालथी नि वित्तेन फरी परिणामवशें मिश्रें श्रावे. तेने सत्तावीशनुं सत्तास्थानक होय, तथा जे सम्यक्ष्टि उतां श्रनंतानुवंधीश्रा विसंयोजीने तथाविध परिणामने वशेंमिश्रें श्रावे, तेने चोवीशनी सत्ता होय. ए चोवीशनी सत्ता, चारे गतिने विपे पामीथें,जे माटें चारे गतिना सम्यक्ष्टि श्रनंतानुवंधिश्रानी विसंयोजना करे,ए विपे कम्मपयि मध्यें एम कह्यं हो, के "चग्रश्शा प ता, तिश्चिति विसंयोजना करे,ए विपे कम्मपयि मध्यें एम कह्यं हो, के "चग्रश्शा प ता, तिश्चित्तं विसंयोजना करे,ए विपे कम्मपयि हमध्यें एम कह्यं हो, के "चग्रश्शा प ता, तिश्चित्तं विसंयोजना करे,ए विपे कम्मपयि हमध्यें एम कह्यं हो, के "चग्रश्शा प ता, तिश्चित्तं विसंयोजना करे विश्वात्ता होविरिति, त्रीजा सर्वविरिति, ए त्रणे श्रनंतानुवंधिश्चानी विसंयोजना करे ते वली परिणामने वशें मिश्रें पण श्रावे, तेथी ए नांगो चारे गित मध्यें पामीथें. तथा चोथे ग्रणवाणे सत्तरने वंधें सातने उद्यें श्रावीश, चोवीश, चोवीश, वेवीश, वा

वीश ने एकवीश, ए पांच सत्तानां स्थानक होय तिहां श्रध्नवीशनुं श्रोपशिम तथा वेदक सम्यक्टिं होय श्रने श्रनंतानुवंधिश्रा विसंयोज्या पठी चोवीश नुं सत्तास्थानक पण ए वेहुने होय, तथा मिथ्यालने क्यें त्रेवीशनुं सत्तास्थानक श्रमे मिथ्याल तथा मिश्र, ए वेना क्यें वावीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, ए वे, वेदकसम्यक्टिं एनेज होय, ते केमके? श्रनंतानुवंधी चार तथा मिथ्याल श्रमे मिश्र, ए ठ प्रकृति खपावीने सम्यक्ल मोहनीय खपावतो तेने चरम श्रासं वर्त्त

तो कोइएक पूर्वबदायं जीव तिहां रीने चारे गित बंहेजी नावे, ते ए गित मांहे जइ उपजे, तेवारें बावीशनी सत्ता, ारे गित ध्यें पामीयें ने ए वीशनी सत्ता तो क्षायि सम्यक्ट ष्टिनेज होयः

तथा छातने उद्यें तो मिश्रग्रेणगणे सातना उदयनी पेरें घावीश, सत्तावी श छने चोवीश, ए त्रण सत्तास्थान होय, छने छविरतिसम्यक्दि ने तो जेम सातने उद्यें पांच सत्तास्थान ं, तेप्र रिंज पांच सत्तास्थानक छातने उद्यें पण कहेवां तेमज नवनो उदय पण छविरति वेद सम्यक्दि होय. ते क्लायोपशिमक सम्यक्दि माटें एकवीश छने सत्तावीश, ए बे सत्तास्थानक विना श्रेप १०-१४-१३-११ ए चार सत्तास्थान होय. ते प्रवेती पेरें नाववां.

तथा ( तेरनववंधएसु के ० ) तेरने बंधें छने नवने बंधें प्रत्येकें प्रत्येकें (पंचे वराणाणि के॰) पांच पांच सत्तानां स्थान होय, हावीश, चोवीश, त्रेवीश, वावीश अने एकवीश, ए पांच सत्तानां स्थान होय. तेमांहे तेरना बंधक देश विरति होय, ते वे नेदें हे. एक तिर्थंच, बीजा म ष्य, तेमध्यें तिर्थंचने पांच, व, सात छने छाव, ए चार उदय स्थानकें छाविश छने चोवीश, ए वे सत्तानां स्थानक होय. तिहां पांच, व अने सातने चदयें औपशमिक सम्यक्दिष्टिने अ हावीशनी सत्ता होय ते कोइएक अंधि नेदीने सम्यक्त सिह देशविरति पणुं पडिवजे तेनी अपेक्सयें लेवी जे नणी शतकचूणि मध्यें एम कहां वे के, " वव समसम्मदिहि, अंतरकरऐवि चकोइ देसविरइकोइपमत्तापमत्त नावंपिगञ्चइ सासाय णोपुण किमविलह्इ" तथा द्वायोपशमिक सम्यक्टिष्ठि तिर्धेचने ढ, सात छ ने आत, ए त्रण उद्यें चोवीशनी सत्ता होय ते अनंतानुबंधीआ चारनी वि संयोजना पूर्व चार गित मध्यें कही है, ते अपेक्सयें खेवा अने बीजां त्रेवीश, बा वीश अने एकवीश, ए सत्तास्थानक देशविरति तिर्थचने न होय, जे नणी बावी श् अने त्रेवीश, ए वे सत्तास्थानकतो द्वायिक सम्यक्त उपजती वेलायें होय ते तो तिर्यचने न उपजे छने इशिक सम्यक्लनो धणी जेणे पूर्वे तिर्यचायु वांध्यं होय तेथी ते तियंच थाय तो पण ते असंख्याता वर्षायु वाला तिर्थच मध्यें अ वतरे, तेने तो देशविरतिपणं होयज नहीं तथा संख्यातवर्पनं तिर्थचायु वांध्या प्रा तो ते नवें ऋायिक सम्यक्त पामेज नहीं तेथी तिर्थंच देशविरतिने तेरने वं धं एकवी अनुं सत्तास्थानक न होय. यडकं चूर्णी "एग वीसातिरिकेस संज

यासंजयेसु न संनव ।। कहं नाम्इ संखिच वाता उएसु तिरिकेसु खायगलम्म दिहि न उववच असंखिच वाता उएसु उववच इ तस्त देसविर इनिज्ञति. "

तथा देशविरित मनुष्यने पांचने उद्यें एकवीश, चोवीश अने अछावीश, ए त्र ए सत्तास्थानक होय तथा उने अने सातने उद्यें पांच सत्तास्थानक होय अने आठ ने उद्यें ए वीशनां सत्तास्थानक विना बा तिनां चार सत्तास्थानक होय, जे नणी आ उनो उद्य, सम्यक्त्वमोहनीय साथें होय तेमाटें तिहां एकवीश प्रकृतिनुं सत्तास्था नक न होय बाकीनां चार होय ते वेदक सम्यक्त्वी म ष्यने देशविरित गुणगणे होय. एमज नवने बंधें प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणगणे चारने उद्यें अछावीश, चोवी श अने एकवीश, ए ए सत्तास्थानक होय तथा पांचने उद्यें अने उने उद्यें तो जे देशविरितयें कह्यां तेहिज पांच सत्तास्थानक होय अने सातने उद्यें ए एकविशना सत्तास्थानक विना किनां चार सत्तास्थानक होय. अहींआं प ए पूर्वोक्त युक्ति रवी॥ इति स याथेः॥ २३॥

पंचिवह चनुविहेसु, क सेसेसु जाण पंचेव॥ पत्ते अं पत्ते अं, चतारि अ बंधु वुहेए॥ १४॥

तथा चारने वंधें अहावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक तो उपशम श्रेणीयें पूर्वेली पेरें जाएवां. वाकीनां त्रण सत्तास्थानक क्षपकश्रेणीयें हो

य तेनुं विशेष कहे है. तेमध्यें नेइए जीवें न्युसक वेदोद्यें वर्तता कृपकश्रेणी मांगी ते स्त्री अने नपुंसक ए बे वेद- लाशें सम कालें खपावे, ते वेलायेंज पुरुष वेदनो बंध विह्नेदे, तेवार पही पुरुषवेद अने दास्यादिक ह, ए साते प्रकृति साथें खपावे तथा जे स्त्रीवें के प्रमान नपंपक्रवेद स्वापनी कांन्यपूर्व पूर्वी स्त्रीवेद खपावे के अणी मांमे, ते प्रथम नपुंसकवेद खपावी अंतरमुदूर्न पही , तनी साथेंज पुरुषवेदनो बंध विकेंदे अने पुरुषवेदवंध हेचा पही पु रुप वेन ें .. तथा हास्यादिक बनो समकालें क्य करे. ते ज्यां लगें क्य न धाय, तिहां लगें ए वे वामें चारने बंधें वेदोदय रहि एकोदय वर्तताने अगीआर प्रकृ तिनुं सत्तास्थानक पामीयें अने ते पुरुषवेद तथा हास्यादिकषट्क एम सात प्रकृतिनो समकालें क्य थये थके चार प्रकृति सत्तास्थानक होय एम पांच सत्तानां स्थानक, स्त्रीवेदें अने नष्ठंसकवेदें श्रेणी मांने तेने होय अने जे पुरुषवेदें क्षकश्रेणी मांमे, तेने हास्यादिक तना क्यनी साधें पुरुषवेदनो वंध टले ते नणी तेने चतुर्विधवंधकालें अगीआरतुं सत्तास्थानक न होय पुरुष्वेद विना हास्यादिकषट्क टालियें, तेवारें पांच प्रकृतिनुं सनास्थानक होय ते वे समयोन वे आविलका लगें होय तेवार पत्नी पुरुषवेदनो क्य प्रये यके चा रतुं सत्तास्थानक रहे, ते पण अंतर मुहूर्त पर्यंत रहे तेथी एने पण अगीआरतुं स्तास्यानक टाली बाकी पांच सत्तास्यानक होय. एम च तुर्विध बंधकने विषे १ ए - १४ - ११ - ११ - १ ए ह सत्तानां स्थानक होय.

तथा (सेनेसुजाणपंचेवपत्ते अंपत्ते के ) रोष त्रिविध, दिविध अने एकवि ध, ए त्रण वंधस्थानकने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें पांच पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां त्रणने वंधें अष्ठावीश, चोवीश, एकवीश, चार अने त्रण, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां प्रथमनां त्रण सत्तास्थानक तो, उपशमश्रेणीयें होय. वाकी चार अने त्रण, ए वे सत्तानां स्थानक क्ष्पकश्रेणीयें होय, ते कही देखाडे वे.सं उवलना क्रोधनी अंतरकरण प्रथमस्थित एक आविलका मात्र शेप वर्ते तेनो वंध, उव्य अने उदीरणा समकालें अहेद थाय, तेवार पढी मानादिक त्रणनो वंध होय तेवारें संउवलनाक्रोधनुं प्रथम स्थितिगत आविलकामात्र अने वे समयो न वे आविलवंध वस्ता मूकीने अन्य सर्व क्ये गयुं अने ते क्रोधनी सत्ता पण वे समय कणी वे आविलका मात्र कालें क्य पामशे ते ज्यां लगें क्षय न जाय त्यां तमें त्रिविध वंधें चार प्रकृतिनी सत्ता होय अने ते संज्वलनो क्रोध क्यें गये थकें त्रण प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते अंतरमुहूर्त्त लगें जाणवुं. हवे विविधवर्थे त्रण प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते अंतरमुहूर्त्त लगें जाणवुं. हवे विविधवर्थे

१०-१४-११-२-१ ए पांच सत्तास्थान होय. ए हिलां ए तो पूर्वली पेरें उपश श्रेणीयें नाववां ने बे सत्तास्थान , क्ष्म श्रेणीयें नाववां. ते पूर्वी ; कोधनी पेरें ानने पण आविल ामात्र प्रथ स्थितिगत करे उते संख्वलना मानना पण बंध, उद्य अने उदीरणा साथेंज टले, तेवारें दिविध बंध होय. तिहां वे समयोन बे विलि । लगें संख्वल माननी सत्ता होय तेवारें त्रण प्रकृति ं सत्ता स्थान जाण बुं अने पठी । नने क्यें अंतर हूर्त पर्यंत बे प्रकृति स्तास्थान जाण बुं तथा एकने बंधस्थानकें पण पांच सत्तास्थान जाणवां. तेमध्यें त्रण तो पूर्वली पेरें उपश श्रेणीयें नाववां ने बे क्ष्मकश्रेणीयें नाववां, ते हे हे. जेवारें संख्वलनी मायानी प्रथमस्थित आविलकामात्र रहे, तेवारें संख्वलनी मायानो बंध, उदय अने उदीरणा साथें टले, तेवारें एक चुं बंधस्थान होय अने बे समयोन बे आविलकाल में मायानी सत्ता हो तेनणी वेनी सत्ता होय. तेवार पठी अंतरसुहूर्त्त पर्यंत एक लोजनी सत्ता होय ए सर्व नवसे ग्रणवाणें वर्ततां जाणवी.

(चतारिश्यबंधुवृत्तेए के०) तथा बंधने व्युत्ते दें एट हो बंधने श्रनावें सूक्तासंपरा य गुणवाणे १०-१४-११-१ ए चार सत्तानां स्थानक होय, तेमध्यें त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें हेवां श्रने एक संज्वलनालोननी सत्तानुं स्थानक क् पकश्रेणीयें होय श्रने बंध तथा उदयने श्रनावें पण उपशांतमोहनामा श्रगी श्रारमे गुणवाणे १०-१४-११ ए त्रण सत्तानां स्थानक होय, एनी नावना पूर्व वत् जाणवी. एम उपशमश्रेणीयें श्रने क्ष्पकश्रेणीयें सत्तानो संवेध कह्यो॥इति॥१४॥

> दस नव पन्नर साई, बंधोदय संत पयिं ।णाणि॥ निणिच्याणि मोहिणिके, इत्तोनामं परं वृत्तं॥ २५॥

श्रधी—(दसनवपन्नरसाई के 0) दश, नव श्रने पंदर, (बंधोदयसंत के 0) वंध, उद य श्रने सत्तानां स्थानक श्रनुक्रमें एटले दश बंधनां स्थानक, नव उदयनां स्था नक श्रने पंदर सत्तानां स्थानक, तेना प्रत्येकें नांगा श्रने ते वंधोदय सत्ताने सं वेधें (पयडिवाणाणि के 0) प्रकृतिनां स्थानक ते सर्व (मोहणिक्त के 0) मोह नीयकमैने विषे (निण्ञाणि के 0) कह्यां. (इतो के 0) हवे श्रदींश्रांथकी श्रागल (नामंपरंबु के वे 0) श्रपर एटले नामकमैना वंध, उदय श्रने सत्ता प्रकृ तिनां स्थानक तेहना संवेधें नांगा कहेशे ॥ इति समुज्ञयार्थः ॥ २०॥ अय नाम म्मेणि आदौ बंधस्थानान्याद् ॥ तिहां प्र म ना कमें वंधस्थान हे हे.

तेवीस पन्नवीसा, ब्बीसा अघ्वीस गुणतीसा॥ तीसेगतीस मेगं, वंधाणाणि नामस्स ॥ १६॥

अर्थ-पहेलुं त्रेवीशनुं बंधस्थानक, बीजुं पञ्चीशनुं बंधस्थानक, त्रीजुं विवीशनुं वंधस्थानक, चोशुं अठावीशनुं वंधस्थानक, पांचमुं ओगणत्रीशनुं बंधस्थानक, (तीसेगतीस के०) वर्षु त्रीशनुं बंधस्थानक, सातमुं एकत्रीशनुं बंधस्थानक अने आवमुं (मेगं के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक, ए आव, (बंधनाणाणिनामस्स के०) नामकर्मनां बंधनां स्थानक होथ. ए आव बंधस्थानक, ते तिर्थच अने मनुष्यादिगति प्रायोग्यपणे करीने अनेक प्रकारनां हो. तेमाटें तेमन देखाडे हो.

तिहां तिर्थेचगित प्रायोग्य बांधताने सामान्यपणे १३-१५-१६-१९-३०-ए पांच वांधर्यानक होयः तेमध्यें प्रथम एकेंड्यि तिर्थेचगित प्रायोग्य १३-१५-१६-ए त्रण वांधर्यानक होयः, ते कहे हे. तिहां १ तिर्थेचगितः, १ तिर्थेचा पूर्वीः, ३ एकेंडिय प्रातिः, ४ औदारिकः, ५ तैजस अने ६ कामणः, ए त्रण श्रारः, ७ दुंमसंस्थानः, ७ वर्णः, ए गंयः, १० रसः, ११ स्पर्शः, ११ अग्रुरुत्वयुः, १३ उपघातः, १४ स्थावरः, १५ स्थावरः, १५ स्थावरः, १५ अपयीतः, १७ प्रत्येक अथवा साधारणः, १० अस्थिरः, १७ अञ्चलः, १० दौर्नाग्यः, ११ अन्त्येक अथवा साधारणः, १० अस्थिरः, १७ अञ्चले ते विश्वे प्रकृतिना समुदायनुं पहेलुं बंधस्थानकः, ए अपयीता एकेंडियपा योग्य वांधता तिर्थेच तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टिने जाण्युं अहींआं नांगा चार उपजे, ते कहे हे. एक स्वापणुं साधारण सहित त्रवीश बांधे, बीखं स्वापणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधः, त्रीखं बादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधः, त्रीखं बादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधः, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधः, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, त्रीखं वादर पणुं प्रत्येक सिहत त्रवीश वांधे, प्रवांधः, प्रवांधः, प्रवांधः, प्रवांधः, प्रवांधः, वाधः प्रवांधः, वाधः प्रवांधः, वाधः प्रवांधः, वाधः प्रवांधः, वाधः प्रवांधः, वाधः, वाधः प्रवांधः, वाधः, तथा ए त्रेवीग प्रकृतिमांहे पराघात अने ज्ञ्लास, नेले थके पञ्चीश प्रकृतिनुं बीखं वंधस्यानक पर्याप्त एकेंड्य प्रायोग्य, मिय्यादृष्टि तिर्यंच तथा मनुष्य अने देवता जे एकेड्यमांहे जवा वाला होय ते वांधे, अहींआं अपयीमाने स्थानकें पर्याप्तनाम के देवं अने स्थिर अस्थिरमांहेथी एक तथा ग्रुनाग्रुनमांहेथी एक तथा यश्रुयंग मांद्रेथी एक वांधे. अहींआं नांगा वीश जपने, ते कहे हे. बादर, पर्याप्त अने प्रत्येक ने क्या स्थाय पञ्चीश वांधताने एक नांगो तेमज अस्थिर साथें पञ्चीश बांधतां वीजो नां

गो थाय. ते वली ना नें चार थाय, ते यश यशें ाठ थाय. ए वली बादर पर्याप्त साधारणपणुं बांधतां स्थिर ने स्थिरें वे नांगा थाय अने ग्रुना ग्रुनें चार नांगा थाय. तिहां साधारण साथें यशः ीर्तिं न बांधे केमके तिहां अय शनोज बंध होय तेमाटें. तथा एमज वली सूक्ष्म पर्याप्त प्रत्येकना चार नांगा थाय तथा वली सूक्ष्म पर्याप्त साधारण साथें चार नांगा थाय. एम सर्वे संख्यायें प शिश ने बंधें वीश नांगा उपजे, ए वीश हिला एकेंड्य प्रायोग्य देवता जेवारें बांधे, तेवारें तिहां बादर पर्याप्त अने प्रत्येकना आठ नांगा उपजे.

हवे ए प शिशमां हे आतपनाम अथवा उद्योतनाम, ए बे मांहेजो ए जेली यें, तेवारें विवीश प्रकृतिनुं वंधस्थानक थाय. अहीं आं बादर अथवा सूक्षाने स्था नकें एक बादरज खेवो, तथा साधारणने ठामें प्रत्येकज खेवो. ए बंधस्थानक प यीता बादर प्रत्येक एकेंड्य प्रायोग्य मिच्यादृष्टि तिर्येच, मनुष्य अने देवता ए केंड्यमांहे जनार होय, ते बांधे. अहीं आं आतप उद्योत साथें स्थिर, अ स्थिर, ग्रुन, अग्रुन, यश अने अयश, ए प्रकृतिने परावर्तें शोल नांगा जा णवा. अहीं आं आतप, उद्योत, ते सूक्ष्म साधारण अने अपर्याप्त साथें न होय तेमाटें ते साधें नांगा न कहेवा. तथा यशःकीर्त्ते पण सूक्ष्म साधारण अने अपर्या प्त साथें न बांधे अहीं ां एक आतप, स्थिर, ग्रुन ने यश. बीजो आतप, स्थि र, ग्रुन, अने अयश. त्रीजो आतप, स्थिर, अग्रुन अने यश. चोषो आतप, स्थि र, अशुन अने अयशः पांचमो आतप, अस्थिर, शुन अने यशः बहो आतप, अ हियर, ग्रुन ने अयशः सातमो आतप, अस्थिर, अग्रुन अने यशः आतमो आ तप, अस्थर, अग्रुन, ने अयश, ए आत नांगें एकेंड्य पर्याप्त प्रायोग्य आ तप साथें विश्वीश प्रकृति बांधे, तेमज आव जांगे वैद्योतसाथें पण विश्वीश प्र कृति वांधे, एवं शोल नांगा थया. एम एकेंड्य प्रायोग्य वांधतां त्रएो वंध स्थानकें थइने चालीश नांगा थाय.

ह्वे वेंडिय प्रायोग्य बांधताने १५-१ए-३० ए त्रण बंधस्थानक होय. तिहां २ तिर्थचिह्क, ३ वेंडियजाति. ५ औदारिकिह्क. ६ तेजस, ७ कामेण, ७ हुं मसंस्थान, ए ठेव हुंसंघयण, १० वर्ण. ११ गंव, १२ रस, १३ स्पर्श. १४ अ युरुज्ञ १५ उपचात, १६ त्रस. १७ बादर, १० अपयीत. १ए प्रत्येक. २० अ स्थिर, ११ अग्रुन, १२ वोजीग्य, १३ अनादेय, १४ अय्याःकीर्ति. १५ निमी ए. ए पञ्चीश प्रकृतिना समुदाय हूप बंधस्थान अपर्याप्त वेंडिय प्रायोग्य मिष्यादृष्टि

मनुष्य तथा तिर्थेच बांधे. अहीं ां अपयी नामनी सायें ग्रुनाग्रुनादिक परावर्त मान प्रकृति मांहेली अग्रुनज बंधाय पण ग्रुन न बंधाय, तेथी अहींआं बीजो नांगो कोइ उपजे नहीं. ।त्र ए ज नांगो थाय.

ह्वे ए पूर्वोक्त प शिश प्रकृतिने १ पराघात, १ उच्चास, १ अप्रशस्तिविहायों गित, ४ पर्याप्त, ए पांच प्रकृति सहित करीयें अने अपर्याप्त रहित करीयें, तेवारें उगणत्रीश प्रकृतिना स दायरूप बंधस्थान थाय, ते पर्याप्ता बेंडिय प्रायोग्य मिथ्यादृष्टि जीव बांधे. हीआं थिर, अधिर, न अने अ न, यशने अ यश, ए प्रकृति पर्याप्ता सहित हे तेथी तेना परावर्ने ए ग्रुन साथें तथा एक अग्रुन साथें एवं वे नंग स्थिरना अने वे अस्थिरना, एवं चार थया. ते चार अयशःकीर्त्ते साथें तथा चार यशःकीर्त्ते साथें बांधे, तेवारें आठ नांगा थाय.

ते र्रगणत्रीश प्रकृतिने रद्योत सहित बांधतां त्रीशतुं बंधस्थानक ए पण पर्याप्त वेंड्य प्रायोग्य मिथ्यात्वीने होयः तिहां पण पूर्वोक्त रीतें नांगा छात रुपजेः ए सर्व मली वेंड्य प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें थइने नांगा सत्तर थया.

तेमज तेंडिय प्रायोग्य पण एज त्रण बंधस्थानकें थइने सत्तर नांगा कहेवा पण तिह्रां एटजुं विशेष जे बेंडियजातिने स्थानकें तेंडियजाति कहेवी. तेमज चौरिंडि य प्रायोग्य पण एज त्रण बंधस्थानकें नांगा सत्तर कहेवा छने तेंडियजातिने स्थानकें चौरिंडिय जाति कहेवी. एम शरवाजे विकजेंडियने विषे एकावन नांगा थाय.

हवे पंचेंड्यितर्यंच प्रायोग्य वांधतां प िश, छोगणत्रीश छने त्रीश, ए त्रण वंयस्थानक होय. तिहां पञ्चीश प्रकृतिन्तं वंधस्थानक छपयित पंचेंड्य तिर्थंच प्रायोग्य मिण्यात्वी तिर्थंच छने मनुष्य वांधे, ते प्रकृतिनां नाम छपयित वेंड्य प्रायोग्यनी पेरें कहेवां. पण एटलुं विशेष जे वेंड्यिजातिने स्थानकें पंचेंड्यिजा तिनाम कहेनुं. छहींछां नांगो एकज पूर्वली पेरें छाग्रननो जाणवोः

तथा १ तिर्वेचिदिक, ३ पंचेंड्यजाति, ५ श्रोदारिकिदिक, ६ तैजस, १ कामण. ७ ठ संघ्यण माहेलुं एक संघ्यण, ए ठ संस्थान माहेलुं एक संस्थान. १३ वर्णचतुष्क. १४ श्रगुरुलघु, १५ उपघात, १६ पराघात, १० उहुास, १० खगित व माहेली एक खगित, १ए त्रस, १० बादर, ११ पर्याप्त, ११ प्रयीप्त, ११ प्रयोप्त, ११ प्रयोप्त, ११ प्रयोप्त, ११ प्रयोप्त, ११ प्रत्येक. १३ हियर, श्रह्मरमाहेली एक. १४ ग्रुन श्रने श्रगुन माहेली एक, १६ सुस्तर, इःस्तर माहेली एक, १० श्रादेय स्त्रने श्रनोट्य माहेली एक. १० यशकीर्त्त, श्रमश्राहेली एक श्रने १ए

निर्माण ए योगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थान पर्याप्त पंचेंडिय तिर्यंच प्रायोग्य मिच्या ली अने सास्वादनी चारे गतिना जीव बांधे अहीं आं एटलुं विशेष जे सास्वादनीने संघ यण तथा संस्थान पांच पांच मांहेलुं एकेक हेतुं केमके दुंमसंस्थान तथा हेवहा संघयणनो बंध,सास्वादन ग्रणवाणे नयी हिं ए बंधस्थानकें (४६००) नांगा उप जे, ते देखाडे हे ह संघयण सांहेथी ए संघयणना बंध साथें श्रोगणत्रीश प्रक ति बांधतां एक जांगो थाय, तेवा व संघयऐां व जांगा थाय. तेवली एके । संस्था नना बंध साथें व व नांगा खेतां व संस्थानना वत्रीश नांगा थायः ते वत्रीश नां नखगति साथें थया.तेमज अग्रुन गतिना बत्रीश मेलवतां ७१ पंग याय. तेवली स्थिर छने छस्थिर साथें (१४४) थायः ते वली न छग्रन साथें ब णा रतां (१००) यायः ते वली सुस्वर तथा :स्वर सार्थे बमणा रतां (५९ ६) याय. ते सीनाग्य तथा दीनीग्य साथें ब णा करतां (११५१) थाय. ते । आदेय अनादेय साथें बमणा रतां (१३०४) याय. ए (१३०४) यश साथें त था ( १३०४ ) अयश सांधें बांधतां थाय. बेहु मलीने (४६००) थायः ए नां गा सिह पंचें दिय तिर्यचगित प्रायोग्य खोगणत्रीश प्रकृतिने बंधें यायः तिहां विशे प आश्रयीने साखादन आश्रयी बांधतो विचारियें, तेवारें ते साखादनी ढुंमसं स्थान अने वेवहुं संघयण न बांधे, माटें पांच संघयणने पांच संस्थान साथें ग्र णतां १५ थाय. पढी सात वार पूर्वेजी पेरें बमणा करीयें, तेवारें (३१००) नां गा थाय. पण ए नांगा तेहीज (४६००) मांहेला जाणवा, तेमाटें जूदा गणवा नहीं.

ते ओगणत्रीश प्रकृतिने उद्योत नामकर्म सिह्त बांधतां त्रीश प्रकृतिनुं वंध स्थानक थाय. अहीं आं पण ओगणत्रीश प्रकृतिने बंधें जे (४६००) नांगा उप ना तेटलाज उद्योतने साथें नेलीने गणतां थाय. एम पंचें इिय तिर्थेच प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें थइने (७११७) नांगा थाय.

हवे मनुष्यगित प्रायोग्य बांधतां पञ्चीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंध स्थानक होय. तिहां नांगा कहे हे. तिहां पञ्चीशनुं बंधस्थानक, अपयीप मनुष्य प्रायोग्य बांधे, तिहां नांगो एक, तिर्थचना पञ्चीश, प्रकृतिना बंधनी पेरें क्षेत्रो. पण एटलुं विशेष जे तिर्थचिहकने वामे मनुष्यिक कहेनुं. तथा बीजुं उंगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक मिथ्याली, सास्वादनी, मिश्रष्टिए तथा अविरति सम्यक्दिए. ए चार बांधे तिहां मिथ्याली तथा सास्वादनी चारे गतिना जीव वार्थे अने मिश्र तथा अविरति सम्यक्दिए तथा स्रविदा नियाली तथा सास्वादनी चारे गतिना जीव वार्थे अने मिश्र तथा स्रविरति सम्यक्दिए तो देवता. नारकीज वांधे, एने विषे पण जेम पंचें हिय तिर्थच

प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकने विषे नांगा (४६००) कह्या, तेमल क हेवा. पण एटलुं विशेष जे ए मांहेलाज साखादनीने (३१००) नांगा कहेवा. त या मिश्रदृष्टि अने सम्यक्दृष्टि देव, नारकी बांधे, ते नव नामकर्मनी ध्रुवबंधि प्रकृति १० मनुष्यगति. ११ मनुष्यानुपूर्वी, ११ पंचेंडियजाति, १४ औदारिकिहिक. १५ समचतुरस्रसंस्थान, १६ वज्जक्षननाराचसंघयण, १७ पराघात, १० ज्ञ्लास १ए शुनखगति, १० त्रस, ११ बादर, ११ पर्याप्त, १३ प्रत्येक, १४ स्थिर, अस्थि रमांहेली एक, १५ शुन, अशुन मांहेली एक, १६ सुनग, १९ सुखर, १० आदे य, १ए यश अने अयशमांहेली एक, ए ओगणत्रीशने बंधें नांगा आठ जपने, केमके अहीं प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान विना बीजा पांच संघयण तथा पांच संस्थाननो बंध नथी तथा अशुनखगित, दौर्नाग्य, इःस्वर अने अनादेयनो बंध नथी, तेथी तेना विकल्पें नांगा न जपने. बाकी शुन अ न साथें एकेक तेवली स्थिर तथा अस्थिर साथें वे बे अने यश अयश साथें चार चार, एवं आठ आठ नांगा एकेक ग्रणवाणे थाय पण ते सर्व पूर्वला (४६००) मांहेलाज जाणवा.

ते ओगणत्रीश प्रकृतिमध्यें तीर्थंकरनामकमें नेलीयें, तेवारें त्रीश प्रकृतिनुं वं धर्षानक थाय. ते मनुष्य प्रायोग्य देवता तथा नारकी जे सम्यक् हृष्टि होय, ते बां धे. तिहां पण नांगा आत थाय, जेनणी तीर्थंकरनामकर्मनो बंध, मिण्यात्वादिक त्रण गुणताणे न होय, तेथी त्रीश प्रकृतिने बंधें अधिक नांगा न थाय. एम मनुष्याति प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें थइने (४६१७) नांगा थाय.

हवे देवगितप्रायोग्य वांधतां छाडावीश, छोगणत्रीश. त्रीश छने एकत्रीश, ए वार वंधस्थानक होय. ते पंचेंडिय तिर्यंच तथा मनुष्य बांधें. द्वित्तहां १ देविहक, १ पंचेंडियजाति, ५ वैक्तियिहक, १ ध ध्रुवबंधिनी नव स्थ्रुक्रित, १ ५ समचतुत्र संस्थान, १ ६ शुनखगित, १० त्रसचतुष्क, ११ पराष्ट्रनो त्रात, ११ ज्ञास, १३ स्थिर छथवा छस्थिर, १४ शुन छथवा छश्चन, १५ सुनग, १६ क्ष्यस्थर, १७ छादेय, १० यशःकीर्त्त छथवा छयशःकीर्त्त, ए छाडावीश प्रकृतिना समुदार्य बाधतां छडा वीशनुं वंधस्थानक कहीयें. ए बंधस्थानक मिथ्यालधी मांमीने देशविरित गुण वाणा लगेंना मनुष्य. तिर्यंच बांधे छने ते पनी नहां गुणवाणो एकला मनुष्य पण बांधे. छहींछां स्थिर छथवा छस्थिर, शुन छथवा छश्चन यश छने अयगने परावने ज्ञान नांगा थाय तथा छप्रमत्त छने छपूर्वकरण गुणनाणावाला मनुष्य प्रथण वांधे परंनु तिहां स्थिर, शुन छने यशक बांधे. छहींछां सर्व शुनक वंधाय

माटें एक जांगो उपने, ते पण ए आत माहेलोज हे माटें प्रथक गणवो नहीं.

ते अहावीशमांहे जिननाम नेततां ओगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देव प्रा योग्य, ते अविरति सम्यक्दृष्टि, देशविरति तथा प्रमन्त मृतुप्यज्ञ वांधे तिहां पण स्थिर, अस्थिर, ग्रुन, अग्रुन, यश अने अयशने परावर्ते आत नांगा थाय वली ए ओगणत्रीशनुं वंधस्थानक एकली स्थिरादिक ग्रुन प्रकृतियें सहित अप्रमन अ ने अपूर्वकरणवालों म प्यपण बांधे तिहां एकज नांगो थाय,ते तद्ंतरनूत जाणवो.

तथा ते अहावीशमां आहार दिक जेलीयें अने जिननाम जेलीयें नहीं, तेवा रें त्रीश प्रकृतिनुं वंधस्थानक देवगति प्रायोग्य अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणवा णा वालो मनुष्यज बांधे तेपण स्थिर, शुन अने यशज बांधे पण अस्थिर, अशुन अने अयश न वांधे तेमाटें तिहां पण एकज नांगो थाय

तथा ते त्रीशमांहे वली जिननाम नेलीयें, तेवारें एकत्रीश प्रकृतिनुं वंधस्था नक देव प्रायोग्य अप्रमत्त अने अपूर्वकरणवालो मनुष्यज वांधे, अहींआं पण शुन प्रकृतिनोज वंध हो, तेमाटें एकज नांगो होय. एम सर्व मलीने देवगित प्रायोग्य चारे वंधस्थानकें थ5ने अहार नांगा थाय, हवे नरकगितप्रायोग्य नांगा कहे हो.

हवे नरकगित प्रायोग्य वांधताने एकज अठावीश प्रकृतिनुं वंधस्थानक होय. १ नरकिक, ३ पंचें इियजाित, ५ वेक्तियिक, ६ ढुंमसंस्थान, ७ पराघात, ० उठ्ठा स, ए अग्रुनिवहायोगित, १० त्रस, ११ बादर, ११ पयीप्त, १३ प्रत्येक, १४ अ स्थिर, १५ अग्रुन, १६ दोनिग्य, १७ इःस्वर, १० अनादेय, १ए अयशःकीर्नि, १० नामधुववंधिनी नव प्रकृति, ए अठावीश प्रकृतिनुं वंधस्थानक पंचें इय तिर्येच तथा मनुष्य मिष्यात्व ग्रुणवाणावाता वांधे. अहीं आं सर्व परावर्तमान मांहेली अग्रुनप्रकृतिज वांधे माटें विकल्प नहीं तथी नांगो पण एकज होय.

ह्वे देवगति प्रायोग्य बंध ब्युष्ठेद पामे थके पण श्रपूर्वकरणना सातमा नागयी मांमीने सूक्यसंपराय ग्रणवाणाना श्रंत पर्यंत पण एकज यशःकीर्त्ते नामकर्मनी प्र कतिने एकजा मनुष्य बांधे. तिहां एकतुं बंधस्थानक जेवुं इतिसमुच्चयार्थः॥ १६॥

श्रयेकस्मिन् वंथस्थाने कति नंगाः सर्वसंख्यायाः स्युरित्याह ॥

द्वे कया वंधस्थानकें केटला नांगा, सर्व संख्यायें होय, ते कहे हे.

अर्थः-अपर्याप्ता एकेंडिय प्रायोग्य त्रेवीश प्रकृतिने बंधें ( च व के ० ) चार नां गा होय, तथा पञ्चीशने बंधें एकेंडिय प्रायोग्य वीश, बेंडिय प्रायोग्य एक, तेंडिय प्रायोग्य एक, चौरिंड्य प्रायोग्य एक, पंचेंड्यितर्यंच प्रायोग्य एक, अने मनुष्य प्रायोग्य एक, एवं पञ्चीशने बंधें (पणवीसा के ) प शिश जांगा होय तथा एकेंडि यप्रायोग्य वहीशने बंधें (सोलस के॰) शोल नांगा होय, तथा देव प्रायोग्य श्र हावीशने बंधें आत नांगा अने नरकप्रायोग्य अहावीशने बंधें एक नांगो, एवं अ छावीशने वंधें (नव के ) नव नांगा होय. तथा बंडियप्रायोग्य छात, तेंडियप्रा योग्य छात, चौरिंड्य प्रायोग्य छात, पंचेंड्यितर्यंच प्रायोग्य हेंतालीशरोंने छात, पं चेंडिय मनुप्य प्रायोग्य छेंतालीशशेंने आत अने देव प्रायोग्य आत, एवं सर्व मली ओ गणत्रीश प्रकृतिना वंधस्थानकें (बाण वर्ष्तयाय खड्याला के ० ) बाणुरों ने खडता लीश नांगा होय तथा वेंड्य प्रायोग्य छात, तेंड्य प्रायोग्य छात, चौरिंड्य प्रायो ग्य छात, पंचें ६ियतिर्येच प्रायोग्य हेंताली शर्रों ने छात, मनुष्य प्रायोग्य छात छने देवप्रायोग्य एक, एवं सर्व मलीने त्रीश प्रकृतिने बंधस्थानकें (एयाजुनरहायालस या के ण) वेंताली शर्रों ने एकतालीश नांगा धाय अने एकत्रीश प्रकृतिने बंधस्थान कें देवप्रायोग्य, (इक्किक्किवंधविद्दी के०) एकविध बंधनो एकज नांगो होय. ए सर्वे मली छाते वंधस्यानकें घइने नामकर्मना (१३७४५) तेर हजार, नवहीं ने पि स्तालीश जांगा थाय. ए नामकमेना वंधस्थानकना जांगा कह्या ॥ इति ॥ १९॥

॥ अय उद्यस्थानान्याह ॥ हवे नामकमेनां बार उद्यस्थानक कहे हे । वीसिगवीसा चउवी, स गाउ एगाहि याय इगतीसा ॥ उद्यठाणाणि जवे, नव अठय हुंति नामरुस ॥ २०॥

श्रथे— (वीतिगवीता के०) प्रथम वीश प्रकृतिनुं उद्यस्थानक, बीजुं एकवी शनुं उदयस्थानक, तेवार पठी (चन्नवीत्तगान्नएगाह्नियायइगतीता के०) चोवीश प्रकृतिनां उदयस्थानकथकी मांमीने एकेक प्रकृतियें श्रधिक करतां निरंतरपणे एकत्रीण प्रकृति लगें श्राव, (उद्यन्नाणाणिनवे के०) उद्यनां स्थानक होय,एठले चोवीशनुं, पञ्चीशनुं, उविशनुं, तत्तावीशनुं, श्राविशनुं, उगणत्रीशनुं, त्रीशनुं श्रने ए क्रित्रनुं ए श्राव थयां श्रमे वे पूर्वला मली दश उद्यस्थानक थयां तथा श्रमी श्रागमुं (नव के०) नव प्रकृतिनुं उद्यस्थानक श्रमे वारमुं (श्रष्ठय के०) श्रा

व प्रकृति ं वद्यस्थान , ए बार वद्य स्थानक, (हुंतिनामस्स के ॰ ) ना कर्मनां होय ॥ इत्यक्रार्थः ॥ २० ॥ ह्वे ए ं विवरण लिखें वैयें

अहीं । एकेंडियादि नी अपेक्।यें अने नांगा उपजे, ते देखाडे हे तिहां एकेंडियने ए वीश, चोवीश, प शिश, ढवीश अने सत्तावीश, ए पांच उदयस्था नक होय. तिहां १ तेजस, १ ामेण, ३ अग्ररुलघु, ४ स्थिर, ५ अस्थिर, न, ७ अग्रुन, ७ वर्ण, ए गंध, १० रस, ११ स्परी, १२ निर्माण; ए बा र प्रकृतिनो उदय ध्रुव है। ते । दें ए नामकर्मनी ध्रुवोदयिका बार प्रकृति तेरमा गुणुगुणा लगें चद्य आश्रीने सर्व जीवने होय, मार्टे सर्वत्र खेवी अने तिर्यचिद क, ३ स्थावर, ४ एकें इियजाति, ५ बादर अथवा सूद्या, पर्याप्त थवा अपर्या प्त, ७ दौनींग्य, ७ नादेय, ए यशःकीर्त्ति, अथवा अथशःकीर्त्ति, ए नव प्रक ति, पूर्वी बार प्रकृतिमांहे जेलीयें, तेवारें एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, एकें डि्य जीवने पूर्वेता नवतुं शरीर मूक्या पढी जिहां लगें आगलें जइ अवतस्त्रों न थी तेने वचालें जाएवो एटले चवने अपांतरालें वर्तता एकेंडियने होय. अहीं नांगा पांच उपजे, ते कहे हे. एक सूक्षा पर्याप्त साथें एकवीशने उद्यें बीजो बा दर पर्याप्त साथें एकवीशने चद्यें, ए बे नांगा पर्याप्तना थया. तेमज वली अपर्या प्त साथें पण बे नांगा थाय. ए चार नांगा थया. तेमांहेला सूक्ष्म पर्याप्त अने सू क्तअपर्याप्त तथा बादर अपर्याप्त, ए त्रण नांगा तो अयशःकीर्ति साथें होय, पण तिहां यशःकीर्तिनो उदय न होय " णोसुहुमितगेणजसं " ए वचनधी जा णवं. अने बादर पर्याप्त साथें यशःकीर्त्त सिहत एकवीशने उद्यें एक नांगो त था अयशःकीर्त्तं सहित एकवीशने उद्यें बीजो नांगो, ए बे नांगा पूर्वला त्रण नांगा साथें मेलवतां पांच नांगा थाय अहीं आं जीव, आगलें पोताने योग्य सर्वे पर्याप्ति पूर्ण करहो, तेने योग्यपणें करी लब्धि आश्रयीने नवांतरालें पण प यीमो कहीयें. अहीं आं लिध पर्यामानीज विवक्ता जाणवी.

तेवार पढ़ी ते शरीरस्थने ते एकवीश प्रकृतिना उदयमांहे एक छौदारिक श रीर, बीजुं हुंमसंस्थान, त्रीजुं उपधात, चोथो प्रत्येक छथवा साधारण, ए चार प्रकृति हेपीयं छने एक तिर्थचनी छानुपूर्वी काढ़ीयं, तेवारें चोवीश प्रकृतिनुं उ दयस्थानक होया छहींछां पूर्वीक पांच नांगाने प्रत्येक तथा साधारण साथें वे गुणा करीयें, तेवारें दश नांगा थाया तेमांहे एक नांगो वैक्रियनो जेजीयं जे नणी बादर वायुकाय वेकिय शरीर करे है तिहां पण चोवीशनो उदय होय, पण एटलुं विशेष जे ख़ौदारिक शरीरने स्थानकें वैक्रिय शरीर कहेंबुं. तिहां बादर, प्र त्येक, पर्याप्त छने ख़यशःकीर्त्ते साथें ए ज नांगो होय, जे नणी तेनकाय तथा वायुकायने साधारण तथा यशःकीर्तिनो चदय न होय,तेथी तेना नांगा न चपजे. एम सर्व मलीने चोवीशने चदयें छगीछार नांगा थाय.

तेवार पठी ते शरीर पर्याप्ताने चोवीशना चदयमांहे पराघातनो चदय नेलीयें, तेवारें पचीश प्रकृतिनो चदय थाय. ए चदय शरीर पर्याप्ति पूरी कह्या पठी होय. तिहां बादर पर्याप्त साथें प्रत्येक तथा साधारण ग्रुणतां बे नांगा थाय, ते यशः कीर्ति तथा अयशःकीर्त्ति साथें ग्रुणतां चार नांगा थाय. तेमज बादरने स्थानकें सूक्ष्म साथें प्रत्येक अने साधारणना विकल्पें बे नांगा थाय. ए बे नांगे एकली अयशःकीर्त्तिज लाने. पण यशःकीर्त्ति न लानें माटें तेना नांगा न लेवा. एवं व नांगा थया तथा वादर वायुकायने वैक्तिय करतां शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पठी पराघातनो चदय नेलतां पण पचीश प्रकृतिनं चदय स्थानक लाने, तिहां पण पूर्वली पेरें एकज नांगो होय, एम सर्व मली पचीशने चदयें सात नांगा थाय.

तथा थासो ह्वासपर्याप्तियें करी पर्याप्ता थया पढ़ी ते पञ्ची शना उदय मांहे व ली वासोह्यासनो उदय नेलीयें, तेवारें बद्दीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय-हीं छां पण पूर्वेली पेरें नांगा ढ षाय छाषवा शरीरपर्याप्तें पर्याप्ताने छहासने छ नुद्यें एटले ज्यां सुधी श्वासोब्वास पर्याप्त पूर्ण न याय, त्यां सुधी नब्वासना नद य विना उद्योतनो उदय होय, तेवारें पण उद्योशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां वादरने उद्योत सहित वहीशने उद्यें प्रत्येक साथें एक नांगो, तेमज साधारण सायें वीजो नांगो, ते वे नांगा यशःकीर्त्तं साथें लेवा तथा तेहिज वे नांगा अय शःकीर्त्त साथें लेवा. एम चार नांगा थाय. तथा उद्योतने स्थानकें छातपनो उद य जेलतां पण वहीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां प्रत्येकने यश तथा अयशें क री वे नांगा याय, केमके छातप ते एथवीकायमांहेज होय माटें एक प्रत्येकज लीयो अने उद्योत तो वनस्पतिमांहे पण होय माटें तिहां प्रत्येक अने साधार ण वेदु जीधा तथा आतप अने जयोतनो जदय ते वाद्रनेज होय पण सुकाने न द्याय माटे अहीं आं स्कानो उदय न लीधो तथा बादर वायुकायने वैकिय करतां श्वासोद्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ता वायुकायने ते पचीश प्रकृति मध्यें उद्वा ननो चर्य जेजतां वृद्यीशनो चर्ये होय. तिहां नांगो एक जाएवो केमके वायुकाय ने आतप उद्योत तथा यशःकीर्तिनो उदय पण नथी तेमाटें. अहीं बीजा नांगा न पामीयें. ए बहीश प्रकृतिने उद्यें सर्वे जी तेर नांगा थायः

तथा ते श्वासोह्यास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने श्वासोह्यास सहित उद्योशना उद्य प्राय. तिहां पूर्वजीपेरें उद्योशना उद्यमांहे उद्योत नेजतां चार अने आतप नेजतां है, एवं उ नांगा जे पूर्वें कह्या,तेज अहीं पण जाणवाः जे नणी कह्यं ठे के, "एगेंदिय उद्येसु, पंचयएक्कार सत्ततेरसय ॥ उक्कं कमसो नंगा, वायाज हुंति स हेवि ॥" ए एकेंड्यिना उद्यस्थानकने विषे एकवीशना उद्यें पांच, चोवीशना उद्यें अगीआर, पश्चीशना उद्यें सात, उद्यीशना उद्यें तेर अने सत्तावीशना उद्यें उ, ए रीतें पांच उद्यस्थानकें थइ सर्व मजी हेताजीश नांगा होय.

हवे बेंड्यिना एकवीश, बद्दीश, अंघावीश, ोगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए व चद्यस्थानक होय. तिहां नांगा कहे वे

तिहां १ तिर्थचिहक, ३ बेंडियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, ७ दौर्नाग्य, ७ छानादेय, ए यशःकीर्त्तं छथवा छयशःकीर्त्तं, ए नव प्रकृति थइ, एनी साथें बार ध्रुवोदयी प्रकृति मेलवतां एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक विचालें वियहग तिथें वर्त्तता जवने छपांतरालगितयें बेंडिय जीवने होय, छहींछां छपयीप्ता सा धें छयशःकीर्त्तं लेतां जांगो एक थाय तथा पर्याप्ता साथें यशःकीर्त्तं छने छयशः कीर्त्ते लेतां बे जांगा पर्याप्ताना थाय, एवं सर्व मली त्रण जांगा थाय.

हवे ते बेंडियने स्वस्थाने अवतस्या पढ़ी ते पूर्वोक्त एकवीश प्रकृतिना उदय स्थानक मांदेथी तिथेगानुपूर्वी काढीयें अने औदारिकिहक, हुंमसंस्थान, ठेवहुं संवयण, उपवात अने प्रत्येक ए व प्रकृति नेजीयें, तेवारें ववीश प्रकृतिनुं उदय स्थानक होया अहींआं पण पूर्वजी पेरें नांगा त्रण थाया

तेवार पढ़ी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा अग्रुनखगति, ए वे प्रकृति नो चद्य वधे, तेवारें अष्ठावीश प्रकृतिनुं चद्यस्थानक थायः अहीं आं यशः की किंत तथा अयशः की चिंते करोने नांगा वे थाय, केमके अग्रुनखगतियें अपयित ना मनो चद्य न होय ते माटें तेनो एक नांगो पूर्वीक्त त्रण मांहेथी टले शेप वे नांगा होयः

ते वली श्वांसोन्नास पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पढ़ी श्वासोन्नासनो उदय वर्ष ते वारें उगणत्रीहाने उदयें पण तेमज पूर्वीक्तरीतें वे नांगा होय ख्रयवा शरीर पर्या प्रियें पर्याप्ताने ते ख्रांचिश्वाता उदयमांहे उञ्चासना उदय विना उद्योतनो उदय

ने तरमें परी कार कांगा पार

ने उद्दें सर्व मली चार नांगा थाय. ते उत्वास सिंदत उंगणत्रीश प्रकृतिमां हे सुस्वर, इःस्वर ंहेला एकनो उद्य नेलतां त्रीशनो उद्य थाय. अहीं आं यशःकी ते तथा अयशःकी ते साथें नांगा वे, ते वे नांगा सुस्वरना अने वे इःस्वरना एवं चार नांगा थायः अथवा थारा ह्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने जिहां लगें नाषा पर्याप्ति पूर्ण करी न होयः तिहां लगें वेहु स्वरना उद्य विना उद्योतनो उद्य नेलतां पण त्रीशनुं उद्यस्या नक होय. अहिं आं यशःकी ते अने अयशःकी तिना विकल्पें वे नांगा थाय. एम सर्व मली त्रीशने उद्यें व नांगा थाय.

तथा खर सहित त्रीशना उदय मांहे उद्योतनो उदय जेलतां एकत्रीशनो उद य नापापर्याप्तियें करी पर्याप्ता जीवने होय. अहीं आं यश, अयशें तथा खर अने इःखरना विकल्पें चार नांगा थाय एम सर्व मलीने एकवीशने उदयें त्रण, उद्यीश ने उदयें त्रण, अविश्व वे, उंगणत्रीशने उदयें चार, त्रीशने उदयें ढ, अने एकत्रीशने उद्यें चार, एम उ उदयस्थानकें थइने बावीश नांगा बेंडियने तथा तेज बावीश नांगा तेंडियने तेमज चौरिंडियने पण तेटलाज उदय स्थानकें थई बावीश नांगा होय. एम विकलेंडिय मध्यें सर्व मलीने नांगा ठाशह होय.

हवे सामान्यें पंचेंड्य तिर्थंच मध्यें उ उदयस्थानक होय, ते कहे हे. एक वीश, विश्वाश, जगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए उ उदय स्थानक होय. तिहां १ तिर्थंचिहक, ३ पंचेंड्यजाति, ४ त्रस, ए वादर, ६ पर्याप्त, अप वातमांहेली एक, ७ सौनाग्य, दौर्नाग्य मांहेली एक, ७ आदेय, अनोदयमांहे ली एक, ए यशःकीर्त्त अयशःकीर्त्त मांहेली एक, ए नव तथा वार ध्रुवोदयी ए वं एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, पंचेंड्य तिर्थंचने पूर्वनवनुं शरीर वांम्या पठी मार्ग विचालें वियह्मतियें होय. अहींआं पर्याप्त नामने उदयें वर्नताने सुन ग इन्गने विकल्पं नांगा वे, ते वली आदेय अनादेयने विकल्पं नांगा चार, ते चार यगःकीर्न साथें अने चार अयशःकीर्त्त साथें एवं आठ नांगा याय अने अप वांत नामने उदयें वर्नताने सानाग्य, आदेय अने वशःकीर्त्तनो उदय न होय. नेमाटें विकल्पने अनावें वीजो नांगों पण न उपने, माटें तिहां एकज नांगों जाणयो, एवं नव नांगा यया. अहींआं कोइएक आचार्य कहें के सुनग अने आदेयनो मार्थेज ममकालें उदय होय, तेम इन्ग अने अनादेयनो पण उद

य साथेंज होय, तेथी ए बे साथें बे नांगा ते यशःकीर्त्ते छने अयशःकीर्त्ते साथें ग्रुणतां चार नांगा पर्याप्त साथें थाय. अने एक अपर्याप्तनो नांगो, एवं पांच नांगा थाय. एम ए सुनग, नेग तथा आदेय, अनादेयने विषे आगलें पण सर्वत्र म तांतरना नांगानो नेद जाणवो ते पोतानी मतियें विचारी लेवो.

तथा तेहिज पंचेंडिय जीव शरीरस्थने अवतस्या पढी ते एकवीशना उदय मांदेखी तियेचानुपूर्वीनो उदय टाजीयें अने औदारिकिहक, ढ संघयण मांदेखुं एक संघयण, ढ संस्थानमांदेखुं एक संस्थान, उपघात अने प्रत्येक, ए ढनो उदय नेजीयें, तेवारें ढवीशनुं उदयस्थानक थायः तिहां पर्याप्त साथें ढ संघयण गुणतां ढ नांगा थाय. तेने ढ संस्थानें गुणतां ढत्रीश थाय. ते सौनाग्य अने दौ नांग्य साथें गुणतां बहोंनेर थाय. ते आदेय अनादेय, साथें गुणतां एकशोने चु म्मालीश थायः ते यश, अयश साथें गुणतां बहो ने अवशशी नांगा थाय, अने अपर्याप्ताने दुंमसंस्थान, ढेवहुं संघयण, दौनीग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तने उदयें एकज नांगो होयः केमके अपर्याप्ताने परावर्त्तमान अग्रुन प्रकृतिनोज उदय होय, पण ग्रुन प्रकृतिनो उदय न होय, तेमाटें एकज नांगो थाय. एम वशें ने नेव्याशी नांगा थया तथा मतांतरें उद्वीशने उद्यें एकशो पीस्ताजीश नांगा पण होयः

ते शरीर पर्याप्तें पर्याप्ता यया पढ़ी एक पराघात, बीजी शुन, अशुनखगित मांहेली एक, ए वेनो उदय जेलतां अहावीशनो उदय थाय. तिहां पर्याप्ताना पूर्वोक्त बशें अवधाशी नांगाने वे विह्योगितयें गुणतां पांचशे ने ढहोंनेर नांगा थाय. अहीं श्रां अपर्याप्ती न होय माटें तेनो एक नांगो न होवो.

ते अहावीशमध्यें श्वासोब्वास पर्यातियें पर्याताने एक ज्ञासनो जदय वधा रतां जंगणत्रीशनो जदय यायः अहीं आं पण पूर्वे पेरें नांगा ( ५७६ ) नाण वा, अयवा शरीर पर्यातियें पर्याताने श्वासोक्वास विना एक ज्ञ्योतनो जदय अहा वीशमां नेलतां जंगणत्रीश प्रकृतिनुं जदयस्थानक थाय, तिहां पण ( ५७६ ) नांगा थाय, एम जंगणत्रीशने जदयें सर्व थइने (११५१) नांगा थाय.

तेवार पढ़ी नाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने ते उंगणत्रीशमांहे सुखर अथवा इःखर मांहेली एक नेलतां त्रीशनो उदय थाय. अहीं आं जे पूर्वें वातो हासने उदयें ( ५०६ ) नांगा कह्या तेने सुखर इःखरने विकल्पें वमणा करतां (११५०) नांगा थाय, अथवा थासो हास पर्याप्तियें पर्याप्ताने खरना उदये विना उद्योतनो उद य पूर्वोक्त र्रगणत्रीशमांहे चेलीयें, तेवारें त्रीशनो उदय थायः तिहां पण पूर्ववत् ( १७६ ) नांगा थायः एम सर्व मली त्रीशने उद्यें ( १७२० ) नांगा थायः

तथा स्वर सिहत त्रीशना उद्यमांहे उद्योतनो उद्य नेलतां एकत्रीशनुं उद् य स्थानक थाय. अहीआं जे पूर्वें स्वर सिहत त्रीशने उद्यें नांगा (११५१) कह्या हे. तेटलाज नांगा जाएवा, एम सहज पंचेड्यि तिथैचने ए ह उदय स्थानकें थइने नांगा (४ए०६) थाय.

ह्वे पंचेड्यितर्यचने वैक्रिय करतां पञ्चीश, सत्तावीश, छात्वीश, छंगणत्रीश, छन त्रीश, ए पांच उदय स्थानक होय. तिहां १ वैक्रियिहक, ३ समचतुरस्रसं स्थान, ४ उपघात, ५ तिर्यचगित, ए त्रसचतुष्क, १० पंचेंड्यिजाति, ११ सौनाग्य अथवा होनिग्य, ११ आदेय अथवा अनादेय, १३ यशःकीर्त्तं अथवा अयशःकी ति. ए तेर प्रकृति साथें वार ध्रुवोदयी मेलवतां पञ्चीशनो उदय थाय. अहींआं सौनाग्य होनिग्यना विकल्पें नांगा वे थाय तेने आदेय अनादेय साथें गुणतां चार ते चली यश अथवों गुणतां आठ नांगा थाय. अहींआं वैक्रिय शरीर करतां संघय ए न होय अने संस्थान तो एकज समचतुरस्र होय माटें तेना नांगा न थाय. हवे ते वैक्रिय शरीरनी पर्याप्त पूरी थया पठी, एक पराधात बीजी ग्रुन विहायोग ति, एवे चेलतां सनावीशनो उदय थाय. तिहां पण तेज आठ नांगा पूर्ववत् जाणवा.

ते पठी वैक्रिय श्रीरं श्वासोह्वास पर्याप्त प्री यया पढी उह्नासनो उदय ने लीयं. तेवारं अठावीशनो उदय याय. अहीं आं पण तेहिज आठ नांगा जाणवा अथवा श्रीर पर्याप्तियं पर्याप्ताने उह्नासने अनुद्रें उद्योतनो उदय नेलीयें, ते वारं पण अठावीशनो उदय याय. तिहां पण एज आठ नांगा जाणवा. एम सर्व मली अठावीशने उद्यें शोल नांगा याय.

ते वैक्रिय नापा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुखरनो जदय, ते पूर्वोक्त ज्ञ्चास सहित श्राचीगमांदे नेजतां जगणत्रीशनो जदय याय. तिहां पण नांगा त्राव अषवा श्रासोत्वाम पर्यामाने खरने अनुदयने अने ज्योतने जदयें जगणत्रीशनो जदय याय. तिहां पण नांगा श्राव जाणवा. एम जगणत्रीशने जद्यें सर्व मली नांगा शोल याय.

तथा मुम्पर सहित उंगणत्रीश मांहे उद्योतनो उद्य जेलतां त्रीशनो उद्य यायः निहां पण नांगा त्राठ जाणवाः एम सर्व मली वैक्रिय शरीर करतां तिर्ये च पंचिष्ठियने तथान्न नांगा थायः एटले सर्व मली पंचिष्ठ्य तिर्येचने (४ए६१) नागा थाय त्रने एकंड्याटिक सर्व निर्यचगित मांहे (७०००) नांगा उपजे ह्वे मनुष्यने सामान्यें एकवीश, बद्दीस, अहावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उद्यस्थानक होय. ए पांचे स्थानकें सहज नांगा पंचेंडिय तिर्धचनी पेरें जाएवा. पण एटलुं विशेष जे तिर्थचगित अने तिर्थचानुपूर्वीने स्थानकें मनुष्यगित अने मनुष्यानुपूर्वी कहेवी, तथा उंगणत्रीश प्रकृतिनो उद्य, उद्योत रहित क हेवो तेथी उंगणत्रीशने उद्यें (५४६) नांगा थाय केम के तिहां उद्योतना नांगा टले तथा त्रीशने उद्यें पण (११७१) नांगाज थाय पण अधिक न थाय जे नणी वित्रिय तथा आहारक शरीर करतां ।त्र साधुने उद्योतनो उद्य होय, पण वी जा मनुष्यने न होय. एम शरवाले सामान्यें मुष्यने (१६०१) नांगा होय.

तथा मनुष्यने वैत्रिय श्रीर करतां प शिंग, सत्तावीश, छावीश, उंगणत्रीश छने त्रीश, ए पांच उद्यस्थान होय. तिहां प्रथम १ म ष्यगति, २ उपघात, ३ पंचेंड्यिजाति, ५ वैत्रियहिक, ६ समचतुर संस्थान, १० त्रसचतुष्क, ११ सी नाग्य अथवा दोनीग्य, १२ छादेय अथवा छनादेय, १३ यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति छने बार ध्रुवोद्यी, एवं पञ्चीशनो उदय होय. तिहां पूर्वें जे वैक्रिय तिर्यंचना नांगा कह्या, तेनी पेरें छात नांगा जाणवा.

पढ़ी ते वैत्रिय शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात छने प्रशस्तगतिने उद्यें स नावीशनो उदय होय, तिहां पण एज छाठ नांगा जाणवा

तेवार पढ़ी तेने श्वासोङ्घास पर्याप्त पूरी थये थके सत्तावीशना उद्यमां है उङ्घा सनो उद्य नेततां श्रदावीशने उद्यें पण श्रात नांगा जाणवा श्रथवा साधु ने वैत्रिय करतां शरीर पर्याप्ति पूरी का पढ़ी श्वासोङ्घासना उद्य विना उद्यो तनो उद्य नेले थके श्रदावीशनो उद्य होय. श्रद्धांश्रां एकज नांगो थाय जे नणी साधुने दोर्नाग्य, श्रनादेय श्रने श्रयशःकीर्तिनो उद्य न होय, एम श्रदावीश ने उद्यें सर्व मली नव नांगा थाय.

ते पढ़ी श्वासोब्वास सिंहत अहावीशमध्यें नापा पर्याप्तियें पर्याप्ता यया पढ़ी सुस्वरनो उद्य नेलतां उंगणत्रीशनो उद्य थाय. अहीं आं पण पूर्वली पेरें नांगा आह जाणवा अथवा साधुने स्वरनो उद्य थया विना उद्योतनो उद्य नेलतां उंगणत्रीशने उद्यें नांगो एक थाय. सर्व मली उंगणत्रीशने उद्यें नव नांगा थाय.

तथा सुस्वर सिंहत उंगणत्रीशना उद्यमांहे उद्योतनो उद्य नेसतां त्रीशतुं उद्यस्यानक थाय. अहीं आंपण पूर्ववत् एकज नांगो साधुने जाणवो एम सर्व संख्यायें वैक्रिय मनुष्यना पांच उद्यस्यानकें थइने पांत्रीश नांगा थाय.

तथा संयतने आहारकशरीर करतां पण वैक्तिय मनुष्यने ह्यां तेहीज पांच उद्यस्थानक जाणवां. पण एटलुं विशेष जे वैक्तियिहकने तामें आहारकिक क हेवुं तथा छिहंआं केवल प्रशस्त पदज होय, एटले संयतने छुनेग, छनादेय छ ने छ्यशनो उद्य न होय, तेमाटें पचिशिने उद्यें एकज नांगो जाणवों. तेवार प ठी शरीर पर्याप्ताने पराधात छने प्रशस्तविहायोगित चेले थके सत्तावीशनो उद्य थाय. तिहां पण पूर्वली पेरें एकज नांगो जाणवों ते पठी प्राणपान पर्याप्ताने उ ह्यासनो उदय चेले थके छाविशने उद्यें पण एकज नांगो होय छ्यवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने उ ह्यासने अनुद्यें छने उद्योतने उद्यें पण छाविशनो उ द्य थाय. छितं पण एक नांगो होय. एम छाविशने उद्यें शरवाले वे नांगा थाय. ते पठी नापा पर्याप्तियें पर्याप्ताने उ ह्यासने ह्यास सिहत छाविशना उदय माहे सुस्वरनो उदय चेले, उगणत्रीशनुं उदयस्थानक थाय. तिह्यं पण नांगो एक जा एवो छायवा श्वासो ह्यास पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरने छनुद्यें छने उद्योतने उद यें पण उगणत्रीशनुं उदयस्थानक थाय. छहीं छां पण एकज नांगो जाणवो. एम उगणत्रीशनुं उदयस्थानक थाय. छहीं छां पण एकज नांगो जाणवो. एम उगणत्रीशने उद्यें सर्व मली वे नांगा थाय.

ते पठी नापा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वर सहित जेगणत्रीश्वना जदयमांहे ज्यो तनो जदय नेले, त्रीशनो जदय थाय. तिहां पण एकज नांगो जाणवो. एम सर्व मलीने छादारक शरीर करतां संयतने पांच जदयस्थानकें थड़ने सात नांगा जपजे

हवे केवली मनुष्यने वीश, एकवीश, विवीश, सत्तावीश, छांचीश, र्नणत्रीश, त्रीश, एकत्रीश, नव छने छाठ,ए दश उदयस्थानक होया तिहां १ मनुष्यगित. १ पंचेंडियजाति, ३ त्रस, ४ बादर, ५ पर्याप्त, ६ सुनग, ७ छादेय, ७ यशःकी ति, तथा बार ध्रुवोदयी, एवं वीश प्रकृतिनो उदय सामान्य केवलीने केवल स सद्धात करतां वचला त्रण समय पर्यंत कामण काययोगें वर्त्तताने होया. तिहां नांगो एक जाणवी.

तथा तीर्थकर केवलीने तीर्थकरनाम सहित एकवीशनो जदय, तीर्थकरने केवल नमुद्वात करतां वचना त्रण् समय लगें होय. तिहां पण नांगो एक जाणवो.

तथा पूर्वोक्त वीगमांह श्रोदारिकिहक व संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, प्रथम नंपयण, उपधान श्रने प्रत्येक. ए व प्रकृति चेलतां विश्वानो उदय सामान्य के व नीने नमुद्र्यान करतां बीजे, विश्व श्रेन सातमः ए त्रण समय सुधी श्रीदारिक मि श्रेमों वर्ननां होय. श्रदींश्रां व नंस्थानं व नांगा श्राय, परंतु ते सामान्य मनुष्य

ना उद्यस्थानक ध्यें गणाणा है, ते ाटें छहींछां गएवा नथी तथा ते हवीश ंहे तीथिकरनामकमें नेंजतां सत्तावीशनुं उद्यस्थान तीथि रनो समुद्धात उ रतां बीजे, हें ने सातमे स यें होया तिहां नांगो ए ज जाणवो. छहींछां सं स्थान ए ज स चतुर होय, तेथी नांगाना विकल्प न थाय.

तथा ते ववीश मध्यें १ पराघात, १ उन्चास, १ श्रुन श्रथवा श्र निखगति, ४ सुस्वर श्रथवा स्वर दिली एक, ए चार नेसे त्रीशनो उदय, ए सामान्य केवली ने श्रीदारिक काययोगें वर्तताने होय. श्रहिंशां व संस्थानने वे विहायोगितयें ग एतां बार तेने सुस्वरें, स्वरें गएतां चोवीश नांगा थाय परंतु ते सामान्य म ज्यना उदयस्थानकमांहे गणाणा वे माटें हींश्रां प्रथक् गएया नथी.

ए त्रीशने जिनना सहित करतां एकत्रीशं उदयस्यानक थाय, ते तीर्थंकर सयोगी केवलीने श्रीदारि काययोगें वर्तताने जाएवोः श्रद्धांश्रां समचतुरस्रसं स्थान, प्रशस्तविद्धायोगित श्रने सुखरनोज उदय होय तेमाटें एकज नांगो होय. ते एक शिशमांदेथी श्रीदारिक काययोग रुंधाय तेवारें वचनयोगनो पए रोध था य माटें वचन योग रुंधे खरना उदय विना त्रीशनो उदय थाय. श्रद्धांश्रां पए एक नांगो तीर्थंकरने जाएवोः ते मांदेथी वली उह्यास रुंधे थके उगएत्रीशनो उदय थाय. तिद्दां पए नांगो एक, तीर्थंकरनेज जाएवो.

दवे सामान्य केवलीने पूर्वोक्त त्रीशमांषी वचनयोग रुंधे षके, डंगणत्रीशनो उदय, तिहां उ संस्थान अने बें विहायोगितना नांगा बार थाय. ते सामान्य म नुष्यमां गणाणा हे माटें हिं एषक् न गणवा तेमध्येंषी वली उह्वास रुंधे अहा वीशनो उदय थाय. अहीं आं पण ह संस्थान अने वे विहायोगितना नांगा बार थाय तेपणं सामान्य मनुष्यमां गण्या हे माटें एथक् न गणवा

तथा १ मनुष्यगित, १ पंचें दियजाति, ३ त्रस, ४ वादर, ५ पयित, ६ सुनग, ४ छादेय, ७ यशःकीर्त्ते, छाने नवमुं तीर्थंकरनामकमे, ए नवनो उदय तीर्थंकर छायोगी केवलीने चरमसमयें वर्तताने होय. तिहां नांगो एक जाणवो तथा ते नवमांहेथी एक तीर्थंकरनामकमे विना शेप छाठ प्रकृतिनो उदय, सामान्य छायोगी केवलीने चरम समयवर्तताने होय. तिहां पण नांगो एकज जाणवो एम केव लीना दश उदयस्थानकना मली नांगा वाश्वष्ठ थाय. तेमध्यें १०-११-१०-१९-१९-१०-३९-११-ए-७ ए छाठ स्थानकनो प्रत्येकं एकेक नांगो लेवो. तेमां वे सामान्य केवलीना उदयस्थानकना वे नांगा छाने ठ तीर्थंकरना उदय स्थानकना

व नांगा लेवा एम छाव नांगा, छहीं गणत्रीमां लेवा छने शेष चोपन नांगा तो सामान्य मनुष्यना नांगामांहेज छंतर्जूत गणाणा वे तेमाटे ते थक् यहण नक रवा. एम सर्व संख्यायें सर्व मनुष्यना नांगा (१६१५) थाय.

हवे देवताने एकवीश,पञ्चीश,सत्तावीश,अंहावीश, उंगणत्रीश, अने त्रीश, ए व उदयस्थानक होयः तिहां १ देविहक, ३ पंचेंडियजाति,४ त्रस, ए बादर, ६ पर्याप्त, ३ सुनग, इनेंगमांहेली एक, ए आदेय, अनादेय माहेली एक, ए यश, अयशमां हेली एक अने वार ध्रुवोदयी, ए एकवीशनुं उदयस्थानक नवनी अपांतरालगितयें वर्तताने होय. तिहां सुनग, इनेंग आदेय, अनादेय अने यश, अयश साथें नांगा आठ होय, अहिं दीनींग्य अनादेय अने अयशनो उदय,ते पिशाचादिकने जाणवो

पठी तेहीज शरीरस्य यया पठी ते एकवीश प्रकृतिमांहे वैक्तियिक, उपघात, प्रत्येक, समचतुरस्रसंस्थान, ए पांच प्रकृति जेलीयें अने वैक्तियानुपूर्वी काढीयें, तेवारें पञ्चीशनुं उदयस्थानक थाया तिहां पण तेमज आठ जांगा जाणवा ते पठी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा प्रशस्तविहायोगित, ए वे प्रकृति जेले थके सत्तावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाया तिहां पण आठ जांगा उपजे. अहिं वेवताने अग्रुजविहायोगितनो उदय न होय, तेथी जांगा वधे नहिं।

ते पठी प्राणपान पर्याप्ताने उद्घासनों उदय जेले थके श्रहावीशतुं उदय स्यानक थाय. तिहां पण नांगा श्राठ पूर्ववत् जाणवा. श्रथवा शरीर पर्याप्ताने उ व्यापने श्रह्म श्रमे उद्योतने उद्यें पण श्रहावीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा श्राठ जाणवा. एम श्रहावीशना उदयें सर्व मली शोल नांगा होय.

ते पठी नापापर्याप्तियें पर्याप्ताने सुखरनो उदय ने खे थके उगणत्रीशनो उदय याय. तिहां पण नांगा आठ थाय, देवताने इःखरनो उदय न होय. अथवा व्यामां त्राम पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुखरने अनुदयें अने उद्योतने उद्यें पण उगणत्रीश नो उदय दोय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. जे नणी उत्तरविक्रय करतां देवता न पण उद्योतनो उदय पामीयें सर्व मली उगणत्रीश उवयें शोल नांगा उपजे

ते पृत्ती नापा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुखर सिह्त डंगणत्रीशमांहे उद्योतनो उदय ने च प्रके त्रीशनुं उदयस्थानक होया छही पण नांगा छात पूर्ववत जाणवा. एम देवतान त उदय स्थानके घडने सर्व मजी नांगा चोशह उपजे.

द्ये नारकीने एकवीश, पनीश, सत्तावीश, घ्रष्ठावीश छने डंगणत्रीश, ए पांच एरपस्यानक द्राय. तिद्रां २ नरकिदक,३ पंचेंड्यिजाति,४ त्रस,७ वादर, ६ पर्याप्त, व नंग, ए खनादेय, ए यशः ीर्ति, ा र ध्रुवोदयी लीने ए वी नो र दय, विग्रह्मतियें वर्ततां होयः छहीं ां नांगो ए होय, जे नणी नार ीने प रावर्त्त ान प्रकृति बेहनी छ न तिनोज उदय होयः तेथी वि हप न हो र पठी ते ए वीश्वमांहे १ वैश्वि यि ,३ मसंस्थान,४ उपघा ,५ प्रत्ये , ए पां न नो उद जेलीयें ने नरका पूर्वीनो उदय टालीयें,तेवारें प । प्रकृतिनो उदय, तर्राहे वता पठी शरीरस्थने एपवोः तिहां पण नांगो ए थायः ते पठी शरीर पर्याप्टियें पर्या ने पराघात तथा छ नखगति, ए बेनो उदय नेलीयें, तेवारें सत्तावीशना उदयें पण नांगो ए जाणवोः ते पठी प्राणपान पर्याप्टियें पर्या शने श्वासो ह्यासो इदय ने छे छावीशना उदयें पण नांगो ए ज थायः ते पठी नाषापर्याप्टियें पर्याप्टाने स्वरनो उदय ने छे अक्वावीशना उदयें पण नांगो ए ज थायः ते पठी नाषापर्याप्टियें पर्याप्टाने स्वरनो उदय ने छे थके, उगणत्रीशना उदयें पण नांगो ए होयः ए पांचे उदय स्थानकें थइने नार ीने नांगा पांच उपजेः एम ए चारे गितना उदयस्थान ना शरवा नांगा (१९७ए१) थाय॥ इति उदय नांगा संपूर्ण १० हवे या उदयस्थानकें केटला नांगा रवा ने होय, ते कहे हो.

इ यां जि । रस, तित्तीसा बस्मयाणि तित्तीसा ॥ बारस सत्तरससया, णहिगाणि बि पंच सीईहिं ॥२ए॥

श्रथ—वीश प्रकृतिने उद्य स्थानकें (१ के०) एक नांगो केवलीने होय.
तथा एकवीशने उद्यस्थानकें एकेंडियना पांच, विकलेंडियना नव, पंचेंडिय
तियंचना नव, म ष्यना नव, केवलीनो एक, देवताना श्राठ,तथा नारकीनो एक, एवं (बयाल के०) बेंतालीश नांगा होय. तथा चोवीशने उद्यस्थानकें (१ क्षारस के०) श्रगीश्रार नांगा एकेंडियना होय. तथा पच्चीशने उद्यें एकेंडियना सात. वैक्रियतिर्थचना श्राठ, वैक्रियम ष्यना श्राठ, श्राहार नो एक, देवताना श्राठ, श्रने नारकीनो एक, एवं (तिनीसा के०) तेत्रीश नांगा होय, तथा उद्यी श्रने नहें एकेंडियना तरे, विकलेंडियना नव, पंचेंडिय तिर्यचना बशें ने नेव्या श्री, श्रने सहेज मनुष्यना बशेंने नेव्याशी, एवं (उस्सयाणि के०) उशें नांगा होय. तथा सत्तावीशने उद्यें एकेंडियना ठ,वेत्रि यतिर्थचना श्राठ,वेक्रियमनुष्यना श्राठ, श्राहारकनो एक, केवलीनो एक, देवताना श्राठ श्रने नारकीनो एक, एवं (तित्तीसा के०) तेत्रीश नांगा होय. तेवार पठी (बारससत्तरसस्या के०) बारस एटले बारशें श्रने सत्तरस एटले सत्तरशें ते (वि के०) वे श्रने (पंचसी

छारी-( तिइन उई के० ) ए ज्याणु प्रकृतिनुं सत्तास्थान , बीज्ञं बाणु प्र कतिनुं सत्तास्यानक, (ग्रणनगई के०) त्रीखं नेव्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्यानक, ( अडसी के॰ ) चोथुं अठ्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, ( इतसी के॰ ) पांचमुं वधाशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक. (असीइ के०) वर्हुं एंशी प्रकृतिनुं सत्तास्थान क, (गुणसीई कें। ।तमुं ओगत्याएंशी प्रकृति सत्तास्थान , ( अहयवणन त्तरि के । आतमुं अहोत्तर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, नवमुं बहोंत्तर प्रकृति स त्तास्थानक, दशमुं प । तेर प्रकृति सत्तास्थान , (नव के ) अगी आरमुं नव प्र कृतिनुं सत्तास्थानक, अने ( अहय के० ) बारमुं आत प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक, एवं बार, (नामसंताणि के०) नामकर्मनां सत्तास्थान होय ॥ इत्यक्तरार्थः ॥ ३१ ॥ ह्वे ए बार सत्ता स्थानकतुं विवरण जिल्लीचें हैचें. तिहां नामकमिनी सर्वे प्र कृतिना स दायनी सत्ता होय, तेवारें ज्याणुतुं सत्तास्थानक, तेमांहे जिननामनी सत्ता जेवारें न होय तो बाणुंनुं सत्तास्थानक तथा ज्याणुमांहेथी १ आहारकशरीर, १ आहारक अंगोपांग, ३ आहारकवंधन, ४ आहारकसंघातन, ए चारनी स त्ता न होय, तेवारें नेव्याशीवुं सत्तास्थानक, तेमध्यें वली जिननामनी सत्ता न होय तेवारें अध्याशीनुं सत्तास्थानक तेमांहेथी देविक अथवा नरकिक चवें व्ये यके वचाशीनुं सत्तास्थानक तथा खावचाशीमां हेथी तेच खने वासु मांहे वैक्रियाष्ट्रक चवेली एँशीनी सत्तावंत थको पंचेंड्यिपणुं पामीने देवगतियोग्य बां धे तो देविदक अने वैक्रियचतुष्कने बंधें बग्राशीनुं सत्तास्थानक होय तथा ते पंचें ि्यमां हे नरकगति प्रायोग्य बांधतो नरकिक छने वैक्रिय चतुष्कने वंधें पण ठ्याशीनुं सत्तास्थानक होय. ते पढी नरकिक तथा वैक्रियचतुष्कने उवेसे थके एंशीनी सत्ता होय अथवा देविक अने वैक्रियचतुष्कने उवे छे पण एंशीनी सत्ता होय. ते पढ़ी मनुष्यिक चवेले थके अहोत्तरनुं सत्तास्थानक होय, ए सात सत्तानां स्थानक क्षपक टालीने खनेरा जीवने होय तेमां अनव्यने तथा

े हवे क्षपकने व सत्तानां स्थानक होय, ते कहे वे. त्र्याणु मध्येंथी नरकिक, तिर्थचिक, एकेंडिय, वेंडिय, तेंडिय, चौरिंडिय, एचार जाति तथा स्थावर, आत्रा तप, उद्योत, सक्स अने साधारण ए तेर प्रकृतिने क्ष्यें एंशीनी सत्ता तथा वाणुं मांहेथीए तेरने क्ष्यें उंगणाएंशीनी सत्ता तथा नेव्याशी मांहेथी तेरने क्ष्यें वहोंने रनी सत्ता तथा अधाशी मांहेथी तेरने क्ष्यें पद्योतेरनी सत्ता,होय. तथा र मनुष्य

पूर्वे अप्राप्त सम्यक्लने उप-ए०-ए६-एए-ए चारज सत्तास्थानक होय.

उदय तो विश्वह्गतियें वर्तता एकेंडिय, वि लेंडिय अने पंचेंडिय तिर्यच तथा नुष्य ने होय तिहां सत्तानां स्थानक बाणु, अध्याशी, ढ्याशी, एंशी, अने अहोत्तर, ए पां च सर्व जीवने होय पण मनुष्यने अहोत्तरनी सत्ता न होय. जे नणी अहोत्तरनी स ता मनुष्यिहक उवेखे थाय ते उवेखुं नथी माटें मनुष्यने चार सत्तानां स्थान होय.

अने चोवीशनो उदय एकेंडिय पर्याप्तापर्याप्ताने होय. तिहां पण पूर्वे क ं तेज पांच सत्तानां स्थानक होय पण एट जुं विशेष जे वा यने वैहिय रतां चोवीशने उद्यें वर्तताने एंशी जुं तथा अहोत्तर जुं ए बे सत्तास्थान न होय. जे माटे तेने वैहि यषट्क अने म ष्यिहक निश्चयें जेज के के वैक्रियतो साक्षात् अनुनवे जे, तेमाटें ते उवेजतो नधी ने ते उवेज्या विना नरकि तथा देविह क पण न उवे से समका सेंज वैक्रियषट् उवे से, एवा निश्चय हो. अने वैहिय पट् उवेज्या पजी ज मनुष्य हि उवेजे. परंतु तथी पूर्वें न उवे के, ते हिं एंशी जुं तथा अहोत्तर जुं ए बे सत्तानां स्थान वर्जीने बाकी बाणु अह्याशी, तथा ज्याशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय.

तथा पश्चीशनो उदय पर्याप्ता एकेंड्यि, अने वैक्रियतिर्यच तथा वेति य व्यने होय. तिहां तेज अने अवित् य वायुने तो जे पांच सत्तास्थानक कह्यां, तेज पांच सत्तास्थानक कहेवां जे जणी अहोत्तरनी सत्ता तेनेज हे, बीजाने नथी बीजा सर्व पर्याप्ता जीव अवक्य मनुष्यिहक बांधे, तथा बीजा एकेंड्यि, विकलेंड्यि अने पंचेंड्यि, तिर्यच, जे तेउ अने वायु मांहेथी आवी अवतस्या होय, ते ज्यां लगें मनुष्यिहक बांधे नहीं, त्यां लगें अपयीप्तावस्थायें तेने अहोत्तरनी सत्ता होय तेने पांच सत्तास्थानक होय अने बीजा पर्याप्ताने अहो तिरनी सत्ता विना बाकी चार सत्तास्थानक वित्र य तिर्यच मनुष्यने त्रेवीशने वं धें अने पश्चीशने उदयें होय.

तथा वर्वीशनो उद्य, पर्याप्ता एकेंड्य तथा पर्याप्तापर्याप्ता विकलेंड्य छने ति येच तथा मनुष्यने होय. तिहां पण पूर्वलां पांच सत्तास्थानक होय. तेमध्यें हो नेप्तं सत्तास्थानक तेच तथा छवैक्तिय वायुनी छपेक्त्रायें लेवुं छने बाकीनां चार स त्तास्थानक बीजा जीवो छाश्री त्रेवीशने बंधें छने ववीशने उद्यें होय.

सत्तावीशनो उद्य तेज वायु वर्जीने पयीप्ता बाद्र एकेंड्य तथा वेक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. तिहां छात्रोत्तर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक जाणवां जे जणी तेज तथा वायुने छातप छाने जद्योतनो उद्य नथी तेथी तेने सत्तावीशनुं उद्य स्थान रतां औदारि शरीरनी निवृत्ति पर्याप्तपणे उदयथी निवर्ते तथापि तेने पर्याप्त ज हीयें ते हिं पर्याप्तावस्थायें तो तिहां मिध्यालीने पण अघावीशनो बंधिव रोध नथी. ए देवगति प्रायोग्य अघावीशना ंधक ए वीशने उदयें वर्तताने बाणुं । ने घ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. पण हीं आं जिननामनी सत्ता न होय; जो दापि जिननामनी सत्ता होय, तो तेनो बंध पण होवो जोइयें. तेवारें तो उगणत्रीशनो बंध थाय, तेमाटे जिनना नी सत्ता अहीं न होय.

तथा प शिनो उदय, आहारक साधु तथा वैत्रिय तिर्थेच अने जुष्य सम्यक् हिष्ट ने होय तथा मिष्यादृष्टिने पण होय. तिहां पण सा न्यें एज बे सत्ता स्थान होय पण एटलुं विशेष जे आहार ना धणीने आहारक चतुष्क अवश्य होय, तथी तेने एकज बाणुनुं सत्तास्थानक होय. शेप बीजा जीवोने वे सत्ता स्थानक होय. ए अष्ठावीशने बंधें प शिशने उदयें बे सत्तास्थानक जाणवां.

तथा उद्योशनो उदय क्रायि अने क्रायोपशिम सम्यक्ष्ष्टि शरीरस्य पंचेंडिय तिर्यच नुष्यने अध्ववीश, देवगित प्रायोग्य वांधतां बाणु, अने अवधाशी ए वे सत्तानां स्थानक होयः तथा सत्तावीशना उद्यें आहारक साधु तथा वैक्रिय तिर्यच मनुष्य सम्यक्ष्ष्टिने तथा मिण्यादृष्टिने तेहीज बे सत्तानां स्थानक जाणवां. तेमज अधावीश ओगणत्रीशनो उदय पण अनु में शरीर पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने आवावीशनो उदय होय, अने थासोह्यास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने ओगण त्रीशनो उदय होय, ते क्षायक अथवा वेदक सम्यक्ष्ट्रिने तथा आहारक साधु अने वैत्रिय तिर्यङ् मनुष्यने देवगित प्रायोग्य अधावीशने वंधें होय. तिहां वाणुं ने अध्याशी, ए वे सत्तास्थानक होय.

तथा त्रीशनो उद्य पंचेंड्य तिर्थंच मनुष्य सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि तथा आहारक करतां साधुने तथा वैक्रिय करतां साधुने होय. तिहां सामान्यें वाणुं नेव्याशी, अघ्याशी, उधाशी, ए चार सत्तास्थानक होय. अने विशेपादेशें पंचेंड्रिय तिर्थंच मनुष्य मिथ्यादृष्टिने नरकगित प्रायोग्य अघावीश बांधतां त्रीशने उद्यें वाणुं नेव्याशी, अघ्याशी अने उधाशी, ए चार सत्ता स्थानक होय. तिहां वाणु अने अघ्याशी, ए वे पूर्वेली पेरें नाववां अने नेव्याशीनी सनानो विधि कहे हे. कोइएक जीव, नरकायु बांध्या पढी सम्यक्त लहीने तीर्थंकर नाम कमें बांध्युं, ते जीव, नरकें जावाने सन्मुख थको सम्यक्त वमे. तिहां मिथ्यात्वें गया पढी तीर्थंकरनो वंध मटे, अने तीर्थंकरनी सत्ता होय ते तीर्थंकरनी सत्ता

ष्य रिष्यात्वीने वि सेंडिय अने तिर्येच नुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीशनो बंध बां धतां बाणु, अह्याशी, व्याशी अने एंशी, ए चार सत्तास्थानक होयः

तथा अहावीश, श्रोगणत्रीश, ए बे उदय वि लेंडिय पंचेंडिय तियंच श्रने म नुष्य तथा वैक्रिय पंचेंडिय तिर्यंच मनुष्य देव श्रने नारकी श्रोगणत्रीश बांधतां होय. तिहां पण तेहीज पूर्वोक्त चार सत्तास्थानक जाणवांः

तथा त्रीशनो उदय विकलेंडिय तथा पंचेंडिय तिर्यंच अने मनुष्यने तथा उ द्योतने चद्यें देवताने होय तथा ए त्रीशनो चद्य विकलेंडिय अने पंचेंडिय तिर्यचने चद्योतने चद्यें होय. तिहां नुष्यगति प्रायोग्य श्रोगणत्रीश बांधतां चार सत्तास्थान , एकेंड्य, वि लेंड्यि ने पंचेंड्यि तिर्यचने होय तथा तिर्यग्गति अने प्यगित प्रायोग्य ोगएत्रीश बांधतां मनुष्यने पोतपोतानां उदय स्थान ने विषे यथायोग्यपणे वर्तताने पण अहोत्तेरतुं सत्तास्थानक न होय, जे नणी ष्यिदक बतां होतेरनी सत्ता न होय, तेमाटें तेहीज चार सत्तानां स्थानक जाण वां. तथा देव नारकीने पंचेंड्यि तिर्थेच तथा मनुष्य प्रायोग्य श्रोगणत्रीरा वांध तां स्वस्वोद्यें वर्तताने बाएं ने अवघाशी, ए वे सत्तास्थानक होय, तिहां मिष्याली नारकीने तीर्थंकरनाम में बतां नुष्यगति प्रायोग्य श्रोगएत्रीश वांध तां स्वस्वोद्यें यथायोग्यपणे वर्तताने एक नेव्याशीतुं सत्तास्थानक होय जे नणी मिथ्यालीने आहारकचतुष्क तो जिननाम वतां न होयः तेमाटें ज्याणुमांहेथी आहारकच ष्क काढतां नेव्याशीनुं सत्तास्थानक होय. एम विकलेंडिय, पंचेंडिय तिर्थेचने ए बेद्धने अहीं आं चार सत्ताना स्थानकनी नावना जेम त्रेवीशने बंधें कही तेमज सर्वत्र जाणवी पण एटलुं विशेष जे मनुप्यगति प्रायोग्य योगएत्रीशने बंधें होतेर विना बीजां चार सत्तानां स्थानक होय. ति र्थग्गति प्रायोग्य श्रोगणत्रीशने बंधें पांच सत्ता स्थानक होय तथा देव गित प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां अविरित सम्यक्दिष्टिने एकवीश, ठवीश. अहा वीश, श्रोगणत्रीश श्रने त्रीश, ए पांच तथा श्राहारक श्रने वैक्रिय करतां साधने प्चीश, सत्तावीश, अहावीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय, तथा देशविरति मनुष्यने वैक्रिय करतां उद्योतनो उदय न होय, तेमाटें त्री शना उदय विना बीजां चार उदयस्थानक होय. तिहां देवगति प्रायोग्य तीथिकर नामकमे सिहत ओगणत्रीश बांधतां त्याएं तथा नेव्यागी. ए वे सत्तानां स्या नक पांचे उदय स्थानकें होय. तथा आहारक साधुने देवगति प्रायोग्य ओगण

होय. तिहां तो एकज ज्याणुनुं सत्ता स्थानक होय परंतु । जां न होय. केमके ए जिल्ला प्रकृतिनो बंध तो आहार चतुष्क तथा जिननाम सहितज होय.

तथा (एगेएगुद्यश्चरुतंतिम के०) एक पशःकीर्त्तेह्नप एकने वंधें पण एकज त्री श प्रकृतिनुं उद्यस्थानक दोय, तथा तिहां श्चाठ सत्तानां स्थानक दोय, जे ज णी नामकर्मनी ए ज यशःकीर्त्तेह्नप प्रकृतिनो वंध श्चपूर्वकरणना सातमा नाग थी मांमीने दशमा गुणुठाणा पर्यंत दोय, ते श्चतिविश्च माटें वैक्तिय तथा श्चा हार रे नहीं तेथी तेने बीजा पञ्चीशादिकनां उदय स्थानक विश्व यादिकनी पर्याप्ति योग्यनां न दोय, मात्र ए ज त्रीश प्रकृतिनुं उद्यस्थानक होय. तिहां त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी, श्रठ्याशी, एंशी, श्रोगणाएंशी, ठहों तेर श्रने पञ्चोत्तर, ए श्चाठ सत्ता स्थानक दोय, तेमांहेलां ए१—ए१—एए—ए०— ए चार प्रथमनां सत्तास्थान उपश श्रेणिनी अपेक्तायें होय, श्रथवा क्ष्पकश्रेणीयें पण ज्यां लगें निवृत्तिबाद्रस्ता प्रथमनागें जइने १ स्थावर, १ स्त्र्झा, ४ तिर्थेचिहक, ६ नरकिक, १० जातिचतुष्क, ११ साधारण, १२ श्चातप, १३ उद्योत, ए तेर प्रकृति न खपावे तिहां लगें होय श्रने एतेर प्रकृति क्ष्य कस्ना पठी श्चनेक जीवनी अपेक्तायें उपरतां ए०—७ए—७६—७५—ए चार सत्तास्थानक क्ष्पकश्रेणीयें होय. ( उदरयवंधो के० ) तथा उपरांत वंधें बंधने श्चावें ( वेयग के० ) वेदकने

( उवरयबंधो के० ) तथा उपरांत बंधें बंधने अनावें ( वेयग के० ) वेदकने उदयनां स्थानक, ( दस के० ) दश होय अने ( संतिमवाणाणि के० ) सत्तानां स्थानक पण, ( दस के० ) दश होय, तिहां वीश, एकवीश, विद्यार्थीश, सत्तावीश, अहावीश, ओगणत्रीश, त्रीश, ए त्रीश, नव अने आव, ए दश उदयनां स्थानक अने ए३-ए१-ए०-००-००-७ए-७६-७५-ए-एदश सत्ता स्थानक होय.

तेमध्यें केवलीने आत समयनो केवल समुद्धात करतां, वचालें त्रीजे, चोषे अने पांचमे ए त्रण समय पर्यंत कामेण योगें वर्ततां ? पंचेंड्यजाति, ४ त्रस त्रिक, ५ सुनग, ६ आदेय, ७ यशःकीर्ति, ७ मनुष्यगति, अने वार ध्रुवोदयी, एवं वीश प्रकृतिनो उदय होय. तिहां सत्ता स्थानक ओगणाएंशीनुं तथा आहा रक चतुष्क विना पञ्चोत्तरनुं ए वे सत्तास्थानक होय.

तथा तीर्थंकरने केवली समुद्धात करतां एज वचला त्रण समय पर्यंत तीर्थं कर नामकमे सहित एकवीशनुं उदय स्थानक होय. तिहां जिननाम सहित वे माटें एंशी अने वहोत्तर, ए वे सत्तास्थानक होयः

तथा केवलीने समुद्धात करतां छौदारिक मिश्रयोगं वर्ततां छौदारिक दिक,

वज्ज्यननाराचनंवयण, ह संस्थान मांहेज्जं एक संस्थान, उपयात अने प्रत्येक. ए ह प्रकृति प्रवेक्ति वीश्रमांह चेले थके हवीश्नो उद्य होय. तिहां वीज, हे छने मातम ए त्रण समय पर्यत खोगणाएंगी छने पचोनेग, ए वे सत्तास्थानक होय

तया तीर्घकरने तेज स्थानकें तीर्घकरनाम सहित सत्तावीशनो ठढ्य होय. तिहां एंशी अने ठहें। ए वे सत्तास्थानक होय.

तया तं ववीशमध्यें परावात, ज्ञ्वास, श्रुन तथा श्रश्चनखगित माहेनी एक स्वा वे स्वर माहेनी एक ए चार नेजनां त्रीशनां जर्य, श्रीदारिक यागें वनता केवलीन श्रुपवा श्रुगीश्चारमे ग्रुणवाणे पण होयः तिहां त्र्याणुं. वाणुं. नव्याशी श्रुव्याशी, एंशी, श्रोगणाएंगी, वहांत्तर, श्रुने पंचात्तर, ए श्राव सत्तास्थानक ते माहेला पहलां चार, जपश्मश्रेणीनी श्रुपेक्षायें श्रुने वहलां चार क्रीण कपायने तथा तथांगी केवलीने श्रुने तथिकरने होयः निहां श्राहारकचतुष्कनी सना स हित तीथकरने एंशी श्रुने श्रुते श्रुते श्रीयकरने वहांतर, श्रुतीयकरने पञ्चोत्तर, ए वे वे सत्ता स्थानक होयः

तथा एकत्रीशन उद्यें एंशी अने ठहोंत्तर, ए वे नत्तास्थानक तीर्थकर केवजी नेज जाएवां जे नए। सामान्य केवजीने तो एकत्रीशनो उद्य नज होय. ते एक त्रीश मध्येंथी तीर्थकरने वचनयोग रुंध त्रीशनो उद्य होय तिहां एंशी अने ठ होंतर, ए वे सत्तास्थानक होय तथा सामान्य केवजीने औदारिक योगं वर्नतां त्रीशन उद्यें ओगणाएंशीन पञ्चात्तर, ए वे सत्तास्थानक होय.

ते त्रीशमध्येंथी वचनयोग रंथ सामान्य कवलीने खोगणत्रीशनो उदय होय. तिहां खोगणएंशी खन पचांतर, ए वे सत्ता स्थानक होय तथा तीर्थंकरने वचनयोग रंथे त्रीश तेमांथी श्वासोत्वास रंथे खोगणत्रीशनो उदय होय. तिहां एंशीने वहीं तेर, ए वे सत्तास्थानक होय. एवं खोगणत्रीशने उद्यें चार सत्तास्थानक होय. तथा सामान्यकेवलीने वचनयोग रंथ खोगणत्रीशनो उदय हतो ते मध्येंथी श्वासो ज्ञास रंथ खानवीशना उद्यें खोगणाएंशी खन पद्योत्तर, ए वे सत्तास्थानक होय.

तथा नवना उड्वें तीर्थकरने अयोगी गुणवाण एंजी अने वहाँ तर तथा वेलें समयें नवतुं ए त्रण तनास्थानक होया तथा तामान्यकेवलीने आवना उड्वें अयोगीना विचरमसमय लगें ओगणाएंजी अने पन्नोत्तेर अने वेह्रलें समयें आवतुं एवं त्रण सनास्थानक होया एम संवेधें नांगा त्रीज्ञ होया ए रीतें ए नामकर्मनों वंयाद्यमना संवेध सामान्यदेजें कह्यों ॥ इत्यर्थः ॥ ३४॥

॥ अथैतेषां जीवस्थानानि गुणस्थानानि वाश्रित्य, खामी दृर्घते ॥ द्वे अनुक्रमें ए आन कर्मनी प्रकृतिनां स्थानक अने तेना नांगा चौद जीवस्थानक अने चौद गुणस्थानक आश्रयीने खामी प्रत्यें निर्णय करीने विशेषादेशें देखाडे हे.

> तिविगण पगइ ठाणे,हिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु॥ नंगा पर्वजियवा, जह जहा संनवो नवइ॥ ३५॥

अर्थ-वंध, उदय अने सत्ता, ए (तिविगप्प के०) त्रण विकल्प, तेना (पग इंगणेहिं के०) आठ कर्मनी प्रकृतिनां स्थान एक, बे, इत्यादिक तेने संवेधें जे नांगा उपजे, ते नांगा (जीव के०) चौद जीव स्थानकने विषे अने (गुणस हि एसुगणेसु के०) चौद गुणस्थान विषे पूर्वें जे कह्या, ते रीतें तेना अनुसा रें (नंगापर्जिचवा के०) नांगा प्रयुंजवा. (जञ्जल्लासंनवोनवइ के०) जिहां जे नांगो संनवे, तिहां ते नांगो लगाडवो॥ इति स यार्थः ॥ ३५॥

॥ अथ प्रथमजीवस्थानान्यधिकत्याद् ॥ द्वे प्रथम चौद जीवस्थानक आश्रयीने ज्ञानावरणीय था छंतरायकमेना नांगा कहे हे.

तेरससु जीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगणो ॥ इकंमि ति इ विगणो, करणं पइ इच्च अविगणो ॥ ३६॥

अर्थ—(तेरससुजीव के०) एक संज्ञी पर्याप्तो टालीने पहेलां तेर जीवस्था नकने विषे (संखेवएसु के०) संह्रेपें एटले थोडामांहे घणा जीव नाम कहीयें. ते जणी संह्रेप जीव जेद पाठ कहाों। तिहां (नाणंतराय के०) एक ज्ञानावर णीय अने बीज़ं अंतराय, ए बे कमेना बंध, उदय अने सत्ता, ए (तिविगणो के०) त्रण विकल्पनो एक जांगो होय. एटले पांचनो वंध, पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता होय. एना वंध, उदय अने सत्ता ध्रुव हे. ते जणी सर्वने होय. तथा (इकंमि के०) एक संज्ञी पंचेंड्य पर्याप्ता जीवजेदने विषे (तिइविगणो के०) तथा (इकंमि के०) एक संज्ञी पंचेंड्य पर्याप्ता जीवजेदने विषे (तिइविगणो के०) तथा (इकंमि के०) एक संज्ञी पंचेंड्य पर्याप्ता जीवजेदने विषे (तिइविगणो के०) तथा विकल्प तथा बे विकल्पनो एकेक जांगो होय. एटले पांचनो वंध. पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता, ए त्रणनो विकल्प, दशमा ग्रणवाणा लगें होय, अने ते वार पही ज्ञानावरणीय तथा अंतरायनो वंध नथी माटें पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता, ए बेनो विकल्प अगीआरमा अने वारमा ग्रणवाणा लगें होय, तथा (करणंपइइडअविगणो के०) करण एटले इव्यमननी अपेक्शयें सं

ड़ीर्ड जे सयोगी केवली तथा अयोगी नवस्य केवली. तेन विषे ड्रानावरणीय अने अंतरायनो बंध. उदय अने सत्तानो एक पण विकल्प नथी माटं अविकल्प है. अहींश्रां इव्यमननी अपेक्षायें केवलीने संडीकह्यों. चूर्णकारं असंडी कह्यों है. "मणकरणं केवलिणों.विश्वित्त तेणसिल्लिणों चुर्चते ॥ मणोविनाणपटुच, तेणसिल्लोन हवंति" ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३६॥

अथ द्रीनावरणजीवस्थाने वाह ॥ हवे द्रीनावरणीयना वंधोदय सत्तास्थानक ना नांगा चाद जिवस्थानकने विषे विचारे हे.

तेरे नव चछ पणगं, नव सत्ते गम्मि नंगमिकारा॥ वेळाणिळा छाछ गोए, विजक मोहं परं वुहं॥३०॥

अर्थ- (तेरेनवच के०) संज्ञी पंचें डिय पर्याता विना तेर जीवस्थानकने विपे द्दीनावरणीयकर्मनो नवनो वंध, चारनो उदय अने (नवसने के०) नवनी सत्ता, तथा नवनो वंध. (पण्गं के०) पांचनो उदय अने नवनी सत्ता. ए वें नांगा होय. अने (एगिनमांगिसिकारा के०) एक संज्ञी पंचें डिय पर्याता जीवस्थानकने विषे पूर्वें जे द्दीनावरणीयना संवेधें सामान्यें अगीआर नांगा कह्या ते अगीआर अहीं आं लेवा. हवे (वेअणीअआउगोए के०) वेदनीय आयु अने गोत्र, ए त्रण कमेने विपे वंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिनां स्थानक अने नांगा ते आगमोक प्रकारें जीवस्थानकने विपे कहीने (विनक्षमोहं परंचु के०) पत्री मोहनी य कमेना नांगा वहेंचीने कहेशे॥ इति समुच्यार्थः॥ २०॥

अथ वेदनीयगोत्रयों नैगक्कानार्थिमयमंतर्नाष्यगाया. हवे वेदनीय अने गोत्रकर्मना नांगा चौद जीवनेर्दे वहेंचवाने नाष्यनी गाथा कहे हे.

पकत्तम सिन्न स्रोत, अह च व वेयिणय नंगा॥ सत्तय तिगं च गोए, पत्ते अं जीव ठाणेसु॥ ३०॥

अर्थ- (पक्तनगसिन्न के०) संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्ताने विषे वेदनीयकर्मना (अठ के०) आत नांगा जे पूर्वें सामान्यपणे कह्या, ते अहींआं विशेषपणे लेवा तथा (इअरे के०) ए संज्ञीपंचेंडिय पर्याप्ता विना बीजा तेर जीवस्थानकें ! अ शातानो बंध,अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, १ अशातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, १

शातानो वंध, शातानो उदय अने बेंहुनी सत्ता, ए (चडक्कंचवेयिणयजंगा कें ) ए चार नांगा वेदनीयना तेर जीवजेर्दे होय. अहीं आं सयोगी केवलीने अयोगी केवलीनी पेरें इच्यमनना संबंध नएी संक्षी लेखवतां विरोध नहीं. अन्यथा आगला आत ांहेला चार नांगा तो केवलीनेज होय, ते ।रएमाटें पर्याप्त संक्षीने विपे वेदनीयना आत नांगा कह्या हतां विरोध नथी.

तथा (सचयितगंचगोए के०) गोत्रकर्मना जे पूर्वे वंध, उद्य अने सत्तानो सं वंध रतां सामान्यादेशें सात जांगा कह्या, तेज अहीं आं पर्याप्ता सिन्न पंचें हिय ने सात जांगा लेवा. तेमां हे नी चैगें त्रनो वंध, नी चैगें त्रनो उद्य, नी चैगें त्रनी सत्ता, ए प्रथ जांगो तेज, वाजमां हे घणो ाल रहेतां जे जीवें ज चैगें त्र जे वहें छुं होय, ते जीव, तेज वाज हें थी आवी पर्याप्ता संज्ञी पंचें हियपणे अवतरे, ते ने केटला ए ाल पर्येत, ए जांगो पामी यें, परंतु बीजा जीवने विपे ए जांगो न पामी यें तथा बीजा जांगा जेम पूर्वें ह्या, ते अहीं आं पण लेवा. तथा वीजा तेर जीव जें दें र नी चैगें त्रनो बंध. नी चनो उद्य अने नी चनी सत्ता, १ नी चनो वंध, नी चनो उद्य अने वें हुनी सत्ता, ए त्रण जांगा होय. तमां हे पहेलो जांगो तो तेज, वाजमां हेथी उच्चेगों त्र जवेली ने बीजे जीव जे दें अवतरे, तेनी अपे हायें लेवो. परंतु बीजा नें न होय, तथा उच्चेगों त्रनो उद्य तो तिर्यंच गतिमां हे तथा अपर्याप्तांने विषे न होय तेमाटें बीजा चार जांगानो तेर जीव जे दें निषेध जाणवो. परंतु जे जांगाने विषे नी चनो उद्य होय, ते अही आं लेवा. (पत्ते अंजीवताणे सु के०) ए तेर जीवस्थान कने विषे पत्ते से त्रण जांगा होया इति ससु यार्थः ॥ ३०॥

श्रथ श्रायुनेगप्ररूपणार्थिमियमंतर्नाष्यगाथा ॥ हवे ए चौद जीवनेदें श्रायुःक मीता नांगा प्ररूपवाने श्रथं नाष्यती गाथा लखीयें ठैयें.

प ता पक्तरा, समणा प त अमण सेसेसु॥ अठावीसं दसगं, नवगं पणगं च आठस्स॥ ३ए॥

अर्थ-( पक्तनापक्तनगत्तमणा के॰) पर्वाप्ता अने अपर्वाप्ता तमणा एटले मन सहित तेने संज्ञी कहीयें, एटले संज्ञी पंचेंडिय पर्वाप्ता अने वीजा संज्ञी पं चेंडिय अपर्याप्ता जाणवा. तिहां संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्तामांहे आयुःकमेना नांगा, ( अष्ठावीसं के॰) अष्ठावीश होय. तेमध्यें नारकीना पांच तिर्वचना नव, मनुष्य ना नव, अने देवताना पांच. एम अष्ठावीश नांगा पूर्वें कह्या है तेम जाणवा. त था संज्ञी पंचेंड्य अपर्याप्तामां हे आयुः कर्मना नांगा (दसगं के॰) दश होयः केम के ए अपर्याप्ता लिब्धियी जाणवाः ते लिब्ध अपर्याप्ता तो मनुष्य अने तिर्वच ज होय. तथा देव अने नारकी, ए वेहु लिब्ध अपर्याप्ता नज होय. माटें देवताना पांच अने नाकीना पांच, एवं दश नांगा पूर्वोक्त अष्ठावीशमां हेथी टले, तेवारें अढार नांगा रहे. तेमध्येंथी वली सिन्नआ अपर्याप्ताने देव नारकीनो वंध न होय तेमाटें

देव नारकीना वंधप्रायोग्य जे मनुष्य तिर्यंचने विषे जे आयुःकर्मना नव नव नांगा कह्या है तेमध्येंथी पण एक देवायुनो वंध तिर्यंचायुनो उदय अने वेहु आयुनी सत्ता,बीजो नरकायुनो वंध, तिर्यगायुनो उदय अने वेहु आयुनी सत्ता, ए वे नांगा, आयुर्वेधकालावस्थाना जाणवा. तथा उत्तरावस्थायें वंधन्यग्रन्य कालें तिर्यगायुनो उदय अने देवायु तथा तिर्यगायुनी सत्ता. चोथो तिर्यगायुनो उदय अने नरकायु तथा तिर्यगायुनी सत्ता, ए चार नांगा तिर्यचना, तेवाज चार नांगा मनुष्य माहेला, एवं आन नांगा टले, तेवारें शेप दश नांगा रहे, तिहां तिर्यचगतिमध्ये एक आयुर्वेधयी पूर्वावस्थानो तथा वे वंध कालावस्थाना अने एक तिर्यगायुनो उदय, तथा वे तिर्यगायुनी सत्ता, वीजो तिर्यगायुनो उदय, अने तिर्यग् तथा मनुष्या नी सत्ता, ए वे उत्तरावस्थायें वंधग्रन्य कालें होय. एवं पांच तिर्यचगतिना तेमज पांच मनुष्यातिमाहेला, एवं दश नांगा आयुना संजी अपर्याप्तामाहे लाने.

तथा (पक्कतश्रमण के॰) मनरिहत एट जे पर्याप्ता श्रमंत्री पंचें डियने विषे (नवगंके॰) श्रायुःकमेना नव नांगा जे पूर्वें तिर्यचगितमध्यें सामान्यें कह्या, ते श्रद्धीं श्रां पण जेवा, केमके देव श्रने नारकी तो श्रमङ्गीश्रा होयज नहीं श्रने म नुष्य पण श्रमङ्गित्र पर्याप्तों न होय, मात्र तिर्यंचज श्रमङ्गित्र पर्याप्तों होय, तेने चारे गितना श्रायुनों बंध होय, माटें एने तिर्यंचगित मांहेजा नवे नांगा होय.

ए रीतें एक संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्तो, बीजो संज्ञी पंचेंडिय अपर्याप्तो, त्रीजो अ संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्तो, ए त्रण जीव नेद टाली, (सेसेसु के०) शेष रह्या जे अ गीआर जीवनेद, तेने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें (पणगंचआ उस्स के०) आयुःकर्मना पांच पांच नांगा होय. ए अगीआरे जीव स्थानकें तिर्यंच होय, अने ते देव तथा नारकी जुं आयु न बांघे, तेमाटें आयुर्वेध कालकी पूर्वे एक नांगो तथा आयुर्वेध कालें वे गतिना वे नांगा अने आयुर्वेधकाल पढ़ी वे नांगा, एवं पांच नांगा होया एमां असंज्ञी पंचेंडिय संसूर्त्विम अपर्याप्ता मनुष्य पण होय, तेवारें पांच तिर्यचना छने पांच तेना पण नांगा उपजे. एवं दश नोंगा उपजे पण ते छहींछां सूत्रकारें कह्या नयी,ते ग्रुं जाणीयें शा हेतुयें विवक्ता करी नहीं? ते विचारवुं॥ इति ॥३ए॥ ॥ अथ जीवस्थानेषु मोहनीयकमीह ॥ हवे चौद जीवस्थानकने विपे मोहनी य कमैना वंध, उदय छने सत्तानां स्थानकनो संवेध विवरीने कहे हे.

ख्य सु पंचसु एगे, एग डगं दसय मोह वंध गए ॥ ति ग च नव दय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥

अथ-(अहसुपंचसुएगे के०) आठ जीवस्थानकने विपे तथा पांच जीव स्थानकने विषे अने एक जीवस्थानकने विपे अनुक्रमें (एगड़गंदसय के०) एक, वे अने दश, (मोह्बंधगए के०) मोह्नीयप्रकृतिनां बंधस्थानक होय तथा अनुक्र में ते एकेका बंधस्थानकें (तिगच चनव च दयगए के०) त्रण, चार अने नव, च दयनां स्थानक होया अने अनुक्रमें (तिगतिगप रससंतिम के०) त्रण, त्रण अने पंदंर सत्तानां स्थान .होय॥ इत्यह्र राथिः॥ ४०॥

श सूक्ता एकेंडिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ३ वादर एकेंडिय अपर्याप्ता, ४ वेंडिय अपर्याप्ता, ५ तेंडिय अपर्याप्ता, ५ चौरिंड्य अपर्याप्ता, ७ असंक्षी पंचेंडिय अपर्याप्ता, ए आत जीवनेंदें एकज वावीश प्रकृतिनुं वंधस्थानक होय. जे नणी ए लिंधनी अपेक्षायें अपर्याप्ता कह्या हे, माटें तेने तो मिण्यात्वज होय. ते मिण्यात्वें तो वावीशनोज वंध होय, तिहां त्रण वेदें वे युगल साथें नांगा ह पूर्वली पेरें लेवा तथा आह, नव अने दश, ए त्रण उदय स्थानक होय. अहीं आं सातनुं उदयस्थानक न होय, केमके सातनो उदय अ नंतानुवंधीआ विना होय हे तेतो उपशमश्रेणीथी पडतां मिण्यात्वें आवे, तिहां आव लिकामात्र लगें होय, ए आह जीवनेंदें श्रेणी नथी माटें सातनो उदय न होय तथा एकेका उदयें अधावीश, सन्तावीश अने हवीश, ए त्रण सन्तास्थानक होय.

बादर एकेंडिय तथा त्रण विकलेंडिय अने असनीआ पंचेंडिय, ए पांच पर्याप्ता जीवनेदने विपे बावीश अने एकवीश, ए वंधस्थानक होया तिहां जिल्य पर्याप्ता केट ला एकने करण अपर्याप्तावस्थायें सास्वादननावें मिण्यात्वनो वंध न होया, तेवारें एकवीशनो वंध पामीयें. अही आं वावीशना वंधें साता आठ, नव अने दश. ए चार जदय स्थानक होया. अने एकेका जद्यें अठावीश सन्तावीश, अने ठवीश. ए त्रण सन्तास्थानक होया तथा एकवीशने वंथें साता, आठ अने नव, ए त्रण जद्य

स्थानक होय छने ते एकेके उदयस्थानकें एकेकुं छा हावी शतुं सत्तास्थानक होय. केमके एकवी शनो बंध, ते सास्वादनें ज होय. तिहां सास्वादने तो निश्चे छा हावी श तुंज सत्तास्थानक होय.

तथा एक संज्ञीपंचें िच पर्याप्ताना जीवनेदने विषे दशे वंध स्थानक होया अने नवे उदय स्थानक होया तथा पंदरे सत्तास्थानक होया तेनुं सक्ष धने नांगा पूर्वली पेरें जाणी लेवा ॥ इत्यर्थः ॥ ४०॥ अथ नामकम्मे जीवस्थानेष्वाह ॥ हवे चौद जीवस्थानकने विषे नामकमेना वंध,

चद्य अने सत्तानां स्थानक वे गाथायें करी कहे हे.

पण इग पणगं पण चन, पणगं पणगा ह्वंति तिस्व।। पण बणणगं बन, णणगं अठ ठ दसगंति॥ ४१॥ सते व अपज्जता, सामी सुहुमाय वायराचेव ॥ विगलिंदि आन तिन्निन, तहय असन्नी अ सन्नीअ ॥ ४०॥

अर्थ-अहीआं प्रथम गाथायें वंध, उदय अने सत्तानां स्थानक कहे हे. अने बीजी गाथायें तेना खामी कहे हे माटें वे गायानो अर्थ नेलो जोडीयें, एटले (पणडुग के०) पांच वंधस्थानक, अने वे उदय स्थानक, (पणगं के०) पांच सना स्थानक एना ( सत्तेवअपक्षतासामी के० ) सात अपर्याप्ता जीव नेंद. ते एना स्वामी जाणवा तथा (पणच उपणगं के ०) पांच वंधस्थानक, चार उदयस्थान क, अने पांच सत्तास्थानक, तेना खामी ( सुद्धमाय के ० ) सूद्ध्य एकेंडिय पर्याप्ता जाएवा तथा (पएगाइवंतितिस्वेव के०) त्रणे पांच पांच स्थानक जाएवां एटले पांच बंधस्थानक, पांच उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानकना खामी होय, ते कोण होय? तोके (बायराचेव के०) बादर एकेंडिय पर्याप्ता एना स्वामी होय तथा (पणह्रणणगं के०) पांच बंधस्थानक, व चद्यस्थानक अने पांच सत्तास्थानक एना स्वामी (विगिलिंदि । चतिन्निच के ०) बेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय, ए त्रएो विकलेंडि य पर्याप्ता जाएवा तथा ( वहण्यएगं के ० ) व बंधस्थानक, व उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानक, एना खामी ( असन्नीअ के० ) असंज्ञी पंचें दिय पर्याप्ता जी व जाणवा (तह्य के ) तेमज ( फहदसगंति के ) आत बंधस्थानक, आत वदयस्यानक अने दश सत्तास्थानक, एना खामी (सन्नीअ के०) संज्ञी पंचें डिय पर्याप्ता जाएवा ॥ इति गाथा दयाक्त्रार्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

हवें वि ारें अर्थ लखीयें छैयें. अपयीप्ता सूच्चादिक सांत जीव जेद, तेने देव, नर गति प्रायोग्य बंध न होय, ते ाटें छा हावीश, ए त्रीश छने एक, ए त्रण वंधस्थान विना त्रेवीश, प शिश, वीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच वं धस्थानक तिर्थेच अने मनुष्य प्रायोग्यज होयः तिहां एकेका अपर्याप्ताने विषे (१३७१७) बंध नांगा उपजे तथा ए सा जीव नेदमांहेला अपयोप्ता सूक्त अने बादर एकेंडिय, ए बे जीव जेदने विषे ए वीश अने चोवीश, ए बे उदयस्था न होय, तिहां ए वीशने उदयें सर्व न पद नणी एकज नांगो होय तथा चोवीशने उद्यें त्ये ने साधारणना विकल्पें बे नांगा होया एम बेहुना मजी एके । जीवनेदें त्रण त्रण नांगा होयः ने ज्ञेष पांच पर्याप्ताना जीवनेदें ए वीश ने विद्याश, ए बे बे चद्यस्थान प्रत्येकें होय. हीं आं विद्याशाना चद्य मांहे साधारणनो चदय नथी । दें एकेका चदयें एकेक नांगोज चपजे तेथी बो उदयना बे बे नांगा एकेका जीव नेदें होय तथा सन्नीत्रा अपयोप्तामां बे तिर्येच पंचें ि्यना अने बे मनुष्यना,एम चार नांगा प्रत्येकें होय. ए सात अपयोप्ता जीव नेदें प्रत्येकें बाणु, अद्याशी, व्याशी, एंशी अने अद्योत्तर, ए पांच पांच सत्तास्थानक होय. अहीं आं तिर्यचगितमांहे जिनना नी सत्ता न होय, माटे त्याणुं अने ने व्याशी, ए बे सत्तास्थानक न होय. जे आहारकचतुष्क संय प्रत्यिक बांधीने व जी मिष्यात्वें गयो होय तेने जिहां सुंधी छाहारक चतुष्क चवेछे नहीं तिहां सु धी बाणुनी सत्ता होय अने चो उवें व्या पढी अध्याशीनी सत्ता होय तथा तेज, वाज मांहे मनुष्यिक जवेलीने ए स्थानकें अवतस्वो होय तेनी अपेक्षायें अघो त्तेर्नुं सत्तास्थानक लेवुं. एमज एंशी तथा ठ्याशी, ए सर्व सत्तास्थानकनुं स्वरूप अने नांगा उपजाववा ते पूर्वली पेरें जाएवा.

तथा सूच्य एकेंड्य पर्याप्ताने १२-१५-१६-१ए-२० ए पांच बंधस्थान क होय एने तिर्थच म ष्य मांहेज जावुं हे माटे तत्प्रायोग्य एज बंधस्थानक हो. छहीं बंधना नांगा (१३ए१७) होय एने ११-१४-१५-१६ ए चार उदय स्थानक होय तिहां एकवीशने उदयें एक नांगो, चोवीशने उदयें वे, पच्चीशने उदयें वे छने हवीशने उदयें वे, एम चार उदयस्थानकें नांगा सात होय तथा प्रत्येकें एकेका उदयस्थानके ए१-एए-ए६-ए०-७० ए पांच सत्तास्थानक होय तेम ध्यें तेज वायु विना बीजा सर्व जीव शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता थका निश्चें मनुष्य हिक बांधे, माटे ते दिक हतां छानेत्र स्तास्थानक न होय प्रत्येक पर्याप्ता

जीवमांहे पण तेच वायु विना बीजा मर्यं जीवने पञ्चीय त्राने नवीय. ए वे तर्य साधारण पट सिहत ने माटे ए स्थानकें श्रवांत्तर विना वीजां चार मना स्था नक होय. ए पञ्चीश तथा नवीयनो चद्यतो अर्गर पर्यामियें पर्यामानेज होय. तेमाटे साधारण सूक्ष्मपर्यामाने पञ्चीश, नवीयने चट्यें श्रवांत्तरनी मना न पा सीयें अने प्रत्येक पटमांहे तेच तथा वायु जेजा श्राच्या, ते माटें ते श्रपेक्रायें प्रत्येकमांहे श्रवोत्तरनी सन्ता पामीयें. ए वे नांगे चार मनास्थानक श्रने पांच नांगे पांच सन्तास्थानक होय. तिहां वाणुनं मनाम्थानक तो श्राहारक बांथी मिथ्यात्वें गयो, तिहां श्राहारकचतुष्कनी सन्ता तनां मिथ्यात्वें वशें स्थामांहें श्रवतरे, तेनी श्रपेक्षायें लेवो.

तथा वादर एकेंड्यपर्याप्ताने विषे पण १३-२५-१६-१ए-३० ए पांच वंधस्थानक तिर्यच मनुष्य प्रायोग्य जाणवा. केमके एने मनुष्य अने तिर्यच ए वे गति मध्यें जाबुं ने माटें तत्प्रायोग्य वांधे. तिहां नांगा १३ए१० होय. अहीआं उद्यस्थानक ११-१४-१५-१६-१९ ए पांच होय. निहां एकवीशने उद्यें वे, चोवीशने उद्यें पांच, पचीशने उद्यें पांच. निहां एकवीशने उद्यें हों पांच, पचीशने उद्यें पांच. निहां एकवीशार अने सत्तावीशने उद्यें त. एम सर्व मली पांच उद्यस्थानक होय. अहीं आं पची अने ए१-एए-ए६-ए०-९ए ए पांच पांच सत्तास्थानक होय. अहीं आं पची श अने विश्वाने उद्यें प्रत्वेक अने अयगःकीर्त्तं साथें एकेको नांगो ने. ते वे स्था नकना वे नांगा तथा एकवीशना उद्यना विक्रिय वायु विनाना नांगा तथा चोवी शना उद्यना वे नांगा. एम आत नांगाने विषे पांच सत्तास्थानक होय. अने शेष एकवीश नांगाने विषे अहोत्तेर विना वाकीनां चार सत्तास्थानक होय.

तथा त्रण विकलें िय पर्याप्ताने प्रत्येकें त्रेवीश, पञ्चीश, वृद्धीश, वृगणत्रीश, अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानक मनुष्य तियंच प्रायोग्य होय. एने देव तथा ना रक, ए वे गतिमध्यें जाबुं नथी तथी बीजां बंधस्थानक न होय. छहीं नांगा १ १ए१ । तथा ११-१६-१ए-१ए-३०-३१-ए व उद्यस्थानक होय. तिहां नांगा वीश पूर्वें कह्या हे, ते रीतें जाएावा तथा ए१-एए-ए६-ए०-१ए-ए पांच सत्तास्थानक होय. तेमध्यें एकवीशना उद्यना नांगा वे तथा हवीशना उद्यना नांगा वे. एवं चार नांगे तो प्रत्येकें पांच पांच सत्तास्थानकज होय केमके ते छत्रने वास माहेथी छावेला विकलें इ्य पर्याप्ताने पए। करए। छपर्याप्ता परे कियत्काल लगें अहोनेरतं सत्तास्थानक पामीयें, पही चार सत्तास्थानक होय. अ

ने शेप शोल जांगे एक अहोत्तर वर्जीने चार चार सत्तास्थानक प्रत्येकें होयः जे जिए शोल जांगा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्तानेज होयः तिहां तो अवस्य महुष्यि किनो बंध होय तेवारें तेने अहोत्तरनी सत्ता न होय बाकी चार सत्तास्थानक हो यः ए रीतें बेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय पर्याप्ताने एकेकाने प्रत्येकें व उद्यस्थान कें वीश ांगा होय ते हे चार चार जांगा, पांच पांच सत्तास्थानक वाला अने बीजा शोल शोल जांगा, चार चार सत्तास्थान वाला जाणवाः

तथा अस िआ पंचें दिय पर्याप्ताने १३-१५-१६-१६-१६-१६-१६ व वं धस्यान होय. जे नए। देव अने नरकगित प्रायोग्य अद्यावीशानो बंध पए एने होय. केमके ए रीने चारे गितमध्यें जाय हे तेमाटें तत्प्रायोग्य बंध होय. अ हीं नांगा १३ए१६ एने ११-१६-१६-१६-१६-११-१६ ह उद्यस्थानक हो य. ते ह उद्यना नांगा ४ए०४ होय. ए वैत्रिय न करे माटें वैक्रियनो नांगो न होय. तेमध्यें ए वीशना उद्यना नांगा आत अने हवीशना उद्यना नांगा (१६६) एवं (१ए६) नांगे वाणु, अत्रवाशी, हवाशी, एंशी अने अद्योत्तर, ए पांच सत्ता स्थान होय अने शेप (४६०६) नांगा शरीर पर्याप्ति पूरी ह्या पही होय ते नए। एक अद्योत्तर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय.

तथा सन्नीआ पंचेंड्य पर्याप्ताने १३-१५-१६-१०-१ए-३०-३१-१-ए आते वंधस्थानक होय. केम के एमां मनुष्य पण आव्या माटे तेने सर्वे वंधस्थानक होय, तिहां नांगा १३ए४५ अने ११-१५-१६-१९-१ए-१ए-१ए-१०-३०-३१ ए आत उद्यस्थानक होय. १०-१४-७ ए प्रचार न होय केमके अहीं आं केव लीने नाव मनज्ञून्य नणी सन्नीआ मांहे ग्ल्या नहीं तेथी १०-७-७ ए त्रण केवलीनां न ग्ल्यां अन्यथा अगीआर उद्यस्थानक कहेत. अने वारमो चोवीशनो उद्य तो एकेंड्यिनेज होय बीजाने न होय तेथी तेना अगीआर नांगा टले त या एकवीशने उद्यें सात अपर्याप्ताना सात नांगा अने संजीआ असंजीआ ने ला ग्रणतां पंचेंड्यितर्यंचनो एक नांगो तथा मनुष्यअपर्याप्तानो एक तथा उद्यी शने उद्यें, त्रण विकलेंड्यिना त्रण, अने असन्नी पंचेंड्यितर्यंच तथा मनुष्यना वे. एम पांचना पांच नांगा अपर्याप्ताना टले, तथा वीश, आत अने नन, ए त्रण उ द्यना त्रण नांगा. एवं सर्व थइने अहावीश नांगा पूर्वोक्त उद्य नांगा (१९७१) मांथी काहतां शेष (१९६३) नांगा उद्यस्थानकना सन्नीआ पंचेंड्य पर्याप्ता जीवमांहे पामीयें, तमध्यें एकवीशना उद्यना (१००) उद्यीगना उद्यना (१००)

एवं (६३५) नांगे प्रत्येकें पांच सत्तास्थानक कहेवां. छते बीजां चार सना स्थानक ते सामान्यादेशें नव छते छाठना चद्य विना दश, सत्तास्थानकता जीवनी छपेक्तायें लेवा हवे संवेध लखीयें ठेथें.

सूक्त अपर्याप्ता एकेंडियने त्रेयीगने वंधे एकवीगने उदये पांच मना स्थानक, तेम चोवीशने उदये पण पांच सत्तास्थानक. एवं वे उदयना मजी दश मना स्थानक थयां. तथा पचीशने वंधे पण एज वे उदय होय. तिहां पण सत्तास्था नक दश होय. तेम ठवीश, उगणत्रीश अने त्रीग. ए त्रण वंधें पण दश दश जांगा करतां पांच स्थानकें थइ, पचाश सत्तास्थानक होय. तथा ए सूक्त अप यिता एकेंडिय विना शेप ठ अपर्याप्ताना जीवस्थानकें पण एज रीतें पचाश पचाश वंध, उदय अने सत्ता संवेधें नांगा होय. पण एटजुं विशेप जे वेंडियारि क पांच अपर्याप्ताने चोवीशना उदयने स्थानकें ठवीशनो उदय जेवो.

तथा सूद्धा एकेंडिय पर्याप्ताने पण एहीज पांच वंधस्थानक हे. तिहां एकेक बंधस्थानकें ११-१४-१५-१६ ए चार उदयस्थानक गणतां वीश थयां. ते एकेका उदयस्थानकें पांच पांच सत्तास्थानक गणतां एकशो नांगा थाय.

तथा बादर एकेंडिय पर्याप्ताना एहीज पांच वंधस्थानक तिहां एकेके वंधस्था नकें ११-१४-१५-१६-१७ ए पांच उदयस्थानक गणतां पञ्चीश उदयस्थानक थाय, तेमांहे पांच उदय स्थानकें अहोत्तर विना चार चार सत्ता स्थानक होया तेना वीश जांगा अने वीश उदयस्थानकें पांच पांच सत्तास्थानक छेतां शो नांगा थाय. एम शरवाले एकशोने वीश वंध उदयसत्ता संवेधें नांगा होय.

तथा वेंडियपर्याप्तामांहे चोवीशने वंधे व उदयस्थानक होय, ते मांहेला एकवीश अने ववीश, ए बे उदयें पांच पांच सत्तास्थानक होय. अने २०-२०-३०-३१ ए चार उदयस्थानकें चार चार सत्तास्थानक होय. शरवाले ववीश नांगा एक वंधस्थानकें होय. एम पांच वंधस्थानकना एकशो ने त्रीश नांगा वेंडिय पर्याप्ताना थाय. तेम तेंडिय पर्याप्ताना तथा चौरिंडियपर्याप्ताना पण एटलाज नांगा जाणवा

तथा असन्नी पंचेंडिय पर्याप्ताने पण त्रेवीश, पञ्चीश, वृवीश, वृंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानकें तो प्रत्येकें विकलेंडियनी परें वृवीश वृद्यीश नांगा गणतां (१३०) सत्तानां स्थानक थाय अने अछावीशने बंधें त्रीश अने एकत्री श, ए वे उद्यस्थानक होय. तिहां एकेका उद्यें बाणु, अष्ठवाशी, अने वृवाशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तेना नांगा व थाय. जे नणी अछावीशनो बंध, देव

तथा नर गित प्रायोग्यज होय. तिहां तो एंशी अने अहोत्तरनी सत्ता न होय केमके देव नर गित प्रायोग्यनो वंध तो पूर्ण पर्याप्तानेंज होय. एम शरवाले अ संज्ञी पंचेडियने ठ वंधस्थानकें थड़ उदय सत्ताना जांगा (१३६) थाय.

तथा पर्याप्ता संज्ञी पंचेडियने त्रेवीशने बंधें तो जेम पूर्वें ववीश सत्तानां स्थान क असंज्ञीने ह्यां, तेम .हीं आं पण जाणवां तथा प ीशने वंधें एकवीश तथा वद्यीशने छढ़यें पांच पांच सत्तास्थान होय तथा पचीशने छढ़यें खने देव नारकी ने सत्तावीशने उद्यें, ए वे उद्यें वाणु अने अध्याशी, ए वे वे सत्तास्थानक होय, एवं चौद थयां. तथा शेप चार उदयस्थानकें चार चार सत्तास्थानक होय. एम सर्व मली पञ्चीशने बंधें त्रीश सत्तास्थानक होय, तेवीन रीतें ववीशने वंधें पण त्रीश सत्तास्थान होय. तथा छाहावीशने वंधें छात उदय स्थानक होय, तेम ध्यें एकवीश, प रिश, त्रवीश, सत्तावीश, अद्वावीश अने र्रगणत्रीश ए त उद्यें बाणु अने अद्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. तथा त्रीशने उद्यें बाणु, अ छ्याशी, त्याशी अने एंशी, ए चार सत्तास्थानक होय. अने एकत्रीशने उद्यें वाणु, अन्वाशी, अने ववाशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय. एम सर्वे अना वीशने वंधें उंगणीश सत्तास्थानक होय. तथा उंगणत्रीशने वंधें पण पञ्चीशना वंधकनी पेरें सत्तास्थानक त्रीश लेवां. वली विशेषें वीजां पण हे, ते क हीयें वैयें. अविरति सम्यक्दृष्टिने देवगिन प्रायोग्य उगणत्रीश वांधतां ११-१६-१८-१ए-३७ ए पांच उद्यें ए३-७ए ए वे वे सत्तास्थानक होय तथा ए ज वे वे सत्तास्थानक पचीश तथा सत्तावीशने उद्यें वैक्रिय देशविरतिने पण ह्रोय, अथवा आहारक साधुने पण तेहीज वे उद्यें ज्याणुनी सत्ता होय. एवं चौद सत्तास्थानक पूर्वला त्रीशमांहे मेलवता उगणत्रीशने वंथे चुम्मालीश सत्ता स्थानक होय. एम त्रीशने बंधें पण पचीशना वंधनी पेरें त्रीश सत्तास्थानक ले वां, ते चपर जे विशेष हे, ते कहे हे. मनुष्यगति प्रायोग्य, जिननाम सहित त्रीश वांधतां एकवीश, पचीश, सत्तावीश, अहावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश. ए ठ चद्यें ए३-७ए ए वे वे सत्तास्यानक लेतां वार नांगा याय ते नेंलतां वेंताली श सत्तास्थानक त्रीशने वंधें थाय. तथा एकत्रीश वांधनारो जिननाम तथा छा हारकिक सिहत वांधे, तेवारें तेने एकज ज्याणुनी सत्ता होय तथा एकने वंधें आव सत्ता स्थानक होयः तिहां ए३-ए१-एए-एए ए चार उपशमश्रेणीनी अपेक्तयें तथा ए०-७ए-७६-७५- ए चार क्षकश्रेणीनी अपेक्तयें होय.

तथा वंधने श्रनावें पण एज श्राठ सनास्थानक होय, परंतु एटलुं विजेष तें प्रथमनां चार सन्तास्थानक श्रमीश्रारमे गुणनाणे श्रागली नेर प्रकृतिना क्ष्यक्षा पठी क्षीणमोहने लेवा एम सर्व मली पर्याप्ता मंद्री पंचेंडियन (२००) सनास्था नक होय श्रने जो इत्य मनने संवंधें केवलीने पण सन्नी कहीयं, तो तेना विली वही श्र सन्तास्थानक मेलवतां (२३४) सन्तास्थानक, संङ्गीपंचेंडिय पर्याप्तानां श्राय ॥४२॥ श्रथ गुणस्थानान्यधिकत्याह ॥ हवे श्राठ कमीना वंधोदय सन्तास्थानकना नांगा, चाँदगुणनाणा श्राश्रयीने कहे हे.

नाणं तराय ति विहम, वि दसमु दो हंति दोसु ठाणेसु॥ मिचासाणे वीए, नव चछ पण नव य संतंसा॥ ४३॥

श्रथ- मिण्यालयी मांमीने दशमा स्झासंपराय ग्रणवाणासुयीना (दसस् के०) दशे ग्रणवाणाने विषे (नाणंतराय क०) झानावरणीय द्यने श्रंतराय ए बेहु कमेनो (तिविद्मिव के०) त्रिविध एटले पंचिवध वंध, पंचिवधवदय, अने पंचिवध सत्ता, ए नांगो होयः तेवार पठी (दोसुवाणेसु के०) व्रवधातमोह अने ह्रीणमोह, ए व ग्रणवाणे वंधने श्रनावं (दोहुंति के०) द्विध एटले पांचनो वदय अने पांचनी सत्ता होय श्रने तेवार पठी तो वदय श्रने सत्ता पण्न होयः हवे (बीए के०) बीजुं दर्शनावरणीय कमें तेनो (मिन्नासाणे के०) मिण्याल अने साखादन ग्रणवाणे (नव के०) नविधवंध. (चवपण कं०) वर्षे विध श्रयवा पंचिवध उदय श्रने (नवयसंतसा के०) नविध्य सत्ता होयः ए वे ग्रणवाणे थीण-दीत्रिकनुं नियमावंध होय माटें नविध्यंध कह्योः श्रहीं वे नांगा थाय. एक नविध वंध, चतुर्विध उदय श्रने नविध्यसत्ता. वीजो नविध वंध, पंचिवध उदय श्रने नविध्यसत्ता. वीजो नविध वंध, पंचिवध उदय श्रने नविध्यसत्ता. वीजो नविध वंध, पंचिवध उदय श्रने नविध्यसत्ता. वीजो नविध वंध, पंचिवध उदय श्रने नविध्यसत्ता. वीजो नविध

मिस्साइ नियद्दीत, ब च उपण नवय संत कम्मंसा॥

य नांगो । । । ंध, पांचनो छद्य ने वनी सत्ता, ए बीजो नांगो. ए वे नांगा निश्चें हो . तेवार पढ़ी अपूर्व रणना ज्ञेष नाग ने अनिवृत्तिकरण तथा स्क्रासंपरा , ए ण णठाणे निष्ठा ने ला, ए वे पण वंधयकी ट ली । टें (चछवंध केंण) च विंधवंध, च विंध छद ने नवविधसत्ता, ए (ति गे केण) वंध, द्य ने ता, णोनो ए नांगो था (चछपणनवंस केण) च विंधवंध, पंचविध द्य अने वविध ।. हीं दें ता जाणवी. ए बीजो नांगो. ए वे नांगा ण ग्रणठाणे होय. ए वे नांगा छपज्ञ श्रेणीनी अपे क्यें जाणवा. हवे केप श्रेणीनी पेक्सयें हे हे. ( सु केण) नवसे ने द शमे ए वे ग्रणठाणे ( अल केण) वंध अने छद्य ं जोडलुं एटले चतुर्विधवंध अने चतुर्विध छद्य होय. हीं । चारनी संख्या पाहलधी लेवी अने (हस्संता केण) षड्विधसत्ता एटले चारनो वंध, ।रनो छद्द ने नी सत्ता, ए एक नांगो क्ष्यकने होय. नव । णठाणाना बीजा नांगें थीण-दीत्रि नो क्ष्य थया पढ़ी नवमे अने दशमे णठाणे एज नांगो होय. जे नणी कम पथडीनी चूर्णिमध्यें कह्यं हे के, क्ष्प ने अतिवि दि नणी निष्ठा ने प्रचलानो छद्य न होय ते माटें पंचविध छद्यनो नांगो पण न होय ॥ इति स यार्थः ॥ ४४॥

वसंते च पण नव, खीणे च रुद्य च च सत्ता॥ वेळिणिळ छा गोए, विज्ञ मोहं परं वृत्वं ॥ ४५॥

अर्थ-( उवसंते के० ) उपशांतमोह नामा गीआरमे एठाएो वंधने अना वें ( चउपएा के० ) चतुर्विध उदय, तथा पंचविध उदय अने ( नव के० ) नव विध सत्ता, एटले चारनो उदय में नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए वे नांगा होय. उपशांतमोहने तथाविध विद्युक्ति अनावें निङ्ग प्रचला नो पए उदय संनवे, ते माटें पंचविध उदय ह्यो तथा (खीएो के०) ह्वीए मोह्युएठाएो ( चउरुदय के० ) चतुर्विध उदय अने ( ठच्च के० ) पड्विधसत्ता, ए नांगो छेहला समय विना बाकीना सघला समयें होय, एटले विचरम समय लगें होय अने चरमसमयें तो वें निङ्गि सत्ता पए टले माटे. चतुर्विध उदय अने ( चउत्ता के० ) चतुर्विधसत्ता ए नांगो होय. एम वे नांगा ह्रपकने होय. वे पछी उदय तथा सत्ता सर्व टले. हवे ( वेअिएअआउगोए के० ) वेदनीय, आ

यु ने गो , ए ण मैना नांगा ग्रणगणे (विन के०) कहीने (मोहंपरंबु के०) पढ़ी गोहनीय मैना नांगा ही ग्रं॥ इति समु यार्थः॥ ४५॥ वेदनीय गो योर्नेगक्षानार्थिमियं नाष्यगाथा॥ तिहां वेदनीयकर्म ने गो मैना नांगा जाणवाने ाटें नाष्यनी गाथा कहे है.

च स्सु इहि सत्तसु, एगे च गुणिसु वेऋणि ऋ नंगा॥ गोए पण च दो तिसु, एगऽ सु इहि इकंमि॥ ४६॥

थे—( ससु के०) ि ध्यालयी ंमीने प्रमत्तांत लगें ग्रुण ऐ शाता नो बंध, शातानो उदय ने बेहुनी सत्ता, बीजो शातानो बंध, शातानो उद य ने बे नी सत्ता, शिजो शातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, चो यो तानो बंध, शातानो उदय ने बे नी सत्ता, ए (चठ के०) चार नांगा, ढा ग्रुणवाणा लगें सघलें होय. अने प्रमत्तयी मांमीने तेरमा ग्रुणवाणा सुधीना (सत्त के०)सात ग्रुणवाणे ए शाताज बांधे माटे. वेदनीयना वि नांगा मांहेलो शिजो ने चोथो, ए ( दि के०) बे नांगा होय. तथा (एगेच उग्रुणिसु के०) एक योगी एवाणे चार नांगा होय. ए शातानो उदय, बेहुनी सत्ता, बीजो शा तानो उदय ने बे नी सत्ता, ए बे नांगा दिचर समय लगें होय अने चर मयें ए शातानो उदय ने तानी त्ता, बीजो अशातानो उदय ने शातानी सत्ता, ए बे नांगा होय एवं चार नांगा होय. ए (वे णि नंगा के०) वेदनीय मैना वि नांगा चौद एवाणे ।

हवे गोत्रकमेना नांगा ग्रणगणे हे हे. (गोए के o) गोत्रकमेना (पण के o) पांच नांगा पहेले ग्रणगणे होय, ते हे हे. एक नीचगोत्रनो बंध, नीचनो उदय ने नीचनी सत्ता, बीजो नीचनो बंध, नीचनो उदय ने बेहुनी सत्ता, त्रीजो नीच नो बंध, उंचनो उदय ने बे नी सत्ता, चोथो उंचनो बंध, नीचनो उदय ने वे नी स्वा, ए पांच नांगा, मिण्याल ग्रणगणे होय ने सास्वादन ग्रणगणे तो पूर्वोक्त मिण्यालना पांच नांगा माहेलो पहेलो नांगो न होय. बाकी (चठ के o) चार नांगा होय, केमके पहेलो नांगो तो ते उवाग्र माहे होय अथवा ते उवाग्र माहेथी चवीने बीजे स्थानकें वतरतां के टलो एक काल पर्यंत होय. तिहांतो स्थक्त नथी माटे ांथी पडीने सास्वादने वि? तेमाटे प्रथम नंग निषेध्यो तथा मिश्र ने अविरित सस्यक् हि तथा। देश

विरित ए (तिसु के०) ए ग्रुणवाणे चोथो ने पांच ो ए (दो के०) नांगा होय, केमके नीचगो नो तिहां बंध नथी, ते नणी प्रथमना ए नांगा न होय था होइ ए आचार्य हे के के देशविरितने ए ज पांच ो नांगो हो , परंतु बीजो नांगो न होय जे नणी "गइजाइ पहु च गो च च होइ" ए वचने च गों नोज तिहां चद्य होय, तथा (अह के०) प्र त ग्रुणवाणाधी मिने वि एवाणे प्रत्येकें (एग के०) एके नांगो होय. तिहां तथी स्क्र्य संपराय लगें पांच एवाणे तो उंच गो नोज बंध, चद्य होय हें ए पांचमो नांगोज होय. अने पशांत है, क्लिएमोह अने सयोगी ए त्रण ग्रुणवाणे गो नो बंध न थी हि च गोंत्रनो चद्य ने बेहुनी सत्ता, ए हो नांगो होय, था (इं मि के०) ए योगी ग्रुणवाणें (िह के०) ब नांगा होय. तिहां उंचनो चद्य य ने बेनी सत्ता, ए हो नांगो, हिचर स यलगें होय ने छंचनो चद्य था उंचनी सत्ता, ए सात हो नांगो चरम स यें लगें होय ॥ इति स ०॥ ४६॥ ॥ अथ आयुन्तेगङ्गानार्थमियमंतर्जाष्यगाथा॥ हवे आयुः मैना

अ हिगवीसा, सोलस वीसं च बारस होसु॥ दो च सु तीसु इक्कं, मि इसु आ ए नंगा॥४९॥

नांगा जाणवाने अर्थे नाष्यनी गाथा हे हे.

अर्थ— (अह ।हिगवीसा के॰) प्रथम ग्रुणवाणें हावीश नांगा अने बीजे ग्रुणवाणे विश्व नांगा, त्रीजे ग्रुणवाणे (सोलस के॰) शोल नांगा, चोथे ग्रुणवाणे (विसंच के॰) वीश नांगा, पांचमे ग्रुणवाणे (बारस के॰) बार नांगा, (दोसु के॰) वह अने सातमे ग्रुणवाणे (व के॰) व व नांगा, (चन्नसु के॰) आतमे, नवमे, दशमे ने अगीआरमे ए चार ग्रुणवाणे (दो के॰) वे वे नांगा. (तीसु के॰) बारमे, तेरमे अने चौदमे, ए त्रण ग्रुणवाणे (इक्कं के॰) एक नांगो. ए रीतें (मिन्नाइसुआन्नएनंगा के॰) मिण्यालादिक चौद ग्रुणवाणे आयुः कमेना नांगा जाणवा॥ इस्यक्तरार्थः॥ ४४॥

मिष्यात्व ग्रुणवाणे तो पूर्वें कहेला छाडावीशे नांगा छायुंना होय, जे नणी चा रे गतिना जीव मिष्यादृष्टि होय. तथा मिष्यात्वें चारे छायुनो पण वंध हे, तथी देवना पांच, नारकीना पांच, तिर्यचना नव छने मनुष्यना नव, ए सर्व होय. तथा साखादने नरकायुनो वंध नथी माटें तिर्यच तथा मनुष्यने छायुर्वध कालावस्थाना नरकायु बंधना वे जांगा टले, तेवारें शेष ठवीश जांगा होय.

तथा मिश्रगुणवाणे आयुनो वंधज नथी माटें वंधकालावस्थाना देव नारकीना बे बे तथा तिर्थचना मनुष्यना चार, चार, एवं वार नांगा टले तेवारें शोल नांगा रहे. तथा अविरति सम्यक्दृष्टिमांतो तिर्थच अने मनुष्यने एक देवगित विना शंप त्रण गतिनां आयु न वांधवा संबंधिना त्रण त्रण नांगा टले अने देव तथा नारकी मध्यें तिर्थचायु बंधनो एकेको नांगो टले. एवं आव नांगा टले, तेवारें शेप वीश नांगा रहे.

तथा देशविरतिगुणवाणुं तो मनुष्य अने तिर्यंचने होय, ते तो देशविरित व तां देवायुन बांधे तेमाटें मनुष्य, तिर्यंचने प्रत्येकें वंधकालावस्थायें एकज नांगो त या परनवायुर्वंधकाल थकी पूर्वे एकेको नांगो अने आयुर्वंधकाल पठी चारे नां गा होय. जेनणी कोइ एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चारे आयु मांहेलुं एक आयु बांधीने पठी देशविरतिपणु पामे तेनी अपेक्सयें उत्तरावस्थाना चार नांगा कह्या.

ए रीतें व व नांगा तियेंच अने मनुष्यना लेतां बार नांगा पांचमे गुणवाणे पामीयें। तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए वे गुणवाणां मनुष्यनेज होय माटें मनुष्यना व नांगा देशविरतिनी पेरें जाणवा, ए गुणवाणे तिर्थेच नथी तेथी तेना नांगा टला।

तथा आतमे, नवमे, दशमे अने अगीआरमे, ए चार ग्रणताणे उपशमश्रणी नी अपेक्संयें के वे नांगा होय, एक मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए नांगो, आयुर्वेधकालधी पूर्वेलो होय, अने मनुष्यायुनो उदय तथा मनुष्यायु अने देवायुनी सत्ता ए बीजो नांगो आयुर्वेध काल पठी उत्तरावस्थानो होय, ए वे नांगा होय. एने वंधकालावस्थानो नांगो न होय जे नणी ए अत्यंतविश्च हे माटें आ न बांधे अने आयु बांध्या पठी उपशमश्रेणी पिडवजे, तोपण देवायु बांध्या पठी पिडवजे, तोपण देवायु बांध्या पठी पिडवजे. परंतु बीजां त्रण गितनां आयु बांध्या पठी उपशमश्रेणी पिडवजे नहीं जे नणी कम्मपयडीमध्यें शिवशमीस्रियें कह्यं हे "तिसु आउगेसु व केसु,जेण सेढि न आरोहइति" अने पूर्वें आयुर्वेध कह्या पठी क्ष्पकश्रेणी करे नहीं माटें क्षकने म ष्यायुनो उदय अने म ष्यायुनी सत्ता, क्ष्पकश्रेणीयें ए चार ग्रणवाणो । कमेनो एकज नांगो होय तथा क्षिणमोह सयोगी अने योगी ए त्रण ग्रणवाणाने विषे म ष्या नो उदय अने म ष्यायुनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. ए मिष्यालादिक चौद ग्रणवाणो आयुःकमेना बंधोदय सत्ता संवेधें नांगा क ा. ते सर्वे मलीने (११५) थाय ॥ इति स यार्थः॥ ४७॥

अथ गुणस्थानेषु मोहनीयस्य बंधस्थानान्याह ॥ हवे चौद गुणवाणा ने विषे मोहनीयकर्मनां बंधस्थान विवरीने कहे हे.

गुण । एगेसु अ सु, इक्किकं मोह बंध । एं तु॥ पंचानि अष्टि । एग, बंधोवरमो परं तत्तो॥ ४०॥

र्थ- (ग्रुणगणो अन्सु के०) मिथ्यालादिक आत ग्रुणगणे (इबिंमो ह्वंधगणं के०) दिनीय में एकेकुं वंधस्थानक होय, एटले मिथ्यात्वें बावी शनो बंध,सास्वादने ए वीशनो बंध,मिश्र ने विरतियें सत्तर सत्तरनो बंध, देश विरतियें तेरनो 'ध तथा त्त, अप्रमत्त अने पूर्व रण, ए ण णगणे नव नव प्रकृति 'एके' बंधस्थानक होय, तिहां नांगा मिथ्यात्वें , सास्वादनें चार, मिश्रें बें, विरतियें बें, देशविरतियें बें, प्रमत्तें बे ने अप्रमत्तें तथा अपूर्वकरणें अरिता , ए ग्रुगलना अनावें एकविध बंधने लीधे एकेको नांगो होय. तथा (पंचानिअष्टिगणा के०) अनितृत्ति बादरें पांच, चार, त्रण, बे अने, एक, ए पांच वंधस्थानक, पांच नागें होय. तिहां नांगो एकेको होय. (बंधोवरमोपरंतनो के०) तेवार पत्नी सूक्तमंपरायादिक ग्रुणगणे मोहनीय मेनो बंध नथी, माटें बंधने अ नावें मात्र ग्रुचस्थानकज होय, ते कहे हे॥ इति तसु यार्थः॥ ४०॥ अथ ग्रुचस्थानकज होय, ते कहे हे॥ इति तसु यार्थः॥ ४०॥

सत्ताइ दस मिन्ने, सासायण मीसए नवु ोसो॥
गई नव अविरई, देसे पंचाइ अठेव॥ ४ए॥

अर्थ-(मिन्ने के०) मिष्यादृष्टिने (सत्ताइद्स के०) सातथी दश पर्यंत ४-७-ए-१० एचार उदयस्थानक होय. तिहां नांगानी चोवीशी पूर्वे कही, ते रीतें अहीं पण आठ चोवीशी जाणवी तथा (सासायणमीसएन ब्रक्कोसो के०) साखा दन अने मिश्र, ए बे ग्रुणठाणे सातथी मांमीने नव पर्यंत सात, आठ अने नव, ए त्रण उदयस्थानक होय. तिहां साखादने चार चोवीशी अने मिश्रं पण चार चोवीशी नांगानी उपजे तथा (डाईनव उथितरई के०) अविरति ग्रुणठाणे ठथी मांमीने नव पर्यंत एटले ठ, सात, आठ अने नव, ए चार उदयस्थानक होय. तिहां नांगानी चोवीशी आठ उपजे तथा (देसेपंचाइ अठेव के०) देशिवरित ग्रुण

णवाणे पांचची मांमीने छाव पर्यंत एटले पांच, ह, सात छने छाव, ए चार व दय स्थान होय. तिहां पण नांगानी छाव चोवीशी उपजे॥ इति सण॥ धण॥

विरए खनेवसमिए, च राई सत्त बच्च पुर्वमि ॥ इअनियिह बायरे पुण, इ तेव इवेव उद्यंसा ॥ ५०॥

इ थी-( विरएखर्रविसमिए के०) श्रेणीथी हेते वर्ततो तेने ऋायोपशमिक वि रतो हीयें. ते द्वायोपशमिक विरति प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणगणावालो जा णवो. तिहां प्रमत्तं अने प्र तें प्रत्येकें प्रत्येकें, (च चराईसत्त के ) चारथी मां मीने सात पर्यंत चार, पांच, व अने सात, ए चार छदयस्थानक होय, तिहां नां गानी ाठ चोवीशी प्रमत्तं ने आठ चोवीशी प्रमत्ते उपजे तथा ( ह पुर्विम के 0 ) अपूर्वकरण एवाएो चारथी मांमीने व पर्वत एटले चार, पांच अने व, ए ए उदयस्थान होय. तिहां चार चोवीशी नांगानी थाय. तथा (अनियष्टि बायरेपुण के॰ ) वली अनिवृत्तिबादर गुणवाणाने विषे (इ तिबड्डवेव वद्यंसा के॰) एव थवा वे चद्यस्थानक होय. तिहां संज्वलना चार कषाय मांहेलो एक कषाय ने त्रण वेदमांहेलो एक वेद, ए बे प्रकृतिनुं स्थानक होय. तिहां चार कषायने त्रण वेदना विकल्पें गुणतां बार नांगा थाय. तेवार पत्नी वेदनो उदय टले यके एकना उदय स्थान रहे, ते च विंध, त्रिविध, दिविध छने एकवि ध बंधने विषे पामीयें. तिहां य पि पूर्वे चतुर्विधबंधें चार, त्रिविधबंधें त्रण, दि विधवंधें वे ने एकविधवंधें एक, एवं दश उदय नांगा कह्या है. तो पण अहीं हां सामान्य विवक्तायें चार, त्रण, बे ने एक, ए चार बंधस्थानकनी अपेक्तायें एके नांगों से वतां चार नांगा विवक्षीयें, एटसे नवमे ग्रणवाणे शोल नांगा होय-

एगं सुहुम सरागों, वेएइ खेवेख्यगा नवे सेसा॥ नंगाणं च पमाणं, पुबुहिं छेण नायवं ॥ ॥१॥

अथ-( एगंसुद्धुमसरागों के ० ) स्त संपराय ग्रुणवाणे एक कीटिकत संववल नो जोन (वेएइ के ० ) वेदे, ते माटें एक ं उदयस्थानक दोय. तेनो एक नांगों होय एट जे दशमे ग्रुणवाणे बंध विना एक संज्वलना जोननो उदय दोय. अने ( अवेअगानवेसेसा के ० ) शेंष उपरजा उपशांतमोहादिक चार ग्रुणवाणे मोहों दय नथी माटें अवेदक होय केमके तिहां मोहनीयनो उदय न होय. हीं आं ण्यात्वादि ग्रुणवाणे उदयस्थानकना (जंगाणंचप । एं कें०) नांगा प्र । ए अने जागा ं उपजाववुं ते, (पुबुद्दि हेणनायवं के०) पूर्वे ोह्नीयना उदयस्थान विचारवाने अवसरें देखाड्यां के तेमज पूर्वो प्रकारें जाणवां ॥ इति॥ ५१॥ द्वे ए दशादि उदयस्थानकें ग्रुणवाणा । अयी जांगानी संख्या हे के. इ ग डिबि यारि, । रस इ । र से नव तिन्नि॥ एए च वीस गया, बारङ्गं पंच इक्कंमि ॥ ५२॥

प्रे— द नें उद्यें (इ ग के०) एक चोवीशी नांगानी ि ध्याल शुंणवाणे जाणवी, के के ए दशनो उदय, निध्यात्वें ज हे दि. तथा नवने उद्यें (हड के०) चोवीशी नांगानी, तेमध्यें निध्यात्वें ए, सास्वाद्नें ए, निश्नें ए अने खिवरितयें ए . तथा खावने उद्यें (इि यार के०) गीखार चोवीशी. ते मध्यें निध्यात्वें ए, सास्वादने बे, निश्नें बे, खिवरितयें ए छ अने देशविरितयें एक तथा सातने उद्यें पण (इक्कारस के०) अगीखार चोवीशी, तेमध्यें पहले, बीजे अने त्रीजे, एवाणे एके शे, चोथे अने पांचमे ए ए,तथा उठ अने सातमे एकेक, तथा हने उद्यें पण (इ रिसेव के०) अगीखार चोवीशी, तिद्धां चोथे अने खा हमे एकेकी तथा पांचमे, ठठ अने सातमे त्रण तथा पांचने उद्यें (नव के०) नव चोवीशी. तिद्धां एक देशविरितयें तथा प्रमत्त अने अप्रमत्तें तथा प्रमत्त अने अप्रमत्तें तथा चारने उद्यें (तिन्नि के०) त्रण चोवीशी. तिद्धां प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्व करणें एकेकी जाणवी. (एएचउवीसगया के०) ए सर्व मलीने बावन चोवीशी थइ तथा (इग्नं के०) बेने उद्यें (बार के०) बार नां गा खने (इक्नंमि के०) एकने उद्यें (पंच के०) पांच नांगा, एम सर्व मली वा वन चोवीशी अने उपर सत्तर नांगा थया॥ इति समुच्चार्थः॥ ए१॥

ह्वे सर्व नांगानी शरवाले संख्या कहे हे। बारस पणसिंघसंया, दय विगणेहि मोहिच्या जीवा॥ चुलसीई सनुत्तरि, पयविंद सएहि विनेच्या ॥ ८३॥

अर्थ- बावन चोवीशीने चोवीश गुणा करी हिकोदयना वार अने एकोदयना पांच, एवं सत्तर नांगा नेलीयें, तेवारें (वारसपणसिहसया के०) वारजें ने पांजव नांगा थाय. (जदयविगणेहिमोहिआजीवा के०) एटला जदयने नांगे करीने सर्व संसारी जीव ोहनीय में ोह्या मुंजाणा पड्या हे. हवे तेनी पदसंख्या कहे हे. अहीं आं ि ध्याल, अनंतानुबंधी कोध इत्यादिक मोहप्रकृतिने (पय के०) पर एवी संज्ञा ही हे. तेना (विंदसएहि के०) वृंद जे दश, नव, इत्यादिक उदय नांगाना पर एटले प्रकृति तेना शतक एटले शेंकडा केटला धाय? ते कहे हे. (चुलती ई के०) चोराशी शो अने उपर (सनुत्तरी के०) सत्तातेर धाय एटला मोहनीय कमेना पदवृंदें करी सर्व जीव मुं । एवा धका (विन्नेआ के०) जाणवा. अहीं एकेका नांगामांहे मोहनीयनी जेटली प्रकृति बोलाय ते नांगामांहे तेटलां पद कहीयें. जेम दशने उद्यें एक चोवीशी माटे दशने दश गुणा करीयें तेवारें दश चोवीशी थाय नवने उद्यें ह चोवीशी हें ह गुणा करतां चोपन चोवीशी थाय, एम आहने उद्यें अगीआर चोवीशीयें गुणतां अत्याशी, सातने अगीआरें गुणतां तत्त्वातेर, हने अगीआरें गुणतां हाशह, पांचने नवें गुणतां पीस्तालीश, चारने त्रणे गुणतां बार, ए सर्व मली त्रणशॅने बावन चोवीशी थाय. ते एकेकमध्यें चोवीश हे माटे चो वीश गुणा करतां ( ७४४०) थाय. तेमध्यें हिकोद्यना बारने इगुणा करतां चो वीश थाय तथा एकोद्यना पांच, एवं उंगणत्रीश जेलीयें तेवारें ७४९४ एटला मोहनीयनां पदवृंद गुणताणानी अपेक्सायें थाय॥ इति समुच्यार्थः ॥ ५२ ॥

अथ मिथ्यादृष्ठ्यादिषु उद्यनंगस्चिकानाष्यगाथामाद् ॥ द्वे मिथ्यात्वादिक गुणुगणे प्रत्येकें मोद्दनीयना उदय नांगा प्ररूपवाने अर्थे नाष्यगाथा कहे हे.

> अठग च च चतर, हगाय चतरो अ हुंति चत्रवीसा॥ मिचाइ अपुवंता, बारस पणगं च अनि अही॥ ५४॥

अथ-(मिहाइअपुरंता के०) मिष्यालयी मांनीने पूर्वकरणनामा आवमा गुणवाणा पर्यत अनुक्रमें जांगा कहे हे. एटजे मिष्यात्वें (अग्न के०) आव चोवीशी, सास्वादने (चन्न के०) चार चोवीशी, मिश्नें (चन्न के०) चार चोवीशी, तेवार पढी चोषे, पांचमे, हें ने सातमे, ए (चन्नरहगाय के०) चार गुणवाणे आत आत चोवीशी अने विमे गुणवाणे (चन्नरोअहुंतिचन्नवीसा के०) चार चोवीशी जांगानी न्यां एम मिष्यालयी मांमीने अपूर्वकरण लगें बावन चोवीशी जांगानी न्याय. पढी (बारसपणगंचअनिअही के०) निवृत्ति गुणवाणे वेने नद्यें वार जांगा अने एकने नद्यें चार जांगा तथा एक जांगो एकोदयें

सू संपरायनो, एवं सत्तर नांगा उपर थायः तेनी साथें बाव चोवीशीना १ १४ ७ मेलवतां (१ १६५) नांगा थाय ॥ इति स यार्थः ॥ ५४ ॥

थेषां नंगानां पदानां योगादिनिर्गुणानाह ॥ ह्वे ए मोहनीयना उदय नांगा तथा उदय पदवृंद ते योग, उपयोग ने जेश्या साथें गुणवा, ते उपदेश हे हे.

जोगोवर्रग लेसा, इएहिं गुणिच्या हवंति कायवा॥ जे जह गुणाणे, हवंति ते त गुणकारा॥ ५५॥

अर्थ-( जोगोवर्रगलेसाइएहिं के०) योग, रायोग, अने लेक्यादिकें रीने राय जांगा तथा पदवृंद ते ( ग्रिणआह्वंति । यद्या के०) ग्रणा करवा ते (जेज ज ग्रण कि०) मिध्यात्वादिक ग्रणगणें जे जिहां योग, रायोग, लेक्या, जेट लां (हवंति के०) होय. (तेत जग्रण । रा के०)ते तिहां तेटला ग्रणा करवा ॥५५॥

तिहां प्रथ योगना गुणा रिनी नावना लखीयें हैयें चार मनोयोग, चार व चन योग अने औदारिक काययोग, ए नव योग तो मिच्यात्वधी मांमीने दशमा गुणनाणा पर्यंत दशे गुणनाणे होया ते दश गुणनाणाना सर्वसंख्यायें चद्यनांगा (११६५) हो. तेने नव योग साथें गुणतां (११३०५) चद्यना नांगा थाय.

तथा वली मिण्यादृष्टिने वैत्रिय ाययोगें वर्ततां आठ चोवीशी नांगानी होय. तथा वैत्रियि श्र, श्रौदारि मिश्र ने ामेण, ए ण योगें वर्ततां मिण्यालीने प्रत्येकें आठना उदयनी एक, नवना उदयनी बे अने दशना उदयनी एक, एवं चार चार चोवीशी नांगानी अनंतानुबंधीआ सिहतवाली पामीयें, परंतु बीजी चार चोवीशी अनंतानुवंधीआना उदय विनानी न पामीयें, जे नणी जेणे पूर्वें सम्य क्रवें करी अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या होय, तेवली कमेवशें परिणामनी पराव किंगें मिण्याल पामे, तेवारें फरी अनंतानुवंधीआ वांधवा मांमतां मात्र बंधावित का लगेंज अनंतानुबंधीआनो उदय न पामीयें अने एवी रीतें जे अनंतानुवंधीआ विसंयोजीने मिण्यात्वें आवे, तेनुं जघन्यणी पण अंतरमुहूर्त्तांगुतो अवश्य होय. केमके अनंतानुवंधीआना उदय विना मिण्यात्वीने काल करवो निषेध्यो हे. ते जीव, तिहां रह्यो मिण्यात्व प्रत्ययें वली अनंतानुवंधीया बांधे ते उदय आव्या पही मरण पामीने जेवारें वोजे स्थानकें जाय, तेने वचालें अपांतरालगितयें वर्ततां तथा उपजती वेलायें ए त्रण योग अनंतानुवंधीना उदय विनाना मिण्यात्वीने होय. तिहां कामेणयोग वाटें वर्ततां जीवने होय तथा औदारिकमिश्र योग ति होये. तिहां कामेणयोग वाटें वर्ततां जीवने होय तथा औदारिकमिश्र योग ति

र्यच मनुष्यने उपजती वेलायें होय अने वैक्षियमिश्र देव तथा नारकीने उपजती वेलायें होय ए प्रायिक बोलके अन्यया मिथ्याली तिर्यंच मनुष्यने वैत्रि यशरीर करतां तथा मूकतां पण वैश्व यमिश्र योग होय पण ते चूिणकारें अहीं आं विव ह्युं नथी, एम आगल पण चूिणकारनो मत नाववो ते माटें ए त्रण योगने वि वे नंता बंधीआना उदय रहितनी चार चार चोवीशी नांगानी के ते न पामी यें बाकी चार चार चोवीशीज पामीयें शरवाले वीश चोवीशी मिथ्यात्वें होय. तथा सास्वादने मिणयोगें चार, वैत्रि यकाय योगें चार, अने औदारिक मिश्र । ययोगें चार, एवं ।र चोवीशी होय तथा मिश्रदृष्टिने वैक्रिय काययोगें चार चोवीशी होय तथा अवरति सम्यक्रष्टिने मात्र वैत्रिय काययोगें ज्ञान चोवीशी होय नाम के स्वर्ण के स्वर

तथा देशविरतियें वैत्रिययोगें आत अने वैक्रियमिश्र योगें आत, एवं शोल चो वीशी थाय तथा प्रमत्त साधुने पण वैक्रियें तथा वैत्रि यमिश्रयोगें प्रत्येकें आव आ व चोवीशी गणतां, शोल चोवीशी थाय तथा अप्रमत्त साधुने वैक्रिय योगें आव चोवीशी अने वैत्रिय मिश्रतो अप्रमत्तने न होय केमके चोया गुणवाणायी उप रांत वैक्रिय तथा वैत्रि यमिश्रकाय योग लब्धि प्रत्ययिक होयः तेमांहे वैक्रिय मि श्रकाययोग तो वैत्रि यशरीर आरंनतां तथा मूकतां वखतज होय अने अप्रमन साधुने तो विद्युद्रपणाची लब्धि प्रयुंजवाने अनावें वैक्रियनुं आरंनवुं नधी तथा मूकवुं पण नथा अने प्रमत्त साधुने वैक्रिय आरंनी पत्नी विद्युद्धिने वज्ञें वैक्रिय शरीर बतां प्रमत्त थाय, ते अपेक्सयें प्रमत्तने वैत्रि यकाययोग होय, ते माटें अप्रमतें वैत्रियनी आत चोवीशी कही एटले शरवाले वैक्रिययोगें मिथ्यात्वें आ व, साखादने चार: मिश्रें चार, अविरतियें ाव, देशविरतियें आव, प्रमत्तें आव, तथा अप्रमत्तें आतं, एवं अडतालीश चोवीशी थइ. तथा वैवि यमिश्रकाययोगें मिष्या त्वें चार देशविरतियें आठ ने प्रमत्तें ाठ,एवं वीश चोवीशी थइ तथा औदारिक मिश्रयोगें मिथ्यात्वें चार ने साखादने चार, एवं आत चोवीशी थाय. तथा कामेण योगें पण मिष्यात्वें चार अने सास्वादने चार,एवं आत चोवीशी थाय. एम सर्व मली चोराशी चोवीशी नांगानी थायः तेने चोवीशें गुणतां (१०१६) नांगा थायः ते पूर्वो नव योग साथें ग्रुणेला (११३७५) नांगा साथें मेलवतां (१३४०१) नांगा थया.

हवे वैकियमिश्रने सास्वादने तथा चोथे गुणवाणे कामिणयोगें वर्तताने विशे प छे. ते नणी तेना नांगा जूदा कही दे । हे छे. वैकिय मिश्रयोगें सास्वादने व र्तताने नपुंसकवेदनो चदय न होय, जे नणी वैकिय मिश्रयोगी नपुंसकवेदीने नार ही प्रमुख दि साखादने वर्ततां उपजबुं नथी ते जणी वैक्रियमिश्रयोगें जे चार चोवीशी उदय नांगानी हो, ते ध्येंथी नपुंस वेदथी उत्प थयेला आह, आह नांगा टक्के बाकी शोल शोल नांगा रहे हिं चार चोवीशीने तामे चार पो डश नांगा साखादने वैत्रियमिश्र योगीने होय.

तथा विरित सम्यक्टि विशि यि श्र था मिएयोगी, ए वेहुने विदेनों उद्य न होय जे नए। वैत्रिय वियोगी अविरित सम्यक्टि जीव, स्त्रीवेदमां हे न उपजे, ते हिं चोथे ग्रुएगाएँ ए बेहु योगें वर्तताने आत, आत चोवीशीने गर्म ति वि विश्व नांगा होयः अहीं आं केवल स्त्रीवेदना वि व्पथी उप जेला आत हि नांगा, चोवीशी चोवी। विश्व हियें ए टीका रित्रुं मत वर्लंबीने ह्यं हे न्यथा चूिं हि तो दाचित् स्त्रीवेदी मांहे पण अवतरे एम पण ह्यं हे. तेनो पात " यावि हु जिवेआगेसुवि वेडिश्व मीसगस्स"

तथा प्रमत्तसाधुने आहार तथा हिए मिश्रए वे योगें वर्ततां स्त्रीवेदनो वदय न होय जे नणी हिएक मिश्रयोग चौद पूर्वधर प्ररुपनेज होय स्त्रीने तो चौद पूर्वमुं नणवुं निषेध्युं जे जणी स्त्रें कसं के " हागारववहुला, चितं हिं आ इब्बलाअधीइए॥ इअ अइवसेस यणा, नूअवार्ड अ नो हीणं॥ १॥ (नूतवाद के ०) हि होव हो बार ' अंग, ते िन न नणाव बुं, जे नणी ि जाति स्वनावें तो वही होय हे ते हिं गर्व घणो रे, विद्या जीरवी न शके इिष्य चंचल होय, बुि इं ही होय ते माटे ए अतिशय पाव नणी िन निषेध्युं हे ते हि ह्वादमां हे चोये अधिकारें पूर्व हे माटे पूर्व नात्या विना स्त्री आहार शरीर न करे, ते माटे प्रम च अप्रमत्त गुणवाणे प्रत्येक एकेकायोगं चदय नांगानी अ आहा चोवीशी मां हे थी स्त्री वेदना त्रीजा नागना आव नांगा कहा हतां शेप शोल पोडशक नांगा होय.

तथा अप्रमत्त साधु ए आहारकयोगीज होय परंतु आहारकमिश्रयोगी न होय केमके ए योगतो आहारक शरीर आरंनतां तथा मूकतां होय ते तो अप्र मत्त साधुने लिब्धनुं प्रयुंजवुं नथी तेनणी अंहीं नांगानां आत पोडगक होय. ए सर्व चुम्मालीश पोडशक थयां. ते चुम्मालीशने शोलें गुणतां (१०४) नांगा थाय. ते पूर्वोक्त (१२४०१) मध्यें मेलवतां (१४१०५) उटय नांगा थया.

तथा औदारिक मिश्रकाययोगीने चोथे गुणवाणे स्त्रीवेट अने नपुंसकवेदनों उदय न होय, नेमांहे औदारिक मिश्रयोगी सम्यक्टिएने उपजबुं नथी ते नणी ए चोथे गुणवाणे आव चोवीशीने स्थानकें केवल पुरुपवेद विकल्पना औ

र्थच मनुष्यने उपजती वेलायें होय अने वैक्रियमिश्र देव तथा नारकीने उपजती वेलायें होय. ए प्रायिक बोल हे. अन्यथा मिण्यात्वी तिर्यच मनुष्यने वैक्रियशरीर करतां तथा मूकतां पण वैहि यमिश्र योग होय पण ते चूर्णिकारें छाहींछां विव इयुं नथी, एमं आगल पण चूर्णिकारनो मत नाववो ते माटें ए त्रण योगने वि नंता बंधीञ्चाना चदय रहितनी चार चार चोवीशी नांगानी है ते न पामी यें बाकी चार चार चोवीशीज पामीयें शरवाले वीश चोवीशी मिथ्यात्वें होय. तथा सास्वादने मिणयोगें चार, वैक्रियकाय योगें चार, अने औदारिक मिश्रकाययोगें चार, एवं ।र चोवीशी होय तथा मिश्रदृष्टिने वैक्रिय काययोगें चार चोवीशी होय. तथा अविरति सम्यक्दिष्टिने मात्र वैक्रिय काययोगेंज आठ चोवीशी होय. तथा देशविरतियें वैत्रिययोगें आठ अने वैक्रियमिश्र योगें आठ, एवं शोल चो वीशी थाय तथा प्रमत्त साधुने पण वैक्रियें तथा वैक्रियमिश्रयोगें प्रत्येकें आवश्रा व चोवीशी गणतां, शोल चोवीशी थाय तथा अप्रमत्त साधुने वैक्रिय योगें आव चोवीशी अने वैत्रिय मिश्रतो अप्रमत्तने न होय केमके चोया गुणराणायी उप रांत वैक्रिय तथा वैत्रि यमिश्रकाय योग लब्धि प्रत्यियक होयः तेमांहे वैक्रिय मि श्रकाययोग तो वैक्रियशरीर आरंजतां तथा मूकतां वखतज होय अने अप्रमत्त साधुने तो वि ६पणायी लब्धि प्रयुंजवाने अनावें वैक्रियनुं आरंनवुं नयी तथा मूकवुं पण नथा अने प्रमत्त साधुने वैक्रिय आरंनी पढी विद्युद्धिने वशें वैक्रिय शरीर वतां अप्रमत्त थाय, ते अपेक्शयें प्रमत्तने वैशि यकाययोग होय, ते माटें अप्रमत्तें वैक्रियनी आत चोवीशी कही एटले शरवाले वैक्रिययोगें मिष्यात्वें आ व, साखादने चार: मिश्रें चार, अविरतियें ाव, देशविरतियें आव, प्रमत्तें आव, तथा अप्रमत्तें आतं, एवं अडतालीश चोवीशी थइ. तथा वैत्रि यमिश्रकाययोगें मिथ्या त्वें चार देशविरतियें आव अने प्रमत्ते ाव,एवं वीश चोवीशी थइ तथा औदारिक मिश्रयोगें मिच्यात्वें चार अने साखादने चार, एवं आत चोवीशी थाय. तथा कार्मण

नव योग साथें ग्रुऐं जा (११३०५) नांगा साथें मेलवतां (१३४०१) नांगा यया. हवे वैक्रियमिश्रने साखादने तथा चोथे ग्रुएगो कार्मणयोगें वर्तताने विशेष हो. ते नणी तेना नांगा जूदा कही देखाडे हो. वैक्रिय मिश्रयोगें साखादने व र्तताने नपुंसकवेदनो चद्य न होय, जे नणी वैक्रिय मिश्रयोगी नपुंसकवेदीने

योगें पण मिथ्यात्वें चार अने सास्वादने चार,एवं आठ चोवीशी थाय. एम सर्वे मजी चोराशी चोवीशी नांगानी थायः तेने चोवीशें गुणतां (१०१६) नांगा थायः ते पूर्वोक्त

नार ी प्रमुख दि सास्वादने वर्ततां पजवुं नथी ते नणी वैक्रियि श्रयोगें जे चार चोवीशी चद्य नांगानी हो, ते ध्येंथी नपुंस वेदथी चत्प थयेला ाह, आह नांगा टक्के ा ी तेल तेल नांगा रहे हिं चार चोवीशीने हामे चार षो डश नांगा सास्वादने वैत्रि मिश्र योगीने हो .

तथा विरित सम्यक्हि वैत्रियि श्र । मिणयोगी, ए बे ने विदेनों उद्य न होय जे नणी वैत्रिय ।ययोगी विरित सम्यक्हि जीव, स्त्रीवेदमां हे न उपजे, ते । दें चोथे ग्रणवाणे ए बे योगें वर्तताने ।व, आव चोवीशीने वामे ।व ।व षोडशक नांगा होय अहीं ं केवल विदेना वि व्पथी उप जेला आव ।व नांगा, चोवीशी चोवी।। हिथी । ढीयें ए टी।। रंमत वलंबीने ह्यं हे न्यथा चूणि हितो दाचित् विदेश हि पण अवतरे ए पण ह्यं हे. तेनो पाव " यावि हु शिवेअगेसुवि वेडिश । सगस्स "

तथा प्रमत्तसाधुने हार तथा हिए मिश्र ए वे योगें वर्ततां स्त्रीवेदनो उदय न होय जे नणी हिएक मिश्रयोग चौद पूर्वधर प्ररुपनेज होय स्त्रीने तो चौद पूर्वनुं नणवुं निषेध्युं जे नणी स्त्रें सुं के "तुष्ठागारवबहुला, चिलंदिश्रा इब्बलाश्रधीइए॥ इश्र श्रव्यक्तेस यणा, नूश्रवार्ग श्र नो बीणं॥ १॥ (नूतवाद के ०) दृष्टिवाद जे बार 'श्रंग, ते निने न नणाववुं, जे नणी निजाति स्वनावें तो वही होय हे ते हिंग वे घणो रे, विद्या जीरवी न शके इड्य चंचल होय, बुदि उं वी होय ते हिंग वि घणो रे, विद्या जीरवी न शके इड्य चंचल होय, बुदि उं वी होय ते हिंप ति य पाठ नणी स्त्रीने निषेध्युं हे ते दृष्टिवादमां हे चोशे श्रिकारें पूर्व हे माटे पूर्व निष्या विना स्त्रीश्राहार शरीर न करे, ते माटे प्रम च श्रम गुणठाणे प्रत्येक एकेकायोगं उदय नांगानी श्राह श्राह चोवीशी मां हे यी स्त्री वेदना त्रीजा नागना श्राह नांगा कहाडतां शेष शोल षोडशक नांगा होय.

तथा अप्रमत्त साधु ए आहारकयोगीज होय परंतु आहारकमिश्रयोगी न होय केमके ए योगतो आहारक शरीर आरंजतां तथा मूकतां होय ते तो अप्र मत्त साधुने लिब्धनुं प्रयुंजवुं नथी तेजणी अंहीं जांगानां आत पोडशक होय. ए सर्व चुन्मालीश पोडशक थयां. ते चुन्मालीशने शोखें ग्रणतां (१०४) जांगा थाय, ते पूर्वोक्त (१३४०१) मध्यें मेलवतां (१४१०५) उदय जांगा थया.

तथा श्रीदारिक मिश्रकाययोगीने चोथे ग्रणवाणे स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदनो उदय न होय, तेमांहे श्रीदारिक मिश्रयोगी सम्यक्दृष्टिने उपजबुं नथी ते नणी ए चोथे ग्रणवाणे श्राव चोवीशीने स्थानकें केवल प्ररूपवेद विकल्पना श्री दारिकिमिश्रयोगें आव अष्टक नांगा होय. अहीं आं वे वेदना शोल नांगा प्रत्येक चोवीशी मध्येंथी टालवा. एप्रायि बोल जाएवो अन्यथा ब्राह्मी, मुंदरी, मिलीना थ, राजीमती प्रमुख सम्यक्टि घकां अहीं आं स्त्रीवेदें उपन्यां, तिहां उपजतां औदारिकिमिश्र योग के न होय, ाटे ए केम घटे? ए आव अष्टकना चोशव नांगा पूर्वला (१४१०५) मांहे मेलवतां (१४१६ए) उदय नांगा घया ॥ ५५॥ अथ पदवृंदानि योगगुणितानि नाव्यंते तत्रोदयप्रकृषिका नाष्यगाथामाह ॥ हवे उदयपदवृंद योग साथें गएवां, ते नावे हो. तिहां चौद गुए। हाए। उदय पदवृं द प्रकृपवाने अंतर नाष्यगाथा हे हो.

अ दी बत्तीसं, बत्तीसं सिंह मेव बावना ॥ चोञ्जाल दोसु वीसा, मिचा माईसु सामनं ॥५६॥

अर्थ- मिथ्याल गुणवाणे (अइही के०) डशव पद, सास्वादनें (बत्तीसं के । वत्रीश पद, मिश्रें (वत्तीसं के । वत्रीश पद, अविरतियें (सिंह के । शात पद, ( मेव के॰ ) एमज देशविरतियें ( बावन्ना के॰ ) बावन पद, तेवार प ही प्रमत्त अने अप्रमत्तें ए (दोसु के०) बे गुणवाणे प्रत्येकें (चोआल के०) चुम्मालीरा चुम् ालीरा पद होय. तथा ख्रपूर्वकरणें (वीसा के ०) वीरा पद होय. ए सर्व मली (३५१) पद होय. एटली चोवीशी थाय. मार्टे एने चो वीश गुणा करतां ( ७४४ ७ ) घाय अने निवृत्तिबादरें दिकोदयना बार नांगा तेमार्टे तेने बमणा करीयें, तेवारें चोवीश यायः तेनी । यें एकोदयना पांच नां गा मेलवतां डेगणत्रीश थाय. ते पूर्वला (७४४७) मध्यें नेलतां (७४९७) एट्लां मोहनीयना उदय पद्वृंद (ि हामाईसुसामन के०) मिष्यात आदें देइने सर्वे यु णवाएो घइने सामान्यपरो घाय. हवे चद्य पद्वृंद योग साधें गणवां. ते नावी यें हैयें. तिहां पूर्वी ( ७४ ९ ९ ) पद्वृंद थयां हे तेने चार मनोयोग, चार वचन योग, तथा औदारिककाययोग, ए नव योग तो दशमा गुणनाणा लगें ध्रुव होय माटें नवे योग लायें गुणतां ( ७६ २७३ ) पदबंद नव योगसायें णतां थायः मिच्याल ग्रुणवाणे सातना उदयनी एक चोवीशी नांगानी है ते माटें सात एकं सात तथा आवना उदयनी त्रण चोवीशी हे माटें आव त्रिक चोवीश, एम नव त्रिक सत्तावीश, दश एं दश, एम मिथ्यात्वें अडशत पद थाय तथा तेवार पढी सर्वे ग्रणवाणो जेटलां जेटलां जदयस्थानक होय. ते एकेका जद्यें जेटली जेटली नांगानी चोवीशी है. तेटली छदयना आंक साथें गुणीयें, तेवारें पद श्राय-

ह्वे वैत्रिययोगें मिष्यात्वें अडशत पद, आत चोवीशी ने तेमाटें. अने वैक्ति यमिश्रें अनंतानुवंधी सिंह चार चोवीशी पा शियें, ते ाटें आतनो उदय एक ने दे, माटें आत एकुं आत अने नवनो उदय वे नेदे, ाटे नवे इ अढार अने दशनो उदय एक नेदे, माटे दश एकुं दश, एवं निश्चा पद थयां. तेमल औदारिकमिश्नें पण निश्चा अने कामेणें पण निश्चात (१७६) मिष्यात ग्रणताणे चार योगनां उदय पद थायः तथा सास्वादने वेत्रि ययोगें बत्रीश, औदारिक मिश्नें बत्री श,कामेणें बत्रीश,मली नुं थायः तथा मिश्र ग्रणताणे वैत्रि ययोगें बत्रीश थाय. एम त्रण ग्रणताणे ली (२०४) उदय पद थायः तथा वैत्रि ययोगें चोथे ग्रण तणे शात, पांचमे बाव , ने चुम्मालीश अने सातमें चुम्मालीश, शरवाने वशो उदयपद थायः तेनी साथें आगल त्रण ग्रणताणाना (२०४) नेलतां (५०४) थायः

तथा वैत्रियमिश्रयोगें देशविरितयें बाव , प्रमत्तें चुम्मालीश, शरवाले बु यया. तेपूर्वें पांचशो चार साथें नेलतां बशो चढ्यपदनी चोवीशी याय, ए सर्व नो विधि पूर्वें चढ्य नांगामां कह्यो बे तेने चोवीशगुणा करतां (१४४००) पद थाय.

तथा वैक्रियमिश्रयोगें साखादने नपुंत्तकवेद न होय, ते नणी वत्रीश पोडश क थाय तथा चोथे गुणवाणे वैवि यमिश्र तथा कामेणयोगें स्वीवेद न होय माटें शाव शाव पोडशक होय. एवं (१५१) पोडशक थयां. तथा प्रमचें अने अप्रमचें, एवे गुण वाणे आहार योगीने स्वीवेद न होय माटे वे वेद आश्री प्रत्येक गुणवाणे चु मालीश चुम्मालीश पोडशक थाय अने प्रमचें आहारक मिश्रयोगीना चुम्मालीश पोडशक लेवां. एवं सर्व मली (१०४) षोडशकने शोल गुणां करतां (४५४४) थाय तेनी साथें पूर्वला (१६१०३) तथा (१४४००) मेलवतां (१५१३०) थया. तथा औदारिकमिश्रयोगीने चोथे गुणवाणे स्वीवेद तथा नपुंतकवेद न होय ते नणी तिहां मात्र पुरुपवेदनाज शाव अप्रक नांगा लेवा तेना (४००) थाय. ते पूर्वला राशिमांहे नेलतां (१५१३) एटला पदवृंद योगसाथें गुणतां थाय. यड़कं 'सत्तरस सत्तसया, पण नचई सहस्स पयसंखा" इति वचनात्.

हवे उपयोग साथें गुणतां जे उदय नांगा होय ते कहीयें ठैयें. तिहां मिच्या ल अने सास्वादन ए वे गुणवाणे प्रत्येकें एक मित्रिश्चान, वीजं श्रुतश्चिनान. त्रीजं विनंगश्चान, चोधं चहुद्दीन. पांचमं श्रुचहुद्दीन. ए पांच उपयोग होय तथा त्रीजे. चोष अने पांचमे ए त्रण गुणवाणे त्रण कान श्रनं श्रवधिद्दीन निह् त त्रण द्दीन, एवं ठ उपयोग प्रत्येकें होय तथा ठठाथी द्द्यमा गुणवाणा लगं

तेहीज व जपयोग साथें सात ं नःपर्यवज्ञान पण होय माटें सात जपयोग होय.

तिहां मिष्यात्वें आठ अने साखादने चार, एवं बार चोवीशी नांगानी बे ग्रण एठाणे मलीने छे तेने पांच उपयोग साथें ग्रणतां शाठ चोवीशी थाय. तथा मिश्रें चार, अविरितयें आठ अने देशिवरितयें आठ, एवं त्रण ग्रणठाणे वीश चोवीशी नांगानी छे. तेने छ उपयोग साथें ग्रणतां (११०) उदय नांगानी चो वीशी थाय. तथा प्रमत्तनी आठ, प्रमत्तनी आठ, अपूर्वकरणनी चार, एवं ण ग्रणठाणानी वीश चोवीशीने सात उपयोग साथें ग्रणतां (१४०) चोवीशी उदय नांगानी थाय. अहीं सुधी सर्व मली (३१०) चोवीशी उदय नांगानी थाय. अहीं सुधी सर्व मली (३१०) चोवीशी उदय नांगानी थाय. तिहां पहेला मतें (३१०) ने चोवीश ग्रणा करतां (३१६) चोवीशी थाय. तिहां पहेला मतें (३१०) ने चोवीश ग्रणा करतां (३१६) ने चोवीश ग्रणा रतां (३५०) नांगा थाय. अने बीजा आचार्यना मतें चार चोवीशी हिकोदय नाख तां (३१६) ने चोवीश ग्रणा रतां (३५०४) नांगा थाय. तेवार पठी हिकोदय ना बार नांगा अने एकोदयना पांच, एवं सत्तर नांगाने सात उपयोग साथें ग्रण तां (११७) नांगा थाय ते पूर्वली राशिमांहे नेलतां (३९७३) उदयस्थान नांगा थाय. तथा मिश्र ग्रणठाणे पांच उपयोग माने, तेना मतें (३९०३) उदयस्थान नांगा थाय.

हवे एनां पदवृंद विचारे हे. तिहां मिष्यात्वें सामान्य पद छडशत छने साखा दने बत्रीश, एवं एकशो थयां तेने पांच उपयोग साथें ग्रुणतां पांचशें पद थाय. ए चोवीशीना छादि पद ते नणी चोवीश ग्रुणा करतां बार हजार पदवृंद थाय.

तथा प्रमत्तें चुम्मालीश, प्रमत्तें चुम्मालीश, अने अपूर्वकरणे वीश,एम त्रण गुणवाणे थई (१००) सामान्यपद थायः तेने सात जपयोग साथें गुणतां (१५६) पद थायः तेने चोवीश गुणा करतां (१०१४४) पद वृंद थायः ए सर्व मली (५०००) एटला दश जपयोग साथें आव गुणवाणे पद वृंद थायः तेमध्यें िह कोदयना चोवीश अने एकोदयना पांच, ए जगणत्रीशने सात जपयोग साथें गुणतां (१०३) थायः ते पूर्वला पद वृंद राशिमध्यें नेलीथें, तेवारें (५१००३) एटला दश जपयोगना दश गुणवाणे थई पद वृंद थाय तथा पूर्वला मतांतरें स् व सामान्य पद (१०००) होय तेने चोवीश गुणा करतां (५०१११) थाय ते

मांहे (१०३) दिकोदयवालां पद चेलतां (५०३१५) पदवृंद उपयोग साथं थाय.

हवे लेक्यासाथें मोहनीयना चह्य नांगा विचारे हे, तिहां मिण्यालयी मांभीने चोया ग्रुणगणा लगें हए लेक्या होय माटे चार ग्रुणगणानी चोवीश चोवीशी ने ह लेक्या साथें ग्रुणतां (१४४) चोवीशी यायः तथा पांचमे, हि अने सातमे ए त्रण ग्रुणगणे कृष्णाहिक त्रण लेक्या हि देशविरित तथा सर्वविरित नुं प हिवज नुं न होय तथी प्रथमनी त्रण लेक्या खहीं ं निषेधी हि बाकी तेजो, प अने शुक्क, ए त्रण लेक्या होय अन्यया देशविरित तथा सर्व विरित लह्या पही तो ह लेक्या पण होयः ए वचन विरोध न विचारवो, हि ए त्रण ग्रुणगणानी चोवीश चोवीशीने त्रण लेक्यायें त्रिगुणा रतां बहोत्तर चोवीशी याय. तथा अपूर्वकरण ग्रुणगणे एक शुक्क लेक्या होय माटे चार चोवीशी होयः ए सर्व मली बहों ने वीश थाय तेन चोवीश ग्रुणा रतां (५१००) नांगा थयाः तेम ध्यें हिकोदयना बार अने एकोदयना पांच, ए सत्तरमध्येंतो एकज शु लेक्या होय, माटे ते सत्तर नांगा नेलतां (५१७७) चढ़य नांगा लेक्या साथें थाय.

हवे लेक्यायें पद्वृंद कहे छे. तिहां मिण्यात्वें छडशन, साखादने बन्नीश, मिश्नें व त्रीश छने छविरतियें शान, शरवाले (१७१) सामान्य पद होय. तेने न लेक्या यें ग्रुणतां (११५१) घाय. तथा देशविरतियें बाव , प्रमत्तें चुम्मालीश छने छप्रमत्तें चुम्मालीश. एवं (१४०) तेने त्रण लेक्यायें त्रिग्रुणा करतां (४१०) घाय. त या छपूर्व करणे वीश तिहां एक ग्रुङ्क लेक्यायें ग्रुणतां वीश घाय एम शरवाले (१५७१) लेक्यायें सामन्यपद घाय. तेने चोवीश ग्रुणा करतां (३०१००) घाय. तेमध्यें दिकोद्यना चोवीश छने एकोद्यना पांच, नेलतां (३०१२७) एटला पद्वृंद लेक्या लाखें ग्रुणतां घाय. एनी गाथा कहे हे "तिगहीणा तेवन्ना, स्वाचे चद्याण हुंति सेलाचे ॥ छडतील सहस्ताई, प्याण स्वदोय सगतीला ॥१॥ "एम योग चपयोग लेक्या साथें मोहनीयना चद्यस्थानकना नांगा विचा स्वा वली सुनुद्वें विशेषें विशेषें विचारवा ॥ इति समुच्चार्थः॥ ५६॥

अय सत्तास्थानान्याह ॥ हवे ग्रणगणे मोहनीयकर्मनां सत्तास्थानक कहे हे.

तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चछसु तिग पुवे ॥ इक्कारवायरंमिछ, सुहुमो चछतिनि छवसंते ॥ ५७ ॥

थसं-(तिन्नेगे के॰) एक मिथ्यालगुणनाएो त्रण सना स्थानक होय, ति

हां जे ए एंज री मिथ्यात्वें जाय, तेने अ हावीशनी सत्ता, ते ध्येंथी सम्यक्व पुंज ठवेल्या पढी सत्तावीशनी सत्ता, मिश्रपुंज ठवेल्या पढी ख्रणवा ख्रनादि मिष्या त्वीने वद्यीशनी सत्ता जाएवी. एनी नावना सर्व पूर्वे मोहनीयनां सत्तास्थानक सा ान्यें विचारवाने प्रस्तावें विस्तारें नावी हे. तेमारें छहींछां नधी नावता त था ( एगेगं के ० ) ए सास्वादने ए ज अडावीशनुं सत्तास्थानक होय, जे नणी ए एवाणुं ए पुंज इतां सम्यक्ल व तांज होय, ते हिं तथा (तिगमीसे के 0 ) मि श्रेगुणवाणे ण सत्तास्थानक होया तिहां त्रिपुंजीने अद्वावीशनुं, सम्यक्व चवेलें सत्तावीश ं तथा अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या पढी जे पडतो मिश्रें आवे, तेने विशा सत्तास्थान जाणवुं तथा चोथे, पांचमे, बहे अने सातमे ए (चड के०) ार गुणवाणे प्रत्येकें (पंच के०) पांच पांच सत्तास्थानक होय, तिहां ए पुंज बतां छावी ं, नंतानुबंधीत्रा विसंयोज्ये चोवीरां, तेमध्येषी मिष्याल क्य गयें त्रेवीशं, तेमांथी मिश्रक्यें बावीशनुं, तेमांथी सम्यक्ल क्यें ए वीश ए सत्तास्थान क्वायि सम्यक्दिष्टिने होय तथा (तिगपुरे के ) अपू विकरण णगणे त्रण सत्तास्थान होय, तिहां क्वायि सम्यक्ट ष्टिने क्षपकश्रें णीयें थवा उपरा श्रेणीयें ए वीरां तास्थानक तथा औपरामिक सम्यक्टवें उप मश्रेणीयें हावीश ने चोवीशनुं सत्तास्थान होय तथा (इक्कारबायरं मिन के ) बादर संपरायें अगी । र सत्तानां स्थानक होये तिहां छावीश अने चोवीश उपशमश्रेणीनी पेक्सयें अने एकवीशनी सत्ता, उपशमश्रेणीयें क्षायिक सम्यक्दिष्टिने होय थवा क्रपकश्रेणीयें पण ज्यां सुधी आत कषायनो क्य न थी को।, तिहां लगें एकवीशनी सत्ता होय, तेवार पठी आठ षायना हुयें तेरनी सत्ता तेमांथी नपुंसकवेदऋयें बारनी सत्ता, विवेद ऋयें गीआरनी सत्ता, दास्य षट्कने क्ष्यें पांचनी सत्ता, पुरुष वेद क्यें चारनी सत्ता, संज्वलन नेध क्यें त्रण नी सत्ता, संज्वलनमान क्यें बेनी सत्ता, संज्वलन मायाक्त्यें एकनी सत्ता होयः त था (सुदुमोच के के ) सूक्ता संपराय गुणवाणे चार सत्तास्थान होय. तिहां अध् वीश, चोवीश, उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें तथा एकवीशनुं क्वायिक सम्यक्दृष्टिने उपशमश्रेणिनी पेक्संयें अने एक प्रकृति सत्तास्थानक क्ष्पकश्रेणीनी अपेक्स यें जाणबुं तथा (तिन्नि उवसंते के०) उपशांतमोह् गुणुवाणे अहावीश, चोवी श अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. ए पूर्वेजी पेरें नाववां. हवे एनो संवेध कहे हे. मिच्यात्वें बावीश ं एकज बंधस्थानक हे. तिहां सा

त, आत, नव अने दश, ए चार उदयस्थानक हे. तेमध्यें सातने उद्यें एकज अहावीशनी सत्ता होय अने वीजा त्रण उद्यें अहावीश, सत्तावीश अने हवीश. ए त्रण त्रण सत्ता प्रत्येकें होय. एवं मिच्यात्वें सर्वे थइ दश सत्तास्थानक होय.

तथा सास्वादने ए वीशना वंधस्थानकें सात, आव अने नव, ए त्रण उ दय स्थानकने विपे प्रत्येकें अठावीशनी सत्ता होय. एम त्रण सत्तास्थानक होय.

तथा मिश्रें सत्तरनो वंध हे, तिहां सात, आह, नव, ए त्रण छढ़य स्थानकें प्रत्येकें अहावीश, सत्तावीश अने चोवीश, ए त्रण सत्ता गणतां नव सत्तास्थानक होय.

अविरितयें सत्तरनो वंध हे, तिहां ह, सात, आह अने नव, ए चार उदय स्था नक होय. तिहां हने उदयें अहावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थान

होय तथा सात छने छात, ए वे उद्यें प्रत्येकें छात्रावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश छने एकवीश, ए पांच पांच सत्तास्थानक होय तथा नवने उद्यें एकवीश विना वाकीनां चार सत्तास्थानक होय. एवं शरवाखे सत्तर सत्तास्थानक होय.

देशिवरितयें तेरनो बंध हे तिहां पांच, ह सात अने आह, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां पांचने उदयें अहावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता होय. तथा हने उदयें अहावीश, चोवीश, वावीश अने एकवीश, ए पांच सत्ता. तेमज सातने उदयें पण एज पांच सत्तानां स्थानक होय तथा आहने उदयें एक वीश विना शेप चार सत्ता होय. एम सबै थइ सत्तर सत्तानां स्थानक होय.

प्रमत्तें नवनो वंध, तिहां चार, पांच, ह अने सात, ए चार उद्यस्थानक होय, तिहां चारने उद्यें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता होय. पांच अने हने उद्यें अठावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्ता प्र त्येकें होय अने सातने उद्यें एकवीश विना चार सत्ता होय. एम सर्व थइ सत्तर सत्तास्थानक होय. तेवीज रीतें अप्रमत्तें पण एज सत्तर सत्तास्थानक जाणवां.

तथा अपूर्वकरणे नवनो वंधने, तिहां चार, पांच अने न, ए त्रणे जद्यस्या नकें प्रत्येकें अहावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता गणतां नव सत्ता होय.

श्रिन्दित्तियें पांच, चार, त्रण, वे अने एक, ए पांच वंधस्थानक होया तिहां पांच वंधें वेने उद्यें अठावीश, चोवीश, एकवीश, तेर, बार अने अगीश्रार, ए ठ सत्तास्थानक होया तथा चारने वंधें एकने उद्यें अठावीश, चोवीश, एकवीश, श्रिमीश्रार, पांच अने चार, ए ठ सत्ता होय तथा त्रणने वंधें एकने उद्यें अठावीश. चोवीश, एकवीश, चार अने त्रण, ए पांच सत्ता होया तथा वेने वंधें एक उद्यें अठावीश.

अहावीश, चोवीश, एकवीश, त्रण अने बे, ए पांच सत्ता होय. तथा एकने वंधें एकने उदयें अहावीश, चोवीश, ए वीश, बे अने एक ए पांच सत्ता होय. एवं स वे मली पांच बंध स्थानकें थइने शरवाजे सत्तावीश सत्तास्थानक होय.

स्द्रासंपरायें बंध विना एकने उदयें छाडावीश, चोवीश, एकवीश छने एक.
ए चार सत्तास्थानक होय तथा उपशांतमोहें बंधोदय विना छाडावीश, चोवीश
ह ने ए वीश, ए त्रण सत्तास्थान होय एम सर्व गुणवाण सर्व मली (१३३) मो
हनीयनां सत्तास्थान होय ए स्वरूप सर्व पूर्वे जाव्युं के इति समुणा ए ॥
थ ना मिण बंधस्थानादीत्याह ॥ हवे चौद गुणवाणे नामकर्मना बंधो
दय सत्तास्थान ने नांगा हे के.

त्रव वक तिग सत, इगं इगं तिगङ्गं तिच्य च ॥ इग वच ङगपण च , ङगच चऊ पणग एगच ॥ ५०॥

अर्थ- मिथ्यात्व गुणवाणे (व वव के०) व बंधस्थानक, नव उदय स्था नक अने व सत्ता स्थानक, होयः बीजे गुणवाणे (तिगसतप्तां के०) त्रण बंध स्थान , सात उदय स्थानक, अने वे सत्तास्थानक होयः त्रीजे गुणवाणे (प्टां तिगप्टां के०) वे बंधस्थानक, त्रण उदयस्थानक अने वे सत्तास्थानक होयः चो ये गुणवाणे (तिअष्ठच के०) त्रण बंधस्थानक, आव उदयस्थानक ने चार सत्तास्थानक होयः पांचमे गुणवाणे (गठच के०) वे बंधस्थानक, व उदय स्थानक अने चार सत्तास्थानक होयः वंध गुणवाणे (प्टां चंध स्थानक, पांच उदयस्थानक होयः सत्तास्थानक होयः सत्तास्थानक होयः सातमे गुणवाणे (प्टां च च के०) वे बंधस्थानक, चार उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः वार सत्तास्थानक होयः इत्यक्तराथेः॥ ५०॥

हवे संवेध कहें वे. तिहां मिथ्यात्व णवाणे १३-१५-१६-१०-१ए-३० ए व वंधस्थानक वे. तिहां अपयीप्ता एकेंड्य प्रायोग्य त्रेवीश बांधतां बादर स्र क्षा अने प्रत्येक साधारण पदें चार नांगा थाय तथा पर्याप्ता एकेंड्य प्रायोग्य प शिश बांधतां वीश नांगा अने अपयीप्ता त्रण विकलेंड्य तथा पंचेंड्य तिर्धेच मनुष्य प्रायोग्य पश्चीश बांधतां, एकेको नांगो सर्व संख्यायें प शिशने बंधें प शिश नांगा होय. तथा पर्याप्त एकेंड्य प्रायोग्य वृद्धीश बांधतां शोल नांगा, तथा देव

गित प्रायोग्य अठावीश वांधतां आठ नांगा, नर गित प्रायोग्य अठावीश वांधतां एक नांगो. एवं नव नांगा अठावीशने वंधे होय. तथा पर्याप्त वेंडिय, तेंडिय अने चौरिडिय. प्रायोग्य नंगणत्रीश वांधतां प्रत्येकें आठ आठ नांगा होय. तथा पर्याप्त पंचेंडिय तिर्येच प्रायोग्य नंगणत्रीश बांधतां (४६००) नांगा तथा पर्याप्ता पंचेंडिय नुष्य गित प्रायोग्य नंगणत्रीश बांधतां (४६००) नांगा सर्व नी ने गणत्रीशने वंधें (ए१४०) नांगा थाय. अहीं तिथिकरसहित देवगित प्रायोग्य ने गणत्रीश प्रकृतिना बंधना नांगा आठ न पामीयें, केमके सम्यक्त विना तिथिकर नाम कमेनो वंध न होय. तथा पर्याप्त बेंडिय, तेंडिय, अने चौरिडिय प्रायोग्य त्रीश बांधतां (४६००) शरवा े त्रीशने बंधें (४६३२) नांगा थाय. एवं व वंधस्थानकें थइ ने मिष्याल गुणवाणे सर्व मली (१३७२६) नांगा होय. अहींआ हार दिक सहित देवगित प्रायोग्य त्रीशना बंधनो नांगो एक तथा जिननाम सहित मनुष्यगित प्रायोग्य त्रीशना बंधना नांगा आठ, एवं नव नांगा न होय. बाकीना नांगा होय.

मिथ्यात्वें ११-१४-१५-१६-१९-१ए-३०-११- ए नव उद्य स्था नक होय. तिहां छाहारक संयत वैत्रि यसंयत छने केवली. एटला मिथ्यात्वें न होय. माटें ते संबंधी नांगा छहीं न कहेवा. होप सर्व ४१-११-३१-६००-३१-११ एए-१७०१-११८-११६४- शरवाले (७७९३) नांगा होय. एटले नव उद्य स्थानकना नांगा (७९ए१) पूर्वें सामान्यादेशें नाव्या हे. तेमध्येंथी केवलीना छात, छाहारकसाधुना सात, छने उद्योत सहित वैक्रिय मनुष्यना त्रण नांगा, उंगणत्रीश, त्रीश, छने एकत्रीश ए त्रण उद्यनो एकेको नांगो उद्योत सहित वैक्रिय साधुने तथा देवताने होय. तेमां देवताने उत्तरवैक्रियना नांगा जूदा नथी लेखव्या छने साधुनो हो, सातमे ग्रणहाणे होय. पण मिथ्यात्वें न होय. माटें ए अहार उद्य नांगा टाली बाकी (७९७३) उद्य स्थानकना नांगा सर्वजीव नी छपेहायें होय, ते सर्व पूर्वें कह्या हे. तिहांची जोइ लेवा.

हवे मिथ्यात्वें उ सत्तास्थानक होय, ते कहे ठे. तिहां बाणुनी सत्ता चारे ग तिना मिथ्यात्वी जीवने होय तथा जेवारें कोइएक वेदक सम्यक्दिष्टिजीवें पूर्वें नरकायु बांध्युं ठे तेमाटें ते अंत समय सम्यक्त वमीने नरकें जाय तेने अंतर सहूर्त पर्यंत नेव्याशीनी सत्ता होय तथा अंतरसहूर्त पठी ते वली सम्यक्त पा मे. अईं। आहारकचतुष्क, तथा जिननाम ए वेहुनी समका कें नरकमां हे सत्ता न होय, तेजणी ज्याणुनुं सत्तास्थानक नरकमांहे न होय, तथा श्रव्याशीनी सत्ता पण चारे गितना मिथ्याली जीवने होय, तथा व्याशीनुं सत्तास्थानक, एकेंडियने विषे देवगित प्राथोग्य श्रयवा नरकगित प्रायोग्य श्रवेहये थके पामीयें तथा एं शीनुं सत्तास्थानक तो ज्याणु मध्येंथी तीर्थकरनाम, श्राहारकचतुष्क. वेक्षियपट् क, नरकिक, ए तेर प्रकृति श्रवेले थके एकेंडियमध्यें पामीयें, तेवार पठी ते ए केंडिय मध्येंथी नीकलीने विकलेंडिय तथा पंचेंडियतिर्यंच मनुष्य मांहे श्रवत्रीप यीनो थया पठीपण श्रंतरमुहूर्त्त लगें तेमांहे एंशीनुं सत्तास्थानक पामीयें श्रवे ते श्रं तरमुहूर्त्त वीत्या पठी अवस्य वैक्षियादिकनो वंध होय, तेमाटें. तथा ते एंशीमां हेथी वली मनुष्यगित श्रवे मनुष्यानुपूर्वी श्रवेलो विकलेंडिय तथा पंचेंडियतिर्येच तमायों श्रयवा तेश वाश मध्येंथी श्रावेला विकलेंडिय तथा पंचेंडियतिर्येच तेमध्यें पण श्रवोत्तेरनुं सत्तास्थानक श्रंतरमुहूर्त्त लगें पामीयें श्रवे पर्याता श्रया पठी श्रवस्य मनुष्यिक बांधे, माटे तिहां श्रव्योतेरनी सत्ता न होय. एम सामा न्यें बंध, श्रवस्य श्रवे सत्तानां स्थानक मिथ्याल ग्रणगिणे कह्यां.

दवे सत्ता संवेधें नांगा कहे है। तिहां मिध्यात्वीने छपयीता एकेंड्य प्रायोग्य त्रेवीरी बांधतां सर्व नवे उदयस्थानक संनवे पण तेमध्यें पञ्चीराने उद्यें देवता ना नांगा आव अने नारकीनो नांगो एक, एवं नव तथा सत्तावीशने उदयें देव ताना आत तथा नारकीनो एक तथा अहावीशने उद्यें देवताना शोल अने ना रकीनो एक, तेटलाज वली वंगणत्रीशना वद्यना पण लेवा. तथा त्रीशने वद्यें देवताना आठ, एवं शाठ नांगा त्रेवीशना बंधें न होय. जे नएी नारकी तो एकें डियमांहे जाय नहीं अने देवता पण अपयोता एकेंडियमध्यें न जाय तेमाटें तेना शाव नांगा टाली बाकी बदा चद्यना ( १९१३ ) चद्य नांगा त्रेवीशने वं धें होय तिहां बाणु, अध्याशी, वयाशी, एंशी अने अधीत्तर, ए पांच सत्तास्थानक तो एकवीश, चोवीश, प शिश अने ठवीश, ए चार छदयस्थानकें प्रत्येकें होय. ति हां प शिश्ने चद्यें तेच वाचना जे चद्यें सात नांगा है, तिहां अहोत्तरनी सना परंतु बीजे नांगे न होय. ने ववीशना उदयें म ष्यना नांगा विना बाकी (३११) नांगे तें वाजमांदेथी । व्या होय, तेनी अपेक्।यें होतेरनी सत्ता हो य. बीजे नांगे न होय तथा बीजा सत्तावीश, हावीश, डंगणत्रीश, त्रीश एकत्रीश. ए पांच उदयें होतेर विना बाकीना चार चार सत्तास्थानक होय. ए म शरवाखे त्रेवीशने बंधें चालीश सत्तास्थानक होय. एमल पञ्चीशने बंधें पण चालीश अने बीशने वंधें पण चालीश सत्तास्थानक होय पण एटलुं विशेष जे पर्याप्त एकेंडिय प्रायोग्य पञ्चीशने वंधें आपणे उद्यें देवताना पण उद्य नांगा हो य, तेथी ४४६ ए उद्य नांगे ए वे वंधस्थान होय. अने नारकीना पांच उद्य नांगा अहींआं न होय पण देव । जे एकेंडिय प्रायोग्य पञ्चीश प्रकृतिनो वंध करे तिहां वादर प्रत्येक पर्याप्त प्रायोग्य आठ नांगा वांधे. वाकी वार नांगा न वांधे केमके सुक्ता साधारण अपर्याप्ता मध्यें देवताने उपज्ञ नथी ते माटे.

अध्वीशने वंधें मिण्याखीनें त्रीश अने ए त्रीश, ए वे उद्यस्थान होय. तिहां त्रीश गुं पंचें हिय तियेच तथा मनुष्यने होय अने एकत्रीश गुं पंचें हिय तियेच ने होय. त्रीशने उद्यें पंचें हिय तियेच अने ष्यने देवगति प्रायोग्य तथा नरकगित प्रायोग्य अध्वावीशनो वंध होय. वाकी विकलें हियना त्रीश नांगा उद्यना न होय. ए वे उद्यें घइ (४०४०) नांगे अध्ववीशनो वंध होय. तिहां त्रीशने उद्यें वाणु, ने व्याशी, अवधाशी अने उधाशी, ए चार सत्ता होय अने एकत्रीशने उद्यें नेव्याशीनी सत्ता न होय, तीर्थंकर सहित नेव्याशीनी सत्ता, तिर्यंचने विषे न पामीयें, तथी त्रण सत्ता होय, तथा त्रीशने उद्यें पण जे वेदक सन्यक्त वमी, जिनना म सहित मिण्यात्वें गयो, तेने नरक प्रायोग्य अध्ववीश वांधतां पण नेव्याशीनी सत्ता होय. एम अधावीशने वंधें सात सत्तानां स्थानक जाणवां.

देवगित प्रायोग्य विना बीजी मनुष्य, तियेचगित प्रायोग्य उंगण त्रीशने वंथे वीश, नव अने आत, ए त्रण विना बीजां सर्व उदय स्थानक होय. तथा वाणु, नेव्याशी, अवधाशी, उद्याशी, एंशी अने अहोंनर, ए उ सत्तास्थानक होय, तिहां ए कवीशने उद्यें उ सत्ता होय. ते कहे छे. जिननाम बांधी सम्यक्त वमीने नरकें जाय तेनी वच्चें एकवीशनो उदय होय. तिहां नेव्याशीनी सत्ता होय तथा वाणु अने अ व्याशी, ए वे सत्तास्थान चतुर्गतिना जीवने वियहगितयें एकवीशने उदयें होय, तथा उद्याशी अने एंशी ए वे सत्ता, देव नारकी विना वीजा जीवोने होय. अने अ होनेरनी सत्ता देव नारकी तथा मनुष्य विना वीजा जीवोने होय. एम एकवीश ने उदयें उ सत्ता स्थानक होय तथा चोवीशने उदयें एक नेव्याशी विना वाकी नां पांच सत्तास्थानक, एकेंड्यने होय. वीजा जीवोने ए उदय न होय तथा प चिशने उदयें उ सत्तास्थानक होय तथा उद्यीशने उदयें नेव्याशीनी सत्ता विना वाकी पांच सत्ता होय, जे नणी नेव्याशीनी सत्ता नारकीने होय तेने तो उद्यीशनुं उदयस्थानकज नथी तथा सत्तावीशने उदयें अहोत्तर विना पांच सत्ता होय, ते उद्याशीनी सत्ता होय, ते उद्योग तथा पांच सत्ता होय, जे नणी नेव्याशीनी सत्ता नारकीने होय तेने तो उद्यीशनुं उदयस्थानकज नथी तथा सत्तावीशने उद्यें अहोत्तर विना पांच सत्ता होय, ते

एकवीशना उदयनी पेरें नाववां जे नणी तेड, वाडने सत्तावीशनो उदय नथी बाकी एकेंडियादिकने पण पर्याप्तावस्थायें ए उदय होय, तेण ते मनुष्यिक अवश्य बांधे, माटें अठोत्तरनी सत्ता छहीं ए उदयमां नथी तथा छठावीशने उदयें पांच सत्ता होय तेमध्यें उशाशीनी सत्ता विकडेंडिय, तथा पंचेंडिय तिर्यंच मनुष्यनी छपे हायें खेवी छने बीजां सत्तास्थान पूर्वेजी पेरें नाववां तथा र्जगणत्रीशने उदयें पण एज पांच सत्ता पूर्वेजी पेरें नाववी तथा त्रीशने उदयें नेव्याशी विना, वाकी तेही ज चार सत्ता, विकडेंडिय छने तिर्यंच मनुष्यनी छपेहायें होय छने नेव्याशीनी सत्ता तो जिननाम बांधी सम्यक्त वमी नरकें जाता एवा मिय्यात्वी नारकीने होय तिहांतो त्रीश ं उदयह । तक न होय. तथा तेहीज चार सत्तास्थानक एकत्रीश ने उद्यें पण मनुष्य विना बीजा जीवोने होय जे नणी एकत्रीशनो उदय, सामान्य म ष्यने नथी केवजीने हे एम सर्व थइ उंगणत्रीशने बंधें (४५) सत्ता होय.

देवगित प्रायोग्य त्रीशना बंध विना विकलें हिय तथा पंचें हिय प्रायोग्य त्रीशने बंधें सामान्यें वीश, छात छने नव ए त्रण उदय स्थानक विना वाकीनां नव उदय स्वान होय, तिहां नेव्याशी विना पांच सत्ता होय जे नणी तिथेचगित मध्यें जिना नी सत्ता न होय. तिहां ए वीश, चोवीश, पञ्चीश, छने उद्वीश ए चार उद यें पांच पांच सत्ता स्थानक होय छने बीजा पांच उद्यें छ ठोत्तर विना चार चार सत्ता स्थानक होय. एवं नव उद्यें घइ चालीश सत्ता होय. हीं छां नेव्याशीनुं स तास्थानतो देवगित प्रायोग्य छाहारकिक सहित त्रीशने बंधें छने जिननाम सहित ध्य प्रायोग्य त्रीशने बंधें होय ए बेहु मिध्याली न बांधे. एटलेए मिध्या गुणवाणे उ बंधस्थानकें नव उद्यें घइ बज़ेंने बार सत्ता स्थानक होय.

हवे सा दिने बंध स्थान कहे हे. सास्वादनें वर्ततां अठावीश, उगणत्रीश ने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय. देवगति प्रायोग्य अठावीशना आह नांगा सास्वादने बंधाय, तेना बांधनार पंचेंडिय तिर्थेच तथा मनुष्य होय ने नरक प्रायोग्य अठावीशनो बंध तो मिय्याल प्रत्ययि हो ते नणी सास्वादने न बंधाय तथा पंचेंडियतिर्थेच प्रायोग्य ने म ष्य प्रायोग्य उगणत्रीश प्रकृति बंधना नांगा (६४००) नो बंध, एकेंडिय,विकलेंडिय तथा तिर्थेच, मनुष्य, देवता, नारकीने सा दिने होय. तिहां म संस्थान अने हेवकुं संघयण,न बंधाय तथी पांच संघयण अने पांच संस्थान तथा सह

अने पांच संस्थान तथा सप्त गलना विकल्पें करी बत्री शहों चांगा प्रत्येकें म ध्य तिर्थेचगति प्रायोग्य चंगणत्रीशना वंधें होया ए बेहुना मली (६४००) नांगा होया तुष्क बांधी उपशमश्रेणीयी पडतां सास्वादन ग्रणगणु पामे, तेने वाणुनुं सत्तास्या नक होय अने अरुवाशीनी सत्ता तो चारे गतिना सास्वादनीने होयः

हवे संवेध कहे हे. छा हा वी श में सासादने त्रीश छाने एक त्रीश, ए वे छद्य स्थानक होय. जे नणी देवगित प्रायोग्य छा हा वी श प्रकृति, करण छा पर्याप्तो न बांधे तेमाटें बी जां छदय स्थानक एने न होय. तिहां म छुप्य वंधक नी छा पे ह्या श्रीशने छ होये बाणु छाने छा छा छा।, ए वे सत्तास्थानक होय. छाने ति थेंचने छप शमश्रेणी न होय माटे छप शमश्रेणी पडवाने छा ना वें बाणु नी सत्ता न होय. एक छा छा शीनी ज होय तथा ति थेंच म छुप्य प्रायोग्य छंगण त्रीशं वांधतां, सासा दनीने साते छदयस्थानक होय. तिहां पोत पोताने छदय स्थानके एके छं छ छा शी हुं सत्तास्थानक होय तथा म छुप्यने त्रीशने छद्ये वर्चताने वाणु छने छ छा शी हुं सत्तास्थानक होय, शेप सर्वने एक ज छ छा शी हुं होय. तथा एम त्री शना वंधक ने पण संवेध कहे वो, सर्व म छी सास्वाद ने छ छा र सत्ता स्थानक होय.

ह्वे मिश्रगुणनाणे नामकर्मना छान्नीश छने जगणत्रीश, ए वे वंधस्यानक होय. तिहां मिश्रदृष्टि तिर्यंच मनुष्यने देवगित प्रायोग्य छान्नीशनो वंध होय, तिहां नांगा छान होय छने मनुष्य प्रायोग्य जगणत्रीशनो वंध मिश्रदृष्टि देव नारकीने होय. तिहां स्थिर, छस्थिर, गुन, छग्नन, यश, छयशने विकल्पें नांगा छ । पामीयें बीजा जे व संस्थानादिकना विकल्पें नांगा छपजे, ते छहींछां न होय, एम छागले गुणनाणे पण जाणनुं. शरवाले बंध नांगा शोल होय.

मिश्रें डंगणत्रीश, त्रीश छने एकत्रीश ए त्रण उदय स्थानक होय तिहां डंगण त्रीशने उदयें देवना नांगा छाठ छने नारकीनो एक, एवं नव नांगा होय. तथा त्रीशने उदयें पंचेंडिय तिर्थेचना उदय नांगा (१९२०) मनुष्यना (११५२) एवं (२०००) त्रीशने उदयें उदय नांगा होय. तथा एकत्रीशनुं उदयस्थानक, पंचेंडिय तिर्थचने होय तिहां नांगा (११५२) सर्व घइ मिश्रगुणठाणे उदय नांगा (४०४१) होय. छहींछां सत्तास्थानक बाणु छने छह्याशी, ए वे होय.

हवे संवेध जाले हे. अंडावीशने बंधें मिश्रदृष्टिने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उ दय स्थानक होय. तेने विषे प्रत्येकें बाणु अने अंड्याशी, ए वे सत्तास्थानक होय तथा उगणत्रीशना वंधकने एकज उगणत्रीशनुं उदयस्थानक होय तिहां पण तेहीज बे सत्तास्थानक जाणवां. सर्व मजी मिश्रगुणवाणे ह सत्तास्थानक होय. अविरित गुणवाणे अंडावीश, उगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय. बंध है, ते ाटें हो , था ठ्याशीनी सत्ता चारे गतिना सम्यक्रृहिनें होय. हवें सत्ता संवेध हे हे. अविरति सम्यक्टि पंचें इय तिर्थेच नुष्यने देव प्रायोग्य हावीशने बंधें आव हदय स्थान होया तिहां प शिश ने सत्तावीश नो उद्य, वैक्रिय तिर्येच ष्यने होय. बीजा उसामान्यें होय. ते एके । उद्यें बाएा ने ठ्याशी, ए बे बे तास्थान होय. ए आठ उदयनां शोल स त्ता स्थान होय, तथा उंगण श नो बंध एक देवगति प्रायोग्य, बी गो ति प्रायोग्य होय. तिहां देवगित प्रायोग्य जिनना सहित छंगणत्री ना बंध म ष्यज हो परंतु रिये न होय तेने ए शिना उदय विना साते उदय स्था न होय, केमके ष्यने ए शिनो उदय नधी, ते एके । उदयें ज्याणु नेच्याशी, ए बे बे सत्तास्थान होयः तथा ष्यगित प्रायोग्य उगणत्रीशनो वं ध, देव नारकीने होय. तिहां ११-१५-१७-१७-१ए- ए पांच उद्यस्थानक हो य. एकेका उदयें ाणु ने अवधाशी, ए बे बे सत्ता होय तथा म ष्यगति प्रायो ग्य जिननाम सिहत त्रीशनो बंध पण देव नारकीने होय. तिहां ११-१५-१४-१ ७ – १ ए – १ ० – ए व चदय स्थानक होय. तिहां प्रत्येकें त्र्याणुं ने नेव्याशी ए बे बे सत्ता, देवताने होय अने नारकीने पांच उदय स्थानक होय. तिहां प्रत्येकें एकज नेव्याशीनी सत्ता होय केमके, जिननामनी सत्ता छतां आहारकनी सत्ता नरकमध्यें न होय ते मार्टे त्र्याणुनी सत्ता नारकी मध्यें न पामीयें, ने एकत्री शने चद्यें बे सत्ता होय, सर्व थइ चोप सत्ता थइ.

देशविरति गुणवाणे अघावीश ने उंगणत्रीश ए वे बंधस्थानक होय. ति हां मनुष्य अने तिर्थेच देशविरति, देवगति, प्रायोग्य अघावीश बांधे, तिहां नांगा आव. तथा तेहीज जिननाम सहित उंगणत्रीश प्रकृति एकला म ष्य देशविरति ज बांधे पण तिर्थेच न बांधे तिहां नांगा आव सर्व मली नांगा शोल होय.

देशिवरितयें सामान्यें १५-१७-१ए-१ए-३०-३१-ए उ उद्य स्थानक होय. तिहां छावीशने बंधें प्रथमना चार उदय तो वैश् य तियेच मनुष्यने होय तिहां एकेको जांगो करतां चार जांगा थया तथा अछावीश, उंगणत्रीश, ए बे उदय सामान्य तिर्यच मनुष्यने तथा वैक्रियने पण होय. तिहां उदय जांगा उ तथा त्री शनो उदय तिर्यच मनुष्यने तिहां उ संघयण, उ संस्थानना विकल्पें जांगा उत्री श ते सुखर इःखरें बहोत्तेर ते शुना ज खगितयें (१४४) प्रत्येकें एकेका उदयें होय. अहींआं दौर्जाग्य अनादेय अने अयशःकीर्तिनो उदय गुण प्रत्यय नणी द्रवे अप्रमत्तं बंधादिक सत्ता संवेध कहे हे. अप्रमत्त साधुने अहावीश, उंगण त्रीश, प्रकृतीश, ए चार बंधस्थानक होय तिहां प्रथमना वे तो प्रमत्तनी पेरें नाववां तथा आहारकिक सहित बांधतां अनुक्रमे त्रीश एकत्रीशनो वंध होयः ए चार वंधस्थानकें प्रत्येकें एकेको नांगो करतां चार बंध नांगा थाय केमके अहीं अ स्थिर, अशुन, अयशनो वंध अप्रमत्तें नथी माटे. तथा प्रत्येक वंधस्थानकें उंगणत्री श अने त्रीश ए वे वे उद्यस्थानक होयः तिहां जे प्रमत्त थको वैक्षिय तथा आ हारक आरंगी अप्रमत्तें आवे तेने उद्योतने उद्यें उंगणत्रीशनो उदय होयः, तथा त्रीशनो उदय सहज होयः, तिहां प्रत्येक उद्यें एक नांगो वैक्षियनो तथा आ हारकनो एवं वे उद्यें वे नांगा तथा सहज शरीरें अप्रमत्तने त्रीशने उद्यें पूर्वें देशविरतिस्थाने (१४६) नांगा कह्या, ते होय सर्व मली एकेका बंधें उदय नांगा (१४०) होयः शरवाले चार बंधना मलीने (५७२) उद्य नांगा होय तिहां अहावी शने बंधें वेद्ध उदयें प्रत्येकें अवशाशीनी सत्ता होय अने उंगणत्रीशने वंधें वेद्ध उदयें प्रत्येकें अवशाशीनी सत्ता होय अने उंगणत्रीशने वंधें वेद्ध उद्यें प्रत्येकें नथाशीनी सत्ता होय तथा त्रीशने बंधें वेद्ध उद्यें प्रत्येकें त्रयाशीनी सत्ता होय अहीं शन विधें के उद्यों प्रत्येकें वाणुनी सत्ता होय तथा श्राहोशना बंधें वेद्ध उद्यें प्रत्येकें प्रत्याशीनी सत्ता होयः अहीं श्राहोशना वंधें वेद्ध उद्यें प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्याशीनी सत्ता होयः अहीं श्राहोशी तथा श्राहोशना वंधें वेद्ध उद्यें प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्यों प्रत्येकें प्रत्यों श्राहोशी सत्ता होयः एवं आत सत्ता थायः

द्वे अपूर्वकरणे वंधोद्य सत्ता संवेध कहे हे. अपूर्व करणें अठावीश, डीगण त्रीश, त्रीश, एकत्रीश अने एक, ए पांच वंध स्थानक होय. तिहां प्रथमनां चार, अप्रमत्तनी पेरें लेवां, तथा एक यशःकीर्त्तिनो वंध, ते सातमे नागें देवगितप्रायो ग्य वंधना विश्वेदें होय तिहां नांगो प्रत्येकें एकेक होय. सर्व थड़ वंध नांगा पांच होय. तिहां प्रत्येक वंधस्थानकें एकत्रीशतुंज उदयस्थानक होय. तिहां प्रथम संवयणनें ह संस्थानना विकल्पें ह नांगा ते शुनाशुन खगितयें वार अने सुखर इ खरें चोवीश नांगा थाय. अने कोइएक आचार्य, पहेला त्रण संवयणे उपशमश्रेष्ठीनो आरंन माने हे. तेना मतें वहोत्तेर उदय नांगा होय. शरवाले पांच उदय नां (३६०) नांगा थाय तथा तिहां प्रथम चार वंधस्थानकें त्रीशने उदयें अति कमें अठाशी, नेव्याशी, वाणु अने ज्याणुं, ए एकेक सत्तास्थानक होय, अने ए कने वंधे त्रीशने उदयें ए चारे सत्ता होय, शरवाले आह सत्ता स्थानक होय। ॥ पह ॥

एगेग मह इगेग, महत तनम केवल जिणाणं॥ एगं चन एगं चन, अह चन इ तकमुद्यंसा॥॥ए॥ अर्थ- नवमे ग्रुणवाणे (एनेगमह केंग्) एक वंधस्थानक, एक व्यवस्थानक अने आव सत्तास्थानक होय- इसमे ग्रुणवाणे (इनेगमह केंग्) एक वंधस्थानक, एक व्यवस्थानक अने आव सत्तास्थानक होय- तथा (ववन केंग्) व्यवस्थाय तिन व्यशांतमोह, क्रीणमोह अने (केंग्जिणणां केंग्) केंग्जी जिन ते स्थों नी केंग्जी तथा अयांगी केंग्जी, ए द्वार ग्रुणवाणा वाजाने नानकमेनो वंध न होय- तिहां व्यशांतमोहने (एगंचव केंग्) एक व्ययस्थानक अने चार सत्ता स्थानक होय- तथा क्रीणमोहने (एगंचव केंग्) एक व्ययस्थानक, अने चार सत्तास्थानक होय- स्थोगी केंग्जीने (अष्ट्यव केंग्) आव व्ययस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय- स्थोगी केंग्जीने (अष्ट्यव केंग्) ओ व्यवस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय- स्थोगी केंग्जीने (अष्ट्यव केंग्) वे व्ययस्थानक अने वार स्थानक होय- ए रीतें (सुक्यंता केंग्) व्यव अने अंग्रुणवें सत्ता तेनां स्थानक चार ग्रुणवाणे जालां.

द्वे अनिवृत्तिवाद् तथा च्यातंपरायं वंधादिक कहे है. ए वे ग्रणवाणे एक यदाःकीतिनो वंध अने श्रीहानो ठद्य होयः तिहां ह्यकन नांगा चोवीदा अने श्रीपदा मिकने त्रण संवयणना विकट्पें नांगा बहों तेर ठद्यना जाणवा तथा ज्याणु, वाणु, नेत्राही. अवदाही, एंड़ी, ठंगणाएंदी, उहां तेर अने पचोत्तर, ए श्राव सत्तास्थान क होय. तिहां पहेलां चार सत्तास्थानक तो ठपदामश्रेणीनी श्रपेक्सयें होय तथा द्रपक्शणीयें पण क्यां सुधी नामकर्मनी तेर प्रकृति ह्य न थायः त्यां जगं जा णवां श्रने तेर प्रकृतिना ह्य पढ़ी ए ए चार सत्तास्थानक होय. श्रदीशां वंथोदयनो नेद नथी ते माटें संवध नथी देखाह्यो.

उपरांतमोहं वंधने छनावें एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक ने. तिहां नांगा वहाँनेर होय छन ज्याणु, वाणु, नेव्याशी छन छठ्याशी, ए चार तत्ता होय.

तया की एमोहें एक ज त्रीशनुं उदयस्थानक है. तिहां नांगा चोवीश तिहां प ए तीथेकर नाम सहितने सर्व संस्थानादिक प्रशस्त क्षेय तेमाटें. तिहां ए०-३६ ए वे सत्ता तीथेकरने तथा ७ए-५ए ए वे सत्ता, अतीथेकरने. एवं चार तत्ता होय.

त्यांगीकेवलीने वीद्य. एकवीद्य, ठवीद्य. सत्तावीद्य. असवीद्य. ठंगएत्रीद्य. त्रीद्य अने एकत्रीद्य. ए आह उद्यस्थानकना नांगा हुन् पूर्व तामान्यादेशें विचाला है। निहांची जाणवा. अहीं सत्तास्थानक चार हीलमाहनी परेंज कवां तथा तंवेथ चाद जीव स्थानक विचारें संज्ञी प्यांता हारें कह्यों है। निहांची क्षेत्रों।

अयोगी ग्रुणवाणे नव अने आव. ए वे टक्य होय तेना नांगा वे अने ए :-

७ए-७६-७५-ए-ए त सत्ता होय. तिहां तीर्थंकरने नवने उद्यें ए०-७६-ए- ए त्रण ता होय तथा सामान्य केवलीने आतने उदयें-७ए-७५-ए त्र ए सत्ता होय. ए चौद ग्रुणताणे आत कर्मनो वंध उदय सत्ता संवेध देखाड्यो॥५ए॥

थ मिष्यात्वस्य त्रयोविंशत्यादि वंधस्थानषट्के क्रमेण नंगप्रकृषिकां नाष्य गा । हि ॥ हवे मिष्यात्वगुणवाणानां जे त्रेवीशादिक व वंधस्थानक वे, तेने विषे ह में केटला वंधना नांगा चपजे, ते प्रकृपवाने नाष्यगाथा कहे वे

च पणवीसा सोलस, नव चतालासयाय वाण ३६॥ वती सुत्तर गया, लसया मिचरस वंध विही॥ ६०॥

इ श्र— वीराने बंधस्थानकें (चड के०) चार नांगा, पञ्चीशने वंधें (पणवीसा के०) प िश नांगा, उद्योशने वंधें (सोलस के०) शोल नांगा, अष्ठावीशने वंधें (नव के०) नव नांगा, डेगणत्रीशने वंधें (चत्तालासयायवाणड के०) बाणुरों ने चालीश नांगा, त्रीशने वंधें (बत्तीसुत्तरहायालसया के०) हेंतालीशें ने बत्रीश नांगा डपजे,ए (मिष्ठस्सबंधविही के०) मिष्यालगुणताणे ह वधस्थानकें थइने (१२०१६) नांगा होय. एनी नावना पूर्वे ही हे त्यांथी जाणवी॥ इति स चयार्थः॥ ६०॥

॥ ख्र सास्वादनेऽ विंशत्यादि बंधस्थानत्रयनंगत्ररूपकानाष्यगाथामाद ॥ दवे सास्वादन ग्रुणगणानां जे ख्रान्तवीशादिक त्रण बंधस्थानक हे, तेने विषे बंधना केटला नांगा उपजे, ते प्ररूपवाने नाष्य गाथा कहे हे.

अह सया च स ही,बत्तीस सयाई सासणे जेखा॥ अ विशाईसु, सवाणहाहि अ वन इ ॥ ६१॥

थे— हावीशने बंधें ( ह के ) आह नांगा ने डंगणत्रीशने बंधें (स याच डस ही के ) चोशत हों नांगा, त्रीशने बंधें (बत्तीससयाई के ) त्रीश हों नांगा, ए रीतें (सासपोने । के ) सास्वादन गुणहाएो नांगा डपजे. ( हावी साई के ) हावीशादिक त्रण बधस्थानकें थइने (सहाण हादि ह डइ के ) सर्व मली हज़ुशें ने । ह नांगा डपजे, तेनी नावना पूर्वें कही है ने मिश्रादिक गुणहाएों तो बंधस्थानकना नांगा थोडा है तेमाटें ते पूर्वें क । हो, तेम जाणवा

॥ य मिष्यात्वसत्कैकविंश ायुद्यस्थानके जंगप्रह्णेका गाथा ॥ हवे मिष्या त्व गुणवाणे एकवीश आदे देइने नव उद्य स्थानकें जांगा प्रह्णपवा गाथा कहे हे.

## एगचित्तगार बत्ती, स सय इगतिसिगार नव न इ॥ सत्तरिगंसिगुत्तिस, च द इगार च सिंह मि ब्रुद्या॥ इ०॥

थे— ए वीशने उद्यें (एगचन के०) ए ाजीश नांगा, चोवी ने उद्य स्थानकें (इगार के०) छगी ार नांगा,प ि ने उद्यें (तीस के०) ब ि नां गा, विश्वीशने उद्यें (स्थ के०) शें नांगा, सत्तावीशने उद्यें (इगतिस के०) एकत्री नांगा, हावी ने उद्यें (इगारनवन इके०) गी ारशें ने नवा कांगा, डंगणत्रीशने उद्यें (सत्तरिगंसि के०) सत्तरशें ने एक्याशी नांगा उपजे. ि शने उद्यें (इगुत्तिसच इद्यें (सत्तरिगंसि के०) सत्तरशें ने चौद नांगा, ए ि ने उद्यह किने उत्यें (इगुत्तिसच इद्यें के०) जीखारशें ने चौद नांगा, ए ि ने उद्यह किने (इगारच इसि के०) गीखारशें ने हि नांगा उपजे, (मि बुद्या के०) मिष्यालगुणताणे ए नव उद्यह्यानकें थइने (४४४) नांगा द्वाय ॥ इ०॥६ १॥

॥ य सास्वादनै विंशत्या द्यस्थानस नंग रूपि नाष्यगाथा हि॥ इवे सास्वादने ए वीशादि सात उदयर निकें गां प्ररूपवा नाष्यगाथा हे हे

बत्तीस इति च्य य, बासीइ सयाय पंच नव दया॥ बारिह च्या तेवीसं, बावित्र ार ससयाय॥ ६३॥

अर्थ- ए वीश्रने उद्यें (बत्तीस कें 0) बत्रीश नांगा, तिहां आत ंष्यना, ह विक्र कें डियना, आत देवताना, आत तिर्यचना, बे एकें डियना. चोवी ने उद्यें (हि कें 0) बे नांगा तिर्यचना जाणवा तथा प शिंगने उद्यें (हि कें 0) विज्ञां ने व्याशी नांगा देवताना होय, हि विश्वाने उद्यें (बासीइसयायपंच के 0) पांचशें ने व्याशी नांगा होय. तिहां (१००) व्यना, (१००) तिर्यचना, ह विक्र कें डिना. उंगणत्रीशनें उद्यें (नव उद्या कें 0) नव उद्या नांगा होय, तेमध्यें आत देवताना, एक नारकीनों जाणवो. शिंगे द्यें (बारिह तिवीसं के 0) त्रेवीशशें ने बार नांगा, तेमध्यें (११५१) मनुष्यना (११५१) तिर्यचना, आत देवताना जाणवा एक त्रीशने उद्यें (बाविह ति स्थाय के 0) अगीआरशेंने बावन नांगा तिर्यचना होय. सर्व मिली साते उद्या स्थानकें थड़ने (४०ए७) उद्या नांगा थाय. एनी नावना पूर्व वत् अने मिश्रादिक ग्रणवाणे उद्यानांगा पोतानी मेलेंज विचारीने कहेवा॥ ६३॥

॥ अथ गतिच क्कक्रमेण बंधोदयसत्तास्थानान्याद् ॥ हवे गत्यादिक बाग्रह मार्गणादारें नामकमेनां बंधोदय सत्ता स्थानक हे हे.

तिद्दां प्रथम नरकादिक चारगति । गेणाने विषे अनुक्रमें वंधोदय सत्तास्थानक कहेते.

दो बक च छकं, पण नव इ । र बक्तगं दया ॥ नेरइ छाइ सुसता, ति पंच इक्तारस च कं ॥ ६४ ॥

थे- नर दि चार गति अनुक्रमें खेवी. तिहां नरकगतिने विषे उंगणत्रीशने त्रीश, ए (दो के०) बे बंधस्थानक, तिहां उंगणत्रीशतुं नुष्यगति प्रायोग्य, त था तिर्धेचप्रायोग्य होय, ने त्रीश ं तिर्थेच प्रायोग्यज होय. एना नांगा पूर्वे क । वे. तेम लेवा तथा तिर्यचने १३-१५-१६-१६-१ए-३० ए (वक्र के०) व बंधस्थान होय, तथा नुष्यने २३-२५-२६-२ए-२ए-३०-३१-१ ए ( ह के ०) आत बंधस्थानक होय, तथा देवताने १५-१६-१ए-३० ए (च उकं के 0) चार बंधस्थान होये. ए चार गतिने विषे बंध स्थानक कह्यां. हवे चार गतिने विषे अ में उदय स्थानक कहे हो. नारकीने ११-१५-१७-१७-१ए ए (पण के०) पांच उदयस्थान होयः तिर्यचने ११-१४-१५-१६-१९-१ए-१ए-३०-३१ ए (नव के०) नव उदयस्थानक होया मनुष्यने १०-२१-२५-२६-२७-२ए-२०-३१-ए-ए (इक्कार केए) गीआर उदय स्थानक होय. देवताने ११-१५-१७-१७-१७-१७ ए (इ गंजदया कें) व **उदयस्थानक होय. हवे ( नेरइञ्चाइसुसत्ता के**० ) नरकादिकगतिने विषे सत्तास्थानक कहे हे नारकीने बाणु, नेव्याशी ने अप्तराशी, ए (ति केण) त्रण सत्तास्थानक होय. तिर्थंचने बाणु, अठ्याशी, त्याशी, एंशी ने अठोत्तर, ए (पंच के ०) पांच सत्तास्थान होय, मनुष्यने एक छान्नोत्तर विना बाकीनां (६ रस के०) गीआरे सत्तास्थानक होय. अने देवताने ज्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अवग्राशी, ए ( चठकं के ० ) चार सत्तास्थानक होय.

हवे संवेध कहे हे. नारकीने पंचेंड्यितयैच प्रायोग्य डंगणत्रीश बांधतां पो ताना पांच डद्यस्थानकें प्रत्येकें बाणु अने अवधाशी, ए बे सत्तास्थानक होय. तीर्थिकरनामनी सत्तायें तिर्थेचगित प्रायोग्य बंध न होय ते नणी नेव्याशीनी सत्ता न होय तथा मनुष्यगित प्रायोग्य डंगणत्रीशने बंधें पांच डद्य स्थानकें नेव्या शी सहित त्रण त्रण सत्ता होय तथा उद्योत सहित तिर्थेचगित प्रायोग्य त्रीशने वंधें डंगणत्रीशना बंधनी पेरें पांचे डद्यें बे बे सत्ता होय. तथा जिननाम सहित मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीशने बंधें पांचे चद्यें एक नेव्याशीनी सत्ता, प्रत्ये दोय. सर्व पर नरकगतिने विषे चालीश सत्तास्थानक होयः

तिर्यचगतिने विषे बंधोदय सत्ता संवेध कहे हे. त्रेवीशने बंधें ए वीश, चोवी श, पचीश, ढवीश, ए चार छद्यें ७१-७७-७६-७०-७७ ए पांच पांच अने बाकीनां १७-१ए-२ए-२ए-३१ ए पांच छद्यें होत्तर विना चार चार सत्ता होय. सर्व त्रेवीशने बंधें चालीश सत्ता थइ. तेम प ीश तथा ववीशने बंधें पण चालीश, चालीश सत्ता जाएवी तथा उंगएत्रीश खने त्रीशने बंधें पए ए ज चा लीश सत्ता कहेवी. पण एटलुं विशेष जे मनुष्यगति प्रायोग्य उगणत्रीशने बंधें सर्वे उद्यस्थानकें अहोत्तेरनी सत्ता न होय, बाकी चार सत्ता सर्वे उद्यें होय. तथा अष्ठावीशने बंधें चोवीशनो जदय न होय केमके चोवीशनो जदय एकेंडियने होय. तेने अहावीशनो बंध नधी जेमाटे देव, नारकी, ए बे गति ध्यें एकें डियने जाबुं नथी अने अहावीशनों वंध तो देव नरक प्रायोग्य हे । दें बा ही आह उदय हो य, तिहां एकवीश, विवीश, छावीश, जेगणत्रीश छाने त्रीश, ए पांच वदयस्थानक क्षि सम्यक्हि तथा वेदक सम्यक्हि तो जेने मोहनीयनी बावीशनी सत्ता होय, एवाने पूर्वे आयु बांध्या उदय होया तेनी पेक्सयें । एवा तिहां एके । चद्यें बाणु अने अवधाशी, ए बे सत्तास्थान प्रत्येकें होय, तथा प िश ने स नावीश, ए बे चद्यस्थान वैश्य रतां पंचेंड्यि तिर्थचने होय. तिहां पण ते हीज बे सत्तास्थान होय तथा त्रीश, एकत्रीश, ए बे उदय सर्व पर्याप्तियें पर्या प्ता एवा सम्यक्दृष्टि तथा मिष्यादृष्टिने जाएवा, तिहां बाणु, अववाशी अने ववा शी, ए त्रण सत्ता होय. तिहां वयाशीनी सत्ता, मिच्यादृष्टिनेज होय अने सम्यक् दृष्टिने अवस्य देविदकनो बंध होय, तेथी तेने ए सत्ता न होय वंधें अढार सत्ता होय. एम तियेचगित मध्यें सर्व बंधस्थानकें (११ ए) सत्ता होय.

म ज्यगितने विषे संवेध कहे हो. तिहां म ज्यने त्रेवीशने वंधें ११-१५-१६-१९-१६-१९-१ए-१ए-१०-ए सात उदयस्थानक होय, तेमध्यें प ीश अने सत्तावी श ए बे उदय, वैत्रिय करतां लेवा. पण आहारकें त्रेवीशनो बंध नथी तेनणी ते आहारक न लेवो. ए बे उदयें बा अने ह्याशी, ए बे सत्ता होय अने बीजा पांच उद्यें ह्या ती, एंशी, ए बे अधिक होय तेमाटें तिहां चार सत्तास्थान लेवां. सर्व थइ त्रेवीशने बंधें चोवीश सत्ता होय, एम पचिशने बंधें तथा हवीशने वंधें पण चोवीश चोवीश सत्ता लेवी तथा मनुष्यगित अने तिर्थेचगित प्रायोग्य उनण

त्रीश अने त्रीशने बंधें पण एमज चोवीश सत्ता कहेवी. तथा अष्ठावीशने वधें पण सात चद्य है. तेमध्यें एकवीश, ठवीश, ए वे चद्य, सम्यक्टिंगे करण श्र पर्याप्तावेलायें होय. तथा पचीश, सत्तावीश, अष्ठावीश अने उगणत्रीश, ए मांहे ला बे बे उदय, अनुक्रमें विक्रिय, आहारक करतां सम्यक्टिएने होय. त्रीशनो उ दय, मिण्यात्वीने पण होयः ए उदयें वाणु, अवधाशी, ए वे वे सत्तास्थानक होयः तथा त्रीशने उद्यें नरक प्रायोग्य अष्ठावींशने वंधें नेव्याशी तथा ठ्याशी, ए वे सत्ता अधिक जेंलतां चार सत्ता होय. एम अठावीशने वंधें सर्व थइ शोल सत्ता थाय. तथा जिननाम सहित देवप्रायोग्य उंगणत्रीशने वंधे सात उदय श्रष्ठावी शना बंधनी पेरें लेवां. पण एटलुं विशेष जे त्रीशनो उदय सम्यक्लीने लेवो तेथी साते उद्यें ज्याणु छने नेव्याशी, ए वे सत्तास्थानक होय. तिहां छाहारकने तो ज्याणुनीज सत्ता होय सर्व संख्यायें जिननामसहित उगणत्रीशने वंधें चीद सत्ता स्थानक होय तथा आहारकिक सिहत त्रीशने वंधे उंगणत्रीश अने त्रीश, ए वे उदय स्थानक होय. तिहां जेएो आहारक शरीर प्रमत्त गुणवाएो करीने श्रंतकार्जे अप्रमत्तें आवे, तेनी अपेक्सयें उगणत्रीशनो उदय सेवो. वीजे स्थानकें त्रीशनो उ दय होय तिहां प्रत्येक उद्यें वाणुनी सत्ता होय. तथा एकत्रीशने वंधे एकज त्री शनो उदय होय अने तिहां एकज प्याणुनी सत्ता होय, तथा एकने वंधे त्रीशनो जद्य होय तिहां ए३-ए२-एए-एए-एए-१ए-१ए-१५ ए छात सत्ता स्थान क होय, शरवाले त्रेवीश, पञ्चीश, वृद्यीशना वंधने विषे चोवीश चोवीश सत्ता अने ः हावीशना बंधने विषे शोल सत्ता तथा मनुष्य अने तिर्यचगित प्रायोग्य वंगण त्रीरा तथा त्रीराना बंधने विषे चोवीरा चोवीरा सत्ता तथा देवगति प्रायोग्य तीर्थे कर सिहत उगणत्रीशना वंधें चौद सत्ता तथा एकत्रीशना वंधने विपे एक सत्ता अने एक प्रकृतिना बंधें ाव सत्ता सत्तास्थानक मए (१५७) सत्ता मनुष्य मध्यें होय. हवे देवताने विषे संवेध कहे हे देवताने पश्चीशने बंधें ह उद्यें प्रत्येकें बाणु

देव देवतान विषे संवेध कहे हैं देवताने पश्चीशने बंधें ह उद्यें प्रत्येक बाणु ने उधाशी, ए बे सत्ता होय. एम हिंदीश तथा उगणत्रीशने बंधें पण जाण हुं तथा उद्योत सिंदत पंचें दियतिर्यंच प्रायोग्य त्रीशने बंधें पण एमज जाण हुं तथा जिननाम सिंदत मनुष्यगित प्रायोग्य त्रीशने बंधे ह उद्यस्थानकें प्रत्येकें त्र्याणु, नेव्याशी, ए बे सत्तास्थानक जाणवां एम चार बंधमध्यें त्रीशनो बंध, मनुष्य तथा तिर्यंच प्रायोग्य होय माटे ते बे स्थानक गणतां पांचे स्थानकें बारबार सत्ता होय, सर्वे यह देवगितमध्यें शाव सत्ता स्थानक होय. एम गित छाश्री संवेध देखाड्यो॥६४॥

॥ अथें ियमाश्रित्याद ॥ हवे इंडिय आश्रयी नामकर्मनां वधोदय सत्ता हे हे. इग विगलिंदि असगले, पण पंचय अठ वंध ठाणाणं॥ पण बिक्ककारुद्या, पण पण वारसय संताणि॥ ६५॥

इय कम्म पगइष्ठाणा, णि सु बंधुद्य संत कम्माणं॥ गइञ्चाएहिं अष्ठसु, च प्यारेण नेञ्चाणि॥ ६६॥ गइइंदिए अकाए, जोए वेए कसाय नाणेश्र॥ संयम दंसण लेसा, नवसंमे सि ञाहारे॥ ६७॥ संत पयपक्रवणया, दवपमाणं च खित्त फुसणाय॥ कालं तरंच नावो, अपा बहुयं च दाराइ॥ ६०॥

अर्थ—( इय के॰ ) ए च प्र रें ( सुष्टु के॰ ) सुष्टु एटले नले प्रकारें त्यं त उपयोग राखीने ( कम्मपगइहाणाणि के॰) आते कमे प्रकृतिनां स्थानक, ( बं धुद्यसंतकम्माणं के॰ ) बंध, चिद्य, सत्ता, कमेनी तेना संवेधें (गइआएहिं के॰) गत्यादिक एटले गति, इंड्य, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेक्या, नव्य, सम्यक्त, संज्ञी, आहारी, ए चौद जीव स्थानकें तथा ए चौदना उत्तर वा शह मार्गणा नेदने स्थानकें करीने सत्पद प्ररूपणादिक ( अहमु के०) आत अ नुयोग दारने विषे ( चडण्यारेण के०) प्रकृतिवंध, स्थितवंध, रसवंध अने प्रदे शबंध, ए चार प्रकारें कहेवाने ( नेआणि के०) जाणवा ॥ ६६॥ ६९॥

ह्वे ए ाव अनुयोग दार, लखीयें ठैयें (संतपयपह वणाए) एटले वता प दनी प्ररूपणा, ए एक पद नणी घट पदनी पेरें अवतुं न होय, जे वता पदार्थनुं वाचक पद न होय, ते एक पद पण न होय जेम वंध्यापुत्र ए शब्द ने पदनो माटे ते पद अवतुं हो. तेनी पेरें ए पद नथी ते नणी ए पद साचां हे एटले अर्थ प्ररूप णाना नेद ते अनु कहेतां वस्तु प्रतिपादन कह्या पठी योग कहेतां सर्व प्रकारें वस्तु ह ाव अनुयोगदार अणु कहेतां स्त्र तेनी साथें योग कहेतां अर्थनुं जोडनुं. तेनां दार, कहेतां बारणां एटले वस्तुनो निर्णय करवो, तेनां दार आव जाणवां. ति हां प्रथम हता पदनी प्ररूपणा, ते जेम वंध, उदय, सत्ता तथा प्रकृति, स्थिति, र स. प्रदेश, ए सर्व पद साचां हे आप आपणा पदार्थनां वाचक हे एकेक पद न णी घटपदनी पेरें हतां हो, पण वंध्या पुत्रनी पेरें अहतां नथी तेनां स्थानक, जेनो जिद्दां सन्नाव, ते तिहां कहेवां ते प्रथम हता पदनी प्ररूपणा नामदार जाणानुं.

तथा बीजं इव्यप्रमाण दार, ते एम के ए प्रकृति स्थानकना इव्य केटलां होष ? एम प्रमाणनुं कहेनुं, ते बीजं दार. तथा एकेक प्रकृतिस्थान इव्य, केटला आकाश प्रदेश क्षेत्र रुधे, ए अर्थ कहे ते क्षेत्रप्रशंसानामा त्रीजं दार. तथा एकेकस्थानकें जीव केटला काल पर्यंत रहे, एम कहेनुं ते चोथुं काल दार. तथा ए बंधस्थानक तथा उद्यस्थानक ग्रांमयुं ते वली केटले कालें जवन्य तथा उद्यस्थानक ग्रांमयुं ते वली केटले कालें जवन्य तथा उद्यस्थानक ग्रांमयुं ते वली केटले कालें जवन्य तथा उद्यस्थानक होय, एम कहेनुं, ते बन्ध नाग दारनो विचार जाणवो. तथा कयुं स्थानक उद्यिकादिक ब नाव मध्यें कया नावें होय ? ते सातमुं नाव दार. तथा कया स्थानकथी कयुं स्थानक इव्य, क्षेत्र, काल अने नावनी पेक्षायें घणुं होय तथा थोडुं होय अथा बराबर होय? एम विचारनुं ते ाव अव्यवज्ञल्व दार. ए ाव अनुयोग दारें करी विचारतां पदार्थ सम्यक्ज्ञान होय, तिहां सत्पद्मरूपणायें करीने ग्रणगणाने विषे गति तथा इंड्यमार्गणायें बंधोदय सत्तानो संवेध क हो. एने जुसारें काययोगादिक मार्गणायें पण कहेवो, अने शेष जे इव्यप्रमाण क्षेत्र,

स्पर्शनादिक सात योग ६।र, ते कमेप्रकृति कमेप्रानृत प्र ख यंथोने सम्यक् प्र

कारें जोड़ने कहेवां. पण खाज ते यंथना खनावथकी छेशमात्र पण कहीन शकी यें तेमाटें प्रकृति, स्थिति, रस खने खनुनाग, ए चार प्रकारें कहेवां. तिहां प्रकृति खाश्रयी बंध उदय सत्ता स्थानक पूर्वे ह्यां, तेना खनुसारें स्थितिना बंधादि स्थान, रसस्थान तथा प्रदेशस्थान पण ।गेणा दारें एवाज खनुक्रमें कहेवां ॥६ ए॥ खहीं खां बंधोदय सत्तानो संवेध कह्यों. तिहां उदय कह्यों, पण उदीरणा नहीं, ते शामाटें न कही? ते कहे हे

दयस्मुदीरणाए, सामितात न वि इ विसेसी॥ मुत्तूणय इगयालं, सेसाणं सब पयडीणं॥ ६ए॥

अर्थ-( उद्यस्तुद्रिणाए कें o) अहीं आं बंधोदय सना संवेध विचारतां उद्दिर णा, उद्यमध्यें हेवाणी पण उद्दिशा उद्ययकी जूदी न कही तेनुं कारण कहे हे. अहीं आं काल प्राप्त मेनुं अनुनववुं ते उद्य कहीयें. अने काल अप्राप्त उद्याविष्यकी बाहेर रह्यां एवां जे मेदल तथा रस, जेनो उदय काल आ नथी ते मेदलने जीव, षाय सिहत योग, एवे नामें जे वीर्यविशेष, तेणे करी आकर्षीने उद्य आव्या दलमांहे नेलीने उद्य प्राप्त कमेपरमाणु साथें अनु नवे, ते रणनुं नाम उद्दीरणा हीयें. तेमाटें उदय अने उद्दीरणानुं (सामिनार्च निवश्विसेसो के o) सामिलपणा आश्रयीने कांइ विशेष नथी एटले ज्ञानाव रणादिक जे कमे तेना उद्यनो सामी तेहीज जीव ज्ञानावरणादि कमेनी उद्दीरणा नो पण सामी जाणवो: "जह उद्दय तह उद्दीरणा, जह उद्दीरणा तह उद्य " ए वचन प्रमाण थकी एमज जाणवुं. परंतु एटलुं विशेष जे (सुनूणव्दण यालं के o) एकतालीश प्रकृति आगली गाथायें कहेशे, ते मूकीने (सेसाणंसहप यहीणं के o) शेष सर्व प्रकृतिनो उद्य अने उद्दीरणा साथेंज समकालें प्रवन्ते. तेमाटें जे उद्यनो स्वामी तेहीज उद्दीरणानो पण स्वामी जाणवो ॥ ६ ए ॥

॥ एकचलारिंशतप्रकृतीराह्॥ हवे एकतालीश प्रकृतिने उद्य उदीरणायें फेर हे एटले उद्य उदीरणानुं अंतर होय, ते विशेषें वे गायायें करी कहे हे.

नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिक मिन्नतं॥ संमत्तलोन वेच्या, ज्ञाणि नव नाम उद्यं च॥ ४०॥ मणुय गइ जाइ तस वा,यरं च पकत सुनग छाइकं॥ जस किती तिचयरं, नामस्स हवंति नव एया॥ ११॥

थे—(नाणंतरायदसमं के०) पांच झानावरणीय छने पांच छंतराय, एवं द श प्रकृति तथा (दंसणनव के०) दर्शनावरणीय नव, (वेयणिक के०) वेदनी यनी बे प्रकृति, (मिन्नचं के०) मिण्यात्वमोद्दनीय, (संमच के०) सम्यक्तमो हनीय, (लोच के०) संज्वलनलोच, (वेछाज्ञाणि के०) त्रण वेद छने चार हा, (नवनाम के०) नामकर्मनी नव प्रकृति जे चौदमे गुणवाणे रहे वे ते तथा (ज चके०) ज गींत्र, एवं एकतालीश प्रकृति जाणवी ॥ इत्यक्त्रार्थः ॥ १०॥

तिहां ज्ञानावरणीय पांच, श्रंतराय पांच, तथा चार दर्शनावरणीय, एवं चौ द प्र तिनो उदय अने उदीरणा, बारमा ग्रणगणानी एक श्रावली थाकती हो य, तिहां सुधी सर्व जीवने साथेंज प्रवर्ते अने उदय, उदीरणा विवेद थया पढ़ी केवल उदयाविलका थाकती होय तेमध्यें सर्व कमेदल पेसे पण बाहीर वीछं ोइ कमेदल रहे नहीं तो पढ़ी शानी उदीरणा करे? माटें ए चौद प्रकृतिनी बा रा णगणानी ढेहली श्रावलिकायें उदीरणा न होय. तथा पांच निड़ानीज उदीरणा, रीरपर्याप्त पूरी थया पढ़ी ज्यां लगें इंड्यपर्याप्त पूरी न करे, तिहां लगें उदीरणा न होय. केवल उदयज होय अने शेष कालेंतो उदय उदीरणा साथेंज प्रवर्ते, तथा साथेंज प्रवर्ते, तथा साथेंज प्रवर्ते अने ते उपरांत तो उदयज होय पण उदीरणा न होय. तथा प्रथम सम्यक्ल उपार्जतां अंतर करण कथा पढ़ी मिथ्यालनी प्रथम स्थितिनी एक विले रहे त्यां धी मिथ्याल मोहनीयना उदय तथा उदीरणा साथेंज प्रवर्ते आविलें मिथ्याल मोहनीयना उदय तथा उदीरणा न होय.

तथा वेदकसम्यक्दिष्टिने क्वायिक सम्यक्त उपजावतां मिष्यात्व मोह्नीय ने मिश्रमोह्नीय, ए बेहु खपाच्या पढी सम्यक्त्वमोह्नीय सर्वे अपवर्त्तनायें प वर्तिने अंतरमुदूर्ते स्थितिमात्र करे, तेने उदय तथा उदीरणायें नोगवतां जेवारें रोष एक विलीमात्र रहे तेवारें उदीरणा टले केवल उदयावली लगें उदयज होय.

थवा उपशमश्रेणी पिडवजतां सम्यक्तमोहनीय ं तर करण का पढी प्रथमस्थित आवितका मात्र रहे, तिहां लगें सम्यक्त मोहनीयनां उदय तथा उ दोरणा साथेंज होय ने पढी बेहली विलीधें उदीरणा न होय मात्र उदयज होय. संज्वलना लोननां दय तथा दीरणा ज्यां लगें सू संपरायनी एक आव लि । थ । होय, ं लगें साथेंज हो ने बेहली आवलीयें तो ।। दयज हो पण उदीरणा न होय.

तथा ए वेद हिला जे वेदें श्रेणी पडिव े तिहां श्रंर रण ीधे े ते वेदनी हित विला याकतां लगें उदय या दीरणा साथें होय

। ने वेहली विलीयें हिरणान हो , । उदयज होयः या हो । नो पो पोताना नवनी वेहली विल हों द होय,पण

या रि ति पा पाताना जवना उहला निवास पि दे हाय, पर दिरिणा होय ने व्यायुनो वाणा लगेंज वद्य विदिश्णा होय, गाले एवाणे केवल वद्यज होय पण वदिरणा न होय ॥ इत्यर्थः ॥ ४०॥ तथा व्यगति, पंचेंड्यजारि, स, बादर, पि, नग, दिय, यशः ीर्ति ने तीर्थंकरना, ए नव ना मेनी प्रति विवेश समकालें प्रवर्ते तेवार पठी योगी केवली गुणवाणा लगें वद्य तथा वदीरणा सार्थंज समकालें प्रवर्ते तेवार पठी योगी गुणवाणे ए दश प्रकृतिनो वद्य होय पण वदीरणा न होयः एम ए ए तालीश प्रकृतिनां वद्य ने वदीरणा विशेष देखाड्युं ने शेष पाशी प्रकृतिनां

चद्य तथा दीरणा स कार्ले प्रवर्ते ने स । खें निवर्ते ॥ इति स ० ॥ ७१ ॥ ॥ अथ स्मिन् गुणस्थानके ।: प्रकृतीर्वर्ष्ट्रती । ह ॥ इते या गुणवाणे इप्रकृति बांधे हे । १ एवो बंधविशेष सर्वे गुणवाणे हे हे.

ति यरा हारग विर, हिआ अबेइ सब पयडी ॥ मि तवेअगो सा, साणोग्रणवीस सेसा ॥ ॥ ॥ ॥

थे-- बंध योग्य एकशो वीश प्रकृति मध्येंथी (ति अयराहारग के ) तीर्थंक रनाम अने आहारकिक, ए त्रण प्रकृति (विरिह्णा के ) रिह्त करीने (अय इस वप्य ही डे के ) बाकी एकशो सत्तर प्रकृति सर्व उपार्जे, एट बे वांथे ते कोण जीव क्यां बांधे ? तोके (मि ज्ञ चवे अगो के ) मिण्यालनो वेदक एवो मिण्यादृष्टि जीव क्यां बांधे ? तोके (मि ज्ञ चवे अगो के ) मिण्यालनो वेदक एवो मिण्यादृष्टि जीव मिण्याल ग्रणवाणे रह्यो थको बांधे अने जिननाम सन्यक्त प्रत्य यि डे तथा आ हारकिक संयम प्रत्य ये डे तथा मिण्यात्वें सम्यक्त तथा संयम वेहुने अनावें हारकिक संयम प्रत्य वि तथा (सासाणोग्रणवीससेसार्ड के ) सास्वादन ग्रणवाणे ए त्रण प्रकृति न बांधे तथा (सासाणोग्रणवीससेसार्ड के ) सास्वादन ग्रणवाणे प्रत्रण प्रकृति न बांधे तथा (सासाणोग्रणवीससेसार्ड के ) सास्वादन ग्रणवाणे वर्चतो जीव १ जिननाम, ३ आहारकिक, ४ नपुंसकवेदः ए नरकगित, ६ नरकानु पूर्वी, ४ नरकानु, ए हुंमसंस्थान, ए नेवर्षु संघयण. १० आतप, ११ स्थावर, पूर्वी, ४ नरकानु, ए हुंमसंस्थान, ए नेवर्षु संघयण. १० आतप, ११ स्थावर,

१२ स्त्रा, १३ साधारण, १४ अपयोत, १५ एकेंडिय, १६ वेंडिय, १७ तेंडिय, १० चौरिडियजाति, १९ मिण्यात्वमोहनीय, ए उंगणीश प्रकृति विना शेप एक शोने एक प्रकृति वांचे जे नणी नपुंसकादिक शोल प्रकृतिनो वंध, मिण्यात्व प्रत्यावि हे, ते अहींआं सास्वादने न वंधाय ॥ इति समुच्चवार्यः ॥ ७२ ॥

बायाल सेस मीसो, अविरय सम्मो तिआल परिसेसा॥ तेवन देस विरत्न, विरत्न सगवन सेसाठ ॥ १३॥

श्रथ—रंगणीश प्रकृति पूर्वे कही ते तथा तिर्यचित्रक, थीण हीत्रिक, दौर्नाग्यित्र क, श्रनंतानुबंधिचतुष्क, मध्यसंस्थान चार, मध्यसंयण चार, नीचर्गोत्र, उद्योत, श्रश्चनिव्हायोगित, स्त्रीवेद, मनुष्यायु श्रने देवायु. ए (ग्रायाल के०) ग्रेतालीश प्रकृति वर्जीने (सेसमीसो के०) श्रविरति सम्यक्षृष्टि गुणगणे वर्नतो जीव बांधे श्रने (श्रविरयसम्मो के०) श्रविरति सम्यक्षृष्टि गुणगणे पूर्वोक्त ग्रेता लीश मध्येंथी तीर्थकरनाम, मनुष्यायु श्रने देवायु, ए त्रण बांथे माटे (तिश्राल परिसेसा के०) चेतालीश प्रकृति वर्जीने शेप सत्त्योतेर प्रकृति बांधे तथा (देस विरचे के०) देशविरति गुणगणे वर्नतो जीव, वज्रक्पननाराच संवयण, मनुष्यित्रक, श्रव्याख्यानीश्रा चार कपाय, श्रीदारिकिह्क, एवं दशप्रकृति पूर्वोक्त त्रें तालीशमां चेलीयें, तेवारें (तेवन्न के०) त्रेपन प्रकृति न बांथे, ते वर्जीने शेष शृहशुत प्रकृति बांधे तथा (विरचे के०) सर्वविरति प्रमत्त साधु, उद्येगणणे पूर्वोक्त त्रेपन्ननी साथे प्रत्याख्यानावरण कषाय चार चेलतां (सगवन्न के०) सत्ताव प्रकृति न बांथे, ते वर्जीने (सेसार्च के०) श्रेप त्रेश्च प्रकृति वांधे ॥ १३ ॥

इग्रसिं मणमत्तो, बंधइ देवा अरुस इअरोवि॥ अदावस मपुर्वो, पन्नं वावि बदीसं॥ ५४॥

थ- तथा ते पूर्वोक्त त्रेशा प्रकृतिमध्यें थी शोक, अरित, अधिर, अ न, अ यश अने आशाता, ए व प्रकृति काढीयें अने आहारकिक नेजीयें, तेवारें (इंगु सिंह के०) उंगणशाव प्रकृति, (अपमन्तो के०) अप्रमन्त गुणवाणे (वंधइ के०) बांधे, अथवा (देवा अस्तइअरोवि के०) देवा यु पण प्रमन्तें बांधवा मांधे, ते बांध तो थकोज प्रमन्त थकी इतर अप्रमन्तें आवे, तिहां ते बंध पूरो करे, पण अप्रमन्त थकी देवा अखावा न मांधे तेमाटे देवा अविवा (अद्यावस्त के०) अद्याव प्रकृति वांधे तथा (मपुद्यों के ०) अपूर्वकरण ग्रणवाणाना सात नाग कल्पीयें विहां पहेले ना गें तो तेहीज पूर्वोक्त अठावल वांधे, अने बीजे, त्रीजें, चोथे, पांचमे, अने ढठे,ए पांच नागें निड़ा दिक न बांधे शेप (ठणलें के ०) ठपल प्रकृति वांधे, (वावि के ०) अथवा वेहले नागें देव दिक, पंचें डियजाति, ग्रुनखगित, त्रसादि नव, औदारिक विना चार शरीर, वे उपांग, समचतुरस्त्र, निर्माण, तीर्थकर, वणीदि चार तथा अग्ररुलघु चतुष्क, ए त्रीश प्रकृति पण न बांधे, तेवारें (ठदीसं के ०) ठवीश प्रकृतिनो बंध पण होय ७४

> वावीसा एगूणं, वंधइ अघारसंत अनिस्र ही ॥ सत्तर सुदुम सरागो, साय ममोहो सजोगिती॥ ७५॥

अर्थ—हवे (अनिअर्टी कें) अनिवृत्तिगुणगणाना पांच नाग हपीयें, तिहां पहेले नागें हास्य, रित, नय, कुन्ना, ए चार पण न वांघे तेवारें (वावीसा कें) वावीशनो वंध होय. तेवार पठी दितीयादिक नागें (एगूणं कें) एकेक प्रकृति णी करता ज्ञ यें एटले बीजे नागें पुरुपवेद न बांधे तेवारें एकवीशनो वंध, त्रीजे नागें संज्वलनकोध टले वीशनो वंध, चोथे नागें संज्वलन मान टले डंगणीशनो वंध, पांचमे नागें संज्वलनी माया टले, तेवारें (अन्नारसंत कें) अद्धार प्रकृति पर्यतज (वंध कें) वांधे तथा (सत्तरसहूमसरागो कें) स्वासंपरायग्रणगणे संज्वल नो लोन पण न वांधे, तेमाटें सत्तर प्रकृति वांधे, तेवार पठी ज्ञानावरणीय पांच, दशैनावरणीय चार, अंतराय पांच, उक्षिगींत्र अने यशःकीर्ति, एवं शोल प्रकृति पण न वांधे तेवारें एकज (साय कें) शातावेदनीयनो वंध, (अमोहोसजोगि ची कें) अमोही ग्रणगणाना धणीने होय. एटले अगीआरमा, बारमा अने स्योगी तेरमा णगणावालाने एकज शातानो बंध होय ॥ इति ॥ वर्ष ॥

एसो बंधसामि, त छहो गइआइएसुवि तहेव॥ छहाछ साहिकाइ, जच जहा पयिं समावो॥ छह॥

श्रथ- (एसोठबंधसामित्त के०) ए उघ पणे चौद ग्रणगणे वंधसामित्व कह्यं. जेम बीजा कमेशंथमध्यें कह्यं ते, तेम श्रहीश्रां पण जाणवं. (तहेव के०) तेमज (गइश्राइएसुवि के०) गत्यादिक मार्गणाने विषे पण (उद्धु के०) उघयकी कहेवो. जे रीतें त्रीजे कमेशंथें वाशत मार्गणायें वंध कह्यो ते, तेम श्रहींशां पण कहेवो. (उद्दाउताहिक्कइ के०) प्रथम सामान्य प्रकारें कह्यं ते तेमज कहेवुं. (ज ११ स्चा. १३ साधारण, १४ अपर्याप्त, १५ एकेंडिय, १६ वेंडिय, १७ तेंडिय, १० चीरिडियजाति, १९ मिण्यात्वमोहनीय, ए उंगणीश प्रकृति विना शेप एक शोने एक प्रकृति बांचे जे नणी नपुंसकादिक शोल प्रकृतिनो वंथ, मिण्यात्व प्रत्यावि हे, ते अहींआं सास्वादने न वंधाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७२ ॥

ढायाल सेस मीसो, अविरय सम्मो तिआल परिसेसा॥ तेवन देस विरर्ज, विर्ज सगवन सेसार्ज ॥ ७३॥

श्रथ—रंगणीश प्रकृति पूर्वे कही ते तथा तिर्यचित्रक, यीण हीत्रिक, रौर्नाग्यित्र क, श्रनंतानुंबंधिचतुष्क, मध्यसंस्थान चार, मध्यसंयण चार, नीचगोंत्र, उद्योत, श्रश्चनिव्हायोगित, स्त्रीवेद, मनुष्यायु श्रने देवायु. ए (ग्रायान के०) नेतालीश प्रकृति वर्जीने (सेसमीसो के०) श्रिप चमोत्तर प्रकृति मिश्रगुणगणे वर्नतो जीव बांधे श्रमे (श्रविर्यसम्मो के०) श्रविरित सम्यक्षृष्टि ग्रुणगणे पूर्वोक्त नेता लीश मध्येंथी तीर्थकरनाम, मनुष्यायु श्रमे देवायु, ए त्रण वांथे माटे (तिश्राल परिसेसा के०) चेंतालीश प्रकृति वर्जीने शेप सत्त्योतेर प्रकृति वांधे तथा (देस विरचे के०) देशविरित ग्रणगणे वर्नतो जीव, वञ्चक्पननाराच संवयण. मनुष्यित्रक, श्रप्रत्यास्थानीश्रा चार कपाय, श्रीदारिकिह्क, एवं दशप्रकृति पूर्वोक्त त्रें तालीशमां चेलीयें, तेवारें (तेवन्न के०) त्रेपन प्रकृति न वांथे, ते वर्जीने शेष शृद्धांक त्रेपन्ननी साथें प्रत्याख्यानावरण कषाय चार चेलतां (सगवन्न के०) सत्ताव प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने (सेसाचे के०) श्रेप त्रेशक प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने (सेसाचे के०) श्रेप त्रेशक प्रकृति वांधे ॥ १३॥ सत्ताव प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने (सेसाचे के०) श्रेप त्रेशक प्रकृति वांधे ॥ १३॥ सत्ताव प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने (सेसाचे के०) श्रेप त्रेशक प्रकृति वांधे ॥ १३॥

इग्रसिं मणमतो, बंधइ देवा अरस इअरोवि॥ अठावस् मपुरो, णत्नं वावि ववीसं॥ ७४॥

धी— तथा ते पूर्वोक्त त्रेशव प्रकृतिमध्येथी शोक, अरित, अधिर, अ न, अ यश अने आशाता, ए व प्रकृति काढीयें अने आहारकिक नेजीयें, तेवारें (इस्र सिंह के०) उंगणशाव प्रकृति, (अपमत्तो के०) अप्रमत्त सुणवाणे (वंधइ के०) बांधे, अथवा (देवाचअस्तइअरोवि के०) देवासु पण प्रमत्तें बांधवा मांने, ते बांध तो थकोज प्रमत्त थकी इतर अप्रमत्तें आवे, तिहां ते बंध पूरो करे, पण अप्रमत्त थको देवासु बांधवा न मांने तेमाटे देवासु विना (अहावसु के०) अहावन प्रकृति बांधे तथा (मपुन्नो के ०) अपूर्वकरण गुणगणाना सात नाग हपीयें विहां पहें जो में तो तेही ज पूर्वोक्त अठावन बांधे, अने बीजे, त्रीजें, चोथे, पांचमे, अने बंहे,ए पांच नागें निहाहिक न बांधे. शेष (उप्पन्नं के ०) उपन्न प्रकृति बांधे, (वावि के ०) अथवा वेह ले नागें देविहक, पंचें हियजाति, ग्रुनखगित, त्रसादि नव, औदारिक विना चार शरीर, वे उपांग, स चतुरस्त, निर्माण, तीर्थंकर, वर्णादि चार त । अग्रुरु च क, ए त्रीश प्रकृति पण न बांधे, तेवारें (उद्दीसं के ०) उवीश प्रकृतिनो बंध पण हो ७४

वावीसा एगूणं, वंधइ अघारसंत अनिस्र ही ॥ सत्तर सुढुम सरागो, साय ममोहो सजोगिती॥ ॥॥

अर्थ-हवे (अनिअही के०) अनिवृत्तिग्रणगणाना पांच नाग हपीयें, तिहां पहेंसे नागें हास्य, रित, नय, कुछा, ए चार पण न बांधे तेवारें (बावीसा के०) वावीशनो बंध होय. तेवार पठी हितीयादिक नागें (एगूणं के०) एकेक प्रकृति णी करता जश्यें एटले बीजे नागें पुरुषवेद न बांधे तेवारें एकवीशनो बंध, त्रीजे नागें संज्वलन होध टले वीशनो बंध, चोथे नागें संज्वलन होध टले वीशनो बंध, चोथे नागें संज्वलन होध टले वीशनो बंध, चोथे नागें (अहारसंत के०) अहार प्रकृति पर्यतज्ञ (बंध के०) बांधे तथा (सत्तरसुदूमसरागो के०) सूच्य संपरायग्रणगणे संज्वल नो लोन पण न बांधे तथा (सत्तरसुदूमसरागो के०) सूच्य संपरायग्रणगणे पांच, दश्नीवरणीय चार, अंतराय पांच, उच्चैगोंत्र ने यशःकीर्ति, एवं शोल प्रकृति पण न बांधे तेवारें एकज (साय के०) शातावेदनीयनो बंध, (अमोहोसजोगि चि के०) अमोही ग्रणगणाना धणीने होय. एटले गीआरमा, बारमा अने स्वीगी तेरमा णगणावालाने एकज शातानो बंध होय ॥ इति ॥ ७५ ॥

एसो बंधसामि, त नहो गइछाइएसुवि तहेव॥ नहान साहि इ, जन्न जहा पयि सम्रावो॥ १६॥

थ- (एसोडबंधसामित के०) ए उघ परो चौद गुणगरो वंधसामित कहां. जेम बीजा कर्मग्रंथमध्यें कहां हो, तेम श्रहीश्रां परा जाएकुं. (तहेव के०) तेमज (गङ्शाइएसुवि के०) गत्यादिक मार्गणाने विषे परा (उहु के०) उघयकी कहेवो. जे रीतें त्रीजे कर्मग्रंथें बाशन मार्गणायें वंध कह्यों हो, तेम श्रहींश्रां परा कहेवो. (उहाउसाहिक्क के०) प्रथम सामान्य प्रकारें कहां हो तेमज कहेवुं. (ज

ह हाप डिस वो के ) जिहां जे ग्रुणगणे जेटली प्रकृति बांधवानो व होय, एटले जेने जेटली कृति बांधवी घटे तेने तेटली विचारीने कहेवी॥ उ६॥ हवे जे गृहिने विषे जेटली प्रकृति सत्तायें पा विं ते हे हे.

> ति यर देव निरिच्या, छांच तिसु तिसु गईसु गेधं॥ वसेसा पयडी, हवंति स ।सु विगईसु ॥॥॥

ह धी— (ति यरदेविनिरि । उद्यं के ०) । थिं र ना में देवायु ने नर । , ए ति (ति ति गई बोधवं के ०) ए ए गतिने विषे होय एम । . . तिहां ती रना मेनी ना नार ही, देव । । व्यगतिने विषे होय, पण तिर्घे गति ध्यें होय. के के, तीर्थं र सत ी तिर्धं ध्यें । य निहं ते । हे. ता देवा नी । व्य तिर्धे ने देवगति ध्यें होय, पण नार ही ध्यें न होय, तथा नरका नी सन्ता व्य, तिर्धेच ने नर गति ध्यें होय, पण देवगति ध्यें न होय, ने ( वसेसापयडी डे के ०) व व्रोष सर्व प्रकृतिनी सन्ता, (हवंति वा विगई के ०) व चारेगितिने विषे पण होय. एट हो तिर्धेच मध्ये तीर्थं रना विना सर्व प्रकृति नार्ये होय, देवगति ध्यें नर । यु विना सर्व प्रकृतिसन्तायें होय. नर गतिमध्यें देवा विना विप्रकृति सार्ये होय ॥ ॥ ॥ इ। एट ले एट ले होयें होय सन्तास्थान नो संवेध ो, ते गुण एं तो प्रायें उपशमश्रेणीयें तथा क्ष्य श्रणीयें होय, तेमाटे ते श्रेणी हे हे । तिहां प्रथ उप श्रीण हे हे .

प म कसाय च ं, दंसण तिग सत्तगावि वसंता॥ अवरय सम्मत्तार्व, जाव नियहित्ति नायवा॥ अव॥

थै—(पहमकसायचर के ०) पहेला नंता बंधी । चार षाय तथा ( दं सणितग के ०) दर्शनित्रक, ते मिष्यालमोह्नीय, मिश्रमोह्नीय ने सम्यक्तमो ह्नीय, ए (सत्तगाविद्यसंता के ०) सात प्रकृति उपशांत होयः ते ( विरयसम्म त्रार्च के ०) विरितसम्यक्ष्टिष्टि ग्रुणवाणायकी मांमीने (जाविनयिष्टित्तिनायबा के ०) यावत् निवृत्तिनामे । तमा णवाणा लगें जाणवीः तिहां सातमा लगें य थायोग्यपणे उपशांत होय अने पूर्वकरणे तो निश्चयथकीज उपशांत होय॥ ७०॥ प्रथम अनंतानुवंधीआ चार कषाय तथा दर्शन त्रिक एट के मिष्यालमोहनी

अविरतिसम्यक्टि, देशविरित, प्र त तथा प्रमत्त, ए चार ग्रुणगणे वर्तता जीवमांदेलो कोइ पण जीव, जयन्य परिणामे तेजो, मध्यम परिणामें प ने उत्कृष्टद्रिणामें ग्रु , ए त्रण विग्रु इलेक्या दिली ोइ पण लेक्यायें वर्ततो झानो पयोगें उप एक एउः में विना बीजा साते मेनी स्थित नोगवीने वा री ंइ ए णीए ोडा होडी सागरोप । नोगववी रहे, तेवारें अंतर र्त पर्यंत अवदाय ।न परिणामें एटले विग्रु इ चित्तवृत्तिवंतय हो रहे. एवी रीतें रह्यो यको परावर्त ।न प्रकृतिमांहेली सर्व ग्रुन प्रतिनेज बांधे, पण अग्रातादि अग्रुन प्रकृति न बांधे अने जे अपरावर्त ।न प्रवृवंधिनी झानावरणीयादि न प्रकृति ांधे, तेनो प चौठाणी उस्तबंध टालीने, बे णी उस्त बंध रे, ने न प्रकृतिनो बेगणी उस्तबंध रे ने एक स्थितबंध पूर्ण री बी जो स्थितबंध बांधवा । के, ते पूर्व पूर्व स्थितबंधनी पेक् यें पल्योपमसंख्येय नागहीन स्थित रीने बांधे. ए रीतें जे जे । गलो । गलो स्थितबंध रे, ते ते पूर्व पूर्व पूर्व पूर्व स्थितनो बंध रे.

ए रण ाल ी पूर्वे अंतरमुहूर्न ाल पर्यंत रहीने तेवार पठी में प्रत्येकें अंतर हूर्त प्रमाणना एवां त्रण करण रे, तिहां प्रथ यथाप्र निकरण, बीं पूर्व रण अने वि अनिवृत्तिकरण, चोथी उपशांत अद्धा, तेनी पण स्थित अंतर हूर्ननीज जाणवी. तिहां प्रथम यथाप्रवृत्तिकरणें प्रवेश करतो प्रतिसमय नंत ए वृद्धि वि दियें करी प्रवेश करे, तिहां पूर्वोक्त नप्रकृतिना बंधादिकने वे वाणिआ रसने चोवाणीच करतो बांधे अने अग्रुज प्रकृतिना चोवाणीआ रसने वेवाणिचे रस रतो बांधे, परंतु तिहां तथाविध तत्प्रायोग्य विग्रुद्धिने अजावें स्थितिधात, रसधात, गुणश्रेणी अने गुणसंक्रम, ए चार वानां मांहेलुं एक वानुं पण नहीं रे. ए करणमां प्रवर्त्तमान जीवने समय समय प्रत्यें नाना जीवनी अपे क्यां सं त लोकाकाश प्रदेश प्रमाण ध्यवसायस्थान प्रथम समयें होय.

ते पण षट्स्थानपतित होय. ते वली पहेला समयनां अध्यवसायस्थानयकी बीजा समयनां अध्यवसायस्थान विशेषाधिक होय. एम बीजा समयना अध्य वसायस्थानथकी त्रीजा समयनां अध्यवसायस्थान विशेपाधिक होय, एम आ गला ञ्चागला स यनां अध्यवसायस्थान ते पूर्व पूर्व समयनां अध्यवसायस्या नकथकी विशेषाधि विशेषाधिक होय. एम करता तेनी स्थापना विपमचतुरस्र हेत्र रंधे हे ए रीतें यथाप्रवृत्तिकरणनो हेहलो समय आवे. त्यां सुधी कहेवुं अ हीं । अध्यवसायस्थानक वि दिनी अपेक्सयें एक एकथी तहाण वडीआं होय, ते आवी रीतें जेम असर ल्पनायें बें पुरुष, युगपत् यथाप्रवृतिकरणप्रतिप वे ते मांहे ए तो सर्व जघन्य वि दि श्रेणीयें प्रतिपन्न हे अने बीजो सर्वोत्रुष्ट विग्रु दिनां ध्यवसाय स्थान श्रेणीयें प्रतिपन्न हे. ते बेहुनी विग्रु दिनुं तारत म्यपणुं देखाडे हे. त्यां प्रथम जीवने प्रथम समयने विपे सर्वे जवन्य मंद विद्य दि सर्वस्तोक हे. तेथकी ते पुरुषनेज वली बीजे समयें जघन्यविद्यदि अनंतग्रणी हे. तेथी वली त्रीने समयें जघन्यविद्युद्धि अनंतग्रणी हे. एम त्यां लगें कहेतुं. ज्यां लगें यथाप्रवृत्तिकरण । लनो संख्यातमो नाग जाय त्यां लगें कहेवुं ते वार पढ़ी ते जघन्य पद वि दिवाला पुरुषनी जे हेहला समयनी जघन्यविद्युद्धि थर ते थकी बीजा पुरुषनी पहेला समयनी उत्क विद्युद्धि अनंतगुणी होय. ते थकी पण जे जघन्यवि दि स्थानथकी निवन्धों हतो ते पुरुषने उपरितन जघ न्यवि ६ अनंतग्रणी होय हे ते यकी बीजा समयनी उत्क विद्युदि नंतग्रणी, तेथी त्रीजा समयनी जघन्यवि दि नंत एी, तेथी वली छागला समयनी चत्कृष्ट विद्युद्धि अनंत एी. एम चपर ने हेते एकांतरें एकेकुं वि दिस्थानक, अनंतग्रणी करतां बेहु जीवने त्यांसुधी कहेवुं ज्यां धी यथाप्रवृतिकरणना बहेला समयने विषे जघन्यस्थानक होय त्यां धि हेवुं. तेपही उत्कृष्टवि दि स्थानक ते नथी कहेलां तेने निरंतर पणे वेहला समयलगें नंत णी वृदिवालां कहे वां ते यावत् चरम समय ं जत्कृष्टुं वि दिस्थान ।वे, त्यां लगें कहेवा. एम यथाप्रवृत्तिकरण कह्यं.

हवे अपूर्वकरण कहीयें वैथें तिहां पूर्वकरणें प्रतिसमय असंख्यात लोका काश प्रदेश प्रमाण अध्यवसायस्थानक होय, ते प्रतिसमयें व्रहाणवित्या होय, एटले व वृद्धि ने व हाणि होय. तिहां एक उत्कृष्ट वि दिस्थानक धकी बीज्ञं विद्युद्धिस्थानक वि दिनी पेक्सायें जो हीन होय, तो अनंतनाग हीन

होय, या संख्या नागहीन होय, या संख्यातनाग हीन होय, तथा सं ख्यात्गुणहीन होय, था असंख्यात णहीन होय तथा अनंतगुण हीन होय. ए रीतें हाणिनां स्थान ह्यां तथा ए अध्यवसायस्थानकविद्युदिनी अपे क्तायें बीजं अध्यवसायस्थान वधतुं होय, तो पण नेदें होय, ते कहे हे. ए ह अनंतनागाधिक, । जिं असंख्यातनागाधि , त्री जं संख्यातनागाधिक, चो शुं सं ख्यातग्रणाधि , पांच श्रसंख्यातग्रणाधि , हुं नंतग्रणाधि , एम परस्परें ब विदिनां तथा हानिनां घटतां वधतां अध्यवसायस्थानक होय. तिहां अपू वैकरणना प्रथम समयें जघन्यविद्यदि सर्वेथ ही घोडी होय, ते पण यथाप्रवृत्ति करणना चर समयनी उत्कृ शिविद्यिक्स्थानथकी नंतग्रणी अधिकी जाणवी. तेथकी वली प्रथम समयनीज उत्कृ वि दि नंतग्रणी होय, तेथकी वली बोजे स य जघन्यविद्युद्धि नंतग्रणी, तेथकी वली तेहीज बीजे समयें उत्कृष्टिव ग्रु अनंतगुणी, तेथ ी त्रीजा समयनी जवन्यविग्रु अनंतगुणी होय, तेथकी वली तेहीज त्रीजा स यनी उत्क वि दि नंतग्रणी होय, एम अपूर्वकरणना चरम समय लगें हेवुं. ए अपूर्वकरणने विषे प्रवेश रतो जीव, प्रथम समय थीज १ स्थितिघात, १ रसघात, ३ एश्रेणि, ४ ग्रुणसं म, ५ अन्यस्थितिबंध, ए पांच वानां स कालें एकवां रवाने प्रवर्ते.

तिहां प्रथ स्थितियात एटले छुं? तोके जे तथा दिकनी स्थित नोगववी रही होय, ते सत्ता ध्येंथी अयनागनी स्थित उकेरे, एटले ते स्थितसत्तानो अयनाग उत्कृष्टो तो घणा सागरोपम प्रमाण होय अने जवन्यथी तो पत्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण होय. ते स्थितिखंमने खंमें हे एटले उकेरे हे. ते उकेरीने तेष्ठं दिलक जे हेवली ाद्यस्थित खंमन करवाने रही हे. ते दलमध्यें तेना दलने प्रकृपे. एरीतें अंतरमुदूर्तकालें ते स्थितिखंमने उकेरे. एमज वली जे शेप स्थित रहे. तेना अयनागथकी पत्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण स्थित करी तेन्तं दल अंतरमुदूर्त्तकालें ते स्थितिखंमने उकेरे. एमज वली जे शेप स्थित रहे. तेना अयनागथकी पत्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण स्थित करी तेन्तं दल अंतरमुदूर्त्ते प्रवीक्त प्रकारेंज बाकी रहेला, हेवला स्थितिदलमध्यें नेले, एम अंतर सहूर्त्ते अंतरमुदूर्त्ते स्थितिमांहे तेनुं दल नेलतां अपूर्वकरणना काल मांहे घणा हजार स्थितिना खंम खपी जाय, तेवारें जे अपूर्वकरणने प्रथम समयें जेटली कमैनी स्थितिनी सत्ता हती, तेथकी संख्यातग्रणहीन स्थितिनी सत्ता यह. ए स्थितियातनुं स्वरूप कहां.

हवे रसघात कहे है. रसघात ते जे छा छन कमेनो रस नोग छा विनानो रह्या है. ते

रसनो अनंतमो नाग सूकीने शेप अनुनागना नाग सर्व अंतरसुहूर्नेज खपावे, विनाशे, तेवार पढी वली पण जे अनंतमो नाग रह्यो हे तेनो वली अनंतमो नाग सूकीने शेष अनुनागना नाग सर्व अंतरसुहूर्ने खपावे, तेवार पढी वली ते पूर्वे सूक्यो एवो जे अनंतमो नाग रह्यो हे, तेनो वली अनंतमो नाग सूकीने शेप अनुनाग नाग अंतरसुहूर्ने विनाशे. एम अनुनाग खंमना अनेक सहस्र, एक स्थितिखं मने विषे व्यतिक्रमे अने ते स्थितिखंमना अनेक सहस्रे अपूर्वकरण समाप्त थाय, रसखंमना कालथकी स्थितिखंमनो काल संख्यातग्रणो अधिक जाणवोः तेथकी अपूर्वकरण काल संख्यातग्रणो अधिक हो.

हवे ग्रुणश्रेण कहे हे. ग्रुणश्रेण ते अंतरमुहूर्त प्रमाण कमें स्थितियकी उपरली कमें स्थित जे वर्ते हे, ते मध्यें थी दिलक लेड्ने पोतानी उद्याविकानी उपरली स्थित मिंदि समय समय प्रत्यें असंख्यातग्रुण असंख्यातग्रुण चढतुं दल संक्रमावे. जेले, ते आवी रीतें जे प्रथम समयें स्लोक, तेथकी बीजे समयें आसंख्यातग्रुणुं चढतुं जेले, ते थकी वली त्रीजे समय असंख्यातग्रुणुं वधतुं जेले, एम यावत् अंतरमुहूर्त्तना चरम समय पर्यंत कहेतुं. ते अंतरमुहूर्त्त तो अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरणना कालयकी लगारेक अधिक जाणवुं. ए प्रथम समयें यसुं जे दल, तेनो निक्त्पविध कह्यो. एम दितीयादिक समयथी मांमीने यावत् हे हला समय पर्यंत समयें समयें यहीत दिल यानो पण निक्त्पविध जाणवो. एटले जे समय समय प्रत्यें दिलक लीयें, ते सर्व प्रत्यें कें अंतरमुहूर्त्तना सथलां प्रति समयना दल मध्यें एमज असंख्यातग्रुणु चढतुं जेले. एम करतां जे समय नोगवतो जाय, ते सामयथी आगला शेष समयना दलमांहें नेले एटले अपूर्वकरणना समयें अनिवृत्तिकरणना समयें अनुक्रमे घटते थके शेष शेषने विषे ग्रुणश्रेणी दलिकनो निक्त्प शेष शेषने विषे होय ते उपरांत वधे निहं.

हवे गुणसंक्रम कहे हे. गुण संक्रम ते जे अपूर्वकरणना प्रथम समयने विषे अणबंधाती एवी जे अनंतानुबंधीआदिक अग्रुनप्रकृति ते दल बंधाती एवी जे संज्वलनादिक परप्रकृति, तेमध्यें समय समय दीव असंख्यातगुणुं चढ सं मावे, संक्रमावोने पर प्रकृतिरूपपणे परिणमावे, तेने गुणसंक्रम कहीयें. ते पहेले सम यें सर्वस्तोक संक्रमावे, तेथकी बीजे समयें असंख्यातगुणुं सं मावे, एम समय समय दीव असंख्यातगुणुं चढां दल संक्रमावे.

हवे अन्यस्थितिबंध कहे हे. अन्यस्थितिबंध ते अपूर्वकरणधी पूर्वता समर्थे जे कमेनो स्थितिबंध कह्यो, तेनी अपेक्सयें अपूर्वकरणना प्रथम समयें जे बीजो स्थितिवंध आरंने, ते स्तोक जाणवोः माटें अपूर्वस्थित बंध कह्योः अहीं आं स्थि तिवंध अने स्थितिघातनो काल, सरखोज जाणवो. ए बेने समकालें प्रारंने हे, अने समकालें सरखाज नीहे पूरा पाडे. एम ए पांच पदार्थ अपूर्वकरणें प्रवर्ते हे.

हवे अनिवृत्तिकरण कहीयें वैयें. अनिवृत्तिकरण आरंनतां तुल्य कालना एटले एकज कालें अनिवृतिकरणें प्रवेश करनारा सर्व जीवोने प्रथम समयें एकज सर खुं अध्यवसायस्थानक होय, एटले अनिवृत्ति करणना प्रथम समयने विषे जे वर्त्त है अने जे पूर्वे वत्या अने आगमिकका हैं जे वर्त्त हो, ते सर्व हुं पण सरखंज अ ध्यवसायस्थान हें तेमज बीजा समयने विषे जे वर्त्ते हे, वत्त्यी हे अने वर्त्तरों, ते स र्वेतुं पण एकरूपज अध्यवसाय स्थान हो. ह्वे पहेला समयनां अध्यवसाय स्था नकयको बीजा समयनां अध्यवसायस्थानक अनंत गुणविद्युद्धियें होय. एम जे टला समय अनिवृत्तिकरणना हे, तेटला समयनां अध्यवसायस्थानक ते पाह ला पातना अध्यवसायस्थानकथकी आगतुं आगतुं अध्यवसाय स्थानक अनं तगुण विद्युद्धिवालुं होय. अहीं आं एने अनिवृत्ति एवं नाम ते माटें कहीयें हैयें. जे माटें जे एने विषे प्रवेश करे, ते सर्वने अध्यवसायस्थानकनी परस्पर निवृत्ति अने व्यावृत्ति न होय, तेनी अपेक्षायें अनिवृत्ति एटले नेद न होय. सर्व जीव सरखे अध्यवसायस्थानें होय माटें अनिवृत्ति कहीयें अहीं आं समय समय दीव एकेक अ ध्यसाय स्थानक, तेनी स्थापना मुक्तावलीनी पेरें स्थापनी गणागणा अहीं अं पण पहेला समयचीज हियतिघातादिक पांच पदार्थ, समकालें अपूर्वकरणनी पेरें सार्थेज प्रवर्ते. ए रीतें छानिवृत्तिकरण कालना संख्याता नाग गये थके शेष एक नाग रहे यके अनंतानुबंधीआनी हेवली उदयावलिका मात्र स्थिति सूकीने वाकी श्रंतरमुहूर्न प्रमाण सं मावी नोगवे. जेम मनुष्यगतिमध्यें शेष त्रणे गति संक मावीने अयोगी दिचरम समयें जोगवे, ते स्तिबुकसंक्रम कहीयें. अंतरकरणने अनिनवस्थित बंधना काल प्रमाण अंतर हूर्ननों करे हे एटले ते अंतरसुदूर्न नवी स्यितिबंधादा समान जाणवो. ते अंतरकरण इंदली उं उकेरी, उकेरी बंधाती पर प्र रुतिने विषे सं मावे, अने प्रथम स्थितिनुं दलीनं आविलकामात्र ते वेद्यमान न दयवती पर प्रकृतिने विषे स्तिबुकसंक्रमें करीने संक्रमावे, स्तिबुक संक्रम एटले जे इय तुर्य प्रकृतिनुं दल ते उद्यवती प्रकृति मध्यें संक्रमाववुं तेने स्तिबुक संक्रम किह्यें.

द्वे अंतरकरण कहा पढ़ो बीजे समयें अनंतानुवंधीयानी उपरती स्थितिनुं दली उपरामाववा मांमे, ते आवी रीतें,प्रथम समयें स्तोक उपरामावे, वीजे सम

यें तेथी असंख्यात गुणुं उपशमावे, ते सं मावी नोगवे. जेम नुष्यगित मांहे होष त्रण गति सं ावी अयोगी केवली विचर समयें नोगवे, तेम जाणवुं एम समय स य असं ।तगुणुं चढतुं उप ।वतां अंतरमुदूर्तने चरमस यें अनंता नुबंधी आं सर्वे दल उपरामित थाया (उपरा व्या के प्रें) जे धूलना पुंजने पा णीना विं थी सींची सींचीने घणादिकें, पत्तरादिकें कूटचो थको निस्पंद एटले दीन बारी सूक्ष्म थाय, ते बेइने । पण न होय, एवो थाय. ते मेरूपरेणुना स मूहने पण विद्युदिरूप पाणीना प्रवाहणी सींची सींचीने अनिवृत्तिकरणरूप प हरिया कूटी लासोडीने एवी सू रे, के जे थ ही ते बंधन, सं मण, उदय, उ दीरणा, निक्त ने नि विनादि रणने पण योग्य थाय. तेने उपशमना हीयें. ए कोइए खाचार्यना त्र अशि नंतानुबंधीखानी उप ना ही. हवे ोइए । चार्य हे हे के अनंता बंधीआनी उपशमना न होय, पण विसंयोजनाज होय. विसंयोजना एटखे क्षपणाविशेष, तेनो प्रकार कहीयें वैयें. अहीं आं श्रेणी एपडिवजतां पण चारे गतिना संज्ञी पंचें इिय पर्याप्ता अविरति सम्यक्टि जीव तथा तिर्यंच ने म ष्य, ए बेंद्र गतिना देशविरति जीव, तथा प्र मत्त ने अप्रमत्त म ष्य, ते अनंतानुबंधीआ चार षाय खपाववाने अर्थे जे रीतें पूर्वें कह्या, तेमज यथाप्रवृत्त्यादि त्रण रण रे. पण एटलुं विशेष जे ख निवृत्तिकरणे पेवो थको अंतर रणन रे, तो ग्लंकरे ? ते कहे हे. इ इतना संक्रमें करीने हेवली एक आविलकामा ू रीने उपरला निर्विशेषपणे समस्त अनंता चुबंधीयानां दल खेरू करे,

तिहां च ६ ति स्वरू कर, तिहां च ६ तिमान संक्रम स्वरूप, मेप्रकृतिथी लखीयें वैयें जे अनंतानुबंधी आदिक प्रकृति दल, प्रथमसमयें पद्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण स्थिति खंम वें तेने अंतरमुदूर्नें चकेरीने परप्रकृतिमध्यें सं मावे. एम बीजे समयें बीजो स्थितिखंम करी, तेनो केटलो एक नाग परप्रकृतिमध्यें सं मावे तथा केटलोएक पोतानी हेवली स्थितिमध्यें सं मावे पण पर प्रकृतिमध्यें जेटलुं सं मावे, तथ की आपणी हेवली स्थितिमध्यें जे सं मावे, ते असंख्यातग्रणुं जाणवुं एम समय समय जे स्थितिखंम करे, द्वेते पावना पावला स्थितिखंमनी अपेक्सयें विशेष हीन दलनी अपेक्सयें असंख्यातग्रणुं होय. अने संक्रमाववाने समयें पण आपणी हेवली स्थितिमध्यें असंख्यातग्रणुं होय. अने संक्रमाववाने समयें पण आपणी हेवली स्थितिमध्यें असंख्यातग्रणुं संक्रमावे, तथा पर प्रकृतिमध्यें विशेष हीन हीन घटतुं घटतुं संक्रमावे, एम दिचरमसमय लगें सं मावे. ने वेहले समयें तो आपणी स्थितिशेषने अनावें सर्व दल परप्रकित मध्यें संक्रमावे, तेनुं नाम सर्वसंक्रम कहीयें हैयें। एम उदलना संक्रमें करी आवितकामात्र मूकी बाकी सर्व अनंतानुबंधीआ खपावे अने जे आवितिमात्र रहे, तेने सिबुकसंक्रमे करी वे यमान प्रकितमध्यें संक्रमावी खपावे। ते अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या कहेवाय ते अंतरमुहूर्त्त पढी अिन्नुत्तिकरणने हेह्हे शेष कर्मनां स्थितिघात, रसघात अने गुणश्रेणी न होय. केमके ते जीव स्वनावस्थज रहे, सहज अवस्थायें रहे, ए री तें अनंतानुबंधीआनी विसंयोजनानी रीत कही.

ह्वे दर्शन मोह्नीयत्रिकनी उपशमनानो प्रकार लखीयें वैयें तिहां मिथ्याल नी उपशमना मिथ्यात्वीने तथा क्वायोपशमिक सम्यक्दृष्टि ए बेहुने होय. अने सम्यक्त तथा मिश्र, ए बेनी चपशमना तो क्योपशम सम्यक्ट धिनेज होय. तिहां मिध्यालीने तो यंथिनेद करतां प्रथम उपराम सम्यक्ल उपजाववा वाला ने मिथ्यात्वनी उपशमना होय, ते प्रकार कहीयें हैयें. कोइ संज्ञी पंचेंडिय जीव, सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो करणकालयकी पूर्वें अंतर मुहूर्त काल लगें समय समय प्रत्यें अनंतगुणवधती विद्युद्धियें प्रवर्ततो एवो अनव्यसेदिक जीवनी वि ग्रुदिनी अपेक्।यें अनंतग्रणविग्रुदिमंत एवो मितअज्ञान श्रुतअज्ञान, अने विनं गङ्गान, ए मांहैला अनेरे साकारोपयोगें उपयुक्तपको मनादिक त्रणयोग मांहेला कोइ पण छनेरे योगें वर्ततो जघन्य परिणामें तेजोलेक्यायें छने मध्यमपरिणामें पद्म केश्यायें तथा उत्कष्टपरिणामें शुक्क केश्यायें वर्ततो मिण्यादृष्टि चारे गतिमां हेलो कोइ पण गतिनो जीव कांइ एक कंणी एक कोडाकोडी सागरोपमनी हिय ति, साते कमैनी घाकती रही होय. इत्यादिक सर्व पूर्वीक्त प्रकारें ज्यां सुधी यथा प्रवृत्तिकरण अने अपूर्वकरण ए वेंद्र मिथ्याल उपश्माववाने परिपूर्ण करे, तिहां लगें कहेवुं. पण एटलुं विशेष जे छहीं छां छपूर्वकरणे गुणसंक्रम न करे. किंतु ? छहीं स्थितियात, रसयात, गुणश्रेणी छने छन्यस्थितिवंध, ए चार वानांज प्रथम समयथी आरंजे. गुणश्रेणीदिलक रचना पण उदय समयथी मांमीने जाणवी. ते वार पढ़ी अनिवृत्तिकरणने विषे पण एमज कहे बुं. हवे अनिवृत्तिकरणा झाना सं खातनाग गये यके अने एक संख्यातमा नाग याकतो रहे. तेवारें मिय्यातनी हेवली प्रथम स्थित अनंतानुवंधीनी परं अंतरमुहूर्नमात्र जेटली नीचें मूकी ठां मीने उपरें अंतरमुहूर्न मात्र अनिनवस्थिति वंधना अंतर मुहूर्न जेवडी पहेंजी स्थितना छंतर मुहूर्नेथी कांइ एक जाजेरी छनिनवस्थितिवंधना काल नरखी

यें तेथी संख्यात गुणुं उपशमावे, ते सं मावी नोगवे. जेम नुष्यगित मांहे शेष ण गति सं ावी अयोगी केवली दिचर समयें नोगवे, तेम जाए बुं एम समय स य असंख्यातगुणुं चढ ं उप वितां अंतरमु र्तने चरमसमयें अनंता नुबंधी ां सर्वे दल जपश्मित थायः ( जपशमाव्या केणें) जेम धूलना पुंजने पा णीना विं थी सींची सींचीने घणादिकें, पञ्चरादिकें कूटघो थको निस्पंद एटखे दीन बारी सुक्त थाय, ते कोइने । पण न होय, एवो थाय. ते मेरूपरेणुना स ूहने पण विद्युद्धिर पाणीना प्रवाह्यी सींची सींचीने अनिवृत्तिकरणरूप प बरेंची कूटी लासोडीने एवी सूरे, के जे घकी ते बंधन, सं मण, उदय, उ दीरणा, निक्त ने नि चिनादि रणने पण योग्य थाय. तेने जपशमना हीयें. ए कोइए आचार्यना तं ।श्री नंतानुबंधीआनी जपशमना ही. हवे नेइए ।चार्य हे हे के अनंता बंधीआनी जपशमना न होय, पण विसंयोजनाज होय. विसंयोजना एटले क्षपणाविज्ञेष, तेनो प्रकार कहीयें वैयें. अहीं आं श्रेणी एप डिवजतां पण चारे गतिना संज्ञी पंचें डिय पर्याप्ता अविरति सम्यक्टि जीव तथा तिर्थेच ने म ष्य, ए बेंद्रु गतिना देशिवरित जीव, तथा प्र मत्त ने अप्रमत्त म ष्य, ते अनंता बंधीआ चार षाय खपाववाने अर्थे जे रीतें पूर्वें क्छा, ते ज यथाप्रवृत्त्यादि त्रण रण रे. पण एटलुं विशेष जे अ निवृत्तिकरणे पेवो थको अंतर रण न रे, तो ग्लंकरे ? ते कहे हो. उदलना संक्रमें करीने देवली एक विलकामा मू रीने उपरला निर्विशेषपणे समस्त अनंता नुबंधीयानां दल खेरू करे,

तिहां उद्दलमान संक्रम ं स्वरूप, मेप्रकृतिथी लखीयें हैयें. जे अनंतानुबंधी आदिक प्रकृति ं दल, प्रथमसमयें पत्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण स्थित खंम हें तेने अंतर हूनें उकेरीने परप्रकृतिमध्यें सं मावे. एम बीजे समयें बीजो स्थितिखंम करी, तेनो केटलो एक नाग परप्रकृतिमध्यें सं मावे तथा केटलोएक पोतानी हेवली स्थितमध्यें सं मावे पण पर प्रकृतिमध्यें जेटलुं संक्रमावे, तथा की आपणी हेवली स्थितमध्यें जे सं मावे, ते असंख्यातग्रणुं जाणवुं. एम समय समय को स्थितिखंम करे की पाठना पाठला स्थितिखंमनी अपेक्षायें विशेष हीन दलनी अपेक्षायें असंख्यातग्रणुं होया अने संक्रमाववाने समयें पण आपणी हेवली स्थितमध्यें असंख्यातग्रणुं सं मावे, तथा पर प्रकृतिमध्यें विशेष हीन हलनी इपेक्षायें असंख्यातग्रणुं सं मावे, तथा पर प्रकृतिमध्यें विशेष हीन हीन घटतुं घटतुं संक्रमावे, एम दिचरमसमय लगें सं मावे. ने ठेहले समयें

तो । पणी स्थितिशेषने अनावें सर्व दल परप्रकृति मध्यें सं । वे, तेनुं नाम सर्वसंक्रम कहीयें हैयें। ए उदलना संक्रमें री आविल । । मूरी । की सर्व अनंतानुबंधीआ खपावे अने जे आवलीमा रहे, तेने स्तिबुकसं में री वे द्यमान प्रकृतिमध्यें सं मावी खपावे ते नंता बंधीआ विसंयोज्या हेवाय ते अंतरमुहूर्न पढी निवृत्ति रणने बेहडे शेष मेनां स्थितियात, रसयात ने गुणश्रेणी न होय. केमके ते जीव स्वनावस्थज रहे, सहज वस्थायें रहे, ए री तें अनंतानुवंधीआनी विसंयोजनानी रीत कही.

हवे दरीन गेहनीयत्रि नी उपश नानो प्र ार लखीयें यें तिहां मिथ्याल नी उपश ना मिण्यालीने तथा क्वायोप मि सम्यक्दि ए बेहुने होयः ने सम्यक्त तथा मिश्र, ए बेनी उपरा ना तो क्यायोपरा सम्यक्टि नेज होय. तिहां मिथ्यालीने तो यंधिनेद रतां प्रथ उप सम्यक्ल उपजाववा वाला ने मिथ्यालनी उपरा ना होय, ते प्र ार हीयें हैयें। ोइ संज्ञी पंचेंडिय जीव, सर्व पर्याप्तियें री पर्याप्तो रण । लथकी पूर्वें तर हूर्त । ल लगें समय समय प्रत्यें नंत एवधती विद्युद्धियें प्रवर्ततो एवो नव्यसै दिक जीवनी वि ग्रुदिनी अपेक्सयें नंत एवि दि त एवो तिअक्षान श्रुत कान, अने विनं गङ्गान, ए मांहेला नेरे साकारोपयोगें उपयु घो नाहि एयोग मांहेला कोइ पण अनेरे योगें वर्ततो जवन्य परिणामें तेजोलेक्यायें अने मध्यमपरिणामें प लेक्यायें तथा जत्रु परिणामें लेक्यायें वर्त्ततो मिथ्यादृष्टि चारे गतिमां हेलो कोइ पण गतिनो जीव कांइ ए ऊंणी ए ोडाकोडी सागरोपमनी स्थि ति, साते मेनी था ती रही होया इत्यादि सर्व पूर्वीक प्रकारें ज्यां धी यथा प्रवृत्तिकरण अने पूर्वकरण ए बेहु मिण्यात्व उपश्वमाववाने परिपूर्ण करे, तिहां सगें कहेतुं. पण एटर्जुं विशेष जे अहीं आं पूर्वकरणे ग्रणसं म न करे. किं ? अहीं स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी अने अन्यस्थितिवंध, ए चार वानांज प्रथम समयथी आरंने. गुणश्रेणीदिलक रचना पण चद्य समयथी मांनीने जाणवी. ते वार पढी निवृत्तिकरणने विपे पण एमज कहेवुं. हवे अनिवृत्तिकरणादाना सं ातनाग गये थके अने एक संख्यातमा नाग याकतो रहे, तेवारें मिथ्यालनी

तिनाग गय थक अन एक संस्थातमा नाग जाकता रहे, तयार मिन्यायमा हेवली प्रथम स्थित अनंतानुवंधीनी परें अंतरसुदूर्चमात्र जेटली नीचें सूकी वां मीने उपरें अंतरसुदूर्च मात्र अनिनवस्थित वंधना अंतर सुदूर्च जेवडी पहेली स्थितिना अंतर सुदूर्चथी कांइ एक जाजेरी अनिनवस्थितवंधना काल सरखी एवी मिय्यालनी श्रंतरकरणादा करे, ते श्रंतरकरण वालुं कर्मदन कांइ एक चकेरीने प्रथम स्थितिमध्यें चेले अने कांड्एक बीजी उपरली स्थिनिमध्यें चेले. तिहां प्रथमस्थितिने विषे वर्ततो जीव. चढ़ीरणा प्रयोगें करीने प्रथम स्थितिनुं दल चद्यावनिका चपरलुं हे तेने ब्याकर्षाने चद्यावनिकामध्ये वाले. तेने चदीरणा कहीयें. अने जे वली बीजी स्थितिना ममीपथकी उदीरणा प्रयोगें करीनेज ते मांहेजुं दल श्राकरीने उदयावली मध्यें नाखी. नोगवं. ते श्रागानने पण पूर्वाचार्य चदीरणानुंज विशेषनाम विशेष प्रतीपत्तिने खेंथे वी जुं नाम कत्युं हे. द्वे चद्ये चदीर णायें करीने प्रथम स्थितिनुं दल नोगवतो नोगवतो जेवारें ते प्रथमस्थिति ज्ञेप वे धा विलका रहे, तेवारें आगालनो वेह आवे, तेवारें एक आवितका लगें उदय उदीर णा प्रवर्ते अने नेहेली आवितयं तो उद्दीरणा पण विरमे. तेवारं नेहली आवितयें केवल जदयज नोगवे, पठी ते आविलकाने हेन्ले समयें बीजी स्थितिनां दिनिक नो रस चेद करी त्रण पुंज करे. एटले तेने त्रण नागें वहेंची नाखे ते श्रावी रीतें के तेमध्यें जे देशघाती एकवाणीत्रा रसस्पर्धक तथा जत्रुष्ट रसोदीरणापे क्तायें वेताणी आ रस सहित जे दल. ते प्रथम सम्यक्त पुंज तथा केटला एक ए कवाणीया रस स्पर्धक सर्ववाती सहित हे तथा केटला एक वेवाणीया रसनां स्पर्क सर्वेघाती सहित हे. ते वीजो मिश्रपुंज तथा सर्वघाती या चोहाणी श्रा तया त्रिवाणीत्रा रसस्पर्दक सहित जे दल हे. ते त्रीनो मिच्यालपुंन जाणवी. ठकंच कमेप्रकृतिचूर्णों "चरम समय मिहदिष्ठि. सेकाले उदसमसम्मदिष्ठि उं होइ तंहे विइ अंतंपि तं अणुनाग करेइ तं जहा सम्मनं सम्मा मिन्नं मिन चचेति ततोणंतर समये मिलादिही" तेवार पढ़ी छागल तेथी छनंतर समयें मिथ्याल दलिकना उदयना अनावथकी औपशमिक सम्यक्ल पामे, जे नणी यंथें कह्यं हे के " मिह्नतुरए खीएो जहइ सम्मनमोवसमित्रं सोलंनेण जस्स लंग ६ आयहिय मल ६ पुवंजं "ए रीतें मिष्यालनी सर्व प्रकारें उपरामनायकी प्रथम सम्यक्लनो जान होय हे. ए सम्यक्ल पामतो कोइ एक देशविरति सहित अने कोइ एक सर्व विरति सहित पण पडिवजे, जे नणी कह्यं हे के " सम्मतेणं सम्मग, सर्व देसं च कोइ पहिवक्के " ते माटें देशविरति तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त संयतने विषे पण मिथ्यालनी जपशमना पामीयें हैयें.

हवे वेदकसम्यक्दिष्टिने प्रदेशोदयनो अपेट्रायें मिण्यात्वनी उपशमनानो प्रका र कहे छे. कोइएक वेदकसम्यक्दिष्ट जीव, संयमने विपे प्रवर्तमान थको अंतर मुहूर्न मात्र कालें दरीनत्रिकने उपरामावे हे. तिहां दरीनत्रिक उपरामावतां त्रण करवां पड़े, तेनो विधि पूर्वें कह्यो. ते रीतें त्यां लगें जाएवो, ज्यांलगें अनिवृत्तिकर णादाना संख्याता नाग गये थके अंतर करण करे हे. ते अंतर रणी अंतर रण कर तो यको सम्यक्तनी प्रथमस्थिति अंतरमुहूर्त प्राणस्थापे अने मिथ्याल, मिश्र मोहनीयनी प्रथमस्थित आविलकामात्र स्थापे पढी तेनां दलि चकेरी चकेरी ने सम्यक्लनी प्रथम स्थितिमध्यें प्रकेषे. तिहां मिथ्याल अने मिश्र, ए बेहुनी प्र थम स्थितिनुं जे दलिक हे तेने सम्यक्तनी प्रथम स्थितिमध्यें स्तिबुक री संक्रमावे अने सम्यक्लनी प्रथमस्थितिना दलना रसोदय विपाकना अनुन ववायकी नोगवतां ते अनुक्रमें क्षीण थाय. तेवारें औपशमिकसम्यक्हि थाय अने ए त्रणे मोहनीयनी उपरली स्थितिनुं दल उपशमाववानो तो पूर्वे जे तानुबंधी आनी उपरली स्थितिनी उपरामनानो प्रकार कह्यो है. तेनी पेरें जाएवों. ए रीतें दर्शन मोह्नीयने जपशमावीने पढी चारित्र मोह्नीय, जपशमाववाने प्रव र्ततो पुरुष वली पण तेहीज यथाप्रतृ ।दिक त्रण करण करे. तिहां अप्र तने अप्रमत्त्रुणवाणे यथाप्रवृत्तिकरण, तथा अपूर्वकरण ग्रणवाणे अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरण ग्रणगणे अनिवृत्तिकरण, ए त्रण ग्रणगणे त्रण करेण करे, ते दं स्वरूप, पूर्वली पेरें जाणवुं, पण अहीं आं एटलुं विशेष जे अपूर्वकरणें गुणसं : म तो न बेधाती एवी सघली अञ्चन प्रकृतिनोज प्रवर्ते. तथा अपूर्वकरणाद्धाना सं ाता नाग गये थके निड़ा प्रचलानो बंधवि हेद थते हुंते तेवार पढ़ी घणा स्थि तिखंमनां सहस्र अतिक्रमते थके अपूर्वकरणादाना संख्याता नाग गये थके शेष एक नाग याकते थके देविदक, पंचें दियजाति वैकियदि , आहारकि , तेजल, कामेण, समच र संस्थान, वर्णच ष्क, अग्ररलघुच ष्क, त्रसनवक, छादेय, निर्माण छने जिननाम, ए त्रीश प्रकृतिनो बंधविहेद याय, तेवार पढी गये थके पूर्व रणने बेहले समयें हास्य, रति, नय गुप्ता, ए चार प्रकृतिनो बंधविश्वेद ढुंते दास्य, रति, अरति, शोक, नय गुप्ता, ए हनो उदय तिहां होय. अहीं आं सर्व मोहनीयकर्मना हेहले समयें देशोपशमना, निधत्ति, निकाचनाना करणने विश्वेदे तेवार पढी आग ले समयें अनिवृत्तिकरणें प्रवेश करे, तिहां पण स्थितिघातादिक पांच पदार्थ तेमज पूर्वेली पेरेंज प्रवर्ते ॥ इति सम्र यार्थः ॥ उण ॥ ह्वे अनिवृत्तिबादर गुणवाणे चपशमश्रेणिवालाने मोह्नीयकर्मनी

सातषकी आरंनीने पञ्चीश पर्यंत प्रकृति जपशम पामे, तेतुं सक्ष देखांडे हे. सत्ति नवय पनरस, सोलस छाठार सेव इगुवीसा॥ एगाहि इच वीसा, पणवीसा वायरे जाण॥ ७ए॥

अर्थ- ( सत्तरुनवयपनरस के । अंतरकरण की घे यके सात प्रकृति उपशांत होय, ते पढ़ी नपुंसकवेद उपशमे थके छातनो उपशांत याय, ते पठी स्त्रीवेद उ पशमे थके नवनो उपशांत थाय. ते पठी हास्यादिपट्क उपशमे थके पंदरनो जपशांत थाय. ते पढी ( सोलसञ्जारसेवइग्रवीसा के० ) पुरुपवेदनो वंथोदय जप शमे थके शोलनो उपशांत थाय, ते पढ़ी अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी, ए वे क्रोध समकालें उपशमे थके छढारनो उपशांत थाय. तेपठी संज्वलनक्रोधने उपश में र्जगणीशनो उपशांत थाय. (एगाहिइचरवीसा के०) ते पठी अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान, ए वे मानने समकालें उपशमावे थके एकवीशनो उपशांत थाय. ते पठी संज्वलन मानने चपशमाववे वावीशनो चपशांत थाय. तेपठी छप्रत्याख्यान तथा प्रत्याख्यान, ए बेहु मायाने समकालें उपश्माववे करी चोवीश प्रकृतिनो उपशांत या यः ते पढ़ी संज्वलनी मायाने जपशमाववे करी (पणवीला के०) पञ्चीश प्रकृतिनो जप शांत (बायरेजाण केण) अनिवृत्तिबादरगुणगणे उपश्मित प्रकृति जाणवी॥ ७ए॥ हवे ते निवृत्तिकरण अदाना संख्याता नाग गये थके चारित्रमोहनीयनी ए वीश प्रकृतिनुं श्रंतरकरण करे. तिहां चार संज्वलन कपायमांहेलो जे कपाय उ दय प्राप्त होय,ते कषाय अने त्रण वेदमध्यें पण जे वेद उदय प्राप्त होय,ते वेद

वीश प्रकृतिमं श्रेष्ठां अद्वाना संस्थाता नाग गय थक चारित्रमहिनायना ए वीश प्रकृतिमुं अंतरकरण करे. तिहां चार संज्वलन कपायमाहिलों जे कपाय छ दय प्राप्त होय,ते कपाय अने त्रण वेदमध्यें पण जे वेद उदय प्राप्त होय,ते वेद ए बे प्रकृतिनी प्रथमिस्यित आपणा उदय काल प्रमाणनी होय. ते वेद्ध टाली ने तथा बाकी उंगणीश प्रकृति जेनो उदय नथी, तेनी प्रथम स्थिति आवली मात्र होय. तिहां पोताना उदयकालना प्रमाणमुं अल्पबहुत्व कहीयें हैयें. त्रण वेद मध्यें विदे अने नपुंसकवेदनो उदयकाल पांख्यातग्रणो जाणवो. तथी संज्वलना कोध नो उदयकाल विशेषाधिक जा वो. तथी संज्वलना माननो उदयकाल विशेपाधिक, तथी संज्वली । यानो उदयकाल विशेषाधिक, तथी संज्वलना लोननो उदयका ल, विशेषाधि . तिहां संज्वलनक्षोधोद्धें करी उपशमश्रेणी आरंने, तेने ज्यां लगें अ प्रत्याख्यानीयों ने प्रत्याख्यानीयों, ए बें ोध उपशमे नहीं, त्यां लगें संज्वलना क्रोधनो उदय होय. एमज संज्वलनमानोद्धें जे श्रेणी आरंने तेने, ज्यां लगें अप्र खाख्यानी अने प्रत्याख्यानी मान, टपशमें नहीं, त्यां लगें संज्वलनमाननो उदय होय. एमज संज्वलन मायाना उदयें उपश श्रेणी पिंडवजनारने ज्यां सुधी अप्र त्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी माया उपशमें नहीं, त्यां सुधी संज्वलन ।यानो उदय होय. एमज संज्वलनलोनोदयें उपश श्रेणी पिंडवजनारने प्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी ए बेंद्रु लोन, ज्यां सुधी उपशमें नहीं त्यां सुधी बादर संज्वलना लो ननो उदय होय. ए पोत पोताना उदय ।लनी पेक्स्पें तेना उद्यें प्रवर्ततो श्रेणी ।रंने, ते षाय वाजे वेदना उद्यें प्रवर्ततो श्रेणी ।रंने, ते षाय तथा ते वेदनो उदयकाल याकतो हुंतो तेनी तेटला ।लनी तेवडी प्रथमस्थिति होय. बीजा सर्वनी आविलमा प्रथमस्थिति होय. अहींआं जेटले ।लें स्थित खंमनो घात करे, तथा बीजो जेटला ।लनो अन्यस्थितिबंध रे, तेटला ।लें अंतर रण पण रे, ए त्रणे साथें एक ।लें ।के अने ए साथेंज पूर्ण रे, पण तेनो ।ल प्रथ स्थितिथ ही असंख्यातग्रणो अधि जाणवो.

ह्वे अंतरकरणना दलनो प्रह्मपविधि लखीयें हैयें. जे प्रकृतिनो तिहां बंध अने चद्य, ए बेहु हो, ते प्रकृतिनां अंतर करणसत्कदल कांइएक प्रथमित मध्यें नेलीयें अने ंइएक बीजी स्थिति ध्यें नेलीयें, जेम पुरुषवेदने उद्यें श्रे णी आरंने, तेने पुरुषवेदनो बंध होय. तथा छदय तो छेज तेथी पुरुषवेदना अं तरकरणदल बेहु स्थितिमध्यें नेलीयें तथा जे प्रकृतिनो चद्य है, पण बंध नथी तेना अंतरकरण दल प्रथम स्थितिमध्यें ज नेलीयें, जेम स्वीवेदनो तिहां छदय हे. पण बंध नथी तेणे विदोदयें जे श्रेणी पिडवजे ते अंतरकरणसत्कदल आ पणी प्रथमस्थितिमध्येंज नेखे, तथा जे प्रकृतिनो तिहां उदय नथी अने वंध हे, तेनां अंतरकरणदल, बीजी स्थितिमध्यें जेले, पण प्रथमस्थितिमध्यें न जेले. जेम संज्वलन होधने छद्यें श्रेणी पडिवजे, ते शेष त्रण संज्वलनना कपायज बांधे हे ते तेनां अंतरकरण दल बीजी स्थितिमध्यें नेले तथा जे प्रकृतिनो वंध तथा चद्य, ए बेंद्रु नथी तेनां खंतकरण दल, पर प्रकृतिमध्यें नेलें, जेम वीजा अप्रत्याख्यानीआ अने त्रीजा प्रत्याख्यानीआ कपायनां अंतरकरण दल संज्वलन परप्रकृति हे तेमध्यें नेले. अहीं आं घणी वात लखवानी हे परंतु यंथ वधवाना नयथी नथी जख्युं पण जेने विशेष जाणवानी इहा होय. तेने कर्मप्रक तिनी वृत्ति जोवी. एम अंतरकरण करी पठी पहेलो नपुंसक वेद उपशमाये, ते पहेले समयें थोडुं दल उपशमावे, बीजे समयें तेथी असंख्यातगुणुं. एम समय

समयने विषे श्रसंख्यातगुणुं चढतुं चढतुं चपशमावतां वेहले समयें सर्व चपशांत | होय. तिहां प्रथम समयथी मांमीने दिचरम समय लगें उपगमाव्यां जे दल. ते थकी असंख्यातगुणुं दल, परप्रकृतिमध्यें द्विपवे, अने वेहले समयें जे परप्रकृति मध्यें केपवे, तेथकी असंख्यातगुणुं जपशमावे, एम नपुंसकवेद जपशमावे थके पूर्वेली अनंतानुवंधी चार तथा दरीन त्रिक मली सात सहित आत मोहनीयनी प्रकृति उपशांत होय, तेवार पठी उक्तप्रकारें छंतर मुहूर्न पर्यंत स्त्रीयेंद उपग मावे, ते वार पढ़ी हास्यादिक व प्रकृति छंतर मुहूर्ने उपगमावे, तेवारं शरवाजे मोह्नीयनी पंदर प्रकृति जपशांत होयः ते समये पुरुपवेदना वंध, जब्य छने ज दीरणानो विश्वद थाय अने तेनी प्रथमस्थितिनो पण विश्वद थाय. तिहां पुरुप वे दनी प्रथमस्थिति वे श्रावली शेप ठते, पूर्वोक्त श्रागाल न थाय, तेवारें मार्गदल विशे षदल थया नणी तिहां हास्यादिक ठ प्रकेतिनां दल पुरुप वेदमां प्रकेष थाय न हीं. तेवारें ते हास्यादिक वनुं दल, संज्वलनाक्रोधादिकमध्यें नेलीयें. जे नणी कम्मपय डीमध्यें कहां हे के, वे छावलि प्रथमस्थितिनी ज्ञेप होय, तेवारें वेदपतकृह न याय. एम हास्यादिक व प्रकृति उपश्वमाच्या पत्नी एक समय कणी वे आवलीयें सर्वे पुरुषवेद उपशमे, ते पण प्रथम समय सर्वस्तोक तेथी वीजे समयें श्रसंख्या तगुणुं उपशमावे, तेथकी त्रीजे समयें छसंख्यातगुणुं उपशमावे. एम समय सम य दीत असंख्यातगुणुं चढतुं दल उपशमावे. एम यावत् समयें कणी वे आवित का होय, तिहां सुधी कहे बुं अने केट सुं एक दल परप्रकृतिमध्यें यथाप्रवृत्त संक में करी सं मावे, पण प्रथम समयथी बीजे समयें विशेष हीत संक्रमावे. एम स मय समय विशेष दीन दीन संक्रमावतो आवितकाना चरमसमय लगें जाय-ए रीतें पुरुषवेद उपशांत यये थके मोहनीयनी शोल प्रकृतिनुं उपशांतल थाय. तेवार पढी जे समयें हास्यादिक व प्रकृति उपशमे, ते समयधी पुरुषवेदनी प्रथम स्थिति क्रीण थर्. तंदनंतर अप्रत्याख्यानी क्रोध अने प्रत्याख्यानी क्रोध तथा संज्वलन् तेथ, ए त्रए तोधने साथंज उपशमाववा मांमे, तेने पूर्वली पेरें उपश मावतां जेवारें संज्वलनकोधनी प्रथमस्थिति एक समय णी त्रण आवली शेष रहे, तेवारें प्रत्या ानीञ्चा छने प्रत्याख्यानीञ्चा, ए बेहु कोधनुं दल संज्वलना ोधने विषे न प्रहेपे पण संज्वलना मानादिकमध्यें जेले, जे नणी त्रण लि रोष, संज्वलनो ोध र ।। यको तेमध्यें कोइ प्रकृतिनां दल पतद्गृह न थाय, एट हो तेमध्यें कोइ एक पण प्रकृति दल सं मार्च्युं न ।य अने तेनी बे आव

ति शेष रहे, तेवारें तिहां आगात विहेद याय अने एक आवलीशेष रहे तेवा रें संज्वलनाक्रोधनो बंध, उदय, उदीरणा विश्वेद थाय अने अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी क्रोध उपशांत होय एटले खढार प्रकृति उपशांत थाय. तेवारें संज्व लन कोधनी प्रथमस्थितिनी एक आविलकानुं दल अने वे आवली एक समय जणी छहींछां बांध्युं जे उपरली स्थितिनुं दल, तेविना बाकी सर्व उपशांत थयुं बे. ते पढ़ी जे संज्वलन क्रोधनुं प्रथम स्थितिनुं एकावलिका दल ते संज्वलन मा नमध्यें स्तिबुकसंक्रमें करी संक्रमावे अने समय जणी बे आवितकाना वंधनं च परली स्थितिनुं दल, ते पुरुषवेद उपशमनाधिकारना प्रस्तावें जे रीतें उपाय कहाो हे, ते रीतें जपशमावे तथा पर प्रकृतिमध्यें संक्रमावे. एम समय जणी बे आव लीयें संज्वलन क्रोध उपरली स्थितिनुं तेने उपरामावे, एटले मोहनीयनी उंगणीश प्रकृति चपशांत चइ. हवे जेवारें संज्वलनाक्रोधनो बंध, चद्य, चदीरणा विहेद थयो, ते समयथी मांमीने संज्वलना माननी बीजी स्थितिमध्येंथी दल आकर्षीने तेने प्रथमस्थितियें करी वेदे, तिहां उदय समयने विषे स्तोक प्रकेपे हे अने ते थकी बीजा समयने विषे असंख्यातग्रुणो प्रदेषे एम समय, समय असंख्यातग्र णो चढतो चढतो प्रक्रेपतां यावत् प्रथम स्थितिना चरम समय पर्यत जीजीयें. प्रथम स्थितिकरणना पहेला समयथी मांमीने अप्रत्याख्यानावरण तथा प्रत्याख्या नावरण अने संज्वलनमान, ए त्रणे मानने साथेंज उपशमाववा मांमे, ते तेमज जेवारें संज्वलना माननी प्रथमस्थिति समयोन त्रण आवली शेष रहे, तेवारें पूर्वें कह्यो ते प्रकारें संज्वलन मानने विषे परप्रकृति तुं पतद्यह न थाय, तेवारें प्रत्याख्यानीयादिक माननुं दल संज्वलननी मायामध्यें संक्रमावे. एम कोधनी पेरें माननी उपशमनानो विधि जाणवो. ए अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी मान उप शमावे, तेवारें मोहनीयनी एकवीश प्रकृतिनो जपशम थयो ते समय संज्वलनमान नां बंध, उदय, उदीरणा विश्वेद थाय. तेवार पठी एक आवितकायें संज्वलन क्रोधनी पेरें संज्वलन मानने उक्तप्रकारें उपशमावे. तेवारें बावीश प्रकृति उपशमी. तथा जे समयें संज्वलन माननो वंध, जद्य, जदीरणा विवेद होय, तेथी छागले समयथी मांभीने संज्वलन मायानी बीजी स्थितिमध्येथी दल छाकर्पाने पूर्व कह्यो, ते प्रका रें प्रथमस्थितिगत करे करीने वेदे, ते समयथीज मांमीने त्रएो मायाने जपशमाववा मांभे ते पण माननी पेरें एक आवली हुंते संज्वलनी मायानां वंधोदय, ठदीरणा विचेद थाय, ते समयें अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी माया उपशांत थाय, तेवारें

मोह्नीयनी चोवीश प्रकृतिनो उपशांत याय ते समयें संज्वलन मायानी प्रथम स्थितिगत एकावलिकाने तथा समयोन आवलिका ६ कें वांधेलुं जे उपरली स्थितिगत दलिक तेने मूकिने शेप अन्य सर्व उपशांत थाय हे. ते पही ते प्रथम स्थि तिगत एकावलिकाने स्तिबुक संक्रमें करीने संज्वलन लोनने विषे संक्रमाव हे अने समयोन आवितका ६ कें बांधेला दलिकने पुरुपवेदमां कहेला उक्त प्रकारें करी उप शमावे हे तथा संक्रमावे हे. ते पढ़ी समयोन वे आवितकायें संज्वलन माया उप शांत थाय. तेवारें मोहनीयनी प्रचीश प्रकृति उपशांत थइ. जेवारें संज्वलनी माया नो बंधादिक विज्ञेद होय, तेथी छागले समयें संज्वलन लोननी वीजी स्थितिमांहेथी क्योंने प्रथम स्थित रचे, ते प्रथम स्थित लोनवेदना दाना त्रण विनाग इय प्रमाण रे करीने वेदे तिहां प्रथम त्रिनागतुं नाम, अश्वकर्णकरणादा. बीजा त्रिनागनुं नाम, किट्टिकरणादा तिहां प्रथम अध्वकरणादा. त्रिनागें वर्ततो पूर्वस्प द मध्येंची दल लेइने अपूर्वस्पर्दक करे. अहीं आं स्पर्दक एटले छुं? तोके जीव इ नंतानंत कमे परमाणुयें निष्पन्न स्कंध तेने कमेपणे यहे हे. तिहां एकेक कमेस्कं धमध्यें जे सर्व जघन्य रस हे ते पण केवलीना ज्ञानरूप शस्त्रें हेदातो, हेदातो पण र वे जीवथ री नंतगुण रसविचाग प्रत्यें छापे हो. तथा एवां जे सरखां सरखां जघ रसनां मेस्कंधदल तेनो समुदाय, ते वर्गणा कहीयें. तेथी एक रस विनागें मेरकंधनी बीजी वर्गणा, तेथी वे रस छविनागें चढता कमेरकंधनी त्रीजी वर्गेणा, एम एकेका रसविनागें चढती चढती वर्गेणा करतां अनव्यधी ं नंत णी ने सिद्धने अनंतमे नाग प्रमाण वर्गणानो समुदाय, तेतुं नाम हीयें. ते स्पर्कनी उपरली वर्गणाना रस विजागणी एक रसविनागें धिक, तथा बे रसविनागें अधिक रसविनाग सहित एम यावत् सर्वेजीवयी नंत ए पर्यंतथी एक रसविनागें हीन रसोपेत कमेस्कंध दल न पामीयें, एट से सर्व जीवयी अनंतगुण रसविनागें धिक रस सहित जे कमेस्कंधदल होय, एवा स्कंथनो स दाय, ते बीजा स्पर्धकनी प्रथमवर्गणा जाणवी तेथी एक रस धिक कमें स्कंधनो समुदाय,ते बीजी वर्गणा. एम एकेक रसविजागें चढती नव्यथी नंतग्रणी वर्गणा होय. तेना समुदायने बीजो स्पर्धक कहीयें, एमज वली सर्वे जीवयी नंतगुण रसविनागें अधिक नेततां कमेस्कंधना समुदा यन्। त्रीजा स्पर्ककनी प्रथमवर्गणा, एम ते पण पूर्वीक अनव्यानंतगुण अनंत् वर्गणायें स्पर्वक होय एवा अनंता स्पर्वक जीवें पूर्वे बांध्या हे ते जणी एने

पूर्वस्पर्क्क कहीयें. ते मध्येंथी दल लेइने ते दलने प्रकर्प विद्युद्धिना वद्यथकी अत्यंत रस हीन करीने अपूर्वस्पर्क्क करें, केमके, आ संसार मध्यें परिच्रमण कर ता जीवें कोइवारें बंध आश्री एवा रसस्पर्क्क नथी कहा पण हमणाज विद्युद्धि ने वरों करे हे. ते नणी एने अपूर्वरसस्पर्क्क कहीयें, ते अथक एक रणादा वीत्या पही वीजो किष्टिकरणादायें प्रवेश करें. तिहां पूर्वस्पर्क्कथी बीजा अपूर्वस्पर्क्कथी दल लेइने तेना रसनी प्रतिसमयें अनंती किष्टि करें, किष्टि कहेतां जे पूर्व स्पर्क् कथी तथा अपूर्व स्पर्क्कथकी वर्गणा लेइ लेइने तेने अनंतग्रण रस हीनताने पमाडीने घणे आंतरे आंतरे थापत्रुं. जेम असत्कल्पनायें जेना एकशो रसविजाग हो, अथवा एकोत्तरशो, बीडोत्तरशो, हता तेना पांच, पंदर, पञ्चीश, रसविजाग रा खवा. तेने किष्टि हीयें. ते किष्टिकरणादाने हेहले समयें समकालें अप्रत्या ख्यानीड अने प्रत्याख्यानीड, ए वे लोज उपश्चमे अने ते समयेंज संज्वलना लो जनो पण वंधिविज्ञेद आय. अने बादर संज्वलन लोजना उद्य उद्दीरणानो व्य विद्य आय. अने अनिवृत्तिवादर गुणवाणानो पण व्यविद्य थाय. एम नवमे गुणवाणे सातथी मांमीने पञ्चीश पर्यंत मोहनीयनी प्रकृति उपशांत पामे ॥इति॥ उपाणे स्वे दश्यमे णवाणे जे प्रकृति उपशांत पामीयें, ते कहे हे.

सत्तावीसं सुहुमे, छ ।वीसं च मोह पयडी ।। वसंत वी छरागे, वसंता हुंति नायबा ॥ ७०॥

अर्थ- (सत्तावीसंसुदुमें के०) ते पढ़ी अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान, ए वेदु लोननो समकालें उपशम थये थके सूक्तासंपरायग्रणवाणे सत्तावीश प्रकृति उपशांत थाय. (अडावीसंचमोहपयडी के०) तेवार पढ़ी संज्वलनो लोन उपशमें थके अडावीश मोहनीयनी प्रकृति, (उवसंतवीअरागे के०) उपशांतवीत रागनामे अगीआरमें गुणवाणे (उवसंताढुंतिनायद्या के०) उपशांत होय. ए री तें ज्ञातव्या इति एवं जाणवं ॥ इत्यक्त्रार्थः ॥ ७०॥

एम नवमाने वेहले समयें अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी लोननी वे प्रकृति उपशमें थके स्क्रासंपराय ग्रणवाणे सत्तावीश मोहनीयनी प्रकृति उपशांत पामी यें,ते स्क्रासंपराय ग्रणवाणानों काल, अंतर मुहूर्न प्रमाण वे. तेने विषे पेवो थको जीव, संज्वलनलोननी उपरती स्थितिमध्येंथी केटली एक किष्टि शाक्यांने तेनी प्रथमस्थित स्क्रासंपराय अदा जंटली करीने वेदे. स्क्राकिष्टि कखुं जे दिनक अने समय णी वे आवित वांध्युं जे दल, ते उपशमावे, चरमसमयं संज्वलनो लोन जपशांत होय. तेहीज समयें ज्ञानावरण पांच, श्रंतराय पांच, दर्शनावरणीय चार, उचैगींत्र अने यशःकीर्त्ते, ए शोल प्रकृतिनो वंध, व्यवहद करे, तेवार पठी बीजे समयें जपशांत कपाय थाय. तिहां मोहनीयनी श्रष्ठावीश प्रकृति जपशांत थाय. ते उपशांत कपायवंतयको जीव, जयन्ययी तो एक समय रहे अने उत्करो अं तरमुहून पर्यंत रहे, जपरांत अवस्य पडे, ते तिहां थी पहवाना वे प्रकार हे. एक नवक्यें पडे अने बीजो कालक्यें पडे, तिहां जेनुं आयु पूर्ण यायः तेवारें ते मनुष्यनवने क्यें मरण पामीने छानुत्तरविमाने देवता यायः तिहां प्रथमसमयेंन बंध संक्रमणादिक आहे करण तथा उदय प्रवर्तावे, ते पाधरो अगीआरमा गुणहा णायी चोथे गुणुवाणे आवे. वचला गुणुवाणानो तेने स्पर्श याय नहीं. तथा औ परामिक सम्यक्त्या पडीने ते समय वेदकसम्यक्दिष्ट थाय. तथा जे जीव, काल क्यें अगीआरमा गुणगणानो अंतरमुहूर्न काल पूर्ण नोगवीने आगल चढवाने अनावें तिहांची पानो पड़े, ते तो जिहां जिहां बंध, जदय, जदीरणादिक प्ररुति व्यविष्ठ थइ होय, तेने तेने फरी तिहां छारंनतों जे रीतें चडचो हतो, तेमज पडे. ते पडतो प्रमत्त याय तथा कोइएक छविरतिपणाने पण पामे, कोइएक सा स्वादन पामी मिण्यात्वें पण जाय, ए श्रेणी जत्कृष्ट तो एक जवमध्यें वे वार करे, पण जे वे वार उपशमश्रेणी करें, ते नियमा तेहीज नवें क्रपकश्रेणी न करें अने एकवार उपरामश्रेणी करीने बीजी वार क्षपकश्रेणी करे तेनी ना नथी, ए रीतें उपरामश्रेणीनुं स्वरूप कह्यं ॥ इत्यये :॥ ए०॥

॥ अय क्षकश्रेणीमाह ॥ इवे क्षकश्रेणीनुं खरूप कहीयें वैयें.

पढम कसाय च कं, इत्तो मिछत मीस सम्मतं॥ अविरय सम्मे देसे,पमति अपमति खीयंति॥ ७१॥

थै- (पढमकसायचर के०) प्रथम तो छनंतानुबंधीछा चार कषाय हणे, विसंयोजना करे, (इतो के०) तेवार पठी (मिल्लतमीससम्मतं के०) मि ष्यालमोहनीय, मिश्रमोहनीय छने सम्यक्लमोहनीय, ए त्रणेनो समकालें द्व्य करे ते (छविरयसम्मेदेसेपमित्रञ्जपमित के०) छविरतिसम्यक्टिष्ट, देशविरति, प्रमत्त तथा छप्रमत्तगुणठाणे (खीयंति के०) द्व्य करे, एटले सत्ताथी टाले. क्ष्पकश्रेणीनो पडिवजनार प्ररुष, ाठ वर्षथी उपरनी उमरनो इतां व क्षन नाराचसंघयणी, ग्रुद्ध्यानवंत, छविरति, देशविरति, प्रमत्त, छप्रमत्त, संयतिमांहे लो कोइ पण होय. पण एटलुं विशेष जे, केवल अप्रमत्त संयत होय. तो पूर्व नो जाण होय अने शुक्कथ्यानौपगत होय अने बीजा सर्व धर्मध्यानोपगत होये. एवो जीव ग्रुनयोगें वर्ततो क्एकश्रेणी छारंने ते प्रथम चार छनंतानुवंधीछा विसंयोजीने खपावे, तेनी विसंयोजनानो प्रकार, पूर्वे कह्यो हे, तेमज जाणवो. तेवार पत्नी त्रण दशनमोहनीय खपाववाने प्रवर्ते. तिहां यथाप्रवत्यीदिक त्रण कर ण पूर्वें कह्यां, ते रोतेंज करे पण एटखुं विशेष जे अपूर्वकरणना प्रथम समयथीज अनुदित मिण्याल तथा मिश्रनां दल ते उद्यवंत सम्यक्ल मोहनीयमध्यें ग्रण सं में करी संक्रमावे अने ते बेहुनो छ इसे एटसे सं म पण करवा मांमे. तिहां

पहेलो तो महोटो स्थितिखंम उवेखे, तेथी बीजो स्थितिखंम विशेषहीन उवेखे, तेथी वली त्रीजो स्थितिखंम विशेपहीन ववेखे, एम रतां करतां अपूर्वकरणना वेदला समय पर्यंत कहेतुं. तिहां अपूर्वकरणना प्रथम समय जे स्थितिनो सत्तावं

त होय तेथकी छसंख्यात गुणहीन स्थितिनो सत्तावंत थाय.

तेवार पढ़ी आगले स यें अनिवृत्तिकरणमध्यें प्रवेश रे, तिहां पण स्थिति घातादि सर्वने तेहीज प्रकारें करे हे. अनिवृत्ति करणना प्रथम समयें दर्शन त्रि कनी पण देशोपशमना, निक्ति, नि चनानो व्यवत्वेद रे. तिहां प्रथम सम यथी दरीनमोहनीयत्रि नी स्थितिसत्तानो घात रतो, रतो सहस्रगमे स्थि तिखंभें गये थके बाकी जेवारें छसंकी पंचें दियनी स्थित ता समान स्थित रहे. तेवार पढी वली पण तेटलांज स्थितिखंमनां सह गये थके चौरिंडि यन्। स्थितिस सत्ता रहे वली पण तेटलांज स्थितिखंमनां सदस्य गये यके तेंडियनी स्थिति स ानसत्ता रहे. वली तेटलांज स्थितिखंमनां सहस्र गये थके वेंडियनी स्थिति समानसत्ता रहे, वली पण तेटलां स्थितिखंम नां सह गये थके पढ़योप ना संख्यातमा नाग प्रमाण दर्शन त्रिकनी स्थितिनी सत्ता रहे, तेवार पढ़ी ते णे दर्शनमोह्नीयनो पण प्रत्येकें एकेक संख्यातमो नाग मू ीने बा ीनी स्थित वे खपावे, तेवार पढी वली पण बाकी मूकेला संख्यातमा नागनो एक सं ातमो नाग मूकीने वाकी सर्व स्थितिनो यात करे. ए रीतें बाकी रहेला नागनी संख्यातमो नाग मूकी, मूकी, शेष सर्व स्थित नो घात करतो, करतो स्थितिघातनां घणां सहस्र श्रितकमे, तेवार पढी मिच्यालना थसंख्यात नागने खंमे धने मिश्र तथा सम्यक्तवना तो संख्यात नागने खंमे, ते

पढी एम घणा स्थितिखंम गये थके जेवारें मिथ्यात्वतुं दल श्राविकामात्र रखं श्रने मिश्र तथा सम्यक्त ए वेहुनुं दल तो पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण रहे. ह्वे ए स्थितिखंमना दलने खंमवानो प्रत्येक विधि कहीयें ठयें. तिहां खंमन करेलां एवां मिण्यालनां दल तेने मिश्र, तथा सम्यक्ल, ए वेहुमध्यें प्रेक्ट्रेप करे श्रने मि श्रनां दलमात्र सम्यक्ल मध्येंज प्रेहेपे श्रने सम्यक्लनां दल सम्यक्लनी पोता नी हेवली स्थितिमध्यें प्रकेषे, ते पठी जे मिथ्यात्व दलिक छावलिका मात्र रह्यं, तेपण स्तिबुकसंक्रमें करी सम्यक्लमध्यें संक्रमावे, एटले मिण्यात्व द्वीण याय, तेवार पढ़ी मिश्रना तथा सम्यक्तना छसंख्याता नाग करी तेने खंमें शेप एक नाग राखे. वली तेना पण छासंख्याता नाग करे, तेमध्यंथी एक नाग राखी बाकी सर्वने खंमे, एम करतां करतां केटला एक स्थितिखंम गये थके, मिश्रमोहनी य एक आविलकामात्र रहे, तेवारें सम्यक्तमोह्नीयनी स्थितिसना, आत वर्ष प्र माणनी रहे, ते वेलायें निश्रयनयने मतें सर्व विघ्न टब्यां माटे एने दर्शनमोहनी यनो क्रपक कहीयें तेवार पढी वली सम्यक्तना स्थितिखं मने अंतरसुहूर्न प्रमा ण उकेरे, तेनुं दल, उदयसमयथी आरंजीने सवली स्थित सत्ता. समय स मय संक्रमावे छे. तेमध्यें पण चद्य समय सर्वस्तोक संक्रमावे. तेथकी बीजे सम य असंख्यातगुणो, तेथकी त्रीजे समय असंख्यातगुणो, एम आगले आगले सम यें असंख्यात णो संक्रमावतां, सं मावतां ते गुणश्रेणीना माथा लगें जाणवुं. ते पढ़ी उपर तो विशेषहीन विशेपहीन ज्यां लगें स्थितिनो हहेलो समय होय. त्यां लगें सं मावे. एम अंतर मुहूर्न, अंतर मुहूर्न प्रमाण अनेक स्थितिखंमोने उकेरे वे अने निद्देपण करे वे ते स्थितिदलमां है संक्रमावतो विचरम स्थितिखंम लगें जाय, ते दिचरम स्थितिखंमथकी वेदलो खंम असंख्यातग्रणो करे. ते वेदलो स्थितिखंम, जेवारें उकेरे, एवाने इपकछतकरण एवं नाम कहीयें. ए छतकरणा दायें वर्ततो एवो जीव, कोइ एकें पूर्वें आधु बांध्युं दोय तो ते आयुक्तयें मरण पामीने चारे गतिमांहेली नावे ते गतिमध्यें अवतरे, अने क्षेत्रयाने विषे पण पूर्वें लेक्यामां इतो ने सांप्रत तो अन्यतम लेक्या मध्यें जाय हे. ते माटें सप्तक क्यनो मांमनार प्रस्थापक थइने मनुष्य, निष्ठापक हतो चारगतिमांहेलो जी व कहा। वे, तथा जे पूर्व बदा थको क्एकश्रेणी मांमे, अने अनंता बंधीआ चार खपावीने पढ़ी मरण पामवाना संनव थकी जो श्रेणी थकी विरमे तो पण अन तानुबंधीयां बीजनूत मिथ्याल हे, तेनो विनाश थयो नथी तेनणी वर्ता

पण कदाचित् अनंतानुवंधीआ सजीवन करतां लहे. पण जेणे मिण्याल क्य कखूं. ते मिथ्यालना विनाशयी वजी अनंतानुबंधीआ न बांधे, जे नणी बीज नथी तो खंकूर केम होय? अने ए सात प्रकृति क्य रीने जो चडते परिणामें वर्ततो मरण पामे. तो अवर्य देवगतिमध्यें ज उपजे अने जो पतितपरिणामें थाय, तो नानाप्रकारना परिणामना संनवथकी जेवा परिणामनी विद्युद्धियें प्रवर्त्तनो मरण पामे, तेवी गतिमध्यें छवतरे छने जेएो पूर्वें छायु बाध्युं हे, एवो जीव, जो ते वखत तिहां काल न रे तो पण सात प्रकृतिने क्यें निश्चयें ते तेवाज परिणामें रहे, परंतु ञ्चागल वीजी चारित्रमोहनीयनी प्रकृति खपाववानो चद्य न रे. तथा क्लिएससक पूर्वबदायु नणी ते नवें मुक्ति न पामे, तो पण त्रीजे नवें अ थवा चोथे नवें अवश्य मुक्ति पामे, केमके जेएो देवायु अथवा न्रकायु बांध्युं होय, तो ते देव तथा नारकीनो नव करी तिहांथी व्य थइने तिने नवें मोक् जाय. अने जे नुष्य तथा तिर्यचायु बांध्या पढ़ी सप्तकक्त्य रे, ते निया असंख्य वर्षायु वांधे पण संख्यातवर्षायु बांध्या पढ़ी सप्तक ऋीण न करे, तेवारें ते युगली या ध्यें जाय तिहां तो जवप्रत्ययें ज नियमा देवायुनोज बंध होय, तेथी ते देव गति मध्यें जाय अने देवगतिमध्यें तो नवप्रत्ययें सम्यक्तव हतां वृष्यायुनोज बंध होय. तेथी ते देवता चवी मनुष्य थाय. तिहां वलतुं आयु न बांधे, केवल चारि त्र लइ रोप एकवीरा मोहनीयनी प्रकृति खपावी सुकि पामे, ते अपेक्।यें चोथे नवें मोक् जाय, तिहां पंचसंग्रह्नी साख लखीयें हैयें "तह्य चन है तिमव, न विम सिखंति दंसणे खीएो ॥ जं देव निरञ्जसंखा, उचरम देहे ते हुंति ॥" ए सात नो इय अविरति एवाएो होय. ए सूत्रनो थे हे. या तो विरतिसम्यक्ह ष्टि, देशविर्ति, प्रमत्त, अप्रमत्त साधु, ए चार दिं जुं नावे ते सप्त द्वीण रे वे, तथा जो अब धायु थको क्षपक श्रेणी आरंजे तेवारें ए सप्तकनो क्य तो ते निय थी नुपरत परिणामवंत थको चढते परिणामें ।गर्जे चारित्र मोहनीयनी प्रकृति पाववाने अर्थे छ रे. ए नाष्य ध्यें ह्यं हे. "इय रो अणुवर उद्दिय, सयलं सेढिं समाणेइ " इवे चारि ।ोहनीयनी शेष एकवी श प्रकृति खपाववाने भे उद्यम करतो एवो पुरुष, यथ वृत्त्यादि ए करण करे. तिहां करण ' खरूप पूर्वली पेरेंज जाणवुं. अहीं अ ज गुणवाणे यथाप्र विकरण, तथा अपूर्वकरणगुणवाषो अपूर्वकरण अने अनिवृतिबादर गुणवाषो अनिवृत्तिकरण करे. तिहां अपूर्वकरणे स्थितिघातादिक करी अप्रत्याख्यानीआ

चार अने प्रत्याख्यानीया चार, एवं छात कपाय एवी रीतें खपावे, के जेवी रीतें अनिवृत्तिकरणादाने प्रथम समयेंज ते कपायाएकनी पत्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण मात्रस्थित शेप थाय ॥ इति समुचयार्थः ॥ ७१ ॥ तेवार पढी अनिवृत्ति वादर गुणताणे गुं हणे ? ते कहे ते.

अनिअहि बायरेघी, ए गिवि तिग निरय तिरि अ नामार्ग ॥ संखिक इमे सेसे, तणार्गार्ग खीयंति ॥ ७५॥

थै—( श्रिनिश्र हिवायरे के॰ ) श्रिन हिन्दाहर ग्रुण हिणाना प्रथम समयें श्राठ कषाय पत्थोपमना श्रमंख्यात नाग प्रमाण हिण्यतिना थाय. पठो (यीणि दितिंग के॰ ) थीण दित्रिक, नरक दिक, तिर्यंचिदिक, एकें दियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, वेदियजाति, स्थावर, श्रातप, उद्योत. सुद्धा. साधारण, ए ( निर्वारिश्र नामार्थतेणार्थ के॰ ) नरक श्रमे तिर्यंच ए वे गति तत्प्रायोग्य नामकमेनी तेर प्रकृति तथा पूर्वोक्त थीण दित्रिक ते दर्शनावरणीयनी प्रकृति एवं शोल प्रकृति वेद्या प्रवृत्ति श्रीण प्रकृति वेद्या प्रवृत्ति वेद्या जेवारे पत्थोपम नाश्र स्थातमा नाग प्रमाणामात्र स्थित शेप रहे. तेवारें ते शोल प्रकृति प्रतिसमय वंधाती प्रकृतिमध्यें गुणसंक्रमें करी संक्रमावी संक्रमावीने द्वीण करतो करतो श्रमित्ति विद्याला पाना पर्य थके स्थान हिण प्रकृति स्थान प्रकृति स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था

इतो हणइ कसाय, गंपि पन्ना नपुंसगं इन्नी॥ तो नोकसायगकं, बुहइ संजलण कोहम्मि॥७३॥ पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए॥ मायंच बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ॥७४॥

अर्थ-( इत्तोहणइकसायअहगंपि के ) तेवार पढ़ी वली प्रत्याख्यानीआ चार अने प्रत्याख्यानीआ चार, ए आह कषायने निःशेष पणे अंतरमुहूर्त्त मात्रकालें ं री तेह्णे (पञ्चानपुंसगंइञ्ची के •) पढ़ी नपुंस वेद खपावे, पढ़ी विद खपावे. (ो नोकसायबक्कं के 0) तेवार पढ़ी हास्यादिक ब नोकषाय ं दल क्षेपवतां रह्यं, ते (संज लणकोहिम्म केण) संज्वलन कोधने विषे (बुह्इ केण) हेपवे, सक्रमावे ॥इति स ण ॥ ए १॥ (पुरिसं के ७) पुरुषवेदना बंधादिक विश्वेद यया पढ़ी आविल । शेष प्रत्यें करणविशेषें करी संज्वलन (कोहे के०) क्रोधमध्यें ग्रुण सं में रीने सं इ मावे, अने (कोहं के०) संज्वलनक्रोधना बंधादिक विश्वेद थये थके आवित । शेषप्रत्यें करण विशेषें करी संज्वलन (भाणे के०) मानमध्यें ग्रणसंक्रमें करी संक्रमावे तथा (माणंच के०) संज्वलन मानना बंधादिक विश्वेद थये थके, आ विलकाज्ञेष प्रत्यें करणविज्ञोषें करी (मायाए के ०) संज्वलन ।यामध्यें ( ह इ के०) सं मावे, नाखे, एटले गुणसंक्रमें करी संक्रमावे तथा (मायंच के०) संज्वलन मायाना बंधादिक विश्वेद श्रया पढी श्रावलिका शेषप्रत्यें रण विशेषें करी ( लोहे के ०) संज्वलनलोनमध्यें ( बुह्इ के ०) ग्रु एसंक्रमें करी सं मावे तेवार पढी (लोहं के०) संज्वलन लोजना वंधादिक विश्वेद यया पढी आवितका शेषप्रत्यें रण विशेषें करी हुए।, (तो के०) तेवार पढी (सुद्धमंपि के०) अत्यंत सूच्य याकतो एवो सत्ता रूप जे लोन तेने पण (इणइ के ) हणे विनाहों सत्ताथी टाले, एम सूक्ष संपरायने खंतें मोहनीयकमेने मूलघी टाली नाखे ॥ इति समुचयार्थः ॥ ए३ ॥

एट छे आत कषाय खपावीने अधवा मतांतरें शोल प्रकृति खपावीने पति अं तर मुहूर्तें नव नोकषाय तथा चार संज्वलनानुं अंतरकरण करे, ते करीने प्रथम नपुंसकवेदनां उपरली स्थितवाला दलिक उवेलवानो विधि करी खपाववा मांमें ते अंतर मुहूर्त्त मध्यें उवेलतां उवेलतां पत्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण स्थिति शेष रहे, तेवारें बंधाती प्रकृतिमध्यें तेनुं दल गुणसंक्रमें करी संक्रमावे एम करतां अंतर मुहूर्त्त कालें ते सघलुं क्लीण थायः

द्वे ते नपुंसकवेदनी हेवली स्थितनुं दल, ते जो नपुंसकवेदने उद्यें श्रेणि मांमी होय,तो वेदतां वेदतां खपावे अन्यथा तो आविकामात्र ते दल रह्युं होय, तेने उद्यवती वेद्यमान प्रकृतिने विषे स्तिबुकसंक्रमें करी संक्रमावे. एम नपुंसकवेद क्य कह्या पढ़ी अंतर मुहूर्नें स्त्रीवेद पण एज रीतें खपावे, तेवार पढ़ी हास्यादिक ढए प्रकृतिने साथेंज समकालें खपाववा मांमे. पढ़ी ते नोकषायनां उपरली स्थि तिनां दल पुरुप वेदने विषे पतद्यह न थाय, माटें तेने पुरुपवेदमध्यें न संक्रमावे किंतु ? संज्वलनकोधमध्यें पूर्वें कह्यं तेरीतें तेने संक्रमावे. एम संक्रमावतां अंतर

मुहूर्त । मां ते नो षायह सर्व क्षीण थायः ते समर्थेज पुरुष वेदनो बंधः, उदय ने उदीरणानो विश्वेद थाय अने एक समय णी बे आविजयें बाध्युं जे पुरुष वेद दल, ते कीने बाकी सघलो क्षीण थयो, ते समर्थे अवेदक थयो. ए प्र ारें जे पुरुषवेदोदयें श्रेणी आरंजे, तेनो ए विधि कह्योः

ने ो नपुंसकवेदोद्यें श्रेषी आरंने, तो ते पहेलोज स्वीवेद अने नपुंसक वेद ए बे नो समकालें क्य करे, ते क्यने समयेंज पुरुषवेदनो बंधादिक, विश्वेद थाय. तेवार पठी अवेद थको पुरुषवेद अने हास्यादिकपट्क समकालें क्य करे

ने जो विदोद्यें श्रेणि पडिवजे, तो प्रयम नपुंसकवेद खपावे. पढ़ी स्त्री वेद खपावे, ते क्ष्यने स येंज पुरुषवेदनो बंध, उदय अने उदीरणानो विश्वेद थाय. तेवार पढ़ी पुरुषवेद अने हास्यादि षट्कने समकालें क्ष्य करे.

हवे जे पुरुषवेदें श्रेणी एंने, ते श्रियोनेंज कहे हे. ग्रेथ वेदतां पुरुषवेदी क्रोधना ए नाग रे. ए घोडाना काननी पेरें जे न्हाना न्हाना कमेना पुजल तेना न्हाना खंम करे, जे थकी । ल विशेषें तेने अश्वकर्णकर्णाका व हीयें ते रस सहित मेनां दिलकने कूटी कूटीने किष्टिनी पेरें अह्यंत सूक्ष्म व रे, तेने गि किष्टि रणाका ग्रेह्यें ते किष्टिकरणाका का पह्नो ते किष्टिकरी तेने वेदे, ते त्री में विष्टिवदनाका हीयें तिहां अश्वकर्णकरणाकायें वर्चतो थको समय समय प्रत्यें नंता पूर्व स्पर्कक संज्वलना चतुष्कना अंतरकरण थकी उपरली स्थितिने विषे रे, एटले संज्वलन चतुष् ना अंतरकरणनी उपरली स्थितिना प्रतिसमयें नंता पूर्व स्पर्कक करे, ते स्पर्कक स्कप्त, पूर्वें कहां हे, तिहांथी जाणवुं ने ए श्वकर्णकरणाकायें वर्चतो प्रहषवेदने पण समय एणि वे आवितकारूप । लें री ग्रेथनेविषे एसंकमें करी सं मावतो थको हेहले समयें वे सं में री सं मावे. ए प्रकारें अहींआं पुरुषवेद स्वीण थयो ने श्वकर्णकरणाका पण पूर्ण धई.

तदनंतर किट्टिकरणादायें पेवो को संज्वलन चतुष्कनी छपरली स्थितगत दिलकनी किट्टि करें, ते किट्टि परमार्थें तो नंती हे तथापि बाल समजाववाने अर्थें स्थूलनेंदनी पेक्स्पेंं, सत्कल्पनायें एकेका कषायनी त्रण त्रण कल्पनायें क ल्पीयेंं, तेवारें बार किट्टि होया ए नियं क्षपक श्रेणी पिडवजतांने जाणांतुं.

ने जो मानोद्यें श्रेणीपिडवजे, तो तेने छ इलनाना विधियें करी, तेथ ख पावे थके शेष त्रण कषायनी पूर्व में करी नव किष्टि करे, जो मायाने छद्यें श्रेणी आरंनी होय तो कोध अने ान, एवे उद्दलनाविधियें खपावे चके ज्ञेष वे षायनी किहि करे तथा जे लोनोदयें श्रेणी ांमे, ते कोध, मान, माया, ए त्रण दल नाविधियें उवेली खपावे ज्ञेष एक लोननीन त्रण वि हि रे. ए किहि करवानो विधि ह्यों ए किहिकरणादा पूर्ण थये थके पढ़ी किहिवेदनादाने विषे पेठो थको जे नीवें कोधें श्रेणी आरंनी हे. ते कोधनी बीनी स्थित मध्यें रहेलुं प्रथमिक हिनुं दलिउं वीनी स्थितिमध्येंथी आकर्षीने प्रथ स्थितिगत करे अने वेदे, ते ज्यां लगें समयाधिक ए आविल ज्ञेष रहे त्यां लगें वेदे, तेवार पढ़ी तेना अंतरसम यमां उपरली वीनी स्थितिमध्यें रहेलुं बीनी किहिनुं दल, तेने आकर्षी प्रथमस्थि तिगत करी वेदे, ते पण त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आविलमात्र ज्ञेप रहे. तेवार पढ़ी वेता उपरली स्थितिनी त्रीनी किहिनां दल आ धींने प्रथम स्थिति गत करी वेदे. एम ए त्रणे किहिवेदनादाने विपे उपरली स्थितिनुं दलिक तेने ग्रुणसं में री प्रतिसमय असंख्येय ग्रुणहिद्ध लक्ष्ण संन्वलनमानने विषे प्रक्षेप है. एम प्रतिनी किहिवेदनादाने विपे चर्चलनकोधनो बंध, उदय ने उद्दीरणानो साथेंन व्यवत्वेद याय अने सनायें पण हेहली समयोन वे आ विलयें बांधुं दल रहां हे पण ते विना बीजुं नथी. सर्वने मानने विपे प्रक्षेपुंहे.

तेने आगले समयें माननी बीजी स्थित थेंथी प्रथम किहिनुं दल, आ पीं प्रथम स्थितिगत करी अंतरमुहूर्त लगें वेदे, तिहां जे ोधनुं दल शेष रहां हे. तेने समयोन वे आविलकायें ग्रणसंक्रमें करी सं मावे अने चरमसमयें तो सर्व संक्रमें करी संक्रमावे, एटले क्रोध क्य थयो. ए माननी पहेली किहि दल प्रथम स्थितियें करनुं हे तेने वेदतां वेदतां समयाधिक आवली शेष रहे, तेवार पही बीजा समयमां माननी उपरली स्थितिनी बीजी किहिनुं दल आकर्षी प्रथम स्थितिगत करी एज रीतें वेदतां वेदतां समयाधिक आविल शेप रहे, ते पही अनंतरसमयमां माननी उपरली स्थितिनी त्रीजी किहिनुं दल आकर्षी तेने प्रथम स्थितिगत करीने वेदे, ते त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आविलमात्र शेप रहे, ते त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आविलमात्र शेप रहे, तेवारें तेना चरमसमये माननो वंध, उदय अने उदीरणानो समकालें विवेद थाय. अने सत्तायें पण समयोन वे आविलनुं बांध्युं दल रहे, ते विना बीजो सर्व मायाने विपे प्रेक्टेंप करी खपाव्यों हे माटे.

पढ़ी मायानुं बीजी स्थितिगतनी प्रथम किटिनुं दल, तेने प्रथम स्थितिगत करी अंतरमुहूर्त पर्यंत वेदे, तेमध्यें शेप माननुं दल जे रहां हतुं, तेने समयोन वे

श्राविकायें गुणसंक्रमें करी श्रंतरमुहून लगें मायाने विषे तंक्रमाये. वेहले समयें तो सर्व संक्रमें करी संक्रमाये एटले माननां क्रय श्राय त्राने मायानां पण प्रथम किहिटल वेदतां वेटतां समयाधिक श्रायतिमात्र रहे, ते पत्री त्रानंतर समयें श्रागली बीजी किहिनां दलने प्रथमित्रयितगत करी वेदे, ते ज्यां सुधी समयाधिक श्राविकामात्र शेप रहे त्यां सुधी वेदे. ते पत्री श्रानंतर समयने विषे बी जी स्थितगत रहेलुं एवुं त्रीजी किहिनुं टलिक तेने त्राकर्षाने प्रथम नियतिगत करीने वेदे एम पूर्वली पेरं सर्व मायानी किहिनां दल वेटतां वेटतां वेहली किहिनां दल प्रथमस्थितगत करी वेटतां जेवारें समयाधिक श्राविकामात्र शेप रहे, तेवारें मायानी बंध, उदय श्राने जिल्ला ए त्रणे साथेंज विकेद थाय, मात्र समयोन वे श्राविलनुं बांध्युं दल सत्तायें रह्यं हे. वाकी सर्व गंज्यलनलोनमध्यें क्ष्पद्युं हे.

तेवार पठी सज्यलन लोननी जपरली स्थितिनी प्रथम किहिन्नं रख, श्राकर्षा प्रथम स्थितिगत करी. तेने छंतरमुहूनं यहे निहां ग्रंप रह्यं समयोन ये छ्यावित मात्र संज्वलन मायानुं दल. तेन छंतर मुहूने लगें गुणसंक्रमें करी लोनने विषे संक्रमावतो छंतर मुहूनेने ठेहले समयें सर्व संक्रमें करी मंक्रमावे. तेवारें संज्वलन लोननी प्रथम किहिनुं दल पण समयाधिक आवित्तमात्र रहे तेवार पठी छनंतर समयें संज्वलन लोननी जपरली बीजी स्थितिनी बीजी किहिनुं दल खंचीने प्रथम स्थितिगत करी वेदे. ते वेदतो, वेदतो छागली जीजी किहिनां दलने यहण करीने तेनी सूक्षा सूक्षा किहि करे, ते पण छां लगे करे. ज्यां लगे बीजी संज्वलन लोननी किहिनुं दल जे प्रथम स्थितिगत कर्छुं ठे तेनी समयाधिक आवित्तमात्र ग्रेप रहे, त्यां लगें करे. ते समयेंज संज्वलन लोननो वंध विज्ञद था य, तथा बादर कपायनो जदय छने जिराणा पण विज्ञद थाय. छने छनिन्ति ग्रण स्थानकनो काल पण विज्ञेद थाय. ए त्रऐनो साथेंज विज्ञद थाय.

तेने आगले समयें लोजनी सूक्षा किट्टिनुं दल उपरली बीजी स्थित मध्येंथी आकर्पीने तेने प्रथम स्थितिगत करी वेदे. तेने सूक्षासंपराय कहीयें. पूर्वे जे जीजी जीजी किट्टिनी शेप आविलकानी हेहली किट्टि रही है. ते सर्व वेदाती पर प्रकृतिमध्यें स्तिबुकसंक्रमें करी संक्रमावे, एटले लोजनी प्रथम किट्टिनी शेप आविलका, ते बोजी किट्टिना दलमध्यें संक्रमावे, अने बीजी किट्टिनी शेष आविलका, त्रोजी किट्टिना दलमध्यें संक्रमावी वेदे.

हवे जोननी सूद्धा किष्टिनुं दल अने पूर्वे समयोन वे आविलनुं बांध्युं दल, तेने

प्रतिसमयें स्थितिघातादिकें करी वेदतो वेदतो त्यां लगें खपावे, ज्यां लगे सूचासं पराय अक्षाना संख्याता नाग जाय. अने एक नाग शेष रहे, त्यां लगें खपावे. हवे शेष एक नाग रहे, तेवारें संज्वलन लोजने सर्व अपवर्त्तनाकरणें अपव चिने एटले अपवर्त्तना तेने कहीयें के जे कमेनी स्थित रसत्तुं घटाड वुं एटले सं ज्वलन लोजनी स्थिति रस घटाडीने शेष सूच्यासंपराय अक्षा जेटलो राखे, हजी पण स्चासंपराय अक्षा अंतर मुदूर्त प्रमाण रही हो, तेवारें विनीयना स्थिति घातादिक पांच पदार्थ विरम्या, परंतु हजी बीजा कमोंनां स्थितिघातादि प्रवर्ते हे. अहीं आं के कमेनी स्थिति तथा रसने घटाड वे तेने अपवर्त्तना हीथें. एटले संज्वलना लोजनी स्थिति तथा रसने घटाडीने शेष सूच्यासंपराय अक्षा जेटलो राखे. हवे ते लोजनी अपवर्तेली स्थितने वेदतो, वेदतो त्यां लगें गयो ज्यां लगें संज्वलन लोज समयाधिक आविल मात्र रह्यो, तिद्दां एनी चदीरणा विराम पामी, केवल चद्वें करीज वेदे हो, ते हेहला समय लगें जाण दुं. अने हेहले समयें ज्ञानावरण पंचक, अंतरायपंचक, द्दीनावरण चार, च गेंत्र, यशःकीर्ति, ए शोल प्रकृतिनो बंधविश्वेद थाय तथा मोहनीयनो चदय अने सत्ता पण वि हेद थाय॥ इतिसमुच्चयार्थः॥ ए४॥

खीण कसाय इचरिमे, निद्दं पयलं च हिणइ छ महो॥ छावरण मंतराए, महो चरम समयम्मि॥ ७५॥

अर्थ-संज्वलन लोन सर्व क्य कथा पढ़ी क्षिण कषाय थयो तेने पण मोहनी य विना बीजां शेष कमोंनी स्थितिघात, रसघात, ग्रणश्रेणी, ग्रणसंक्रम तेमज पूर्वेली रीतें प्रवर्तें ते क्षिण कषायाद्धाना संख्याता नाग जाय, त्यां लगें प्रवर्तें अने शेष ए नाग रहे, तेवारें पांच क्षानावरण, पांच अंतराय, चार दरीनावरण अने वे निहा एवं शोल प्र तिनी सत्तानी स्थित सर्व अपवर्त्तनायें अपवर्तिने एटले घटा हीने क्षिण षायनी अद्धा सरखी करे, पण निहादिकनी स्थित सक्ष्पनी अपेक्षा यें एक समय हीन करे अने कमे रूपें वराबर होय ते क्षिण कषाय अद्धा हजी अंतर हूर्न प्रमाण रही हो, तेवारें ते शोल प्रकृतिनां स्थितिघातादिक विराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने हव्य हिश्म पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने ह्या हिश्म चिराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने ह्या हिश्म चिराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने ह्या हिश्म चिराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने हिश्म चिराम चिराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने ह्या हिश्म चिराम चिराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने हिश्म चिराम चिराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने हिश्म चिराम चिराम चिराम चिराम स्था हिश्म चिराम चिराम चिराम चिराम स्था हिश्म चिराम चिर

यावत् ( खीणकसायडचिंगमे के०) क्षीणकपायना ६ चरम ममयं एटले वेदेना समयकी पूर्वलो समय तेने ६ चरम समय कहीयं न्यांगुधी वेदे पत्री ते ६ चरम ममयें ( निदंपयलंचिह्ण इत्र चम्चो के०) निड्रा श्रने प्रचाने त्यस्य पको हुणे एट ले निड्रा६क सक्तप सन्तापेक्षायं क्य यायः पत्री (श्रावरणं के०) झानावरण पांच, द्रीनावरण चार श्रने (श्रंतराएत उमहो के०) श्रंतराय पांच, एवं चाद प्रकृतिन पण उसस्य पको (चरमसमयिंम के०) वेह ना समयने विषे हुणे॥ इति ॥ एए॥

ते चौद प्रकृति क्ष्य कला पठी छागले समयेंज व्यवहारनयमतें सयोगी के वली थाय अने निश्रयनयमतें तो तेहीज समय केवली कहीयं, ते केवलकानं करी सर्व जोकाजोक सर्वोज्ञें इच्य गुण पर्यायस्वरूपें देखे, जाणे सर्वज्ञ सर्वदर्शी थाय. एवं कांड़ थयुं नथी, थशे पण नहीं छाने थतुं पण नथी. के जे केवली न देखे. एम जघन्य तो खंतर मुद्र्न पर्यंत अने उत्रुटों तो आव वपं कणी पूर्वकोटी वर्ष पर्यंत प्रथवीतलने विषे विचरीने पठी जेने वेदनीयादिक कमे आयुः कमियकी अ धिका नोगववां रह्यां होय, तेवा शेष कमेंनि छायुं:कमेने बराबर करवाने छार्थं ते आठ समयनो समुद्धात करे, पण बीजा न करे तिहां पहेले समयें पोताना शरीर प्रमाण जामो तथा उंचो. नींचो. लांबो, चौद राजप्रमाण पोताना छात्मप्रदेशनो वि स्तार, दंमाकार करे. तथा बीजे समयें ते दंममध्यं थी वेहु पासें प्रदेश श्रेणि विस्तरे, ते लोकांत लगें उत्तर दक्षिणें पसरे, तेवारें कमाडने आकारें आकार देखाय. तेने कपाट कहीयें. त्रीजे समयें पूर्व अने पश्चिमें वली वे प्रदेशनी श्रेणि करे, ते पण लोकांत लगें पसरे, तेवारें मंघाणनी पेरें चार फडसुआं निकले. एवा आकारें आत्मप्रदेशनी श्रेणी पसरे तथा चोथे समयें ते मंथाण आकारना चारे आंतराना आकाश प्र देश समस्त रह्या वे तेने आत्मप्रदेशें करी पूरीने समयलोक व्यापी थाया पांच में समयें वली मंथाणना आंतराने संहरें, उहें समयें मंथाण संहरे,सातमे समयें पाट सहरे, आवमे समयें दंम पण सहरीने शरीरस्थ खनावस्य थाय.

तिहां पहेले समयें अने आतमे समयें औदारिक काययोगी होय, तथा वीजे वहे ने सातमे, ए त्रण समयें औदारिक मिश्रकाययोगी होय. अने वचला त्र मयें कामेणकाय योगी होय. ए त्रणे समयें अणाहारी होय. इत्यादिक

हीं । घणो विचार वे परंतु विस्तारना नयथी नथी जस्यो

द्वे कोइ एक केवली स द्घात कहा विना पण मुक्तियें जाय. जे जणी श्री प वणामध्यें कह्यं वे सबेविणंजंते केवली समुग्धायं गह्यति गोयमा नोइणमहे स के सा एण लाई बंधणेहिं विइहे नवी प इ माई॥ न स गार्य समग ई गंतुण स गाय णंतकेवली जिणा जरा रण विष्य ा सिहिवर गयं गया॥ जेने आयुः मेनी स्थितना मेपर एणु सरखाज नवीप हि। वेदनी यहि में होय, ते स द्या न रे अने जे रे, ते पण अंतर हूर्च व ि या तेज केवली स द्यात रे हवे ते बेहु सयोगी केवली पण नवीप हि। मेक्स्य रवाने अर्थें लेक्सातीत अत्यंत अप्रकंप पर निक्करानुं रिण, एवा ध्याननो शिजो पायो ध्याववाने वां ता योगनिरोध रवा मांमे, तिहां अंतर हूर्चमां योग रुंधे, तेमध्यें प्रथ बादर वचनयोग निरोधने ध्ये प्रवक्तमान था य. तिहां बादरकाययोगें रीने बादर मनोयोगने अंतर हूर्चें रुंधे. तेवार पढी सूक्क्रमनोयोगें करी बादरवचनयोग रुंधे, तेवार पढी सूक्क्रकाययोगें करी ने बादरकाययोगं रुंधे, वली तेणे करीज सूक्क्र मनोयोग रुंधे. ते पढी सूक्क्रवचन योग रुंधे, ते पढ़ी सूक्क्रवचन योग रुंधे, ते पढ़ी सूक्क्रवचन इंधे, ते पढ़ी सूक्क्रवचन विदर पूरवे रीने देहनो त्रीजो च्यानें चढे, तेना सामर्थ्यकी वदनोदरादिक विवर पूरवे रीने देहनो त्रीजो नाग संकोचीने शेष बे नागनो प्रदेशधन करे.

ते ध्यानें वर्ततां स्थितिघातादिकें करी सयोगी ग्रणगणाने चरम समयें एक आयु विना बीजां त्रण कमेने अयोगी ग्रणगणानी अवस्थाना सरखा स्थिति वंत का पण एट द्वां विशेष के, जे कमेनो अयोगी ग्रणगणो उदय नथी ते कमे नी स्थित, स्वरूपापे हायें समय णी करे, कमेस्वरूपनी अपे हायें अयोगी अव स्थासमान स्थित करे.

ते सयोगी गुणवाणाने चरमसमयें १ औदारिक दिक, ३ तैजस, ४ कामेण, १० व संस्थान, ११ प्रथम संघयण, १५ वर्ण चतुष्क, १६ अग्रुरुत घु, १० उप घात, १० पराघात. १० ग्रुना ग्रुन विहायोगित, ११ प्रत्येक, ११ स्थिर, १३ अ स्थिर, १४ ग्रुन, १५ अग्रुन, १६ निर्माण, १७ सुखर, १० इःखर, १० उड्डा स अने ३० वें वेदनीय मांहेली एक वेदनीय, ए त्रीश प्रकृतिनां उदय अने उदिरणा विश्वेद थाय, तेने आगले समयें अयोगी केवली थाय. तेनं कालमान पांच न्हस अक्र उच्चार प्रमाण अंतर मुहूर्तनं होय. तिहां स्क्रियाध्यान पूर्ण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिपातिनामें ग्रुक्षध्यानने चोथे पाये चढे. ए ग्रुण करीने व्युपरत किया अप्रतिना वेदनो जित्र विद्वती अप्रति के तेने वेदनो व्युपरत क्रित वेदनो चित्र सित्र व्युपर विद्वती अप्रति के तेने वेदनो व्युपर विद्वती अप्रति के तेने वेदनो व्युपर विद्वती व्युपर विद्वती व्युपर विद्वती व्युपर विद्वती विद्वती व्युपर विद्वती व्युपर विद्वती व्युपर विद्वती विद्वती विद्वती व्युपर विद्वती व

कसंक्रमें करी चद्यवती प्रकृतिमध्यें संक्रमावी वेदी वेदीने खपावे. एम ख्योगीना दिचरम समय लगें करे ॥ इति समुज्ञयार्थः ॥ ए४ ॥ दवे तिहां जे प्रकृति खनावें खपावे, ते कहे हे.

देवगइ सहगयात, इ चरिम समयं निवर्शिम खीछंति॥ सिववागे अर नामा, नीखा गोछंपि तत्वेव॥ ७५॥

अर्थ-( देवगइसहगयार्र के० ) देवगति सहचारिणी एटले देवगतिना वंधन साथं एकांतेंज वंध हे जेनो, एवी देवगति सहगति प्रकृति दश हे, तेनां नाम कहे हे. १ वैकिय अने आहारक शरीर अने ४ वैकियआहारक वंधन. ६ वैकियआहा रकसंघातन, ए वैक्रिय छाहारकांगोपांग, ए देवगति, १० देवानुपूर्वा, ए दश प्ररू ति देवगति सहगत कहीयें. ए दश प्रकृति, (इचरिमसमयं निवयमिखी अंति केण) नव्यमोक्तगामी जीवने विचरमसमयें क्य जाय. तथा (सविवागेश्ररनामा के०) तथा तेहीज दिचरमसमयें जे प्रकृति विपाकें वर्ते हे. एटले जे नामकर्मनी नव प्रकतिनो तिहां विपाक एटले उदय हे,तेथकी इतर एटले बीजी प्रकृति डे जे प्रकृ तिर्जनो तिहां उदय नथी, तेवी प्रकृतिनां नाम कहे हे. ३ छोड़ारिक, तेजस छने कामेण, ए त्रण शरीर, ६ तथा ए त्रणनां वंधन, ए ए त्रणनां संघातन, १५ व संस्थान, ११ व संघयण, ११ छौदारिकांगोपांग, १६ वर्णचतुष्क, १९ मनुष्यानु पूर्वी, १० प्राघात, १ए उपघात,३० अग्रुरुलघु,३१ ग्रुनागुनखगित,३३ प्रत्येक, २४ अपयोत, ३५ उह्वास, ३६ थिर, ३७ अथिर, ३० ग्रुन, ३ए अग्रुन, ४० सुस्वर, ४१ इःस्वर,४२ इनेग, ४३ अनादेय, ४४ अयशःकीर्त्ते, ४५ निर्माण, ए पिस्तालीश प्रकृति पण, दिचरम समयें क्य पामे तथा (नीआगोअंपित छेव के०) नीचगोत्र अने अपिशब्दथको बे वेदनीयमांहेलुं एक वेदनीय, ए सर्व मली प्रथम नी द जेजतां सत्तावन ति दिचरमसमयें क्य जाय, सत्ताथी टले ॥ ७५ ॥

अ यर वेअणि ं, णुआ अ मुचगोअ नवनामे॥ वेएइ अजोगि जिणो, क्रोस जहन्न मिकारे॥ ए६॥

र्थ- ह्वे ६चर समय क्य गयुं जे वेदनीय, तेथकी ( अ यरवे णि के ) नेरुं शाता शाता मांहेलुं एक वेदनीय अने (मणुआउअं के ) म प्या , (उ गोअ के ) उ गेंत्र, (नवनामे के ) नामकमेनी नव प्रकृति, एवं बार प्रकृ

तिने, (वेएइअजोगिजिएों के०) अयोगी केवली वेदे हैं। ते (छ ोस के०) छत्छ पएो । थिंर वेदे है अने (जह मि । रेके०) जघन्यथ ही तो । न्य केवली होय. ते । थिंरना में विना गिआर कृति वेदे ॥ इति स यार्थः ॥ ए६ ॥ हवे ना मेनी नव कृतिनां । हे हैं।

मणुत्र्यगइ जाइ तस वा, यरं च प त सुन्नग च्याइं॥ जसिकती ति यरं, नामस्स हवंति नव एच्या ॥ ७॥

श्रथ-( णुश्रगइ के०) ष्यगित, (जाइ के०) पंचेंड्य ।ति, (तस के०) इसना , (बायरंच के०) । द्रनाम, (प च के०) पर्याप्तनाम, (सुनग के०) सुनगनाम, (श्राइं के०) श्रादेयनाम, (जसिकनी के०) यशःकीर्तिनाम, (तिश्वयरं के०) तीर्थकरना , (नामस्तनवंतिनवएश्रा के०) ए नामकर्मनी नव इति होय, तेनां नाम ं ॥ इति स यार्थः ॥ ए ॥ ॥ हते श्रद्धांश्रां वली ए ग्रणगणे तांतरपणुं देखाडे हे।

त । णु पुवि सिह्ञा, तेरस नवसिदिञ्चस्स चरमंमि॥ संतं सग मुक्कोसं, जहन्नयं बारस हवंति॥ एए॥

अर्थ- पूर्वोक्त मनुष्यायु अने उच्चेगीत्र, ए वे प्ररुतिमध्यें (तच्चाणुपुविसिह्ञआ के०) त्रीजी आनुपूर्वी एटले मनुष्यानुपूर्वी, ते मनुष्यानुपूर्वीयें सहित पूर्वोक्त बार प्ररुति करीयें, तेवारें (तेरसज्विसिङ्गस्तचरमंमि के०) तेर प्ररुति जव सिद्धिआ एटले तद्जवें मोक्तगामी जीव एवा अयोगीने चरम समयें (संतंसगमुक्तो सं के०) उत्रुप्पणे सत्तायें कम्प्ररुति होय अने (जहन्नयंवारसहवंति के०) जवन्यथकी तो तीर्थकर नामकमे विना वार प्ररुतिनी सत्ता होय॥इति समु०॥एए॥ ए शा सारु होय? माटें हवें एनो हेतु कहे वे.

मणुञ्ज गइ सहगयार्छ, नविषत्त विवाग जिञ्ज विवागार्छ॥ वेञ्जणिञ्ज अन्नरुद्धं, चरम समयंमि खीयंति॥ ७ए॥

छार्थ-(मणुञ्चगइसहगवार्य के॰) मनुष्यगित सार्थेन जेनो उदय हे, तेने म नुष्यगित सहगत छागीछार प्रकृति कहीयें, पण ते केवी हे ? तोके (नव के॰) नवविषाकी तो मनुष्यायु है, तथा (खिनविवाग के०) द्देत्रविषाकी तो मनुष्यानु पूर्वी है, तथा बाकीनी नामकर्मनी नव प्रकृति जे पूर्वे कही. ते (जिञ्जविवागार्ड कें। जीवविपाकीनी जाणवी. तथा (वेश्रणिश्रश्रत्मकं कें।) वे वेदनीय मां हेलुं अनेरं एक वेदनीय अने उज्जेगींत्र, उत्रुपदें ए तेर प्रकृति अने जयन्यपदें तीर्थकरनाम विना बार प्रकृति हे ते नव्यतिहिक एवा जीवने श्रयोगी गुणहाणा ना ( चरमलमयंमिखीयंति के॰ ) चरमलमयने विषे क्यें जाय हे, श्रहींश्रां मनु ष्यानुपूर्वी ते मनुष्यगित सहगित हे, माटें तेर प्रकृति सायेंन क्य जाय एम म तांतरें कहां, अनेरा आचार्य वली एम कहे ने के मनुष्यानुपूर्वानी दिचरम समयें जसता ब्यु हेद थाय है, छदयना छनावधकी छदयवती प्रकृतिने स्तियुक्तसंक्रम न होय तेमार्टे ख़खरूपें करीने चरम समयने विषे तेनां दलिक देखाय हे. एम युक्त वे तेमनो चरम समयमां सत्ता व्युवेद होय वे. आनुपूर्वी चार तो देन्त्रविपाकी वे माटें नवापांतरालगतियेंज एनो जदय होय, ते कारण माटें नवस्य जीवने छानु पूर्वीनो जदय न होय अने जदय विना तो अयोगी अवस्थाने दिचरम समयेंज मनुष्यानुपूर्वीनी सत्ता व्युह्वेद थाय, एवा मतने अनुसरीने पूर्वे दिचरम समयने विपे सुडतालीशं प्रकृतिनी सनानो व्यवहाद देखाड्यो छने चरमसमयें तो उत्कृष्टधी बार प्रकृति अने जयन्ययी अगीआर प्रकृतिनो व्यवहेद हे केमके अयोगी अ वस्थायें तो जे प्रकृतिनो चदय होय, तेनोज चरम समयें सत्तायी विहेद धाय वे अने जेनो उदय न होय ते दिचरम समयेंज क्य थाय हे.

तेथी आगल दवे जीवने कमें संबंध मूकाणो, ते माटे मूकाणा फलयी जेम ए रंमफलनी पेरें एटले मोहें जातां केवी गित करें ? तोके जम मोमामाहेथी मूका णुं एरंमफल ते स्वनाविवरोषें करी आकारों उडे अयवा जेम धूमनी गित सहे जें उंचीज होय यवा जेम बाण. धउुष्यमांथी ह्रुट्यो पाधरोज जाय अयवा जेम तुंबडुं पाणीमध्यें नाखेलुं उंचुं चडी आवे, तेम दंमें फेरच्या चक्रजमनी पेरें पूर्व सं योगें करी जीव, कमेवंधनथकी मूकाणो तेथी जीवनी सहचारी गित उंची हो माटें ते जीव, एक समयमां उंचो लोकांतें जाय, पण बीजो समय स्पर्शे नहीं. ते जीव उंचो जातो जे आकाशप्रदेशें अहीं अवगाही रह्यो होय, तेहीज आकाशप्रदेश नी समश्रेणीयें एक समयमां अन्य प्रदेशने अस्पर्शतो अं श समानगित करी जाय. उक्तं च विश्वक्य मूणीं "जचीए जीवोवगाहो, तावइयाए गाहणाए उढं उ खुगं गहर नवं कबीयं च समयं न फुसइति ॥ जे नणी वचला प्रदेशने स्पर्शतो घणा

समय घड़ जाय के के जीव तथा परमाणु ए काशप्रदेशधकी वीजे छा श प्रदेशें जाय, ए पार्थे उपलिह्त काल तेने स य ।ल हीयें तो तेम क रतां घणा समय लागे, तेथी अस्परीजितयेंज एक समयमां उंचो जाय तिहां शा श्वतां सुख अनुनवे, ते हे हे॥ इति समुच्चयार्थः॥ एए॥

अह सुइअ सयल जगसिह, र मरुव निरुवम सहाव सिर्विसुहं॥ अनियण महाबाहं, ति रयण सारं अणु हवंति॥ ए०॥

अर्थ-( अह के॰ ) अथ हवे कर्मक्य कचा पढ़ी अनंतर समयेंज ( सुइअ के 0) शुचि एकांत शुद्ध एटखे राग देपादिक रूप मल ते ऐं रहित (सयलजग सिहरं के • ) सकत सपूर्ण जगत् जे सांसारिक सुख, तेनुं शेखरचूत सर्वोत्तम स विथी अधिक जे नणी सिंदनां सुख तो ( अरूव के ॰ ) अरूज वे एटले रोगादिक तथा मनपीडादिककछें करी रहित होय केमके रोगतो शरीरने होय ते शरीर तो तिहां नथी अने संसारमध्यें तो ते वेहु क संनवे हे. माटें ते सरखुं संसारमध्यें कोई सुख नथी के जेनी उपमा आपीयें? माटें ( निरुवम के । निरुपम वे एट ले एवं कोइ पण सुख संसारने विषे नथी के जेनी उपमा आपीने तुखता करी यें ? माटे सिंदनां सुख निरुपम हे. वली ते सुख कहे हुं हे, तो के (सहाव के ) स्वनावथी उपजेलुं हे पण सांसारिक सुखनी पेरें कारमुं परकार्त्रिम नथी, एवं (सिक्सिहं के॰) सिक्पदनुं सुख अनिवैचनीय (अनियण के॰) अनियन ए टक्षे जेनो केवारें नाश नधी खर्चात् जेनो केवारें ठेहडो नधी खंत न छावे. जेनो इय नयी तया राग देपादिक जे सुखनां वाधक है, तेने सर्वथा इय क स्वाची (महाबादं के॰) अव्यावाध एटले वाधाकारी पीडाकारी एवा जे रोगादि क तेने सूलयी उन्सूल्या हे ते नणी ते फरी प्रगट न याय ते विना पीड़ा न ड पजे तेमाटें खळावाध सुख है। वली (तिरयणसारं के०) त्रण रत जे जान, दरीन अने चारित्र, तेनो सार एटले फलनूत ने एटले रत्नत्रियनो यत्न कचायी कमैक्य याय ने अने कमैक्य ययायी मोक्सुख लइयें ठेयें. माटे ति िसुखनो श्रनिलाप करनाराचे श्रवच्य रत्नत्रयिनो श्राथय करवो केमके सिन्धना सुखनुं का रणनूत ते रत्नत्रयज ने एवा मोक्सुख प्रत्यें ते परमातमा सिक् जीव ( श्रण हवंति के ० ) छनुनवे ने ॥ इति समुचयार्थः ॥ ए० ॥

